प्रकारार श्रीमन्त सेठ श्रितातराय रुस्मीचन्द्र, जैन-साहित्योद्धारसम्बन्ध्यार्थेज्य अस्तारनी (जार)



मुद्रक—

री क्रम पार्टीउ,

477,

स्काद् हैं (प्रिम् प्रम् असम्पूर्त (बगाः)

THE

SATKHANDÄGAMA

OF

PUSPADANTA AND BHÜTABALI

APPROPRIES AND ADDRESS AND ADDRESS AS

KŞETRA-SPARSANA-KĀLĀNUGAMA

F 4.50 }

with introduction translation not a antimicaca

111

HIRALAL JAIN WA II B

C. P Libreational Service hing I lear 1 Co 1 . America

455/STFD 13

I an lit Blealat Sthanta Stant : Ses at etta

Hath the co sta on of

la it Devakinandana Sifhanta Sha tro

Dr A N Uration LARL

12 41

Shrimanta Seth Shital rai Laumichandra

AMEAOTI I .

1942

Peke upos tes es r

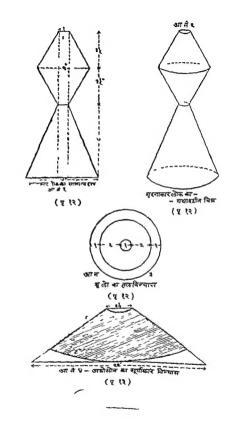
Jul' the by-Chrimant Orth Chitanni Lanmananina, Jacob not "Sava Fo the stare, APPAOTI (Bost)



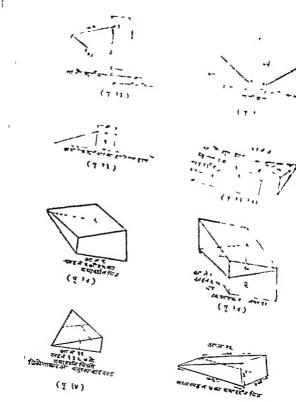
Printe 1 by—
T M Patil, Manager,

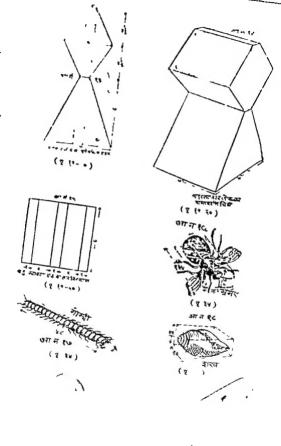
Farmanti 1 sinting Prom,

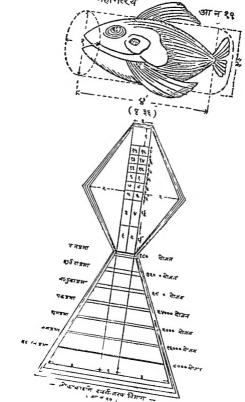
AllikAOTI (Bornr)



(بر







विपय सूची

	वृष्ठ	Ì		ą's			
शक् क्थन	₹-¥		٦,				
,			मूल, अनुवाद और टिप्पण	5-855			
		1	क्षेत्रानुगम	1-116			
प्रस्तावना		ľ	स्परीनानुगम	905-959			
Introduction	1~ V		वारानुगम	358-855			
Mathematics of Dhavala 1-	~XXIV		ą	.,,			
(by Dr A N Singh)			परिशिष्ट	१-83			
मिहात और उनके आययनका	- 1	1	क्षेत्रप्रराज्या सूत्रपाठ	*			
अभिरार	₹		स्पर्शनप्रव्याणाः सूत्रपाठ	4			
राजा-समाधान	15		याल्प्रस्त्रणा सूत्रपाठ	23			
निषय-परिचय	२३	₹	अपनरण-गायाम् ची	26			
विषय-स्वा	₹0	ą	-यायोत्तियां	२७			
শুদ্ধিপদ	49	8	प्रयोक्षेग्व	36			
भेत-स्वतान-कारतमाणदशक चार्ट २ ९	২ अ সা	ч	पारिभाषिक शब्दसूची	₹०-8२			
सिय ग्रमी							

चित्र सुची

ŧ	मृदगाबार लोकका सामा व दस्य भुल पृष्ठ	1		सुग १
₹	मृदगाक्षार छात्रका यपादरीन चित्र "	12	साटन १, ३, ६ व ७ व यपादश	न
₹	मृदगारार टाउँरा सर्रान्यास "	1	चित्रमें त्रिकीणाकार और चतुम्याकार	
¥	अप्रेडोररा सूर्पासर निवास "]	रवड	11
4	अधालाक मृपाकार विवासका वचादर्शन	12	गप्यकड न ४ वा यथादरीन चित्र	12
	चित्र ,,	2 3	चतुरसाकार जीकका बूक् पश्चिम दृश्य	22
ξ	अधी राज सूपाजार वि वासका (समीहरू)	₹¥	" ययान्दान चित्र	29
	वित्र ॥	84	_{!! !!} यात?शियाम	n
૭	,, ,, का उपन्तिन दश्य	१६	भगर चित्र	99
ć	अंग्रेटीक स्पाकार कियासका खड	ર્ હ	गाम्ही ,,	17
	दशन चित्र ,,	25	शव "	H
	खड न २ और ५ या यथादशन चित्र "		महामस्य ॥	,
٥	संदर्भ २ और ५ वा एवपर एक स्म	₹∘	राक्रकारामें स्वयन्तरक विभाग	**
	नेपर दृश्य			



माक् कथक

पद्वारामस्य तीसम् भाग अवत्र १९४१ में प्रसक्षित हुआ था। यर पूर हाते होते उसमा चैंगा भार भी तैयार होतर पारकोरे हाथमें पहन रहा है। इन सिद्धान्त प्रचींना समाजमें आहर और प्रचार देगररर हमें अपने ध्येयकी सफलनाका सनीय है। विद्वसमान अब इस आर निता उत्तम अह सप्त हो उठा है इसमा आमाप इसीसे निया या सम्ता है कि इसी अन्य मार्ने हमें हम शिक्षा नोह्यार में पार्यमें पटिनाचार्य में भगाय चाहरीनिनी खामी तथा पचीरी ष्टपाने मृत्यती सस्यासा पूर्व सत्योग प्रात हो गया है, निमम अब सिद्धानमधरा मूत्र पाठ पटानी तारपरिप प्रतिपीते मिरान परते ही निधिन निया जाना है। इस कारण अब इतर प्रति-योंके मिरान प्रकाशित यरनेकी आवश्यकता नहीं गरी। इसी बीच डितीय विद्वान्तवय वयावप्राधन और उसका दौका जय-रापके प्रकासनके स्थि भी एक मर्ग अनेक सम्याप उसके हो उसी है. आर ीनसप. र रहा. ने उस ओर बार्य प्रारंभ भी बर दिया है। उस शीलासराल स्वर्गीय सेट सानी मारामत्री दोर्गात संरक्षणमें जो सिद्धा ताद्धारमात्री पड था. उसकी उनके सुवाय उत्तरिकास सठ गुणारबंदर्जान सुर्यस्था वर्गे महाराग्ध निमित्त एक समिति सुसमिति वर दी है। यहाँ नहीं, थीयक मनवानी देगडने तीना सिद्धातींने मण्यादनो ताडपत्रीय प्रतियारे अनुसार प्रजाशित मगनको भी एक स्वीम प्रस्तुन को है। साहित्याद्धारक महत्त्व और उसकी अध्ययनाका अनुसर ष्टरंके शालापुरक अवस्त धर्मानुराणि प्रत्राचारी जीवगण गीतमचद्ती दोशीने गर्मार निचार और विद्वारामान प्रधाद ' जन सन्दति माश्चन सर' या आयोगन निया है, और उमने निये अपनी अरस तीम हजारना दान भी द दिया है। इस सनना नेन बहुत निशार आर सनी पानी है, निसरी पूर्नि धार धार ही ही सरती है तथा समाजर सहयागपर अरउधिन है। रिच उसके अनान जो एक 'नीकान केन भवपाल' के सामालका निधय किया गया था, उसरक मेरे मियमित्र टॅं. अदिनाय मीमनाय उपा याय और भेरे सम्पादकतमें कार्य प्रारम होगण है, और उस माराजा प्रथम पुष्प, उन्ह मिद्धारमधीकी ही वादिका प्राचीन प्रामाणिक भव 'निरायप्रणावि । (निगरप्रनिक्त) सुद्रणाशिन छ । इस प्रशास यन सिद्धान्तोद्धारमा अयात सह ग्रूण कार्य अर भनेर म ग्रेंद्रान सन्हार ना रहा है, शिससे हमें अब अपना बोन कुछ हरना हुआ प्रतीन होने द्या है। स्मरी हमें प्रसन्ता है।

तिन एतिये साथ गरि-अभागों ने प्रयासिय भा सारणा अभाग नहीं है। प्रश्नीत्व मिसान प्रभागी भांतिब नामवृद्धिये वनी भागी उपवामितारा अनुभग करने जर नी मन्त्रियद वेत पूर्व गर्मा सीनित अपनी नाम नेरूम प्रश्निसानात प्रयास भाग माज्या नाम माने भी व्य सार्था पूर्व गान माने सीनित्न बहुता अवस्त्र अवस्त्र माना । स्वस्त्र अवस्त्र । प्रश्ना भी प्रश्नीत वर्षा हर माना। विकास में सीनित बहुता में सीनित बहुता माना स्वस्त्र ।

₹ न्द्रवाहरू के दिल्लाहर का हिना है। इन्ते अवस्था --- न्या पर पुरिस्त किया है किया है कि गुरूप "--- न् "---- द्वी की विकास किया की कि की दार्गित हरका परमा परमा र --- नार प्राप्त के जा व ी। इन प्रिक्ति जाराने के प्राप्ताओं हे आसारी है रता का कार का कार किया है हि है भए, परसा, सामा, स निसा र गाम्यान्य की बेंगा भाग कर्य गता अने शिक्षी प्रशास तो प्रीप्राप्ते अस्त का - " =- -- - व्याप्त पर अम रेप्टरे, में से समान, है । अल्प हमने -- --- ' रूप प्राप्त हो प्रिक्त प्राप्त प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त न तर नर र जेरिके उपगढि सम्मेशमा समय नावे। हमेरे त्र प्रत्ये त्र त्रवारो श्रीवान वेश वाने आपसास अग्रिरंगी - -- - -- क्रिक्टिंग स्थापना अहि ौरे अपने

" " " " " " । उन्हार प्रशास प्रशास परी हिला, हिन्तु र र श्रीति नन्ति । अवस्ति वसूति में रण रहाँ द्वार दशासी, और उत्तो रहर्व र चधारे, व रागमार्गद्रसिवण रूर 📑 रेर्डिस त्या सिरिस्ता स्पामिन ही - व बर लवाब रण ह कि इन र पार्ति स्थात, सा र रास्त्र सर्जर इद्वाहल स्ट्रियाह पुर - # 74 P 111 P 1

े रें बारा नगरण विद्रास कि भी ः ११ ० ० ११६६ वर्ग समापा I FERST PERSONS रहत्र वर्ण संदिष्ठ हो er on the market

० वर्षेत्र ४ । सहस्राष्ट्रमा दासा

F FEZ FEFER H

E ++ 1 2 84 8 977

प्रभाव राज्यों में नुस्मती सीन प्रमामण्य भाई हिन्सन, हर्यान और यहाँ। हो से सामा १००, है८% भर हे४० सुन पांच जात है। हिन्दी अनुसहसे अपनी हरू सन्दे हैं। हा कि सामा है%, हिन्दी अनुसहसे अपनी हरू सन्दे हैं। हा है% हिन्दी अनुसहसे अपनी हरू सन्दे हैं। हा है%, हिन्दी अनुसहसे अपनी जीने मत है। हुन्यान सामा है कि सामा स्थान है है। हुन्यान सामा है कि सामा सामा है है। हिन्दी अनुसहसे सामा है है। हिन्दी अनुसहसे सामा है है। विद्यार भर्म कि सामा है है। विद्यार भर्म कि सामा है। हिन्दी हर्य सहसे हैं। हिन्दी सामा है है। विद्यार सामा है। हिन्दी सामा है है। हिन्दी सामा है। ह

हामें कैर विशेष प्रस्ता ने प्रस्ताओं के बाद्यमा प्रमाणकों साल बहुतसा सिनार भाग भाग है। किया ना हि दि व्यवस्त्र मित्र प्राप्त क्षेत्रीती [Geometry] से सब्य गान, के पद बादा मान्य गतित क्षेत्र क्षेत्रीय स्वाद्य क्षेत्र स्वाद्य सामकों मान, का उपने मान्य प्रमित्त किया प्रमाणक पात्र प्रतिवाद के स्वाद्य सामके विष्या ना चीत है। इसी प्रस्त क्षात्र स्वाद्य स्वादेश स्वाद क्षेत्र स्वाद्य स्वाद स्वा

हा अब रिजाजो विधिवन् समयो व समकानि हमें पुत हमार वाहेजके सीमत काणाव सत्तार वाहोदिस्त्री जाहे में सून महाराम विधे है। जैसे परिस्तरी जाहें में सून सहाराम विधे है। जैसे परिस्तरी जाहें में सून सहाराम विधे है। जैसे परिस्तरी जाहें में सून सहस्तर मिन हों सून स्वार मामत में निकास कर साम काणाव में निकास स्वार मामत के प्रतिकृत सहस्त स्वार का साराम सामको सुप्तम, काणाव साम प्रतिकृत सहस्त प्रतिकृत सहस्त प्रतिकृत साम काणाव सामको सुप्तम, कुन विकारि स्वारम प्रतिकृत सुप्तम, कुन विकारि स्वारम मी दिसे निवास विपय सामे हमें कुम कुम कुम विकार स्वारम साम प्रतिकृत साम साम सुप्तम, जी हो सुप्तम, विकार स्वारम स्वारम साम प्रतिकृत सुप्तम, कुम विकार स्वारम साम प्रतिकृत सुप्तम, कुम विकार स्वारम सामको सुप्तम, विकार सुप्तम,

रात भागारी प्रसावनारे भीता हमने एउ गहा—सभागतारा लग्भ भी राग पा निसमें इस समय तर आर हुर चारीम नाराओं ह उत्तर दिये गा थ | समालाचहोंने हम स्तर्भ पर



HERITARI



INTRODUCTORY

The present source contains three printipants, askely, habetes, spritting and hals out of the eight printipanatof fleafibing of which the items is been published in the parties about three volumes while the last three namely, Antara, Bhiva and Alpa-habets are going to be included in the next volume.

The habetra prayap no contains 92 Satras and concerns itself with the determination of the volume of space that living beings occupy and rathe amous conditions of life and existence. The Satras confine themselves to the taxtment of the subject under the usual fourteen spiritual stones (Ginasti mas) and the fourteen soul-quests (Marcan i-athanas) but the commentator introduces ten other conditions of life which have to be taken into con ideration. These fall under three main classes namely, the place of habitation of the beings (Srasthana) their expansion (Samu dil 2 a) and their journes for rebuth (Upapada) The first of these moindes the usual place of habitati n (Sansti it a-masti ina) and places of occa signal rivits () il arm at-se rething) The expension of the soul-substance beroil ite a ual solume (Samudahita) may be due to pain (Vedana) or I assion (has as abor for a temporary transformation of p reenably (Vibriga) er for a visit to the next place of birth just before death (Maranintika) or ly effolgence of lastre for evil or good (Taijast), or for reaching a learn d person for the temoral of a doubt in knowledge in the case of srints (Al ur sha), or for getting rid of the remnant Larmic bonds in the case of an all-knowing saint (herali-samud her) Thus the commentator calcu lates the volume of spars occupied by the living beingen these ten different conditions under the different spiritual stages and soul-quests

The spittal units adopted for three measurements refile namely, (1) the entire universe (Satisa-loka) (2) the lever universe (Adholoka), (4) the involved world (Mahlyrioka) and (7) the human world (Mahlyrioka) To make three standards defilied in the properties of the limiters appeared to two, the properties of the limiters and the Lokakafa which is distinct in the middle of the former where life in all matter subsection is the limiters and the life in the limiters and the Lokakafa which is distinct in the middle of the former where life in all matter subsection is the life of the life in the life of the life of the second adopted as the life of t

volume of this universe, the commentator is confronted with two directors views According to one view it is in the form of three conical feneta with a common enemiar section in the middle, while according to the other ters it is in the form of three frusta of pyramids with a common rectargular base in the middle Virasena with his philosophic ireight, discriminating genius and mathematical skill ultimately rejects the former view and adopts the latter His conclusions are that the entire universe (Lokake(1) has a total height of 14 rayins and is in its volume 73,343 cubic raying, con sisting of the lower universe which is 196 cubic railes and the upper universe which is 147 cabic rayjus. Between the lower and the apper universe is the rectangular section called the middle world which is 1 x 7 =7 square rajjus, and which contains in its middle the human world which is a circular area of 45 lakhs of youanas in diameter. The rails is thus the standard unit of this spatial measurement and it is only determined as innumerable yoganas long, equal to the smaller side, and fof the larger side of the rectangular middle world, $\frac{1}{7}$ of the height of the lover or upper world and $\frac{1}{12}$ of the total height of the entire universe. This discu sion as well as similar others bring to light several geometrical problems that confronted our ancient thinkers and their solutions throw a considerable light upon the evolution of mathematical processes and theories in this country. We have tried to illustrate some of these by thenty diagrams in addition to a large number of examples

Under the Sparsana-prarapana wich contains 180 Sutres we find the volumes of space similarly considered from the point of view of the past as well as the future "states of those but, s, in addition to the present to which Kabatra-prarapana confines itself. The question here is the volume of space which beings of different spiritual stages and scul-quests exer happen to touch under one of the ten conditions mentioned above. In this connection the determination of the number of heavenly luminaries shining above the unimerable i land, and seas give, rus to a number of interesting mathematical exercices (see pp. 15%-161 of the tert.)

In the Kala-prerapana which contains 342 Sut as, the con ideration is of the minimum and maximum periods of time sprint by the souls, singly or in aggregates, in the various sprintal stages and soul-quests of periods of time rises on to a Muhurta (48 Minutes), a day a fortnight, a month a year, a Yuga a Pursanga, a Pursa, and so on to a Palyopama and a Sagaropama and ultimately to an Utsarpini and Assarpini which constitute a Kalpa. The longest period of time conceived and denominated is a Pudgala-parisationa (for which see p. 350 text and explanatory note)

In interpreting the mathematical part of these texts I again received very valuable assistance from my collection Mr. D. Pauday, or fever of mathematics in Ring Edward Collection. Amazoti Without his help hero as in the previous volume, it would have been almost an impossible task for me to explain adequately the mathematical portions. As I met toned in the previous volume, Dr. Asadhesh. Narian singh, professor of Mathematica in the Lucknow University and suthor of the History of His line. Mathematics, has taken a keen interest in the mathematical contents of these texts. He has now studied the mathematical portions of the III volume and has obliged me by writing out a dissertation on the mathematical contents of that volume The same is being published here under the Capiton. Mathematics of Dinevals. "It is expected that he would continue his valuable study of these texts and the resiste might look forward to a very interesting note on the geometries of the privative large in the volume to be issued next.

Another topic dealt within the Hindi Introduction of this rolume If an answer to the objection raised in a certain quarter that Jaina tra !! tions prohibit the study of these bacred Texts by laymen and the che these texts should neither be published in a print dirim nor s' ould if re be taught in Jaine Pathafalas nor should they b allowed to in teat anywhere by any body except by the Jama ascetics A critical examinating of all the traditions bearing on this subject shows that an organite age at the study of Suddhanta by the laymen is found in a few tacks dealing with the daties of Jama house-holders. But all these broks are formal to have been written by a few obscore and tost otheant uniters be o to to a period subsequent to the 1'th century A D 1,20 it weither wo kn make char what m meant by Siddhanta eres ar it in a manure a to make the present texts as we are the state the opher of Scidnatts The run : with the statements file m at a mt a who hasestringer mmen 1 1 h + adr higher his 11 y al laymen a y a a himselfier den in clear and a m . a. commentary that the Sutras a me as

L _ _

MATHEMATICS OF DHAVAL

Dispatch and the state of the s It has been known that in India the study of Gunita arethmetic a mensuration element carried on at a very early due it is also well known at a least fact of the contributions of t ancient Indian mathematicisms and is substantial and solid contributions to mathematics. In fact, they were the originatory of modern arithmetic and already and a substantial and already and already and already and already and already and already and already. mailer. In fact they were the originators of modern arithmetic and allebra.

that here accustomed to think, that amongst the tast population of India only. hyto been accustomed to think that amongst the same population of limits and several matter and several interest of the subject and they then only the same of the subject and they are subject as the subject and the subject and the subject as distributed matrix and were interested in the only of and that the or and the control of the population of facine e.g. the filmed these and the stress did not far and the control of the exclions of the Population of Judie e.g. the (thouldness and the Jimes did not pay on the Tale Tray has been beld by Scholars Secure with matical not an Tale Land of the Tale Tray has been beld by Scholars Secure with matical not an account to the Company of th a tention to it. This view has been bold by acholder because written by Roddbiet or Jana mathematical representations of the formation of the Writien by Modulate or Jama melbeurelicans and Deen unknown uptil This recently a find a choosel works however to each that mathematics rate bod in a find the mathematics and statements. A study of the lates canonical works however reveals has mathematics was now in figure accounts from James. In fact the homelogie of methometics and astronomy high extend by the Jamas. In fact the knowledge of methematics and safro considered to be one of the principal accomplishments of the Jama sacroins in the J

Sie know now that the Jainis had a a boot of mathematics in South In its and at leat one work that soe values that as most or mandematics in South In its many was in many was expressed for any other areas weaks a fall life type of the school of the south as a supplementary of the school of the scho and at lea t one work the Ganita-sara-sampraha ty Mahalitac rya-of the school of that time Mahalitacity. Was 10 many ways superior to any other existing work of that time 31 shall release to 10 man and 10 more afficient to general outling to the works of the works o wrote in SuO A D and his work although similar in general colline to the works of contract to the subject to th the Hindu mathematicans like Bridmagupta Drubbrichtes indikara and others is along all different from those in the other norts. eathers discent to detail e & no promons , almost all different from those in the other north

important achoose of mathematics literature arguable at Present we can say include a land a land at la From the mathematical literature available at present we can say that Important schools of mathematics distributed at 1 statematics of a 1 statematics of 1 state Martine and from 17 also as lienary Taxifs and a me other force Until further evidence is a viritible it is not Found to say precisely what the relation between the evidence of the same was in I that works over the relation between these times. evidence is a validate it is not just to be any precisely what the relation letter on those schools was, At the same time we find that works coming from the different schools and the same time and the same approximation of the different schools and the same approximation of the schools was At the same time we do j that works coming from the different Actions.

As a second other to their Spaceal Outline Although they differ to details This account which is a second wh Rescrible each other to their Faueral outline although they differ in details. This continue and a strict outline although they differ in details. This continue actually formatted and strict outlines are strictly details. shops e that there was intercommunication between the various schools—that reholate and study and travelled from one school to enother and that di coveres intercolate the schools of the and result that the services from the sensors to shottler and thus at conclus and the sensors are sensors as the s

study of the satisfact the effect of Bud Brem and Jainsen gave an impediate of the satisfact of the satisfact and satisfact of the satisfact o It seems that the special of Dad Breen and James Care an impelia to the study of the sarior sciences and aria. If a religious lifer time of linddings and Jain's man of the life full first numbers. The use of bis summers of a substitution for writing those numbers of bis summers and a substitution for writing those numbers and of liaddhive and Jainium in) ricular is full fix numbers. The use of bit numbers and the levelop mean of a mile value in for writing those numbers and

has been responsible for the invention of the decimal place value notation. It is not a line about the beyond doubt this the place value system of notation was invented and Januar. The beginning of the Christian Fra. the brighlest period of Raddham and Januar. The new notation was an invented surrag. to the first heart of mathematics from the crude Votice stage. —as found in the Suclearing and Variationality.

One very significant fact which has escaped the notice of historians of mathe in the following, whilst the general interature of the Hindus the Buddhists and the James continuous from the third or the fourth century if C. right up to the Apin the mathematical interature. In fact there is hardly any mathematical territion at a fragmentary manuscript known as the Bakhshid 499 A D the only exception at a fragmentary manuscript known as the Bakhshid manuscript which probably test as the terral responsibility of the theory of the terral responsibility of the responsibility of the terral responsibility of the responsibility of the terral responsibility of the responsibility of

It has already been pointed out that mathematics are found in the Arya at the state of the state

if a s. If a s. p. fail reverance to Brahman the Farth the Moon Moreury Venus at late, if the statem and the asterway Arrabites are forth the scenare as reason from the study of the husbyry of methods that he had not become from the study of the husbyry of methods there are contacted by a state of the action of the study of the husbyry of methods there are contacted by a state of the action of the study of the study of the study of the study of the state o

to Arrabbits a either used the off type of numerals or were not good enough to stan I the test of time. In this, that have a hate a great popularity as a mithematician was no a great more due to be being the first to mate a good test book employin, the place value numerals. Aryabhats was no possible for divining out and killing all previous test books. This explains why we get a series of works from 490 A. Il on wards while no works belonging to centric times are available.

Thus we have practically no material to fince the development and growth of mathematics in In ha before 200 A D. It becames a question of peramont importance to host and trace out works which may give information regarding the knowledge of mathematics in India antern in to Aryabhat' Varhematical works having, be a lost we have to scan and anothers India Bud line; and Jama interners in general and it their religious interatures in particular to find what material we can in order to reconstruct the history of mathematics in In its defers 600 A. D. In several of the Puranas we have portions dealing with mathematics and a tronomy. Likewise in most of the Jama canonial works there is to be found soome atthematical or stronomical material. This material represents the trichtonial mathematics of India and such material is generally about three to four continues of them the age of of the work in which it is continued. Thus if we examine a religious or philosophical work written in the period 400 to 800 A. D. is an authematical content will belong to 0.4 D to 400 A. D. d.

It is in the light of the above remarks that we regard the discovery of the Dhavala a commentary on the Satikhandagama, written in the leginning of the mith century as very important Mr. II. I. Janna has placed achilers under a permanent debt of gratitude by editing the work and getting it published.

The Jama school of mathematics

Since the discovery and publication of the Gantla-saca-sampeads by all angears in 101° scholars has empreted the ensistence of school of mathematics run schouled by Jains scholars. A recent study of some of the Jains canonical works has brought to light various subtrences to Jains mithematicanes and mathiamatical works? The religious interiment of the Jainsins cleanified into foot groups called analyzing meaning the exposition of the principles (of Jainsins). "One of them is called karananyogo or ganifananyogo a chie exposition of the principle of pendent upon mathematics. This shows the high position accorded to mathematics in Jains religion and ipthinosphy."

Although the names of several lanes mathematicians are known their works have been lost. The earlie t among them is Bha Iritahu who died in 2 c B C. He is known to be the suther of two astronomical works. (1) a commentary on the

See the Introduction by D. D. Smith. In the G. mits same-samples of by P. ugs area.
 Madras. 191*

² B Datts The J na school of Mathematics, Bulletin Cal Math Soc., Vol. VII (19°9) pp 115-165

Suryaprajnaptianl (n) an original werk of 1 the Bha feat-shout Sarrhot He is in intone by Malagagit (c. 11 0) in heavier in try on the Suryaprajaryli and has been quoted by Phithyrada (m.) And he factor were more than excellent Sadda can has been quote by Varihamilira (f.) and the factor were more than excellent and Prakint are in the internal surge number of an high trions. These quotions with a continuous large number of an high trions. These quotions with a continuous large number of an high trions. These quotions with a continuous large number of an high trions. These quotions with a continuous attention of mathematical works written by Interach large with a continuous large number of an high factor are sufficient with mathematics but now high of Kasters samitas and Kasana bhasaca dealt with mathematics but now havenessed from other of an extremely from our post and the continuous form a few non mathematical works such as Sthamangs sutra Tattvarthadhigums sutra-bhasaya of Umasanti Suryaprajnapit Anuyogadvara sutra Tatloka Prajnaptit, Trilokas area, etc. To these may now the all of the Dhavalas

The importance of the Dhavala

The Dhavala was written by Virasens in the beginning of the minth century Virasena was a philosopher and religious divine. He certainly was not a mathematician The mathematical material contained in the Dhavala may there '79 be attributed to previous writers especially to the previous comments ore of whom five have been mentioned by Indrauandi in the Sruavatara. These commentators were Kundakunda Shamakunda Tumbulura Samantabhadra an li appalara of whom the first flourished about 200 A. D and the last about 600 A. D Most of the mathematical material in the Dhavala may therefore be taken to belong to the period 200 to 600 A D Thus the Dhavala becomes a work of first rate imfortan e to the hi torian of Indian mathematics, as it supplies informat on about the darkest feriod of the h s ory of Indian Mathematics-the period preceding the fifth century A D The view that the mathematical material in the Dhavala lelongs to the period before JOAD is corroborated by detailed study. For instance many of the processes described in the Dhavala are not be found in any known mathematical work. Furthermore there is a certain imperfection which one acquainted with the later Indian mathematical works can easily discern. The mathematics in the Dhavala lacks the finish and the refinement of the Arvabhativa and later works.

Mathematical Content of the Dhavala

Numbers and Notation.—The author of the Dharala II fully conversable with the place value system of notation. Evidence of this is to be found everywhere We quote some methods of expressing numbers taken from quotations given in the Dhavala—

¹ Brist Samists ed by S Drivedi Benares 1814 p >>6

Essents in the commentary on the Satraketanga Sutra am yadi vayana "annyogalists, vitte 88 qu tea three rul a regarding permutations and combinations. There rules are approximately taken from some Jana anathematical work

(1) 7000 1909 18 expressed as a womber which has a to the beginning 8 at the end and o repeated my times in between

(h) that (h h s expressed as early-lour an handreds early-six thousands sixty-ax bundred-thousands, and four koise four and ninets wights

(m) as 19408 is expresed as two Logis twenty-seven amety-mas thousands

From places in the Gaulta-sace samples about from the from the from the files and the The method used in (1) is found elegators also in Jens liferators and at some Piaces in the Granita-Safe gaugerana a soory inministry with the Pices
according in (1) the enable decompositions are expressed first. This is not in the pice of the pices of the pic value notation | In [11] the smaller denominations | are expressed first ximp is not in any formation with the knowledge practice current in Assault Interior | Likewise in the continuous interior | Likewise interior According with the general fractice current in Empirical Interaction and and and and ten any scenario found in Sanskrit interaction. Likewise the cesson and in the same and any account in the same and in th BOUITERS

of notation is houseful and not ten as a property found in Sumbtric Hieratory a in that and Praktit houseful the scale of houseful agreently used in (ii) the little agree of the case of houseful agree of the case of the ca and Prakrit however the scale of another is generally used in {iii} the suppose in a special from different to a s

Literatura In the Déarais as well known that we numbers occur requestiff its also Big numbers—it is well known that big numbers occur frequently in Jalon in the fill the fill that th discussed. The large statuber that is definitely stated to the sumber of developed.

In the large statuber that is definitely stated to the sumber of developed.

In the large stated to be a stated to be a sumber of developed to the stated to be a sumber of developed. Circured The logge t number that is definitely stated as the number of developable and the Dita Alac is to stated to be between the sixth-equate of two and the contract and the binnin souls to the Dhahalae is is stated to be between the sixth equate of two and the control of two or to be more fraces between koll koll koll and kollkoti-koti-koti, i e

ad more definitely between (1070000) 2 and (1000000) 6

and more definitely between (10700000) x and (10000000) to exceed numbers of such south known from other works to 70 on 91 62 51 4-61 33 75 a sc. dai numicer di anchi adula known iron other works is syver it two i armes in it.

da 3.5 3 30 30, This number occupies in eighthough obtained places. It has the same a food of the system of th of 30.50 Mb. This number compress swelly mine notations; places if has the same or of holestons places as (1.00 00.000) if but is given to This is known to the world inhabited by men and shows ther of postational places as (J on 00 000) s but as greater. This is known to the common and the state of the world inhabited by more and above the state of the world inhabited by more and above. or of ideas who calculates the sizes of the world inhabited by men and above the larger number of men can not be contained in it and bence that they was

The Fundamental Operations—Menting is found of all the fundamental contractions and anticolour of some of some of some and The Fundamental Operations—Mention is found of all the fundamental operations—Mention is found of all the fundamental operations are all the structure of square and the square operations are approximately square operations. one as his assuration division multiplication the extraction of square and the raising of numbers to given fowers etc. These operations are mentioned the she lift p is 4 total verse 51 f C nm tas a f a karda p cap

H , I He d M H to I w by Dates Ji ted S B I s

both, with respect to integers and fractions. The theory of indices and decriped in the Dhavala is somewhat different from what is found in the methematical works. The theory in certainly primitive and is earlier than "00 A D. The fundamental idea seem to be those of (1) the square, (11) the cube (111) the successive square (iv the successive cube (v) the raising of a number to its own power (vi) the square root (vii) the cube root (viii) the successive squire root (ix) the successive cube root, elc. All other powers are expressed in terms of the alore. For example at mexpressed as the first square root of the cube of a a? is expressed as the cube a the cube of a, as an expressed as the rquare of the cube or the cube of the square of a

successive squares and square roots s	ite as pelon-
lat square of a means	$f(x)^2 = x^2$
2nd square of a means:	$(a^2)^2 \approx a^4 = a^2$
3rd square of a means	a ²
nth square of a means	8. ²
lat square-root of a means	a12
2nd square-root of a means	at"
3rd square root of a means	at 2
nth square-root of a means	gl" B

Vargita-samvargita-The technical term vargita-samvargita has bee used for the raising of a number to its own power. For instance us is the vargita samvargita of n. In connection with this the Dhavala mentions an operation calle Viralana-deya- spread and give " The Viralana (spreading) of a number mean the separating of the number into its unities 1 a the viralana of it is-

11111 n times.

Deys (giving) means the substitution of n in the place of t everywhere in the above The wargitz-esmwargita of n is obtained by multiplying together the na obtained b the viralana-daya The result is the first vargita-samvargita of n. L. .

lst varmis-samvargita of n is The application of the process of viralana-deya once again 1. e , to no gives I

2nd vargita-samvargita of m

A further application of the same procedure gives the-

¹ Dharala Vel III p -3

3rd vargita-sumvargita of a

$$\left\{ \left(u_{p}\right) _{y_{n}}\right\} \left\{ \left(_{i}^{n_{p}}\right) _{y_{n}}\right\}$$

The Dhavali does not contemplate the application of the above more than three The third vargité summargité has been used very oftent in connection with the theory of very large or indicate numbers. That the process yable very by numbers can be seen from the fact that the 3rd vargula-summargité of 2 s 25,378.

The laws of indices—From the above description is m obvious that the author of the Dhavals was fully conversant with the laws of indices will

Jastances of the two of the above laws are numerous. To quide the interesting case 2 it is stated that the 7th varge of 2 diridely by the 6th varge of 2 gives the 6th varge of 3. That is—

The operations of duplation and succlusion were considered unportant when the place value numeric were unknown. There is no circo of these operations' in the Indian mathematical works. But these processes were considered to be important by the Egyptians and the Urecks and were recognised as such in the tower on minimum. The Dhavalk contains traces of these operations. The confideration of this successive squares of 3 or other numbers was nectually impired by the operation of duplation which must have been current in India before the advent of the place value numeris. Similarly there are traces of the method of muchition." In the Dhavalk we find guarantization of this operation sation of this operation is not a theory of logarithms to the base 2.3 4 etc.

Logarithms-The following terms have been defined in the Dhavalat-

(i) Ardharcheda'of a number is equal to the number of times that it can be haired. Thus the ardisacheds of 2==m. Denoting ardhecheds by the abbreviation Ac we can write in modern boustions—.

As of x (or As x) = log x, where the logarithm is to the base ?

(μ) Vargasalaka of a number is the arihacehods of the arihacehods of that number i a

largafalaka of x = lax = Ac Ac x = log log x where the logarithm is to the base two.

(iii) Trkaccheda of a number is equal to the number of times that it can be divided by 3 Thus-

I Dherals III p 20 ff 2 that p 3 ff 3 thid p 1 ff 4 th 1 p of





Fractions -- Besides the fundamental arithmetical operations with fractions, Luowiedge of which has been assumed in the Dhawil, we find a number of interesting formulae relating to fractions which are not found in any known methematical work. Amongst these may be mention I the following --

$$[1]_{n \xrightarrow{n \mp (n/h)}} = n + \frac{n}{h \mp 1}$$

[2] Let a number in be divided by the divisors d and d' and let q and q' be the quotients (or the fractions). The following formula gives the result when in it divided by $d \pm d - -$

$$\frac{m}{d \pm d'} = \frac{q'}{(q'/q) \pm 1}$$
or
$$\frac{q}{1 \pm (q'/q)}$$
[3] If $\frac{m}{d} = q$ and $\frac{m'}{d} = q'$, then
$$d(q-q) + m = m$$
[4] If $\frac{h}{b} = q$ then
$$\frac{h}{b+\frac{h}{m}} = q - \frac{q}{b+1}$$
and
$$\frac{h}{b-\frac{h}{m}} = q + \frac{q}{m-1}$$
[5] If $\frac{h}{b} = q$ then
$$\frac{h}{b+c} = q - \frac{q}{c+1}$$
and
$$\frac{h}{b-c} = q + \frac{q}{c-1}$$
[6] If $\frac{h}{b} = q$ and $\frac{h}{b} = q+c$ then
$$[6] If \frac{h}{a} = q + c$$

a ala p 46

⁸ ibid p 47 quoted versa 2

⁴ the p III quoted verse of

⁵ thid p 46 quoted verse 24

[#] ibid # 46 quoted verse *5

$$b = b - \frac{b}{\frac{q}{e+1}}$$

and if
$$\frac{a}{b} = q - c$$
 then—
 $b = b + \frac{b}{q}$

(7) If
$$\frac{a}{b} = q$$
 and $\frac{a}{b}$ m another fraction then—
 $\frac{a}{b} - \frac{a}{k'} = q \left(\frac{b-b}{k'} \right)$

[SF II
$$\frac{a}{b}$$
 = q and $\frac{b}{b+x}$ = q - c then-

[10] If
$$\frac{a}{b} = q$$
 and $\frac{a}{b+e} = q$ then—

$$q' = q - \frac{qe}{b+e}$$

[III] If
$$\frac{a}{b} = q$$
 and $\frac{a}{b-a} = q$ then—
$$q = q + \frac{q}{b-a}$$

The a very sare all found in quotations given in the Dharalt They are act if a a y in war are femiled work The quotations are from Ardha-Mandhi are real to the Theorem the Theorem and the they are taken from Jaina works on me out of the presentation is that they are not present any essential are taken to when in They are reflected an age when division was considered a transfer on the present of an age when division was considered a transfer of the contraction. These reflects critically belong to an age when the place-

The rule of three. The rule of three is mentioned and med at several

Place! The technical terms in connection with the process are field 1 is Places, the recurrent terms in connection with the process are first a framework that the known mathematical works. The agreeded that Another man flows and first its figure step polose the lates ion of the lates ion of the common and the first interest in the common and the first interest in the common and the common a

The Infinite

Use of big numbers. The word infinite used in various fee et is f a an the literature of all ancient [copies 1 correct d finition and appreciation of all idea however came much liter. It is natural if at the extrect der altion was ere to The body and one in the numbers of meta exceeding to bing the that is fig. The following will show that in India the fa no fh largh size en principly and course on any anti- in course for the state of a factorial and in classifying the various notions connected with the term infaite and in coling the corre I definition of the numerical si finite

The evolution of scattal le notation for expressing LZ numbers as we'll see if the idea of the infinite arise when abstract presoning an it timbing resident as a secretary the trues of the formulate arise when someter resonant and trunking from the high standard to Europe Archimedes tried to estimate the comber of and pare see ingo and tire an autope are full soft in the electron the info to and the limit. They however did not jouese smalle similar for the extremely 11 g numbers. In In his the Hindu James and Hulling thin place usels expression of pora and stole of smithly a amplo leads for the burbone in factional to a met of organic entired summer of all brings beings in the Laurence of time in the line of the Laurence of time in the line of the laurence of time in the line of the laurence of time in the laurence of tim [Points or places] in the Universe and so on Three methods of expressing big numbers were emit fed -

(1) The place-value notation using the sale of talletteen with may is noted that humber-mames leved on the scale of tent were chaif or premumbers as large as 10100

(2) The law of in lices (tarka same a fa fass ome following in case and expressions for Lig numbers, e g-(1) (2)=4

(ii)
$$(2^3)^{2^3} = 4^4 = n_5$$

P.C. is samed And of a This number A sain that it is no w

E II d Mad as I (I won a

(") The logarithm (ardhaccheda) or the logarithm of a logarithm
cardhaccheda-salaka) was used to reduce the consideration of big numbers to those
of smaller ones, a g.—

It is no wonder to find that today we take recourse to one or the other of the above three methods of expressing numbers. The decimal place-value notation has been the common property of all nations. Logarithms are used whenever cal cristicae with big numbers have to be made. Instances of the use of the law of indicate or express magnitudes in modern physics is common. For instance, the numbers of pressure is to universe has been calculated and expressed as—

And Shewer number which gives information regarding the distribution of trees is expressed in the form—

At the above methods of expressing numbers have been used in the Dia a's. Is for we that the methods were commonly known before the serenth exists A. D in lawfa.

^{1 &}quot;-- 21 -- 713' 2 " erressed in the located motetion = 15 747 791 286 275 007 577
1 -- 34 9 346 717 914 579 716 709 866 231 425 076 185 631 031 296

Classification of the infinite The Dhank Erres a classification of the Infinite. The term inhinity has been used in hierators in soleral source infinite as full uses.

According to it there are absent kinds of Leasurcature ut the initiate is the large in before a constitution of the form infinity has been used in biterature in solient. Since the state of the constitution of

or may not really be infinite might be collect as such in ordinary contestion or by (1) Namananta - Infinite in memo An aggregate of objects which may or may not really be founded might be culted as soon in occultary conformation or op
or for ignorant persons or in interacting to denote breatness. In social a confession or op
arms and a sectian confession and a sectian confession the ve me kunaane ferrom de to merculus to mondo keralios kerm infinido medida infinido do presenta al mando o de la complicación de tradicios de tradicios de la complicación de la complin

(2) Sthapanananta—Attributed or associated infinity This too 19 and

the real infinite

The term is use I in cite infinity is attributed to or associated to interpret to the real infinity. This too is not included to or associated with [3] Draypananta—Infinite in relation to knowled & which is not used to the standard of the sta time being are that Loonledge

The term is welfor Persons who have knowledge of the latitute but do not for the tual jurie as proj lo mathematica.

Gananania—The business infinite This term is used for the (5) Apradesikansnia—Dimensionless : a infinitely small

(6) Ekanants—One directional infinity. It is the infinite as observed oling in one direction along a straight line

(7) Ubhayanania-Two directional infinite This is allustrate I by a ntinued to infinity in both directions

(8) Vistarananta-Two dimonsional or superficial infinity This means to | lane area.

(9) Sarvananta—Spatial infinity This signifies the three dimensional

(c) Bhayananta—Infinite in relation to knowledge which is not to ed to sed for a ferson who has knowledge of the manufer and who need that Saswatananta-Everlastin, or in lestrictit to

Move its jetti n is a comprehensis one including all sons a to which Gananananta (numerical infinite)

availed ris least in that in the in a constant with the in of the other infinites enumerated above. For in the other kinds of infinity "the idea of enumeration is not found." If the also be naviated fits the "inversion infinite is describable at great length and in simple." The statement is rightly real that in Jains hierative ananta (infinite) was defined more thoroughly in the interval. The District have suffered above commonly used and independent of the District has described an analog are frequently mentioned along with numbers called sarrhing drawly ananthing the

The number samkligate anamkligate and anamia have been used in Jack interature from the earliest known times but it seems that if of did not always carry the same meaning. In the earlier works anamia was certainly used in the same of infinity as we define it now, but in the later works anamianate takes the place of century by Nemicandra Farita-anamia I lukanamia and leven Japhanya-anamiana is sery big number but in finite.

According to this work numbers may be divided into three broad classes—

- (1) Samkbyata which we shill denote by-s
- (11) Asamkhyata which we shall deno e by- a
- (iii) Anania which we shall denote by- A.

The above three kinds of numbers are further sub-divided into three classes as below—

1. Simkhyata (numerable) numbers are of three ands

- (1) Jaghanya *amkhyāta (smallest numérable) which we shall denote by #1
- (11) Madhjama-samkhyāta (intermediate numerables) which we shall denote by- sm
- (iii) Utkrsta-samkbyāta (the highest num-rable) which we shall denote by-su
- II Asamkhyafa (un numerable) numbers are divided into three classe -
 - (1) Parita asumi hyāta (first order nanumerable) which we shall denote by-ap
 - (11) Yukts-asımibyata (medium unnumerable) which we shill denote by-ay
 - (m) Asambyāts-a amkhyāts (annumerably-unnumerable) which we shall denote i y- as

Each of the above three classes of further sub-divided into three classes, viz. Jrglauva (smallest) Madhyama (informedrate) and Dikrista (highest). Thus we

¹ dil [1

Jaghanya-parata-asamlhyata Mathyama-parata-asamlhyata 3 tr.	
a numbers includes	
1 Jaghanya-Panta-asamkhyata — 2 Madhyang-Panta-asamkhyata 3. Uthre-	
3. Trail	
2 Madhara-parita-asamkhyata 3. Uikret-Parita-a amkhyata 1. Jaghappa.	
7 T amilia amilia ata	
Jachenra-rel	A; ;
I Jaghanya-yukia-asumkhyata 2. Madhyama-yukia-asumkhyata 3. Util	اساء
2. Madhy ama-yukta asamkhysta 2. Uthrata-yukta asamkhysta	• j u
Utkrsta-yukta-asunkhyata Jaghanya-asunkhyata	
Jaghanya-agami L	#17
Balliyama-asan 1 asimi bee	23 m
Claret and Children and Atla	#5 tr
III Ananta anamkhyata-a antanthiata	
which we down	#aj
(1)	# 8 typ
(11) 3 Inenta (firmt	860
Bukta- Smante Corder infinite	
An (Infin fel- , which we also	ofr a.
divided into the cas of the difficulty which which	A. III
following and three clauses a seamkhrate and we shall denot	4
a numbers in the a sanbanya Mail.	J 44
As in the cas of the assuch judinels which we shall just divided into three clear of the assuch judinels which we shall deed following numbers in the "agreement Jaghanya Mall june and Utkrta extint m." Inghanya-jaria-manata Malhya-jaria-manata Utkrta extint m. Utkrta extint m. Utkrta extint m. Utkrta extint m.	t
2 Manya-jarita-an	F # 13
3 This ame - Daniel	. I ave I m
July and the second	
Jaghana 4	

Aju

Att

Ajm

Aig

4.4

A 1 tn

442

Acr 11

Aim

Jaghanta Jul ta-ananta

Madi Jama-Jukta-ananta

Uthreta-3 uhta-anınta

Jaghanj a-ananta-anvnia

Madlitama-snanta ananta

Numerical value of the Samkhyata tien the Jaghanya samahasat ; the n an lost

Uthreta-anants-ananta

n mber that threat militari

termer a film like a kt t the number man 1 1 > 1 cc 1 1 1 1 1

akarekata I samiki sam mi mba

The wilth of any ring whether land or water is double that of the preceding neg The contral core (t.e. the mittal circle) is of 100 000 jojanas in diameter and is called

Consider four cylindrical puts each of 100 000 Joyanas in diameter and 1000 So and deep Call the e A_1 B_1 C_2 and D_1 Imagine that A_1 is filled with rape-seeds and furth r rape see is are piled over it in the form of a conical heap the topmest. layer con inting of one ened. The total number of seeds required for the operation in-For the cylin ler 19791209 193968 1031

We shall call the process de cribed above by the term 'overfilling" a cylinder with Physic radig

on take the seeds from the above over filled pit and drop them beginning fr m lamining one on each concentre ring of fand or water of the Universe. The to a control would fill on a ring of water Let one representations and the let one representation of the let one representatio earlie Int in B, to denote the end of this operation

cw imagine a cylinder with the diame er of the boundary of the ring of ye ri owh h the last raje-see! was dropped in the above operation and 1000. 3. 21 100, Call this cylin for \ \lambda \text{Imagino } A to be overtilled with rape-seeds. Drop the president of water attained in the president operation water attained in the president operation will have be en noing airre the loss ring of water attained in the previous operation of the ting of in last and the descended dropping of coeds will lead to ercot water co which the last see it is dropped

 \mathbf{l}^n , a cross small in B_l to denote the end of this operation

Irs, no niw a cyl nier with diameter that of the list rin, of water attimed is a lift. It raid p fall this spinder that of the last ring of water attimed in the last ring of water attimed in the same is to drove ten the man and it is be over illed with to it is a see the leading the transformer as before the initial and water as before

officers emiliantially in verifice. The above process

r f |

ı

Then the Jaghanya-panta-asamlhyata app is equal to the number of rape-And Utkreta-samlhyata = su = ary - L

Remarks -The central idea in dividing numbers into three classes seems to be this. The extent to which numeration i. e counting can proceed depends on the num ber-names available in the language or on other methods of expressing numbers. In order therefore to extend the bound of numbers which may be counted or expressed in speech a long series of names of numerical denominations based primarily on the scale of ten was comed in India. The Hindus contented themselves with eighteen de nominations by the help of which numbers up to 1011 could be expressed in speech. Aum bers creater than 1017 could be expressed by repetition as we do now when we say million million etc. But II was realised that repetition was cumbersome. The Buddhists and the Jamas who needed numbers much begree than 1017 in their philosophy and cosmology coined denominational names for still greater numbers. We do not possess Jaine denominational names, I but the following series of denominational names which is of

I The Jaines proceed in this old literature a list of names denoting long periods of time

with the year as the unit. The series is as follows -III Atata (2002) = Sillaths of Atatangas 1 Varus (क्षे) = 1 Vent 19 Amenanga (wanta) = 51 Atat a 2 luga (भूग) = 5 lears 8 Purvà ge (qqiq) = 84 Lakhe of years 4 Purrs (98) = 84 Lakis of Purrangus a Nayutanga (लयुन्ति) = 84 Purras C hayuta (明明) = 84 Lakba of hayutangas 7 Kumudanga (अपूर्ण) = 84 Nayutas 8 hamed (944) = 84 Labbs of humblangs os Latenge (Polq) = #4 Habet 9 Padmanga (quin) = 84 humodas 10 Padms (qq) mr 84 Lakhs of Padmangas 11 Malinanga (महिन्दाय)= 86 Palmes 1º halina (तारेन) = HI Laklis of halinangs 18 kamalanga (表表詞() = 84 %alinas 14 hamala (433) m 86 laki a of kamalar gas 30 Ha tar rabel to egg- (33) = 84 laki a of La Truttiangs (शहित्रीत) = 84 ham lan 16 Trutta (4(2) = # Latte of Tre trianges # ac lapra (4444) = 64 Latte of I" Atstanga (wrzin) = ## Trutites

0 Amena (知明) = 84Lakhs of \mamangas *I Hahanga (gigly) = 84 Amemas

oo Half (EHH) = 64 fahl sol Hal ger 3 Habanga (Fffit) = #1 Halas of Hoto (FF) = 84 Labba of Hal ngus

of Late (() = ## Lake of Latt pgss ॰? Mahalatanga (महालांग) = १३ Latas S Mahalat (411071) - 84 Lakha of Mahalata gas

og S zikelpe (after) a 84 ... 5 1 119

This list is found in the Triloka prayments [4th-6th cent] Harrante purana (6th cent.) and Payarartiska [8th cer t], with a few vars tome in the n mes only Accord g to a st to ment found in Tribka-pray apts they be of Aca pra is obtained by makel ing II I wee

Acelepes un Bi^{El}

and that the value will fead us to 90 dec mal places. Acc ed , to Logar thus: tales, however 8131 me es as only sarry de, and places of notation. ("ee Dhara III surhunds a and footnote p. 34) -Edder

```
Roddhist origin is interesting-
```

```
( 10 000 000 )8
                                                              =
                                         15
                                             abbuda
                        1
ι
  Fka
                                                                   ( 10 000 000 )
                                         16 nirabbida
                                                              =
2 dasa
                        10
                                                                   ( 10 000 000 )10
                                              ababa
                                                              =
3 sats
                        100
                                         17
                                                                   ( 10 000 000 11
                                                               =
                                         18
                                              ababa
                        1000
4 201223
                   •
                                                                   ( 10 000 000 its
                                              stata
                                                               =
                        10 000
                                         19
5 dass eshasse
                   =
                                                                   ( 10 000 000 )13
   enta subassa
                        100 000
                                         20
                                              Bogandhika
                                                              =
                    =
                                                                   ( 10 000 000 )14
   days esta-eshages =
                        1 000 000
                                              uppala
                                          21
                                                               =
                                                                   ( 10 000 000 )15
                        10 000 000
    Late.
                                              kumuda
                                          22
                                                               -
    rakota
                        ( 10 000 000 )2
                                                                   ( 10 000 000 pt
                    =
                                          23
                                              pundanka
                         ( 10 000 000 )3
10
    k tiprakoti
                     =
                                                                    ( 10 000 000 117
                                              prduma
                                          24
                                                               =
                         (10 000 000 )(
11
   Dabu.a
                     ==
                                                                    ( 10 000 000 )15
                                              kathāna
                                          2,
19
   n anahuta
                         f 10 000-000 p5
                                                                    ( 10 000 000 )19
                                              mahākathāna
                                          26
13 aki-55 m
                     -
                         ( 10 000 000 }s
                                                                    ( 10 000 000 F)
11 1 m2n
                                              asamkhyeya
                                                               =
                         ( 10 000 000 \?
```

It will be observed that in the above series asymkhyeya is the last denorret - This probably implies that numbers beyond the asamkhyeya are beyond name rates as a numerable

1 rts-

The value of ammilhyera must have varied from time to time. Nemicandra! sa whire are costs and different from the mankhyeya diffined above which is 10117 Asarakhyata -As alrea ly mentioned the asamkhyata numbers are divided in there treat et mer and each of them again into three sub-classes. Using the nota t mg renat we have accoming to bemicandra-

```
(ap) 15 m sn + 1.
   Jaghanya jenta asamkhyata
   3's " ve'ms | srita-esemkhyata
                                             > apj but < apu
                                    (apm)
   Lik sta-pari a asamkheata
                                    (apu)
                                             = ayj - 1,
# 1410-
                                             = (apj) apj
   Je tanys-yukta-samkhyata
                                    (ayı)
                                     (aym) to > ay) but < ayu
    ha byen ; yakta-asamkhyata
    U areta yanta asamkhyata
                                              = as - 1.
                                     (ayu)
a pro-
    I hanva-seemkhysta-seamkhysta
                                              ر(ey))<sup>2</sup>ا
                                     (sai)
    1. tems-amminyate seamkhyate (sam) is > say but < sau'
    I ar a mesmabysta-esemblysta
                                     (Bill)
```

A man's i r Ja hanya parita ananta

A Rock a- The numbers of the ananta class are as fill www.-

* "A 18 1 f .a enanta [At]] is obtained as below -

$$E = \begin{bmatrix} 1 & \cdots & 1 \\ 1 & \cdots & 1 \end{bmatrix} \begin{bmatrix} \{\{uu_j\}^{\{uu_j\}}\}^{\{\{uu_j\}^{\{uu_j\}}\}} \end{bmatrix}$$

Ist C - B + mx drawgas!

Let
$$D = \{(c^r)c^r\}^{\{(c^r)c^r\}} + t \text{ or aggregated}^T$$

Then Inclinarya parata-annota [Ap.] = $\{(B^b)D^b\}^{\{(B^b)D^b\}}$ Malbyams panta-ansata [Apm] is > Apy lut < App

Uthrus-parits-anants [Amil = Avi = 1 where-

Ja hanya-yulfa-ananta [Ari] w fare y(ari) Mall yams-yulte-snenta [Aym] is > Ay; lut < Ayu Uthres julis-ments [Ayu] = AAj - 1

#J+14---

Jaghanga-ananta ananta [AA]] = (\yi)2 Mathyama-ananta-ananta [AAm] is > A4; but < AAu be berrown

A Au stan le for Ut Lesta-ananta-manta, which according to Aem candro is

of tain of as follows -Iai-

 $\lambda = \left\{ (x_x)_{x_x} \right\} \left\{ (x_x)_{x_x} \right\}$ + thom 14

T! six desty s are the spatt | pour to of (1) Di arma (2) Adharma (3) one Jica (4) Lolalasa (w) apr tusti ita (regetable m ele j and (6) & ratisti ita (regetable sonis)

? The for a prepated are (1) in tanta of a kalja (2) spatial units of the Universe (8) anuti agabandha-all yava aya-atl ana and (4) arthi aga praticebeda of 1 oga 8 There are (1) s Ill a, (2) chili denne-rannopali ni, ala, (8) vana jati (4) po? gal (5) er v is a kale, and (6) al Lake a

4 Ti ese are (1) Di arma dea ya () adi arma dearya, (agure-lagi u guna ar bi 45a pr treted of bott)

Now, the aggregate known as kevalajnana is greater than x and-

= Kevalamana

Remarks-From the above it follows that-

[1] Jaghanya-pinta-ananta [apj] is not infinite unless one or mon and drawys or the one of the four aggregates which have been added to obtain the one of the four aggregates which have been added to obtain the open added the op

[11] Utkrsta-ananta-ananta [AAu] is equivalent to the aggregate According to the description above seems to imply that the nikrita-anadia continues to the survivalent to th and dependently and dependently on above acous to imply that the directal many be carried in a manufacture of the dependent o as the content of any artifumetical operation however for it may be carried as any number a which can be reached by arithmetical operations. It was to not therefore that Kevaldynana is infinite and hence that ntkryla-anania-an

Thus the description found in the Trilekasara leaves as in doubt as whether any of the three classes of parits angular and the three classes of yearts. and the large classes of partic enames and the tures classes of your ment to be a standard and the large classes of your ment to be the manufacture of the standard and the large classes of your ment to be the manufacture of the standard and the acus con jagunnya-mannta-mannta is actually infinity or not in as much as inny are-sand to be the multiples of asamkhyata and even the angregates that have been said The also as the distribution of the Dhavala is actual infinity for it is are any assummy as only light the Ananta of the Dhavala is actual infinity for the clearly stated that a number which can be exhausted by subtraction cannot be called annts 1 it is further stated in the Dhavais, that by aniota-annels is always made anatics . It is further stated in the Dhavaia that by sanata-anasta as siways members the madbyama-anasta anasta. So the madbyama-anasta-anasta according to the

The following method of comparing two accregates given in the Dhavil is very interesting Piece on one sade the aggregate of all the past Ayasarpinis and Usar Pinis (to the time-metants in a kaips which are supposed to form a common and principle the time-management in a kalps which are supposed to form a continuous are consequently infinite) and on the other the a gregate of Mathyadrata practice. Then taking one element of the one a strength of Mithy advitt jiva-income other discretishment of the one a strength of a corresponding element from the other due of the manner the first aggregate as a name of the first aggregate a whist the other is not 3. The Dhavda, therefore concludes that the start aggregate is exhausted in the start aggregate of exhausted withy adrift -raif is hereafer that that of all the past time-instants.

The alove is nothing but the method of one-to-one correspondence which forms the classes is nothing but the method of one-to-one correspondence when the classes file as where they yet infinite cardinals. It may be argued that the method is alphon in to the Comparison of finite ar limits also and so was taken tec use t (the comparison of hate ar hard also and so was the meres in a fine seems to the comparison of hate ar hard also and so was the meres in a fine seems.

11 8 6 11

could not be consistent of any known numerical denomination. This view-point is further appointed by the fact that the Jains works for the distribution of a time inclusion and so it is made of humber of times in stants in a halps of Actoracy and Distribution of the facts as the halps itself is not an infinite internal of time. According to the latter view the lag large partial annual (which according to definition is greater than the aggregate) of time instants) is finite.

As already front I out the method of one to-one corresponden a has pro ed to be the mast proceeded to for the andy of such as cardinals and the disco cry and for I use of the part to count be carried to the fa use

In the above classification of numbers. If one a primitive attempt his solves a theory of inter-cardinal numbers. But he was some serious defects in the theory. These defects would lead to contradictions. One of these is the assumption of the set tence of the number c=1—where we fulfill and a limiting number of a class. On the other hand the Janus convergions that the ranguta-sumrarguts of a cardinal c (i.e. g.) would lead to snew number is justifiable. If it is true that the Uktriat-sumshipsts of the early Janus theretaire corresponds to infinity then the creation of the numbers of the anomal class autorizated to some extent the modern theory of infinite exclusions. Any section activity at such an early age and large in the growth of mathematics was bound to be a failure. This wonder is that the attempt was not feet at

The existence of several kinds of infinity was first demonstrated by George Cantor about the middle of the meet eith century. He gave a theory of transfinite numbers. Cantor acceptable in the domain of infinite aggregates have provided a sound laws for mathematics, a powerful tool for reserved, and a baggaage for correctly expressing the most abstrace mathematical fields. The theory of transfinite numbers however is at present in an elementary stage. We do not as yet powers a calcular of these numbers and so have not been able to bring them effectively in mathematical analysis.

A. N. Singh, D. Sc.

Lucknow University

INDEX

(Oming to difference for an item is many a sea for elementation of Drawn's The file of interest in the help files restricted as Sanskrit and Prakrit technical terms of restriction.)

Anubhagabandha adhyassya sthana

Avasarpini (জনদর্গিণা) xx, xxi Bappadeva (বন্দৰ) iv Benares (বনাণ) i Bhadrabahavi Sainhita (মহৰাহ্ণী ভাইবা) iv

Bhal abahu (ereng ph Bha_arati e atra (gerter) i fi Bhackata (greet) (Bhattatpala (ur TT) # Bharanan a (Arrar) *iii Brahmarup a (eurs) in Brhat Samhita (grate q) iv fa Caturti achinia (474) 7 11 Dara (en ek en) triii Deys (27) 11 Dharma (wa) xis fa Dhavala (urr) in iv, etc Dravgananta (रक्तर) xiii Dravya pramana (न्यानार) Y Eka (ou) xviii Elananta (ज्यान) XIII Ganita (गरित) 1 Gananananta (गननानन) siii Ganitanuroga (गगितादाण) 111 Ganita sara samgraha (गरिनग्रानग्री) Gommatasara (ग्राम्बरमार) v fa Haha (राहा) xvn fo

> Jaghanya asamkhyata asamkhyata (अय यन्जसन्यात असन्यति) xv,xviii etc

```
Jaghanya parita-ananta जवस्पनरीत-व्यवतः )| Madhyama yukta र
         Joghanya panta asamkhyata (क्यन्यीर | Mahakathana ( महार
         Jaghanya yukta anunta (जगरनाज्ञनकः) Muhalatanga ( मराजना
       Jaghan) a yukta asamkhyata (अष्य अस्त / Malabar (असमा )।
                                        xv xix | Mahaviracarya ( ugial
       Jambudiipa ( Angely) XII
                         वनस्थान ) पर xviii etc | Malayagiii ( मनगोति ) ।
      Jiva ( alir ) xix fo
      Jirakanda ( aliejos ) v fa
                                               Mithyadrsti Jiva rasi
     Jiva rasi ( बीनताडि ) ए
     halpa ( कल ) xiz fa, xx xxi
                                              Mysore ( भेगूर ) :
     hamala ( स्मल ) xt ॥ fn
                                              Nahuta ( नहुन ) xvm
    Kamalanga ( क्यलंग ) xvu fu
                                             Nalina ( निन्त ) xvii fo
    Karana bhavana ( कालमावना ) ।प
                                             Nalinanga ( नित्नांग ) zvii !
   Karanasuyoga (ब्रावायुगेन ) मा
                                            Namananta ( नामानन्त ) प्राप
   Kathana ( क्यान ) xviii
                                            Nayuta ( नदुन ) xuu fn
   Ketala juana ( रेक्ट्रबान ) xx
                                           Nayutanga ( नवुनात ) 2111 fn
  Lott ( Th) 1, xviii
                                           Nemicandra ( नारिक्स ) xir,
  Potibbarofi (albash) zani
                                          Ninnahuta ( निषड्ड sl. निण्डुड
 Lectra samasa ( सत्रवसात्र ) IV
                                          Nirabbuda ( Arig, ak Arig)
 framuda ($35) xvii fn xtiii
                                         Padma ( qw ) xwn fn
humudanga ( gasta ) xsu fo
                                         Padmangs ( q-|q ) xvn fu
                                        Paduma ( पहन al पन ) xem
Lundakunda (3535) 17
Kusumapura ( seast ) u
                                        Pakoti ( qelft, ak nife ) xviii
                                        Pali ( 979) y
Lata ( est ) xvii fn
                                       Parita ananta (9/17-37-3 ) xiv
atanga ( क्लंच ) xs 11 fo
okalasa (शेशगह) बाद fo
                                       Pataliputra ( qrf 74) 1
adhyama-ananta ananta (सम्बन्धन
                                      Phala ( vo ) xi
                                      Prakent ( Titt ) it Ti Z
                                     Pramana ( प्रमान ) हा
dhyama-asamkhyata asamkhyata
                                     Pratisthita ( xfife? ) xix
मन्त्रम-अमेलवान-अमस्यान् ) प्रथ प्रशास etc
                                    Pudgala (5"% ) xix to
thyama parita ananta ( वन्त्र-तार
                                    Pundanke ( gerde ) xvm
                                   Purana Stre 110
hyama panta asamkhyata ( कृत्यूव
                                   Pursa ( uf ) ven fo
- NEGIT ) XY XIIII etc.
                                  I arear os ( des ) zen la
is ama s upta ansota ( and 24 padparana panastati nivers
                                  hajasarttika ( erzente ) zvii fa
                                                 बरहर्षा भार हे हुन्छ ह
```

Sabasea (सहम्म, sk सरस्य) xviii Samantabhadra (समलमद) ।प Samkhyata (सन्दान) siv, vv Sarvananta (स्त्रीनन) प्राप Sasratanenta (शासनानन्त) xiii Sata (47, ak 23) xum Sathhandagama (वर्मदागम) ।।। Shamakurda (वानकुद) अर Siddha (fer) xit fn Siddhaeera (Figer) 19 Silanka (Elair) iv fin Secondhike (am'ur ak aifus) veiii Smaradhyayana (स्वराज्यन) iv fa Stidharacetya (कावगवापे) 1, 11 Sakalta (xtra) xen fo " u'avatara (#####) iv Stianacra suita (श्यानीय सूत्र) sv Sti aparananta (स्थानानल) पा। Se i statte (Emmy) it St var a rafti (eftenft) iv े " serte "s soirs (त्यातांत त्य) av in Varga salaks (वर्ग स्टारा) था। Tat' vart' ad' igama-autra bhasya (रुप्तप्यः शियससूत्र सहस्य) iv Tax is (17477) 1 Trabages 3,41 (fr rennet) iv xvii fa Tr kata & (former) 18, 218, 28, 25 Tris bein (freig) vit Tre a (are) sou fo Tr. 4 % (9 24) 1911 fo TERIC 2 (PROFF) 19 1111 (SECURE) & 474- J L & (284) 2 L 23113. (1226) 18

Uppala (রখন, sk রমন) xviii Utkrsta ananta ananta (उल्क्रप्ट-अनन्त-बनन) XV, XIX Utkrsta asamkhyata asamkhyata (उ. रृष्ट अमन्यान अमन्यान) 🗴 ४, ४५ III etc Utkrsta parita ananta (उत्हर प्रति-त्रन्त) XV XIX Utkrsta parita asamkhyata (उत्तर्भीन अमस्यात) xv, xviii etc. Utkrsta yukta anantaउन्हर युनः अनन्त) ZV, XIX Uthreta vuhta asamkhyata (उन्हर्ना अवस्यात) प्रच प्रचारा etc. Utsarpini (उन्मर्शिणी) xx, र४। Uttaradhyayana sutra (उत्ताम्पवनमूत्र) Vanaspatı (वनस्पति) xıx fo Varahamılıra (बराहमिहिर) 11, 17 Varga (वर्ष) vs Varga samyarga (बग सवग) 🔀 Vargita samvargita (वर्णिन संवर्णित) था, vit, viti, xi, xii fa, xxi Varas (47) xvit fu Viralana (शिम्ब) ए। Viralana deya (विल्ल देव) था Vitasena (बीरमेन) iv Vistarananta (विख्यानच) प्रापं Vyavaharakala (व्यवहार वाल) प्राप्त for Yogs (याग) xix fa Logana (बोदन) xv Yuga (34) xvit fo

Yuka (57) xiv, zv

Yuktananta (गुरानन) xiv

सिद्धान्त और उनके अध्ययनका अधिकार

जैनथमें बान और विरेक प्रयान है। यहां बनुष्यरे प्रयेक कार्यग्र कार्रो कार्रा और नुपरिंग विस्ति के विद्यार रिका गया है। वार्या प्रयान है। वार्या वार्या प्रयान वार्या वार्या प्रयान वार्या वार्या

भिनु धर्मस उदाच ध्येव और शबस्य स्टेश प्रमानियन मही स्ट्रेन पाता। गर्यों ही
में गुर बहलानेशी अभिज्ञाया रखने ग्रल पातिकांकी हृद्धि हुई, और हानकी दीनना होने हुए
में मर्गाराने बाहरणी माने बहेन हुनने जोने, स्वाही उनमें अनेक स्थितहील और तहिन्द्रम माने बेसास भी आ ग्रुमते हैं, जो मोरी समाननी वर बनक पाने बन्ने बहे बनकि स्थान मन हैं। जनताम स्वाप्यापके सम्बन्धी भी प्रमी ही पुरू बान उत्पन्न हुई हा जिसका हमें बहुं 18 पानना है।

पर्यक्षणमती इससं पूर्व नीत जिल्ला प्रकारित हो चुकी हैं आर अब चीची जिल्ला पर्यक्त मा मुखारी ठी इन मिद्रात मध्यास आर्था आर्था आर्था अस्पार हम जन्म प्रवृक्त स्थार सन्तर ठा गाँठि ग्रंथा अर्थास कर अपूरवा और तस्तर वा अनुसन सर्था सर्थाति होते का वस्त्र विकास कार्यने मूर्वीच्या स्थानका प्रस्ता स्थान कार्यक्र स्थानका प्रस्ता स्थानका स्थानका

s नवपुत्रा गृहपालन २६ वाय सथसम्बद्धः नाम क्षेत्र सृष्टम्याना वः वसामि । सं निकः

२ सारापरान गान्धण्य संस्वतात संस्थातहान्दान

६ बारफीश्चर्मुमारा मुत्रो का(त्रका श्रमक अन्यराध सम्बन्ध र्वश्वाक प्रावक हर

7

मथुरा, भी ओरसे वसला कार्य भी प्रारम्म हो गया, तथा सेठ गुजानचरणी शांलापुनमी सहलकते महाधवलके सम्बाधने भी एक सीमिने सुसगरित हो गई है। श्रीयुक्त मनैया मी हेगड़ेने तीनों निहन्तिके मुख्यादको ताल्यमीय प्रतियोक्ति आधारसे प्रकाशित करनेकी स्क्रीम भी प्रमुत्त थी है। प्रशिक्त सिद्धा तका स्वाध्याय भी अनेक मिर्दिशे और शाखमडारों व गृहोंने हो यहा है। यहाँ वही, सम्बद्धिकी माणिकचर जैन पर्गक्षाव्य समिनिने अपनी गत बैठकमें धवजीसदानक प्रयम्भण सप्रस्तपाको अपनी सर्वव शांसी परीक्षाके पायवनममें सीम्मिटिन वार इन सिद्धा तोंके सम्बीचिन परन-पारन यह मार्ग भी स्वीट दिवा है।

इस सन प्रगतिसे निहत्ससार को बटा हुए है। नित्त एकाथ विद्वान अमी ऐसे गी हैं जिर्दे इन सिदार्तोका यह उद्दार प्रचार उचित नहीं जचना । उनके विचारसे न ता रा प्रपोक्त मुदण होना चाहिये, और न इन्हें निवाल्योंने अन्ययन-अव्यापनका निरम बनाना चाहिये। यहां तक कि गृहस्थमानको इनके पढ़नेका नियं कर देना चाहिये। उनका यह निके विष्

- (१) अनेक प्राचीन प्रवाम यह उपदेश पाया जाता है कि गृहस्यों के सिद्धा तीं के प्रवस्त पाया जाता है कि गृहस्यों के सिद्धा तीं के प्रवस्त पाया अध्ययनका अधिकार नहीं है।
- (२) सिद्धातम्य दो हो हैं जो कि घरल, जपपवल, महाधरलके रूपमें टीका हैं। उपरुच्य हैं, बाकी सभी शाल सिद्धान्तमध्य नहीं हैं।

प्रयम बानका पुष्टिमें निम्न टिखित प्रयोंके अवतरण दिये गये हैं---

(१) पतुनिद आनराचार, (२) क्षुनक्षामरकृत चट्माचूनटीका, (२) वागदेवर सामग्रद, (४) गेथानीकृत धर्मसम्ब आवक्राचार (५) धर्मीपुरेवरार्यकुपनर्गानर आवक्राचार

[•] दचा व सक्तनटाल कामी लिखित 'निदा तकाम और उनक अध्ययनमा अधिकार', मारना, वी स २४६६

६ रिगरहिम बारचरिवा विवाधकोशसु जन्यि अहिवारो । सिद्ध रहस्साण वि स्वश्नवण दस्सिरहागाध्री १॥ (वसुनिद्ध आवग्नाराः) १ वरण्या च मृर्वेत्रतमा त्रैशस्यवोगनियसक्य । सिद्धान्यरहस्याविष्यस्यया नारित दसविरसागाम् ॥

⁽ श्रुतसाया-सद्त्रामनगरा) इ.स.स्त्र विद्यालदामाऽस्त्र प्रतिमा चार्डमसम्मतः । इत्रम्यमानिकत्रमञ्जूष्टमा

६ वर्षेत्र जिद्यालयामाऽस्य जीवाना चाउँमरमुन्ता । स्वस्यप्रयक्षित्र न्तस्रयण माधिकारिता ॥ ५२० ॥ / जामान्य भागांत्रर ।

इ.क.स्यान्य वीरवणाण्यानिमाणाननाद्यः । व स्वावकम्यः निद्यान्यस्वरमाय्यननादिवस् ॥ ७४ ॥ (संयोगा प्रमाननादार)

५ दिर ज्यानिका अरस्या च सस्या । विद्यालास्ययः सूर्यालमा नाति सन्य ये ॥ (वर्षोपदर्शावरसम्बद्धाः

६) इ.स्नि-देवृत नीतिसार और (७) बाशाधरकृत सागारधर्मामृत ।

हन सब प्रयोंमें वेषठ एक 🜓 अर्थका और प्राय उंही शन्दोंने एक ही पद पार ाता है जिसमें कहा गया है कि देशजित श्राप्तक या गृहस्पको वीरचर्या, सूर्यप्रतिमा, जिक्का ग और सिद्धान्तरहरूपके अध्ययन करनेवा अधिकार नहीं है।

जिन सात भयोनेंसे गृहस्यको सिद्धान्त अध्ययनका निषेध बरनेवाळा पद्य उद्धृतिया गर उनमेंसे न ५ और ६ को छोडकर रोप पांच प्रथ इस समय हमोर सामुन उपस्थित है [ना दिस्त श्रारकाचारका समय निर्णीत नहीं है तो भी चूकि आशाधारि प्रयोगें उनके अवनर ये जात है और उनके स्वय प्रयोगें अमितगानिके अपतत्मा आये हैं, अत वे इन दोनों के बीच र्पीत् निकमनी १२ हभी १२ हभी सन्दादिमें हुए होंगे। उनके प्रपत्नी कोई टीका भी उपलप्त ी है, निससे टेटकरा ठाँर अभिप्राय समझमें जा सरता । उनरी गापाकी प्रथम पतिमें कहा गण कि दिनप्रतिमा, वे रचया और जिकालयोग इनमें (देशरितोंग्य) अधिशार नहीं है। इसी के हैं ' तिद्वतरहस्तान वि अमायन देसविरहान '। यदार्थन इस पहिनारी प्रदम पिटारे गरिव भादेशसा ' से समति नहीं बैटनी, जब तह कि इसके पाटमें हुए परिर्ननादिन हिया जाप। सेवतरहरक्षाण 'का अर्थ डिन्टी अनुवादकने ' शिक्षा तहे रहरपरा दरना ' ऐसा दिया है. जे

र उछटने हैं तो सम्बास्त्रके छक्षणमें देगते हैं— अत्तागमतकात्र ज सर्हण मुनिम्मछ होहि । सराहदासरहिये ते सम्मत <u>श</u>रोदम्य ॥ ६ ॥

शाध्यनीके किये गये आस भिन है। अवसायत अभिवाय समझनेके लिये यह आरे पीटेके

अर्थात् , जर आपत आगम और तत्वांने निर्माण श्रद्धा हो जाप और रास्त्र आदिक मेर्ड हो र ी रहें तब सम्पन्न दक्षा समझना चाहिये। अब बचा सिदान्त प्रथ आगमसे बादर है, जो ाहा अध्ययन पु हिया जाय ^ह या शहादि सह दोवाँका परिहार होकर निगल खन्ना उन्हें विना 'दी उपन हो जाना चाहिये ! आगमरी पहिचानरे लिये जांगरर गापाने वहा गया है-

मत्ता दोगशिमुद्धो पुण्यासरगयत्राज्य वरण । अपीत्, जिसमें कोई दोश नहीं बह आप्त है, और जिसमें प्रशास स्मिक्सी दोष न ही [यचन आगम दे । तब क्या आगमको विता देखे ही उसके पूर्वाण शिवन किको सर्व रूप कर शक, निमेन थदान वर रनेका यहाँ उपदेश दिया गया है । जैसा हम दर्भेने, आगम और विद्यान हा ही अर्थके योजर पर्यायवाची दा इंहैं। वहीं इतमें भेद नहीं किया गया। अपी देशी ना

नियम वहा गया है--

• भावकी बीरचपाह प्रतिमानास्वादिष्ठ । स्यावर्गन्नवारी विज्ञानस्वर्शस्यस्य वि च ॥ • च ॥ (هستداهستدسة)

६ शांविकाणी गुरस्यानां निव्यानायस्यक्षेत्रसम् । व बाबनीवं पुरंग विक्रम्मावयपुरनवस् ।

णाने जागुरपरणे जागवरास्ति तद्द व सर्नीय । त परिचरणं कीरङ् निरंप न जाग्दिमका ।। ३३३ ॥

अर्थात्, झान, नानके टएकरण अर्थात काल, और नानकारी सिय सन्तिकारा है। ज्ञानविनय है। और भीर---

दियमियरिस्त मुत्तागुर्वाच अवस्ममङ्ख्य बयाँ। सर्वामत्रासम्म ज बाहुमान्मण गाणिमा जिल्ला ॥ ६००॥

सर्पात, हित, भिन, त्रिय और क्यक्त अनुसार कान बोटना आदि यसनिवन है। इन गामाओं में जो शान, शानापक्रण और शानी का अटन अप्या उद्धान कर उन र विनयना उद्देश दिया गया है, तया जो क्यके अनुसार अचन बोडन का आदेश है, क्या इस निव और बंद सरणमें सिहान्त गर्भिन नहीं है। क्या स्त्रका अर्थ सिद्धान बास्य नहीं है। हम आने चड़कर देखेंगे कि सूनका वर्ष साक्षात चिन सम्प्रात्का दिशाय क्या है। नद किर बाह्यांनि सम्बन्ध एकनेया है सिद्धात सबोके पटनका गृहस्यको निव किस प्रकार विया जा सहना है।

अत्र शुनमागरतीका षट्प्रासनधीराको छात्रिये । कुदरुराचार्यस्त स्त्रगहरकी २१ 🗗

गाया है----

हुद्य च बुवल्मि सोस्ट्र भवर मायवाण च । मिक्व ममेद्र पत्ती समिदीमानेल मोगम ॥

इस गायाम आवायने व्यारह्मी प्रतिमानारी ट इट आव करे छन्न बन्टांय है कि वर मायासीनितर पाउन करता हुआ या मीनसहित भिक्षांते िथे अमण बरनेता पार है। इने गायाकी टीश समान हो जानेने पश्चात् 'क्ट च समन्त्रमन् सहावन्ति 'कहके चार आवार टह्युत की गई है, जिनमें चीषी गाया है 'कायच्या च स्त्याविया—' आदि । यहा न तो इसके योई प्रसत है जीत न पाइडगायामं उसके डिये कोई आधार है। यह मा पना गई। चटना कि कीनसे समन्त्रमद महाक्रीनेश स्थानमंत्र से पय उद्गत किये गये हैं। जैनसाहित्यों जो समन्त्रमद हुपसित है उनकी ठाइए और प्रसिद्ध स्थानोंसे ये तथा नहीं पाये जाने। प्रयुत्त हरके उनक विषय अवत्रावार्यों जैसा हम और। चटका देखेंगे, यासको पर ऐना कोई निवयन नहीं उनाया गया। भूताय वह अवनाण कही तक प्रमाणिक माना जा सक्या है यह शहरायद ही दे।

स्थय कुरतुराचार्यरी इतनी विस्तृत स्थलाओं में उदी थी इस प्रशास्त स्थार निष्यय नहीं है। इसी सुरगारुहरी गाया ५ और ७ ने दीखेंथे। वहां रहां गया है----

> मुमन्त्र जिल्लामित झोवापात्राहिबहुविह भन्त्र । हराहव च तहा जा जायह सा हु सीहुरी ॥ ५ ॥ मुनन्त्रवर्षीवयहा विस्तारिटी हु मा मुणवन्त्रा ॥ > ॥

अपात, ना बार जिनमण क्र करे हुए मुत्रोंने नियन आप, अनार आदि सार[ा] माना प्रश्रारे अवदा तथा दय आग अटेयस्त नामना दे बहा सम्यादित दे । सूत्रोंने अवि अप इ.स. म्युप्त निष्यादित है । यहा शुनमाणाना अनुना टीस्सोंने कहन हैं 'सुवस्वाय क्रिकें भीनव प्रतिवादित ... ष पुकान् कानावि वेति स प्रवान् रक्तुः सः वन्यत्वि । स्प्रापंपद्विनक प्रमान् मिम्पार्यक्तिन सावन्यः। व

यहाँ धुनसागरनी स्वय जिनाक सुकोर्द कर्षक धान है सह थी स्त्रीकार कर रहे हैं। वे ' पुनान' सार के उपयोगित कर भी स्वय बनाव रहे हैं। विशेष स्त्रीमा कर पर हैं। वे ' पुनान' सार के उपयोगित कर भी स्वय बनाव रहे हैं। विशेष स्त्रीमा कर्ष समस्त्री पेच अनियानिक स्त्रीमा कर्ष समस्त्री पेच अनुस्त्री के जिय हो नहीं, किन्तु मतुष्यव्यक निये जातरक है। ऐसी अस्त्रामें वे विद्यान्त बरोगी विनोक्त स्कीर क्षा है, विद्यान बरोगी विनोक्त स्कीर के वह समस्त्री नहीं कि स्त्रीमा क्षा है। क्षा अस्त्रीमें विराद समस्त्री नहीं कि उस निर्वेष्ठ कर वा स्त्रीमा कर्या स्त्रीमा स्त्रीमें दूर समस्त्री नहीं जाना । इसमे स्वय है कि उस निर्वेष्ठ वा वा तमा के सम्वयन पुरक्त्रावारिक सम्बाधि सम्बाधि सम्बाधि कर ता है। धुतसार वा स्त्रीमा स्वयाधि समस्त्री हो क्षा सम्बाधि सम्बाधि

इसलसून्य धम्मी अवस्ट्रा जिनवरींद निक्तान । स सोजन सक्ने इसमहीना 🗏 वरिष्दी ॥

इसरा सीणा अर्थ है कि जिनरेपने सिप्योंनो उपदेश दिए है कि धर्म दर्शनस्त्रक है, सिप्टिय जो सम्पर्दर्शनमें रहित है उसरी बदना नहीं करनी चादिन। अपान, वालि तमी बन्दरीय है जम वह सम्पर्टर्शनसे पुष्क हो।

ाम सन्या निरूपत्रव गाथानी टीकार्ने पश्चिकान्सम्ब क्यानकराभिष्टार पुरी ताह बास पटते हैं आर कहत हैं---

९ वरमातुरारिनेयह (बा ध या) यूनिको पु । ६ सननाहिक जार इतिहास च नाष्ट्राययमा वृत पु ४०७०४००

· कोऽयी दसनहीत-इति चेर् वाथकरपरमदेश्यविमां न मानवित, न पुष्पादिना पुनवित : पौर् के मृत्रमुखनते तदाः अस्तिकेषु कित्रवनेत निवेधनीया । तयापि यदि कंदाबह न मुखाति तदा समर्थेगीस्त्रके

रामद्भि गुपाद्भिष्ताभिर्मुचे साधनीया , सत्र पाप नास्ति " ।

अर्थात्, दर्शनहीन कीन है, जो तीर्थेक्क्यानिमा नहीं मानने, उसे पुष्पादिसे नहीं पूजते दर दे जिनमूत्रका उद्धान करें तब आरितकोंको चाहिए कि युक्तियुक्त प्रचनोंसे उनका निवेध कों, रेर भी यदि वे करापड़ न छोडें तो समर्थ आस्तिक उनके मुँदपर निद्यसे छिपटे हुए जूने मारे,

सर्वे जगभी पार मही। " यह है अनुसागर ने से भाषामिति और उन हा आहता । ऐसे द्वेपपूर्ण अध्येख वास्य एक

मान है जिल् तो बवा साधारण शिष्ट व्यक्तिके मुगसे भी न निकल सर्केने ।

अब बामरेशजों रेमाय समहको छौजिये जिसके ५४७ वें स्टाक मास्ति विकासयोगी अर्देन रसस्वी दिनमाने भारी शायकाते "सिद्धान्य व्यवण " के अभिकारसे वर्जित विया गया है। मनोपर्जना काउ रित्मकी १५ हकी या १६ हमें शतान्दि अनुमान किया गया है, 1 उननी '

क्राच्या केर लड़ी है, शितु १० वी शतान्दिके देवसेनाचार्यके प्राव्हन मानसमहरा कुछ र्प र ५१ र रहर रूपा पर है। उनको इस कृतिके निषयमें उस सबको सूमिकामें कहा गया है—

 दर माप्तपर प्राप्त प्राप्त भागसम्बद्धा ही सस्हत अनुगद है, दोनों प्रयोगी आमने रण रणस्य द[ा]न्या बर्**या अ**च्छी तग्द समझमें आ जाती है। यचीप च वामदेवजीने इसमें जगह कर अरेड र देन, पीरान और सरोधन आदि किये हैं, पिर भी यह नहीं कहा जा सकता

हि दर १९४६ मेर है। शिष्टन ही हाउस अच्छा होता, यदि प बामदेवजीने अपने प्रवर्षे यह Ere ef Era da up Bull fit देन मारे जाना ना सहाम है कि बानदेशनी किंग दों के छैलक और विद्वार थे। पर

रूपे र भेर दर्जी र अप वैशे रचनाहा उसका नाम विभे विना ही पुराचार उसका स्यान्तर म बह उ प्रश्ना है जिस्सा एक उपाहणा इसरे सामुप है। उनसे बोई छहसी वर्ष

< । राज १६ में रण जिंद स्थानम वर्गी । यह शान पार्श है । अव इ.ट. वे बहा वित्यापुत पन त्यादश छोषिये । इसमें उक्त निवधी और मी बण प्रभव राम विलाहे । तर बहा रूल है हि-

का पर मार्ग हर पात्र वारायक अस्त्राचन स् । स बामतीय पुरतः विञ्चानास्तृत्वकस् ॥ ^{कार}, "अक्षार अंग्यन, शृब्सों क्राप्त और यजी सुदिवाज शिष्य मुरियों के

कुम्माल (का किस) नुपंदातु ३

(0)

सामने भी सिहाल शाल नहीं एन्ज चाहिये।" इसके अनुसार गृहरूव ही नहीं, रिन्तु बरनु दि नुने और समस्त अविवाद भी निवंशक करेटेमें आगये। इसका उत्तर हम स्वय निहाल सहक्ष्मीके सम्दोंने ही देना चाहते हैं।

पाटन स उम्प्रणाकि सुत्र व भीर वसकी घरटा टीवाकी देवें ! सूत्र है---प्रेसि वेक वोद्यव्द बीवसमसाम परकाहराज व्यव इस्रांति वह बांग्याराम ने जनस्वतीय स्वरंति ह ५ व

-- ई परांडे क्लिश

े छत्प इमाणि भट्ट अविशागहाराणि " पुत्रदेशक, शेषाय भाग्यशिकासाहिति केत्रव दाव , इत्त्र इदिसाराणुमदार्थीसात् ।

अर्थात्, 'तय इम्मीन बड्ड विकासकारतान ' इनने मात्र गुरुन वार वण नक्त पर पर पर पर स्थानी स्वयं कार पर वण नक्त पर स्थान स्वयं स्वयं स्थान स्

पूरी बात आधाजाने बच्च वहां वह दो हा, शो बान भी नहीं है। ब्लीवर मैं है। स्टे विकास देनिये जो हत प्रवाह है 'अहबन अन्य किच्चारहो। ' यहां च स्टाबार पुन बद्द ने हैं वि——

वपीदेशसाधा भिद्धेत होत क्यावान् कोवाधियायक्तेत्रोगरी आवैःस्वास्य कार्यस्वास्य सन्दर्भक्तिति न, तत्त्व द्वसर्थे जनानुसक्षार्थानान् । सर्वसन्यानुस्वतिकः दि विन्यः वी राज्यान्यः ।

बर्योत्, जिस प्रकार उद्दार होता है, उसी प्रकार निरंत दिया बरण है, दर पिराव बर्गुमर से 'आप' प्राट्क गुनवे न स्रावर भी उत्तव वस्त स्राण मा स्वत्र पर दिर पर इ यही पुतरुष्पाण अनवेष हुआ हु इस स्तरता आयाय उत्तर देने हैं निर्मे हुने अ बर् करण माम्बुद्धिण स्थान अनुस्वत्र प्राप्तस्य अस्त भवन प्रवस्त कर्म हिन्स जितदत्र से नीसा हात्र है अयात रिम्सि मी सामा हिस्स केम हम कर से प्राप्तियोत्ता उत्तराम करना फाटा है वयन सम्मित प्रतिमान कर हम हम से स्व

स्वता के किया है जिस्सा करते के स्वता करते हैं के स्वता करते के स्वता करते हैं के स्वता करते हैं के स्वता करते करते के स्वता करते के स

4

('₹} षद्खडागम३। अरगवना

समानता है, इसकी इसके साथ नहीं । अन किरमे इमारा क्रयन करना नि ४७ है । इस प्रथम साचार्य समाधान वरते हैं कि-

ं व, वस्य दुमयमामिः स्पष्टीकाणाधस्यात् । प्रतिपात्तस्य तुमुल्सतायतिप्रयोगप्रीसाहन वर् बचमा फल्म् इति वावात ।

अर्थान्, पुर्वेक जाना ठीन नहीं, क्योंनि, दुर्वेष द्योगींकी उसका मान स्पष्ट हो जाने, यह वसरा प्रयोजन है। न्याय यही कहता है कि निज्ञामित अर्थका निर्णय करा देना ही बनाई वचनींका पा है।

ासी प्रसार प २७५ पर कहा है कि-

ध्रम्यन्यारकानिरमनाधमाह ^१

• अन्ययनस्य विस्मृतस्य वा शियम्य प्रभवणादृत्व स्वत्यावनारातः अधीत् उसे जिस बात्रा अभा तक शन नहीं है, अवना होन्त्र किस्पृत हो गया है, ऐसे शिल्पक प्रश्न वश इस मृतरा

धनना हुआ है। पृ १२२ पर वहा है दान्यायकनपान सावानुमहार्थ सम्महत्ते । हुईली बीबम्यातः । अस्यारस्य त्रिकारनाचरान् तत्राण्यपमया प्रदेशन्यतः ।

अर्थान् उस निरूपण द्रव्यार्थिक नयानुसार समस्त प्राणियोके अनुप्रहक्ते विचे प्रष्टुष हुआ है । मिम्न मिम्न मनुष्योंकी मिन किम प्रकारकी बुद्धि होती है । और इस आर्य-प्रयक्ती प्रशृति ती विशास्त्री अनत प्राणियोंकी अनेसान ही हुई है। पृ ३२२ पर नहा है कि 'जाताहरू

अर्थान्, अमुद्र बान किसी भी भन्य जीवारी शासकी निमारणार्थ कही गीर है। पू या वटा है---

विशानकृतिस्त्रनानुप्रदाय सम्याधिकन्यादणना सन्द्धियासनुप्रदाय प्यायाधिकनयादशाना ।

अदान, ताश्य बुद्धिक वनुष्योंके लिये बन्यार्थिकनयका उपदेश दिया गया है, औ मार बुदिकारीने जिये पयापाधिननयका । तुनीय माग पृ २७७ पर कहा है---

 दुमन्द्रामा वि जिमनवम् सभग्रः सद्बृद्धिमनामुग्याह्रद्रशन् सम्म सामलासः । अधान, जिल अयशन्र बालाये पुत्रहत दावशे सभारता भी नहीं बरता चाहिय बलेंकि, मन्त्रीय परवेश उत्तम उपकार लागा है, यही उसका साफल्य है। रू ४५३ पर यहा है-

मुद्दम्यस्थानः १६०म बुक्दः व अनीव सम्मन्यम्यावित्रमानुगाहकारणाय सन्दर्भयः । अनुह उत्तर्भ स्वय्न यमात्र क्यों । । इस्तिया, विक्तार क्यों क्यिं? इसके

टल है इसर , इब इजर अयत मंग्रद, न सभी प्रश्मा गाह्य अनुम्द क्लाम रि 14 28 1 3 F 1 12 F 191 F 1

इसी चन्द्र क क व प्रवृह्य है

दिशह्युबदचा निश्ना ६ १६ ^{९ स} समयनवायन्थितसन्तृत्वद्वाय पात् । व्य सङ्ग्रा निष्पी अ^{ति}र

अव न, दक्ष र न दाव अन्य आर अ ,शा, ऐसा दा प्रवण्याती वर्षी निर्देश विषा गया है

दै। पुन पृ ११५ पर कहा है--

पुरेण इस्तप्रज्ञाद्वियणयपञ्चायपरिणद्ञीयाणुग्गहकारिणा निजा इदि जागाविद ।

अर्थात्, अमुक प्रकार व धनसे यह ज्ञात कराया गया है कि जिन समगन् इच्यार्धिक और पर्यापार्धिक इन टोनों नवनी जीवोग्रा अनुगढ़ करनेवाले होने हैं।

प १२० पर बहा है---

' किमद्व परेसु सुनसु च जवणवदसणा' बहुव जीवागमणुम्महद्व । समद्वरदर्माश्रद्धि करून रिक्टरस्टरमोगाम्मवन्याहे।

अर्थात, इन तील सुर्योगे पर्यायार्थिनमयसे क्यों उपदेश दिया गया है ' (सदा उटर है कि जिससे अधिका अञ्चलह हो सके | सञ्चलहिष्माने जीवींसे विस्तारहिषयां जै जीव बहुन पाये जाने हैं । प्रश्रुष्ठ एर पाया जाता है—

उत्तमय किमिरि पुणा वि उश्वद प्रमामावा । ण अद्वृद्धिमदिवज्ञग्यसाम्बनुबारण प्रमोदसमादी।

वर्षाद, एव बार वही हुइ बात यहां पुन क्यें दुहराई जा रही है, इतरा तो बोई पण नहीं है 'इसरा उत्तर आधार्य देते हैं- मही, मण्युदि भणवर्षीके समावद्वारा उत्तरा एक पाया जाता है।

ये पोडेसे अम्मला धवलिकानके प्रवासित व्यसित वि गये हैं। सामन पर्यक्ष के ज्ञायस्वासेने दो बात मही त्यस्यों अम्मला इस प्रमादि दिव जा सकी है जाते स्वर धना के प्रवासित विस्तासीने यह रायल निवासित क्षारी प्रवासित विस्तासीने यह रायल निवासित क्षार किया कि प्रवासित क्षार क्षार के प्रवासित क्षार किया कि प्रवासित क्षार क्षार क्षार के प्रवासित क्षार क्षार क्षार किया कि प्रवासित क्षार क्ष

अब ह्यारे सम्बुद्ध वह जाना है पहिन्त्रवर आगाभारणंता वावन, जो निकासी १३ हो।
गनान्तिवा है। सनवा वह निषेपामक केन समाराध्य प्रवस स्वतंत्र अगामका ४० हो एवं
है। सारे पूर्वते पुरेत कृष वें भोगों रेकनती स्वतंत्रिया कि निर्मार्था के विकास के उन्हों से स्वतंत्रिया के स्वतंत्रिय के स

अपने भोतेंगर स्वय टीश भी जिल दी है जिलमे उत्तर, श्नाशमत श्रीमप्रण पृत्र सुन्यण श जाय | उन्होंने अपने---

'स्वाद्वाप्रिकारी विद्यान्तरूच्याच्यवन विच वा अर्थ हिमा है । श्वित्रान्तम्य वामणावन्तं सूर-इपस्य रहस्यम्य च प्राथमिनगायान्य कप्ययन वार्र क्षात्रको नर्गकारी व्यर्थित सर्व ।

अर्थात्, स्ट्रम्प परमागमके अपवासा अधिका भारतयो नही है। अर प्रथ वर उपस्थित होता है कि स्ट्रम्प परमागम किने वहना चाहिये। स्वा नश्मेन-जिनमेन गीन परमा अववस्त्रा टीकाए स्ट्रम्प परमागम हैं, या वित्तानके नृश्मिन परमागम हैं, या मगरा प्राप्त और भूतनिक तथा गुणगर आचारों के रचे बनेनामून आर क्यायनाम के सूत्र व सूर्यमायण मूक्का परमागम हैं। या ये सभी सूत्रम्प परमागम हैं। सूत्रकी सामाय परिमाण तो वह है—

• या य सभा सूत्रकृत प्रमानम् ह • नृत्रक्षा मामा य प्रारम्भारा ता यह ६— जल्पासस्मिदित्य मारवर् मूर्जनग्वम् । मन्त्राममनग्रयः च सूत्रं सूत्रविद्यो विद्

इसके अनुसार हो। पाणिनिके स्थाकरणमून भीर बाज्यावनके कानमून भी मून हैं, और पुष्पदत्त मृतनिष्टहत कर्मवाकृत था पट्खहागन और तमाश्चातिक तत्वार्थमून आदि प्रय सभी हर कोहे हो। किन्तु पदि जैन आगमानुमार सूत्रका श्विग आप यहां अनिश्चन है तो उसकी एक परिमापा हमें शिवनीटि आचापके भगनती आराधकामें निष्टर्गा है जहां कहा पदा है कि—

सुत्त गणहरकहिय छहेद पत्तेयदुद्दबहिय च । सुरक्षेत्रिणा क्ट्रियं सभिग्णर्गातुष्टिकहिय च ॥ ३४ ॥

इस गापाको टीका निजयोदयान यहा है कि तीर्थरिके कहे हुए लयेको जो प्रिया वन्ने हैं वे गणपर हैं, जिन्हें बिना परोपदेशके स्वय शान उपन्न हो जाप, वे स्वयद्व हैं, समस्त प्रुनीपक भारक श्रुवकेतडों हैं और जिन्होंने दशप्त्रीका अध्ययन कर टिया है और दिपाओं छ वडायनन नहीं होते, वे अमिनदशप्त्री हैं। इनमेंसे किसीक हारा भी प्रयित प्रयक्ते सूत्र कहते हैं।

का यदि हम इस कछोड़ी पर पर्ववागम सिद्धातको या अन्य उपप्रध्य प्रयोग करें ॥
ये प्रम 'स्त्र' किंद्र नहीं होते, क्योंकि, न तो इनके रचिवता तार्षकर हैं, न प्रचेत्र उद्दर, म धून केंद्र होते करी ॥
ये प्रम 'स्त्र' किंद्र नहीं होते, क्योंकि, न तो इनके रचिवता तार्षकर हैं, न प्रचेत्र उद्दर, म धून केंद्र होते का जावार परम्पासे मिद्या था। वह वहाँने प्रपविच्छेरके मयसे पुण्यत्त और स्ववंद्र होत जावारोंकी दिवा दिया और उसके आधार पर कुछ मयस्वना पुण्यत्त के और सुज मुनविद्र की तो पर्वामनक मामसे उपल्या है कीर जिस पर जित्रमंत्री नी भी अताल्दिय बीरसेनाचार्यने घवडा दीर दिखी। इस प्रभार पदि हम आशायरजी द्वारा उक्त सुनवित सामाय कर्षेत्र हेते हैं तो पर्वामनक सुनेक अनुसार तरावित्रीमम्बद्ध मा सुत्र है, सर्वामकिंद्र स्वाम सुत्र हमें सुनेक अनुसार तरावित्र मान्य सुत्र हमें सुनेक सु

धाराकवेबाजिताजसूत्रप्रवेगामार्गा मित्रवस्य थ स्वात् । हीनाऽपि रूप्या रुचिमन्सु तद्वद् थावाइसी सांव्यवहारिकामाम् ग अर्पात्, जिस प्रकार एक मोनी जो कि कानि-रहित है, उसमें भी यदि सका के द्वारा जिस

कर सूत (डोग) पिरोने योग्य मार्ग कर दिया जाय और उसे कार्ति गंडे मोतियों ही मालामें पिरो दिया जाय तो वह काति-रहित मोता भी कातिबांड मोतियों के साथ बैमा ही, अर्थान् कारि सहित ही सुरोभित होता है। इसी प्रशार जो पुरुष सम्पन्दिए नहीं है वह भी पदि सर्पुरेक्ष बचनोंके द्वारा अरहतदेनके कहे हुये सूत्रोंमें प्रदेश करनेमा मार्ग प्राप्त बर है, तो बर् सम्परच रहित होरत भी सम्पग्दिएयोंने नवींके जाननेवाले व्यवहारी लोगोंकी सम्पन्दिन समान ही सुरोभित होना है। सागार वर्षपृतकी दीका माँ स्वयं आसाधर नीती बनाई हुई है। उस

स्प्रोक्तरी टीमाने सूत्रमा अर्थ परवागम और प्रोज्ञामार्गमा अप " अतलकारिकादनीराम " विचा गया है, जिसमे स्वष्ट है कि आशा सर्वारे ही मनानुमार अधिनमन्यन्धिरी ते। यात वया, सम्पलकाहित व्यक्तिको भी परमागमके अन्तस्तरब्द्धान कानेका पूर्व अविकार है । और भी सागर धर्मामृतेक दूसरे अध्यायके २१ वे श्रीकर्मे आहाधरवी कहते हैं-

तरतार्थं प्रनिरय तीर्थकवनाहाहाच क्याजन नहीं राजस्तानराजित्महामन्त्रोऽलर्हुर्देवन । स्रोत वारेमवावैवयदमवी याची नगासास्तर वदाल प्रतिमायमाविमुख्यस्या निरम्बस्या ।। अर्थात्, तीय वान धर्माचार्य व गृहत्याचायरे कवनते जीवादिय परागोंशे निधित महते, एर देराजनहीं धर्म, दी असे पूर्व अपसानित बहाम प्रका धारी और विष्या देवन माना स्वा

सपा अगी (हादशीय) व पूरी (चीदह पूर्वे) के अर्थसपहत्रत अप्यान वारे आप णायीका भी भरीता पर्वकं आतमें प्रतिमायोगको धारण करनेशका पुण्यामा और पारोका नष्ट बरता है।

इस प्रयमें भाशाधरनीने अनेनसे जैन बनने हैं आठ सरहारे, अदान अहना, इसडाम,

स्वानज्ञाम, गणवह, बुजागरव, पुण्यवह, स्टबवा और उरवोविनका सक्षेत्रमें निकास हिला है, निसमें उन्होंने जैन यानसे दूर ही अर्थात् अपनी अजैन अस्माने ही जैन धुरांगी अदाद बहर अग और चौदह पूर्वते " अर्थसम्द्र " में आयान यर लनेता उपरेण दिया है । पूजापन, प्राण्या और दृश्यपा कियाओं हा स्वत्य स्वय बेत्सिनस्थावीह िष्ट तथा जरहरहोडे उत्तरमारह स्वित्य

तिमसेन स्वामी रे महापुराणमें भी इस प्रवार बन्छाण है --वक्रमाध्यात्रवतः स्थाना क्रियाधार स्थाननः यहा । प्रधारवायमगराया गृह्वना आध्यमार र समीऽन्या पुण्ययमारुया विचा पुण्यानुवन्धिनी । शास्त्रमः पुरेशियानामर्व समग्रयणीरः ।।

सन्दर्भ दरम्यातमा दिवा स्थानम् भूतम् । विद्यान्य स्थान्य समान्यसामाने स्रोतस् ॥ यहां भी जैन हानते पूर ही गृहरूका अंगों हे अदसमहत्रा तदा पूरे के विदानों हा पुन

हेनेवा पूरा अभिकार दिया गया है। यदि मेथा: इन ध्रमनश्रह सावन नार इस स्वर हुए र सामुख नहीं

है तपापि यह तो सुनिदित है कि प से गांग या मीहा जिनच उमहार को क्षेप के आर उसी अपना यह प्रच रि स, १५४१ में दिसार (पजान) गार्म बगुनिद, आशार और म्लन्सके अपना यह प्रच रि स, १५४१ में दिसार (पजान) गार्म बगुनिद, आशार और म्लन्सके प्रच ने जांग से पही मी न तो उसके का कि सो हो मी मान अगन बगना गां और न ससती किसी प्रति सुदित या हस्तानिवतका उन्नेष किया गां। अगरन इस अवात हुउ शह प्रचक्त हम परीक्ष क्या करें र यह कोई प्राचीन प्रामाणिक प्रच तो अगन नहीं होना। विषक प्रचक्त विभाग स्वित सुनि सुधमेसागरका के लिख हुए कि सुधमेशानका सार र का मन भी उस्ति किया है। कि तु प्राचीन प्रमाणी की जहां से से लेना हमने उचिन मही समझ। वह से पूर्विज प्रपिक आध्यस ही आजका उनका मत है है ना हमने उचिन मही समझ। वह स

इस प्रकार हम देखते हैं कि गृहत्यको सिद्धा त प्रयोक्ता निवेध करनेवाडे प्रयोमें कि रचनाओंका समय निश्चयत आत है वे १३ हमी शतान्त्रिस पूर्वकी नहीं हैं। उनमें विदान्तका अर्थ भी स्पष्ट नहीं किया गया और जहां किया गया है वहां पूर्मपर शिरोध पाया जाता है। कैर्र दिचत युक्ति या तर्क भी उनमें नहीं पाया जाता । यह तो सुझात ही है कि जिन प्रपोंमें पूर्वापर वितेष मा विदेश वैपरीस्य पाया जावे वे प्रामाणिक आगम नहीं कहे जा सनते । इन्द्रनिदेके बार्गोकी तो सीचे सिद्धात प्रयोंके ही वाक्योंसे किरोप पाया जाना है, अन वह प्रामानिक किस प्रकार निवा जा सकता है विधार्यत प्रामाणिक जैन शाकोंकी रचना और शक्षतके प्रवर्तनका चरमोत्ता कार्य सो उक्त समस्त प्रशेंकी रचनासे पूर्ववर्ती ही है। तब क्या कारण है कि इससे पूर्वके प्रयोमें हुने गृहस्पन्ने सिद्धात अपोंके अध्ययनके सम्बावमें किसी नियतणका बद्धे व नहीं मिलता । शासकाचारकी सबसे प्रधान, प्राचान, उत्तम और सुप्रसिद्ध प्रथ स्थामी सम तमदकृत रानकरण्डधावका बार है। जिसे मादिराजम्दिने ' अश्वयसुरावह र और प्रमाच दने ' अश्वित सागारमार्गको प्रकाशित करनेवान निर्मेछ सूर्व ' कहा है। इस प्रयमें श्रानकों के अप्ययनवर कोई नियन्नण नहीं उगाया गया, किन्तु इसके विगरीत सम्यादर्शन, शान और चारितको सन्यादन करना ही गृहस्वका संचा धर्म कहा है, त्या शन-परि•डेदमें, प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और 🛽 पानुयोगसम्बन्धी समल आगमका सक्स दिशाकर यह स्रष्ट कर दिया है कि इनका अध्ययन गृहस्यके छिये हितकारी है। इ यानुयोगका खर्प भी वहाँ टीका कार प्रमाच द्रजाने 'द्र यानुयोग शिद्धा तसूर' । किया है, जिससे स्पष्ट है कि गृहत्यके सिद्धाः ताम्ययनमें उ दें किसी अकारकी केद अभीष्ट नहीं है । इस आपकाचारमें उपवासके दिन गृहस्पनी ज्ञान ध्यान परायण होनेका विशेषहरूपने उपदेश है, तथा उत्हर आवक्रके विवे सन्द या आपनका ज्ञान अचात आरायक बनलाया है-समय यदि जानीत, श्रेषो ज्ञाता धुर मंत्री 4, २० ' यदि समय आगम जानीने, आगमती यदि भवति तदा प्रव निश्चमेन श्रेयो जाता स मगी" पर्मरीक्षादि प्रत्योके विद्वात् कर्ता अनिवासि आवार्य विकासनी ११ इनी हातान्दिसं हुए हैं। हनका सनाया हुआ आवकाचार मी खूब सुविस्तृत सप है। इस मप्ये व होने 'जिन-प्रवचनका अभिन 'होना उत्तम आवक्षमा आवत्यक स्थाप माना है। यथा---

कार्यस्थानात्रीत्राप्राध्वाचेवा । वित्यवक्तियाः व्यावक स्वाधाक्य ॥ १६, २ स्रोगे चटकर उन्होंने गृहायके। स्वाधाक्या आध्ययनं करना भी व्यावस्थक बतावारा है— कागमञ्चयन काव कृषकार्याद्विता । वित्याक्तिवित्त बहुमान्यिधाविता १६, १० गृहस्यसो न्यायायेने उपदेशमें स्वाध्यायने याच प्रकारोंने वाचना, आसाय और व्यानुस्कान

भी निरान है। यदा---

बाबना एप्पनाः स्वावतुर्वेक्षा प्रमेदान्य । ब्यान्यत्व वचया कृष वचमी स्वितिक्वतः ॥ १६ ८९ गृहस्पानि जहां ततः हो समे स्वयः जिनमगबाद्ये वचनारा पठन और झान प्राप्त प्रमा चाहिय, बसारि, जनरा रिना वे इस्वाहस्य रिग्रेसची प्राप्ति, च आम अहिनस्य स्वागः मही यह महते ।

कामाण्युण न जमे न रूप जैलेम्बर वाक्यमयुद्धमानः । कर मानुष्य गिक्सनि रूप सत्तामो गर्पाति हु समुग्रम् ॥ १३, ८९ करामानेन परितृत्वामा प्रशिक्तमा पुनरामानेनम् । परन्तिः पार्थात्रमान्नाप्रयायस्य सत्तानक्यमानेकामि स्ता ॥ १३ ९०

परास्त राषां अजनामाययाच्या समान्यस्थाना समा ॥ ११ ६० यथाप्त वे मूर है जो स्वर जिनभगरान्य वहे हुए स्टेरेंट छाडवर दुगगेंड बचनेंदा आश्रय रोते हैं। जिनभगवार्ड यावयरे समान दुसमा अयून नहीं है—

मुलाय सं स्कूमनान्य केन मूटा अयते बचन वरवात् । १६, ९१ विद्वार वास्य क्रिम्स द्वारं वर्ष न वीयुगिस्टान्ति शिवन् ह्व ११ ९२ इपारि

या जीतिहन प्रवास्तार भी श्रावताचारण उत्तम मण है। हार्ने गुरूमीजा उत्तरा दिया गया है कि श्रुवत अभावनें ता समस्त शासनका नाग हो जावगा, अब सर प्रयम बार श्रुवते सरका उद्धार वनना चाहिये। श्रुवते ही तार्वेचा परावर्गे होता है और श्रुवत ही रूपन परे बुद्धि होनी है। तीर्वरोध अभावनें स्तासन श्रुवते ही आपन है, स्वार्गि

नारण्यस्य ध्रत्यस्य धृत्राकारण्यः पात्रस्य । त्याणयोज्यस्य धृत्यस्य स्पूत्रस्य । स्वात्तस्यस्यस्य धृत्यस्य स्वात्तस्यस्यस्य । स्वात्तस्यस्यस्य । स्वात्तस्यस्यस्य । स्वात्तस्यस्यस्य । स्वात्तस्यस्य । स्वात्तस्यस्य । स्वात्तस्यस्य । स्वात्तस्यस्य । स्वात्तस्यस्य । स्वात्तस्य । स्वातस्य । स्वातस्

१ ससमाय नैयर्पर प्रेडमानः शोरपुर १९९४ १ अनमार्गर्भे वेनप्रयाजा सम्बो १९७९

सुनावनरों के ऐसे अन्तरण दिये गये हैं, निर्में कर्रणासून और करवायाप्युनकों 'सिदात' यहां गया है, तथा अपअस विधि पुण्युन्तवा वह अन्तरण दिया है जहां उहांने धरण और जयशणने मिदान्त वहां है। किस्तु इन अन्यों के सिदान्त वहें जानेसे अप अप सिदान्त नहीं रहे, यह यौनसे तर्कने निद इआ, यह सनअमें नहीं आना। इस सिउसिटेंमें गोम्मरसारकों असिदान सिद करने दें ये गाम्मरमारकी टीकके वे अस उद्गत किये गये हैं किनमें करा गया है कि पर्वदानका निरक्षात अमेयार लेका गोम्मरसारकों स्वाना वी गई है। लेका के असुसार मिदानका नहीं है, किस तर्वसार मिदानका नहीं है, किस त्रमार मिरा करने वह जान कार हो जानी है कि गोम्मरसार मिदानका नहीं है, किस त्रमार मिरा करने हैं है। सिदा तर्मार मिरा परवा नहीं है, किस त्रमार मिरा उसने वह जान गया है। मिदान्त अप दो ही हैं, यह बान भी इन पिकसेंसे सिद हो जाती है।" किस उसने किस परवा निर्मेश के स्वान कार के से सिदान अस रहा जाते और अप किस्तरण के हैं परिमान दे सके, जिसमें के तर उक्त दो ही सिदान त्रम रहा जावें और अप किस्तरण के सिदानका के सिदान के

क्षुच केप्रसहस्य है स्मिक्षणीत्र विद्यालय । कथ्य च व सम्मायाय स्था व परिव साम्यवस्य । १६४ इस इसके को केप केप केप्सिक्षण किलान वार्त विद्यालय । सेर अना सार्व

इस प्रशासि कोंट्रेसिंग कल राज्यसम्ब दिलान यह सिद्धा नेता राजा र कीर क्या है। निकास कर निक्ष हो। सन्दर्भ लग्न कर विज्ञानकल सिद्धा हो। व १ है र

सीरिक दूर्य तमा क्रमान क्रमान क्रिया अमितासा अमितास स्थाप ही सी सानदा खादि। स्थान सार स्थापनामें सामस्य ही सी, प्रमुखी अभितान सीरिक्षा को सामने साद्या हा जायासन्यक्रमात वा अददार गावल है। अस्तु

- चारिया वर्ष के कर राष्ट्रिय है। यह स्वर व्यवस्था पा वर्ष के प्रशासन है। यह राष्ट्रिय - ब्युचीय महरा सुववदा की हार हासन क्षरीयों है है। तह राम वार्य के अशासन है। अदिश्वश्वर ब[े] पाई भी सिद्धान्त ध्रय धारकों ने निये क्यों नियिद्ध किये जायगे, यह समसमें नहीं आता I सम्परमानका निर्माण बनानके मिये निद्यानका आश्रय अस्यन बांडनीय है । समस्त शकाओंका निराम्य देशका नि शक्तिका अगसी उपारिका सिद्धा ताध्ययनसे बनकर दूसमा उपाय नहीं । जिन सैद्यान्तित्र पानोंने तत्र नितर्नमें निद्यानोंका और जिज्ञासओंका न जाने विद्यास बहुमूल्य समय व्यय हुआ बनता है और फिर भी वे टीम निर्णय पर नहीं पहच थात, ऐसी अनेक मुख्यियां इन सिद्धात मपोंमें सुरकी हुई परी हैं। उनमें अपने ज्ञानको निवाद और विकसित बतानेका सीधा मार्ग गृहस्य जिल्लाओं अर रिवार्धियों को क्यों न बनाया जाय है क्या धवरीसद्वान्तमें वहीं भी ऐसा नियत्रण मही एगापा गया कि ये प्रय मनियों को ही पत्ना चाहिये. गृहस्थों को नहीं । बहिक, जैसा हम करर देख चुके हैं, जगह जाए हमें आचापका यही सकत मिलता है कि उन्होंने मनुष्यमात्रका एया र एउनर वय एथान विया है। उन्होंने जगह जगह यहां है कि 'जिन भगवान सर्वसंखीपरारी टाने हैं. और इस^{िन}ये सबजी समतदार्गके दिये अमुक्त बात अमुक्त रीतिसे कही गई है । यदि मिदान्तोंरी पन्नवा नियेर है, तो बहु अर्थ या विश्व की दृष्टिसे है कि भाषारी दृष्टिसे, यह भी रिवार वर ऐना चाहिए । धरगरि निदान्तवयाजी भाषा वही है जो कुरकुदाचार्यादि प्राष्ट्रन प्रयक्तरोंकी रचनाओं में पार्ट जाती है, निसक्ते अनेक व्याक्त्य आदि भी है। अनुष्य भारानी रहिस नियाण स्थानेका कोई कारण नहीं दिसना। यदि विषयती रहिसे देगा जाय तो यहाजी तन्त्रचर्चा भी वही है जा हमें तत्त्वार्यमूत्र, सवाधीसदि, राजगतिक, गोम्मटसार आदि प्रयोंने मिजनी है। पिर उसी चर्चांको गृहस्य इन प्रयोंने पट सकता है, रुक्तित उन प्रयोंने नटी, यह बैनों बात है । यदि सिद्धान्त-पठनुस्त निपेध है तो ये सब प्रथ भी उस निपेध-कोटिमें आरेंग। जब मिद्रान्तारपवनरे निवेरगाउ उपर्युक्त अल्पन आधुनिक पुस्तकीका सिद्दान्तीक पूर्यापाची दान्द आगमम डिडिपिन किया जा सरना है, तब एक अल्पन्त हीन दलान्के पापण-निमित्त गोम्मरमार व सर्ग्यमिद्धि जैस प्रयोग्न सिद्धाःतवाह्य यह देना चरममीमान्न साहस और भारी अभिनय है। यथार्पन सर्भवसिद्धिमें ता समग्रामुनके ही सूर्योका अक्षरश उसी मनसे सरहन रूपान्तर पापा ताता है. जमा कि धवतके ब्रक्तकित भागों के सत्रों और उनके नीचे टिप्पणेंगि दिये गये संवापनिद्धिके अवनर्गोंने सहज ही देख सकते हैं । राजवानिक आदि प्रचौंकी धक्रणकारने स्यय बने आदरसं अपने मनोंकी पुष्टिमें प्रस्तुत किया है । गीम्मन्सार तो धरनदिका सारभूत मय शी है, जिसकी गायाए की गायाए सीधी बहास ही गई हैं। उसने सिदान्तरूपसे उद्धेल निय जानेका एक प्रमाण भी ऊपर दिया जा चुका है। एसी अवस्थामें इन पूच्य वर्षोकों है सिद्धान्त नहीं है ' ऐसा घटना बड़ा ही अनचित्र है।

में इस रिययरी निरार बराना अनारस्यर समझता हूं, क्योंनि, बेल निरायरे एपेंम न प्राचीन प्रयोग बड़ है और न सामान्य शुक्ति या तबका । जान पड़ता है, किस प्रकार वैदिक धर्मक इतिहासमें एक समय बेदक अध्ययनका द्विजीने अतिरिक्त दूसरोकी निरेष दिया गया रा,



साम्यामे यहते महिलाना सी दारी हे शीतर ही भीतर हो वहारे स्थाप करने छता है हैं, जिसके सामा मान होंगे को ने सब पूर्व हुए रिमाइ हो गयों है। यह सम्मित्यमान जीननहेंसों से दिस स्थाप मान सो इस स्थापने भूनकम्भित पूर्व हुए दिस्तेशा सहितार मही हह सामा ११००० स्थाप सहते हैं कि "अम्मित्यमान स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन सामा सामा ११००० स्थापन स्थापन सामित है सामा सामा स्थापन स्यापन स्थापन स्य

पुस्तक २, ए ४२३

ह होया — सवता न दे से झानके स्थोतीन स्थीतीन स्थीती स्थीता र आण भी

समाधात— इन्युन प्रवन्त्ये काचात जीवें सामा च आजार बन नए मए हैं, तिनमें समन भी एभी मोन स्तावन एक दिव सकते समत जीवारी विश्वा है, वेशिसमुद्रात वैसी दित्य कालाजेंदी धर्म दिन भारति है। इसी बरार प्रावस्थ्य साम बन्दाये गये दे प्राय मुन्न है। वर्षे में गर, न अनुवासे निजे गये, और न उठा नवसी दिसारे गये। किन्नु पूछ न ४९४ भवनाम देश पर जहीं सारोभिनेचडीने ही आगार बनडाये गये हैं, यहार सामास्य अवस्थानें होनबाज वार्षे प्राणीसा और विनेष काल्यान होनेबाड़े उठा दो प्राणीसा उड़ान किया ही गया है।

बुलार २, ४ ४३२-४३५

है श्रेया-अवर्ते तथा नवना न हैं है भा है इ और है भे बैदने आजायमें जो तीन बैद मद द से। यहां है माव बैद कहना पादिया (नानवंदना लडील, पत्र सा १०-११-४१)

समाधान—जिया 7 १४, १५, १६, १७ सार्या बालायों में तथा इससे आगे पीठेर्ने सभी बारामि भागरकी दी बिक्सा की गह है। पाराहारों हिएसा आलायों मेंने हम्पोरचा की भागरियार सिमाग कर १९४५ पवर काल रिया है, येला वेद आलायों में भागनेद और भाव-वेया विमाग कर मूर्य कही काल नहीं दिया है। अन उक्त तक सोचे में भागनेद लिएनेकी बास्यका मही समस्न, प्रारी सराय यही तथा अनव भावेस्ट्रों ही है।

पुस्तर २, वृ ४३४

४ द्वारा—१० ४३३ पर जो धमतसवत पर्याप्त सचा अपयाप्तवत रूपन है, उनके पत्र स्पों नहीं बनाए गए ? (भानक्षदत्री धनी-१, पत्र वा १०-११-४१)

ससाधान — प्रस्तुत प्रयम्भगते व ही बर्धेको बनाया गया है, जिनवा वर्णन घरला हीकार्मे पादा जना है। प्रमत्तस्यन एयान्त तवा अवयानके आलावींचा घरला टीकार्मे वयन नहीं है, अत उनके पृष्यु मन नी नहीं बााव गये । तो भी निष्यक महागदा विदेशार्षक अन्यंत सर्वे साधारण दमं प्रकर कैन समानके विनाह समाने किमी 'सुन 'ने अपने अहानको छुपानेके लिय यह सन्दर्भन और देन दान्य-मंत्रिके सिर्दान बान चान दी, निसारी मनातुपतिन योगीती प्रमान चान जान तक सह्जान्य प्रवास बाना दाना बान गरी है। सिह्यानवस्त्री निमित्र और चानुगानको ने निराम जो कका बढ़ी जाती है कर प्राचीन किमी भी भवमें नहीं पर्र कार और प्रोक्त निमान निमे बचाना प्रतीत होती है। देनी ही निगास करनात्रीता पर्र रूटा और अपने मिलार निमे बचाना प्रतीत होती है। देनी ही निगास करनात्रीता पर्र रूटा और अपने किमी बचाना प्रतीत होती है। देनी ही निगास करनात्रीता पर्र रूटा कि कार मिला बचे निता दिया होता व्यक्ति प्राची हुआ। यही नहीं, रूटा कि जान किमी में भी भी किन होता वालिय या, नहीं हुआ। यही निमेति रूटा है। एक जाना है और विनेत हो जिन कोशी वालियों कम वगके जान जात जिनकात्रीत्र रूटा कि चान है। हो कि नियान क्योश बात हो तो या सुनिकतीशों दिया जायगा, रूटा कि की होता होता होती है। व्यक्ति प्रत्यों हाग ही तो दानरी प्रतिनिधी की सी, अन की जान के ताला पुर्वाह है। ति नियान तो लुए उद्धार समर है, निया प्राची हान है। हम्में हमा हमा है। साम सो तो ती सिह्यातरी समल ममार्ग्स प्राची हमा हमा है। हमा वाला हो आगी नया।

२ हाका समाधान

मुप्तइ १, पृष्ठ २३४

खररपाने उसके जीवप्रदेश भी सारीरके भीतर ही भीतर सीप्रतासे अगण करने छान हैं, जिसके मारण उसे पृथिने आदि सब पृथि दूप दिताई देने छाने हैं। यदि इ पेट्रियमणण जीवप्रदेशीकी रिपर माना जाय हो। उक अपस्पाने भूमक्डादिक पृथि हुए दिताने में में बारण नहीं हर जाना। इसक्षिय आचार्य कहते हैं कि 'अल्मप्रदेशीके अगण करते समय इम्पेट्रियमणण आमा प्रदेशीका भी अगण क्वीतर कर छेना बाहियें '। आधुनिक मा बनास्याधी भूअस्परात सो दर्शन मिसीको हिसी अनस्पाने भी होता नहीं है। इसकिय यहां उस भूभिनसगर सो दर्शन होती होता का स्वारी होता अस्पान स्वर्ण भी होता नहीं है। इसकिय यहां उस भूभिनसगर सो दर्शन होते होता

पुस्तक २, ए ४२३

र शका — नवता न र में प्राणीत शामि सवीगिववधी अभग र भाग भी होना चाहिये। (लनवदनी सन्तार सहामतर पर १४४०)

समाधान—प्रस्तुत प्रवर्णमें अवर्थात जीवों सामाच बादार बनगर गर है, जिनमें मगस सभी पवेरित्रसे क्यावर प्रेनेन्य सकते समस्य वीवाजी विवश है, वेच विस्तुद्धान जैसी विदेश करायों जीवों की तिया है। इसी बरण सज्जवार इस बनवार गेरे दे प्रमान मुख्य विदेश करायों जीवों की तिया में प्रमान के स्वति क

पुस्तक २, ष्ट ४३१-४३५

र छरा — अपने तथा नकागा । १४,१५,१६ और १७ में बदने आण्यमें जी तीन भेद करें दें सो बहा र माथ नेद बहना चाहिये। (नामक्चरना सर्वाण, वस सा १०-१९-४४)

समाधान—नवसा न १४, १५, १६, १७ सर्था ब्रान्समें तथा समे क्षेप स्पेट रेडरे सभी आगरिये मारेररो ही विकान को गई है। धरलावस्ते नेत्या ब्राज्यमें जैत हरनेत्या और मार्वेदस्यस्य सिमाम बार पुषन् पूषन् वर्णन निया है, तेसा बेद अल्डामें सम्बद्ध और मान-देशन विभाग बार मून्में बड़ी वर्णन नहीं निया है। अन उल नहांभें सम्माधेर लिए। हो आस्परता नहीं समसी, पारी सर्था बही तथा कालय माधेरसे ही है।

बुस्तर २, वृ ४३४

समाधान—प्रश्तुत सदमागरे उटी वर्षे को स्त्राण गया है, किनवा बान ७ ण टे बच्चे पाया जाता है। प्रमतस्वरूप प्रयाप तदा कारमाध्ये कालाहोंचा धवण टीबच्चे बचन २९१ है, स्वर्ण उनके पृष्टु यह भी गदी बाग्य गरे | तो भी नियद हा एचण िल्याई केश्यन सर हल्लान पाठकों के परिज्ञानार्थ पृ ४३३ पर उनका कथन किया गया है ।

प्रस्तक २, प्र ४५१

५ झुक्का—पृ ४५१, यत्र ३१, में प्राणमें अ, दिला है सो नहीं होना चाहिये !

समापान — निन गुणस्थानों या जीतममाहोमें पर्याप्त और अपर्याप्त कालमध्यी आजार सम्पन हैं, उनके सामाय आलाप कहते समय पाठकों के अन न हो, इसलिए पर्याप्त कालमें सम्मन आणों के आगे प लिखा गया है। तथा अपर्याप्त कालमें सम्मनित प्राणों के आगे अ जिखा गया है। इसी नियमके अनुसार प्रस्तुन यन न ११ में नारक सामाय निष्पाद्दियों के आजार प्रस्तुन यन न ११ में नारक सामाय निष्पाद्दियों के आजार प्रस्तुन विस्तु समय पर्याप्त अवस्थामें होनेनाले १० प्राणों के नीचे प और अपर्याप्त अस्थामें सम्मन अप्ताणों के लिखा गया है।

प्रस्तक २, ए ६२३

६ ग्रमः — पृ ६०३ के निरागर्थेमें यह और होना चाहिए कि चीदहरें गुगरवानमें पर्वास्तर टदप रहना है, छेनिन नीरमीर्याणा नहीं आसी है (स्तनवदनी सन्तर, सहानदा, पर २-४-४१)

समापान—उक्त निरागर्धमें जो बात सविभिन्ने न्छीके टिथ कही गई है, बह अपीरि भैपराकि टिप भी टपपुत होनी है। अलपुर बटी उक्त भागर्धको ठेनेमें कोई आपित नहीं।

पुलक २, पृ ६३८

७ पुरा— धत्र २ ५५६ वे प्राणके टानेमें ३,२ भी होना चाहिए, न्यों रि, पोगके धार्नेमें ६ पेग नित्र हैं (स्तापटनी मुप्तार कहातास पर १-४-४५)

समापान — योगके तालमें ६ योग दिन जाकि इ और र प्राण और भी यहनरी भारतप्रणा मति होना स्थापित हो है। हि तु, पदास ६ योगीशा उन्हेद विस्क्षेत्रिये हैं दिया गण है, तेता हि मण्डे के अध्य तीन योग दिन वचन से स्वट है, और जिस्हा कि सन्मित्र बही पर विशापमें स्वट पर दिया गया है। सन्मित्र की पर विशापमें स्वट पर दिया गया है।

प्रमाह २, वृ ६४८

८ लका - प ६४८ वर बल्यामी अध्यक्तस्यन नैवॉर्फे आञ्चलमें बेर िया है से इस स्वर्द हुन चित्र है

ममापान-इस्त उल्ब शहा न १ में द दिया गया है।

पुम्तर २, ५ ६५३, ६६०

९ श्रदा - प्रण्ड १५ तम् समापन । प्रण्या स्था समा हे, उससे लिया है हि • लगानि याने बन्नन बाग्यस्थुतानन समेगीनेवणीना यह के श्युरक्ष साथ सम्बद्ध नहीं समाधान—' अपर्यात सेगामें वर्गमा क्याटसमुद्धतमात सवीमरेक्टीका पहलेके स्थापे स्थापित—' अपर्यात सेगामें वर्गमा क्याटसमुद्धतमात सवीमरेक्टीका पहलेके स्थापे स्थाप सम्या मही रहता, 'इसका अभियाय यह लेना चाहिये कि उक्त अवस्थामें जो आमादेश साथ सम्याभ मही रहता है। आत्मप्रेरोंकि मार निक्चित्त सेगा प्रीर साथ सम्याभ माना जायया, तो जिस परिमाणों जीव प्रदेश के हैं , उनने परिभागवान हो औरिस्मारिको होना पड़ेगा। किया देश होना सम्याभा, जा अपरा प्राव हो स्थापित साथ सम्याभ मही, अन यह बद्धा यथा है कि यमाटसुद्धत्यत स्थापके स्थाप वह से सम्याभ मारी। अन्य स्थाप के स्थाप सम्याभ मारी। अन यह स्थाप सम्याभ मारी। अन यह स्थाप सम्याभ स्थाप के स्थाप सम्याभ स्थाप स्थाप के स्थाप सम्याभ स्थाप स्थाप कि सम्याभ स्थाप स्थाप स्थाप कि सम्याभ स्थाप स्याप स्थाप स्थ

प्रस्तक २. प्र ८०८

१० द्वारा—पृ ८०८ पछि १० में सान प्राणते आगे दो प्राण और होना चाहिए, बचोंति, सनेताने अनुमान अवस्थामें दो प्राण होने हैं। (स्तवन्त्र्या ग्वास, बहातनुर पर ३४४१)

पत्र न ४७७ में प्राणमें ४—१ प्राण और टिवास चाहिए

समदान बहते हैं।

-

(बानश्चदत्री, एउँ।टी, पर १०-११-४१)

समाधान - इसमा उत्तर वही है जो कि शमा न २ में दिया गया है।

पुलक ३, १ २३

११ छहा—२^{९अ} को क्षेणनामा अहोगी यह शुद बात बही होना, क्योंकि २^९= २५६ हाला है, और २५६ को बगसलास ह*ै है, ४ नहीं व*

(समीवराजी बंधांत्र मदारनपुर पत्र २४-६१-४६)

समापान — २ अ वा अधे है २ वा २ अ में प्रभाग वर्ग। अब यदि हम अ को ४ के याजर मान छ तो — २ $^{1/2}$ = $2^{1/2}$ = $2^{1/2}$ = $2^{1/2}$ = $2^{1/2}$ = $2^{1/2}$ = $2^{1/2}$ मान डिया है । शिन्तु पंता मही है । प्रभाग हो है । प्रभाग हो है । प्रभाग नहीं है उसमें कार्र दोन नहीं है ।

पुम्तक ३, ५ ३०

१२ प्रहा—मं सेन्द्र सरिपात अस्तवपुत निरुपमें जो अभागीरे सिस्याम पुत्र हा बिन्दे के तान आमें एक निर्मादेनसर उपन हुई साथ सहसासे भातित अभा प्रकार करणार्थ का प्रशाद कर अपूर्व माने होता है। सेने साथ में अनीत बाउसे एड सर्व करणार्थ का प्रशाद कर कार्य विकास सहस्ता सहस्तित उपन हुई सिम् करणार्थ का प्रशाद कर स्थापन का प्रभाव स्थापन का प्रभाव स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन

मार्य - एक कि सार्मा सार्मा है उस प्राप्ति माया पर है जिसके अनुतर माद ना का का स्वयं है कि से का से कि से का से कि से का से कि से का से का से कि से का से का से कि से का से का से कि से का से कि से का से कि से का से कि से का से का से का से कि से का से क

7FTT 3, 7 34

के के कुर कर के कार्य, रहा त्रावा वह देव वेरवह वह सामृत्यही । विकास कर पर कारण वह का साम्या त्री आही। पर भारति कर का अहल विकास आहे, हा वहीं ता आहारी ते का सामहर कालाह पर कहर है।

 उस उस दीप-समुद्रशे भीनी पीरीश्ते उसमेला आगेशे बनना जागेगा । इस प्रशार होते होते अन्तिम समुद्र रचगरतागर्स एर अपश्चेद उसकी चादा सामाके समीप और दूसरा उसकी भीतरी सीमोक समीप पर चाथगा । यू.) यून निम्न चित्रसे और भी स्पष्ट हो जायगी ।

मान के कि स्वनभूगमासमुद जम्दूरीसे आगे तीसे बाववार है, और उसीकी बाह्र सीनार राष्ट्रका अन्त होना है। रानुका प्रध्न अर्थ देह को जम्दूरीय के मध्यमें महस्य परेना हो। अस्य बटित आनेका विस्तर पत्नास हजार मोजनकी है मान नेनसर केवल है+8+८+ह=२९ मोनन रहा।

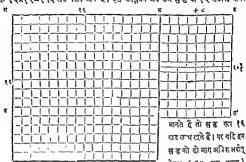
अन्द्रम रनुना दूस्ता अभिन्द्र १४१ वीचन पर स्वप्यूत्यमसन्द्रमें, तीसरा अर्थम्ब्र्ट ७१ वीचन पर स्वप्यूत्यमसन्द्रमें, तीसरा अर्थम्ब्र्ट ७१ वीचन पर स्वप्यूत्यमें बाद मीवाई समीव, तथा पीवां अप्यत्तर १११ यावन पर स्वपन्नद्रमा आग्यतर सीवाई समीव वेदारा १६ प्रमार स्वपन्निय समीव पदेशा १६ प्रमार स्वपन्निय अर्थन सीवाई समाव स्वपन्निय अर्थन सीवाई सामाव स्वपन्निय अर्थन सीवाई सामाव स्वपन्निय स्वपन्निय सामाव सीवाई सीवाई गई है।

प्रस्तर दे. य ४४

१५ श्रह्म-पुस्तक ६ के पू ४४ पर केशानारके द्वारा जो यह सनकाया गया है हि सहर्षे जीनगरिके वर्षकी हुते भाग अधिक जीनाशिके भावित वर्षकीय तीमा भागनी जीनाशि प्राप्त होनी है, सा यह बात नहीं दिन गर आकारस सनकीन नहीं आती। इपया सनकार्य हैं निर्मादकी बांक नामना प्याप्त १९४१

समापान—मान टाविय, सवे वावसीस १६ है, इसस्य वर्ग हुआ १६×१६ = ३५६ वद परि हम स्व वावमीस वर्ग (२५६) में वावसीस (१६) का मार देने है तो '१५-६६ स्थात जीवसीस माण हो ज्याना है। और परि वर्ता जीवसीस स्वर्ग है हमार स्वित्र जीवसी (१६ + ८ = २४) का माग दत है सो जिमागहीन जीवसिसमान, अवात १६ - १५ = १०ई आता है, जो १५६ - १०ई

इसी बानको पनलानाले क्षेत्रिनि द्वारा भी समझाया है जिसना कि अनुवादके साथ चित्र भी दिया गया है। इस चित्रमें साह जीवारि (मानले १६) है, उसको साह (१६) से बर्गित करनेपर प्रतपानार केन साह साहा बन आना है जिसमें अवस्थाना दियानेके लिये यदां १६×१२=२५६ खड किय जाते हैं। इस वर्गक्षेत्रमें जब हम सह के १६ खडेंकि मात्रक



कर है, ते जना करिता प्रमान क्षेत्रकारी निवत स्पति कि हमें साज की निमानशीन कर्षीत् हर है, ते जना करिता परेता, तो जावशिक्षा निमानशीन (१६-५६) मान है। यही कर्मा करत समझ व राज ने जिस द्वार दिलावे गये सिंदान्तरा अभिनाय है।

युम्तर वे, य २७८-२७९

१५ द्वाहा-वर्श जान रही व स्वर्गरिमियों हो त्रावा छाने के न्यि कि हामाचिवां व स्वर्गा बान बनन १०६६ वे गुद्द २४ से र वी खानके म्याधिक क्यों कहे गर्वाहें र उनमें सामाना मान विस्वा र न बनन है, संस्वर नहीं पतना। स्वरूप विसिधे (अक्षान्त्र), ब्रांगर मामाना वह २५ ११ ४४)

३. विषय-परिचय

की रचनारी पूर्व महानित्र हो प्रराणाओं—सावस्थान और द्वापस्थानातुष्यमं स्वार प्रीत्रा स्वारम, गुण्यान व सार्यास्थानानुष्य भेद, सवा प्रवेश गुणस्थान व सार्यान स्वारम्या प्रभित्र प्राप्त व सार्या प्रशाह वा पुरी है। अब प्रस्तुत सार्या वीवस्थानसभी कोत्रश सीत प्रराणान्त प्रशाहित को या स्टी हैं—केमजुग्न, स्वस्तान्तुवन और व्यास्थान ।

र धेत्रानुगम

क्षेत्रापुरुवने विशेष निरास व दिराहिस्तरथी क्षेत्रका परिवाल बतलाया गया है। श्त सरपूर्वे प्रथम प्रथम यह उठना है कि यह क्षेत्र है यहाँ * इसके उत्तम अन त अच्यापे दो किया प्रिय पर्व है। इक छोत्राराण और दूसम अलोकारास । लोतास्यस समस्त आकार रायमें रियत है, परिमित है और बीबादि पांच दायोंका आधार है। उसरे चारों तरप गर सण्सा अनना आकृष अगुरुद्धारा है। उक्त होकाकारा है रवरा और प्रमालके सकते दो मत है। एक मनके अनुसार यह कोकाकाश अपने एडमागर्मे सातातु पासपाना गोजारार है। पुन करारको त्रपसे घटता हुआ अपनी आ ी उंचाह अप^{र्}न् सात राजार एक राज 'यासवाल रह जाता है। व_रसि पुन उत्परनो मपस बन्ता हुआ साने तान शत्र करार जापर पाँच रापु न्यासप्रमाण हो। जाता है और बहासे पुन में तान राष्ट्र यन्ता हुआ आने सोंगरि उच भगवर एक राष्ट्र स्पासवाला रह जाता है। इस मनर अनुसार को राग आराह टीक अधीमागमें, बेरमसन, मध्यमें शहरी और उर्ध्वमागमें सुदग है समान हो जाना है। किन्तु धराजाकरने इस मनको स्थाकार नही किया है, क्योंकि, ऐसे लीकमें ज्य प्रमाणी क्या प्रवचा जगश्रणी अवाद् सात शत्रके धनप्रमाण बहा है, वह प्राप्त नहीं होता। यह बात राष्ट्रत दिग्छा के जिये व दोंने अपने समयके गणिनजानकी विविध और अधुरृष प्रतियाना द्वारा इस प्रकारक छोउके अधीमाय व उर्धमागरा धनपन निराला है जो क १६४ (इ.८) धनरात होनसे क्षेत्राहे धन अर्थाद ३४३ धनरात्रसे बहुत होन रह जाना टे। इस वे व टीने पारका आहार पूर्व-पश्चिम दा दिना गेमें ता उपानी ओर प्रांकि बनमे धाना बन्ता हुआ, किन उत्तर-दीति ही दिगा बोर्ने सकत साथ रात्र ही माना है। इस प्रकार यह टोक गोलाकार न होकर समजनुग्लाक हो जाता है और दी दिशाओंसे उसका क्षाकार बेतामन, इल्ला और गुरमार सहना भी दिखाई दे अन्या है। ऐसे लास्या प्रमाण दीक थेनीका धन उ = 3 x 3 x 8 = ३४३ धनतापु हा आता है। यही दोक जीवादि पांचों इन्योंका क्षेत्र है।

पदां प्रश्न यह उपस्थित होता है कि उक्त ३४३ घनरानुप्रमाण वेतन असस्यत प्रदेशानक जन्मन परिभिन क्षेत्रमें अनात जीव व अनात पुत्रन परमाणु कैसे रह सकत है! एस उच्च यह है कि जीवों और पुत्रन-एमाणुओं अपनिमानस्परी आयोग्यागाहन शिंद विद्यान है जिसके स्थान अगुउके अन्यागार्वे मागर्थे भी अनन्तानन्त जीवों को जीवके मी प्रदेश अन्यान जीवों की जीवके मी प्रदेश अन्यान जीवों की जीवके मी

ेन क्यान् गुनस्यानीरी क्येश्या जीवोक्ती क्षेत्र प्रमूत्रीमें कतज्ञ दिया गया है कि निष्पाणी जीव मत्रेजीरमें व अयोगिर राजी और वेर सासादनसम्पर्दार्ट आदि समस्य बाह्य गुगस्यानीमेंने प्रमेश गुगस्यानीयी और स्वीगिरेनणी छोन के असदस्यानीय मार्गेन, और स्वीगिरेनणी छोन के असदस्यानीय मार्गेन, अस्यानीय क्षेत्र क्षामानीय स्वीगिरेन के स्वागस्य के स्वागस्य

रेक्टाराइराक्ष्य अपेनामे जीवेंद्री तीन अवस्थाए हो सकती है (१) स्वस्थान (२) मह दार और (१) उरनाद । राम्यान भी दो प्रकारका है-अपने स्थायी निवासके क्षेत्रको स्वस्थान-रगण्यान, और अपने रिहारेंक रेखकी विहारकमार्थान बहते हैं। जाकी प्रदेशोंका उनके सामारित रण्यत्मे अति देण्या ममुदार कहता है। बेदना और पीडाफे कारण जायन्त्रदेशों र पैरानेको देवनामणुद्धात बद्देश है। त्रो शदि बचावीर बारम जीर प्रदेशींके विस्तारको बचावसमुद्रात **बर्टन है। इ**नी प्रकार आपना स्वामाधिक शारीरके आवारको ठोलकर आप शारीरावार परिर्नेतको देविन्त्रप्रमुद्धान, मप्टेके समय अपने पूर हारीग्या न होत्यर नतीन संपत्तिरयान तप पीतः दरेलोहे दिस्सका अपनातिक, तैजमतागिका अप्रतान व प्रताल विजियको तैनत्तुमुदान, करि प्रक्त मृतियोगे राजा नियम्पार्थ जी स्परेशों के प्रशास्त्र आहारवसमुद्धान, और सर्वेष्ठणप्राज बेरनारे प्रोहीका नेप वर्तक्षय निवित्त दहाकार, वयागाकार, प्रत्याकार, व स्पेक्स्यानाय प्रस्तास्त्री बैरिक्स चन बहुते हैं-जिया अपनी पूर पर्यापको हो कर साँग्ये समान सी.वे, स एक, दी वा 🟞 मेर एकर आप ९६ पक महागान तक गमन करनेका उपराद बदन है। 📢 ->रीर् (१) खब्लक्करत (२) विनायकक्ता (१) बेद्रासमुद्रात (४) बचायममुद्रात (५) ६३ निम्हणन (६) मार्का निरम्हणन (७) नेत्रमम्हतन (८) अपदाग्यम्मद्रान (१) वेविर सादार जैर (१०) टरापर अनद अंदी कोश्व । यद सम्भव विषये भिन्न सुनाहदानी ६ र बारणमान्देश श्राप्रमाण इस् ध्यमानमूने वस्त्रपण प्रमा है ।

हात, हाराय है। राज्यान १ कारण रिप प्रवाह को पांच प्रवाही गाउनी हाली हिस्स है (१) राज्य - इ.स. राज्याचार १ ७ राज्या उन्हास है, (२) अगाउनी १९ पुरे मण्या वसम्माग है, औत (५) मगुप्तनोक को अन्ति द्वीपप्रमाण, अर्थात् ६ ५ राजा स्थानमाना वर्जनातार देश है। तिसी भी एक प्रश्नरके जी वेंका क्षेत्रमात बतलानेके ियं परण्यान उस उस "मिनिन्द्रमाणी प्रथन संभिन्ने देशर उसके क्षेत्रारमाहनका विवास किए हैं । उन्हार — दिस्य स्वरूपन का उनियार दियों के क्षेत्रका विकार बरते समय आहीने ब्रस-क्यान्याच्या ही त्यार बरोजी येग्यन स्रोजनी मनस्र पटने यह निर्दिष्ट वर दिया कि तिमी भी समाने हा। साध्या साधावर भाग ही दिल बरेगा। किर उन्होंने इस दिल बरनेवारी सरितें शास्त्रभाषात्र पारोरे पारापानी यह बड़े त्रम जीगेंगा निचार निचा, वित्रमें हॉस्ट्रिय जीव शास क्षण्ट योगाता, प्रश्लिय गोग्दी तीन बातारी, अपुरिश्चिष धमर एक योगनका और प्रमेश्चिम मध्य एक एचार याजावा धाना है। अनाव बते प्रलक्ष जीवका उन्होंने क्षेत्रमितिक सूत व विधान देवर इमार्गा में घनपा विकास, और दिर इस उत्तर असाहनामें खराय असाहनामा असहना अमरापना भाग जो दरर उसका आधा किया जिसमें उस राशिके एक जीवकी मापन अर्थात औसन अराजा सापन धर्मापुर अगर्र । समन्त अन पर्यापनगरि प्रतर्गपुरके सम्यानरे मागसे माजित क्रणारप्रमाण है अर इपरा बेचा सायाना भाग विद्या बरना है। अन इस सायाना भागको इर्रोक्त घरपण्या गुण्य करने पर विद्यानस्थरपान निम्यान्धियरिका क्षेत्र संस्थात सुच्यतलगुणित कारतन्त्रमान होता है, जो एरराज असाजानां भाग, और उसी प्रसार अधेलाक और उस्तिकेका भी असम्यानमं भाग, निराजिकका समयानां भाग और मनुष्यलोक या अवर्धियसे असरयात गणा होगा ।

२ स्पर्शनानुगम

स्परीनप्ररूपणार्थे यह अन्त्राचा गणा है कि भिन्न भिन्न गुगरचानवार्छ और, सचा गति अदि भिन्न भिन्न मागाण्यामणान्य चीन तीनी बांचींन दूशीक दश अनस्पानीप्राण निजना क्षेत्र स्पर्ण वर पाने हैं। इसमे स्टाट है हि क्षेत्र अरेर स्पर्णन प्ररूपणानेमें विशासना इतनी ही है कि स्प्रियणणाती तो बेवड वर्गमानवाराज्यों ही अपेश रहती है, कि ता स्पर्शनप्रस्पाणि अतीन और अनामनवारज्य मी, अर्थात् तीनी पार्लोग्न धेन्यना महण किया जाता है।

उन्हर्सार्ष — क्षेत्रस्त्रजामि सासादनसम्बग्धि जीरोग्य क्षेत्र कोकरा वसस्यातर्थ माग बनाया गया है। यह क्षेत्र वतमानगण्डले ही साम्य स्थान है, व्यान् वर्तवानये हस समय स्वरानार्थि यदासमय परीजो प्राप्त सासादनसम्बग्धि को टावर असस्यात्वे सागमाना क्षेत्रो ब्यान्त करने विधान है। यहां बान स्थानम्बरणामि वर्गानम्बर्धिय स्थानके वर्गोन साय करते है। उत्तरे प्राप्त हसे स्थान क्ष्तीनम्बरसम्बर्धा स्थानकेत नकत्या गया है मि सामादनसम्बर्धा कॉर्ने के क्षीतकालके द्यान बाठ करे चीरह (प्राप्त) और बाद्ध बरे चीरह (प्राप्त) भाग स्था निष्ट है। इसमा क्षिताय जान देना आस्यम है। सीनसी तेनावीस धनादुर्यमिन इस द्यारमम्बर टीर प्राप्त भागे बुधने सारो समान एक एडु एच्यी चीरी कीर वेदना, कपाय और वैक्रियिजममुद्धानगन मासादनसम्याद्य जीमने उक्त प्रसार्णके चीरह मार्गोमेंसे आठ मार्गोरी स्पद्म दिया है, अर्थान् आठ धनगत्त्रमण प्रमारित मध्य रेसा एक भी प्रदेश नहीं है कि निसे अनीनकाउमें सामारनमध्यद्विट जीवोने (रेव, म्युप, निर्यंच और भारती, इन समीने मिडकर) न्यूरी न किया हो। यह आठ घनगतुप्रमण क्षेत्र तसनाउति मानर जन्म वहीं नहा छना चान्छि, दिन्तु नीचे तीमरी बाउरा पृथिरम छेनर जपर सोव्टरें अच्युनकत्प तक देना चाहिये। नमरा कारण यह है नि मननरमी देव स्वन मीचे तीसरी पृथिया तक निटार बरने हैं, और उपर सीरमेनिमानके रिउर रनर तक । किन्तु उपरिम देनोंके प्रयोगमे उपर अध्युतकल्य तक मा दिए वर मकत हैं [देग पु २२९]। उनने न्तने क्षेत्रमें बिटार वन्तेक नाम्य उत्त क्षेत्रका मध्यवर्ती एक भी शासन्य प्रदेश ऐसा नहीं नचा है कि निमे अनीन कार्चे उक्त गुणस्थानवनी देवेंने हर्गा न किया हा। इस प्रकार इस स्पर्श किये गये क्षेत्रको छोजवार्डके चील्ह मागोर्केस आठ मागप्रकाण स्पानिन्त्र बहते है । मारणातितममुद्धानकी अपेक्षा उत्त गुणस्थानकी जीवेंने छोवनाठीके चादह मार्गोन्स बारह माग स्पर्न निये हैं। इसना अभिप्राय यह है कि उटी पृथितीक सासादनगुणस्थानानी नार्यो मण्यजेर तर मारणातिरममुदान वर सस्ते हैं, और सामारमसम्पर्देष्ट मसनगसी आदि देव आटरी पृषिरीके उपर नियमान पृषिनाशायिक जारोमें मारणातिकसमुदान वर सकते हैं, या परने हैं। इस प्रकार मेहनव्ये उटी पृथियी तरके ५ राउ, और उपर दोशान तरके ७ राउ, दोनों मिटारर १२ एउ हो जाने हैं। यही बारह धनगतुप्रमाण क्षेत्र प्रसनाठाके बारह बढे चीरह (😚) माग, अयना उसनाठीके चौदह मागोंमेंने बारह भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र वहा जाना है । इम उक्त प्रशासी बनाटाए गए स्पर्शनक्षेत्रशा यथानमत जान छेना चाहिए। धान रछनेओं बात बेसर इतनी ही है कि वर्तमानसादिस स्पर्गन देन तो छोसके असम्पातने भागप्रमान ही होना है, किन्तु अनीनकारिक सर्वानक्षेत्र असनार्शके चौदह मागोंमेमे यवासम्बर्ध रूप, रूप, अदि टेस्ट है है तर होता है। तथा मिथ्यादृष्टि जीतेंसा मान्यात्तिस, वेदना, क्यायसमुद्र्य अदिश अरेशा मर एक न्यर्रानक्षत्र हाता है, क्योंति, सारे ट्येडमें सर्गत ही एनेदिय ^{जीव} टस टम भेर हुए है और यमनागमन वर रहे हैं, अनरत उनके द्वारा समन्त दोकाकारा वर्नमार्ते भी सर्च है है के अर्थ अर्थन्य में भी सर्च किया जा चुसा है।

चोदह राजु उची छोजनाजी अवस्थित है। इसे असनान सी बहते है, वर्षेकि, महर्विका सचार इसके ही भीतर होता है। वेनज बुज खानाद हैं, निनमें कि इसके भी बहर गर-धीनोंका पाया जाना संमन है। इस असनाजीक एक एक राजु छन्द्र, चीन और माट माग बनार जानें तो चौदह भाग होने हैं। उनमेंसे जो जीन निन्ने घनगजुनमान नेपको हारी बस्त है, उसका उतना ही स्पर्शतकेन माना जाना है। जैसे प्रकृतमें मानादनमस्पादियोंका स्पर्शतनेन अह बहे हैं। उसके सहस्त उतना माना है। उसके प्रकृति हैं। उसके सहस्त उतना सा है। इनमेंसे विद्यानस्पर्ण, इन एकेट्रिय भिष्याइष्टि जीविके अनिरिक्त संशीमिक रही मानवार् भी प्रनम्मनुदानिके सन्तर रोके अस्तर वाल बहु भागीवी और राजपूरणसमुद्धानिके समय सह राज्यवाद के स्मित्र प्रवाद अस्त भारणाति समुद्धानारों प्रभाविक सम्मानिक अस्तर के सित्र प्रवाद अस्तर भारणाति समुद्धानारों प्रभाविक स्थाविक स्थाविक

हम प्रकार चीनह गुणरवारों आर चीदह स्थागरवालेंगे उन रक्ष्यानदि दल पीकी मान जीवेंक रस्वादेव इस स्थानप्रमाणें बत्त्वया गंग है !

स्पर्धानमध्यणाकी ग्रुष्ठ विशेष पान

सामादामायाणि जीवीन क्षत्र निवारने हुए प्रात्तवन असामाव हीवनम्यूगर उत्तर आज्ञाने दिन सम्माव गीने प्रमावत्र भी गतिकारण अव अव्यक्ष्य कात्र्य वात्र्य दे हुण निकल्य गत्र्य है अस्तर हो यह वनराया मात्र है एक वदर परिस्पे एक मृत् अलाने हा, अर्थान कात्र और सामाव हो सह वनराया मात्र है एक वदर परिस्पे का मृत् अलाने हा, सीसी प्रमण्य सामावारी (६६०अ५०००००००००००००००) साम होने हैं। इस चार्म प्रमाद परिसाद प्रमावभ व्यवस्थानिक स्वीतर प्रमाव गुला कर दल्य संस्था उपानिक स्वीतर प्रमाव गत्री अपनाद स्वीतर प्रमाव निवार आप है।

स्ती भीचमें भरावराने श्वातिभा देवें। भागतानी उपान करी है पान जारी वह प्रति से सम्बद्ध विक्र दिखा है हि चूरि-स्वयम्बास्याप्त सामान्य है है । अ क क पान ती ती हैं, हमिक व्यवस्थानमध्य प्रकार मार्थ अनामान है विन्यू व स्थानमध्य प्रकार मार्थ अनामान है विन्यू व स्थानमध्य प्रकार मार्थ है । अत्याप्त है विन्यू व स्थानमध्य अग्र पावर विन्य करा मार्थ है । अत्याप्त है । अत्याप्त है । अत्याप्त हो है । अत्याप्त व । अत्यापत व । अत

हती प्रकारिक होने असी उक्त यात्री युद्धियाते हरू राज्यामा जिए हा उ राह्म तीत्र देर्ग कारीण प्रकार प्रकार है, जिल्लाका राज्या हा हि बाधात के उत्तर सह दिनार साहित्रों प्रतिदेश की भी अर सर प्रवाद होंग का उसका की सा

वे मरी प्रशिष्टित भी ते की इस प्रवण है-

(१) व्यानाव आर्थाकोश एवं आनुत्र ६ त ८ वस प्रयोग 👉 💛

(₹Ź)

मायना को भी ⁶ ण्डेहि पिन्डोतमसग्रेहरीई अंगोसुहत्तेण कारेण ' (इ.य.स. पू. ६) इस स्ट्रोंने आजारसे "अन्तर्सहर्त् " इस पदमें पडे हुए जातर हान्द्र हो सामीप्यायक मानवर यह सिद्ध निता है कि अन्तर्सट्टीन अभिप्राय सुर्द्धांसे अभिक्र काटका भी हो सबता है।

(२) दूसरी बान आयत्तवनुष्य छोज-सम्यानके उपदेगाती है, निमक्त अभिप्राय समहनके छिये इसी भागके छ ११ से २२ तकका अग देनिय । उसमें ज्ञान होता है कि धरणकर स्थान नियान संप्रणानुवेगासम्बन्धी माहित्यमें छोजके आयनचनुष्याकार होनेका विकास प्रातिचेश श्रुप्त भी नहीं मिछ रहा था, तो भी उहाँने प्रनम्मुद्धानमन केनरीके क्षेत्रके साम्बर्ण स्वर्द्धा माँ दो गायाओं के (देगो इसी भागके छ २०-२१) आनुष्य यहा मिद्ध निया है कि छोजका आकार आयनचनुष्काण है, न कि अन्य आचार्याम प्रकासन १६० है वि

आरार जायतचपुरस ही मानना चाहिए। (३) तीसरी बात स्ववभूरमणसमुद्रके परमागर्मे पृथिशके अस्तिच सिद्ध करतेका है त्रिस्तरा दक्केस करण किया जा चुका है। (ইस्रो पू १५५ १५८ तक) इस मकार वह जोरदार शार्थीमें उक्त तीमों बातोंका समर्थन करमेके पक्षात् मी उनकी

प्रमाण मुदगके आकार । साथ है। उनका दाता है कि यदि ऐमा न माना जायगा तो उक्त दानों गापाओंको अप्रमाणना और खेक्सें ३९३ घनगञ्जोंका अभाव प्राप्त होगा । इसिएए एकस्य

नियम्भना दर्शनीय है। वे लिखने हैं - 'यह ऐता हा है ' इस प्रकार एका त हठ पर उक्त के लहर लाइ नहीं परना चाहिए, वर्षोंकि, परम्युक्तींकी परम्यासे आए हुए उपरेशनो युक्ति, बड़े अपपार्थ सिंद बरना अश्वय है, तथा अती दिव परार्थोंने छतार जी में के हारा उठाए पर विरस्पेक अध्यार्थ सिंद बरना अश्वय है, तथा अती दिव परार्थोंने छतार जी में के हारा उठाए पर विरस्पेक अध्यार्थ होनेका नियम नहीं है। अत एव पुरातन आचार्थोंके व्याप्यात्मा परिलाग न वर्षे है बुदा (तर्ववाद) के अनुनरण करने नाले खुप्पात्म आचार्थोंके अनुराप्य अपपार्थ तथा अपुरास्त विष्यमनी है खुपार्थ होने हैंथे यह दिशा भी दिखाना चाहिए। (हेल) पूर्व १५०१४८)

म्युनाहनके थिये यह दिशा भी दिखाना चाहिए। (देखो पूर्वपण्डम) निर्वेचोंके श्वरणानश्वरणानेअन्यानिवालते हुए द्वीप और समुद्रोंका क्षेत्रपळ अनेक करण स्वोद्याप पृषक् पृषक् और सम्मन्ति नियाजनेकी प्रतिमाए दी गई हैं, और साप हा यह भी

सिद्ध विद्या गया है वि १ए मध्यशेवमें निजना भाव समुद्रसे रूपा हुआ है। (इसा पूरश्य रूप) बायमर्गणामें बादर पूरिवीवायिक जीगोंके स्थरीन केन्नवे बनाजते हुए सनप्रभादि सती

वायमागणाम वादर पृथितावशायक जागक रुपशन पृथितियोंकी सम्बर्ध बीडाईका भी प्रमाण बनाउपा गया है ।

दे दात्रानुगम दे दात्रानुगम दक्क प्रकारण-नोत समान काटशबदगानि भी ओप और आदेशकी अपेक्षा वाद्या

निर्णय किया रूप **है,** अर्थान् यह बनयाया गया दे कि यह जीव किस गुणस्थान या प्रार्गणास्पान^{में} बक्तने बन्न विरुत्ते के दानत रहणा है, और अधिक्रों केरिक विरुत्ते क्षाप्ट रहता है !

					'
					इहाने
	T	होत्र		-Ax	8
ا ـــ ا	मार्गणाके	61-	1 .	नेमानकानिक	। सन्भि
Mistare	अधान्तर भन		[197	ोड जा क्षमंख्यान्यों माग	1 रहत्य
	इ.ह. स्रोटेश अस्प्रमाण (श्रीप्रकीय १ सम्प्रकृषारी (सम्प्रमाणी सम्प्रमाणी	हारणंड शेष्ट्रचा वर्णे संदेशेड शेष्ट्रचा व्यापारी स्त्रमण्डारि स्त्रमण्डारि स्त्रमण्डारि	त्र साग है हा।	ा अपंत्रानि सार श्री अपंत्रानि सार श्री अपंत्रानि से स्वरणां के स्वरणां अपंत्रानि से स्वरणां अपंत्रानि से से से से से से से से से से	दिक्य सर्वेण सर्
	१६ सक्रिमार्थका 🖁 अ	uta		1	
	१४ जाहारमार्थना र व	estitue utue		-	•
	64 205 tran	-			3



		स्पर्शन
मार्गवाहे.	क्षेत्र -	वर्गमानशानिक अर
सार्गचा अयान्तर भेर रूक नेत्र करोग रूक नेत्र कराय हम कराय	हारोड के स्थार आव होरा अवेस्पार आव होरा अवेस्पार गाँ होरा अवेस्पार गाँ हारोड हारा अवेस्पार गाँ हारा अवेस्पार गाँ	क्रियालगारिक शारीक अवस्थाता माग शेरक अवस्थाता माग शेरक अवस्थाता माग शेरक अवस्थात क्रिया क्रिका अवस्थात क्रिया शेरक अवस्थात क्रिया शेरक अवस्थात माग शेरक अवस्थात माग शेरक अवस्थात माग शेरक अवस्थात माग हिरोक
· . II	असकी संबर्गक	
१४ आहारमार्गना	बनारा <i>र</i> आरारह	

में बस्तरफार्टेड पूर्व प्रद पूर्व प्रद पूर्व प्रद पूर्व पूर्व प्रद पूर्व प्रद पूर्व प्रद पूर्व प्रद पूर्व प्रद पूर्व प्रद पूर्व प्रद पूर्व प्रदेश प्रद पूर्व प्रदेश	i	बन्दराउ बन्देर्द ११ ११ ११	उत्तरहरू श्रीवह देशिय ग्रागेस्य ॥ स्वत्यः ॥ ॥ स्वतः ॥ ॥ स्वतः ॥ ॥ स्वतः ॥
Andreas	13 75 77 27	११ ११ ११ ४ १	11 संदर्भ 11 27 सन 11 27 स्ते 27 27 क्षणस्य 29
भी गढ़ र्रेड केंद्र हैंड एड र्रेड गढ़ रेड गढ़ क्षेत्र गढ़ का क्षान्य का क्षान्य का का	29 29 29	११ ११ १	भ सम ॥ भ स्ते भ भ समस्भ
र्ग केंग्र र्म छन् र्म ग्य र्म ग्र केंग्रिकार्य स्था क्रांकार्य स्था	29	,, ण्डस्तुन्य ११ १	११ की ११ ११ कराहि १९
र्ग केंग्र र्म छन् र्म ग्य र्म ग्र केंग्रिकार्य स्था क्रांकार्य स्था	99	,,	gg आगरिंद् sg
संस्थाप सर्वे वर्ष १ संस्थापन्यं सम्ब			
Stundle HA **	99		
		, "	39 दिनीय III
Econopies (Se	न्तर्त कन्द्रते	अन्दर्श	बन्दर्भ ीर्व
1 24 24 24 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12	वर् गाउ	,,	देशेल वर्षापुरुपरिवर्तन
1	99	×	बनादि बनन्त
1 mr. relations	बन्दरने बन्ता क्षत्रं स रेज्यस्य बन्दर्देर् वस्तरम	र शिल्पार्ती एक्स्यव कल्पार्ती	कन्नबुँहर्ने साबिक क्यामर सारचेत्रव
क्षास्त्र हरू इ	*	,,,	,, ਫੇ*ਲ .,
	¥ि"्र पन्ताक्षतंत्र	1	वनपुरा
•	मस्य , , मंदि	,, ज्यानवर सम्बद्धते	इसम् वश्वास्त्रप्रादनन
5"	,	,	क्टब्स्य इ न्य क्
	50	, इत्याप्तरूप	कर-चाड वर्गस्यण ग्रहर ^{ीवर्गस}
avenue e e	~	् कार्यर इ.कार्यर	वित्रक क्लंब्यून्य मान्यान क्लंब्यूनस्थान दन्तिये बर्गारिये टीन दवर, क्लंब्रिये

है, स्वनन्द गया है वि माना जी बेंदी अपे ग तो किलाइट जीव सर्वहाल ही किल्याल गुग रियम-गरिपय ामें रहा है, अप रूपी वालामें देवा एक भी सवय नहीं है, जब कि विश्व हीट जीव न रेजन रो। क्निनुत्व निवशे अरेग कियानका बाठ तीर प्रशस्त्र होना है-अनारि लत, जाि स न और सारि पात । जो जमन्य जीन हैं, अर्थात् रिशल्यें भी जिनही साय सका प्राप्ति नहीं होता है, देने जंबे वे दिखलका वाण आगरि अनत होता है, वर्षीकि, उनके नेपण्यान वणी अद्धि, न अत्। जो अपादित दृष्टि अध्य जीव है, बनके विस्तासका हाट अगिरिया त है, अगृत् चनारे बाउते चान तर सम्बन्दनी प्राप्ति न होनेसे तो उनका केपान आपि है, वितुषा करा एवरवारी आपि जैत विष्यायक अव हो जातेरे वर केचान मान है। धरणको हुन प्रकार जारानेने बहनतुष्परम हरान्त दिवा है, जो कि उस न च ता प्रदम सम्पन श एण थे। इस प्रशास सर्व प्रदम सम्पन्त हो। उत्तम बस्तेगा जीवीरे हारारण्यभा द्रश्मान तर उनने निधालका बरु अनादिसालत समझना चाहिए। जिन में न एक पण पायव करो आप बर िया, समारि परिणामों के सम्झारि निमित्तमे जो किर भी A क्यार प्राप्त हो ने दें, उनके किए नक्क वर्ष सारिसान्त माना जाता है, क्यारि, उनके किया नाम अहि और अन, ये होनों पाये जाने हैं। इस प्रस्तरे जीतोंने भी औरम्पाना इष्टात धरणकाने दिया है।

प्राप्त अगारि अगत अन अनारिमान किया के बार में छोडर सारिमान नियाल म निर्मा को गर् है, अन उसंती अनेश निष्पादित गुगल्यानका जयम केत उत्तर

क्रिप्याहरि गुन्यानम जरूप पर अन्तर्यहर्ने स्नुन्या गया है, निसम अभिन्नय यह हिन परि वाह सम्बन्धिपादी, या असन्तम्बन्धीर या सक्तासन वा प्रवस्तवन जीर बाउ बनाया गया है। परिशामित निमिन्स निष्या रहा प्राण हुआ और विष्याणस्थामें सबसे छोटे अल्लाहुर्वरात तर्र हरूर पुर साधीन्थापनी, या अमरनसम्बन्धाने, वा संस्थासम्ब अपत अमबरसमारो प्राच हो गया, तो कम नीवर मिध्याचरा जरपराण अन्ताहुरुप्रमान पाया जाना है। ऐसे मिध्याचरे र नपात ता प्रशासन का नपात का अपन अपन होती वादे आहे हैं। इसी साहिसाल सहि—नाज प्रशास की उसका आहे अप अपने होती वादे आहे हैं। इसी साहिसाल भारतमा १९४० १, अस्तर अस्तर प्रतिस्थान है। इसका अस्तित यह है दि जर भाषाचा ३१ वर उ. १९७३ में स्थान में होतर पुने कियानी हो जान है तो वर प्रिनेसे अधिन अध्यक्त पाः जान प्रथम रः सम्बन्ध । जनसम्बन्ध प्राप्तकः सेम्प चण् नाता है। (अयुरामारियांन-परिकारमार्थ श्रीत्म अर्थन्थः) जनसम्बन्धः प्राप्तकः सेम्प चण् नाता है। (अयुरामारियांन-काटर रिव दिल्ल पू व्रथ-व्वर)

हुनी प्रस्त न्य गुगरवानीय भी जल्य और उत्तर बच्च सन्यव गये हैं ।

r

K

४ क्षेत्रानुगम-विषय सूची

tre				
भगन निषय	पृष्ठ न	क्रम व	नियय	Ž.
१ विषयरी उत्थानिस १ पेपन्नकारका मगलापरका और प्रतिज्ञा २ धेपातुगमको अपेला निवेंश		सरपानः घनलेक इ.ज्यलेक १० लेकका	ार लोक चनरोकके (माग है, यह बतलाका को ही प्रमाणलोक वा 'माननेमें युनि बायाम, विषक्तम और	: *
भेर-कथन ३ भेशानुयोगहारने अनुनारकी		(३ लोकका	विरूपम नीनमी तेनारीस पन	10.
उपयोगिना ४ निधेपकी उपयोगिना, उसका क्रान्य भीट मेद, तथा निक्षे	97	व्यक्ति अ पादन	नने पर दो सूत्रगाधा प्रमाणनाका सनिष्ठा	20-
पींचा नयोगि सन्तमीत परिवर देशी निरन्ति, एकार्थ यायक नाम, तथा निर्देशाहि	7-0	जीव के	प्रदेशी शेष्ट्रमें अन्तर रह सक्ते हैं, इस गिरिहार	22
ण अनुवागद्वारों से शत्रवदाश दा निषय	المحوا	१॰ बाकाश विरुपण	विच्याह्ना दानिका	23-
र गांडराज्या निगति मेद और इसका स्वरूप		में र उपप	स्वस्थान, समुद्रात १६,६न सीन अथस्था	
७ रेकानुगमधा शंध तथा तिर्देश बा स्वरूप	99	मास भर ७ स्वस्थानः	य स्वरूपका वलन वस्थान, विद्वारय	< १ -1
२ श्रोतने धेत्रानुगमनिद्रा ८ तिरुण्टिय श्रीवीचा सेत्र- निवयस १ रोड ल्याने सन्तरे बडा श्री	३० ५६ १०	त्दनस्थान, उपगाद, इ डारा यर भ दि ची देख निरूप	सान समुदान भीए न द्रा मरस्यामीके ससमय निष्यादीय द्र आश्वमासीके पक्ष प्रतिका, नथा स्थान साहिशादी	
से अज्ञाय हे इस कानकी शहर समायाजपुरक समाया	70-77	यों हा ब्रह्मा	र-जिक्रणण	f,
रे॰ सन्द्र प्राचात प्रकारित सुत्रम्। बार राष्ट्रक प्रमाणका निवरता केर अन्यासकी सरसार	1	प्रमाण विश्वचारिक	भीर अर्थेशहका पर्याप्तग्राहारे	13
नेबाणनके जिल्ला स्वापन काणनकारण विश्व साहि सनेब साबार वा बागना समू		संस्थानचे । व संदर्भना	मानवमान विदार पश्चिम मुलबार ानुद वैसे ज्ञाता है	
ररहे इंडरचा निगर अर्ग्यु	27-26 20	इत कहारा	समाधान निकाणनेका विधान	\$1 \$1

	\	
के का र सम्बद्धाः स्थान	વૃષ્ટ ન	
•	भित्रव	
पूरा न जन मे		
£13 44 / 1	3 46 650	
(*************************************	दिश्रमे धेत्रप्रमाणनिंदग ५६ ८१	
मा हिल्ला है ज	दिशमे धेत्रमाणानदः ५६८१	
	1	
es mainen na lentagas de es amites tratamentes for es amites tratamentes for established.	(of the state of	3
FA MALL.		-
दर्भ चित्रकाहता प्रधान किया देव ते । रिकास	लामा च मारा है या विकास मारा मारा है या विकास मुख्या के मही वह में है कि कार्य मुख्या के मही वह में है कि कार्य मुख्या के मही कर मार्थ में कार्य मारा मारा मारा मारा मारा मारा मारा मार	
SA ILL STATE WILL TO SCHOOL	मारा नारवी है सरका पट	46
कर दे साहकतारीय स्था निर्माण	ज्ञपत्र पार्थित ज्ञारी ज्ञारकाकी ज्ञारी हिसीय पूर्विपर्योक स्वारही पट	
All Main Ring Sun	alle de alitale edice.	de
हरि जायोदा हरता । इ. एव शाने आग धानक हेता प्रमाण (वांत्रया बचन है हेता प्रमाण प्राथित बचनवा	शहे नार्बाही उत्ताहे शहे नार्बाही उत्ताहे	
मराम (वाश्या करान्या	क्षां वाद्यांक मा	50
4.64441	होने वार्षोदी जगार होने बार्षोदी जगार व तमीय पृथिपीने भी प्रश्नीने बार्षोदी जगार	
	MINTER STATE	88
स्वतं स्वातात्वराहोष्टे गुण्यात्वर्गाः स्वतं स्वातात्वरहोः गुण्यात्वर्गाः	मारबाबा क्यार	
Lagarita Manager 40-82	भारवाबा काला पडलाव	**
	शरकार्या क्यार	65
Company of the second second second	and all dies.	
Sitter	४६ छा प्राथम अवारे शरकांकी अवारे ४७ सामवा प्राथमिक जारकांकी	91
HILL S. CONTROL	० शामवीं वाववा	"
द्वार साधका १ क्यांग्रीक शहर	SE, Melle " " Stilleton	63
	THE TITLE STATE	•
६० करवाना । स्थान पनन नियानेत्वा प्रसाम पनन १० सरस्मपरिधि निवाननेवा वरस १० स्टू	४२ हिन्द अध्ययम् निरुपण ४२ हिन्द अध्ययम् निरुपण	84
	the stiff figure	
रूप सर्वार और विशेष कृ भरत, वरावन और विशेष	देश्यवणन क्रिक्साति	६६-७३
०१ प्रत्त, वरायम	हात्रवणन विपेचगवि	
१६ भरतः वेशवन शार अवसी शरकार्या प्रमणस्वनाहि सवसी	कि सीवाव । या	,
		×
	४८ _{वर्ष} सासार्वय गुणस्थान तर	eri
	४३ ० तियप्य निर्मातिस्यानस्य । ४८ क्षासार्यम् गुणस्यानं तर्र स्यमास्यम् गुणस्यानयति तिर्पर्यो	4, 6
Antigledale findt fin		
दूर सम्मत्यानिक क्याना रोज दूर तथानिक प्रशेष रोज दूर दूरसमुद्धानसम्बद्धान्य दूरपारसमुद्धानसम्बद्धान्य		
मुप्र देश समुद्धालया	् वसार्द्रवात और वर्चा	54 5 4 1
ह क्यान्सम्बद्धाः शत्र १६ प्रतस्त्रमुद्धानतन् वे चनावा शेष		ग्रे का
THE PARTY OF THE P	निर्वेष यानिमता निर्वेष यानिमता निर्वेष यानिमता निर्वेष गुणस्थानमें विश्वाहिक गुणस्थान	Sale Sale
१३ हाइच खारा संस्कृतका		40
१६ प्रमहसमुद्धाः भोर १००० १५ लाहाः सार्गे सामग्रहस्याः मानो सामग्रहस्योगः शेषपालका	व्यवसम्बद्ध	
त्रहरणः । नहरणः । नहरणः	रह क्षेत्रका ।	
जारपुरणसमुद्राप	**	
* 124 *		/

(11)

(३२)	
Į.	T =	

पट्रागमका प्रस्तातना

मम न	विषय	9ुष्ठ न	मम न	निपय	पृष्ठ न
५३ राष्यपर्याः क्षेत्र	रपचे दियतियँचीं का	ευ	६७ पचेरि काँके	इय और पचेटियपर्याः सभी गुणस्थानींका क्षेत्र	T
(स	नुष्यगति)	७३-७७	निरु		a
	गुणस्थानसे टेकर		£	पर्याप्तक पचे दिय जी दे	के
अयोगिके न	रो गुणस्यान तकके		हेत्र इ	ा यणन	C3
मनुष्य, १	पनुष्पपर्याप्त और		3	कायमार्गणा	60-603
मनुष्यमिय	के क्षेत्रा वर्णन	७३	६७ पृथि	विदायिक, अप्टायि	5 ₄
५५ सयोगिकेय	लिंका क्षेत्र	94	तंत्रस	रायिक, वायुकाविक, तः	at
	प्तक मनुष्योंका क्षेत्र	७६	4141	पृथितीकायिक, पाद	
(देवगति)	७७-८१		विक, बादरतेजस्याविक	
५७ मिध्याद्वीय	मादि चारी गुण			वायुकायिक, बादरवन्	
स्यानदता	सामा यहेचाँका क्षेत्र	৩৩		काविकप्रत्येकदारीर भी गांच बादरोंके अपर्याप	
पट संग्रेगलासः सिमान	्रवेपासे लेकर मन को चारी गुणस्थान			गय यादराक अपपाप पृथित्रीकाविक, सुक्त	
यनी देवी	र १ कारा गुणस्यान हा क्षेत्र			वृत्यस्यायम्, यूर्यः विक, स्व्यतिज्ञस्यायिक	
	, व्यन्तर और	57	स्हम	प्रायुकायिक, तथा इ	न
च्यो निष्क	देवावे बारीरकी		बार	स्रमों रे पर्याप्त में	τ.
ऊचा हका	यर्गन	1.0		॥प्तक जीवॉके क्षेत्र	
६० मय धनुदि	रा भीर पाच अनुत्तर		निम्		cs -
विमानवाः	ती देपीका क्षेत्र	< !		भादि साताँ अधस्तन तर	
२इःवि	डेयमार्गणा	< ?- co		तन इपत्याग्मार, इन बा वेयोंके भाषाम, विष्कर	
६१ सामान्य व	रहे द्रिय, वाद्र एके	-		वाहस्यका वणन	66-91
िंडप, ग्र	रम परे दिय और इन			वियोंमें सपत्र जल मा	ĨĪ.
नाना श्रेप	याज तथा सपर्याजक		वाया	जाता है इस लिए जर	7
कावार ह	त्र्योका चणन ममुदानगत एके दिय			क्र जीवाँका सर्वत्र पृथिति	
अविदेश	नमुक्तनगर प्रशाहित प्रमापः, तथा उनका			रहना समय नहीं है, इ	म ५१
सेवानिक व	T	-		का समाधान ए प्रिजीकायिक, याद	•
६३ स्वरधान्	स्यस्थान, बेदनासम्	-		थिक, बादर तेत्रस्कावि	
ইলে মা	र रयायसमुद्धानगत		। और	बादर बनस्पतिकायि	Ŧ
बन्द्रण क्	ित्रय सार बाहरपटे ज बीवींक क्षेत्रका			न्द्रारीरवर्षांतक जीवी न	T +1
निवयत	ारः चारातं सम <u>्</u> या	_		-थणन	
६४ साहण्य	वयाप्त भें र भगवात			पतिकाथिक प्रत्येकदारी १४) चधम्य सयगाद्वनार	
रिक्टक	र वे दो इ. व्यवस्थानाहि			रका अध्यक्ष कायगाञ्चनार ह्यप्रयासकी अध्यक्ष कायग	
क्षेत्र ^क ्षा	ৰিময	C		असस्यानगुत्री है, र	

	ह्रोजीतीयन-दिवत अर्व		पृ स
			-
D	षुम ∣वसम	व्यातसारीका कितना मा जन्म करता है, इस बात	(H
दसम विश्वय	0.000	वयातराधिका कितना भ तर करता है, इस बात	er ,,
	1 640	IIC .	तर
शामकी शिक्षिक निर्मा श्रामक श्रीम	" १४९८ ।त	हरण सारमगुणस्थानसे हो २०क्रेमणे तबने भीदा	र्ष
इसा-देटवर्गा	uu es	सारमगुणस्यानस् योगिवयरी तवने भीदा	60,6
७२ द्यान्तिनीद्यतिष्टितः प्य अविवेशे सूत्रमें सद्दा बदने	181 es a	योगिक्यश ते प्रयोगी जीयोंका शेव	तच्या
20414	A4 3	तीनारिक विध्य विभाग	,,
		Manie	श्राप्त । स्टब्स
अधिक श्रेयका शिल्य	ine a	श्रीदारिक मिथवा यात्र । जात मादि वहीं के लाय है	व वाये
U MITTE STEEL THE	श्यमि ।		
श्रीर अपयोजन यन बारिन या निगोर उ	क्षित्र के	ent Zet et a.	Elena, 606
ब्राधिव या ।	(0)	समाधान	काययोगी
हात्रवा मिरुपण शत्रवाहरूपाहि संयोगिय अस्पाहरूपाहि संयोगिय	विस्तरम	Straft From	
७ किरवाष्ट्रवाहि सर्वातः सरकावित और सर	taller fos	अशिरारक सासादमसम्बन्धिः सम्बन्धिः भीर संयोगि	विवलीका ।।
	rचरियोगी	हात्र निरूपण	
The standard of the	**	हाज निक्यण ८८ भीदारिकमिश्रवायये	ारी सासा
ELM-Bale	605-666	८८ भीवारिकमिश्रवायय इनसम्यादि भीव	ज्यात पर
	निसे हेबर	दनसम्यादि आयोक सम्यादि जीयोक वया नदी वहां,	(स शकाका
४ यशिमाणण ५७ मिच्यादि गुजस्य संयोगिकेयली गुज	क्याम सर्व	वया नहा वया	
		समाधान विश्वाहि गुणर	धानसे हेक्ट
वांची प्रतीयोगी चयमयोगी जीव	le diver. Se	अस्यतसम्यादि	गुणस्थान स्थानी
		अवर .	-
श्रिव विश्व समुद्धान	ततं तथा	जीवीका क्षत्र	नायामी मिच्या
man (2.3) at (4.3) at	Same Mile	०० विश्वविश्वास्थ्य	त्यवाता । सम्यादधि और पि जीवोंदा रेल
maradio -			
चलनवीत वर्ष श्रवामीं वर्ष	ाधान जनस्य जीवी वा	१०३ ०१ आहारकशाय	नेश्वी शहर आवा
७९ वाययामा ।		१०३ ०१ आहारककाय	वियोगा ।
र्शं म	च्यानसे रुप	THE PERSON NAMED IN COLUMN	· D.
६१व ८० सासा ^म नगुण स्रीणवचायगु	वास्थान सबचे	१०४ सासावनसम्	चार्टि, अस्पत
martiglish or	PETS TRACE	Sog Eletta	कीर स्थान ११०१
्र बावधार्गा स	विना सम्म _{व्या} श्वच श्रेना सम्र _{व्ययमि} मिच्यादरि	वचलाका	होत
र् भीव्यक्तिक	वियाना ।	** '	

८५ भागारिक वाययाची विषयादि क्रीवीका शत्र

(११	
क्रम स	

षट्खडागमकी प्रस्तावना

पृन∫प्रमञ विषय

विषय

	٠.	1	114 61
५ वेदमार्गणा १११-	? ? ?	७ ज्ञानमार्गणा	११७-१२१
९३ मिध्याद्दष्टि गुणस्थानसे छेकर		१०३ मत्यञ्चानी और	
यनियुत्तिकरण तकके स्वीवेदी		इन्द्र भापकांचा आर	खुतामाना
बीर पुरुषवेदी जीवींका क्षेत्र,		मिच्याद्दष्टि जी गैंक	ाक्षेत्र ११३
तथा तन्सम्ब घी विशेषना-		१०४ मत्यश्वानी थीर	शुताद्याना
थोंका यणन	555	सासादनसम्यग्दि	योंकाक्षेत्र ११/
९४ मिच्यादृष्ट्यादि मी गुणस्थान	555	६० अचतन आर क्षणक्ष	यी राष्ट्रकी
यती नपुसकोदी जीवींका		बाउनएसपसं बन	ात्रचिकेसे
संब, तया तत्सम्बद्धाः		हो सकती है, इ	स दाकाका
पिरोपतार्भेकः वर्णन	११२	समाधान	17
९५ भपगनपेदी जीवींका क्षेत्र	222	१०६ विभगहानी मिध्य	क्रि और
	í	सासाइनसम्यग्द्रशि	जीजेंद्रा
६ क्यायमार्गणा ११३-१	130	क्षेत्र, तथा स्त्रस्थान	गडियड−
९६ घोष, मान, माण भीर होम	- [गत विभगभानी	तिश्यारपि विश्यारपि
क्याया मिच्यादृष्टि जीयाका	- 1	अधि तियुग्नोक के	स्थापात्री सम्बद्धात्री
दरम	११३	मागर्ने भीर मर	स्तर्वाचन स्थानेस्
९७ सामार्नसम्यन्दष्टि शुण		असरवानगुणे क्षेत्र	्र की कार्यों इंकी कार्यों
रपानसे टेकर् मनिवृधिकरण	- 1	रहते हैं, इस शक्त	न हा क्या रसमाधान ॥
गुणस्यान तकक क्रोध, शान,	- 1	40.00 40.514.	ार्यनाथाम ॥
माण और होमक्षायी	Í	१०७ असयतसम्यन्दरि गु	णस्थानस
जीपोदा हेरच	S\$A	टेक्ट शीणक्यार	
९८ रहेवम बोधपद क्यों नहीं कहा.		उपस्य गुणस्थान ह	क् मात,
रस राष्ट्राका समाचान	,,	शुत भीर अवधिश्वान	। जायाका
९९ 'टोक्के ससन्यानुवे मागमें'	. 1	क्षेत्र	\$15
इतना दी पद स्थान बहानेस	- 1	ि ८ प्रमत्तस्यतसे लेकरः	शीणक्या
महरूमें भारतपराबंध भी वस्		यान्त सन पर्यपदानी	जीपोंचा
क्यातिक साम्ये रहते हैं ⁹ यह	- f.	शेत्र	11
वर्षे क्याँ नहीं हेना चाहिए.	- 1	🛰 पर्यायार्थिक मीर ह	
रेख शहादा, तथा इसीके	- }	नयी देशनामींके	कड्नेका
थम्तर व पर भीर मी शहरत		प्रयोजन	१२०
समप्रभ	200	११० केवलकानी सपो	विश्वेष्टी
१०० ड.महराणी स्वसाध्यरा	.,,	और अयोगिनेवरी	
विष्ट वर्णदस्यनाका शत्म	33	क्षेत्र	141-11-41
१०१ अस्यादी प्राप्ता श्रीम		११ स्वस्थानस्यस्थाम	•
१०१ हेप्स प्रमृह्यार्थः जीवना क्रम	,	स्वस्य वतलाहर इ	पर्का रेक्को
क्षेत्र केसे कहा हम प्रकाशन	1	अयोगिकेवर्शमें उस	-देशका ।।पासादा
टक इस.इ. सम्मान्त्र कथ	į	मयनावा आपाइन	
	to!	रामाधान	वार १ २ १
•	•		

	धेत्रागुगव-	रेपय-स्पी		(34)
इ.स.स. विथय	पृत्र	कम न	विषय	पृ म
 स्ययमार्गणा १ ११२ सम्म वीपाँग प्रमन्तरमत गुणस्थानरे त्रेनर मयोगि नेपाँग गुणस्थान तक्के जीवांनर रेप्य 	₹ ₹ ₹५	दर्शन प इस शह १२४ धवधुर्	र्वापान जीवींमें घ त्या जाता है, या म तना समाधान दीनी जीवींमें मिन कर शीणक्याय गु	ही, पर्
११३ ह्रम्याधिक क्योहरानाका प्रयोजन		स्थान त १९५ अवधित	कका क्षेत्र निक्रपण रीती और वेट रिपोक्स क्षेत्र	१२७
११४ सप्तिविष्याचिर देख और	}	-		**
वृत्यक् गुक निमाणका प्रयोजन ११० सामापिक और छेड़ोपरयापना स्थानीम प्रमण्डस्यत गुण क्यानसे लेकर सन्वित्तिकरण	90 800	१२६ रूप्य, छेरणपा दनसम्य	॰ सेरयामार्गणा बील भीर कार्र हे मिष्याद्वप्रिसा एडि, सम्योगस	रोत सर पर
शुणस्यान तकरे सवत			र अस्वतसम्बग	
श्रीवींश सेष ११६ परिदारियगुद्धिशयतः सामा विक भीट् छेदोपस्थापना	!	यणत १२७ तेज्ञ वी	र प्रकेरवावार इयह इयह के	१२८ भि
नुद्धिश्वयतीते पृद्यामृतः करों मही, इस द्यापान समाधान ११७ परिदारविनुद्धिसवमी प्रमत्त		संयतं त	हिसे लेकर सप्तम कके जीवींका क्षेत्र तक समुद्रातः	235
बीर मनमच सवतांदा क्षेत्र १९८ स्वमसाम्पराय संवमवाले वपशामक भीर क्ष्यक जीवांका	Se .	तेज्ञीलेहर	ापाले मिच्याद रेशमें विदेशका	धि कर
देश			, मारवारितक सं	ðr **
११९ यथाच्यातसयमी, सममासयमी और बसयमी मिध्यारवि जीवी	}	अपपाइप जीवीस	द्गत पद्यक्षेद्रयाय होनसी राशि व्रथ	ाले तब
बार्यक्ष्यक्शेत्र निक्रपण १२० कोधनक्षणाचे भेष्र जीन और प्रश्तिमें किस मोधसे जयोजन	\$50	१३० महरेदव	ावका विक्रपण ।यासे अर्थि गुणस्पानसे हेर	
है, यह बतावर तासम्बन्धाः शवा-समाधान १२१ सस्यामे सामाहनसम्बन्धाः	દેવલ	१३१ प्रशत्नेस्य	प्यतक्षेत्रीयीका है एवाले संवोगिकेच भीर अलेदव जीवी	री .
सम्यगिमध्याहीष्ट और असपत सम्यगिमध्याहीष्ट और असपत	,	सेत्र नहीं	बहनेका कारण ज्यमार्श्वम्	3#3
१.२ क्रमुस्डीमी जीवोंमें मिण्यारहि गुणस्थानस तंत्रर श्रीणक्याय	1	१३२ अव्यक्तिः दृष्टि ् अवोगिष	देक अधिने मिट्ट १णस्थानसे हेर वटी गुजस्थान त	11 TC TG
गुणस्थान तर शक् निरूपण	શ્યક્	प्रस्ते∉ शुः	नस्थानमें भी गोका	₿¥ <i>(1(∕</i>

पृ, च । यम न

\$32

99

131

7(14)

धिपय क्रमः न मिच्यादृष्टि १३३ व्याप्यसिद्धिक जीवोंका क्षेत्र १३४ विहारयत्स्वस्थान और वैशि विकसमुद्रासगत सम य जीन सामान्यखेक बादि चार रोकोंके असख्यातवेः भागमें श्रीर मनुष्यलोकसे असय्यात गुणे क्षेत्रमें रहते हैं, इस वातका सप्रमाण विरूपण १६५ सादियघ करनेवाले जीव पन्धोपमके असक्यातर्थे भाग मात्र होते हैं, इस वातका सयुक्तिक धणन १३६ परेडियोंमें सचित अनन्त सादिवधकों में से जगमतर के श्रसंख्यातचे मागवमाण सादि-यधक जीय असोमें क्यों नहीं बरपन्न होते, इस श्वाका समाधाम १२ सम्यक्त्वमागेणा ११७ सामान्य सम्यग्हरि सोर क्षायिक सम्यग्दि जीवामें धसयतसम्यग्हरि गुणस्थानसे रेकर अयोगिकेयरी गुणस्थान त्तक प्रत्येक शुणस्थानवर्दी जीवींका क्षेत्र १३८ वेरकसम्यन्द्रष्टि जीवीम अस शुणस्थानसे सप्रमचगुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवीका क्षेत्र १३९ उपदामसम्यग्दरि जीवीम **धस्यवगुजस्यान**से डेकर उपदातिकपाय गुणस्थान तकके जीवीका क्षेत्र १४० मारणानिकसमुदान और उप पाइपइगन असयन उपश्चम सम्पारि पीवींकी सक्याका

निष्पम

नहीं होता, इस दानाश समाधान १४२ सामादनमम्यग्हणि, ग्मिण्यादृष्टि और मिण्यादृष्टि जीवींका प्रयक्त प्रयक्त क्षेत्र 37 निरूपण १३ सज्ञीमार्गणा १४३ सभी जीवॉम मिध्याद्रि गुण ££\$ \$\$\$ स्थानसे टेक्ट झीणक्याय गुणस्थान तकके जीवींका क्षेत्र १४४ समग्री जीवोंका क्षेत्र १५ आहारमागेणा १४५ बाहारक जी गैंमें मिथ्यादिए \$33 गुणस्थानसे लेकर सयोगि 244-244 केवली गुणस्यान तकके जीर्जोका क्षेत्र निरूपण मिथ्याद्दष्टि १४६ अनाहारक जीनों हा क्षेत्र १४७ भगहारक सासादनसम्य व्हरि, असयतमस्यग्दरि और वयोगिके उत्तीका क्षेत्र १३३ १४८ अनाहारक सयोगिकेपरीका क्षेत्र स्पर्शनानुगम \$38 निषयमी उत्थानिमा १ धवलाकारका मगलाचरण और प्रतिश्वा

२ स्परानानुगमकी अपेक्षा निर्देश

३ नामस्परानः स्थापनास्पर्धनः

द्रव्यस्पर्धन, क्षेत्रस्पर्धन, बाल

भेर-कथन

विषय

134

१३५

१३७१३८

113

23/

१४१-१४५

188

१८१ उपराम श्रेणीमे उतरकर

मरनेवारे उपद्यममध्यक्त्री

जीनोंके लियाय बन्य उपराम

सम्यक्त्री जीवींका मरण क्याँ

128

139

		पृम ∣वसम
	विचय	1
भ्रम	और भाषस्पदान, इन	ा
स्पर्शन	शीर भाषस्याना समेव बारके स्परानां वा समेव	र कार रह वन्त्र
सद प्र	कारक क्याम श्रान्त्रभाष	६८६ ६८८ ६६ वर्
इ दर्भ	d sile day.	1
४ स्परो	प और नयाम निरासि, और नदान्द्रवी निरासि, और के एकार्यक साम म	ोर चा
द्वाप्य	वायाययके सभावकी सार	क्य हमन हमन अ
च्रमा	ल्याक्य र जनगर	180 /4.
वा	समाधान	7 800
	थमे स्पर्धनानुगमनिर्देश	\$84-604 E
अ	यम स्पर्धनायुग	हिरम १४५ १८ इ
£ 63	TEUTETE STATE	60.1.
(i	नेक्रपण अयन	ारकी कार हर
4.1	पशना प्रवासका प्रतिपादन मायद्यकनाचा प्रतिपादन	\$88-580
	Hidra a	101.
•	होरचा प्रमाण निरूपन सासादनसञ्चारिक ज	JOILE SAC
	चतेमानकार सासादनसम्बद्धार	त्रीवाँका १४९ १६५ २
`	सासादनसम्पर्धाः अतीनकालिक स्प्यानके	Servines
		Sec. 586
•	• सासादनसम्बद्धानदेशव इयस्थानस्यस्थानदेशव	च्योतिया ।
,	१ सासादनसम्बन्धाः	ज्योतिस्य १५०-१६० स्रमाण १५१-१५२
	Mala dagar.	TO SPECIFIC STREET
	SS de dine diene	विमानींका १५२
	a de tettiligen dage	* .
	राजुके मध्यक्त्रीके राजुके मध्यक्त्रीके	आंदेनत्यकः
	राजुके अधक्छेश्रीके सिक्तिः सथा	विश्वस्थान
	antel Geest	141-1
	- 3841 415"	7017
	संबंधात हवाथि। केवल विलोध प्र	हामसूत्रके भर्
	केवल (श्रह)	बातराते दुव बतराते दुव जियां ने भयदार
	-101EGIG -11	
	अल स्था अ	वित्रवाच अपकार वित्रच तुरस्र लोच वेदाचा उद्देश और
;	संस्थानके उप	वशका उतिक और
	614.4	

स्वकीय निष्पक्ष मनीवृशिका وبع १६ चन्द्रविम्यवालाकामीकी उत्पर्धि १७ ज्योतियी देवाँके विमानीका प्रमाण उत्सेघांगुलसे ही हेना चाहिय, प्रमाणांगुलसे नहीं, स पथा जागृहीय सावाधी सारे जम्बुद्वीपमें समा नहीं सकते. इस वातका प्रसान्तर स्थीकारके 280 साथ उत्तेश १८ सासात्मसम्यन्दि

विषय

देखोंका स्वस्थानशेत्र निरूपण १९ सासारमसम्बन्दि जीय पके दियोंने उत्पन्न होते हैं, या केवल बारणान्तिकसम्बात करते हैं। इस बातका सममाण १६२-१६३ तिर्णय २० जब कि सासादनसम्बन्हिए देव

प्रेटियोमें मारणान्तिकसम दात करते हैं, तो किर सर्व लोकपती यके दियोंमें वयी मही इरते, इस दोशका समुविक २१ सासार्वसम्यादि जीवीका

बारह बढे चोहह भागप्रमाण क्परानक्षेत्र केस प्रटित होता है। वे वायुकादिक जीवीम मारणा स्तिक समुद्रात क्यों नहीं करते, इन शकाभावा समाधान <२ उपपादगत सासादनसम्बद्धाः जीवांक देशीन श्वारह बढे की दृद भागप्रमाण स्परान के त्रवी

२३ जिल बाखायाँका यह मिमनत है कि देव निवमसे मूल्यारीरमें प्रथिय होकर ही मरण करते हैं, और इसी अपेशा उपवादगत सासावनसम्यग्द्रि

विपय पून | क्रम न ग्रम न स्पर्शनक्षेत्र देशोन दश वटे चीरह भागप्रमाण कहते हैं, उनके स्थनका सममाण विरोध निरूपण 33 २५ सम्यग्मिष्यादृष्टि और असयन सम्यग्द्दष्टि जीर्शेका चर्तमान भीर भतीनकालिक स्पर्शनक्षेत्र १६६ २५ सयतासयत जी गेंका वर्तमान और अनीतकालिक स्परानक्षेत्र १६७-१६८ २६ स्वयम्भूरमणसमुद्र और स्वय म्प्रभपर्वत के परमागवर्ती क्षेत्रका विष्करम बहलाते हुए सवता सयत जीयोंके स्वस्थानक्षेत्रकी सप्रमाण सिद्धि 935 288 २७ प्रमत्तसयत गुणस्थानसे छेकर थयोगिकेश्टी गुणस्यान तकके जीवींका स्परानक्षेत्र. वित्रियादि ऋदिसम्पन्न ऋपि योंने सूर्व मनुष्यक्षेत्रका रणदी क्या है, या नहीं, क्या मेर दि। चर तक जाने मानेवाछे ऋषि मनुष्यक्षेत्रमें सर्वत्र नहीं जा आ सन्ते। क्या तिपयोंना भी एक राख योजन अपर तक जाना सामय नहीं है, इत्यादि अनेक द्वारामें द्वा समाधान १७०-१७२ २८ सपोगिने वटी हा स्पर्शनक्षेत्र 22 बादेशमे स्पर्शनतेत्र निर्देश १७३-३०९ १ गतिमार्गणा (नरकगित) " **-**१९२ ५ मारची मिध्यादति और्थोदा वनमान भौर भनीत्रशास्त्रिक स्पर्धनसेत्र 803 ६० वर्गानदारका वरेशा विद्वारय स्वरपानादि पर्गत नारकी

३१ विश्रहगतिम जीवाके विश्रह सहेतुक होते हैं, या महेतुक, इस वातका निर्णय करते हुए नरक, तिवस, मनुष्य भीर देव गति प्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मशी महतियोंके मेदीका निक्रपण और उनके क्षेत्र निपाकित्वकी 204-13 सिद्धि ३२ सासादनसम्बन्दष्टिनारिक्योंका वर्तमान और अवीतकालिक €पर्शनक्षेत्र ३३ नारका प्रास्तिके बाकारीका,तथा नारक्यांसे धर्तमानकाल में रोने हुए क्षेत्रका वर्णन ३८ सम्योगमध्याद्यक्षि और असपत सम्यग्हारि नारिक्योंका स्पर्धन क्षेत्र बतलाते हुए एक नारका बासका क्षेत्रपंख, तथा मारणा तिक समुद्रानगत असपत सम्बन्दिए नारकियोंका स्रशंत क्षेत्र मनुष्यलेक्से ससक्यात गुणा पर्या है, इस पातश अनेक युक्तियोंके साथ समयन १७१-१/ ३५ प्रयम पृथिषी हे मिटवाहार मारि चारों गुणस्थानवर्ती स्वस्थानारि पद्यत नारश्चियों के स्पर्धन क्षेत्रकी संयुक्तिक सिद्धि करते हुए प्रसमागत मृदंगाकार छो र के अञ्चलार एक लाख योजन

बाहस्य और एक राजु गील

नियम्डोकके प्रमाणका,अगधेणी

जगपनर, धनलोकका परिकर्मके

अवनरण यूथक स्वद्भपनिद्भपण

150

विषय

तिर्यग्टोकके सण्यानर्थे भाग प्रमाण क्या नहीं, इस शकाका

तथा इसीके अस्तर्गत और भी

यनेकों राकामोंका समाधान

न्यर्शनक्षेत्र

मिण्यादृष्टियाँका

	रपर्ननातुगम विषय सूचा		17
	Material Programme	विषय	ष्ट्र ^म
	1		
D	पृन वस न	वालावाभीका निक्या	77
असमें विषय		वासायामाका मार्ज उनसे विवासित हींप भी	12
बरते हुए अनेक युनियों में	TT OF	के विवाहात होंग अ	-
- अप अनेव युक्तिया ल	\$ C3-8C0 MIE	उनस किशहन	FT
ममाणांने खड़न		उनसे विवासत गाउँ कि सेत्रपल निवासने	664-665
प्रमाणींने खड़न १६ हितीय पृथियोसे लेकर ह		15 S 3mm	rax
वृद् हितीय प्रियोस स्प् पृथिपी तवके मिश्यादि ।	Ster 1	ान रम्मूरमण समुद्रके क्षेत्रप ोका विधान	196
कारणी तक मिरयाराय		। सनेवा विधान । सनेवा विधान	•
कृथियी तक्क मिरवाराय सासादनसम्बद्धिमार्थि	शका निव	ालनेका विधान वे समुद्रोंके क्षेत्रकलका ह र-निक्रवण	14 5 .
सासार्नसम्यन्दारमा सर्वमान भीर सरीतना	रेक	• स्ट्राम्डाके शत्र क् रणकाः ।	^{१५} १९९-२०१
धर्ममान भार जलाल	\$50 600 84 64	Committee	0
इपर्शनशेष			
	१६पा । वर	र-निरूपण वयम्भूरमण समुद्रके क शेष सर्व समुद्रोके	देश्य
अवन पृथिषियाक सम्बद्धाः हाष्ट्रिकोट अस्वतसम्ब	क जिल्हा	क शेव सर्व संग्रम	21× 205-503
		क शेव सव स्तुर सको निकासनेका विधा	n
सारिक्योंका स्पर्धमसेक सारिक्योंका स्पर्धमसेक		लका ।	্মৰ
भारिक योगा स्परानस्य १८ सातवीं पृथियोके सिट	STEIN PACE	लको निकालनक तासाननसम्बद्धि तियंच तासाननसम्बद्धि तियंच तुलसे नीचे मारणान्ति। तुलसे नीचे मारणान्ति।	त्सम्
१८ सातर्पी पृथियाक स्तिमान मारवियोग यतमान		रूस नीचे मारणात्री हात क्यों नहीं करते हैं,	चनकी
नारवियोका व	= সহা	क्यों नहीं करत है।	5-5
		हात क्यांचे उत्पंत्रि	Elai
		हात वयी नहीं करते वा भवनपासी देवीमें उत्पत्ति है, कि नहीं। इत्यादि	शनेक
	• क्राइने	D (65 नदा। * `_``	508-404
हेशान शत्रका हर सातवीं पृथियोंके स	स्यार्थाः	है, कि नवा शहामीका समाधान सम्मातमध्यादपि स्पर्शनदेशन	Table !
सम्यन्दरि, सम्याम		-िन्याराहरि शि	यथानम द्रवर्ष
सायार्टिः, सम्पास्यार्टिः भीर असपतसम्यारि	MIGIAL *** 363 R6	Staling and	•
घाँचा स्परानक्षेत्र	Get e.	इपरिवर्शन असंगतसम्बद्धि और	सयता
बाबा हत्रामक	१९२-२१६ ५	असंयतसम्यादाष्ट्र का स्यत तियंशोदा वर्ता	ज्या और
(विपंचगवि	1 22	जियबोद्दी चत	रात कार २०७ २११
	जीवांका ।	स्यत ।तयवार अनीतकातिक स्पर्धात	(12)
ख मिच्यादि तिश्लेष तथा त्रस	Complete I	अनीतकालिक स्पेशन १ नयप्रयेवकाम यदि	मच्याराष्ट
	Black	ार मचप्रियेयकामे यात् मनुष्य उत्पन्न होते ह	के बार्स
	(समुद्राम	शतुष्य उत्पन्न हात । यतसम्पन्हीर और ह	
ाक्यात द्वाप जाः द्वारवास्वस्थान	नत्यरिणत	"अचित्र सीर ह	वितासन्त
हारवास्वस्थान .		वतसम्यादीय आरे स तियंचीकी उत्पत्ति	क्यो नद्या
		विवस्ताव!	कहा जाय
		तियंचीकी उत्पाप होना चाहिये ! यदि कि मिरवाराष्ट्रि म	PF9 ***
& Malai	PORTE WE.	te meureig H	F - 2
त दोवाको सम ए अतीतकारम	- विध	कि मिरवाराष्ट्र में विवासे उत्पन्न होते	K CII
कार्य विवचास	4041		
तये इत्प्रके	निकारनेवा	श्री द्रव्यारमस्य	ग्रस
		्स शंकाका समार ५२ उपपारपरिणत	क्षेत्रतसम्ब
विधान सासादमसङ्घण्ड	രം ശര്ത്തില	५२ उपवास्परिवात हा महारि तिर्वेद्योंके	
सासादमसम्यम्ह चर्तमान् भार	C-market	न्त्र तियंचाक	Eddlada
7/14 Em2-	my 144 116 , \$63-50	है। ग्राष्ट्र तियंचाक ध करणसूत्र हारा	विकालनका २०९-२१०
च्यमार	36	प्त अन्यासूत्र कर	50/-11
स्पर्शनस्था १ आमृद्धीपका से	बप ल ००	. विधान	लक्ष्मि पद्मपरि
१ आम्ब्रहीपका स	Company of the Compan	्य विद्वारवत्स्वस्थान वात स्वतास्य	Grant T
A TOTAL PARTY OF THE PARTY OF T	्र क्रिक्त आए	लाम स्वतासय	4 144411. 360-566
४ चात्रकास्त्रहरू १ स्थलसमुद्रकाः	पाय धाया	स्पर्धनक्षेत्र	**
8 Elua in	ति समुद्रों के क्षेत्र समुद्रों के क्षेत्र समुद्रों के क्षेत्र	\$451441	
बारादेव आ	ह समुद्राज र इनेक हिन्द् गुण		
व्हर विकार			
**			,

(80),		•	। प्रस्ता ना	•	_	g, 4
ष्ट्रम नत	विषय	पृन,	प्रम न	विष	শ	A. 40
५४ मिथ्याद्दछि प	चेदिय, पचेद्रिय	ļ	कु राचल	वादिके क्षेत्रक	्। भनुष्य	
	योनिमती तिर्य	- 1	क्षेत्र' यह	सहा कैमे	हे, इस	316
	ान और वर्तात	- 1	राकाका			410
काछिक स्पर	नक्षेत्र, २	११-२१२	६४ मनुष्योमे	ত দ্ব	होनेघान	
५५ असनार्टीके	गाहिर जसकायिक		नारकीर	गसाद्तम् स्य	हरियोग	
जीवोंके सर	ात्र होनेसे मार		स्पर्शनक्षे	त्र नियंग्रीकः	हा सक्या	
णातिक औ	र उपपादगत उक्त		तवा मार	ग नहीं हो स	हता, इस	
तियँचक्रि¥ीः	हा स्पदानक्षेत्र सर्व		यातका र	त्रयुक्तिक आ	संप आर	386-490
लोक कैसे	सम्मय है, इस		परिद्वार	_		£ (0-4).
शकाका सर		285	६७ सम्याम	व्याद्दीर गु	णस्यानस	
५६ सासादनगुर	दस्यानसे टेक्ट		लंदर अ	या।गर्भवला	गुणस्यान	550-258
	गुणस्यान तक उक		तक्के म	नुर्धीका स्पर		\$40mm /4
	रोंका स्पर्धानक्षेत्र	213	६६ मारणा	तक समुदात	गन अस	
	प्रयपर्याप्तक तिर्य		यतसम्य	ग्द्याष्ट्रि सतुष्य	। नाम्य	
	निकारिक स्पर्शन		ब्लोकका	संय्यातया	भाग क्ल	
क्षेत्र		22		क्या, इस	হাককো	<21
	ग्ध्यपयोप्तक तिर्थे-	17	समाघार	र इ. असयत	सम्मार वि	
चौंका अतीर	कालिक स्पर्शनक्षेत्र		वर्ष बद्धायुप	२ अस्यत	लक्याधाड के विकास	
	नेकालनेका विधान	288	मनुष्याः मेका वि	हे उपपादक्षेत्र राज	ना स्था नगर	528-533
	सण्यातर्थे भागमात्र		न ना राज		के किराजी क	
	ाळ छम्यपर्यादा		६८ स्रमस	भी सृक्ष्म पी नेका करणसूत्र		રવ!
	ल्यात भेगुरुप्रमाण			नका परणपूर केवर्छा जिनीक		
	समार है, इस		हर संयातः क्षेत्र	र पछ। (जनाप	11 6400	ટ્ર રી
शंकाका स		39		र्वाप्त मनुष्ये	ਵਿੱਚ ਹਨ	
६० सहायच्छत	ी अयगाइनामें एक	,,	ज्यास्त्र	याप्त मनुष्य लेक स्पर्शनके	त्याः चला विद्या	11
ब घनसे क	इपद्शयिक जीवींका		102 2222311	योज अञ्चल	न अतीव	
व्यस्तित्व वै	से जाना जाता है,		कालिक	र्वाप्त मनुष्याप स्पर्शनक्षेत्र		548
	ा समाधान	550	• 1		2	58-580
(मः	प्यगति) २	१६-२२ ।	७२ मिथ्या	(देवगति) एप्रिकीर		
	नुप्यपर्यात और मनु		me for att.	ष्टाष्ट आर प्रिदेगोंका	धतमान	
व्यनी विष	यादृष्टि आयोका वर्त			ाष्ट्र द्याका स्पर्शनक्षेत्र	40.00	5.18
	मर्वातकारिक स्परान		153 वस के	स्परागक्षत्र वीका सतीवः	क्षेट सना	
देशव		२१६- २१	उद्युप वृ	यसम्बद्धी स्प	द्यातक्षेत्रक	ī
	प्रकारके सासादन			त्तेक निक्रपण	4.1	341
	मनुष्योंका वर्तमान			जौर विदिशा	रा स्यद्भ	,
	नदासिक स्पर्धनक्षेत्र	280-22	तथा द	ट्रापत्र मनिपर	पके दोनमें	1
	मगम्य प्रश्चावाटे	**	युकि व	6		· 444

		(11)
	स्पर्यनासुगत निषय-रूपी - विषय	मृत
	विषय पूज अभ न	f)
	७५ भयनपासियामे उत्पन्न होगा विवास सिंद्याचा महत्वाची	অ
	स्यानसम्बद्धार्थक साधिक याच राज्यक उत्तर स्थान सक्ष्य व उत्तर स्थान सक्ष्य व उत्तर स्थान सक्ष्य व उत्तर स्थान सक्ष्य व	338 384
ļ	समाधान के और समयन ८६ वर्ग के धार्म निव	पण ११४ वेमा
ì	सम्बारिए देवीच यतमान	পূৰ্ব-ইইই ভাৰো
	सोपपरिष भीर सासारन १९ मिरवारिष्ट भीर सासारन १९ मिरवारिष्ट भीर सासारन	প্ৰিৰ্থ
	सहयारशास्त्र वपदांतरशेषवा इ२८-२२९ पश्चिक निक्रपण	- सर्ह
	स्युविक मतीतवारिक व्यादका तक मि	द्वास्थरी
	निक्षण विकास किया हिम्मान भार क्यांना वर्गमान भार	£\$ 3-44c
	शांव अपूर्व राजाशींवा समाधान	ভাল খুৰ
	द्वाराहि व्यक्तरदेवीव क्यरणा व्यार भीर अनावका	न्द्र क्यूनाम १३८ दहर
	मादिवराव कर्या ६३०-वर श्वाहर स्थाहिय है विषय पत्तिक निरूपणा	नी हड़ीकी
	भारतपातगुणा हिग्न वनमान	
	बारमें द्यान बर्गातवारमें वेति व्यवस्थित कार	6.4

222

284

£20 £22

128 15A

९२ तथ अपुरश आर राख अनु श्रार विद्यानवासी असदनसम्ब

व्हांत देव का क्यणस्थाय

० १ साहर सुरुप्त का र समाप अपे

दाश एक। ह्रय जोद का क्या स

4 6514

mitt at a mit erte

STANSON SEED SING PLL

६ इण्डिमागरा) ६५०

£4.

4 . 4

ध्य-तरदेय धर्तातकारमें वेते

तियालाव के काण्यात्ये आतको

क्पार्त करते हैं इस शहावा

CA tieninkenleife mie mona.

युत्रमाण और अपीतकशस्य

भागांत्रक दशींका

सम्बन्ध समाधान ८२ ध्यांतरोंके प्रश्नमोपान आयास

श्याताचा तिह्रचल ८३ उपया शत प्रयात व इथेवा

इए^{न्यू सहरूत्र}

,		~			
मन न	तिगय	पृ न	श्रम ने	निषय	पृ वे
षयों है ९- सामा यात है मनह ९६ डल	त्यां से स्वतार्थे आग १,६म श्रेषात्र समाधान न्य पर्यात और अप श्रेष्ट्रिय जीशीका वर्त श्रीत्र स्वतासीय सोगा सम्बद्ध सिक्ट्यय इ.स्ट्रीतकाटिक स्परीत	≎4₹ ≈4₹	वायिक समुद्धात क्षेत्रका १०३ वाइर वायिक वनस्पा	जहरायिक और वार् जीगोंके वैतियिक सम्बद्धाः स्परी सोपपसिक घणन पृथिगीकाथिक, जन् , अग्निकायिक सं तेकायिक प्रकारिक	F* न २,३९-२५ हर र
शेवह १३ पो मिल मिल	र सीपाविक निरूपण इस कीर पैने द्विपण्यात इस कीर पैने द्विपण्यात इसि की प्रोक्ते सर्वमान सर्वा कार्यक्ति निरूपण प्रमायतिक निरूपण	763 783	यनीतः तथाः घानीः १०४ बादर	त्रीनोंके धर्तमान व्य राहिक स्परानक्षेत्र तद्गतर्गत शकासम् । सत्रमाण धणन धायुकापिकपर्या	का ग _{दश्य} दे ख
९८शाम शका	प्तमान्यारशिशुप्तस्यानसे सर्वे एकप्रदेशुप्तस्यान		काञ्चि	। यनमान तथा अनी : स्परीनक्षेत्र नेकायिक, निगाद, त	त २,१२१
غما 14 مند	क्षीक नुपत्त्वपावती १इव संर वयेडिय १ व रोजा स्थानकोत्र रणापुणयी द्वावीयोजा	483	उनके पर्यात क्षेत्र	नायर, स्वाप्त अ बाद्द, स्व्म अ अपयोक्त अधिना स्या विक् भीद असकापि	ोर र्तन _{२९३} -२०४
#**C \$		হৼৢ१ ৩–২५५	ववाध्य झादि सम्बद्ध	अधिरि (मध्याद चीर्द्या गुणस्या शिर्द्यानक्षेत्रकानिक	१८ जो यण २५
al. a.	च्या नाम बाद्य मृथिती रेच, जन्दा येच, समित म्या बायुवा येच स्थान		जीवाँ र	विक् स्टब्यपूर्वे ग्रह्महामहात्र ४ योगमार्गमा	244-433 244-433
द्यारी जीव स्ट्रा स्ट्रा	र बनगार्ग होती है हो है है र, नष्ट कार्य के सर्वाय है १ क्षेत्र कृष्य कार्य के यक्ष्म कार्य के स्वयंत्र के स्वासकानुकारिक स्वीत के स्वासकानुकारिक स्वीत		१०८ वांची स्वतं स्वता स्वात स्वात	सनोयोगी भीर पा तिर्वासिथ्यापिश्राया तृभीर अनीनपानि तेत्र	ची विग व्ह _{१ ८५} २५६
9 67 हार कुन रेट का	रेव क्यापाय इ.स.च्या विश्वस्थाय क्यापायाचे क्यापायाच्या इ.स.च्यापायाच्या व.स.च्यापायाच्या व.स.च्यापायाच्या	€s •s≯-as	ই রণস্ত্রণ কথ্যকা ভাগেব কথ্যক ইউক বিহয়ে	तन तर मन्दर गु रती पश्चि मनाप 'को क्यनपारी मीप स्थाय एटि गुजरपानेग टे	ण ली क्षा २५६३५३

दद्र्यटावनमा प्रशासका

(84)

مقاوضا وهو			(99)
	एको गाउमम-विषय मूर्च	for.	पृ में
क्षम में विश्व	पू म विस्	विविधकविश्वकाययोगी विश् हरि, सारादनसम्पन्दरि अ	या ोट
बाववामी अविवास स्वा	-गेवर	शसयनसम्यन्दरि जाप	३६८-२६९
क्षाना स्थानिका स्थ	Bus 3455 366 556	शहारककाययानी प्रमत्त	
कारण-निर्मय ११६ श्रीहारिक वाययोगी	विषया १व २७९ ३६० हुइः	शांवा स्परानस्य	_{वर्ष} व्यक्त
राय जाया भीदारिक सायचामी स	शतारा	जायाका जायाची सार	तार्न समस्य
क्षीर अतीतवाङ्गिक	64514 SEO SES	व्हारि जायावर स्वर्गतर	रेस ४७०-५७६
११४ भीदारिककाययाना सम्बद्धारिक, अर	स्य जीवोंगा	१२४ कामेणकाययाः केवलीका स्परानक्षेत्र	206-500
स्टिश्चार्स्याः सत्तमाम् और सं	540	११ र सिवदी और पुरुष्य	िमिच्या सन् और
११५ प्रमलस्यत केल्ट्सपोगिके	गुजस्थानसे हो गुजस्थान रिक्काययोगी	अतीतकाशिक	508 404
शबकी आर्ग जीवाँका स्परान	हित्र गरीगी मि	१२६ स्मी और प्रदेश	= इंदर्शन
११६ भीदारिकामधा स्यादिक जीव	वांचा रगरान _{२६३-२६}	कीर शतातनात क्षेत्रका सदश्तात	शहा समा
हेश्य ११७ शीदगटियमिर सादनसम्पन्ध	प्रवाययोगी सा रिष, बस्यत	१२७ स्मीवेदी भार उ	या अस्यत इ.स. ध्रमान
to Districts	ED YEART T	कायाहाए आ शीर अतीतका	हिस स्पर्धार २७४
स्त्रात दावा		न्दर होत्र का और प्र	पंतरी सपता

मिष्या

सम्बाधियार्थि

अस्यतसम्यग्रहीय

१२८ की और पुरुपनेशी सपता

क्यालक स्परानक्षेत्र

सवलाका चत्रमान भार अतीत

१५० प्रमलसयत गुणस्थानसे लेकर अतिपृत्तिकरण उपशामक आर

इत्पन गुणस्थान तर स्त्री और बुरुपयदी जीयोंका तदस्तरीय

208 45

श्रम मे

सोपपश्चिक निरूपण

साववासिक निर्देशका ११९ चेति । वह कायवाचा सासार्व

जीवींका स्वदानक्षत्र

रिर जीवींव धनमान और

अतीनकालिक स्पन्नानक्षेत्रका

११८ धेनिचित कावयोगी

Hraskie

(88)				
मम ल	वर्गेः	गारी प्रमासा		
विश्वायताकां के साम	. v	न यम न	_	
		130 270-	विषय	
त्रुपन गदा मिच्याहत तर्दन्तमतः दाना सम साथ स्पर्दानक्षेत्रका कि	वीनांके १०१०।	there is	। याच विद्याण्डि गुणस्यानमे सीमक्यायण	,
राय स्पर्शनक्षेत्रका नि	।धान के	7777	C	
4777	70.	. माना च	भार समूर्	
सनीतकालिक स्वयानको १३२ सम्यागिक्यानको	बार	वर सार	शहा समाधानमञ्जू	
* 4.7 (4.23)3mm - 1111013	7 -	ggo Himmon	्य नाम श्रुपक	/3-2
		क्षाण क्याप	राज्यमानमे हेन्द्र	4-0
तस्ये ने र्शिक्सण गुण तस्ये ने पुसक्येश गुण यवमान भीर अवस्थित	। । इ.	चर्च प्रयोगक	्राय सक्क	
यवमान और अर्धातकारि स्पर्धानक्षेत्र १३३	78			
१३३ अपगमधेरी जी गाँका स्वरी क्षेत्र	7.80 TUR	क्षेत्र सम्बानी	सर्वे तिहमूरी उन्हें क	5.3
E /-	4	^{स्या} नक्षेत्र	चये गिइन्ट्री वटी जिनेका	
६ (एपायमार्गणा) १३४ मिय्यादिए गुणस्थानसे हेन्दर अतिद्वतिकरण गुणस्थान तकसे सारों उपस्थान अधिकर क्यारा क्याराज्य	२७२	6 Direction	. २८४-	7/1
१३४ मिथ्यादिष्ट गुणस्थानके हे कर अनिष्टृतिकरण	150-595 595	व्यवस्थात्र । व्यवस्थात्र	रिया १८५-२	u
अनिष्टुचिकरण गुणस्यानसे हेक्स अनिष्टुचिकरण गुणस्यान तकके चारों क्यायाहे अविकार स्पर्धानवेक		भयागिरेन्छ्री गुण स्वयत जीयाँ रा	म्यानने हेक्र	
सीयाँका स्पर्शनक्षेत्र	/200	सयन जीयांना व मनस्य	णस्यान तकके यहाँको	
रायमाल सहम्म	5<0	भमत्तवायां सः भमतत्तवम् गुणः भिन्द्रिसरणगः	परानसंत्र २८ २८	į
रेश जानांका स्परान				
१३६ उपद्यानकपाय आदि अन्तिम बार्गुणस्थानगले अ	148 23	7 - · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	1927	
वाताका स्वयाक्ष्य व्यक्तावी				
10 /- 19	-5/8 . 462	Trees.		
रेडे मिश्वादिक और सासाइन सम्यादिक मेर सासाइन	२८७ साम्य	प्रथमण्डले स्वयमण्डले	पुरुम "	
	معجز إلى يميم		2.01	
	स्परान :	िचार गुणस्या गनसयमा जा रेव	न प्रती जॉन्स	
	े नगन रा	वि विम्याल नार्वोद्या का-समाधानके ह विक्रमण	तद्	
स्वतिस्वाराष्ट्रं जीर्येक हरामसन्दर्भतिस्वाराष्ट्रं जीर्येक हमापानपूर्वक निरूपम	१४८ मिध्यानक्षेः १४८ मिध्यान्	का-समाधानके ह व निरुषण	।।थ	
44 6 414	والدلئمه.	·		

	A		(84)
	स्पर्शनानुगम-रिगय-सूची	ियप	पूम
क्रम न	वेट-राज और तीत २/८ वटे स्वान तायान सा तियांचा २/९ वि के संबंद उ	दिनसम्बादिष्टि निर्वास्त्र मञ्जूजीका स्वदानकेर ता चारह यटे जीदा हिंद योदह भीर ने जीदह मावजमाज प रं पावा जाता इस दाका वे माविसे उत्पन्न देशे पीक्सीसी जनुबन्दिया प्रवादयहरसावाधी क	6. तो वर्षे वर्षे पाले पाले पाले (बट
शीया श्रीय स्वयुत्ताती जीयां वा शेष १५२ संधित्ताती जायों व शेष १५३ क्याल्वताती जीयों	स्प्राम प्रश्राम प्रश्राम	वारह वंटे वाहर वंटे वीहर भीर काठ वंटे वातत्रप्राण क्षेत्र क्यों वाया जाता। इस व वातावात उस क्षेत्रों अनुविश् वस्यम्प्रिकारिय भीर सम्यन्दिय जीवांश व	क्षत्वाहर ह्याचा है ० ५ स्थापन
क्षण १० केरपामार्गः १५५ इन्ता, शीक श्री १५५ इन्ता, शीक श्री १५५ वन तीनों श्री सामान्यत्रम्य स्वतंत्रम्य स्वतंत्रम्य स्वतंत्रम्य स्वतंत्रम्य स्वतंत्रम्य स्वतंत्रम्य स्वतंत्रम्य १० हेरों से परित्रम्य १० हेरों से परित्रम्य	गा २००-२०) १८ वाचीत १८ वाचीत १८ वाचीत १८ वाचीत १८ वाचीव १८ वाचीव १८ वाचीव १८ वाचीव १८ वाचीव	क्रवानधन । केशिल्यपणि । कार वासायन कार वासायन कीर्योदा चरमान श्रे कालिय क्रवानश्रेम हर्षि केशि कार्य कीर्योदा चरमान कारिक क्रवाना	प्रवाहिष्ठ सहयाहीय दि अमेनि इयोग्निक्या सस्याहिष्ठ अटि अमेनि इस्ट्रिक्टि
शस्त्र स्टब्स् सासादनसम्ब	रात बरनेपाले १०६० जीवींबा रूदपासम्बन्धी प्रधासमस् बाग्ड	१६२ तेजानेत्याबार जीवांबा धतमान बालिब स्परानस	718

१६३ समासर्याचा र प्रमल

हरा नहीं व

क्षप्रवर्ष संयुग्धा स्पृत्ता स्थ

Meduditetif Ilain's

तवने वयनच्यायात अध्यादा खनमान भार भनातदण्य

१६४ (शस्यादाष्ट्र गुल्ह्यात्रल सदद

क्रम न

रपदानक्षेत्रं यथायमसे बारह

महे खादद भाग ग्यारह यह

चीयद भाग और जी बट

चीरह भागवमाण वर्षा वरी

पाया जाता इस नहावा

१ 49 कृत्वा मीत्र आह बायात हिरचा समाधान

याने लधा ध्वन्त्रियोगे बार सार^{म्द समुद्धान} बचनेवालं

,		
	OE	١.

पर्गंडागमकी प्रशासना

भम न	निषय	पृत्	धम न	विचय	ર્ ર્ય
बनागतः १६६ पद्मलेदय	चर्नमान थोर यर्तात कालसबधी स्पद्मनक्षेत्र गयाले प्रमत्त भीर		स्पर्ध १७० उपप सम्य	सायिकसम्यक्ती जी नसेष द्यद्गत समया सा द्यद्गत समया सा	र्वेष वेष 1न
१६७ मिथ्याह स्वतास शुक्रलेहर मान और	त्यसीका स्परानक्षेत्र प्रि गुणस्थानले लेकर यत गुणस्थान सक्के गयाले जीनांका वत र धर्तान बनागसकाल	२९९	भागा दाका रेजद् स्वय रेक्ट्	वयोशिकेयणी गुणस्य	(स इ०२-३०३ तम
१६८ शुक्र हेर्द्य	गामले तियंच, गुर ले देवीमें क्यों नहीं ति है, इस शकाका	(९-३ ००	अधि। देशप्र- १७७ ससर	का सोपपतिक स्पर	त्त्र १०१-१०१ तमे
१६९ उपपाद्य घाले अस तथा म शुङ्ग नेदर	। १दपरिणत गुझुलेस्या १पतसम्यग्हिष्ट जॉर्वोके १रणान्तिकपदपरिणत रायाले स्वयतास्वत देशोन छह पटे	300	तकके स्वर्धाः १७८ सस्य धर्ती अधिव	वेदक्षप्रवाहिष्टे जीती नहेन तसम्बाहिष्टि गुणस्या भीपदाभिक्तम्बान न स्पर्दोनक्षेत्र, तु	ह्या इ.स. इ.स. इ.स. इ.स. इ.स. इ.स. इ.स. इ.स
चीद्द शेषका है १७० प्रमुचस्य	भागप्रमाण स्पदान त्रोपपत्तिक निरूपण रत गुणस्थानसे छेकर रिन्ही गुणस्थान सक्के	29	उपस्मि १७९ स यत लेकर	भोघके समान कहने वत मापाचित्रा परिहा स्वयत गुजस्थान उपशास्त्रकपाय गुप	ट इ०४-३०१ से
शुक्ककेरः रुपदानक्षे ११ ३	गपाले जीवीका १९ ३: मध्यमार्गणा	\$0€-04 \$0€	ग्हिए १८० सासाः	तकके उपरामसम् जीवोक्ता स्परानक्षेत्र सनसम्बन्धिः, सम्ब रहिः और मिच्यादा	1 ₉₅
अयोगि के	ष्टि गुणस्यानसे लेकर परी गुणस्थान तकके	1	अधित स्पर्शन	क्षेत्र	205
भाषजीर्थ १ ७२ समस्य १ १२ ह	र्रोक्त क्पर्शनक्षेत्र भीवीका स्टब्स्निक्षेत्र म्पियस्यमार्गणा ३०२	₹0₹ ** ~₹0€	१ १८१ सम्री	रे सद्विमार्गणा मिष्यादारे जीवीर र और अतीतकालि	F
१७३ मसयतः छेक्टम	सम्यन्द्रिः गुणस्थानसे पोर्गिकेयरी गुणस्थान सम्यन्तर्थी जीयोंना	1	स्पर्धन १८२ सामाद से ले		304 301
१७४ शस्यतः	सम्यग्डाप्ट गुणस्यान		स्पर्धन		ر

		(80)
कालनुगम	-विपय-सूची	िचय	पृत
हम स अधिका स्पन्नतसेत्र	D > 1 THE HEAD	रके अस्तित्वकी वास्तिकायमधूनकी उद्देख	<i>3</i> (3
१८४ जाहारक मिच्याहिए जीवींका अर्थानसम्ब	३०८ ८ महतमें प्रयोजन आपरी	नाआकार उसके समय और उसके समय सुद्धतं, युर्व आदि तेत्रा निरूपण	
वार्पपाया जाता, अत संग्रहाय सही पाया जाता, अत संग्रहाय	असके इसके	पर्यापयाची नामां	rt
होतल भारता समायान है। इस दाकाका समायान गणावनसम्पर्कार	क्षिय	वायली उद्यो स्य माली मुद्दत के के बाल्यमाणका स	\$10
१८ सासादनसम्पद्धारः स्थानसे लेकर सायोगिवे यूली गुजस्थान सक्का स्वर्धानसम्ब एव सनाहारक जीवींका स्वर्धान	शाय	और रात्रिसम्ब पी	865-860
^{सम} कालानुगम	हेड वहर वि	हिं जाम का प्रमाण श्रीट दिय ह स, वय श्रीट युग श	165
विषयका अपनाचारण भी	5 555 54 6	त्र्रीत स्वामित्व आर्रि क्रिया स्वामित्व आर्रि	
भावशः २ हालातुगमकी अपेशा निव केट निक्रपण	ता ,, इस्स १९५	खरप-निरूपण विश्वार स्वमात्र मन	कार्राबंद वर्ष है मेर इस्तार
प्रशासि वालिशियाका व	1914 S65 360	शाम देले प्रशादात शाम देले प्रशादात	ासमाधान समाधान
विद्यं वसाहित्र वाताहासक स्थाप	। थाता इ. नाय	वर बान्सा स्वयह	स्ट्राम् अस्ट्री इंट्राम् अस्ट्री
भावन उर्देश सहिमाया ५ द्रायकारण सहिमाया	^{जासुबहा} ३६९ १. धम	राषाओं व अपूर्व है १ अ जिद्देश्य वयोषयां वह दाजो प्रका सहस्यक्षणका जिल्	E (#4" 41
धन स्वमान (तहरण स्वमान तिहरण आ स्महत जीवस्थान आ स्महत ने बहनका	मिद्रवा विभ मन्त्र		

(88)		पट्खंडागमर्	ी प्रस्तावना		
म्म न	विषय	पृ न	प्रमन	विषय	á g
	५ गरानुगमनिर्देश ३ जीगेंका नाना				130
जीवींकी महे १९ पक् जीवर्क तीन महोक	म्सा कालनिक्रपण विषया कालक विषया विषया	323	सकारण २८ नोकर्मपु	तीनों प्रशास्त्रे कारोंका अस्प प्रहुत्य निरूपण इस्परिवर्तनके समान ही	\$31
कालकी अपे निकास २० सामादनसङ	नमें साहि-सात सा जधायकालका पग्टाप्ट जीयको मी	३२४	उहेप विश्लपत २९ क्षेत्र, १	उपरिवर्तनके स्वरूपका नीर तत्सम्बर्धा ।सोका निरूपण राल, सुब सीर साव	333
श्मिश्यान्त्रः कर उसका	गुजस्थानमें पहुंचा अधायकाल वर्षे		इास स्व	रेयर्तनींका स्वयाधाओं हरूप निरूपण	<i>511 11</i> 4
रमधान	ाया, इस द्वाहाहा विकास सम्बद्धाः	३२५	यतगया	वकी अपेक्षा पाची परि रॉका अस्पयदुत्य रिवर्तमोंका कालसपपी	źź
शार्थ-साम्म विषयाः ६६ स्पेतुप्रस्पत् दश्याप्यस्य	ि मिथ्याचित्रास्त्रत्यः रेपनेनका क्यरुप 'रेपाच प्रकारके	39	अस्पबहु ३२ सादि स	त्य ति मिष्यात्यके हुए ।पुरुरपीरपर्तन कासना	ĮĮ:
द्वारपर्वत्यन्तः विश्वत्यनः ११ स्ट्रिट प्रविश् समस्य प्र	र नामोहित कर नकाविदाइस्यक्त ने साज तक मी इन संगक्त नहीं		३३ सम्पक्र स्वका वि कार्योका सकता है	ाकी उत्पत्ति भीर मिथ्या ।नादा, इन दोनों त्रिमिण एक समय देशे दी । इस दाकाका समाधान	н
होत है हो हर्गाई । स्थिप को प्रशास का संक्रिय स्वय दिन थ स	हार हिंदर राग स्वर्त मुख्यारण के साध्य विकास समार्थित सम्बर्	344	वयावः क्यांकि, दे। थी भी मान द्रष्यपना दोकाका		\$2£2/1
कुन समय संस्थितः	समयने प्रश्ने अधियम १५ वरिक्यतः हा १९६४ अस्ता १स मार्थे	1-3	त्रमाणम् ३१ ध्ययगर्ग धादि र	र स्वक्रमः शीरः उसरः आपनामात्रा उससः रमः अपेषुत्ररंभीरयनम् भिन्नोतिः अनस्यकाः एनसे दे, इसदा स्परी	11

६ ८ ६३ धारय अनम्य हाशिका विशवन

84

ZAALC BALA

11.

	44.	े उन्हें के स्वाधिक स्वयुक्त का स्वयुक्त का सम्बद्ध ।
१० दशः शीवींचे दाहर बाज्या		सम्यन्द्रप्रियोंने जयाय कालका
शयुगिक काञ्चलील	540	सनिद्रान विरूपण
४० याचे जायवी भाषता नरामापून		े एक जीवकी अवेद्या असपत
गायारहियाँ अधाय बाल्बा		सम्पादियांने अधाय कातना
<u> निरूपण</u>	285	तदम्तर्गत शका समाधानपूर्वक
४१ उपणमसम्बद्धसम्बद्धाः के अधिक	-	सोपपश्चिम निरूपण
मानीमें पया देश है इस		५२ संयुनास्त्रयत अविवास नामा
दावादा समाधान वनते हय		जीवार्षा भपेसा बाल
गासार्तगुणस्थानव बाल्बा		५३ वह जीवही बपेशा संयतासय
राधमाण निरूपण	17	तींका जधम्य काल
४२ एडजीयडी अपेरत सारादन		५४ सम्यग्निच्याद्दष्टि जीव संयमा
सम्यग्द्रशियों वे उन्द्रश्चात्वा		स्वमको क्याँ नहीं प्राप्त होता.
सद्रमाण जिस्पन	1882	रस शहाहा समाधान
धर बरम्यन्मिय्यादीष्ट कीवीं का नाना		५५ पर जीवरी संवेशा संवता
कीर्योभी अपेशा जधन्य बाल	185 283	संयतांश उत्हर काल
४४ मप्रमणसयन जीय सस्यविमध्यात		५६ प्रमत्त और अप्रमत्तस्यतींका
गुणस्थानको भया मही बाज्य	•	माना जीवींर्श अपेद्या काल
शेते, इस दोकाका समाधान	\$43	निरुपण
४५ सम्याभिष्याद्यके जीव अपना	445	५७ पन अधिकी मवेशा प्रमत्त भीर
कार पुरा कर पाछ स्वयमको ।	ł	अप्रमासपर्ति क्याय वालवा
	1	सोपपात्तक निरूपण
मध्या स्वयासंवयको वर्धी	ł	५८ एव जीवनी भरेशा प्रमत्त शीर
नदीं प्राप्त दोना, इस दावाबा समाधान	ì	पद प्रव जायका अपसा प्रमत्त आर अप्रवत्तस्यतीका उत्हर काल
	12	
४६ माना जीवाँकी भोशा सम्य स्मिष्यादिष्टियाँका उत्तरप्र काल	2	५९ चारी वपशामशीना माना
	\$88	जीयोंकी जधन्य काल
४७ एक जीयकी अपेशा सम्यन्ति	1	६० अप्रमत्तस्यतको अपूर्यकर्ण
ध्याष्टिथींने जघन्य कासका	}	गुणस्थानमें हे जावर और
तद् तगत राश समाधानपूर्व	ļ	द्वितीय समयमें भरण कराके
मिह्यण	19	अपूरकरण गुजस्यानके एक
४८ एक जीवनी अवेशा सम्याम	- 1	समयकी प्रहरणा पर्यो नहीं की,
ध्याद्यवि दरम्य वाल्या		इस शंकाका समाधान
सीपपसिव प्रतिपार्न	484	६१ माना जीयोंकी अवेशा चारी
धर अस्यतसम्बन्दियाँका माना	1	उपशामकोंने उत्रष्ट कारका
अधिकी अधेशा कार, तथा		सोपपाचिक निरूपण

११० पर जीयरी मपेशा ससयत

245 340

386-385 सांभा

385

386

п

140

240

348

242

11

347 348

340 348

अधन्य बागनिहत्त्व

(40)		पद्खडागम	भी प्रस्तानना		
कम च	विचय	पृ न	क्षम न	विषय	7 %
६२ एक जीवक	र अपेक्षा चारी उप		औरएक	जीवकी अपेक्षा जध	व
नामकोका	जेघ य काल	३५३ ३५४		एकाठोंका सोपपत्ति	
६३ एक जीवर्क	ो अपेक्षा चारी उप	- 14 - 10	निरुपण	4	361-348
शामकोका	रेत्स्य काल	રૂપક	(तिर्यचगति)	363-68
देश भारते आ	वह क्षीर अमोर्ग	4 10		मिथ्यादृष्टि जीवीं।	• • •
कंपलीका स	पना जीवोंकी अवेद्या			विदेशी अपेक्षा का	
जाघ य तथ	र उत्क्रिष्ट काल्ड 🤋	१०४-३५५	चर्णम	ાયાજા અપક્ષા જા	<i>"</i>
६५ उक्त जीव	का एक जीवकी			पनी धपेक्षा तिर्वे	
अपशा जघ	य सीर उत्क्रप्रकाल	३५५			
६६ सर्वामिक्च	री जिसका साजा और			धे जीवोंका जमन	₹₹7-₹ \$
यद जीवर्क	भपेक्षा जघ य बीर		और उत्र		
बत्र ए काल		३५६ ३५७		त पुद्रतयीरवंतम' इर	
	3	- 17 4 70		धन तताकी उपलब्ध	
আইয়	से काल प्रमाण-निर्देः	er .		शत सुप्रमेसे अनम	
-1140	र गतिमार्गुणा १ गतिमार्गुणा	d .		न निकाल दिया जाय	10
				কা লমাঘান	-
्न • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	रकगति) ३५	\$3 <i>\$</i> -01		सम्यग्डिट भीर सम्य डितिर्वेचीका कार	
५७ शारका ह	व्याद्य अधिका			ध (तयचाका कार	5. 11
नाना पीयोः	ी भपेशा वास		ममाण		
निरूपण		ইধ্ত		स्यग्टिए तिर्वेचीक एक जीवकी संवेक्ष	
५८ एक अधिव	ी भपेक्षा नास्की			त्यक जायका अपस् द उत्हद्य बाळ	हुद्द सा
।मध्यादिशि	र्वेण जयम्य और				* .
वत्रुष्ट वर्ग	3 g	40-345		ति तियैचौंका नान	
सम्बद्धाताया <i>र र</i>	म्यन्दरि भीद सहय ! नारतियोंना नाळ	1		विषकी अपेक्षा जग्नम्य	118
क्यांत क ्षेत्र	गरात्रयांका काळ		और उत्रा		•
	गर्राष्ट्र मारकियोचा	346	८० वर्चा दय,	पचे द्रियपर्याप्त औ	
शना और	पण जीवधी अपेशा	1		मिच्याद्दि अधिका	
व यन्य साह	Act to prove the			पक जीयकी गवेशा	745-261
		१५८३५९			\$42.41.
)	८१ प्चानवे ः	पूर्वकोटियोंकी पूर्	
व्यवस्य हा	र उन्हर बाहोदा	}	वाटीपृथक	रयसका कैसे ही	
			सकती है	, इस शकाका	241
धर सन्त्री कृति		३६० ३६१	समाधान		•
42040615	WIT EFFECT	1		क्षिमें क्रीवेदकी संभ	115
			यता ससम	यताश्रा विचार	1,
A 6 40 -1 41	C'377 # ****	446		म्बारके सारादन	
Chink.S.	नार्राध्योद्य भाना	ì		और सायागिध्या	
		1	राष्ट्र (तय्य	रिश काल यगन	,

अस में	विषय	पृश	मग म	विष	य	ष्ट्र म
शरपणहरि सक् जीवर	ति प्रकारके <i>शस्तवन</i> । निर्वेषीका माना श्रीर ति श्रेपरत स्तापयीक्षक ।र क्षक्रय काण		देखाँ । ९५ मधी	इन भीट मस्तवत त काल उत्तसम्बन्धीर देवे एक जीवकी अवेर	विश्वामाना	૧૮૧
८५ एक तीर्व शयत तिर्व	तं प्रकारके क्याता स्विका कार	308	शीर: ९६ भवन	उत्हार बाल वासियोसे लगार प्रारंक्स सबचे वि		**
वा माना	रण्डयपर्यातक निर्वेषी और एक ऑवशी यायभीर उत्हल्लका		भीर । सामा	प्रस्थातसम्बद्धाः भीटयम् जीयम् स्थाटसम्बद्धाः	देघीका विभोदार	
८७ मनुष्य, म	नुष्यपयाम भार ग्रा	१७२-३८०	९७ घाता विषय	पुण्य सम्यादा दक्षि देवींके	ड मीर	इटर इटर
और एक उ	यारिष्ट जीवान माना जीवनी भेवसा जवन्य एकारुका सोववशिक	1 02-101	याले	ता देयोंकी रिवति कालस्त्रका भौर सत्रका विरोध	विटोक	14
८८ उत्त तीनों शक्यश्रीय दव जीपव	धवारके सासाइन सनुष्यीका माना विभवसा जयम्य भीर		श्र अ ९९ अधन श्रहणः	सँग परिहार वासिवॉसे लेकर तकने सासादनह सम्याग्धियाहरि	तहसार सम्यक्षीय	t cr
निमध्यादी श्रीर एक	हीं प्रधारके सम्य ६ मनुष्योंका माना • जीवकी अपेहरा	204 204 204 204	कास १०० भान ययो ससर	तकरपक्षे केकर तकके विष्याद्यी तिसम्यग्द्रिवेगी	नयमैये पि भीर भानाना	१८५
॰ इस सीने सम्यग्टीय यह जीवर्ष उत्हार कार	ी प्रकारके अस्तवत मनुष्योंका नाना मोर रिअपेक्सा जयम्य मीर	३७६३७८	और १०१ मी व धार यतस	दश जीवनी मपेश जाहार नारका वि मनुद्धिया भीट वि भनुष्पर विमानों व्यक्त जीवनी	नेक्षपण येजपादि के अस- र सामा	ાલાત
स्यतास्या सर्वातिकेय ६१ सम्बद्धाः	त भुणश्पानसे लेकर ही तक बाल निरूपण जक अनुष्योंका नागा तीवकी भपेशा जधाय	306	जघा १०२ सर्घा शसर	व भीए उत्सूष्ट का चौसिदि विमा स्तसायग्हरिदेवाँ	ाल १ (नयासी का नाना	લ્લા
और अरहर	ट कार (देवगति) नै	३७९ ३८० ८० ३८७	क्राफ स्	धक जीवकी जिस्त्वच इद्रियमार्गणा	16	e5 <i>f</i> \$08–2
६३ मिथ्यादरि दक् जीयर्व भार उत्हा	देवीया माना भीर रे बरेदशा जचन्य भीर इ.काल	₹ <o< td=""><td>ECSEC.</td><td>द्रय अधिका सार अधिकी कोसा उत्हर्षकाञ्च</td><td>ग और कथम्प</td><td>111/</td></o<>	ECSEC.	द्रय अधिका सार अधिकी कोसा उत्हर्षकाञ्च	ग और कथम्प	111/
	j.					

(પર)	4	र्भंडसम	प्रस्ताना		
ध्य म	दियम	पृन		विश्वय	4 t
tos mytekti mire eta mera hi to familiari eta	को मार्ग्यके मन प्राप्ते गुपा करने प्राप्ति होती है। क्ष्मेयमको नाय पे बादर यहे दिखी राज्य गुण्यका का ने कही होगा हम		वरहर ११२ सुद्दम प् स्मेर ज्ञाय प् ११३ सुद्दम जीवीह जारहर समाध ११४ जा वि जीवहें	रके जिय जीयों हा मात यक जीय ही भीक्ष भीर उरहर काल परेडिय प्रवान मा नाना भीर प्र भारत स्वास जप्रस्था हाल हात हात हाल हात प्रदेश मिल्या प्रदेश स्वास्त्र प्रदेश सामुक्त भीड़ी स्वि न भारत हात हात हो है	((+1)) (
And	न्त्रसद्धाः द्वाण श्रवायाः । (प्राप्त हे पत्त है, इस स्टान्त्रण निकाणः १७० स्ट्री स्टान्स्याः १०० दे, सन् प्राप्तः १०० द्वाराम्याः व्याप्तः १०० स्टान्यः व्याप्तः १०० स्टान्यः वर्गान्यः १०० स्टान्यः वर्गान्यः	20 20:	अधिये भारि मही द समाप ११५ सदम अस्ति	पुन उरवम होनेवा दिवस, यस, सा स्रमाण विज्ञानका क स्वाव ज्ञाना, इस दाका स्व प्रकेशित्रय क्रस्त्रयया क्रमाय श्रीर वर्गाय स्व स्वस्य श्रीर वर्गाय स्व स्वस्य स्वीत वर्गाय स्व स्वस्य स्वर्गाय	याँ का । पक्र की
# 15 91337 818 621 6 81 62 6 61 6 81 6 81 6 81 6 81 6 81 6 81 6 81	यक पुत्र वार्योग्यह आहं जन स्व क्षार्य हैं। बार्य कर्म स्वार्थ हैं। बार्य क्षार्य स्व ने मां क्षार्य क्षार्य स्व ने मां क्षार्य क्षार्य स्व मां स्वार्थ क्षार्य स्व क्षार्य स्व क्षार्य क्षार्य स्व क्षार्य स्व क्षार्य क्षार्य स्व क्षार्य स्व स्व क्षार्य क्षार्य स्व स्व क्षार्य क्षार्य स्व	, 30 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	1992 सामा अप अप अप भाग भाग भाग १९७ इंग् इंग् इंग्	पाना वार्षा निक्यन प्रेट्य निक्यम्य भीत्री निक्यम्य भीत्री व भान्य देखानी द बाद निक्यम्य द बाद निक्यम्य वार्या निक्यम्य वी भारा अपना व्याप निक्यम्य व्याप निक्यम्य व्याप निक्यम्य व्याप निक्यम्य व्याप निक्यम्य	पा द्वा द्वा द्वा प्रम द्वा द्वा भीर भीर भीर भीर भीर भीर भीर द्वा

भेम न	काटानुगम-वित्रय-सूची
[i]rree	
Site	ष्म ममन (५३)
अग्रय और जार ए काल ११९ सामाहत्रकाल	पेसा विषय
११९ सामाइनसम्पर्काष्ट्रेस है स्योगिकेवनी गाउन	ann Million - 4
सामिक्र के सम्बद्धा	३९९ ४०० कार्यक आयाँका नाना और
सयोगिकेयशी गुणस्थान ह	वर्ष ४०० पतः जीयकी अपेसा काञ्च ४०५४०६ क क क वास्त्र वास्त्र
दोनी महारके परेटिय कीयोग कालगण	1144 Miles
190 mgv	(१८ (नेश) किया
जीयोदा काल स्टब्स्यपयान्तर	प १८० ८०० कार एक जीवनी अपराज माना कीर उरहरू कारण जायान
	४०० ४०६ १८६ बायान्ति वार्यस्य अस्य अस्य अस्य अस्य अस्य अस्य अस्य
१५१ प्रशिवीका	
१८१ पृथियोजायिक जलकादिकः अधिकाविक्र और जलकादिकः	Ros 806 SSo Metalber all all
मधिकायिक और वायुकायिक जीवोंका स्थल	dam v alle attation
	Hint with
जीयकी अवेशा जाप य और जारह प्रकार का प्रमाण और	जारानार को जावित्री सर्वेद्वार
वाहर बाहका निक्रण १२३ बाहकारीकी	Withthard and albias
१२२ बादरप्राधेय नापिन बादर जलनायिन बादर	Par wan War C. " Carrow
जलकायिक वाहर वाहरवायकायिक वाहर	1 to the second
बादरवायुकायिक और बाहर बनस्पतिकाशिक और बाहर	से छगावर अये गिवेषत्री
यनस्पतिनाधिक श्रांट नाइर जीवाँका माना की	गुणर्थात मार्थ गर्थ गरे वर्ष
जीवाँका माना और एक जीवही अपेक्स	offic account adapted
जीवनी अवेशा जय व और अहस्य बाल	
विश्वय काल	THE WARTING
कमारियामिले किस्त कमेकी रियतिका मुख्याला	१०३ श्रीबाब बाक कारत्यतान्तवः ४० ६
रिधतिका सभिमाय दै, व्यान मोदनीयक्मा	Dain e Macus
मोदनीयक्मकी हिस्तिकी मधानता कर्ण है	४ योगमार्गणा ४०८४०६ १३१ पाणा समायेगा और पश्चि बयनयोगी विस्तान ६
मधानता क्यों है, इन दाका औंदा समाधान	
ऑक्ट समाधाम	वसनयोगी और पाँचों वसनयोगी विश्वादाहि अस
उस पार्थी महारहे पर्याप्त थायर जीवींकर पर्याप्त	वर्षा व्यवस्थात स्थातिक
थायर जीयों नामा भीर व जीयनी नामा भीर	Challet and a child with
व जीववी भपशा ज्ञामय रि उच्चर	Midial Black and
रि उष्टब्द बालवा ज्ञापन पर निरूपण	Alle Committel Stuffs
T ofer New	(Skak min's
	जीवीक जारूरा कालका साम परिवास जारूरा कालका साम
पक जायना माना पर जायना भवेशा	GIG WAS A 15 AT CIM
म्य भार कार्यका अवेद्दा	सरक १ द्वान्य (हम =
	बारक हारा धाराहरण देव विरुक्त
ात्तव पांचा स्पावरः	विक्रम्य साम्राहरू वात
40145	वित्र जल प्रोप को जाहर काळवा वर्ग करने करने वर्णाम
	and a second
~	484

(48)	ध	र्गंडाम्सरी	प्रशासना		
इम न	विपय	ঘূল ∤	वम न	विषय	Į:
धचनयोगीः जीवींका व १३७ उक्त योगम् दृष्टि जीवी एक जीव श्रीर उत्हर	गाले सम्यग्मिय्या का नाना जीव और की अपेक्षा जघाय	8{ 3 8{8	यतमः सीर सधार मोदार १४७ मीदा	दिसमिश्रकाययोगी सम स्वान्ति जीर्योक माना यह जीवर्षा स्रोता । स्नीत उत्तर्ष कार्या इरण निरुषण विक्मिश्रकाययोगी स्वी रिकेमश्रकाययोगी स्वी स्वीक्षा जयन्य स्वीर	알고 [‡] 6
यचनयोगी श्रीर चार जीव शीर जघ य शी	चारों उपशामकों स्पर्कोका नाना पक जीउकी सपेका र उत्हर काल सम्बची विकस्पाँका	કર્દક કર્દ	उत्ह्यू सनेक पूर्वक	कालका तग्सम्बची विकाशमें के समाधान निकरण वेयकाययोगी मिण्यादीर अस्यतसम्बद्धी	४२३ १
गाथास्यः १४० काययोगी भामा और	हारा निरूपण मिथ्यादिए जीवॉना : एक जीवकी मेपेझा	हर्दत हर्द ः हर्दत	जीयों जीउन जघन्य १४९ चैनिर्ग	ना नाना और पर्क ति अपेक्षा सोदाहरण र और उत्स्य काळ येककाययोगी सासादन	કેક્
से लेकर स्थान अधिंका			दृष्टि का छ १५० वैति	हिष्ठि और सम्बक्तिया जीवाँका पृथक् पृथक् निरूपण येकमिश्रकाययोगी मिन्	
हिंदे जीवें जीवसम्ब उत्हर का १४३ सासादन से लेकर स्थान त	हाययोगी मिथ्या- (का नाना और पक भी जघ य और एठ सम्यग्हिष्ट गुणस्थान स्वोगिक ग्रही गुण कके औद्दारिककाय पीका काळ	<i>धरैफ-</i> धरैट	जीवीं अपेक्ष काटन शंका १५१ विकि दनस	ष्टि और ससयतसम्बन्हिं के नाना और यह जीवकी 11 अप्रच और उत्तर यह हा सोदाहरण वदन्तगत समाधानपूर्वक निरूपण वेकमिश्रकाययोगी साला स्वत्वि जीवकी संपेका एक जीवकी संपेका	
१४४ भीदारिक ध्याद्यार	मिश्रकाययोगी मि जीयोंका नाना और रकी अपेक्षा जधन्य		जय र सोदा	र और उत्हृष्ट कालका हरण निक्रपण रककाययोगी प्रमच रककाययोगी प्रमच	_{ઇર} ર
१४५ भीदारिक इनसम्बद्ध भीर पक	धिमथकाययोगी सासा दृष्टि जीयोका नान जीवकी अपेशा गैर उन्द्रस्थ काल	1	जीयर अधम्य १५३ माहा	ति स्रपेक्षा सोदाहरण य और डाहण्ड काळ रकमिश्रकाययोगी प्रमस प्रकार सोरा प्रकार	કરા

प्रभाव स्वित्र पृ न सम म विवय पृ न सम म विवय पृ न सिया स्वित्र सम्याप्त स्वित्र सम्याप्त स्वित्र सम्याप्त स्वाप्त स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्र स्वत्य	बज्ञानुगम विषय सूची				
अधाप भीर वारण्यकात धरेर धरेष स्वावा स्वाचित स्वाच स्वच्छात स्वच्या स्वच्छात स्वच्छात स्वच्छा	क्यम विषय	पृ न	क्सम	विषय	पृ नं
१५५ तीन विप्रद्रकारी गाँत विन जीर्यों होती है। यह नतरन बर सीन विरुच करनेरी दिशाना निक्चण १५६ सामका निक्चण । १६६ सामका	अधाय और उत्हर्ष्ट काल १५४ कामणकाययोगी मिध्याद्धि जीयोंका माना और एक जीयकी अपेशा सोदाहरण	क्षड्ड कड्ड	मसे रेक गुणस्थान जीवींका १६४ मनुसक्वे	र व्यविद्यक्तिहरू तिकके पुरुपवेदी काल वी मिथ्यादाध्ट	88\$
१५६ बायक्याययोगं सालाइन सरपारिट और सहयतस्य ग्रहीप्ट और्यों माना और एक श्रीयदें मोना और एक श्रीयदें सेवा सेवा अर्थ । अर्था कामें एक श्रीय का अर्थ । १५७ बामें परे जायन और अर्थ । सेवा जायन अर्थ १५० कोवेदी मिप्पारिट अविंग माना और एक श्रीयदें । अर्थ । सेवा जायन का अर्थ १५० कोवेदी सावापारिट अविंग माना और एक श्रीय । १५० कोवेदी आर्थों न काल अर्थ १५० कावेदी आर्थों न काल अर्थ १५० कावेदी आर्थों न काल अर्थ १६० कावेदी आर्थों काल अर्थ १६० कावेदी आर्थां काल अर्थ १६० कावेदी आर्थों कावेदी केवेदी कावेदी	१५५ तीन विग्रहवाटी गति किन जीवोंके होती है। यह बतुरा	ध्रत्र ४३५	जीयकी जब य भे	अपेशा सोदाहरण र उत्दृष्ट काल	ı
अपन्य और उत्हृष्ण काल अपन्य अपन्य अपन्य और उत्हृष्ण काल अपन्य अपन	१५६ बामजबाययोगी सासादन सम्पन्हाँच्य भीर सस्वतसम्य ग्टब्टि जीयोंचा नाना भीर	##R R\$¢	जीयोंका निरूपण १६६ नपुसकवे	पृथक् पृथक् काल ही सस्रवस्तरमञ्जाधि	ક્ષક
वाहर द वाहाँ भेड़े ६ ६ १३ ६ ६ १३ ६ १३ ६ १३ ६ १३ ६ १३ ६ १३	जयन्य भीर उत्हृष्ट काछ १५७ कामेणकाययोगी संयोगि केयळीका नाना भीर एक	ት ጀራ ሕ ሷይ	व्येपसा वीर उत्ह १६७ सपतास	सोदाहरण जघम्य ए बास समुणस्यानसे लेकर	885 885
१५८ कोविदी मिरपारिट अधिन। नाता भीर पर जीवदी नेपसा ज्ञम्य भीर उत्तर्थ नार । १५९ स्त्रीय । १६९ स्त्रीय । १६	विस्ट बाल	৪३६ ৪३७ ৪३६ ৪३७	नप्रसक्ते व	री जीयॉश काल	88.5
अधिवा माना भीट वर्ष अधिवा भेरेसा सादाहरण अध्य भीट उत्पष्ट काल ४३८ ४३९ १६ सरतास्यत गुणस्याने लेकर १५६ सरतास्यत गुणस्याने लेकर	१५८ कॉपेदी मिन्पारिट आँवीका माना भीर पर जीवकी क्येशा ज्ञान्य भीर उत्हर्ज काछ १५९ क्येपेदी सासादनसम्बद्धि भीर सम्योगस्यादि जायोका धृपर् पूपर् कार्ननिकपण	ध्युष	६ दर्ग १६९ मिण्यादारि अत्रमचस बारों व कालका प	यिमागेषा ४ १ गुजस्थानसे लेक्ट यत गुजस्थान तकके त्याययाले जीवोंके त्यायपरिवर्तन, गुज वर्तन भीट मरणकी	,
१६१ सवतास्वत गुजस्वानसे लेक्ट १७१ कोच, मान और मापा, इन	जीवींका नाना भीट एक जीवकी अपेरत सोदाहरण		१७० किस क्या किस गति	यसे मरा हुमा जीव में उत्पन्न होता है।	
स्वकं रुपिरी जीवींबा स्वाप्त क्षेत्र स्वकं रुपिरी स्वाप्त स्व	१६९ सवतासवत गुणस्वान से लेकर सांत्रवृत्तिकरण गुणस्वान तक्के अविदेश जीवांना सोदाहरण वाल १६२ पुरुपवेश मिस्पारिट जीवोंना माना भीर एक जीवशे भेपरा सोदाहरण जावन्य और	ध्रव् स्थ०	१७१ बोच, मा तीन क्या नये गुणस्य काः, तया माठवें, नर स्थानवतीं नाना भीर	न भीर याया, इन प्यांके काढवे भीर ग्रानवर्ती उपरागमों लोमकपाययांके वे भीर दशवे गुण उपरागमों मा वक्ष भीयदी भेदेशा	

(५६)	षर्खडाग	मकी प्रस्तापना		
क्रम न	विषय पृह	किम न.	विषय	g \$
१३२ उक्त कपाय १ क्यानवाने शरक भीर सकुछ का भीर सकुछ का	६ जायीका नाना । भोक्षा जघाय	और भग्न १८४ स्हमसा	न्त्राहिसंयमी प्रमस् पत्तसंयतीका काल परायिक गुद्धिसयती	8/4
१३३ कम सहित अ		41 4.163	खार गुणस्थानवर्ती	91
तिरूपय ७ ज्ञानमा	ध्य भाग १८ ८-४५		विद्वारिनिनुद्धिसयता	81
१ ३४ सन्दर्भ भी	र अनामाना	१८६ सयतासंय १८७ वसंयत ३	त जीयोंका काल शियोंका काल	n n
विष्णासीय तर सामासीय की व	मा काल ४४८४४	९ दर्श	नमार्गणा ५	148 84
रैंग विश्वीणकारी कि कर सम्बाधीत समापा अपन्य	धक जीवकी	नाना भीर	ो विध्याद्यश्चित्रीयों हा : एक जीयका भवेशा रि उरहृष्ट काल	R 45 R.I.
कार १४६ हिलाकुत्री । ११ हिरोकुका	ग्गारसमञ		सक्तामं चगुद्रशन	
tos marvares	T STRENGER	चयों नहा समाधार	होता, इस शशका	1 /1
सेवर शीलवर क्षत्र अभिन्त भीत अपनित्र क्षत्र	री धारकाती	गुणस्थाः	रेक्ट शाणक्याय तकके चशुद्धानी	"
१०८ कर्राट्यानी । संदर्भ क्षेत्रका	मेपन संपन्ति । वसी अन्तर	१०१ विश्वारि	। शुणस्थानसे हेक्ट शुणस्थान सकते	
क न्यो (शाप) विकासकारक स्था	শ্বাবিদ্যাস	मनशर्श	नी जीवींका काल	W1'
शीयका ता हुन करण एकारण	234 Kuta	्रिष्यं समाप्रदेश -		
र के के परव ा नहीं बड	बार्च विद्याल ॥	10 a mem «A-	त्यामार्गणा ४ १ के दागोत २ दया	५६ ४४१
८ सरवदाः १ ९ इत्रस्थान सूच	क∾4स श्रदर	ष≯ fuर	यारिट जीवॉसा यर जीवरी भेवसा	
स्यासकार स् सम्मादकार स्	616	alakik auk	अयम्य भीर उग्हर यम नगा तम	
	なんかんり ちん		यम नया समा दार्थोद्य समुन्दि	W1 4"
	EC 28-71	१० में में बना	र हेडवाया व लग्मा दिश्रीची द्वार	٧′

	الملائدية	रियय-गूची	(५७)
मसम विषय	ष्ट्र म	क्रम में विषय	पू म
१०६ मोना मान्ना रेन्स्याया हे समय मिमराहर्श्व श्रीयंत्रा काम (१० मोनी अनूस रेन्स्यावारे काम स्टूनरावरन्ति और्योक्ष माना स्टूनरावरन्ति और्योक्ष माना स्टूनराव अपना भीर उन्हर्य बार-दिक्यन, नाम तहन्त्र सम्प्राम सम्प्राम १९८ मानाहरूपा सार प्रकरिया		क्यानीक तेत्र की, द प्रयो कीन जीवीकी केरण प्रायक्षान्त्रीयत्रीकी यक समयकी प्रम्यपा नहीं कहा हस बा समापान २०५ तेज और प्रयोग्याची भी यक समय पाया जात रिप उसे क्यां नहीं कहा	भीर विद्या क्यों अद्युक्तपंदट प्राप्तान ग्रेट
श्रोते विष्यादिश नया भसपत		दाकाका सप्ताधान	758
सरवर्षाट जीपोपा सामा आर यह जीपपी अध्या तीरा इस्त जम्म और उन्ह्य हों १९९ मियताटी जीपने नेजा रूटवारी जन्म प्रियति समामुहमते बम बहाद साम रोध्य अभाग वर्षी नहीं होंगी इस साम्बर्ध समा इसीले सम्बर्ध समाधन प्रश्नी सम्बर्ध समाधन र०० नेजाल्या और प्रज्ञेदस्य यारे सामामुक्ताम्यकारि जीयोग राज्य	ህ ຊວ <u>ሂ</u> ዷካ	२०६ तेज या एक्टरपाके बा दह समय द्वेष रहनेपर हैं भीयें हैं गुक्तरानातील स्व स्वयाने आस दोते हैं, अकारते अस्मान्य गुक्तरान्ती? तर्वा गाम बोता, इस याक समापान २०७ वराजेटपाने बालमें विद्या बोद प्रसादस्य तर्ज लेट बालशायों तेजीलेटपाने या या दोकर हुसेर सा	लमें जैसे मा इसी स्पा इस भग भग भग भग भग भग भग भग भग भग भग भग भग
२०१ डप्प दानी लेहरावाँक सम्ब मिक्ट्याहीट जीवॉबर काल	Ra. 856	भन्नमशस्यत पर्यो नहीं हो इस दानाना समाधान	ता, ४१९ ४७०
गमध्यादाष्ट्र जातावा वाल २०२ दव दोनों छायावाल स्वयत प्रमासस्यत और अप्र प्रसासस्यत औरोंवा नाना	a. 868	२०८ जल मकारका जीव मिष्य भारिक नीचेक गुणस्याने क्या मही मास ही जाता,	एव (वे) इस
क्षीयाँका क्षेप्या वाल १०३ उच अ योंके एक वायकी क्षप्रशासिकारीयर्तन, गुण	488	श्रीप्राप्ता समाधान २०९ तज भीर पद्मोत्याप संवतासपतादियीन गुणस्य	ग न
स्थानपरियतन और मरण, इन तीनक ग्राह्म जयस्य	RÉÉ R75	यारं पीषीका उत्रप्त क ११० पुत्र नेहरावाने मिरवार जीवाक नाना भीर एक जीव कपेसा सोन्सरण अप प ध जरह ए कानका निरूपण	रिष्ट की र

४७३ द७५

808 850

803

25

विपय २११ शक्रलेस्यावाले सामावनसम्य रहीए. सम्यगिमध्याहीर और असयतसम्बद्धि अधिका

मस स

पृषक् पृथक् काल निरूपण 835 833 २१२ शहरेरवावारे सवतासवत. प्रमत्तस्यत और अध्यक्त

सयतोंके माना और यक जीवरी अपेक्षा लेक्यापरिवर्तन, गुणस्यानपरिवर्तन और मरण

की अपेक्षा जघाय और उत्हार - कालका निरूपण

२१६ तेज, पद्म और हाक्क रूप्या सम्बंधी एक एक समयके मगाँका निरूपण

२१४ ग्रह छेस्याबाले चारों उप-शामक, खारों शपक और

सयोगिके उठीका काल वर्णन ११ सञ्चमार्गणा

२१५ सन्यतिहरू **मिध्याद्याद** जीवींका नाना और एक जीयकी अपेक्षा सोदाहरण

जधन्य भीर उत्हब्द काल २१६ मिथ्यात्वके असादि और अङ त्रिम होनेसे उसका विनाश

नहीं होना चाहिए कारण रहित यस्तुका विनामा महीं होता अता अज्ञान या कर्म बाधका विनाश नहीं होना चाहिए इसादि अनेक अपूर्व दाकाओं हा बहितीय समाधान

२१७ मोसको जानेके वारण निरन्तर ध्यपशील भव्य राशिका विष्णेद क्यों नहीं होता, इस द्यंश्वय समाधान

२१८ सासाइनसम्याहाध्य स्यातसे धेवर

पृन विधन निषय

केवर्ग गुणस्थान तरके मध्य जीयोंका काउ २१९ अमध्य जीगोंका माना भीर

पक जीवकी अपेशा काल निरुपण १२ सम्यक्त्यमार्गमा ४८१ ४८५ २२० सामाच्य सम्यग्हरि साविक्मम्पग्दप्रि अतिस

ससयनसम्यादप्ति गुलव्यानमे छेकर अयोगिकेय नी गुणस्यान तक के आधाका काल २२१ असयतसम्यन्द्रष्टि गुणस्थानसे रेक्ट अप्रमचस्यत गुणस्थान तक के चेदक सम्यग्हाए श्रीमाँका

8/1

863

4/1

_{धेऽद} २२२ असयत और समतासयत गुणस्यानवर्ती बसयतसम्य ग्दरि और सयतासयत अधि का नाना अभिनेती शेपेका जयन्य और उत्कृष्ट कार २२३ उक्त सम्पग्ति श्रीवाँका एक **जीवकी अवेक्षा सोहाहरण**

> तकने उपनामसम्बग्दरि जीवाँ के भाना और एक जीवकी अपेक्षा अधन्य और उत्रृष्ट कालोका सोदाहरण निरूपण ४८३४८४ २२५ साक्षादनसम्बग्दरि, ग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका पृथक् पृथक् काल

जयन्य और उत्रष्ट काल

२२४ प्रमचसयत गुणस्थानसे छेकर

उपशान्तकपाय

858.854 धर्णस 864-86

गुणस्थान

Share २२६ सती मिच्याहरिट



ં (ફેંઠ	١
----------	---

षट्गडागमर्तः प्रम्नारना

युष्ठ	पकि	षगुद		গুৰ		
५ ७७	-દ્રસી	ब्रेक,		अस्तिक,		
६३०	८ एक मिध्याद्यीटे गुणस्थान,			एक सम्यग्निच्यादृष्टि गुणस्यान,		
486	६ सित्र,			औपशमिक आदि तीन सम्यक्त, संवेद,		
७१५	३ वादिने तीन दर्शन			मारिके दो दर्शन,		
७२९				तया अकायस्यान भी है,		
७३५				एसारट जोग, अजोगो वि परिष		
77	१५ व्य			ग्यारह योग और अयोगरूप भी स्पत है,		
	(আভাগীমা)					
ā s	यत्रं न	राना नाम	बनुद	गुड, या जो होना चारिय		
ष्ट्र	₹	संज्ञा	×	क्षीणसङ्गा		
		योग	×	अयोगी,		
		टेस्या	×	अंडेश्य		
		सिंडि≎	×	अनुमय		
556	१०	লাহাত	\$	হ		
31	* *		ર	१		
888	12	19	₹	2		
-416	3 6	गिन	8	१ मनुत्र्यगति		
3	39	कपाय	\$	१ छोम		
550	२६	ea:	₹	• र्साणस्त्रा		
४५२	३ ३	ৰীৰ ০	१ स व	१ स प		
844	16	है त्या	मा ३ अनु	मा० १ कापोत		
844	8.	8 '4	9	•		
84.	8.5	प শ ি ব	Ę	६ अप ●		
4+1	\$ 0 \$	देग	×	अ याग		
wiy	115	n	×	n		
-64	7 68	F 20	१स०	₹ अस•		
- 63	143	₹थ	१ त्रम विन			
3.0	77	£ 10	3 41 a	३ अस्त		
533	२१४ २०१	\$77 67	٠, ٥,	ა, ფ, შ		
27.2	-78		×	acres e		

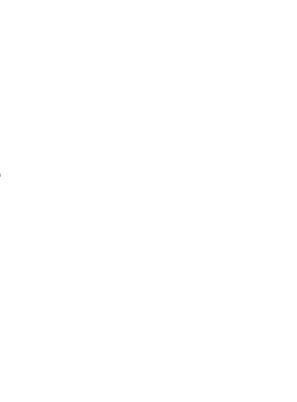
```
≀("६६)
                            तनुद्विपत्र
                                               34
                          सगुद
पक्ति यत्रम स्तानानाम
                                             গৰ্বপু ০
                                              २ अहा । जेना०
                       ? ৼ चमु०
       २२८ दर्शन
                         ৃজাहী ॰
६१७
                                              र् आहा० अना •
६२२ २३५ आहा०
                         ২ আহাত গ্ৰনাত গ্ৰন্ত
                                              ব' ৰণুত গ্ৰন্থত
 ६२३ २३६ -- भ
                          ঽ৽ৰণ্ড৽
       २४५ दर्शन
                                             क-क्षीजसद्या
                                               २ साधार अना
  ६३१
                           ~×
       २४९ सझ
                         ′২ ধারাo সনা ৽ নৃo ব৹
                                               र सावारण्यांना ॰ युर उ॰
  ६३8
       २५५ उपयोक
                           रासावा० अना०
  8,80
                                                £ 310
        208 n
   ६५५
                           านุชั่วโอ
                                               ~अयोग
                जीव
        १५८
   ७१९
                            ×
                                                 १२
                 दोग
   ७१५ १७७
                           ۴٩,
                                                ₹३
                 गुग्०
          160
    ७४३
                            28
                            ्र अंस० सामा० छेरो० परि ० ४ असे व सामा० छेरो० यदी०
                                                  50,264.5
                 ग्रीते
    048 800
                 प्राण
     606 800
                                                  २ मृ वं
           80८ स्वा
     ८०९
                              १ प्रव
                                                   १ अमे०
            ५१४ मध्य
      618
                              oBr f
                   सिहि०
                                                     99
       33
                               33
                                                   अनीन्ध्राण
             488
                    - 11
       ८३५
                               ×
            ५३९ प्राण
       ረዓዩ
                                   (-पुस्तक ३)
                                                74
              पवि मनुद्
                                            (44)
          ४६ १ (सन्ह)
                                            188
         १०९ अन्तिम वृह्युर
                                             tiz
          १48 १२ १२८
                                            -जुलाहरुशय तस्स
                  ८ सूच्यावके प्रथम वर्गम् की दिनीय 'सूच्येगुलको उसके प्रथम बर्गम्बरे
                 11 11
                 २ -जुलाहद्वरा धर्मस
          200
                     "वर्गम् उसे
                                              ज्ञान र
                   BRIS 8
            २९८
```

```
पर्गंडाममधी प्रगासना
```

(42)

```
( प्रम्तक ४ )
पक्तिः
        yø
               बनुद
                                              गुद
         ३ नियम है।
                                        निगम है।(२)
   8
         ध घेउडियय हो।
 ૨૧
                                        वेउहित्रकी।
         ८ तीन मागोंमेंसे बाठ माग
                                        साठ मागावेंसे तीन माग
 32
         ७ व्यास त्रिगुणितसहित
 પ્ટર
                                        ध्यामत्रिगुणितमदिन
 44
        ₹ इए४ + इए४ +
                                        191 + 191 +
 £3
         ५ विद्वारिक
                                         विद्याग्यदि
 90
         ६ तदवासा
                                         तदायासा
 4
         ५ लेगावा
                                         रोगाण
305
           मजोगिने वली
                                         सन्ने।गिरेयनी
₹३७
        १६ सजी जीन
                                        आहारक जीव
2419
         ३ सुचाणुसारी जोदिसिय
                                         सु वाणुसारिजो दिसिय
१५९
         ३ सक्छणाण
                                        सहरणाण
191
        १७ आराशके प्रदेशके
                                        आसारोते प्रदेश
188
           पयेमादी
                                        पयेहदी
        १८ योजन उस
                                        योजन प्रतेष उस
  12
305
         २ सन्नोगिकविट
                                        वयोगिके दिल
$03
        २० वन जाना
                                        बन जाता
208
         ३ बाहारवसु
                                       अणाहारपस
$20
       १-२ वर्षर्युग
                                       धर्पेयुगः
328
         ७ ण, एस दोसी,
                                       ण पस दोसी,
        २ अगदिदगहणदा
126
                                        (त) वयहिदगहणदा
250
         २ काकजीय
                                         णाणाजीवे
148
        १७ हा। प्रकारसे
                                        इस प्रकारके
398
         २ जिहाए
                                        जिम्माप
 192
          ९ मुप्पसिद
                                        सुचसिद्ध
        ३६ सप्रसिद्ध
  91
                                         सुत्रसिद्ध
        २१ और क्षपक
212
                                         और चार्ये क्षपक
848
         ६ मतोमस्ख्य
                                         मतोमुहुत्तमन्छिय
868
        १२ प्रस्तारके
                                         प्रस्तारमे
863
        २१ उदर्तनायात
                                         अपर्यतनाद्यात
                               ( प्रस्तावना )
        ११ या मुनिजनोंको
15
                                           या यह कार्य मनिजनोंको
२२
         1 15x17=
                                           १६ ж १६ =
```







सिरि भगवत पुण्यदत सूदवनि पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि चीरसेणाइरिय विरह्य घत्रसा टीका समाण्णिदी नस्त

> पढमसडे जीवट्टाणे सेत्ताशममो

स्रोयारोयपयास भोदमधर पुणी जिल धारं ! णमिळण' व्यक्तस्य जहोत्रवस प्रयोगेमी !!

चेयरशामध्य सुर्येक्षे लोक और कारीक के प्रकार कार्यान् स्वयंत् स्वयंत् सामक कार्यान् रामयावाची राविदर्भ कार्यात् विधासा (विधायणिके प्रकार), और क्षित्र कार्यान् कार्यात् राम् नेविय विदेशपारियोगिय भीवीर भगवात्रका कार्यात् महानोग त्रकार कार्यात् विधाय कीर्यात् कार्यात्म विद्यात् के रोक भीर भरोत् भागित विरादक्ष की आणियोश गोशके लिए सच्चा करे हैं या गोस्सामध्ये कार्यात्म कार्य

र सार प्रती नदिपूत पति पाटः ।

द सेते दिही दिनिशे या कथा, युक्तेते व देते सक्य, देश या घट स्टिस् बाता विभागा दुशे द १९५०-१९६

क विकरेन रे(में 3 कोई मीडे करवाड़ि क्याराड़ि का ब्याप्टिन कड़ि कैंग 1 (करेंद्र, प्रा क्षेत्र)

रेताणुगमेण द्विहो णिहेसो, ओघंण आदेसेण यं ॥ १ ॥

किंकले सेचाणिओमहासस्य अयगते १ उन्चहे । त जहाँ - सताणिओमहास्य अयगते १ उन्चहे । त जहाँ - सताणिओमहास्य अयगते १ उन्चहे । त जहाँ - सताणिओमहास्य अयगत्य माणाण चोडवनमः अवस्यचेणामपाण वेववनमः वगमप्रस्ले । अयगा अणतो जीजगमी अमस्रेजनप्यमिए होनागामि कि सम्मारि, म मानी वि संदेहण पुरतस्य मिनस्य महेहिरीणामणहो ग सेवाणिओमहानम्म अवगो । १७ सेवाणिओमहानम्म अवगो । १७ सेवाणिओमहानम्म अवगो । १७ सेवाणिओमहानम्म अवगो । १७ सेवाणिओमहानम्म अवगो । १० सेवाणिआमहानम्म अवगो । १० सेवाणिआमहानम्म अवगो । १० सेवाणिआमहानम्य अवगो । १० सेवाणिआमहानम्य अवगो । १० सेवाणिआमहानम्य अवगो । १० सेवाणिआमहानम्य । १० सेवाणिआसहानम्य । १० सेवाणिआसहान्य । १० सेवाणिआसहानम्य । १० सेवाणिआसहानम

क्षपगविणगरणह प्यदस्स परूरणाणिमित्त च । सस्यविणासणह तस्र यवधारणह च ॥ १ ॥

धेतालुगमनी अपेक्षा निर्देश दो प्रशास्त्रा है, ओवनिर्देश और आदेशनिर्देश ॥ धरा-च्यहा क्षेत्रालुयोगद्धारके अवतारका क्या एक है "

समाधान—उत्त शकाका उत्तर देते हैं। यह इस प्रकार है—सप्रहण्या कर्म क्षत्रपोगद्वारसे जिनका अस्तित्व जान लिया है, तथा प्रध्यानुष्योगद्वारमें जिनका सर्वारपार्यका जाना है, पेसे वीद्द जीयवसमाओं रे (गुणस्थानों रे) सेत्रस्वर्यी प्रमाणका जानना हो केरा योगद्वारक अपवारका पर है। अध्यय, असरयान प्रदेशकाल लेकाकाशमें अनत प्रमाणन जीयपारी क्या समावी है, या गर्ही समावी है, इस प्रकार से सदेहरे पुननेताले विषं सोदहरे पिनाश करनेके लिय इस क्षेत्रानुषोगद्वारका अनतार हुआ है।

इस सेत्रानुयोगडारके प्रारम्भमें क्षेत्रका निश्चेय करना चाहिये।

शरा—निशंप क्से कहते हैं।

ममापान—सदाय, विपर्वय और अनम्प्रवसायमें अवस्थित वस्तुको उनसे दिक् कर जो निक्यमें सेवत करता है, उसे निशेष कहते हैं। अवया, बाहरी परार्थने विकार निशेष करते हैं, अवया, अप्रकृतका निराकरण करके प्रकृतका प्रकृषण करनेपाड़ा निशेषी करा भी है—

स्पर्केट निवारण करनेके लिये, अट्नरे प्रमूपण करनेके लिये, और तसार्यहें ही सन्दर्भ करनेट लिये निवेश किया जाना है 8 7 8

१ इत्युष्पत्र टर्फिलियन्। बायान्यन विदेश व ॥ स. ति. १,० १ इ. १ हरी ने सार्गनिक स्टब्स

हे दराचा स्थान स्थान । इर्थात है भरे सद्दिनगर्भा वास्पतावात्वाची वाचरेनु मेद्देश दर्श

४ क स्थार व जारप्रिताचालय बार्ट्यक्समाय च । त ति १, ५ अवस्यार्यस्थान

सो च एत्य चडिनहो जिनरोगी जाम द्वाजा दव्य मारगेसमेण्य ! क्य गेक्सेवस्स चउन्पिह्च ? दब्पद्विय पज्नपिद्वयणयाम्लीवयणवानाराणे । उच च —

णाम रत्रणा दिवय ति एम दाबियस्य जिक्नेवे ।

भावो द पञ्जविवयस्त्वणा एस परमची' ॥ २ ॥

जीवानीव्रमयकारणियरेकारो अप्पाणिक वयहो भेजनही जामगेच । मा प ।।मणिक्रोती वयण-वर्षवरणिबाज्यसमायमतरेण ण होदि ति. तन्यरं गरिममामञानि थियो चि वा, वाच्य बाचरणिकडया गर्र रग्नन्दस्य पयायाधिरनये असमबाहा दरराहेय

यह विशेष यहाँ पर वामशेष, रचापवाशेष, ह्रव्यक्षण और मायसच्चे भेडले चार

कारका है। द्याद्या-- निशेष खार प्रकारका केले हैं।

!, ३, १]

समाधात--द्रच्याधिक और वर्षावाधिक नवके माधव करनेवाने वक्तीक कावन्त्री ग्पेशासे निशेष चार प्रकारका होता है। वहा भी दै-

माम, रचापमा और हृत्य, वे भीन निशेष हृत्यार्थिननवर्गा प्रक्रवणान विचय है और

ग्रायनिक्षेप पर्यापाधिकनयको प्रक्रपणाका विषय है। यही परमार्थ स्तर्थ है ह र ह

जीय, अजीव भीर व्ययक्षय बारणोंकी अवेशात रहित होकर अवन आवर्ते प्रकृत दुभा 'देरेश' यह दारद मामदेश्वनिदेश है। यह मामनिदेश, यसम और यापश्वन निश्न सर्व ाराय मधीन् याच्य वायक सम्बन्धके सार्यकालिक निमायके विना नहीं हाना है काहिये. मयया तद्वाय सामान्य निकाधनक भीए। सारह्य सामान्य निवित्तक होना हु इसलिये, अधका,

वाच्य-पाचररूप दी दासियीवाण पद हान्द वर्शवाधिर नथमें असमय है दगरिय, प्रकण र्थेवनयका विषय है, पेसा कहा जाता है।

निशेपार्थ-- यदां पर सामानिशेवको प्रकार्धिकनवका विचय कमलाके दिए से व हुन

दिये हैं, जिल्हा कशियाय बामदाः इस प्रकार है । (१) लामनिक्षेत्र व्यान भीर बायपन निन्ध भारवयसायके विमा मही द्वाता है। इम्हिन्य यह हुम्याविमयका विषय है, अर्थान् "इस तारुसे यह प्रार्थ जानना खाँहेव । इस प्रवाहका सकेत किये आनसे हाम्ह अपने बाध्यका

वाचक द्वीता है। यदि यद शंदेन या य क्य वाचक्का सम्बन्ध नियं न म ना आयं का जिल्ह देश या भिन्न बाल्में उस शान्त्री उसके बाध्यक्त अर्थना जान नहीं ही सनता है । विन्नु 'देयदुत्त ' आदि जी भाग हिसी स्पनिके बाह्यायस्थामें स्कंगय थे। बद्द आज बुद्धावस्थाने भी समानश्यक्षे दश स्पति हे वायक देन जाते हैं दलने शिज दाता है कि कबन आ

बारपुरे मध्यमें जो सम्बाध है यह नित्य है। और नित्यताका द्वरपूरे अ गरिक अन्द्रव राष्ट्र

र इर प्रती को पंचापविक य हा।

.... इ सान्त्र । वस्त्री । वति वन्त्रा । णयस्मेचि बुचदे । क्ट्वदत मिलादीणि सच्मानामन्मानि बुद्धीए इत्रिक्तस्म यत्त्रप्रनायाणि द्वरणा णाम । सन्मानामन्मानसस्नेण सच्यदन्यवानि चि ना, पराणापसन

जाना ससमय है, इससे सिद्ध होता है कि नामनिक्षेप उच्याधिकनयका विषय है। गर त्रिक्षेयको सद्भयसामान्य और साहद्यसामान्य निमित्तक कहा है, उमका अभिनाय गई है। विषक्षित सुवर्णीदि वस्तुके पूर्वावर बालमानी घटक, वेयुरादि वर्यावाम निमन्ना रहेरे ! भी बनमें एक ही सुवर्ण समानरूपसे सदा विद्यमान रहता है, इसलिए इस प्रकारकी समानरूप तद्भयसामान्य कहते हैं। तथा, दिसी भी एक विवक्षित कालमें विद्यमान, किनु विव प्रकारके सुपर्णीसे निमित कटक, कुण्डल, केथ्यादि पर्यार्थीमें 'यह भी सुवर्ण है, यह भी सुवर्ण है, ' हत्यादि रूपले सहदाता-बोधक जो समानता है, उसे साहदय सामान्य हरते हैं। दमी प्रशासे नामनिशेषहण शब्द मी पूजापर कालमावी ' क्षेत्र, क्षेत्र ' इत्यादि शब्दोंमें सना प्रतीतिका उत्पादक होनेसे तद्भयसामा यका निमित्त है। तथा, विवासित किसी भी एक कडी पिनिल देशपर्ती मधुरा, काशी इत्यादि सेवॉम 'यह भी क्षेत्र है, यह भी क्षेत्र है' हिन् इरसे उचारण विचे आनेपाला दाष्ट्र सहरा प्रस्वयक्त उत्पादक होनेसे साहरयसमापडी निमित्त होता है। और सामान्यको विषय करना ही ह्रव्याविकनवका विषय है, हर्ष मामिनिसेपको इच्याधिकनवका विक्व कहना युक्ति सगत ही है। (३) नामिनिसेपको इस पिंहनपृष्ठा विशय बतानेने लिए तीलरी युक्ति यह दी है कि यादय धावन रूप हो हार्दि पाटा यह दान्य पर्याणार्थिक नवमें मसमान है, अर्थात् वर्षायार्थिक नवका विषय नहीं हो सही इसरा मसिश्य यह दे कि शार्म बाज्य वाचकरूप दी शक्तिया यह साथ है। वह अ वर्षात् द्वाप्त वर्षात्र वर्ष विषयान है। और स्वय भी अपने स्थवपत्रा विषय होता है, इसाल्य वा उसम करा वार्याल भी उन्हें सर्वत् पर जारी है। इस मकार विश्ती भी दिवाहित समयमें वह उक होनों मधार वर्ष वाचहरूप दानियास युक्त रहेगा । श्लीर इसी कारणसे यह पर्यायाधिक नवका विषय महिन सक्ता, वर्षोह, बर्चार भागममें शहरको पुरुष्ट्रध्यक्ष वर्षाय वहा है तथारि जर का र बादर-वावकर पूर्व क्रियोवारा विविध्त क्या काता है, तब दह इस्य बहर ते हराती कृषि शान्, गुल वा धमें वो कहते हैं, श्मिट्य 'गुलसमुद्दायो दथ्य ' के निवसतुनार हाकियोवान्त्रेश इन्द्र ही का जायगा, वर्षाय कहीं। इस प्रशाद जब सम्य क स्थाप कृत्या है तह यह कृष्णाधिकववश है। विषय हो सहसा है, पर्यापाधिकववश मही। हार्सि क्षा मामनिरेराची इच्यार्थिक वयदा ियय बहुना सर्वधा यशि युक्त ही है।

कुण्डि झान इच्छित क्षेत्रके भाष वक्तवको मात हुए, अर्थोत् वितर्म कुण्डि इन इच्छित क्षेत्रका क्यापना की नह दे वेले लड़ाव की,र अलड़ाव स्वकृत काछ, कृत और हित अर्थ्य क्यापना की नह दे वेले लड़ाव की,र अलड़ावा स्वकृत काछ, कृत ह्दाणभेत्यनिषयणेषि वा द्वनणाणिक्येवो द्व्यद्वियणयुज्लीणो' । द्व्यदेश द्विद्व आतमदो लोआतमदो य । तत्थ आतमदो खेचपाट्टआणओ अणुवज्जो । कथमेदस्स ज्ञीददियस्य सुर्शणणायरणीयस्थाओतमपतिसिद्धस्य द्व्यभागसेवातमप्रदिशिस्स आतमद्वयसेवाययदेशे १ ण एस दोमो, आधारे अधियोतयारेण कार्ण कब्जुत्यारेण

हुच्योंमें ब्यात होनेके कारण, अध्या अधान और अअधान द्रव्योंकी पक्ताका कारण होनेसे हुच्याधिकमपके अन्तर्गत है, पेका समसना चाहिए।

विशेषार्थ - रथापनानिशंपको इध्याधिकनयमा विषय सिद्ध करनेके लिए दो हेतु रिये गये हैं, जिनका सिमाय मामका इसमकार है। (१) स्थापनानिक्षेप सङ्घाय मीर असदायहरूपे सर्वे द्रव्योमें व्याप्त है, इसका मर्थ यह है कि विलोकार्ती सभी द्रव्य वदावि इवतंत्र एव निश्चित आहारपारे है। तथापि व्यवहारके योग्य एव विशेष अपेशांसे विशिष्ट भाषारसे परिवरियत द्रव्यको सावार, सद्भायकप या तदावार कहा जाता है, और उससे भिन्न भाकारयाती पस्तुको भनाकार, असद्भाव या अतदाकार कहा जाता है। काछ या दात घंगेरह क्यांचे अपने स्वतंत्र आशास्यांके ह तथापि अशांको हाथी घोडा आदि विसी यक धियक्षित या निश्चित मानारसे घन्ति कर दिथे जाने पर उद्दें तदाकार कहा जाता है। भीर निश्चित आवारसे घटित नहीं द्वान पर भी जो सकेनडारा विसी बस्तुस्पद्धपत्नी परिकरपनावी जाशी है, उसे सतदाबार बहते हैं। इसप्रवार यह स्थापनावा व्ययदार तदावार और सतदा कारकपसे सर्व द्रव्योमें पाया जाता है, अर्थात् सभी द्रव्योमें देशों प्रकरका स्थापनानिशेष किया जा सकता है, जो कि क्षेत्रभेद या कारभेद होने पर भी शदबस्य रहता है। इस कारणसे क्षापनानिशेषको ह्रायाधिकनयका विषय कहा है। (२) प्रधान और अप्रधान ह्रम्योंकी पकताका कारण कट्नेका मानियाय यह है कि जिस वस्तुकी स्थापना की जानी है, यह प्रधान हत्य. तथा जिल दर्शमें स्थापना की जाती है, यह अप्रधान द्रव्य कहलाता है। 'यह सिंह है ' इस प्रदारसे स्थापनानिधेष असरी सिंहरूप प्रधानहरूप और मही आदिने विल्लेनेने स्थापित सिंहरूप भाषारघारे भग्नधान द्रव्यमें पनताना कारण भवान पनत्वप्रतीतिका निमित्त होता है इस्तिय भी स्थापनानिसेष द्रस्याधिकनयका विषय है।

कारामद्रायक्षेत्र कार भोजारामद्रयक्षेत्रके भेदले द्रायक्षेत्र की श्रवारका है। कर्नेसे देशियव्यव शास्त्रका ज्ञाता, किन्तु यतमानमें उसके उपयोगसे रहित जीव आरामद्रायक्षेत्र निक्षेत्र है।

्राम् - शुनक्षानायरणीय वसके श्रवोपदम्मसे विशिष्ट, तथा द्रश्य और अध्यक्ष रोजा समसे रहित इस जीयद्रध्यके आगमद्रष्यक्षेत्रक्षण स्था केस मान्त हो सकता है।

समाधान-यह कोई वाच नहां है। क्योंकि आधारकप आसमी आधेयभूत हायोगनम क्यक्य आमामके उपचारता। अथवा, बारणरूप आसमी वायकप श्रापेशमके उपचारते, स्द्रागमत्र न्यस्य श्रेतसमितिमह्बी तद्वान न्यांण ता सम्य तद्तिरीहा । णेशगण द्वान स्वान तिहि, बाणु गमरीन भीत्र स्वानिति चेदि । तत्र बाणु गमरीन निहि, मित्र विदि । तत्र बाणु गमरीन निहि, मित्र विद । तत्र बाणु गमरीन निहि, मित्र विद । तत्र वाणु गमरीन निहि, मित्र विद । तत्र वाणु गमरीन निहि, मित्र विद विद च चहु च चहु व च देहिमिरि । महु पुष्य वस्त स्वान प्रान्त का स्वान प्रान्त का स्वान प्रान्त का स्वान प्रान्त का स्वान का प्रान्त का स्वान का स्वान का स्वान का स्वान का स्वान स्

श्रपपा, प्राप्त हुई है आगमसदा जिसको पेने स्रयोपरामसे गुन जीवदृष्यके अपरम्मत्री जीवके भागमद्रव्यक्षेत्रकप समाने होनेमें कोह थिरोध नहीं आता है।

षायकारीर, मध्य श्रीर तब्द्व्यतिरिणके मेदले नोबातमहृद्यप्रेष तीन प्रकारकारी उनमेंसे धायकारीर तीन प्रकारका है। साथी धायकारीर, यतमान धायकारीर मीर क्रान्त वायकारीर। दनमेंसे अर्तात धायकारीर सी ब्युत, क्यादित भीर त्यक्ते मेदने हार्ग मकारकार है।

श्री --- द्रश्यक्षेत्रागमचे निमित्तते पूर्वचे दारीरको क्षेत्रसङ्घा मरे ही रही और, तिर्ध इस सनागमदारीरके क्षेत्रसङ्घ चटित सही होती है है

ममापान ~उन दावावा यहा परिदार वहते हैं। यह इस प्रवार है—प्रिपर्य इण्डर भागत भाष्या भागकप्रभागत वर्तमानवार्ग्ये निवास वरता है, भूनवार्ग्य निवास वरता या, भीर भागामी वार्ग्य निवास करेगा। इस कोवस तीनों ही प्रवारवा वारीर सेव कहरूना है। भाषा, भाषारकप दारीरमें भाषेयकप क्षेत्रागमका उपपार करतेने भी सेव वका कत बाता है।

नीम एम इध्यक्षेत्रके सीन प्रेरीमेंने जी आगामी कारमें शेषविषयक द्वातप्रकी जीनेगी। पेसे से वक्ष मावा ने।मागमद्रव्यक्षत्र कहते हैं ।

प्रकारण में जीव शेषामस्य श्रामेषदायने रहित होने हे बारत अनागम है, इस अबह शेषमण केन बन शक्ता है?

मसापान-नहीं। क्योंहि, "सायक्षेत्रक धामस जिससे निवास केसा 'इस सहर हो दिर केहे करमे जीवडणके केशामकव स्वरोपनाय होकेहे पूर्व ही क्षेत्रका निर्दे हैं। वायक्योंक केंग सार्वास निवाजी। तह्यांतिक त्रीधामसद्भयक्षेत्र है, वह हम केंग कार्यक्रम विकास स्वरोग हो तहारहा है। उनसेने बानाप्रकारि साड प्रधारें बाराप्रकार बारामार्थ

देश-क्षेत्रवर्ध क्षेत्रवर देने बाज हरे!

न, शियन्ति नितसन्त्यसम्ब जीवा इति कर्मणां श्वेत्रतासिद्धेः । (ज) कोइस्मर्व्यसेन स दुनिह, ओरयारिय पारमस्थिय चेदि । तस्य ओरयारिय कोइस्मर्व्यस्तेन स्रोतपसिद् सानिरोत्त चीहिरोत्त्रसेयमारि । पारमस्थिय कोइस्मर्व्यस्तेन आगायदवर । उत्त च----

> खेत खळ आगास सम्बद्धित च होति पीखेत । भीषा व पोम्मटा वि च धम्मा स्मात्वता काला ॥ ३ ॥ भागास सर्वेदस तु जडुापी तिरिको वि य । भैसलीप विवासारि अस्मार जिस देसिट ॥ ॥

पसी दि लिक्सेवी दण्डाह्यम्म, दृष्येण दिला एदस्स समवाभावादी । ज स मारवेष त दुविह, आगमदी जोआगमदी सारवेष चेदि । आगमदी भारवेष देष-पाहुहजासुनी उनस्त्री । लोआगमदी आरवेष आगमेण निणा अरवीनस्त्री ओहहसादि-

समाधान-नहीं। पर्वेकि, क्रिसमें जीव ' क्षियति ' अधीत् निवास करते हैं इस

प्रकारकी निराधिके वससे कर्मोंके क्षेत्रपना सिक्त है।

सर्यादिस मोभागमद्रस्यका मूला भेद जो नीवर्भद्रस्यका है यह भीवयारिक भीर पारमायिक भेदले हैं तो कारकार है। उनमें लेकिन मिस्स शाल्सिय, मीहि (भाष्य) स्टेंक स्वास की निक्रिय, मीहि (भाष्य) स्टेंक स्वास की भावना में स्वास की भावना प्रदूष्ण स्वास है। भावना प्रस्प पारमायिक मोकर्मता प्रतिकारिक नोभागमद्रश्येष है। कहा भी है—

भावशाहरूप निपमल तहयातिरिक नीभागमहण्यके हैं और भावशाहपूर भति रिक जीव, पुत्रक, धमास्तिकाय, आधमीरितकाय सथा काल्द्रक्य नोसंब बहुणते हैं। रे प्रे

ारण जाएन, पुरुन, प्रसाहतकाय, आध्याहतकाय तथा कार्ल्यल नाहन पर २४० ६ ॥ ६ ॥ भाकादा सम्बेदगी दे और यह उत्पर, कार्च और निर्देश संघेत फैरन हुमा है। उसे ही क्षेत्रलोक जानना प्योदिए। उसे जिल असवानने कान्य कहा है ॥ ५ ॥

यह बागम और मीलागम भेदरूप द्रव्यक्षेत्रनिक्षेत्र भी द्रव्याधिकनयका विषय है।

वर्षीकि, द्रश्य वर्षीत् सामा यके विना यह निशंव समय नहीं है। ओ भावरूप राजनिशेव है वह आगमपावशेज और शोधागममापराज्ञे भेरले रो

प्रवारका है। रेश्याययवर प्राप्तनके बाता भीट वर्तमानकारमें उपयुज जीयको भागमप्राय रेश्यितरेशेष करते हैं। जो भागमके अर्थात रेश्यायपक शास्त्रके उपयोगने विना भन्य प्राप्तमें उपयोग हो इस अरियको अर्था, भीत्विक सादि पाच प्रकारके आर्थोको नोभागमप्रायक्षेत्र निरुप कहते हैं। पचित्रियमात्री मां ! म्टेसु रोजेसु नेषा गेचेण पयर् १ णांजागमन् दत्रमेचे पर? । णांजागमदा हच्योच णाम कि श्वामाम मागण देवप्य गोज्जमाचित्र अरगाहात्मच आध्य विवादमामात्रामे भूमि चि एयद्दे । रम्य रोज १ सुक्तीय संगो । के चर्च पिलामिएण भागेण । रिव्ह गेचं १ अप्ताक्षित्रका । परिणामिएण भागेण । रिव्ह गेचं १ अप्ताक्षित्र चेत्र । क्यमेमन्य आयाग्यस्तो । ण, मारे स्थम द्दि एमस्य वि आयाराप्यमायस्यणाने । केविन गेच १ अग्नीर्म मणस्त्रतमिद् । कदिनिष रोजं १ ह्यदिष्णय च पत्य एगविय । अपरा पत्रीन्मिन

> द्या-अप बतलाये गये इन क्षेत्रोंमेंसे यहा पर कीनमे क्षेत्रसे प्रयोजन है ! समाधान-यहा पर नोमागमञ्ज्यक्षेत्रमे प्रयोजन है !

यानान अधा पर नालागमङ्ख्यसम् प्रयाजन है। युन्।---नोथागमङ्ख्यसम् हिन्दे नहते हैं।

समाधान--- मानादा, गगन, देवपण, गृहाकावरित (यसौंके त्रिवरणहा स्थाते मगगुहनलक्षण, भाषेय, स्थापक, आधार और भूमि, ये सब नोधागमङ्ख्यसेनके प्रपार्यक नाम है।

िरोग्रेथि — अर धरलाकार क्षेत्रका विचान, निक्का, न्यामित्य, साधन, साधिकरण स्थिनि श्रीर विद्यान, इन प्रसिद्ध छह अनुत्रोगङ्कारीसे समझ करते हैं इनमेंसे करा श्री निक्षेत्र या यक्तार्थ हारा क्षेत्रका विचान क्षिया गया है, यह सब निक्सके अनगत समहन व्यक्तिया

गुरा- क्षेत्र क्सिका है, वर्धान् इसका स्थामी कीन है है

समाधान-यह भग शून्य है। वर्धान क्षेत्रका स्थामी कोई नहीं है।

मुक्त-किमते क्षेत्र होता है, अधान क्षेत्रका साधन या करण क्या है !

समाधान — पारिणामिक मानने क्षेत्र होता है, अधान क्षेत्रकी उरश्ति है। निभिन्न न होकर यह स्त्रमायक्षे है।

गुक्ता---विसमें क्षेत्र रहता है, मर्थात इसका अधिकरण क्या है ?

ममाधान — अपने आवर्धे ही यह रहता है अर्थान् क्षेत्रका अधिकरण क्षेत्र ही है! प्रका-पक ही आकाशों आधार माधेय साव कैसे समय है?

ममायान---नहीं। क्योंकि, "सारमें स्नम्म है इस प्रकार एक वस्तुमें भा साधार सामेपमाय देखा जाता है।

र अरहरू अरहरिष् अरह सहस् वहा सम्पन्निय सह परिवाद अवत्रकार स अतिहा सार^{करी} => हार्शिक्षि ॥ काव)

६ इ. इ.ची. हर प्रव ' हाँ। प्रणा ह

सिमच दुविद, लेगागासमलोगागाम चेदि। लोक्यन्त उपलम्यन्ते परिमम् जीगदिइत्याणि ए लोर । तद्विपतितोज्लोक । अपना देसमेण्य विनिद्दो, मदर्युलियादो
उपिग्रुहुलोगो, मदर्युलादो हट्टा अपोलोगो, मदर्युतिच्छ्यो सन्सलेगों वि । जया
दम्मणि द्विद्दाणि तप्याचेषो अणुगमे। रोत्तरम अणुगमो रोजाणुममो, तेण रोजाणु
ममेण सरीरस्येन दुविद्दो शिद्सो (वेदसो यद्याचाय क्रक्लामिदि एपट्टा) लोपेण
इत्याधिक्ययाखल्यान, अस्तेश पर्याचार्यक्यवस्यान्त्रम्य सिद्दि दिनियो निर्देश ।
विमद्यमयाण गिदेशो प्रीदे १ न, अभयनयावस्यवस्यानुमहार्थवात् । ण तद्यो गिदेशो
अतिय, णयद्यमद्वियजीनमदिवस्तानुमहार्थवात् । ण तद्यो गिदेशो
अतिय, णयद्यमद्वियजीनमदिवस्तानुमहार्थवात् ।

शका- क्षेत्र कितने प्रकारका है है

समापान — इच्यार्थिवनयकी अपेशा शेष पक प्रशास्त्र है। अपया, प्रयोजनेक साध्यये क्षेत्र की प्रशास्त्र है, लोकाकाद्य और अलोकाकाद्या जिसमें जीवादि द्रम्य अपलेकत क्यि जाते हैं, पाये जाते हैं, उसे लोक कहते हैं। इससे विपरीत जहां जीवादि द्रम्य नहीं देशे जाते हैं, उसे अलाक कहते हैं। अपया देगके भेदसे क्षेत्र कीत प्रवास्त्र है। मदराबळ (सुनेश्यक,) की प्रशिक्त उत्पन्ता क्षेत्र कर्मणेन हैं। सदराबळ सुल्से श्रीयेका क्षेत्र अभीलिक है। मदराबळसे परिविद्या अर्थात सामाण्य स्वप्लेक हैं।

जिस प्रशासि हाय व्यवस्थित है, उस प्रशासि उनको जानना अनुगत बहुणाता है। सेनने जागसको सेनागुगत बहुते हैं। उससे व्यवस्थित होनानुगत्तमे सारीरके (सारीर सामान्य और मुजाबि भोगागा विश्वय) निर्मुतके समान दो क्यारका निर्मेदा किया गया है। निर्मेदा, सिरायहंक और क्या में सब यहांधक हैं। क्यांधिक व्यवस्थित ह्यार्थिक व्यवस्थानते, और व्यवस्थित अर्थात प्रयोगीयार्थिक व्यवस्थान हैं।

शका - दोनों नयोंकी अवेशासे निर्देश क्सिल्ये क्या जाता है !

94) — नाता तथान वयदार्थ । वदा विकास्य । वया व्या जाता है । समाधान — नहीं, पर्योशि, द्रष्ट्याध्वनत्यमं अवस्थित दिष्योवे अनुसहते स्थि श्रीव निर्देग विधा समा है। तथा पर्योधार्थिक नयम अवस्थित दिष्योवे अनुसहते स्थि अवसानिर्देश विधा मण है।

हम दोनों निद्दाों के किसिए और कोई सीसरा निद्दा नहीं पाया जाता है, वर्षों के दोनों महारे नयोंने नयस्थित अणिंक किसिए अन्य प्रवार कीताओंवा अमाप है कत एय दोनों ही प्रवारक तिर्देश विधा गया है।

६ श्राप्त वर्गाणो अपनानी प्रान्तह । व्यत्यावराज्ञाद्याच्याच्या । प्रिकान्त्राह्यान्त्रपर्यंत्रीच । स्वयं द्वालान्त्रियंत्रीयः । त या वा ३, ६० इत्य पहुलवान्त्रीयानी त्वावयानी अदय वे बादराती वर्षाः । विश्वानात्रीयः वर्षाः वर्षाः । विश्वानात्रीयः वर्षाः वर्षाः । वर्षाः वर्षः वर्षाः वर्षः वर्य

' जहा उदेमा तहा णिदेमा ' चि उहु ओपणिटमहमुक्तम्युच मणिट—

ओघेण मिच्छाइट्टी नेबडि सेते . सन्वरोगे ॥ २ ॥

एदस्म सुनस्म अत्यो उचने । त जहां आतिष्टेमो आन्मपुरामहो । विज रिष्टिणिदेमो तेमपुणहाणपाडिमेटहो । केनडि ग्रेनै 'इट्टि पुज्छा सुनस्म प्रमाणनप्यरमापन फ्ला । स्वाद्योगे इटि येनवपमाणणिदेमा । एत्य स्त्रोग नि जुने मनग्जेंण घणो धेरामा । इरो १ एत्य येनवपमाणायियारे —

पञ्जो सावर सुई पदरो य घणगुजो य जगमेटा । छोषपदरो य छोगो अह दु माणा भुणेवच्या ॥ ५ ॥

'तिस प्रमारसे उदेश किया जाना है, उसी प्रकारसे निद्दश होता है 'हम न्यारहे मनुसार ओधनिर्दशके लिये उत्तर मृथ कहते हैं—

अधिनिर्देशनी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीन क्तिने क्षेत्रमें रहते हैं १ मई होहर्ने रहते हैं ॥ २ ॥

इस स्वका अर्थ कहते हैं। यह इसप्रकार है— स्वमं ' ओय 'इस पदका विर्धेत आदेश प्रकणाने निराकरणने छिय है। 'मिन्याइष्टि 'इस पदका निर्देश, दोन गुगस्तानि प्रतिवेचके लिय है। 'कितने क्षेत्रमें रहते हैं 'इस वृद्धाना पण स्वका प्रमाणना अतिवर्ष करता है। 'मयंगोकों 'इस पद्दे क्षेत्रमें प्रमाणका निर्देश क्षिण है। यहा स्वम्में 'शाने देशा सामाप्य पद क्वनेपर सात राजुमांका प्रनारमक गोक प्रहण परना बादिय। क्योंकि यहा क्षेत्रमाणाधिकारमें—

पस्यापम, सागरीपम, सुच्यगुरु, प्रवश्तमुरु घनागुरु, जगग्नेणी, लीकप्रवर और लेंहि ये भार मान जानना चाहित ॥ ७॥

[ी] विविध्य अर्थेश्वरामकात्र विविध्यक्तियः विश्वर वश्यरपादास्य स्वयं स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्व इ.स.च्याप्त त्यां विविध्यक्ति स्वास्य स्वास्य

[¥] स में देश " मृत्युपनात् व द्वारण इति पाठ "म-ना-क" त्रतिश्च स्वतस्य वृह्णा^{त्र} इति पार १

५ जस्त । र सम्बद्धारा र च्यूपमानतः । ति प १ १३१

६ जन्मी चपरवाची आवाताना नवदरविदा। ति य १ १ पण्टम (स्युटाओ द्वाद्वरा रि सन्तरहच्या १ दर्भ १ दर्भ १ द

 [ि] प १ ९६ नि ता ९६ पानाप्रवस्य ताराप्रवस्य व साम्य गि.
 प १, ६६-१६० त नि ६ ६८ त ता वा २०, ६८ अद्धानस्ताम निव इ.स. १६०० च नि ६ ६८ त ता वा २०, ६८ अद्धानस्ताम निव इ.स. ११००० च प्रवस्थायस्यात इ.स. अवस्यदानित वात्रस्वातार्गातार्थ्यस्व

of 3. 14 children of d

६दि एत्य प्रानीयगाहणादो ! जदि एमो लेगो घेप्पदि, तो पादव्याहास्त्रागासस्य गहण प पावदे । युदे ! तमिह मन्तरज्ञुपणपमाणमेचरानस्याभागा ! भावे वा —

हेड्डा गाँत उपरि वेचातम हार्क मुरामित्रो । मिन्मिन प्रोण य चोरमगुरमान्य, रोगों ॥ ६ ॥ रोगों अक्किसे राग्न जनारिमस्मे सहायोग का ॥ जोग्यानेडि प्रश्ने निच्चा तरहमम्बराणों ॥ ७॥ रोगसा य विग्वमा चारमायो य होइ न्याम्ये ॥ १॥

इस गाधामें जो सोशका प्रदूष किया गया है उससे अला आना है कि यहांपर सात राचेंच क्षत्रमाण लोकका प्रदूष समीद है।

हृद्धा — यदि यहावर इली घनलेण्या तहल विया जाता है, तो वाब ह्रायोंने आधारभूत आबारावा प्रहुण मधी प्राप्त होता है। क्योंकि, उस लोकों सातः रायुके धनप्रधानवाले होत्रका समाव है। और, यदि सञ्जाव साना जावे तो---

नीचे वेत्रासन (वेतरे सूना) वे समान, अप्तर्धे झहारीके समान, भीर द्वपर सूराने समान मानारवाला, तथा अध्यमविश्वारने भर्धान् एक रामुखे चौरह गुण्य भागत (त्रवा) लोग है ह ह ह

यर रोक निध्यम अहातिय हा अनाहि निधार है, खनावसे निर्धित है, कीव और अभीव हच्योंसे स्वास्त्र है निध्य है, तथा तालकुछारे अवार जार है है ७ व

होहबा विष्याम (बिरू र) बार प्रवास्त है वेसा जानता वारिये। विसमेंस अधे हाबके सन्तमें सात राषु सध्यमलाक्त वास वर राजु स्रहालेक्क पान पात्र राजु और क्रायलके भनमें वह र जुनवसार जानता चाहिय ॥ ८॥

हरी पुण्यत्या ६ वर्गा तरवाराण पुरस्त ज्ञा कि गाँव । नः श्राण्यदाण ुष्यानको ३० स्थाप्त । अस्तरताल व्हाणी वहील व्यवस्थात्त स्वयद्वार पृत्य विश्वयत्त प्रश्लापकाण्यस्यक का प्रदातिका । प्रतासन कार्यक्र वा प्रथमान्य । भागां वा भागां जो गणां वहार प्रश्लापक कर्म त वृह्मप्रमुख्य वा संस्थारी सम्मेणां त्रारंता व इ

। प्राप्त श्राप्तस्थलाका इत्ते व १ १ १ इ

इ. ति. स. स.च. च पुथ्यरणे सम्बाद्धाः स्वास्थाः सम्बन्धः । अ. अ.च. वृक्षः । १ ०



एदाओ सुत्तगाहाओ अप्यमाणत पानिति ति ?

एत्य परिहासे जुन्दे । ज्यं कोर्ग वि उत्ते पनद्याहारआगामस्म गहण, प अणास्स । 'लोगप्रणादो केन्स्री केन्द्रि रोत्ते, सन्तर्लगे ' इदि त्रवणारो । विद लग सचरज्ञुपणपमाणो ण' होदि तो 'लोगप्रणादो केन्द्री लोगिस समेज्ञद मांगे ' हि भणेज । ण च अण्णादियपस्तित्वपृद्धित्यायारलोगस्म पमाणम पेनिराउण सर्वेदनियागव मिद्र, गणिज्जमाणे वहेनलमादो । त जहा— मुद्रिगायारलोगस्म मह वोद्सरज्जनद एगरज्जितस्य म वह लोगोदो जनणिय पुत्र हुनेद्दर्भ । एन टिनिय तस्म फराणपा विहाण भणिस्सामो । त जहा— एदस्य मुद्रविरियादस्म प्राागासपरेमनाहरूम्म परित्र एतियो होदि हैर्दर्भ । अगल्य आगमिष्टामो विहाण स्मादेख प्राप्ति होदि हैर्दर्भ । अगल्य आगमिष्टामो विहाण स्मादि रज्जृहि गुणिदे राज्यक्रमंत्रिय होदि भैन्दर्भ । प्राण्यक्रमंत्रिय होदि भैन्दर्भ । प्राण्यक्रमंत्रिय होदि भैन्दर्भ । प्राण्यक्रमंत्रिय होदि भैन्दर्भ । प्राण्यक्रमंत्रिय होदि भौन्दर्भ । प्राण्यक्रमंत्रिय होद्य होद्य प्राण्यक्रमंत्रिय होद्य प्राण्यक्रमंत्रिय होद्य होद्य होद्य होद्य होद्य प्राण्यक्रमंत्रिय होद्य होद्य होद्य होद्य होद्य होद्य होद्य होद्य होत्य होद्य प्राण्यक्रमंत्र होद्य होद्य होद्य होद्य होद्य होद्य होद्य होत्य होद्य होद्य होद्य होद्य होद्य होद्य होद्य होद्य होद्य होत्य होद्य होद

ये जपर कही गई स्नगायार्य अप्रमाणताको प्राप्त होती हैं है

समाधान अब यहा ऊपरकी शकाका परिदार कहते है। इस प्रष्टत धुमें ' लोक ' पेसा पद कहनेपर पाच द्रव्योंके आधारभूत आकाशका ही प्रहण किया है, अप नहीं, प्योंकि, 'रोकपूरणसमुदातगत केयली किनने क्षेत्रमें रहते हैं। सब रोक्में रहते हैं। इसम्मारका स्वयसम है। यदि छोक सात राजुके घनममाण नहीं है, तो 'लोकपुरणसमुद्रानमा वेपली लोकके सक्यातर्वे भागमें रहते हे रसमकार कहना चाहिय। श्रीर अप शामा कारा भक्षित मुद्गाकार छोक्के प्रमणको देखकर अधात उसकी अवेहाले, लेकपूर समुदातगन वेचलीका धनलोकके सक्यातवें भागमें रहना मसिद्ध भी नहीं है, क्योंकि, तानी करनेपर मुद्रगाकार छोक्का प्रमाण धनछोक्के श्रूरणत् मारा पाया जाता है। यह सम्प्रा है— चीर्ह शानुप्रमाण आयत, एक राजुषमाण विस्तृत और गोल आशारवारी, वेमी मृद्गाकार शेककी स्वीको लोकके मध्यसे निकाल करके प्रथक स्थापन करना बाहिये। इसप्रकारमे स्थापित करके अब उसी पर अर्थात् धनकारको निकारनेका विधान कहते हैं। वर रमधकार है- मुखमें तियक्रपसे गोल और माकादाके एक प्रदेशप्रमाण बाहस्ववारी है पूर्णील स्प्रीकी परिधि हैं। इतनी होती है। (देखो आगे गाथा न १४) इस परिषे प्रमानको साधा करके, पुना उसे एक राजुविष्करमुके बाधेसे गुणा करनेपर, उसके सेवान का प्रमाण है, है इतना दोता है। अब हमें रोक के अधीमांगक। घनफ र राता इर है, इसिंडरे इस क्षेत्रकृष्टको सात राजुर्मीने गुणा करने घर सात राजुपमाण स्वयो भीर पक राजुपमा बीर्श उक्त गोलम् शंका धनपन करेंदे हतना होता है। फिर मुचीरहित चीरह राउँ होरे ष्टीकरप क्षेत्रके मध्यक्षोक्के पासस वा संद करके उनमेंसे नांचेके सथान सघी नांक्सार श

संद्रको प्रद्रण कर उसे (यह आरक्षे) ऊत्तरके (ज्ञाकर सीचेतक) काल्कर प्रवारत पर सूत्र (सुरा) के साकारपाला क्षेत्र हैं। जाना है।

दर न्योवार शबने गुणवा विकास [१६] दलवा है, और लज्बा विकास १.15 राजुमाण है। दसे मुस्सिक्तारों ह अर्थान मुख्यिकारों अस्पते स्थापन इस्से अस्प है सम् राजु स्थापन विवर्ष और छेड़नेवर हो। विवास क्षेत्र और वहा अय्यवसुरुद्धारण इस्सारा सीन होत्र हो जाते हैं।

यम प्रवास्थे वने दुल हम ताम श्रीहित यहत आदातवानुष्य आव वय प्रध्यक्षी होत्रवा प्रमाण विद्यान है। इस आधातवानुष्य होत्रवा अस्य (दैलाई। साम राष्ट्र है और विष्य मा है। इसमें वाह्न है। इसमें यह प्रवास वाह्म है। इसमें वाह्न है। इसमें यह प्रवास वाह्म वाह्म है। इसमें वाह्म वाह्

संद दाय का हा देवकांण शत ह से सात र है रुव्य है और वास है सर्व्य र र र राष्ट्रको स्वादम कर दनमें रह स्वस्थातील च्या का वाद से देव स्वयं स्वयं र रूप

tweek the sit and a sea s

एमरज्ज सहिष नत्य अहेनालीमसहरूमित्र पारञ्जुनाणि मुनरोहिषाश्री महणाम क्षणोमुमीए आलिहिय दोसु नि दिमासु मन्त्रीम्म कालिद निष्णि निर्णि मैताणि हाँनि। तत्य दो सेनाणि अहुहुरुजुरमेहाणि छानीमुक्त निर्णि निर्णि मैताणि हाँनि। तत्य दो सेनाणि अहुहुरुजुरमेहाणि छानीमुक्त निर्मित्र नामग्रीहुमरोणि निर्मित्र उत्तरम्भ मारिदेषण्यनास्त्र निर्मित्र निर्मित्य निर्मित्य निर्मित्र निर्मित्य निर्मित्य निर्मित्य निर्मित्य निर्मित्य निर्मित्य निर्मि

मघोषिस्तार ९६६ है। इसी विस्तारको यहा त्रिकोण शेवका अपेक्षांम 'सुझा' बहारी। तथा उन दोनों निकोण सेनोंका सुना और केटिके यथायोग्य समनित कर्णका प्रमान है। ए दोनों त्रिकोण सेनोंको कणसूमिस लेकर दोनों ही दिशाओं में पापमेंसे काटनेपर तीन वन सेम हो जाते हैं।

रिरोपार्थ - यहापर भिनोण क्षेत्रचे सुझा और कोटिका प्रमाण तो दिया है। ए कोना प्रमाण नहीं दिया है। उसने निकालनेकी अध्यया यह है कि सुझाने प्रमाणका की और कोटिके प्रमाणका वर्ग जितना हो, उन्हें जोवकर उसका वर्गमूल निकालना चाहिये हैं वर्गमुलका प्रमाण करें। कर्म

वर्गमुल्का प्रमाण कार्य, यही वर्णरेशांका प्रमाण समझता वाहिया ।
यह प्रकारने उत्पत्र कुर इन कील तील क्षेत्रों पर एक आपनवातुरक्षेत्र के ।
यह प्रकारने उत्पत्र कुर इन कील तील क्षेत्रों पर एक आपनवातुरक्षके के ।
यह प्रकारने उत्पत्र कुर इन कील तील क्षेत्रों एक एक आपनवातुरक्षके के ।
या देनों कोर की विध्यानवात्त्र कार्य है। उत्पत्त स्वत्य का लाव होता राजु उन्नेस है। उत्पत्त वेत्र वेत्र के । यह जिल्ला के । यह कार्य के अपनि कार राजु अपनि है। अपनि वेत्र के ।
या विद्यान कि अपने दिश्य प्रकार है। तथा वृक्षिण और वाम (तृत्व वाले) अपनान केल पर्वत विद्यान केल विद्यान केल

र शनित्र करन- " क्षति पार । " देश बादूब स्थान तरक्षति चाँ दिकातत बहु । य्याय बनुष्ये ता ता कोरे कार्तित तसी विवारी बार्त्यदे कम । कीट्यन श उेल्पेसु चनारि आयदनउरमरोत्ताणि अह निकाणग्रचाणि च हाँनि l पन्य चरुण्ह-मायदचउरमखेचा" परु पुन्तित्नदेश्येचफलम्म चउन्मागमच होति । चदुमु वि समसु ग्रहन्लानिरोहेण एगद्व वरेंगु तिक्षिरज्ञुनहरूल, पुन्निन्लग्वेचीनस्यमायामहितो अदमेच रेक्सभायामयमाणग्यसुरुकभादो । क्रियह चहुण्ड पि बिलिदाण विण्णि स्टब्राहरूक रै हिन्तररामित्राहल्लादो सपहियस्यवाणमद्भैतवाहल्ल होर्ण तद्ग्येह पेक्सिर्म अद मेतुम्मेहद्दमणादो । मपहि मेमञहूचेचाणि पुष्य व यटिय राथ सोलम निरीणगराति मणतरादीदरेवनाणमुस्वेहादो विस्तरमाने बाहल्लादो च मद्रमेनाणि अवणिय महुण्ह मायद्चउरमरेवताण कलमणतराहकतादुर्वेचफ्रस्य चर्डमारामेच हादि। एउ मीलम क्विम चरमहिशादिरमेण आयदचरसँगेनाणि पुन्तिन्तरेगतकरारी चरमागमव रुलाणि होर्ण गच्छति जान अनिभागपति छेर पत्र ति । एवसुप्रणामेमस्येगस्येगर

पदराडेहि सादिरेय उत्तारिरज्जुभुचाणि कर्णोक्गेके आत्रिहिय दोसु वि पामेसु मन्त्रीम्म

४३६६ राजु प्रमाण भुजायारे हैं। उस क्रिकेशक्त समावद दोनों ही पादवसागोंने वीचने छिन्न ररनेपर चार भाषतानुश्यक्षेत्र भीर वाट विवाण कि हो जाने हैं।

पदापर चारी है। मायतसन्तरहा क्षेत्रीया धनपार पहारके होनी अ यनसन्तरहा क्षेत्रीय मनपर के चतुधमाम मात्र होता है, क्वोंकि, खारी ही क्षेत्रीकी बाह जर्क अधिरोधने प्रकार करमपर भथान् यथात्रमाने विवर्धात कर उल्हा राजे वर तीन कानु बादका और वहलेक क्षेत्रक विष्यवस भीर आयामले अधमात्र विष्यवस अ र आयाम प्रमाणवाणा क्षत्र धावा जाता है।

श्वरा - इन बार मायनवन्तरत्र क्षेत्रींचे मिलाने घर तान नाह बाहरव बेसे हाना है! समाधान -- पर्योवि, यहणे बताये हुये बायतचनुः हा अवन बाहस्यते इत सम्रच भागतचतुरस्त क्षेत्रोंका बाहस्य बाचा ही है। और पहल्के उत्तक व केचकी को शा अबक (नवा पासेच भी शाधा हा दिलाई देता है।

अब दाप रदे माठ जियोग देखींबी पूर्वत स्वमान हा अन्ति बरनेगर उनमें शारह विकीणरीय शीर बाट आयतचनुः ग्रास्त्र ही जाते हैं।

पट्टण बताय रावं शार बायतवातुरस्य क्षत्रीं वा अध्यास । वरवाश्रस अ र व हुण्डल मध्यम्यात रिकारकार आरा ही बावसाउनुसन्य क्षात्रींडा प्रसार में या वसाय गय खार आरम् वर्षेत्र क्षेत्राव वर्षण्य वर्षेत्र मारामात्र क्षामा है। वर्षावदार साण्ड कमान वरस्ट मादिवास्ते साम्यस्यत्रस्याच ग्रहते प्रश्नकं च वश्यान्रस्यक्षकं चन्यतं व सम्बं सामाधाः प्रमुप्तरप्रात हात हुए स्व तक कर आयेंग जबतर ।व अवस्थान छन् अधान यह प्रदाल (प्रदेश) मही प्रा न हा गायमा। इसप्रक स्था हा स्था है समस्य क्षणोक घनफानक जा करवा

वणरिहाण पुरुषटे । त जहा- सायसेनक्टाटी चाउगुपक्षेत्र परिद्वाति वि कृत्य तत्य अतिमसेनक्षत्र चाउढि गुनिय स्पृत काउटा गिगुनिस्टेटेन औरहिंट एति । व ६५१११ । अपेलोनस्स सायसेनक्ष्मसमा १०० (१११ ।

सपित उहुजागरेवक जमाणेमा । तत्र प्र[®]ग्वेवक जुन्निहाणेग आर्गि गृषि होड ५३३१ । मपित उन्निमस्ट पचान्द्रतिकासुरेग गडिय' तत्र गमस्ड पुत्र इति मन्द्राम्मि मेमपाड उहु फालिय पमाग्दि गुप्पनेग होदि । तस्म मुहति यागे गवित्रोहारी हैर्री । तस्तित्थागे गपित्रो होदि १५९५ । मुहस्मि प्नागामवाहाई, तस्तिम प्रशा माणमन्द्राम्मि वेरन्द्रवाहन्स, पुणा कमहाणीय गन्न हेट्टिमनेहाणेमु प्यागामवाहन होदि । प्रस्मि गोष्टे मुहतिस्यारिक्समेण स्विडिट होण्यि निरोगसेवाणि गमावद

विभाग कहते है। यह इसमकार ई-सभी क्षेत्रों का धनवान खनुर्मु जितक ममे अवस्थित है, स्तरिष् उनमें अनितम क्षेत्रफलको चारसे गुणा करके और चारमेंसे यक कम अर्थान् तीनने आग के पर धनकान ६५ रेहेंबेर्ट इत मा होता है। और अधीलोक के सभी क्षेत्रों का धनका १०६१ रेटें होता है।

भव चारों भोरसे मुद्रमानार ऊपयरोनक्ष्य क्षेत्रना वनस्य निहातते हैं। उन्ने पक राजु खोंहे, सान राजु रुग्वे और गोर आनारवारों स्वीक्ष्य क्षेत्रना वनस्य पढ़ि आ लोनमं नहें गये विधानसे निकारनेवर ५३% राजु दतना होता है। (इस स्वान) उर्वे रोज ने क्षेत्र के प्रथमागति निकारनेवर ५३% राजु दतना होता है। (इस स्वान) उर्वे रोजक प्रथमागति निकारनेवर पुषक् स्वापन कर देना चाहिया) अब रोजको प्रयोगित काहापर एवं प्रमाण वहरें हुए वे उन्नोनेवर काहापर रोवे प्रमाण वहरें हुए वहरू काहापर एवं प्रमाण कर सामे एवं काहार्य रोज काहापर एवं प्रमाण कर सामे प्रथम काहार्य राजको प्रथम काहार्य राजको प्रथम काहार्य राजको प्रथम काहार्य राजको है। उन्ने प्रथम काहार्य राजको हो। उन्ने प्रथम काहार्य राजको स्वापन काहार्य है। इस स्वीक्ष स्वापन स्वपन स्वापन स्वापन

इति पार ।

१ म प्रती 'चउ 'इत्विप पाठ 1

२ संप्रता 'उनस्विषयनद्भवन-', 'उनस्विषयम पद्म-' अ-जा-क प्रतिषु 'उनस्विषद्भ^द ' । १ स २ प्रती 'स्विष्य' इति पाठ ।

र च र श्राः चादव ″ इति पाठ ४ व व यो " वादिख " इति पाठ ≀

व्यवस्थानम् कानपनागपक्षण रसम्बन् प देर्ग । आयद्यवर्गसञ्जेनसम् अद्वदुरुजुदीहरम् सादिरेपतिष्णिरञ्जुविनर्छ प तलम्म वे रज्यु मुहन्मि एगागामबाहन्त्रस्य फलमायेमी । व जहा- विवसंभेणुस्तेहं उण ओवेरेणेगरन्त्रणा गुणिदे मन्मिल्लक्षेत्रफले होह । तस्य पमाणमेद १९३१रे।' सेस तेकोणखेषाणि अददरज्ञुस्तेहाणि एगरज्ञु तेरसुषरसदेण श्रंहिय वत्त्र वचीसखदन्महिय न्त्रविषरंत्रमाणि पुच्च व मञ्जानिम स्रद्विय तत्युप्पण्णाणि चर्चारि विकोणसेन्।णि गरिय देण्हमायदचउरसरोत्राण पाऊणदोरञ्जेरसेहाण सेरसुत्तरसदेण एगरेज्जं संहिय । सीलसराहरमहिय तिब्धिराज्ञिवक्समाथ दो एक सुब्धेशनज्ञेवाहँस्लाण फेल-भो । स जहा- एगखेषस्मुदरि विदियक्षेच विवज्जास काऊण इविदे वेरज्जुवाहरूमेग होर । पुणी विक्ससुसमेहाम सवगर्ग काऊण जीवेहेण ग्रुणिट सेचफल होदि । तस्त है। जाते हैं । उनमेंसे पहते भागतवनुरस्त रेजका जो खाड़े तीन राजु सम्बाहै, तीन ते द्वार विषक वर्षात् १ 👯 राज्य बीहा है, तल्ये हो राज्यें वीर मुलमें ऐक मांकारा ह प्रमाण मोटा है, देले वंस बायतचतुरका क्षेत्रका चनफल निकालते हैं । यह इसप्रकार - विष्कम्म हैं है के उरतेथ हैं की गुजाकर चुनः वसे मोटाईके प्रमाण वर्क राजुले गुजा र पर मध्यम सर्याद् आयतंबतुरस्र क्षेत्रका यनफर्ल मा जाता है । वसम्बर् प्राप्तीर्ण 🗴 रें 🗡 रें = १११११ शतना होता है। दीय जी दो विकोण देख है, जी कि साहे तीन

इंदे तथा यह राजुरी पर्श सी तेरहसे कहित कर उनमें बतीस बहसे मधिक सह राजु ति दे हैं हैं। यात की है हैं, उन्हें पहले है समान ही मुख्यमेंसे काइस कर उनमें उत्पन्न हुए विकोण क्षेत्रीको हुर रक्त कर दोनी मायतबतुरका क्षेत्रीका, जो कि पीने वो राख्न उत्पादवार्छ, प्रसी तेरहते यह राजुने। कटित कर उनमें शोशह कहाँसे मांघक तीन राजु मधात ुराञ्च प्रमाण चीहे, तथा मगरा हो, एक, शुप और एक राह्य मेटे हैं, उनके हरको निवारते हैं। विद्यापार्थ- यहा पर जो आयतवतुरकाक्षेत्रकी ओटाई क्रमशा दी, एक, शून्य और

यह दश्यार है- एक मायत्वानुस्राक्षणक अपर दूसरे भागतचनुरस्रक्षणको उत्तरा रक्षते पर दो राजुकी मोटाईवाला एक शत्र हो जाता है। पुता विष्करम भीर उत्सेधका मधान परस्पर गुणन करके थानते गुणा करने पर उक्त क्षेत्रका धनफल होता है. इ.स. शत्या १११ वृति पाठा । र मातेत कायुष्पण्या ⁹ पवि पात ।

शाहु प्रमाण कही है, उसका कशियाय यह है कि ब्रह्मणेकके वासवाले सीतरी भागकी इ दो राजु है। उसीके बाइरी मागरी मोटाई यह राजु है। वर्णरेखत्याले क्षेत्रकी मोटाई

। या एक प्रदेश है और कोटिरेकांके मानवाले ऊपनी क्षेत्रकी मोटाइ एक राजु है।

पमाणमेद १०६११ । पुणो सेमा उण्ड रोताण फरनेद्रम न्यासामेन होति। अण्याम् स्वाम, अधोलोवपर गणाण पर निर्वादो । जेणे मा प्रान्तकरणाण अण्यामस्त्रकरणा चडन्मायमे वादि होति १०६४ । वेण तेमि फले एत्य मेलानिद एतिय होति १०६४ । राष्ट्रक्त स्वेचस्य सन्यक्त्रमामो एति शे हिंद ५८६५ । उड्डाचित्रामेनकर यमामा एति शे हिंद ५८६५ । उड्डाचित्रामेनकर यमामा एति होति १६६६ । उद्योगितामेनकर यमामा एति होति १६६६ । व्याप्त प्राप्त प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त । एत्र प्राप्त प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त

निर्देषार्थ — कार्यनोकका यह चनकल इसम्मार माता है — कार का प्रण यतलाया गया है, यह प्रमाण कार्यनोकके विमाल किये गये हो भागोंमेंने एक भागका इसलिय होगी लड़ीका धनकल लावेके लिय आधनसतुरस्रक्षेत्रक धनकलको हुना किया, है १९११ २१ = २९११६ हुमा। तथा विकोणक्षेत्रीका भी धनकल हुना किया, हर १९१६ १ = १९१६ हुमा। इसवकार कार्यलोककी स्वीका, सायतसनुरक्ष और निकाल सेंग

समस्त पनफल जे व देने पर १३८१ + २२१११ + २०११५ = ५८_१४९ होता है । कर्मलेश और मधोलोकश पनफल जोव देनेपर १०६११४१-१८१४९ व्य

इतना प्रमाण होता है। इनटिए अप आधार्योके हारा माना हुणा रोक धनरोक्के सर्थार भागप्रमाण सिद्ध हुआ। और, इस रोकके अतिरिच सात राजुके धनप्रमाण होकसक अ कोर केंद्र देन हीं, जिससे कि प्रमाणनोक छह उच्चोंके समुद्रायकपरोक्के क्षिप्र माना जा और क टोकावारा तथा अराकाकावार, इन दोनोंसे हा स्थित सात राजुके धनमात्र आधा प्रदेशोंके प्रमाणका धनरोकसबा है वर्षोंकि, ऐसा माननेपर टोकसबाके यादिएएउपने प्रसाग प्रान होता है।

परा - यदि रोक्सवाको याराज्यक्यनेका प्रसन प्राप्त होता है तो हो आयी ! समाघान -- नहीं, क्योंकि, सपूर्ण याकारा, अध्येणी, अगमतर और धनटोक, !

१ स १ प्रती ७३ स २ प्रता ६७ इति पाठ । १३६६ १३५६

र 'मानर्चः च च इति स्थान कश्ली मानव सक्यवयू, आरंगिरी भागव सक्य । '~बार्ग्यचं व 'वृति पादः।

तस्ता प्रमाणकामा छट्ट्यसभूद्रवकामादा आसावपद्रवाणणाय समाया वि पच्छा । क्य होगो (विंडज्ञमाणो सच्छत्र्यणपमाणो होज १ वुच्चेर्- होगो णाम सन्दातास मज्जरयो पोस्तरञ्जापामी होज्ञ वि दिससा मुळ्ड तिश्ण पडम्माग चरिनेतु संवेक पचेक्साज्जरो, सम्बन्ध सवरञ्जवाहरूला विंडु हाणीहि हिददिषेरतो', चोहसरज्ज्ञपाद

सभी सद्मार्थीको भी यादांच्छकपनेका प्रसम भाजायमा।

कृतरी बात यह है कि "प्रतरसमुद्धातगत केपली वितने क्षेत्रमें रहते हैं! लोकके समस्यातये मागले स्थून सर्थ लोकमें रहते हैं। लोकके ससस्यातये मागले स्थून सर्थ लोकमा प्रमाण करणलीकि कुछ कम सीसिर मागले मध्य में उन्देशनियमाण है। 'इस्तमार करणलीकि मागले का द्वापाला कि स्थापाल केपले कि स्थापाल केपले स्थापाल स्थापा

विद्यापार्थ— यहां पर प्रतरसमुद्धातयन केवरों के सेववा प्रमाण जो उत्पष्टीकच्छे स्वेद्रेश प्रोत्ता के विद्यापार्थ के उत्प्रशेकच्छे स्वेद्रेश होता है उत्प्रश मानित्रय वह है कि उत्पर्शक्त समाण १४० पनरापु है वह दून वह नेते र १४० पनरापु हू हू । इसमें १४० वा प्रमाण ४५ प्रनरापु के जाब देनेपर १४३ पनरापु होते हैं जो कि प्रनर्शक हाम होता करें है। प्रतरसमुद्धातमा केवरी होता के देनपर १४३ पनरापु होते हैं जो कि प्रनर्शक होता कर्यू है। स्वारसमुद्धातमा केवरी होता होता कर होता कर्यू होता कर होता होता कर होता होता है।

इसल्चि, उनजनारके प्रमाणलोन और हम्यलोनने एक सिख हो जानेपर, प्रमाण छोक छह द्रव्योंके समुरायवाले लोन से आनाशके प्रदेशगणनामः व्यवसा समान है, पैसा मर्थ सीनार करना चाडिये।

श्वक्रा — विंडक्रपसे यक्त्रित वरनेपर, अर्थात् धनकप क्या गया, यह शेक साथ राष्ट्रके प्रतक्षमाण क्से हो जाता है।

समाधान—उत्त दांबावा उत्तर करते है— जो सब्दे आबादाके मध्य मागमें स्थित है, बीहद राजु आयामशावा है, दोनों दिसाओंच अर्थात वृद्ध और प्रेक्षम दिसाने मूल, स्थलान दिश्वतुमीन और वारमागामें यशामकत सात पड़, यात्र और एक राजु दिस्तार पात्र है, तथा सर्वत्र कात राजु में दा है, बुद्धि और द्वानिक द्वारा क्रिक्ते दोनों मान्तप्राग

१ स प्रति । शारी असलक्ष्मिदिमाश्च । इति वादः । २ उद्दर्दक वादाम वाल प्रमाशन भूनिमुद्दे। ब्लेटवय युक्त व वृश्युय क्रीन्ड्डालेचय साथ हा १९१

रज्यामामुद्दरोगणातिमन्द्रमो'। एमी पिटिअमाणो मचग्ज्युगणपमाणी होते। बटि हन् परितो व भेपपिद तो परमादके उलियोचमाहणह उत्त है। माहाआ जिसी उमाश हर तस्य पुचक्तस्य अष्णहा समनामाना । कात्री तानी दो गाहात्री नि पूर्व गुच्य-मुहत्त्रसमाम-अह बुम्मेग्युग गुग च रोग ।

घणगणित्र नामै-मं उत्तासमसित्रे सन्'॥९॥

स्थित है, चौन्ह राजु टम्बी एक राजुके वर्गत्रमान मुक्तानी लोकनाली जिसके गर्मी है एक यह पिंडरूप किया गया ठोक सात राजुक धनममाण संयान ७ x ७ x ७ = ३३३ राजु हा

विद्येषाध्य निक्षा उपयुक्त विमार हमबकार है - की ह सर्व अन्तराहि है -स्थित है। उसका श्रायाम कीहर राहु है। पूर्व रक्षिम तल्माम सान राहु हो है। स्पात सात रात्र करर अन्य भवता प्रभाव तरभाग सात रात्र साथ हा देव साव साम साम सात रात्र साथ हा देव रातु करार जाहर क्रमलोहमें पात्र रातु, और पूरे बीर्देद रातु करार जाहर लोहड़े कार्यर पेंचु कार जार कार कार कार कार पंजा कार पूर वादद राजु कार जार र हार कार कार जार र हो जार कार जार र हो । इसकार के पारण ५० पाउ १४८०१६ व १ छ। र र १ उपर दास्त्य । उत्तर सथन मात राजु ह । १००००० छोरको बीच एक राजु बोही सतुरहोण और बाहह राजु करी त्रमनादी है। पूर्वनाविन सार्व होंक घटनाइ विलारनाला है। इसमकार होक साम राजुके सनममाण हाता है।

यदि इसमङ्ख्या शेक प्रदूष मही किया जायमा, तो वनसमुद्रानमत हेरहाँ सेवक कापनार्थ कही गई दो गायार्थ निर्द्यक हो जायेंगी, क्योंकि, उन गायार्थीमें बहा गर् धनकछ छोक्रो भाग प्रकारसे माननेवर सम्रव नहीं है।

ममापान-पेसी दांका करनेपर कहते है-

मुक्तमाम भीर तहमामहे भमाणही ओडकर माधा करो, पुत्र उसे उस्सेयस ग्र हते, पुत्र मेहार्स गुणा करो। ऐसा करनेपर बेगासन आकारसे स्थित प्रयोगीकरण सेवा

निर्मार्थ — येपासन बाहारवाले बाग्नेलोहके मुखानेलारका प्रमाण दह रातु है हर तम्प्रिकारम् अभागः स्थानः अवश्वारवारः वाधाद्याम् मुखा स्थारमः प्रमाण यर स्थः । तम्प्रिकारमः प्रमाणः सातः राजु है । इन दोगोंको जोकृतेपर बाद हुए । उसे बाया पर व्याप्त वरावरणारमा अभाज सात राजु है। इन बानामा जोड़नेपर बाट हुए। उसे आधा म्हण्या मधोरोममी उत्तरिक प्रमाण सात राजुने गुणा करनेपर बहुत्सा हुए। इस सम्बद्धी १९९० मार्च करा । तर्ज करानेपर व्यक्तिस हुए। इस सम्बद्धी ह्या से सम्बद्धी हैं। प्रदेश पहीं क्योठोक्ता समस्त है। असे-०+१=४८०० असर प्रसार करनपर प्रसार करनपर प्रसार करनपर प्रसार करनपर प्रसार करन

[,] हारबहुत्वकृते दश्य नार र । हरण्युण हे चारबरव्यसंग तेववार्तः होणे द्वववादाहृति बारस्य दे बाद राजवत्तरत् स्था व बहुत्राष्ट्रदेवद्वाराहर् । होत् महत्त्रदेश सम्ब बन्यावाचा हु होति सा ।

t

मून मानेण गुण ्रसिटिइस्मुन्ने । स्रिगुणिद । इणगणिद जाणग्जा मुसगस्रागस्तानिही ॥ १० ॥

ण च पदम्ब कोमस्स पदमगाहाए सह निरोहो, एमदिसाए बेचासण प्रस्तिमत्ठाण दसमादो । ण च पर्य अल्तरीयदाण करिय, मज्यगिह सयद्वामणाद्दिएरिम्सियदेरेसण चदमहरूमित्र ममतदो असरीजनजोपणहरेख जोपणक्षस्याहरूलेण अल्तरीसमाणमादो । ण च रिद्वतो दारिहरिष्ण मन्त्रस्य ममाणा, दोण्ह वि अभावप्यसगादो । ण च शक्त स्वामठाणमेन्यं ण समाद, एगदिमाय सालरस्यमठाणदश्यादो । ण च सद्याण गाहाण्

मूल हे प्रमाणको अध्यक प्रमाणको गुणा करो, पुता मुलकद्वित कार्य भागको स्वसेपको इति सधान् पानि गुणा वरे। । येला करनेपर मुद्दगके माकारयाने शक्तें शक्त प्रमुख जानना च दिये। १०॥

दिगेषार्थ— क्रथलोक, बीवमं मोटा और जयर गाँवे सन्दृष्ट होनेसे सूक्ष्मादारहेन बहुताता है। इस सूक्ष्मादार क्राप्तिकां मुल्यामादास्त्राची विस्ताद वह दानुसे प्रध्यतात्री विस्ताद वाब राजुले ग्राणा बरनेवार १×५ = ५ दुर । उसमें मुलावेखतार यह राजुले जोड़कर ५+१ = ६ मामा बरनेवार ६ - २ = ३ रहे। इसे क्रवाई वासके वर्गते ७ ४ ७ = ६५ ग्रुणा बरनेवार ४० × ३ = १५० हुए। यहा पत्रकी संतालीस राजु क्रव्यलेक्कार धनकल है। स्यादार मार्पोलेंक भीर क्राक्लिक वाक्ललोको जोड़ देनेवार १९६+१४० = ३४६ तीनसी तैतालीस राजुलाई शीर क्रवालक होता है।

भीर, उस प्रशास्त्रे एस लोग्डा 'हैहा मान्ने उसरि वेसामक सम्मां प्राणिका भीर स्थादि एम प्रथम माणा ने माध भी विभोज नहीं है, क्यों ने, यह दिगामें वेसाहन भीर स्थादि एम प्रथम माणा ने माध भी विभोज नहीं है, क्यों ने, यह दिगामें वेसाहन माणा हुए स्थादि है, त्या माणा हुए स्थादि एम प्रभाव प्रशास के स्थाद माणा हुए स्थाद प्रशास के स्थाद माणा हुए से स्थाद स्थाद के स्थाद माणा हुए से स्थाद स्थाद स्थाद के स्थाद माणा हुए से स्थाद स्था

^{1 2 4 9 4}K 1

६ पूर्व दश्य राग राग्य स्था सहय उदा वि । वश्यक्षात्म सङ्घी सुदिशनतत्वविभाशो ह उत्तर दिखर पुरे सहात (द्विकाणिस्रात्तरेश) । जहार बुक्तिसिस्रीता आध्यक स्वदस्यविभा ॥ असू पा प्राप्त

इ.स.ब.सा. सस्तहा ^{*} शति पात ३ ४ मातेषु ~मल ६ति पात ३

सह विरोहो, एरच वि दोसु दिमासु चउन्तिहोत्रस्वामटमणादो । ण च मचन्त्रसहर करणाणिश्रोससुचितिरह, तस्य तच विचिष्पहिमेघामात्रारो । तम्हा एनिसो वेत हमे ति चेचच्या ।

पत्य चोदमी मणिह- क्यमणता जीता अममेज्यवदेतिए होए अस्ति। अर्थ प्रकृति आगामपदेते एक्की चेत्र जीती अस्ति होते अमसेज्य नीवाण यत्ती होते अपेति जीताणमहोने अच्छण पोति, तेतिममाती ता। ण च तिनिममाती अति, अणता जीता । ल च तिनिममाती अति, अणता जीता । ल च लेतिममाती जीति, अणता जीता । ल च लेतिममाती जीति माणिह स्ति होताहोगितिहापस्स अमावादचीहा। ण च एतातामपटने एगी जीती अस्ति । प्रतिविद्यादेश । विदेशालेविद्यादेश । विदेश । विदेशालेविद्यादेश । विदेश । विदेशालेविद्यादेश । विदेश । व

परय परिहारी बुच्चडे- णेड घडदे, पीम्मलाण पि अमलेजनवर सगाडी। क्ष

तीसरी नायाके साथ मी विशेष नहीं भाता है, क्योंकि, यहांवर भी पूर्व और विश्वन हों होनों हा दिसामोंमें नायोज खारों ही जकारके विषक्त में जाते हैं। तथा छोड़के उन्हें दिस्तामानमें सर्पय सात शहुन यहत्व भी क्याच्यायान्त्र हो दिख्य नहीं है, क्योंकि, करणातुयोगस्व में सात राजुके बाहत्व के विधान य जित्येषण बसाय है। इमिट्टर मार्ब कहे तद आवारपाल ही शाह है, पेसा स्योकार करना व्याहिए।

कहे तर आवारपाठा ही लाव है, पेला स्थावार करता चाहिए।

मुक्का—पढ़िंपर प्रावावार कहता है कि सहस्यात अनुरामि छोवमें सनल सक्व याठे जीय कैले रह सकते हैं। यदि एक जावारके अनुरामि एक ही औय रहे, तो माँ की शोवमें समस्वयात आयोगी रिथानी होकर स्थानिष्ठ सन्य और्मेंडा स्थानिकार्य रहा गावि होता है, सपया उन दोण और्मोंडा समाय प्राप्त होता है। दिन्तु उनहा समाम है वहीं, क्योंदि, उन्त क्यनका 'शीम सनल है' दस सुबके साथ विरोध साना है। सीर न सर्वाक समाय सम्माय प्राप्त होता है। दूसरी बात यह मी है कि सावायोक एक प्रदेशमें यह मेंद्र प्रस्ता मी नहीं है, क्योंदि, 'एक आवर्षों अध्याप्त स्थानित पर प्रदेशमें वह सेव प्रस्ता भी नहीं है, क्योंदि, 'एक आवर्षों अध्याप्त स्थानाहत भी स्थानक स्थानकार भागमात्र होती हैं 'ऐसा वेदनास्त्रक देशनक्षित्रियोगन नामक स्थानोत्रहार्य प्रस्ता मा ही है। इसल्ये प्रदेश स्थानक स्थानकार है।

समाधान -- थव यहावर इस शंताका परिदार कहते हैं -- शंताकारका उस करने घटिन नहीं होता है, क्योंकि, उक्त कथानके मान छेनेपर पुरुशोंके मी ससक्यानपनेश प्रतने का जाता है।

> यहा पुत्रतीं के असक्यात दोनेका प्रसम केले था जायेगा। इ.ब.कम 'कम्म', अ.ब.बी 'क्मी' क बती कमा' हुन करा।

एगेगलागासपदेर्थ एक्केबको बिद्द परमाण् अच्छित, तो लोगमेचा परमाण् भवित, सेसपारगलणपरभवि चेत, अणवगासाणमिखचितिचा । ण च तिह लोगमेषपरमाण्हि कम्म सरीर पह पह त्यभादिसु प्यो वि णिप्यज्ञदे, अणताणतपरमाणुमपुद्दसमागमेण विणा एक्किस्स लेशक्णासिल्याएं वि सम्प्रामाता । होतु चे ण, सपलपारगलद्वस्म अणुपलिद्धिप्परगादो, सच्द्रजीवाणसब्दम्य वे उल्लालुप्यविष्परगादो च । एवनदृष्परगोमा होदि चि अवगेज्झवाणजीवानीयसवष्णहाणुवनसीदो लगगादिलयमिनजो लोगागामे वि

समापान — इस दाकाश परिदार इताबार है — रोशाशासि एक एक प्रदेगमें यदि एक एक ही परमाणु रहे, तो लोशाशासके अद्दावमाण ही परमाणु होंगे, और राष पुरुलोंश समाय हो जाएगा, क्योंकि जिस पुरुलोंश स्ववशास नहीं मिल उत्तरा स्नित्स सामनेमें विरोध साता है। तथा उत्तर लोशासा परमाणुओं हारा वर्ग, हारीर घट, पट और सम्म सादिशोंसे एक भी क्यानु निष्यत नहीं ही सकती है, क्योंगि, असनतान परमाणुओं है सनुप्रका समाता हुए विना एक स्वसादास्य सहक भी स्वभाव होता सभय नहीं है।

शका- यक भी धरतु निष्यम्र नहीं होते, तो भी वया दानि है !

समाधान — नहीं, वयोंनि, वेसा माननेपर समस्त पुरल दृश्यवी भगुपलियवी ससग माता है तथा सर्व आयोंने यक साथ ही नेयलहामकी अत्यत्तिका भी प्रथम प्राप्त होना है।

विदेपार्थ—महांगर समस्त पुरुष्णहरवा अनुवर्गिधवा जो वृत्या दिया है, वसका समिताय यह है कि घट, यट दि बायों ने इंतानेत ही बारावा जा प्रशासन प्राप्त के सिंग प्रशासन विद्यालय प्राप्त के कि घट, यट दि बायों ने इंतानेत ही बारावाय प्राप्त के विद्यालय प्राप्त के सिंग प्रशासन होता है। हा बावादों के स्थानात्रार जब कि सिंग ही या प्रशासन के स्थान हिंग हो हो कि स्थान होता है। हा बायों है कि स्थान है कि स्थान है के स्थान है कि स्थान है कि

इस प्रकार का व्यतिप्रसम दोष न द्वोत इस तिय अवगन्द्रप्राम औष और नशीद

र प्रकारि वर्षार्यको बहुदिहि दावीं । बोलक्यानयो 🖩 है 🕅 द १, ६०४ अवस्थान्यस्यक्र

इच्छिन्नो सीखुम्मस्य मधुरुभो व्य ।

तम्हा ओपाहणलन्दाणेण भिद्वलोगागामस्म ओगाहणमाहप्पमाहरिवपरपरामस्मित्ते सण माणिम्मामो । न जहा— उस्मेह्यणगुलस्म अमग्रे जादिमागमेले येले मुहुमलेगोदबीमम् अहरणोगाहणा मन्नदि । तम्हि हिद्यणलोगमेलजीनपरेमेसु पिडपरेममयनिदिणी अणलगुणा, मिद्राणमणनमागमेला होद्ण हिटजोगालियमरीरपरमाण्ण त वेत अस्मेगमाम जादि । पुणा ओरालियपरीरपरमाण्हितो अणलगुणाण तेनद्रयमरीरपरमाण्ह ति तिस् वेत से से से योगाम जादि । पुणा ओरालियपरीरपरमाण्हितो अणलगुणा कम्माण परमाण्हितो अणलगुणा कम्माण परमाण्हितो अणलगुणा कम्माण परमाण्हितो अणलगुणा कम्माण परमाण्हितो अणलगुणा कम्माण

मिद्धाःमधानमागमेचा तत्व याति, तेर्षि पि तिन्द्दि चेर छेते औताहणा मशी । इस् इस्पेंदि सत्ता अन्यया न बन सक्नेसे शीरकुपका मधुकुपके समान अवगाहन वनवार बोद्याकार है, येसा मान रेना चाहिए।

रिनेपार्थ---जंसे शीरकुम्पका मधुक्रमसँ वयगाहन हो जाता है, सर्याद्र महुते म हुद कटामें तात्रमाप्यासे दुष्ये ग्रेर हुद करहा हा यदि दृष्य डाट दिया जात, तो सम्बद्ध इसीमें गमा जाता है, येसी स्वयाहन द्वाचि देखी जाता है। उमीके समान वाकापार दे देसी स्वयाहना होति है कि सस्वय प्रदेशा हाने हुद भी उसमें सनत जाय भीर सम्तान हुउट हा स्वयाहन हो जाता है।

इसिटर वन हुम अवसाहन रूस्ताले प्रतिज्ञ रोकानाहक स्वसाहन शहान्य अवसाहन राहान्य अवसाहन राहान्य अवसाहन राहान्य अवसाहन राहान्य अवसाहन है। यह इस प्रकार है— उम्मेदाकांग्र सम्बद्धान स्वसाहन है। यह इस प्रकार है— उम्मेदाकांग्र सम्बद्धान स्वसाहन है। यह देश विकास सम्बद्धान साम आवित प्रदूषानिक अवसाहन हो अवसाहन साम स्वाप्त है कि स्वसाहन स्वसाहन साम स्वाप्त है कि स्वसाहन स्वसाहन हो स्वसाहन है कि स्वसाहन है कि साम स्वसाहन है कि साम स्वसाहन है कि साम स्वसाहन स्वसाहन

साम बाद वर्सपरक्षानु उस हात्रमें रहत है, हमिण्य उस वसपरशाणमाँकी भी उसी ही हा

र रुपुरण्याद्यप्रधानसम्बद्धानम्ब त्राम्य त्रीम्यवस्यानन् । अन्यसम्बद्धान् प्रमुख्ये । सा. 👫 रुप्तम्य । प्रति । १००८ -

१०१ प्रमा वरण प्राप्त कर । सन्यास पर । त तु २ १८-१५ । पासापूर्व सराहित्य सम्बद्ध हिरे करा हु। जी सम्बद्ध रिका स्वयुवस्था हर करे ॥ तथा समस्यद्धा वि^{ति सर्वास}

जोराहिए-तेना वनमह्यदिसासीन्चयाण पादेवः सन्तर्नावेहि अणतागणाण पडिसरमाणुन्हि वताणुगमे छोगानगाइणस्तिपस्यण विधियमेगाच तरिह चेव राच आगाहणा महिद्र'। ज्यसग्वीरेण छिद्रअगुलसा असरोजिद पायम् पाव पार्व वर्ष वर्ष वर्ष वर्षाः वर्षाः । एक्ष्यः । एक्ष्यः । एक्ष्यः । प्रस्ति । सामान् । प्रस्ति । स चीना तरिह चेन मन्तिमपदेनमतिम् नाउण उनवण्यो । ण्डस्म नि आगाहणाण अणता वतदीरा समायोगाद्वा अच्छिन् वि युक्त व परंजदन्त । युनमोगपदेसा सन्दिसास बहुतिदच्या चाव रोगा आञ्चलो वि । एत्य एक्षेत्रोमाहणार हिद्दीनाणम्पाएह्स विष्मामो । त जहा- तेउबाह्या श्रीचा अमरोआ लोगा। तची पुत्रिकास्या विसेसाहिया । आउनाह्या जीम विसेसाहिया । बाउमाहूमा जीम विसेसाहिया । तथी विवासिकारमा अवन्यामा विवासिका प्रमाण सन्यामासीया होगो आयुष्णी वि सरहेदच्य, अव्याहा पुरन्तवहोमव्यमगादो।

मवताहना होता है। युन औशारिकसाहीर, वैजनकशारीर और कामणशारक विकासीपनवींका, का हि मलेह सर्व जीरोहि अन्तुत्रमुखे हैं और मलेह परमाणुपर उतने ही ममाण है, उनहीं भी का १९ मध्यम् वर्षा होती है। इसम्बार् एक् जीवते स्वाप्त भग्नुवर जतन हा मभाव है, उनका सा वसादास्त्रम भवगादमा हाता है। इलामहार ५४ जावस स्थाप नयुक्त वस्तराविम सामान इसी जम्म रोजम समान भवगादमायाला हो हरते हुसरा और भी रहता है। इसीमहार करा अप प रायम राभाग व्यवगादनावाना हान रक दूराच जाव भा रहता हा रसामकार सप्तान सवगादनावाने अन तानन्त जायांची उसी ही रायम अवगादना होती है। तरफहास सवान नवाहिताबार अने तानका जावार। जना हा दावन अवगाहका हाता है। तारकात्व दूसरा केर्द्र बीच, उसी ही देश्यों उसके प्रश्यवर्ती प्रदेशको वापनी सवगाहनका स्नीतम हुत्ता करके उत्पन्न हुमा। इत अविका क्षी अवगादनाम, समान अवगादनाका जा तम भद्दा करक उत्पन्न दुवा । इस आध्या का कथगाहनाम, समान अथगाहनाथास का तानस्त जीव रहत है, इसप्रकार यहां भी पूर्वे समान ग्रह्मण करना चाहित । अधात् , उस क्षेत्रम काथ रहत ह, रसमग्रद यहा भा वृषण समान अक्षयं करना साहद । नद्यात, उस स्वक् दियत वनले क्यांत्र जीवके मुक्तामिल महोक महेरायर अनन्त भीदारिकरारीरक एरमाणु ारवव भारतक मात्र आवश्च अत्राध्यक अव्यक्त अन्यस्य व्यक्तन व्यासारक स्वराधक व्यवसाया बीहारिक तारीरते अन्यत्तुम् तैज्ञस्य गरीरक और स्वसं अन्यतायाचे समावासारक परमाणु नाशार हारास्त अवन्तराथ तमस्य नारास्क भार इत्यस अवन्तराथ रावधनास्तरः परमाणु भी है। युन इत तीमी हारीरीने सर्व जीवीसे मन त गुणित विद्यसीयस्य भी उसी प्रदेगस्य का ६ रुप स्व तामा शराहाव स्वव आवास काम त शावत व्यवसायवय का उसा भदागर विद्याम है। इसम्बाह समान व्यवमाहमायाःहे समस्तानस्य जाव उसा सेनमें रहते हैं। प्यमान हा रिक्षण समान व्यवनहत्वायाः वनम्यानन्त जाप उसा स्वम रहत हा सिप्रकारसं होक्क परिपूज होनेतक सभी विद्याओं हो तकहा रह यह प्रदेण बहाते जाना राजकारत काकर पारपूर्ण बागवक लक्षा भुरशासात स्थावका एक एक अर्ग बहात जाना बाहिय। सब यहायर उत्सेच यागामुक्तके संसम्यासये सागामायाच एक एक अयगाहगासे स्थित बाहर । कर पहार अलाध धामुल्य कसकातच आध्यमान एक एव अध्याहमाम स्थित होयाँका अल्यबहुत्त कहत है। यह इसम्रकार है— तज्ञस्काविक जाय समस्यात लोकप्रमाण वावारा अर्थवहान कहत है । यह १९४४ वह है - तक्षण्यावर जाय अस्थ्यात रावणसाय । तक्क्ष्मायिक जायांस पूरियोकायिक जाय विगय अधिक है। पृथियोकायिक जायांस ं राजस्त ।।वर जायातः प्राय्वाव।।वर जाव ।व-१२ जायर ६ । प्राय्वाव।।यर जायात इरुवादिक ज्ञाय विनार अधिक है। जलकादिक नार्यस्य वायुवादिक जीव विदास अधिक है। हर गांवर आप का प्रकार के। जह साथक ना नाम बायुकायक आप व्याप्य कापक है। युकापिक आयोस समस्पतिकारिक आप का नमुळ है। स्तापकारस साथे आपरानिक होरा पुँकावक जावास सनस्पातकावक जास धन तमुच हा इस्तप्रकारम साथ आवरसाणक द्वारा : जाकाचा परिवृण हे पसा श्रञ्जान करना खाहित अन्यया पूर्वोत्त दायोका प्रसम श्रास्त

र जानादा नतनुषा वादवासा^{ल रह} वंशततावचना। जास्य व सदवदा एडड वाहे समाया हु व

सन्वतीनाणसन्त्वा तिनिहा अनदि, सत्वाण-समुद्रनादुननादभेदेण। तत्र संगा दुविह, सन्धाणसत्थाण निहारतिमाथाण चेदि । तत्व सन्धाणमन्थाण णाम प्रणण उप्पष्णगामे णयरे रूणे वा भयण णिमीयण चरमणाटिवावारज्ञचेणन्ठण । विहासी सत्याण णाम अप्पूषो उप्पूष्णगाम णयर रूप्णाठीणि छहिय अप्णाय समगणिरीसर चरमणादिनानरेण्टळण । सम्रुप्तादो मचित्रिया, नेदणसमृत्रामो समायममुख्याने नेजिय ममुग्यादो माग्णतियममुग्यादो तेनामरीरममुग्यादो आहारममुग्यादो देवितमपु चिदि । तस्य नेटणममुन्यारो णाम अस्यि सिरी वेदणादीहि जीनाणमुक्तमेण सर्गानित निष्मुज्ञण । रसायसमुन्यादो णाम कोच भयादीहि सरीगतिगुणनिष्मुज्ञण । वेडिव ममुन्यादो णाम् देव णेरहयाण वेउच्चियमरीरोदहङ्गण मामावियमागार छहिय अव्यागीर

च्छण' । मारणतियममुख्यादो णाम अप्पणे। बहुमाणमगरमञ्जूष्य विजारीए विकास

न्यस्थान, समुद्धात और उपपार्टेन सेद्देस सर्व जीर्वोक्ती अवस्था तीन प्रकारण उनमें स्थान्यान हो प्रशास्त्रा है— स्वन्धानस्यम्यान और विद्वादरस्यम्यान । उनमेंसे म उन्पन्न होनेके प्राप्तमें, नगरमें अथवा अरुव्यमें सीना, बैठना, बल्ना आदि प्रान्त युक्त दोकर रहनेका शाम स्वस्थानस्यस्थान है। अपने उपस होनेके प्राप्त, नगर अधवा मर साहिको छोडकर अध्यत्र द्वायन, निर्यादन और परिश्वमण साहि व्यापारसे युक्त होकर रहन नाम विदारवास्यरधान है। समुद्रात सात प्रकारका है— १ बेदनासमुद्रात, २ वशायसमुद्रा र्वे वर्षत्रियक्तमुद्धात, ध मारणानिकनमुद्धात, ५ श्रीवरक्तरारिरसमुद्धान, ६ आहारकार समुदान, और ७ केशिलममुदान । उनमेंने नेप्रपेरना, शिरोनेदना आदिके द्वारा आर भदेरा आर एक दारी से निगुले प्रमाल जिस्मेश्वान माम वेदनासमुद्धात है। क्रीण, मारिक डारा क्रीयके प्रदेशींका दारीरसे तिगुणे प्रमाण प्रसपणका नाम क्यायरमुदात वैविधिक्दारीरवे उद्यवारे देव और नारकी आयोंका अपने स्थामाधिक आकारको होई क्षम्य अन्दारके रहेनेदा नाम वैतिविक्समुद्रात है । अपने वर्तमानदारारको नहीं छैड़े

[॰] तद रूपर रूपरूप्तप्रप्रार्थभेत्र तत स्वस्थानस्थावम् । या औ औ प्र ५४६

शिश्यित्वत्वत्वत्वत्वत्वत्व वर्षः अवित्यवित्वत्वव तित्वत्वत्वत्वाविति । ता जी जी प्र ५४१ द ही प्रमान का अनुवासक कार्य बहिस्ट्रसन समुद्रात । स अनुविद्य । त रा वा र, र

क्रियेक व्य क्ष्मव्यस्थि क व्यवस्था । जिम्माम दहना हा दि अमुत्वस्थान हु ॥ ना जा १६८ वर्ष स स्क्रिय मध्याच्या १ वर्ष ६, प्रत्या न प्राक्षात्य बन्दर्य सपुरुष न हरी और प्री प्राप्त ६ वर्ष

ह रूप व : १००० र विदर्भ ६ वर्षक्व सर्वापादिरुव त्व कृता वरण कम्म्यात । तः रा. वा : १०६

 [ि]ण्ड व्यादन य राज्याचार हुन स्वायनपुद्रात । त श झा १ १०

६ । कटकायक बराजानवर्षा राजाप्रदेशक क्षत्रभागवर्गमानिक सामग्र अनः विकित्त सम्बद्धाः । व

क्रजातिहारा मध्या विषद्दगतिहारा आगे जिसमें उत्थम होना दे ऐसे शेष्ट्रतक जाकर, द्वारीरसे तिगुणे विस्तारसे अथवा आध्यप्रकारसे आवसुद्धतं तक रहनेका साम मारणातिक समझत है।

श्रम — वेश्तासमुद्धात भीर क्यायसमुद्धात वे बोमी मारणान्तिकसमुद्धातमें सन्तभूत वर्षी मही होते है !

समापान—चेदनासमुद्धात भीर चनापसमुद्धातका माराणातिकसमुद्धातक भन्न माय नहीं होता है, क्योंकि किटोंने परमायकी भाग्न बांध की है, देसे जायोंके हो माराणातिकसमुद्धात होता है। किन्नु चेदनासमुद्धात भीर व पाधसमुद्धात कियायों भागे जहां भी होते हैं भीर कावसायुष्य जीयोंक भी होते हैं। आराणातिकसमुद्धात कियायों भागे जहां उत्पन्न होना है देसे केत्रवी रिद्धांके अधिमुण होता है। किन्तु अध्य समुद्धातोंके स्त्रवार एक दिसामें पामका नियम नहीं है, क्योंकि, जनवा बसी विद्धार्थीं भी पामन पाया जाता है। माराणातिकसमुद्धातकी क्रयाद उत्तरहृष्टा अपने उत्तरसमान क्षेत्रने अस्त तक है, कि हु इतर

सैजरवदारीरवे विस्तवाचा नाम तैजरवदारीरसमुद्रात है। यह वे। प्रवारचा होता है, निरसरवास्त्रच और अनिरसरवासम्ब । उनमें जो निरसरवासम् तैजरवदारीरविसर्वन है यह

र सीपक्रमिशानुपत्रमामु क्षयावितृतवरणांतप्रयामनी वारणांतिक्रसप्रदेशत । श रा वा १, २०

र क्षारास्त्रात्मोतिनतप्रकातानसंबेर। xx बनार वन बहुकाताः नर्विकाः । तः राः नः १, २ आहासमरकतिन्त्री वि निवसन दगदिनिर्ग हु । दल दिविगदा हु तता वंत समुन्यादमा होति ॥ गोः औः ६६९

६ जीराप्रभारमपाठपरण्डेज कार्राज्यकेत्रपर्यक्ष राह्याचे उत्त रा वा ६, २० ४ ठट निधा कि स्थाप प्रश्लितका जीराहित विचित्रपार्यक्ष विद्यार्थ वेहस्य व्यक्तिस्थानि स्थापका युद्धमानिहरूपातिनुद्धार औरप्रदेशकपुर विकित्तपार्य वाद्य पार्टाचण विद्यार्थ कियानकारिहरूपार्थ विद्यार्थ क्षाप्रकारिकारिहरूपार्थ प्रकार मार्च मित्रते । स्था विस्वविक्षये विभागात्रास्थी सम्योग स्थाप वर्ष हिता स्थापकार

पसत्यमप्पसत्य चेदि । तत्य अप्पमतः नारह्नायणायाम णानायणि चार मिनगुरुस संदेशियणानाह् आमाणरुसममकाम भूभिप्चन्द्रानिटह्णक्रमम्, प्रिद्रसम्बद्धि राभिषण चामसप्पमा इन्जियरोचमेचितामप्पण । ज त पमाथ त पि णीम चत्र, बर्गर हसपाल दिस्सम्बद्धि राभिषण चामसप्पमा अणुक्रपाणिमच मारि रोगादिपममणक्रमम् । ज तमिष्ममण्यत्र तेज्वस्पसीर तेणत्य अणिष्यारो । आहारमभुन्यादी णामपिचद्वीण महाभिण होंगे त च हरपुस्तेष हम्पयाल स्वन्यासुङ्ग राज्यमेचेण आप्राजीपणलम्बन्यम् अप्याविद्यापमण उन्त्रमामम्बद्ध्य स्वन्यासुङ्ग अभावमानुल्याण च लक्ष्यपस्त्र केरिलसमुम्पादी णाम उन्द्रस्पमम् इत्र लोगपुरणभेगण च अन्ति । तथ र समुम्पादी णाम उन्द्रसरीराहरूलेण तत्वगुणनाहरूलेण ना सिन्धरामाहो गाहिरेगीण परिहण्योक्षर्थ केरिलसमुम्पादी स्वाविद्यासाह स्वर्णमाल इत्र स्वराविद्यासाल विद्यासाल विद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वराविद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वराविद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वराविद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वराविद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वराविद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वराविद्यासाल स्वर्णमालिद्यासाल स्वर्यासाल स्वर्यासाल स्वर्य

भी थे प्रकारका है, प्रशस्तित्रल और अप्रशस्तित्व । उनमें अप्रशस्तित्वसरणात्मक तैक
शर्रारसमुद्रास, बारह योजन एन्या, नी योजन विकारवाला, ब्रूट्यमुलं हे स्व्यालं ।
मीर्द्राधाला, ज्यानु सुमने सहश स्टाट गर्मा, भूमि और पर्यमादिक स्वत्यालं ।
मीर्द्राधाला, ज्यानु सुमने सहश स्टाट गर्मा को पर्यमानिक स्वत्यालं ।
स्वराहित, रोपक्य हम्यन्याल, वार्य क्षेसे उपन्न होनेवाला और इंटियन श्रेत्रमानि ।
येन क्रिल्याला होता है । तथा जो प्रशस्तिनस्यालात्म तैजस्कारित्वमुद्रात है, वह ह
समान प्रयल्पण्याला है, बहिने क्षेसे उत्पन्न होता है प्राविचाविक स्वत्याले स्वत्याले

कड़, क्याट, प्रतर और लोकपूरणके महासे केवलिसमुद्धात चार प्रकारका है।? डिसक्षे अपने विष्यमसे कुछ अधिक तिगुनी परिधि दे पसे पूर्वदारीरके बाहरूवहर म पूर्वदारीरसे तिगुने बाहरूबहर दशकारसे केवडीके ओवसदेशीका कुछ कम और

१ डंड प्रप्र (प्रयाग पृष्णाः) त्यागस्तावना संदार,पृष्णे) २ अस्य पीकि जिल्लाच्यकासायमहत्त्रसप्रेजनाऽप्रस्थानीसिकस्ययं अस्तासम्बद्धाःते । तः स

१ दर्जावस्य बहुवान्यवाचार्यसम्बद्धाः स्थानस्य स्थानस्य हृत्यास्य हे १९६० स्थानस्य वार् साहस्य हे १९६० स्थानस्य होतास्य हो।

पुष्टिबल्छबाहरूलायामेण चादबरुपबिहित्त्वगन्ययेचातृर्जः । पद्रमयुग्यादौ धाम वेदनि जीवपदेसाण वादबरुपरुद्धलीलावेच मीसूण सब्बलीवातृरणः । स्नेवपूरणवमुग्यादौ धाम वेदलिजीवपदेसाण पणलेवायचाण सब्बलीवातृर्जः । उत्त च —

> बेदण यसाय वेउडियओ य मस्यतिओ समुचादो १ तेआहारो एडी सत्त्वाओ वयटाण त ॥ ११ ॥

द्वारादेः एवधिहो । सो वि उपप्ष्पप्रमामक् चैन होदि । तम्य उन्द्वाराद्दीर उपप्रभाव रोच बहुन क सम्बद्धि, समेजिदाँगम-निवदेगादो । निमादा निविद्धा, चाजि हुद्दा सामस्त्रिक्षे नोसुनिक्षे चेदि । स्च पाणिहुद्दा काविनादा । विमादा बदना हुन्निन

पिरुमेना माम बहसमुद्धान है। बहलमुहानमें बनाये नोय बाहरन धार आवासक हान पातपरुपत सहित संदूर्ण क्षेत्रके व्याप्त बरवेना नाम व्यापनामुद्धान है। वे करी धारशाव्य श्रीयमहेशींना पातपरुपति को हुए शोबकेंकों छाड़का व्याप्त लोकों व्याप्त दानका नाम मारसामुद्धान है। धारुनिकामान केवणी धारपानके सीवमहेशींना नाम शावन व्याप्त कावका वेपारेशामुकान कहते हैं। बहा भी है—

येदमासमुद्रातः वरायरामुद्रातः, श्रीकाश्वकाम्यानः मारणानिकाम्यानः नैज्ञकः समुद्रातः, छन्। साहारकासमुद्रातः और सातवी वथन्तिसमुद्रान क्सवकार समुद्रान सान मयरका है।। ११॥

क्यापुर यक्षप्रकारका है और यह भी कावल होनेने परत समयने ही हाना है। हचान्त्रे मृतुपतिते उत्तय हुए गोर्जिंका वेश बहुन नहीं प गा जा गा है क्यों ने स्थये जीवन अध्यक्त मेर्द्रोजिंग सकेत हो जोगा है। किसह तीन प्रकारका है पार्वित्रका, गोर्जिक कार केन्त्रका, इसेंदेर पारित्रका गांति यह विश्वहरूपी होती है। किसह वह और कुँदिन से सह सकार्य

१ तो औ, १६७

e ablandente ratusannung nageledes ta. g. g. e ere

n cefentieft walte a ein mi & te

त्ति एगद्वो' । स्रांगलिओं दुविग्गहो' । गोमुचिओ तिविग्गहों । तस्य मारणितएव विक विम्मह्मदीए उप्पष्णाणे उजुमदीए उप्पण्यदमसमयञ्जामाहणाए समाणा चेत्र जोगाहण मवदि । पवरि दोण्हमामाहणाणं संठाणे समाणचणियमा परिय । बुदो ि आगुपूनि संठाणणामकम्मेहि जाणेद्भंटाणाणमेगचित्रोधा । विग्गहगदीए मार्गिनेयं कार्णुपणाणं पढमसमए असंसेज्जजोयणमेचा ओगाहणा होति, पुन्तं पमारिद्रगादी-निदंडाणं परम समए उवसंघाराभावादो ।

षाची नाम हैं। टांगलिका गति दे। बिप्रह्याली होती है। और गीमृत्रिका गति तीन विपर् बाली होती है। इनमेंसे मारणांतिक समुद्धातके विना दिब्रह्मतिसे उत्पन्न हुए जीवी क्रुतुगतिले उर्पन्न जीवोंके प्रथम समयमें होनेवाली अथगाहनाके समान ही अयगाहना होती है। विशेषता केयल इतनी है कि दोनों अवगाइनाओं के आकारमें समानता का नियम नहीं है। क्योंकि, बातुपूर्वी नामकमेके उदयसे उत्पन्न होनेयाछै थीर संस्थान नामकमेके उदयसे उत्पन्न होनेवाले संस्थानोंके पकत्वका विरोध है।

विशेपार्थ- यहांपर को आनुपूर्व और संस्थान नामकर्मसे जनित माहाएँन पकत्यका विरोध वताया है उसका अभिमाय यह है कि विमहगतिमें जीवका माकार मानु वि नामकर्मके उदयसे होता है, पर्योकि, यहांपर संस्थाननामकर्मका उदय नहीं होता हैं। लि अञुगितिमें बातुपूर्वी नामकर्मका उदय वहीं है, क्योंकि, बातुपूर्वी नामकर्मका उदय कार्मणहार योगपाली विमहगतिमें ही होता है। ऋतुगतिमें तो कामणकाययोग न होकर बीहारिक्रीम या पित्रिपित निश्रकाययोग ही होता है और गो. कर्मकोड आहिमें इन दोनों निश्रयोगीं संस्थान नामकर्मका उदय बताया गया है, भाजुप्वींका नहीं। इससे सिद्ध है कि ऋतुगतिसे उपस होनेवार्ट जीवके प्रथम समयमें ही विविक्षत क्षेत्रमें उत्पत्ति हो जानेसे संस्थान नामक मैका उदय हो जा है। इसिंटर मानुपूर्वी और संस्थान नामकर्मोंसे उत्पन्न होनेवाले आकार भिन्न ही होंगे, पहरे महीं। विप्रदगतिमें मानुप्यांके उदयसे जीवके पूर्व दारीरका माकार रहता है, किन्तु हंस्यान मामकर्मके उत्रयसे यर्तमान वर्षायका भाकार है। जाता है।

मारणांतिक समुद्रात करके विष्रहगतिसे उत्पन्न हुए जीवाँके पहले समयमें असंस्थान योजनप्रमाण अवगाहना होनी है, क्योंकि, पहले फैलाये गये एक, दो और तीन दंशीश प्रपर समयमें संदेश्य नहीं होता है।

१ विश्वते व्याचात्रः केंद्रिस्तकित्वर्थः। छ. नि. १, २ ७. विश्वते व्याचात्रः कीटिस्यकियान्तरः E. et. M. 3. 3w.

र व प्रदोः ' डॉविटिशी 'इति पटा।

र दिवमहा वारिकांगिटका । स. श. वा. व. २, २८,

४ विशिष्टा गतिगोंन्विका । त. श. श. श. २, २८.

त कोचे कन्त्रे करनदिवतेवाहासराकद्वन विस्त्र 1 क्वबाद्यविश्वनद्वयोगति-संठानवंद्दी वृदि है

खेवाणुगमे निष्टाइहिवेवपरूषणं एदेहि इसहि विसेसणेहि जहासभवं विसेसिरमिच्छारिटआदि-चार्समीयसमामाणं

खेचपरुवणं' कस्सामा । सत्याणसत्याण येदण-कसाय-मार्ग्णतिय-उववादेहि मिच्छादृष्टी केवडि खेंचे, सब्बलोगे । इदो १ लेण सब्बजीवरासिस्स संखेजदिमागणूणो सब्बो जीवपुंजी सत्याणसत्याणरासी बहदे । वेदण-कसायसमुग्यादगद्जीवा वि सव्वजीवरासिस्स संस्वेजिदिः भागमेचा । मारणंतियससुन्धादगद्रजीवा वि सच्वजीवरासिस्य संखेजदिमागमेचा । कृदो ? एदेसि तिन्हं रासीणं अपप्णा जीविदस्स संखेजदिभागमेषसमुम्पादकाळणहा । उपगद्गमी पुण सच्यजीवरासिस्त असंखेजदिमागो', एगभमयसंचयादा ! तेणेदे पंच वि समिणी वर्णता, तदो सम्बलोगे भवंति । विहारयदिगरयाणमिच्छादिद्वी केवडि स्तेषं, स्रोगस्य

हतवकार रयस्थानके हो भेद, लगुडातके लाग भेद और एक उपपाद, इन बहा दिशा-पणीले यथासंमय विशेषताकी माप्त मिन्यारिष्ट आदि शीवह गुणस्थानीके क्षेत्रका निक्चण करते 🖹 । स्वस्थानश्यस्थान, वेदनाक्षमुढात, कथावक्षमुढात, आरणानिकृत्वमुढात, और उपपादकी क्वेसा मिष्यादिक जीव किनने क्षेत्रमें रहने हैं। सर्व लेकम रहते हैं।

समापान - स्वृंक, सर्थ जीवशाचिके संवशतम् आगने स्वृत्व दोत्र शर्व औवशाहर रस्यानस्वरयान राजिन्य रहता है। तथा वेदनासमुद्धान और बवायसमुद्धानको प्र.पन हुव व भी सर्व जीवराधिके संवयातर्वे भागममाण है। मारणानिकतमुद्धातका सन दूर जीवसी अवराधिके संख्यातये भागममाण है, वर्षोकि, उक्त तील गतियोंके समुख तथा बाह ने जीवनबासके संस्थातमें आग्रमाण है। उपय दशादा तो सर्व जीवगारिक सर्वण्यान्त्रे द्व, वयोक्ति, उपवादशासिका संख्य यक समयम होता है। अतः व्यवधानव्यवधान आहि पांचां जीवराशियां भनना है, भार इसीटिये व सर्व छाक्रमें वार्र जाती है।

विहोपार्थ--- मार्ग मिच्यारष्ट्रणादि बादद गुणस्यानांसे तथा मार्गणास्यानांसे ऑस्टर, तामाग्यहोक, मधालोक उपयोक, निर्वदहोक और मनुष्यहोक, इन गांच प्रकारके ही अवसा बतलाया गया है। तीनसी तेतालीस अवस्तुप्रमाण सर्वेतीच्चा सामान्यतेष्ट हैं। यहारी प्रयानवे पनशत्रुपमाण या बार रात्रु मोट जगमतरमाण को बहे के अपे-मधोछोक वहते हैं। यक्सी सेतालील धनवाज या तीन वाल मोट जनमतत्त्वसमान

असंखेळादिभागे । कुट्रा १ ण नाव नगत्रपात्रगरामी विदर्गत, नन्य विदायमहित्रासम्बन्ध उद्यामाया । तमयज्ञनमधिसा वि मर्गेजिदिमामा चेर विरम्मारमणी होहि । स्रो ममेदं बुद्धीय् पडिगाहिद्रामें मन्धानं नाम । तना वादि मन्तरान्त्र तिहास्त्रहेन्त्रवर्ते तस्य च्छणकारो। सगावामे अवद्वाणकानम्म मंगेन्ज्ञदिमागा नि । दीर्ज तीगामवर्गनिक मारो । इदो १ चत्तारि रञ्जुपाइन्तं जगपदं अधोलोगपमार्थं होदि । तिर्ण प्रकार जगपदरमुहलोगपमाणे होदि । एदे दोष्णि वि लोगे तमपत्रजनसामिस्म मेनेजीदमान संखेजनपण्गुतसुणिदेण ओवहिदे सेठीए असैनेजनदिमागी आगण्छिदे नि । मंत्री खाल योजन बाहे और प्रत्याण योजन ऊर्च होत्रण मतुष्यत्रीह पहने है। एक तर् सामान्यके पांच भेह करनेका मामित्राय यह है कि विविधन आंगके वहाये गय संज्ञा ते परिमाण समझमें बाजाये । जहां जिन जायांच सेत्र सर्थश्रेक बनाया जाये, यहां मानान होकका प्रहण करना चाहिए। जहां दे हो होकांत निर्देश किया जात अपोलोक भीर अध्योक इन दो होकोंका प्रहण करना, जहां तीन होकोंका निहता जाय, यहां अयोलोक, ऊर्यलोक शार तियंक्टोकका प्रश्च करना, तहा तान शामाना निर्देश किया जाय, यहाँ अनुष्यक्षेकको छोड़कर देश्य चारों छोकोंका प्रहण करता बादिए।

पिहारवरस्यश्यान मिस्यादिष्ट जीय कितने क्षेत्रमें रहते हैं। शोकने असंस्थान मागममाण क्षेत्रम शहते हैं। चृक्षि जसकायिक अपर्याप्तराशि तो विद्वार करती नहीं पर्योकि, जसकायिक अपर्याप्ति विहायोगित सामकमेका उदय नहीं होता है। जसकायिक पर्यापाकोके भी संख्यातर्थे भागप्रभाव राशि हो विहार करनेवार्टी होती है, वर्षािक, व मेरा है 'इसप्रकारकी युद्धिते स्वीकार किया गया क्षेत्र स्वस्थान है । बीर उसते वाहर जाई रहनेका नाम विहारवास्यस्थान है। उस विहारवास्यस्थान क्षेत्रमें रहनेका काल माने सावार्तन (स्वस्थानमें) रहते के कालके संक्यातये आगप्रमाण है, स्वालिय विहारवस्यस्यात निर्मा इपि भीय दोनों छोडोंके अर्थान् क्योछोक और ऊप्येछोकके असंस्थातमें सागप्रमाण है इसे पर हैं । इसका कारण यह है कि अधालोकका प्रमाण बार राजु मोटा जापनर है भीर कारीना प्रमाण तीन राजु मोटा जगमतर है। संख्यात धर्नागुरुगुणित प्रसन्धायिक पर्यातराहिक हैली तर्ये मागसे इन दोनों ही छोड़ोंके माजित करने पर जगरेणीका बसंस्थातवी प्राप्त रहच थाता है।

विशेषार्थ--वसकायिक पर्याप्तक जीवोंका प्रमाण क्षेत्रकी अपेक्षा स्टब्स्गुलके संस्थ तर्वे मागके यगेरुप मागदारसं माजित जगनतर प्रमाण सत्रका अपसा ध्रुष्यावर्धी तर्वे मागके यगेरुप मागदारसं माजिती जसप्यशिताशिक भी संख्यात्वें भाग प्रमाण ही विहारकरनेयात्री राशि होती है। क्ष यहि है असपयोक्ति जीवकी अध्यक्ष अवगहना संर्यात धर्नामुळ प्रमाण मानकर उससे विद्वार्षर वाली राशिक प्रमाणको गुणित भी किया जाय, तो भी उसका जनशेणोके संसंख्यात ये भागमान हेरभूम रहना शिद्ध होता है, इसलिए यह शिद्ध होता है कि विहारकानेवाली प्रवस्ति उत्परिशंक भीर अपोलोकक असंस्थातव मागमें रहती है, क्योंकि, इन दोनों लोकीका प्रता

जगच्दोणीके वर्गसे भी बहुत अधिक है।

घणंगुरुगुणमारो क्षमनगम्मदे ? युचदे- सर्वपहणांग्द्रवन्यवरमागद्वियतस्वजनस्ती पहाणो द्वयनम्बभूमिज्ञेविहितो दीहाउचे महश्चेलाहणो य । भोनभूमीसु युण विगलिदिया लिख । पेविदिया वि तत्य सुद्ध योगा, सुहक्रमाहियजीवार्ण बहुवाणमसंभवादो । सर्वपहुच्चपप्रसामिक्षयजीवार्ण बहुवाणमसंभवादो । सर्वपहुच्चपप्रसामिक्षयजीवार्णमार्थमसंभवादो ।

संेे पुण बारह जोयणाणि गोग्ही मच तिकोसं 🛛 ।

भ्यते जीवजवेगं मन्ही वृज जीवजसहरसे ॥ १२ ॥

पदाओ ओगाहणाओ घर्णगुलपमाणेण कीरमाणे संखेडआणि घर्णगुलाणि हर्बित, तेण संखेडअपणंगुलगुणमारी बिहारबंदिसत्याणसीसस्स ठिवरो । सर्यपहणर्गिदपण्यदस्स वरदो जहज्जामाहणा वि जीवा अस्यि चि चे ण, भुलम्मसमास काऊण अर्ड-चेदे वि संखेडअपणंगुलदंसणादो । संकर्ष १ यस्य ताव असरखेसाणयणविषाणं मण्णिस्सामा ।

हीका- असकायिक पर्यासराशिके संस्थातमें आगाप्रसाण विहारवस्वस्थान राशिका गुणकार संस्थात धर्मापुल है, यह केसे जाना जाता है है

समाधान — महतमें रथवंत्रमनगेन्द्र वर्वतके वरसागर्ने स्थित जसनायिक वर्षात सीवराशि मधान है, वर्षाकि, यह गादि इतर कर्मभूमित जीवोकी वरोशा दीर्घेषु और बड़ी मध्यादमाधाली है। भोगभूमित तो विकलेटिइय जीव नहीं होते हैं और बहांवर वेकेटिइय सीव भी रवत्य होते हैं, वर्षोंकि, शुभ वर्मके जरवकी अधिकतायाले बहुत जीवाँका होना मसंस्य है।

स्वयंग्रम पर्वतके परमागर्मे श्यिन जीवींकी अवगादना सबसे बढ़ी होती है, इस बातका तन करानेके छिये यह गाथासूच है—

र्रोज मासक द्वारिद्रय और बारह योजनकी स्वक्षी अवगाहनायाला होता है। गोम्सी सामक की देव और तीन कोशकी रूपनी अवगाहनायाला होना है। अवर नामक अनुसिद्धय तीय पक योजनकी रूपनी अवगाहनायाला होना है, और महाम्रस्य मामक पंचीन्द्रय आप पक (जार योजनकी रूपनी अवगाहनायाला होता है। १२॥

योजनों भीर वेश्लोर्भ कही गई इन अवनाहनाओंको प्रश्नीमुख्याणको करनेपर संक्रात ग्रांगुळ होते हैं, इस्रळिये विद्वारयस्प्यस्पानशाहिका गुणकार संक्र्यात प्रमांगुळ क्यांपन केया है।

र्रोका — स्ववंत्रमनगेन्द्र वर्षतके उस कोर अधन्य कवगाइन वाले भी आव पाये गते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जधन्य स्वत्याहनारूप मूल स्वयंत्र स्वीद स्वीर उत्कृष्ट नयगाहनारूप सन्त, इन दीमीको क्षेत्रकर साधा करनेपर भी संस्थात क्योगुन देने जान है। तरह स्वीर जधन्य स्वयाहनामोंको जोड़कर साधा करने पर संस्थात कर्नामुन केले साते हैं, तेन स्वता स्पर्धानस्य करनेक लिये जन हित्सपिदनोंको स्वयाहनास्नामेस परहे स्वतर-मेनके स्वताहनके निकाहनेका विधान कहते हैं— ममरखेर्न पुण जीयणायामं अद्वजीयणुग्मेरं जीयणदर्गागिरिनिस्मेनं ग्रेषेत्र सुरेसहराणमायामेण गुणिदे उत्तमहजीयणग्म तिर्ग्य-अर्द्रनामा मर्गत । ते कीरमाण पण्णरहमद्रस्यभारत्वेदि यशीयदेदि निज्यमयनामहिकारीह मार्थ सहस्साहिय-अद्वशीसत्वयोदि स्टस्यर्-स्टप्यप्लेटि य उत्तमन्यणजीयगाणि गुलिरं पणगुराणि हर्गते । गोरिह-आयामो उत्तमुखीयनिरिण चउन्माणी, तरहुमाणे सिकं

यक योजन टरवे, आये योजन ऊंचे और आये योजन हैं। गरियेजमान विकास अमररेन को स्थापिन करके, विकास आयेको उत्सेय में गुजा करने, जो टब्स को हैं आयानसे मुख्ति करनेवर यक योजनक तीन सागोंमेंने आठ साग छाय आने हैं। और ब अमररेन का यनकार है।

उदाहरण—ध्यारका कावाय १ योजन, उरलेघ १ योजन, विष्यं में शेवनगी में प्रमाण । १ योजनकी क्षृत परिचि ११ योजन । १ \div २ = १, १ \times १ = १, १ \times १ असरकेवका योजनीमें यावकर ।

अमरक्षेत्रके योजनम् आये दुत् यक्कलके धर्मागुळ बरनेपर इस उत्केव प्रवर्धम् आये हुत् पनकलको पन्द्रको छत्तीसक यन तीनसी बास्ट कराह, अवृतीस लाक क्रम इजार, छहती छत्त्वनसे गुणित करनेपर अमालधर्मान होने हैं।

उदाहरण—अमरक्षेत्रका उत्सेष बनवोजनमें बनकळ हैं; यक उत्सेष बन्दीष्ट मनाण बनोगुळ १५६६ =३६२२८७८६५६; है×३६२३८७८६५६=१३५८९९९। मनाण बनोगुळाँ अमरक्षेत्रका बनकळ ।

विग्रेपार्थ — यक उससेप शोजन में सात टाल अउसठ इजार उससेप्यार्गार्ग हैं। इस नियमसे यक उससेप प्राचन का का हाई। हैं। इस नियमसे यक उससेप्य प्राचन का का हाई। हो हो तियार स्वकट प्रस्कर गुणा करनेसे जितना एक्प आयमा उतने उसस्पर्यमार्ग हैं वस्सेप्याजनसे अमाणयोजन पांचसी गुणा बड़ा होता है, अतपद कर उससेप्याजन अमाणयोजन पांचसी गुणा बड़ा होता है, अतपद कर उसस्पर्याजन अमाणयोग्न करने हैं दिये उक अगुटोंक अमाणमें पांचसीक प्रतक्ष आता है। अस्पर्य अपनाम पांची है। अस्पर्य अपनाम पांची है। अस्पर्य असी है। अस्पर्य असी है। असी स्वयंत्र प्रसाणमें स्वयंत्र प्रसाणमें स्वयंत्र प्रसाणमें स्वयंत्र प्रसाण प्राची है। असी स्वयंत्र प्रसाण प्रसाण प्रसाण प्रसाण प्रसाण प्रसाण प्रसाण स्वयंत्र स्वयंत्र प्रसाण स्वयंत्र स्वयंत्य स्वयंत्र स्व

भारद्वीका कावाम उत्सेषयोजनक चार मार्गोमेंसे तीन मार्ग प्रमार है। विक उत्सेषये कावाम उत्सेषयोजनक चार मार्गोमेंसे तीन मार्ग प्रमार है। विक उत्सेषके कावते मार्ग्यमाण है, और यादस्य विष्क्रमसे व्यापा है। गोर्ग्हो सेन्द्रा इस

र वर्षव्यावश्यसामिद्विवेदी उपाण्यमसम्ब वनवर्गामाम् XXX वोदमानां वर्ष्याः विदानां वर्ष्याः वर्ष्याः वर्ष्याः वर्षयः विदानां वर्षः विदानां वर्षः वर्षयः वर्यः वर्षयः वर्ययः वर्षयः वर्षयः वर्ययः वर्ययः वर्षयः वर्ययः वर्ययः

तंभद्धं बाहरूरुं । एदे तिष्णि वि परोष्परं गुणिदे उस्सेघज्रोयणयणस्य संसेजजदिमागे। व्हिद । तं पण्णरहसदछचीसरूबेहि घणीकदेहि गुणिदे पमाणपणंगुलाणि हें।ति । :जापणायाम-चदुजोयणमुद्दसंखखेचफर्ठ —

> व्यासं तायःकृत्वा बदनदङोनं मुखार्थवर्गयुनम् । दिगुणं चनुर्विनकं सनामिकेडरियन् गणितमाहः ॥ १३ ॥

एदेण सत्तेण आणिय मुहही शुस्सेहसहिदुस्सेहचदुरुमाथेण गुणिय उस्सेहपणबीय-ग आणिय पुच्युत्तगुणगारेण गुणिदे पमाणघर्णगुळाणि होति । जीयणसहस्सायाम-

के लिये इन सीनोंके परस्पर गणित करनेपर उत्सेघयोजनके घनका संस्यातयां आग र भाता है। इसे पश्चहती छत्तांसके घनसे शुनित करनेपर गोन्हींके धनरूप होत्रके ब्रमाण-ग्रस भा जाते हैं।

उदाहरण- गोम्हीका भाषाम है योजना विष्कंग हैं। योजना वाहस्य हुरे योजना : देर = इरेट) हरेट × हरे = टहेरेट अलोध धनवीजनमें गीरहीहोत्रका धनकत ! 'r × १६२१८७८६५६ = ११९४१९१६ भ्रमाण बनांगुलीमें गोम्हाक्षेत्रका सनस्तर ।

बारह योजन सावामयाले और खार योजन मुख्याले शंबाक्षेत्रका क्षेत्रफल-व्यासको जनभी ही बार करके मर्थात् व्यासका जितमा प्रमाण है उत्तमीयार व्यासको हर जोड़नेपर जो सम्य भावे उसमेंसे मुख्के माथे बमाणको घटाकर, मुरुके माथे बमाणके को जोड़ दे। इसप्रकार जो संख्या आये उसे द्विश्वित करके पदचान खारका आग इसप्रकार को लच्च भाषे, उसे दांचका क्षेत्रकल कहते हैं ॥ १३ ॥

इस प्त्रमें लाकर बस देखिफलको मुखले क्षीन असेपसदित असेपके बीधे भागते ात करेक उसिध धनयोजन साकर और पूर्वोक्त गुजवारसे गुजित करनेपर धनकप रक्षेत्रके प्रमाणचर्नागुल ही जाते हैं।

६ सर्वपश्चक्षपरमागाद्रिपक्षेते वापणागोहीए वश्वश्रहोदाश्च ×× व्रश्तेशकोदणस्क निर्णाचकमारी ामी, संबद्धमानी विवसंभी, विवसंभद्धं बाइउँ । एदं तिकिक वि परेत्यरे टानिय प्रमाणवर्षादके वदे एवंडे बाँगीए ेस छन्द्रा तेदालनहरसगरतमञ्जानस्वेदि गुनिदयवंद्रला होति । ११९४१९६६ । ति. य. य- १९६५

र जायासक्ती सुद्दत्तिया सुद्दासमञ्ज्ञा । विद्वार वेहेन इटा कलानटस्त खेलकः ह RT. ERW.

३ सर्वदावद्यप्रमानद्विकोत्ते उत्पन्नवीहदिदश्य बद्धश्रोताह्या × अ वास्त्रवीदयादाव-वडक्रोह्यहृद्द-धेरुवर्तं स्थातं सावत्वता बदनदरीनं मुलार्थंबर्द्धतः। हिनुष चनुनिवर्णं स्वाधिकेनंदत् रावित्वत्वः ॥ एरेक न सेसफ्टयानिके तरवीर जस्तेहमीयनाच सवति वह । आहामे सुर लोहिन पुचरति भाषायसहिदपुष्यक्रितं र नायार संखायारहिये क्षेत्रे क्ष पूरेण शालेय बाहर बाविये येथ जीवनयवाल होदि ५ s द्रानादानीहरू मम्रदेतं पुण जोयणायामं अद्वजीयणुरसेहं जीयणद्वपरिहिविनसंगं ठविष निर्मे मुस्तहमुणमायामेण मुणिदे उस्तहजीयणस्त तिप्णि-अर्द्धमागा भवति । ते 🔫

कीरमाणे पष्णरहसद-छचीसरुवेहि घणीकदेहि विष्णिसय-वासहिकांडीहि गर सहस्साहिय-अट्टचीसलक्खेहि छस्सद्-छप्पण्णेहि य उस्सेघ्षणजीयणाणि गुन्ति घणगुलाणि हवंति । गोम्हि-आयामा उस्सेघजोयणतिव्य चउनमागो, तरहमागो सिस्

पक योजन लम्बे, आधे योजन ऊंचे और आधे योजनकी परिधिममाण विकास धामरश्चिको स्थापित करके, विष्कंमके आधिको उत्संघसे गुणा करके, जो हाथ आहे हैं भाषामसे गुणित करनेपर एक योजनके तीन आगोंमेंसे आड आग छात्र आते हैं। हैर ब भगरक्षेत्रका यनफल है। उदाहरण—श्रमरका अध्याम १ योजन, उत्सेध ई योजन, विष्कंम ई योजनशिर्त

प्रमाण । है योजनकी स्यूल परिधि १६ योजन । $\frac{3}{2} \div 2 = \frac{3}{2} : \frac{3}{2} \times \frac{5}{4} = \frac{2}{2} : \frac{3}{2} \times \frac{5}{4}$ भ्रमरक्षेत्रका योजनीमें घनफल । धमरक्षेत्रके योजनमें साथ हुए धनफलके धनांगुल करनेपर इस उसीप धन्योजन

भावे हुए घनफलको पन्ह्रदक्षी छत्तीसके घन तीनसी बासड करोड़, अहतीस टाब, अर्स हजार, एदसी छप्पनसे गुणित करनेपर प्रमाणयनांगुल होते हैं।

उदाहरण—अमरक्षेत्रका उत्सेघ धनयोजनमें बनफल है: एक उत्सेघ धन्योजन ममाण मनांगुन्ह १५१६ =३६२३८७८६५६; है×३६२३८७८६५६=१३५८९५१

ममाच बनांगुटॉमें भ्रमरक्षेत्रका बनफड़। विशेषार्थ - एक उस्तेष योजनमें सात साल बहसड हजार उस्तेषवर्णां ।

र । इस नियमसे यह करोध्यमन्योजनके यनांगुल करनेपर उसमें सात लास आसा च्ये तीनवार श्वकर प्रस्पर गुणा करनेस जितना सहय आयगा उतने उन्सेयवनानु । हत्तेपदीयमने प्रमाणयोगम् पाँचता ग्रामा वहा होता है, अतप्य हन उत्तेपदर्गा

अमानधर्मागुर करनेक त्रिये उक्त अंगुलोंक प्रमाणमें पांचसीके भनका मान १६२१८७८६९६ बर्नागुळ बा जाते हैं, और यह राशि १५३६ € बनप्रमाण पहती है। गार्गाचा सावास उरमेघयाजनक चार मार्गार्मेक्षे सीन मार्ग प्रमाण पर्वा दर्खपदे आहर्रे मानवमाण है, बार बाहस्य विष्ट्रमसे आधा है। गोसी होता

र वेदगरामक्षणानारहित्योत उत्पत्नसमस्य उत्परनोगाहर्ग xxx बोदगावार वर्षा man general nienter feetan feetan beteinten fint tegiliante Neantagater at § 1 5 animantel afraim denatedigettejd endatgenen einel atte bei करेंदि इण्यापन्तुवाचे दृशते । सः चंद १६५८९५८४५६ । ति, पः पः, १९५,

विक्संमद्धं बाहरूरं । एदं विण्यि व परोप्परं गुणिदं उस्सेषवायणणस्य संसेज्वदिमाणा आगच्छोद् । तं यल्णरहायद्वजीवस्त्रेहि यणीवस्त्रीहे गुणिदं पमाणयर्णगुरुाणि हेति । पारह्योपणायाम-चदुवोषणधृहसंवर्षेचफर्ड—

> ब्यासं सावक्ष्या बदनदटोनं मुखार्थवर्गयुनम् । दिगुणं चनुर्विनकं सनाभिकेऽस्मिन् गणिनमाहः ॥ १३ ॥

यदेव सुचेव आणिय सुदर्द-कुस्सेहसहिदुस्सेहनदुव्सागेव गुणिय उस्सेहमगक्रीय-,वाचि आणिय पुच्चचगुणगारेच गुणिदे वमावपर्वगुरुतिव हाँति' । जोपनाहरमायाम-

. स्टेनिक लिये इन सीमीके परस्पर गुणित करनेपर जारोधयोक्रमके प्रमण अंक्यानको साम साथ साता है। इसे पारहुक्ती ग्राजीसके प्रमासे गुणित करनेपर गीउटीके प्रमाप क्षेत्रके प्रमास-स्परीयुक्त मा जाते हैं।

ुद्राहरण्या नेनावीका कावास दे योजना विष्कंत है. योजना वाटस्य हुई योजन है × हुई = १६३३ १६३ × हुई = ३६६ जसीय सनयोजनमें सारदेशिकका सनयन । १९६१ × ६६२६८०८६५६ = १९९४९६६ समाय सनीगुरीये सीस्टोशिकना सनयना ।

बारह योजन भाषामधाले और बार योजन गुजयाले शंवशेषका शेषका --

व्यासको बहुनो है। बार कर के अर्थान व्यासका जिल्ला प्रशास है बनशीबार स्थानको रिकार जोड़नेवर जी स्मय आर्थ उससेंस मुनके आपे प्रशासको प्रशासन, गुरुके आपे प्रशासके प्रमान जोड़ है। इस्प्रमार जी संबंध अर्थ उसे दिश्लील करके परवान बारवा साम है। इसप्रमार जी स्मय आपे, उसे संबंध क्षेत्रफुट करने हैं। इस प्र

द्रत प्रवर्त लाकर वस देवपलको कुलते होन वस्तेपसंदित वस्तेपके बीधे आसीर गुनित वर्ष उस्तेप प्रत्योजन लावर और पूर्वीक गुणवास्ते कुलिन वर्णेन्ट प्रश्वच प्रव्योजने प्रमाणप्रतीमुल हो जाने हैं।

् वर्षप्रवाद्यामा देवके कथावर्षात् व्यवस्थात् अवस्थात् अभ्यक्षात् । अस्य वर्षात् लेवस्थाः विभाव अभ्याद्ये एरे विभाव व्यवस्थात् । वर्षायः वर्ष

्ति क्षांत्र केवारादिकों क्षांत्रक्षित्व व्यवस्थित्व व्यवस्थात्व क्षांत्रकार क्षेत्रकार विश्व क्षांत्रकार क्ष विदेश केवाराद्विके क्षांत्र क्षांत्रकार क्षांत्रकार क्षेत्रकार क्षांत्रकार क्षा

[1.

ममरखेर्चं पुण जीयणायामं अद्वजीयणुरसेहं जीयणद्वपरिहिनिनसंभं ठिन मुस्सहगुणमायामेण गुणिदे उस्सहजीयणस्स तिप्णि-अर्द्रमागा भवति । ते कीरमाण पप्णरहसद-छचीसरुवेहि घणीकदेहि विश्विसय-वासिहकोडीहि अहरके सहस्साहिय-अङ्ग्रनीसलक्षेत्रेहि छरसद्-छप्पण्णेहि य उरसेघघणजोयणाणि गुनिर घणगुरुर्गण हवेति । गोम्हि-आयामा उस्तेषज्ञायणतिष्ण चउन्नागो, तरहुमागे सिक्

पक योजन लम्बे, आधे योजन ऊंचे और आधे योजनकी परिधिन्नमाण विकास अमरक्षेत्रको स्थापित करके, विष्क्रमके आधेको उत्सेवसे गुणा करके, जो हाँ में भाषाससे गुणित करनेपर एक योजनके तीन झागाँमिसे आठ झाग छाछ आते हैं। और धमरक्षेत्रका घरफल है।

उदाहरण—समरका आयाम १ योजन, उत्तिध ई योजन, विष्कंम ई योजन शति प्रमाण । है योजनहीं स्यूल परिचि हैहें योजन । है \div र $= \frac{3}{5}$, है $= \frac{3}{5}$, $\frac{3}{5}$ \times है $= \frac{3}{5}$, $\frac{3}{5}$ \times है भ्रमरक्षेत्रका योजनोंमें घनफल ।

धमरक्षेत्रके योजनमें आये हुए धनफलके धनांगुल करनेपर इस उत्सेप सम्बोध आर्थ हुए धनफलको पन्हदर्श छश्चेसके घन विनर्ध बातठ करोड़, अइतीस हात, अप हजार, छहसी छप्पनसे गुणित करनेपर प्रमाणधर्नागुल होते 🕻।

उदाहरण—श्रमरक्षेत्रका उत्सेध धनयोजनमें धनफल है; यह उत्सेव धनयोज प्रमाण घर्नागुरु १५३६ = ३६२३८७८६५६; ३×३६२३८७८६५६=१३५८१५१। प्रमाण धर्मागुर्हीमें भ्रमरक्षेत्रका घनफर ।

विशेषार्थ - एक उत्तेष योजनमें सात छाख अउसठ हजार उत्तेषस्वांतुत्र है। इस नियमसे एक उत्सेघघनयोजने सात छात अहसठ हजार उत्सेघधन्य है। इस नियमसे एक उत्सेघघनयोजने घनांगुल करनेपर उत्तम सात छात अहस है को तीनवार रचकर प्रस्पर गुणा करनेस जितना रुच्च आपमा उतने उत्सेधवनीपुन ह वसंप्रयोजनसे प्रमाणयोजन यांचसी गुणा बहा होता है, अतप्य हन उसेप्रयोजनी प्रमाणयांजन करेंके प्रमाणपर्यागुल करनेके लिये उक्त अंगुलांके प्रमाणमें पांपसीके प्रवहा मार्ग है?

१६२३८०८६५६ घनांगुछ मा जाते हैं, और यह राशि १५३६ के घनप्रमाण पहती है। गारहीत मायाम उत्सेषयोजनेक बार मार्गोमेंसे सीन माग प्रमाण है। हिंदी हरसेपदे आटर्वे साम्प्रमाण है, बार बाहस्य विष्क्रमसे आपा है। गोम्ही होता

१ तपरास्वध्यस्यारद्वित्रक्षेते उत्पन्त्यससस्य उत्त्वस्योगाद्यं xxx श्रोवमाता^{हं सहर्}र्णः रिवितित्रक्षेत्रं अस्ति भारमद्भविद्यां देशव विश्वास्य उपन्यसम्य अवस्थितात् अ XX श्रीवमाताः वर्षः ।
भारमद्भविद्यां विश्वास्य देशव विश्वास्य प्रत्येत्ववायाये व श्वास्य उस्मेरशेषण्यः विश्वास्य वर्षः । बर है ! ते बहाबबनद्वा बोमान पृथ्वपानशीवहाशीय वानपादिवस्थानश्वता विवासमान करेंदि हालदर्वनृत्वाले इवति । तः चेद ११५८९५४४५६ । ति. व. व. १९५,

भद्वं बाहर्न्जं । पदे तिष्णि वि परोप्परं गुणिदे उस्क्षेपञ्चायणयणस्य संखेन्बदिमारो। छदि । तं पष्णरहसदछचीसरुवेहि पणीत्रदेहि गुणिदे पमाणपर्णगुरुविण हैं।ति । तेपणापाम-चदुज्ञोपणग्रहसंसखेचफर्ज—

> ष्यासं सावश्वना बदनदर्शनं मुखार्थवर्गयुनम् । दिगुणं चनुर्विभक्तं सनाभिकेऽरिमन् गणितमाहुः ॥ १३ ॥

एदेण सुचेण आणिय सुद्दी णुस्तेदसिंद्दुस्तेदचहुन्मामेण सुणिय उस्तेद्दपणजेय-आणिय पुट्युचगुणगारेण गुणिदे पमाणपणगुलाणि होति' । जोयणसदस्मायाम-

हिये इन शीमोंके परस्पर गुणित कार्यप्रयाजनको धनका संक्यानको स्नाय स्नाता है। इसे पान्नइकी छत्तीसके धनसे गुणित कार्यपर गोग्डीके समस्य शेषके प्रमायन छ सा जाते हैं।

उदाहरण्— गोग्डीका आयास है योजना विष्यंत्र हुँ योजना बाइच्य हुँ योजना हुँ = र्देश र्देश ४ हुँ = ट्रैंद्र वरक्षेय सनयोजनर्से गोर्ग्डाहोत्रका सनरात । ×१६२६८७८६५६ = ११९४९९६ प्रमाण सर्नागुरुधेंसं गोर्ग्डाहोत्रका सनरात ।

बारद्व योजन भाषामधाले और बार योजन मुख्याले शंबक्शेवका शेवपळ-

ध्यातको बतनी द्वी बार करके कर्णात् स्थातका जितना प्रमाण दे बननीवार स्वासको र कोड़नेयर को क्षम कार्य उसमेंत मुलके कार्य प्रमाणको पराकर, गुरक कांग्र प्रमाणके । कोड़ दें। रामकार की संबंधा कार्य करें। द्वितृतित करके परवान् वाच्या आग समझर को क्षम कार्य, उसे संख्या कोकपत्क करते दिंग रहे क

इस गुरुसे साकर उस केमजलको गुक्त होन अस्तेयनिहन अस्तेयके बीचे आयोग । करेंक उसिप पत्योजन साकर और पूर्वोण गुव्यवस्थे गुल्नि वरनेवर सनक्ष किसे प्रमाणधर्मानुस हो जाते हैं।

६ वर्षप्रकारमाण्डियोरी स्थानमानित् कार्यक्षांत्र कर्यात्राह्य ४०० अनेहर्माण्यन निष्यास्थ्यात्रे १, सहामानित्रे विश्वाने स्थित्रे मानित्रे वाहरे १० दे शिक्षा क्रियोर्ग्य स्थानमानित्रे स्थाने व्यवस्थानित्रे मानित्र्योद्धा

र आसामवरी मुद्दत्तिः हृद्यातमञ्जाना । विद्वान वृद्य वृद्य त्यावयन्त स्वेत्रकः ह . १९७.

ह वर्षपायकराबादि विभेत्ते रायस्पर्वत् देवतः वदारते गाहिष्य मानविष्णपायन्यव्यक्षेत्रपाह्न यस्कं दर्शतः रायस्य वा वरवरत्वेते गुरूपर्वत्येष्ट्रपा अद्भाग महामान कर्यात्वकाद्य वस्त्रपाह्न हुन्यस्य विभावकापिते देवति वस्त्रीयस्यास्य स्वाते । यस्य स्वातेष्ट वस्त्रपाह्म वस्त्रपाह्म स्वात्रपाह्म स्वात्रपाह्म स्व

à

पंचमदुस्मेह-वदद्वित्यार-महामञ्ज्यसेचं पिट्टॅंग्रंखेजजाणि पमाणवणंगुराणि होति। स्प पर्गेशुटस्स संसेज्जिदिमागं पिनेस्वितय अद्वेण छिल्ले वि संसेज्जिलि पमाणवंगुर्वे होति पि सिद्धं। किं च विहारविदेसत्याणे ण तिरिनस्रक्षेचस्स पमाणवं, किंतु रेस्केले पर्यंशुटस्स संसेज्जिदिमाणमेचसुदेण संसेज्जिजिशाहणार स्वित्रमाणदेवोगाहणार केलेल पर्गेशुटन्तु स्टमादो । तेण संसेज्जिपणंगुरोगाहणार सुणेयन्त्रसिदि । असंसेज्जिकेले

उदाहरण— दांचक्षेत्रका मावाम १२ योजनः मुख ४ योजन ।

 $\{s \notin x \le -36s^2, 56s + \frac{s}{2} = 6s^2, \{s \le + (\frac{s}{2}), = 6s \le + s = \}\}$

१२ — ४ = ८; १२ + ८ = २०; २० + ४ = ५; धर ४ व = 1 क्याप प्रवासमीय संगरितका प्रवासन । ३६५ × ३६२३८७८६५६ = १३६२३५॥॥॥ स्थाप प्रतिस्था प्रवासन

वक हजार थोकन व्यायाम, पांचली योकन उरलेप और उत्तिप्रके मधे वर्ष हत्ते थे शेवन विश्वारवाणे महामास्यका क्षेत्र भी धनफळकप करनेयर संस्थान प्रमासन प्रकृतिकार

दराहरण—सहामाश्यका भाषाम १००० योजना उत्तेष ५०० योजना विश्वं १४९ १००० ४ ५०० ४,५००००। ५,००००० ४२५० = १२५,००००० योजनी यनस्य । १५५००० ४ ११११८४६५१ = ४५१९८४८३२००००००० समाय बर्गालीस सह सारवका वर्णा

हमदबार इन्हर सदाग्रहमारम्थे आये दूर इन प्रभागपनित्रीय इतीत्री रोक्यम् वे सार्वात्रमाम स्वयम्ब सदगाहनारो प्रशास करके तो बाह हो हो सार्थे लि सरवर्ग की संस्थान प्रमास सनीतृत्व हो रहते हैं, यह निस्त हुआ।

द्वा वा यह है कि विदारवारक्षात्रमें निर्देशों शेवकी प्रमाणना (व्याप) विदेशिक शेवकी प्रमाणना (व्याप) विदेशिक शेवकी प्रमाणना (व्याप) विदेशिक शेवकी प्रमाणना (व्याप) विदेशिक स्थानि माणानी क्षाणना के क्

 बहुरता वि देवा अस्थि वि च ण, तेसि देवाणममेखेजबिमागचेण पराणतामावादी । ते हिरो वाब्बर १ 'तिरियलोगस्स मेखेज्जिदिमाए' वि बस्खाणाहो । तिरियलोगस्य समेजितिः भागचं कर्ष १ तिरियलीमो णाम जीयगठब्खसचमामभेचम् विश्वतिहल्लनमपरामेची । नापा पाप का कार्यास्त्राच्या व्यापा विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य वंश्वेजजिर्भागे वि वृत्ते । अङ्गृह्यज्ञाह्येचार्रो विहारविहित्तत्याणजीवश्चचममध्येजगुणे । दुरी १

र्गुका - अर्थ स्थात योजनप्रमाण विद्वार करनेवाले भी देव होते हैं।

समाधान- नहीं, क्यों,क, अलंक्यात योजनप्रमाण विशाद करनवान देव सर्व वेबराशिके असंख्यात्वे आत्रवात्र हैं, बतः उनकी बर्दादर प्रधानता नहीं है ।

समाधान-शिष्यादृष्टि विदारश्वास्यस्थान रादिः 'तिर्वेग्टोकके संस्थानधे भागप्रमान र्शका - यह किस प्रमाणसे जाना जाता है है

क्षेत्रमं दहती है " इसमकारके म्याबयानसे उक्त बाम आनी जानी है।

र्शका-ित्रिच्याराष्ट्रि विद्वारवास्थ्यश्यान शांतिके रहवेका क्षेत्र तिर्वाष्ट्रीकके संस्थानके

समाधान — एक लाव वीजनमें सातवा आग देवेले जितने सुरुपेशुक्त स्वय व्याव तामाण महत्त्वहण जगमनत्त्रमण निवस्तान है। इस पूर्वीक विद्वारणस्वरणमन्य शेवमे माजित वरनेपर संभवान क्य छन्य बाते हैं, दशीरिय तिवेग्सो की संवयत वे मागयमां शेवमे

मिध्याराष्टि विहारवश्यवस्थानराशि रहती है। एता वहा है।

वित्रेवार्ष- तिवंग्लोक पूर्व-विधान यह राह बोहा, उत्तर-विशव लान राह हरवा भीर एक लाख योजन ऊंचा है। इसे जगप्रतरम्परे बरनेके तिये एक लाल योजनमें ररतन भाग देना चाहिय, वर्गीक, तिर्थेन्सिक भी उत्तर दृश्यि कात राहु हो है हैं। दिण्यु पूर्व प्रीम की एक राहुमात्र है उसे सात राहुममाण प्रवस्थित करनेक हिये उसे प्रमे सातवा प्र देनेसे उस्सेष यक लाख वोजनका सातवां आग रह जाता है, और पूर्व वीधमर्थे नात न प्रमाण रोज हो जाता है। इसप्रकार यक लाख योजनक सामग्रे आगमें जिसने स्टर्गांत क्ताप्रमाण वाहरणकण कममतहममाण नियंग्लोक वा जाता है। यह योजनमें ५६८०० सूच्यं होते हैं, इसलिये चक लाल योजनके सामध् आतम १०९०१४६८९३६ गुरुवेगुल है शतपण १०९७१४८८५७१ े शुरूपगुल्प्रमाण जनमतर नियंत्रोह जानना चारिय । अन्तर्ग संस्थानय भागवा जगध्यस्य भाग दनस अल्पया लगारावा प्रमाण आना दे, धार स्वचात वक आगम्माण विद्वारवन्यस्य सर्गाता है । विद्वारयन्यस्यात्रगाँदामें एवं इ माध्यम अवशाहना शंत्यात धनांगुल है ता उपयुन शांतव। दितता शत होगा, हर भैशासिक बरमेनर विशास स्वस्थानराताक क्षेत्र इ.कटान सुच्यान गांधन क्रमण

विद्वारम्भवत्थान अधिका क्षेत्र हार्द श्रीयमे असक्यानगुष्टा है क्योर बा जाता दे जो निर्धश्लीक के संबदानव आगव्याण है।

पंचमदुस्तेह-तद्दिवित्यार-महामञ्ज्लेचं िर्दुवंसिञ्जाणि पमाणवर्णगुरुणि होते। स्प पर्गगुरुस्त गंसेन्जिदिमार्ग पित्तिवित्य अदिण हिष्णे वि संसेज्जाणि पमाणवर्षक्षे होति वि सिद्धं। कि च विद्याविद्यारपाणे ण तिरिक्ससेवस्स पमाणवर्ग, किंतु देशकेष्ण पर्गगुरुस्त संसेज्जिदिमार्गवेषपुरुण संसेज्जजीयणसहस्य विद्यमाणदेवीणहत्यार् कंति पर्गगुरुत्तु अरुमार्थे। । तेण संसेज्ज्ञभणगुरुशेसाहपाए गुणेयव्यमिदि । असंसन्त्रवेषणा

उदाहरण— शंसलेयका मायास १२ योजन; मुन्न ४ योजन । १२ \times १२ = १४४; १४४ – ξ = १४२; १४२ + (ξ)' = १४२ + १ = ξ 11, १४६ \times २ = १९२; १९२ ÷ ४ = १९२;

१२ = 8 = 6; १२ + 6 = 6; २० + 8 = 6; $0^{\frac{1}{2}} \times 9 = \frac{1}{2}$ उस्तेय यनवोजनोंमें शंक्सियका यनकर । ३६५ × ३६२३८७८६९ = १३६२३१५३८४४ क्रांत प्रतिमुगों शंक्सियका यनकर ।

शुष्ठ होता है। उद्देश्या—प्रदामशयका सायाम १००० योजना उत्सेख ५०० योजना सिखंस १७ १००० ४ ५०० = ५०००००। ५००००० ४२५० = १२५००००० योजनीम मनस्य । १२००० ४ १११२८३८६५१ = ४९२९८४८३२०००००००० प्रमाय चर्तासुनीम सह साय्यका द्रवस्त्र।

हानप्रकार उन्हर स्वावाहनाव्यते स्रोपे हुए इन प्रमाणपनागुरुमि स्वाविका संक्षानि साम्यामा अपन्य स्वावाहनाका प्रस्ति करके जो बाह हो उसे साम्यास संक्षानि साम्यामा अपन्य स्वावाहनाको प्रस्तित करके जो बाह हो उसे साम्यास

दूमरी कान यह दे कि विदारवास्त्रक्षात्र निर्धे हु का । दूमरी कान यह दे कि विदारवास्त्रक्षात्र निर्धे वोके क्षेत्रको अमामता (अपने) वर्षी है, किन्तु देवोसको हो ज्यातना है, व्योक्ति, अत्रतंत्रत्वे के हत्वत्रवे कान्त्रक कुक्करने कर्याद विश्वेष और उन्नेयकराते विदार करनेवाले देवोधे कंच्यान हत्त्र है। समझ क्ष्यपादनार यहनेक्करूपे संख्यान यहांगुद्र पाय जाने हैं, इमिनेव विशाहनार्त्व राहित्यों संस्थात वर्षानुस्वय वयवाहनाम गुविन करना व्यादिये।

देश्यर-इत्येषपत पान पानवान्तेत्र वृत्यदे पान्नोत्वर्गते शिव्यवसम्बद्धी होते देशे । हर्षे प्रशासनाने वेद प्रशासन वदे प्रशासनानेत्रवरम्यः पानवन्तेत्रवर्गति होतो स्मात्रस्य सम्बद्धान्त्रवर्गति स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्व

े वरणान्यराज्यात्रक्षकर्वक हिते च.च. राष्ट्रः वरणान्या वर्षाव्यक्षः वरणान्यराज्यात्रः इत्राहित्वं वरणान्यप्रविद्यक्षः वरणान्यप्रविद्यक्षः वरणान्यस्य प्रविद्यक्षः वरणान्यस्य वरणानस्य वरणानस्य वरणानस्य वरणान्यस्य वरणानस्य वरणानस्य वरणानस्य वरणानस्य वरणान

विहाता वि देवा अस्य वि च ण, तेलि देवागममंदोज्जदिमामचेण पराणवामायादो । त दो पारवेरे । 'तिश्वितानस्म मेराज्वित्माण्' वि वस्ताणादो । तिश्वितानस्य संवेजितिः १, १, २.] ागमं कर्ष । निर्देयलेची बाम जीयगलक्स्यत्वमागमेचर्यावश्रीमुलगहल्लनापदरमेची । पुण्यान्त्रविद्वारयदिमात्याचार्यतेणात्राहृदे संखेज्यस्थाणं स्थापति । तेण् तिरियसोगस्स संरोहजदिमारो वि पुर्व । अहुद्रअस्वादो विहारविद्याणजीवस्वमसंरोज्जपुर्व । छुरो है

रंगा - अनं पपात योजनममाण विदार करनेवाले भी देव होते हैं? रामाधान - नहीं, क्यों कि, बलंबवात योजनवमान विदार करनेवाले देव सर्व देवगारिके असंख्यातचे भागमात्र है, जतः उनको यहाँदर प्रधानता नहीं है।

समापान-सिरवादारे विदारवास्वस्थान राशि 'तिर्थेग्लोकके श्रववातर्थे मागप्रमाज शुका-यह किल प्रमाणले जाना जाता है !

होग्रम रहती है ? इस्प्रकारके ज्यावयानसे उक्त बात जानी जाती है।

रीका-भिरवाराष्ट्रि विद्यात्वास्थान गादिके रहवेका क्षेत्र तिर्वरहोहके संख्वातर्वे समाधान — एक लाख योजनम् सातका आग देवेले तितने स्टब्येगुल लत्य आये

ताममाण बहस्यक्ष जामतश्ममाण तिथात्मक है। इसे पूर्वोक विहासस्यश्यानकर क्षेत्रसे माजित करनेपर संभ्यान रूप रुग्ध बाते हैं, इशीलिय शिवंग्लोकके संस्थातय सागम्याण सेममें

मिध्याराष्टि विदारवस्थानसाहा रहती है, येवा रहा है। विश्वेवार्ष — तिर्वेग्लोक पूर्व-पश्चिम यह राजु चीड़ा, उत्तर-दक्षिण सात राजु सन्तर और पक शाल योजन ऊंचा है। इसे जगनतरु पथे करने के लिये पक शास योजनमें सातव मान देना चाहिय, वर्षोक्ति, तिर्थेन्सीक भी उत्तर-वृक्षिण सात राहु तो है ही, किन्तु पूर्ण विश्व को दक्ष शहुमात्र है उसे सात राजुममाण प्रकृतियत करनेक हिन्द उस्तेममें सातका भ देनेत उसिंघ वक लाख योजनवा सातवां जाग रह जाता है, और पूर्व पश्चिममें सात र क्रमाण क्षेत्र हो जाता है। इसक्रकार यक लाख योजनक सातवें मागर्मे कितने सूच्येगुछ ह क्तप्रमाण वाहस्यक्रप क्रममत्त्रममाण तिर्वच्छोक वा जाता है। यक वोजनमें ७६८०० सूच्यं होते हैं, इसलिये यक लाल योजनके सातवें भागमें १०९,०१४२८५७१ई स्च्यंगुल हैं सतपत १०९८१४८८५८१ े स्टब्स्ट्रियमाण जमबतर तिथालोक जानना चारिये। सतरां श्चिमात्रय आरावः जगध्वरमें आग देनसं चलपमां तरादिका प्रमाण भाग है, और संस्थात यक सामप्रसाण विद्वारयनयस्थानगाति है । विद्वारयनयस्थानगातिसे एक अ मध्यस क्षरताहजा संस्थात धर्नामुळ हे ता उपयुक्त सार्वाण (कतना क्षत्र होता, स भैशांतक करनेपर विशासस्वस्थानशीतक क्षेत्र संस्थात सच्चेमुल मुस्ति जगायत मा जाता है जो तिर्थश्हीकके संबंधातय आगाप्रमाण है।

विद्वारयस्वस्थाम अधिका क्षेत्र पृथ्वे द्वीवस असंक्यातगुणा है, वर्षोक,

अड्ढाइजिम्म संसेजपमाणघर्णगुलदंसणादो ।

वेउन्त्रियससुग्याद्गद्मिच्छाइट्टी केवडि खेत्ते, रहेगस्स अमेलेअदि मागे, रेहें लोगाणमसंखेआदिभागे, तिरियलोगस्य संयेजनदिमागे, अट्टाइन्जादो असंबेडनगुत्रे। एव पुष्यं व ओवट्टणा कायच्या। णवरि वेउन्यियसमुग्यादस्स जोदिमियरामी मनदंदृस्को पहाणा, तेण बोदसियदेवाणं संखेजबदिमागस्स संखेजबधर्णगुळागि गुणगारी टनेपनी। कुदो १ संखेज्जजोयणसहरमं विजन्यमागदेवाणमुबरुमादो । असम्बज्जजोयणाणि किन् भिय विजन्नता देवा अत्यि चि चे ण, तेसि देवाणमसंविज्जिदिमागताते । सगोहिरोत्तमेचं सब्धे देवा विअव्यंति चि के वि मणंति, तं ण घडदे, ' निरियहोगास संखेज्जदिमागे ' चि वक्खाणादो । निच्छाइद्विस्स सेस-तिष्णि विसेसणाणि ण संपर्वति, तकारणसंजमादिगुणाणममावादो । मिच्छाइद्विस्स सत्याणादी सत्त विवेसा सुत्तेण अगुरिहा

द्वीपमें संख्यान प्रमाण घनांगुल ही देखे जाते हैं।

पैकिषिकसमुदातको प्राप्त हुए मिरपादिए जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं। सर्थ होक्के सर् स्यात्वें भागप्रमाण क्षेत्रमें, कर्धछोक और अधोलोकके असंस्थातवें मागप्रमाण क्षेत्रमें, हिर्द म्होकके संस्थातचे सागप्रमाण क्षेत्रमें तथा बढ़ाई डीवसे ससंस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। यह पर अपवर्धना पहलेके समान कर लेना चाहिये । हतनी विद्येषता है कि वैक्रियकसमुद्राहर्न सात घतुप उत्सेघरुप मधगाहनासे युक्त ज्योतिष्टदेवतादि प्रधान है , इसिनेचे ज्योतिष देपोंके संक्यातमें मागममाण यैकियिकसमुडातयुक्त शादीका क्षेत्र छानेके हिये संस्थात पनांगुल गुणकार स्थापित करना चादिये, क्योंकि, संक्यात हजार योजनममाम विकिया करनेवाछे देव पाये जाते हैं।

र्शका— मसंब्यात योजन क्षेत्रको शेककर विक्रिया करनेवाले मी देव पाये जाने हैं!

समाधान-नहीं, क्योंकि, असंस्थात योजमनमाण विकिया करनेपाले देव सामाय देशों है सम्बरावयें मागमात्र ही होते हैं। दितने ही सामार्थ ऐसा कहते हैं कि समी हैं अपने अयधिकानके शेत्रप्रमाण विकिया करते हैं । परन्तु उनका यह कथन घटित नहीं होते है, वर्षोहि, पित्रिवेदसमुद्धातको प्राप्त हुई राशि 'सिवेग्टोकके संरवातवे सागप्रमाण सुर्वे रहती है ' यमा ध्याच्यान देखा जाना है।

मिम्याहारी जीवराशिके दीव तीन विशेषण अर्थान् आहारकसमुदात, तैज्ञससमुदान भीर देविहसमुद्धात संमय नहीं हैं, प्यांति, इनके कारणमृत संयमादि गुणीका मिष्याहिंद सदाव है।

र्वेदा - स्वस्थानादि सान विशेषण स्थापे नहीं कहे गये हैं, किर मी वे मिरणारी

[ं] र निष्ठितकारिक्कें वात्राध्वाति तृत् विद्वार्थता । पूर्वि अमुराबुद्धे महत्रदेश दश दिवना 1, 141.

किया कि प्रभे व्यवस्थि आसीरप्यांगामदुवितारो। किया 'मिन्छारिही' इदि सामण्यययेका ग्रेट मक वि भिन्छारिहिविसेमा खनिदा चेत, यद्व्यदिरितामिन्छारिहीणम् भावादो। नेन चकारि वि लेला सुनेक खनिदा चेत, सेसचदुर्व्ह लेलाकं लेलापुर्धभूदाण-मधुरतेमादो। नरहा सुक्षमंबद्धवेदे वक्साक्षमिदि।

सासणसम्मार्श्विषहुडि जान अजोगिकेविल ति केविडि खेते, स्रोगस्स असंक्षेज्जदिभाएं ॥ ३ ॥

जीवने पाये जाते हैं. यह देखे जाना जाता है ?

समापान — मिडपाटांट जीवने न्यन्यान व्यति सात विरोधन वाचे जाते हैं, यह बात मार्चार्यवरंवरासे भावे हुए उपनेशसे जानी जाती है !

दूसरी यह बात है कि सुत्रमें भावे हुए 'मिप्यादारि' इस सामान्य यसनले स्वस्थान भावि सात विदेशका मी मिस्यादारिक विदेश हैं, यह स्वित हो ही जाना है, क्योंकि, इनके छोड़कर मिस्यादिक जीव नहीं चारे जाते हैं। इसीवदार वनलोकके मंतिरिक्त उत्तर्यलेकि, भ्योंकिक, तिर्यादीक और स्वृत्त द्वारिकस्थायी ठोक वे बार ठोक में स्वर्श सुवित हो हैं। ज.ते हैं, क्योंकि, चनडोक्त पृथाप्त उत्तर्यक्त देश का सहीं वाये जाते हैं। इसिक्ये स्वरमानस्वयानराशि लाविका प्याववान नामसे संबद्ध हो है।

सासादनसम्पर्टाट गुणस्थानते छेकर अवोधिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानके जीव कितन क्षेत्रमें रहते हैं है लोकके असंख्यातवें भागप्रपाण क्षेत्रमें रहते

भव इस स्वका अर्थ कहते हैं। वद्याप व्यवस्थावाची अध्ति क्षापके बहसे सभी गुणस्थानिक संग्रद संभव है, हो भी वहांवर सर्वागिककारी गुणस्थानक भ्रवण नहीं करना स्वाहिंग, नर्भीक, नांग कहा जानेवाला इसका चायक स्व बेदना जाता है। स्वस्थानस्वस्थान विहारयम्परधान, वेदनासमुद्धान, स्वावसमुद्धान और विकाशिक्समुद्धानकस्परे परिवात हुए साधानुतनस्थारांहिं, सावगिमप्रवाहिंद और सक्वेयतस्थादिंद जांच कितने क्षेत्रमें रहेत हैं। लेकने ससंवयानमें जागवानान क्षेत्रमें, उपवेटोक व्यक्ति संव लेकने क्षेत्रमें स्वति

१ सम्बद्धन्यस्ट्रभादिनाम्बर्गण्डेन्स्यन्तानी कोवरेगासंस्थेयसायः । स सि. १, ८. सासायगार् सप्टे टोपस्स अस्त्यपन्ति सार्यास्य । पण्डा, २, ९६.

अच्छीते । तं कर्ष १ प्रेर्सि तिन्दं गुणहाणाणं सोचम्मीमाणसामी पराणे । तेनिमेणका सचहरपुरसेहा, अंगुलमणणाए अहमहिमदुरमेषंगुन्यमाणां, एत्रम दममागितस्त्रमं। छुदे । वदी देव-मणुरस-णेरहपाणमुरसेषा दम-णव-अहनाल्यमाणेण मणिरी । प्रेणे वासद्वं विगयप विग्राणिय अहमहिमदुरमेषंगुलिहं गुणिय पणीक्रद्वंनमरंगुलेहि अतिर्दे , प्रमाणपणीगुलस्स संसेज्जदिमाणे आगन्छि । एत्ण निन्दं गुणहाणाणं सत्याणारिगर्ते जीपरासिस्स संसेजमाणे संसेजदिमाणे वामुणेर्दं निग्हं गुणहाणाणं सत्याणारिगर्ते जीपरासिस्स संसेजमाणे संसेजदिमाणे वामुणेर्दं निग्हं गुणहाणाणं सत्याणारिगर्ते निग्हं गुणहाणाणं सत्याणारिगरे निग्हं गुणहाणाणं सत्याणारिगरे निग्हं गुणहाणाणे सत्याणारिगरे निग्हं गुणहा

ं क्षेत्रमें भीर अवाईद्वीयसे मसंख्यानगुण क्षेत्रमें रहने हैं।

शंका — यह कैसे ?

समापान-- इन शीन गुणस्थानोमें सीधर्म और वेशानकरासंबन्धी देवाति प्रवत है। उनकी अवग्रहना सात हाय उत्सेषकर है, और अंगुळकी बवेशा गणना करनेगर वह

अड्सड अंगुलवमाण है । इसके दशवें भागप्रमाण उस अवगाहनाका विश्क्षम है । युका — यहांपर उस्तेषके दशवें भागप्रमाण विश्क्षम क्यों लिया है !

समाधान — च्ंिक देव, मनुष्य और नार्राक्योंका उत्सेच दश, मी और आठ ताड़ ममाणसे कहा गया है, इसिटिये यहांपर उत्सेचके दशवें मागप्रमाण विरक्षम दिया है।

पुना ज्यासके आधिका वर्ग करके और उसे कृता सामप्रमाण विश्वम लिया व पुना ज्यासके आधिका वर्ग करके और उसे कृता करके अनत्वर वक्रती आग-उत्तेषके अंगुलींसे गृणित करके पांचसी अंगुलींसे वनसे अपवार्तित करनेपर मनाय का गृण्डका संख्यातयां भाग रूप्य भाता है। इससे सासादनसम्पर्दारि आहि तीन गुण्यामाँ। स्वस्थानस्वस्थान आदि राशियां औ कि सासादनसम्पर्दारि आहि भावराधिक उत्तरीत संख्यातवें संख्यातवें मागवमाण हैं, उन्हें गुणित करनेपर तीन गुणस्थानों से स्वस्थानस्वस्थान

निर्वेषार्थ — यहां स्यस्यानादि वद्विधवत सासादनादि तीन गुणस्यानवर्ती द्वीं मनादे स्वाप्त सामादनादि तीन गुणस्यानवर्ती द्वीं मनादे स्वीप्त सासादनादि तीन गुणस्यानवर्ती द्वीं मनादे स्वीप्त स्वाप्त सामादि स्वाप्त सामादि स्वाप्त स्वाप्त सामादि स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त सामादि स्वाप्त स

उत्सेच १६८ बंगुल, विष्करम <mark>१६८</mark> बंगुल ।

(१६८ : १) × २ × १६८ एक देवकी सवगाहनाके उत्सेध धनांगुल।

णविर वेदण-कसायखेवाणि णविर शुजेयच्याणि, सरीरतितृणविक्यंभादा । विरातवेविध्यपदाणं संक्षेत्रज्ञाणि पणेशुलाणि । अथवा वेदणादिणा सरीरतितृणमसुग्यादं हरेंना
सह पोवा वि मन्त्रिमगुणनारी णवहरूवपमाणो होदि वि । एट्रेहि टोपे भागे दिदे रुद्धे
विरतेद्व एकेक्टरत रुवस्य टोगं समर्थदंदं बाद्य हिण्णे एगमानो एदेहि रुद्धवेचं होदि ।
बहुद्योगपमाण तिष्णि रुज्यबहर्ष ज्यायदंदं । एत्य वि ओवहणा पुर्व व बादस्या । असीरायमाणे विष्य रुज्यबहर्ष ज्यायदंदं । तथा चेव ओवहणा पुर्व व बादस्या । स्वाय्या।
जीयणनस्यः सच्यास्याद्वर्लं जयपदंदं । स्या वि ओवहणा पुर्व व बायस्या। एम्य
विरियलोगपमाणे जाणिश्जमणे विवरंबमायामिहि एमरन्युपमाणमेव निर्म होगालम-

यह राति ममान्यमांगुरुके संन्यातवें मान हुई । दले सीवर्ष देतान स्वर्गादी गास्त-दमादि तीन गुणस्यानवर्षी शतियांते गुचा करनेपर तीवों गुणस्यात्रीके स्वर्गासादि स्वृति शेवोंका ममान भागत है, जो तीवों होकाँके असंस्थानयें भाग तथा अशर्र हीपरे कसंस्थान गुजा दोता है।

संनेत्रबदिमांगे निरियलोगो होदि चि के वि आइरिया मणेति, तं श घडदे, पुमन्तुर गमेन सह विरोधा । को सो पुष्तव्यवस्थान ? चत्तारि-तिष्णि-रज्जुवाहन्त्रज्ञापर्यसम अय-उड्डनोगा, सचरञ्जुबाइल्स्टबगपद्रपमाणो सब्बसोगो चि । माणुसहैनगम्ब पन्दानीय्बोयनसद्महस्सविक्संमें बोयणसद्महस्ससेधं । पूणी विक्संग्रसेवे 🤻 सानि सरिय-

ब्यामं पोडरागुनिनं योडरासहितं विख्यक्षेर्यकम् । म्यासं त्रिगुणितसहितं सूत्रमादि तद्भवेसस्यमम् ॥ १४ ॥

करेतीक, इन नीत शोकोंके असंव्यातयें सागममाण क्षेत्रमें तिर्पालीक है, वेता किने है करवार करते हैं, पांतु उनका इसप्रकारका कथन धारित महीं होता है, वर्षोह, इस क्लक दर्देने शीकार क्रिये गये कदानके साथ विरोध माता है।

ग्रेहा - बर परने स्थातार किया गया कथन कीनसा है !

गमापान-नार रातु मोटा भीर जनमतरप्रमाण श्रंदा थीडा संघोतोड है। तैर राह भीता भीर जनवन्त्रमान लेवा कीवा कर्यलोक है। सात रातु मोटा भीर अगर्या कारण राष्ट्रा चौता सर्वेत्रोक है, यही यह पूर्व स्थीकार किया गया कथन है।

देशहीन शाम योजन विश्वंभक्त भीर यक्त शाम योजन केंगा मातुरहोत्र है। हैं।

कुर्येल मुक्तारस्य शेवमंत्राची विकास बीट अनेचके बीगुल करके-

अरभदे! मं कहने गुना कर, युनाशोलह जोड़े, युना तीन वह बीट वह बर्या र वह हैरहुदा झम्म देवे और लासका निमुता जाड़ देवे, तो सूत्रमने भी सूद्रम गरिधिश प्रमाप

mer til te s रिदेशार्व - वर्षाया मेहणावार क्षेत्रकी परिधिका ब्रमाण क्षानेवी प्रक्रिया बनर्ली ह है। बनुष क्रान्ये में परिविधा विकार क्यांगरी निगुणा है विदा शाना है, बंदा क रिन्दे कीई (वि. मा. १०) इससे भी स्वस्थान त्राचा स्थापन बनवाया नहीं बस-विक्यां तरमावहणुत्रवाणी वहुवन शरिवामा होति (ति सा १९)। विल्यु प्रस्तुन गाया है। हारकप्रकाल की मुख्यतन प्रमाण निवालनेवी प्रतिया बनलाई गई है, जो हमप्रकार हैन

हरूदुरक्- १ र कृ व्यासदे कृत्रधेयकी परिधिका प्रमान निग्न प्रकारने होगा-

1×15+15+1×3 = 111 = 121 erg1 इक्त्रकार ३ राषु कृत्रश्चेत्रकी परिविधा प्रमाण इस्प्रकार द्वांगा--3 x 12 + 12 + 3 x 3 = 2101 = 22 (13 27)

t non Engara forma list a celia alla a meeti minado di nonnetino nettodo.

एदेष गुषेष परिद्वयं कार्ण विवरं मण्यान्यामण गुणिदे बादाणि पद्रंगुलाणि । पुगरिव उस्तेषण गुणिदे संस्केज्ञाणि पर्यमुलाणि आदाणि। पुनरे व ओवहणा पर्य कापपा। । माणितिप-उपवादक सामाण्यामणिहिः आवेलहाणा पर्य कापपा। । माणितिप-उपवादक सामाण्यामणिहिः आवेलहाणा हिंदि लोके चेव ववार्व । प्रार जोपातिसमाति भाण असंरेज्ञिदि सामेण रांडेर्णुणासामा उववादं करेदि । वस्ते जोवि वि ओविलाणा आसंरोज्ञिदि माणा माग्रामं टरेप्ट्या। पुणे स्व्याविकाण असंरेज्ञिदि माणा माग्रामं टरेप्ट्या। पुणे स्वयाविकाण असंरेज्ञिदि माणा माग्रामं टरेप्ट्या। पुणे स्वयाविकाण असंरेज्ञिदि माणा माग्रामं टरेप्ट्या। पुणे स्वयाविकाण असंरेज्ञिदि माणा सामाण्याक प्रार्थित संरोज्ञिदि माणा सामाण्या स्वयाविकाण स्वयाविकाण सामाण्याक स्वयाविकाण सामाण्याक स्वयाविकाण स्वयाविकाण सामाण्याक स्वयाविकाण सामाण्याक स्वयाविकाण सामाण्याक स्वयाविकाण सामाणित्य स्वयाविकाण सामाण्याक स्वयाविकाण सामाण्याक स्वयाविकाण सामाण्याक स्वयाविकाण सामाण्याक सामाण्याक स्वयाविकाण सामाण्याक स्वयाविकाण सामाण्याक सामाण्याक स्वयाविकाण सामाण्याक स्वयाविकाण सामाण्याक सामाणित सा

इस चुकरे नियमानुसार परिश्व करके व्यासके बीचे भागसे ग्राणित करनेपर प्रतर्रा-गुरू हो जाते हैं। युना इस प्रकरित्तिकों अस्तिपते ग्राणित करनेपर संस्थाव प्रनागुरू हो जाते हैं। यदांपर भी पहले सभाम क्यानीमा करना खाहिए। क्यांत्र स्व चर्नागुलीके प्रमाण-धर्माहुक सरके लिये पांचसीके घनका प्राग्य देना बाहिए।

प्रात्मानिक समुद्धात भीर उपण्डमत सामाइनसम्बग्धि भीर असंवत सम्बन्धि भीर इसीय हाए अपन करना चाहिए । इतशे विशेषका है कि भीय सामाइनसम्बन्धि भीर सम्बन्धित स्वर्धित स्वर्ध

ग्रंदा — मारणानिकसमुद्धातके कालते गुणस्थानका काल संस्थातगुणा है, स्सलिए मारणान्तिकजीय अपने गुणस्थानके सर्व जीवीसे संस्थातगुणे हीन क्यों नहीं होते हैं [

पडिवज्जमाणजीवाणमसंसेज्जगुणचादो, उवसमसम्मचद्वावसेसे आउए उवसमसम्मण् पडिवज्जताण बहुवाणममावादों, तचे। तस्त संखेजजगुणीणयमामावादो च । एव उर रिमरासिस्स गुणगातो पुन्तुची चेत्र होदि, देवरासिस्स पहाणचादो। उववादे पुण निस्स रामी पहाणी। णवरि असेन्द्रसम्माहट्टि-उववादे देवा पहाणा, मारणीतिए तिरिस्ता पहणा सम्मामिन्छाइद्विस्स मारणतिय-उववादा णत्यि, तम्गुणस्स तदुहयविरोहितादो।

एवं संजदासंजदाणं। णवरि उववादो णित्य, अपन्जचकाले संजमासंवमाणुस अभावादो । संजदासंबदाणमोगाहणगुणगारो घणगुरु । मारणितए पदांगुरुं दर्दन वेगुव्यियपरेण सगरासिस्स असंखेज्जदिमागा आवित्याए असंखेज्जदिमागगिंदमाने। संजदासंजदाणं कर्ष वेउच्चियसमुख्यादस्स समवो १ ण, ओसालियसरीरस्स विउच्चणपान विण्हुकुमारादिसु देसणादो । संजदासंजदेसु वि मार्गणतिवससी ओघरासिस्स अहरेस्त्रीः

समाघान--- नहीं, क्योंकि, मरण करनेवाले देवगतिसंबन्धी जीवींसे उसी मर्थ निध्याचको प्राप्त होनेवाछ जीय असंस्थातगुण होते हैं। अथवा, उपशासक्ष्यक्ष्यके हत प्रमाण मायुक्ते भवशिष्ट रहनेपर उपदामसम्यक्तव गुणको प्राप्त होनेवाले बहुत जीव ना वी साते हैं। बीट मारणानिकसमुदातके कालसे गुणस्थानका काल संव्यातगुणा होता है। कोई नियम नहीं है।

यहांवर उपरिम शारीका गुणकार पूर्वीक ही है, क्योंकि, यहां देशांति। प्रधानता है। उपधानमें तो तिर्धवताति श्रधान है। इतनी विशेषता है कि अर्हपतहरू नरि गुणस्थानसंबन्धी उपधारमें देय प्रधान है। तथा असंवतगुणस्थानसबन्धी आर्थान समुद्रानमें तिर्वेश प्रधान है। सायश्मिष्याहिष्ट शुणस्थानमें मारणानिकसमुद्रात मीर राज नहीं होने दें, क्योंकि, इस गुजरधानका इन दोनों प्रकारकी अवस्थाओंके साथ विरोध है।

इसीप्रकार संवतासंवतीका क्षेत्र जानना चाहिये। इतना विशेष है कि संवतास्त्री उपपाद नहीं होता है, क्योंकि, अववीत्त कालमें संवसावयम गुणस्थान नहीं वाल क है। संपतासंपतींकी अपगादनाका गुणकार प्रनांगुरु है। आरणान्तिकसमुद्रातमं प्रनांगुरु गुजकार देना चाहिय। पत्रियिकयक्ते स्थायतीके स्थायवास्त्र सामस्य प्रतिमानि । अवनी राशिका मसंस्थातवां माग छेना चाहिये।

गुंगा-संवतासंवतींके वैकिविकसम्हात कैसे संमय है !

ममाधान - नहीं, क्योंकि, विश्वकृत्वार आदिमें विकियान्यक भीदारिक्हारि

र मार चेरेण जीवस्थान बोधमवे अलिक्शवयोगस्थाधियस्ववायोगीराहिण्डाववीरा अ निवेशसम्बद्धान वीर्थम सहार्यत्म निवत्वनुष्यात् वालम्य स्वाविष्णावयोगस्याविष्ण्यवयायात्रात्त्वस्याः सहार्यत्म निवत्वनुष्यात्, वीपविष्णवयोगो वीद्यविष्णायाययोगम् देवनारवाणापुत्रः, हर्षः निवत्ताः सर्वे स्थाने विष्णव्याप्तिः बर्ग हुच्यते, टेर्ट्स मेनिस्ट, वारायवकायवायो विद्यविद्यायस्यायसम् देवमास्त्रायाम् । बर्ग हुच्यते, टेर्ट्स मेनिस्ट, इ.स.ग्यन-४, सन्यायदेखात् । स्यावयामक्यित्रहेस् प्रस्तिम् स्थापन्ति । निर्दार हुच्यते, स्ट्रस्म निस्ति । विश्वदेशकार के विश्वदेशकार के कारण्यत्वन ने स्थापीयदेशहर । स्याप्त्यामकाश्वित्देशके श्रुष्टी स्थापित वा विश्वदेशकार के विश्वदेशकार के विश्वदेशकार्यक्षित के त्यापाचित्र । व्यवस्थापकीश्योगीयार्थित विश्वदेशकार्यकार्यक क्षेत्रस्यतं वर्षेत्रस्यकारा वर्षेत्रस्य त्रिक्षात् वर्षेत्रस्य वरस्य वरस्य वरस्य वरस्य वरस्य वरस्य स्या वरस्य व विभिन्न विवेश वर्षकावान परम्पान वाहरू हुन विभागनिविधितानिवानः । वेदं निवंदन विशेषा । विभिन्न विवेश वर्षकावनित्र वाहर्गत च वाहरू प्राक्ताविधित विवेश विवासम्बद्धियोगे । तः स्वता

भागो । कारणं पुरुषं पर्रविदं ।

पमसमंजदरपद्राहि जाव अजागिकेवित वि जहाणिया ओगाहणा आदुहरयण्भितं, उक्कस्मिया वंचमद-यणवीसुचरधण्णि । एदाओ दो वि आगाहणात्रा भरद-स्रावस्य चेव होति, ण त्रिदेहसु, तस्य पंचयशस्तुद्रस्तेभणियमा । तत्ता थोपुश्रसेपो वा विदेहसंबदरस्ती बद्रौ सन्युक्तस्तो होद्रि, सो पथाणी, पंचपश्रस्त दुस्मेहाविणामात्रिचादो। पर्थ अंगुलाणि कदे उस्सेहणत्रममागी विवसंमी चि कट् पहिद्रयमद् फरिय विस्तंगद्रेण गु.णिय उस्तेहेण गुणिदे संखेळाणि घणंगुलाणि जादाणि। एदेहि स्वेद्धार्यणां वासि सुमिद्दे इस्टिट्स्पेच होदि । णवरि आहारतरीरस उस्तेपा प्या रचयी, उस्तेहदसममाना तस्त विक्रामा, दिन्वतादा । विहारे सस्याण-जनाणीयाहणपुरमिष्ट्रिणायत्रमणास्त्रानसंताणं व मुलाहारसरीराणमंतरं जीवपदेशाणमयहाः नाहो । ण च सरीराहो-गद्भीवषदेसाणं पुणा तत्य पवेसाभावा, सम्राग्यदगदेश्वितिशीव-काता है।

। संयतासंघनोमें भी भारवान्तिकसमुद्धातको माप्त जीयराश्चि भोघसंयतासंयत राशिके मसंख्यातम् भागप्रमाण दोती है। इसके कारणका प्रकृतण पहले कर आपे हैं। प्रमत्त-स्वत गुणरथान्त लेकर अयोगिकेयली गुणस्थान तक जाविकी जयन्य अवगाहना साहे तीन रिनिम्नाण है भीर उन्हर अवगाइना पांचसी प्रचीस पतुर है । ये दोनों ही अवगाइनाएं भरत और पेरायन क्षेत्रमें ही दोती हैं, विदेहमें नहीं, क्योंकि, विदेहमें वांबसी धनुबके वर्षा ना करावा वर्षायसी प्रवित ध्युवते कुछ कम उत्सेपवाली विदेवसेषहरू संयतराहित सृति सबसे अधिक होती है, इसलिये यहांपर यह राशि प्रधान है, क्योंकि, विदेहस्य संवताशिहा पांचसी धमुपकी ऊंचाईके साथ अविनाशायसंकाम पाया जाता है। परांपर श्रीताम सनकल लानेके लिये मनुष्याके उत्सेधका नीयां मान विष्क्रंम होता है। देसा समरकर विश्वमानी परिधिको शाधा करके और विश्वमके आधेले गुणित करके वता तामकार प्रभाव वर्ष प्रभाव प्रमाण कार्य प्रभाव प्रमाण करण प्रभाव प्रमाण करण प्रभाव प्रमाण करण प्रभाव प्रमाण उत्सेष्ठसे गुनित करनेपर संच्यात प्रमाणुरु हो जाते हैं। इन संच्यात प्रमाणुरुसि स्वकी अपना राशिक गुणित बरनेवर शब्छत गुणस्थानसंवच्छी शेत्र होता है। इतसी विशेषता है क्षत्रमा राज्यक शुक्ता प्रत्येत सम्बद्ध प्रत्येत सम्बद्ध । तथा अस्त्रेयक वृद्ध संगममाण उसका विश्तंत्र है, पर्योक्ति, यह दाशीर दिग्यस्यक्तर है। विहासमें इस शारीरका मुख्य अर्थात् विश्वास भीर उरसेघ स्वस्थानस्वस्थानके समान अध्यादनाममत्व है, क्योंकि, मूख और आहारक भार उरस्य १४६०)नच्यरमान जनमा चयनाक्ष्मात्रमान कः रचारम जुरू बाद भाक्षारक दारीरकं अन्तराज्ये दक्षनाजकं अहेष्टदा सुत्रसंतानके समान औष्रयदेशीका अवस्थान पादा काता है। दारीरसे निकले हुव जीवमदेगाँका किरसे वारीरमें प्रवेदा नहीं होता है, सो भी

६ सम्पातुकी दूर्वरणोर्भन्ते प्रामाणिकः करः ३ बद्धमुष्टिको इनैस्सनिः सकनिविषा ३ इसामुः कोनः र आहुद्दृहस्थपहुरी प्रमुबीसम्बद्धियपणस्यथण्णि ॥ ति. प. १, ३१

१ वंबसयवान्तुमा xx ति. व. ४, ५८. ४ प्रतिषु "सदा" शति पाउः ।

५ प्रतिष्ठ ' अयुत्रसद ' इति पातः ।

परेहेढि विपहिपारारो । पदाणि खेचाणि चटुण्हं ठोगाणमसंवेज्ञदिभागे वि पन्नहमें चटुण्हं ठोगाणमसंवेजादिमागे अच्छीते, माणुसखेचस्स संवेजदिमागे। मार्गतम्स सचरञ्जूहि संवेजपदरंगुरुगुणिदहन्छिदधंजदरासी गुणेदच्यो । तेण मारणंतिपसम्पत्रस् संजदा माणुसरोगादो असंवेजगुणे खेचे अच्छीत । एदं सत्याणसत्याण-विहासरिकास्म

बान नहीं है, क्योंकि, पैसा माननेपर समुदातगत केयहांके आंवधेरोंके साथ व्यक्ति का जाता है। ये सब क्षेत्र सामान्य आदि बार लोकोंके असंस्थातयें मागमाण है, हतीयें प्रमासनेपन कादि राशियां बार लोकोंके असंस्थातयें माग क्षेत्रमें रहती हैं, तथा मानुष्येषे संकानये मागमाण क्षेत्रमें रहती हैं। मारणान्तिकसमुदातका क्षेत्र साते हिते कि वर्माए कंपनराशिका क्षेत्र लाना हो जसे संक्थात प्रतर्गमुलीसे मुण्ति करके आहाप करे के सात राजुओंसे गुण्तित करना खादिये। इस कारण मारणान्तिकसमुदातको प्राप्त हुए संवर्तने

रिग्रेशिय — यहां समस्तसंपतादि गुणस्यानयर्थी अधिका मारणानितस्तमुजनसाक्ये केच लावे के लिए समीए राशिको संस्थात मतरांगुळीले गुणित करके पुनः सात राहु में गुणित करने पुनः सात राहु में गुणित करने पुनः सात राहु में गुणित करने दियान बहा है। इसका समित्राय यह है कि संयत जीय सीममंतरणे हेका कर्माणीति कर्माण करने हैका कर्माणीति कर्माण कर्माणीति गुणित करने विभाग विभाग कर्माणीति कर्माणीति

कर्ष कंदरराधिका प्रवास ८०००००० व्हाना है। इसमेंने प्रवस्ति प्रवस्ति । व्हानी के क्षानी किया के क्षानी के क्

t, 2, 2, 7

नेवाणुगमे पमवसंजदादिधेवपस्त्रणं वेर्ण-कमाय-वेउच्चियाहार्-भारणीतियसग्रम्पादाणं उर्षं । णवरि तेवासग्रम्पादस्स विवर्षः पाम जब बारहजोरणवमाणे कर्रमुळे अन्त्रोणे मुन्तिय बाहहेन मुन्तिर तेजातमुग्तास्य होदि । एदं तप्पाओममक्षरीजस्त्रेहि मुणिदे सन्त्रराचसमासी होदि । ओव्हणा पुन्तं व ।

अप्पमचसंजदा सत्याणसन्याण-विहासवादिसत्याणत्या क्षेत्राहि होचे, चहुण्हं छोगाणम संरोजादिमामे, माणुसराचस्स संरोजादिमामे । मार्गातिय-अप्पमचाणं पमचसंजदर्भेगो । अप्पमचे सेतपदा णत्वि । चदुण्दसुरसमा सत्याणसत्याण-मारणंतियपदेसु पमवसमा । चरुष्टं रामाणं अनोभिकेनतीणं च सत्याणसत्याणं पमचसमं । स्वगुवसामगाणं णात्य वुचतिसपदाणि। खवगुचसामगाणं समेदैयाचिरहिदाणं कर्ष सत्याणसत्याणपृदस्स संभन्ने ?

व एस दोसी, असदेशावरामाध्याद्युचेशु तहा शहवादी । एत्य पुण अवहाणमे वराहणादी। मतरांतुल सुनित सात राजु होता है, जह कि तिर्यक्लोक एक लाख योजनके सातरें

मारामाण मेटे जगवतरम्माण है। सतः उक्त मारणानिकः समुद्रातका क्षेत्र वार्रो होक्तिकः जाराध्यात्व साम्बद्धात्व होता है। तथा मनुष्यतीह ४५ हाल चीवा कार्र हात चारा हाकाक क्षेत्रकार्ते साम्बद्धात्व होता है। तथा मनुष्यतीह ४५ हाल चीवा बार्र हाल योजन नंतरपात्व भागमान हाता है। तथा मंत्रुष्यकार करतात्व थाहा भार र काल यात्र है जैया है। यताः संवर्तोहा भारणान्तिकरोत्र मंत्रुष्यक्षेत्रके भन्नेक्यता गुणा तिज्ञ होता है। इतामार कक क्षेत्र स्वरंचानस्यस्थान, विद्वारवास्यस्थान, वेदना, क्याय, वैक्रिविक,

हत्यकार करः सन स्थरपानस्थरवानः ।धदारवारस्थरपानः धद्माः क्रवावः, धारावकः महिरक् भीर मारमान्तिकसमुग्रावाने भूगोदा कराः। इतनी विरोधताः हे कि तमसमु नाराक ना नारणात्वकत्त्रकाराण जावाका कहा । इतना प्रवास्ता ह । क तजलस्यु-इतके जी योजनामाण विष्कंम और बारह योजनामाण जायाम क्षेत्रके किये हुए अंगुलोका तरहरर मिर्म हरके संस्कृतिकृत संस्वायक सामवसाच बाह्न्यस मिला करनेनर क्षेत्रक नामका करने ज्यानका करने ज्यानका करने पार्थर तुमा करक प्रच्याहरू सवयातच मामामाच बाह्न्यस तुम्यत करनपर तजल समुद्रातका क्षेत्र होता है। इसे इसके योग्य संब्यातसे मुचित करनेपर तजल-ातुकाताचा क्षत्र कारता है। यहाँपर मयवतेमा पहिलेके समान जानमा बाहिरे।

इवस्थानस्वरथान और विदारवरवस्थानकपरे परिवत अध्यमसांपत औय हितने देवम् रहते हैं। सामान्यहोक बादि चार होत्त्रहे अतंत्रवात्त्वे आग्यमाण् रोवमं रहते हैं, और मातुरक्षेत्रके संवयातम् भागपमाण क्षेत्रमें रहते हैं। मारणानिकसमुनातको ६, आर. भारपसंत्रकः राज्यातव भाग्यमान शत्रभ रहत हा आरणान्तकसादातकः मान्त हर अवसत्तरंत्रतीश क्षेत्र मारणान्तिक समुद्रातको मान्त हर मारसंत्रतीके नाच ६५ जमनचलपाप्त वान बारवाल्यक वसुवातका अप्त द्वर अभवस्यताक होत्रके समान होता है। अध्यमतसंपत गुणस्यानमें उक्त तान स्थानीके छोड़-संतर्भ समान हाता है। व्यवसायस्यत गुणस्थानम त्रक तान स्थानाका छाड़ हर होए स्थान मुद्दी होते हैं। उपरामधेणीके खारों गुणस्थानवर्ती उपरामक स्थान कर दाप रचान नहा होते हूं। वपद्मभक्षणांक चारा ग्रुणस्थानपता उपसामक आह विस्थानस्यस्यान और मारणानिकसमुदात, इन दोनों प्रमुखे स्वस्थानस्वस्थान और मारणा-परचानस्वस्थान भार भारचानकस्यादात, इन दाना प्रदास स्वस्थानस्वस्थान भार भारचा-वकसमुद्रातमत प्रमासंद्रवर्ताके समान होते हैं। इतवहम्रेणिके चार गुनस्थानवर्ती सपक त्रकत्तमुद्धातात अभवान्यताक चामान दात हा स्वयंक्रमणक वार गुणस्थानयता स्वयं र बयोगिकवरी त्रीयोश स्वयंत्रातस्वयंत्रात प्रमुक्तस्वरोक स्वस्थानस्वरंगान स्वयं ाट कथांगकवर्णा जायाचा रचरपानस्वरणान अवचारणपाक रचरपानस्वरणानक समान ता है। क्षेत्रक और उपदामक अधिके उक्त स्थानीके अतिरिक्त शेष्ट स्थान नहीं होते हैं।

विका---यह मरा है, इस्त्रकारके आयस रहित सपक और उपजामक श्रीयोरे समाधान-पद कोई होच नहीं, क्योंकि. जिन माध्यमाओर १००० है।

छक्खंडागमे जीवहाणं सजोगिकेवळी केविड सेत्ते, लोगस्स असंखेना

चेसु वा भागे<u>स</u>, सन्वलोगे वा ॥ ४ ॥ एत्य सञ्जामिकेनिलस्य सस्याणसत्याण-निहारविदसत्याणाणं पम केवती केविह खेचे, चउण्ह होगाणमसंसेज्ञादेभागे, अहाहजादो असंसे अहुचरसद्पमाणगुलाणि उस्तेषो उकस्तोगाहणकेवलीण होदि । विक्संमा १२ एवित्रो होदि। तस्त परिहुनो सचतीस अंगुलाणि पुंचाणउ ३७ हर्द । इमं निक्संमचउन्मागेण गुलिदे महपदांगुलाणि हाति।

चार्यस्मज्जृहि गुणिदे दंडसेचं होदि। एदं संसेजहनगुणं तेरासियक्रमेण इसमहारका माथ पाया जाता है यहां यैसा प्रहण किया है। परन्तु यहांपर भीर उपरामक गुजस्यानाम मयस्थानमायका प्रदण किया गया दे। सयोगिकेवली जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें

धेत्रमें, अधवा श्रोकके असंस्वात बङ्गागप्रमाण क्षेत्रमें, अधवा सर्वलोकमें रा यहाँदर भयोगिकेयछीका स्वरथानस्यस्थान और विदारप्रस्वस्थान । संबनोहे इत्रसानन्त्रस्थान और विहारसन्त्वस्थान सेनके समान होता है। वह माज हुए बेवती जीव हिनने क्षेत्रमें रहते हैं ? सामाध्यतीक मादि बार क्षेत्रोंके :

भागममान क्षेत्रमं भीर सङ्गई सीयसंबन्धी लोकले सलेक्यालगुण शत्रमं रहते हैं। र्वहा – इहममुद्धानको माप्त दुए केमिटयोंका उत्तः क्षेत्र कीसे संसप है ? ममापान - उन्हर भवगाहवाले युक्त क्वलियाँका उरलेप एकसी भाउ म दोना है, और इसका मींवा माग अर्थान बारह १२ प्रमाणांगुल विश्वम द्वीना है। विश्वि संगीम धंगुल धाँर एक अंगुलके वहसी भेरह मानांगसे पंचानपे माग प्रमाण ।

होती है। इस विश्वेस बारह अंगुल्हे चींचे साम तीन अंगुलीम मुचित करनेपर मुणदर अंगुल कहे चीर बारह अंगुल चीड़ माल क्षेत्रक प्रतरांगुल होते हैं। हाई हुए बस हातुक्षेत्र गृत्तित्र वहनेवह देवश्ववहा यमाण स्थाना है। यह एक केपलीके देवा Raju Kail हिर्द्शिया—केशस १० थेमुल समाय गाया म १४ के भनुसार इसकी पीर्टर 154 - 35 42.36 404.1

१६ (जासदा बनुगांता) १९८५८ ११३ MARK SAUTHMEN III Adlina भागे हिंदे तेसि स्रोगाणमसंख्यादिभागो आगुच्छि । माणुसर्राणेण मागे हिंदे असंराक्षाणि भाणुसर्यचाणि आगर्च्छात । णवरि पत्तिपंक्षण दंहसग्रुमादगद्दक्वरिस्स विक्संमा पूज्य-विक्संबादो तितुषो होदि । तस्स पमाणमेदं ३६ । एदस्य परिद्वयो तेरहुचस्परंगुकाणि संघावीस-तेरहुचरसद्भागा ११३८% । सेसं पूज्यं व ।

षपाडगरो केवली केविड खेचे, तिर्ष्ट लोगाणनसंखेजिदिमाने, (तिरिपलोगस्स सैन-जरिमाने,) अहारसारो असंखेजसुणे। एत्य कवाडगर्यकेलिस्स रोचाणपणविदार्ण युपरे-

विशेषार्थ— यहांपर देशसमुकार देवका प्रमाण केयलीकी उत्तर क्षाणाहमा १०८ माणांगुरू लेकर बतालाया है। किन्तु हवले पूर्व हो केललीको उत्तर क्षाणाहमा १६५ धनुव नमाणांगुरू २०० गुणा होता है, हमलिए १९५ मुनक प्रमाणांगुरू १०० गुणा होता है, हमलिए १९५ मुनक प्रमाणांगुरू १५६५-४९ । १०० है होते हैं। वर्गमाण प्रकरणमें विदेह स्थाप माणांगुरू १५० । १०० है होते हैं। वर्गमाण प्रकरणमें विदेह स्थाप १९६ होते हैं। वर्गमाण प्रकरणमें विदेह स्थाप एक है। अत्यय यशि विदेह स्थापणी अवगालमा ली आप तो वह १०० ४६ । १०० ४६ । १०० १९० ।

१६२ हैं- होते हैं को उक्त '१२'र धनुषके प्रमाणके बढ़ जाते हैं। इस विकारका बास्स वेबारकार है।

दक साथ समुद्राम करनेपाले संक्यान केवल्यां है इरोक्का प्रयान कानेके लेवे देते संक्यांतरे गुणित करें। समझ्यार जो रेख जरुवा है। उसे बंगारायों के काने सामायलों स्थान हों की समझ्या केविया जन वार रोग्डॉमेंसे प्राप्त के लेके वर्षक्यांतरे मागमण केविया काता है। स्था उन्त केवियाओं सामुक्योंकर मानेक करने एक सर्वयांत्र मागुक्योंक करण काते हैं। इतनी विरोचता है कि वस्पेतालकी केविया विशाप केविया एक दूर सेवल्यांत विवास वार्टि केविया कार्यकार विवास केविया केविया

उदाहरण-क्यास इ६: अतयब नाथा मं. १४ के अनुसार परिधिया प्रमान-

14 × 12 + 14 + 102 × 118 20

द्वाप बचन पूर्वके समान है।

कपाहतमुद्दानको मान्य दूप वे बारी विशव क्षेत्रमें बहते हैं है कायान्यद्रोष आहे. तीन शिक्षेत कांश्यानमें आपमान्य केमाने, निर्करीकिको खंग्यानमें अन्यवस्था केमाने और श्रीक्षितिको लेक्यानमुख्ये क्षेत्रमें पहने हैं। अब यहांपर कपाहतमुद्रामको मान्य हुए वे बसीना स्वातिकारिको केवली. पुन्नाहिमुही वा उचराहिमुही वा समुग्यादं करेतो बादि पलियंकेण समुग्यादं करेते, तो क्वाडकहाँ छचीसंगुलाणि होति। यह बह काउरसम्मेण कवाड करेदि, तो वार्रापुन्न सहाई क्वाडिस होदि। तत्व ताव पुन्नाहिमुहकेवलिस्स कवाडिस नाणवणं मण्णमाणे चेरिक रज्जुआयामं सन्तरुज्वविक्संसं छचीसंगुलवाहुछं खेनं ठिवय मज्जे छेन्ण एक्सेनस्माति विदियंसेनं ठिवदे बाहुचरिजंगुलवाहुछं बागपदरं होदि। काउरम्बग्गण द्विदेक्वलिक्वाहुष्ठं चाजुनीसंगुलवाहुछं होदि। उचराहिमुहो होद्ण पलियंकेण समुग्वाह्याहुक्वहुछं स्वाधित । उचराहिमुहो होद्ण पलियंकेण समुग्वाह्याहुक्वहुछं स्वाधित । इयरस्स १२ बारहंगुलवाहुल्लं, वेषणाप विवा

विगुणचामावा । एदं खंचं तरासियकमेण तिष्टं छोगाणं पमाणेण कीरमाणे तेसि छोगाणमः संखेजजिदिमागो, तिरियलोगस्य पुण संखेजजिदिमागो, अहुद्वज्जादो असंखेजजिपणं होरि । पदरगदो केवली केविड खेचे, लोगस्स असंखेजजेसु भागेसु । लोगस्य असं खेजिदिमाणं वादवलयरुद्धखेचं मोन्ण संसवहुमागेसु अच्छदि चि जं सुर्चं होदि। पणलेगः प्रमाणं तर्वास्थामानिक

पमाणं तेदालीसुचरतिसद ३४३ घणरज्ज्ञो । अघोलोगपमाणं छण्णवृदिसद्घणरज्ज्ञो केयली क्रिन पूर्वाभिमुख अचवा उत्तराभिमुल होकर समुद्रातको करते हुए गरि पस्पेकामनसे समुद्धातको करते हैं तो क्याटक्षेत्रका बाहरूप छत्तीस अंगुल होता है। और वर्र कायोस्सर्गसे कपाटसमुद्धात करते दें तो चारह अंगुलबमाण वाहरवयाला क्याटसमुद्धात होता है। इनमेंस पहले पूर्वाभिमुन देवलींदे दगारक्षेत्रके लानेदी विधिका दयन करनेपर चीह गातु होंदे, सात राजु चीहे और छत्तीस अंगुल मेंदे क्षेत्रको स्थापित करके उसे चीत्र राउँ संबाधिमें से बीचमें सात राजुके ऊपर छिन्न करके एक क्षेत्रके ऊपर हुसरे क्षेत्रको स्वापि कर देनेपर बहुत्तर अंगुळ में।टा जगवतर हो जाना है। और कायोग्मर्गसे पूर्वामिमुल हिन हुए केवरीका कपाटक्षेत्र कार्यास अंगुल मोटा जगप्रतर होता है। उत्तराप्तिमृत है, इर परभंदासनक्षे समुद्रातको प्राप्त हुए केपलीका कपाटक्षेत्र छत्तील अंगुल मोटा जगपनाध्यमा होता है। तथा इतरका अर्थात् उत्तराशिमुल होकर कायोरसर्गसे सनुवातको करतेवाते क्वरतीका क्वाटक्षेत्र बारह संगुल मीटा जगमनामाण लंबा काँचा होता है, वयाँकि, वेदना समुदातको छोड्कर आवके शहरा निशुने नहीं होते हैं। यह उपयुक्त सपाटममुदानान केवरींका क्षेत्र केवादीकत्रमने मामान्यलोक मादि तीत लोकोके प्रमाणकपत करनेपर इन नीन सोबॉमेंने अध्येक होकके असंख्यात्यें माग्यम व है। निर्यासोक संख्यात्यें माग्य इसल है और अशर्रडीयन धसंस्थानगणा है।

प्रतरसम्बानको प्राप्त हुए केवारी जिन किनने क्षेत्रमें उदले हैं ? लोको सर्वस्थान करुमायमम क क्षेत्रमें बदने हैं। लोको भनेत्यानचे मायमाया बानवलयो सहे हुए शिकी दोहकर लोको प्रत्य करुमायोमें बदने हैं, यह इस कप्यतन स्वाप्तमाय है। प्रतासका प्रमुख रोजको नेनारीस १४३ बनवाजु है। स्पोलोकका ममाय प्रस्थी स्थापि १९६ प्रतासु है। १९६। उङ्गुलेमपमाणं सचेचालीससद्घणरञ्जूजो १४७। उङ्गुलेगपमाणाणपणे गुनगाहा-

घणगणिदं जाने ज्ञो मुर्दिगसंद्यणसेत्तिकः ॥ १५ ॥

एदिस्से माहाए अत्यो वुचदे- मृतं मुद्दिगलेवस्य बुंधवित्यारं, मन्तेण मुद्दिगः मञ्ज्ञपंचरज्जृहि सह, गुण खरं कादन्तं । सहं सुद्गिमुहरुंचपमाणं, सहिद् सुद्गिममहोता युदं कार्य, यहं अहं करिय समीकर्त, उस्सेषक्रदिगुणिर्द उस्सेषक्रमेण गुणिर, अन्तरण कार् खेनफलं होति।

पुरन्तसमासभदं उत्तेषमुणं मुणं च बेहेण ।

घणमाणिई' जाणेउना वेत्तासणसंटिए खेते ॥ १६॥

रीए गाहाए अधीलोगघणगणिदमाणेज्जो ।

तंपदि होतप्रतिहृदवाद्वल्वरुद्दसंचाण्यणविष्यणं वृषदे-होतास्य सेट निर्द संवाद लागवताहर्वादयलकल्चन वान्यवावयात्र । उत्तर नागवन वाद । १०० वाद्यां वाहर्षः वीससहस्यज्ञायनमेषं । वं सम्बन्धमाहं कर्दे सहिजोयनमहम्मनाहं कर्वलीकका प्रमाण पक्ती लेतालील १४७ चनरात्र है। काब कर्वलीक है स्माणको सानेक लिये मीचे स्वमाधा ही जाती है-

लानेका गणित ज्ञानना चाहिथे ॥ १५ ॥

व रहमात्या व आता ६— मृत्ये ममाणही मध्ये ममाणहे गुणित बरवे जो लह्य बावे बसर्थे मुख्या समाण मुंदर सामा करें। पुना हुते जातेपक समायक गुरुव करने यह मुद्देगकार श्रेक्ट स्वाम जोहबर सामा करें। पुना हुते जातेपक समायक गुरुव करने यह मुद्देगकार श्रेक्ट सनका

गाणत जागना खाद थ । ६५ ॥ भव इत गाधाका अर्थ कहते हैं---मूल मर्धात सुर्वगरेज हे सुभविस्तारन । स्ट्राधेज ह मह इस माधाका अध कहत हुन्यूल वाधात स्वत्यक्त सुभावलाएका स्वाधावक महत्वित्तार पीच राजुकाक साथ मुक्ति करते जोड़ के । स्वत्य साथस यह हुन्य हि मुक्तो अध्यापकार पाय पाय भाग साथ ग्रामत करण जाह व । इसका ताल्य यह दुव्या हा ग्रामका मधौन स्वराहार होत्रके गुळविक्याहरू अमाणको स्वरंगके अध्यविक्यार योच राजुको स्वरंग भयोत् द्वातः करके, भाषा भाषा करके समीकरण कर हा । अनमार की बासेग्य बाहन मानार अन्य करने, भाषा भाषा करने पाताकरण कर के जानार पर

तुनके प्रमाण श्रीट तालमागके यमाणको जोड़कर माध्य करे . चुनः इसे सालधन जित करके देखते गुणित करें। यह वेशासके आकारकार कर कर या पण वासपत इस गाधासे अधीलंडचा धमगणित ले भामा बाहिए।

हत गांधास स्थालकर अन्यास्त्रत १० सान साहरू । अब श्रीकरे पर्यत आगमें स्थित वातवस्थात रेक दूच सेवले सावरी विधिश भव लाहरू प्रथम भागभ ।वधन पानवल्यन एक ६८ कावक स्थावन ।विधिवा होने हें— लोक्डे तलआगमें तीनों चातुओंमेंसे छयाब वायुव।बाहरू बीस स्थाव ।विधिवा

a the Artificial distractords for interests in the markets and teams are

[8, 8, 9.

जगपद्रं होइ'। णतरि दोसु वि अंतेसु सिंहसहस्सजीयणुस्सेहपरिहाणिसेनेण ऊनं एदमशेर-दण सिंहुसहस्सवाहल्लं जगपदरमिदि संकप्पिय तच्छेद्ण पुघ हुवेदव्वं ६०००० । पुण एगरज्जुस्सेघेण सत्तरज्जुआयामेण सिंहजोयणसहस्सवाहल्लेण दोसु वि पासेसु हिर्गरः सेनं युद्धीए पुच करिय अगपदरपमाणेणात्रदे वीससहस्साहियजीयणतनसस्स संवननः बाहरूतं जगपदंर होदि ^{१९९००} ।' तं पुन्त्रिक्तसेचस्पत्रति इतिदे चालीसजीपन्नस्मा

प्रमान है। उस सर बाइस्यको एकत्रित करनेपर साठ इज्ञार योजन बाइस्यवसाण इतन्त्रश होता है । इतनी विशेषता है कि पूर्व और परिचमके दोनों हैं। पार्र्यमागोंमें साठ इजार वोडर द्वंचार्रंतक हानिक्य क्षेत्रकी अपेक्षा उपर्युक्त क्षेत्र हानिक्य है। फिर भी इस उन क्षेत्र रामना न करके और उसे साठ इजार योजन मोटा जगप्रतरप्रमाण संबद्ध कर उसे दिव करके पूचक स्थापित कर देना चाहिये।

उदाहरण—अधीलोकका तलभाग ७ राजु लम्या और ७ राजु कीहा है, धनदर इमेरा सेरफ्ज जगननसमान द्वोगा । तलनागर्ने प्रत्येक वात्रपलय २०००० हुआर वात्र कोटा है, इमलिये मीमी वामयलयाँची मीटाई ६०००० योजन होनी है। इसे जगनतासे गुविन इंग्डर शाड इक्रार बोक्नोंके क्रितने प्रदेश होंगे उनने जगपनर छाप माने हैं। वाँ महात्मादं बानदा शेत्रका धनका है।

पुत्र- वक्त राजु अरेगेघरण, लान राजु आयामरूप और साठ इजार धोजन वार्ग करून करूर और दक्षिणसञ्ज्ञानी दोनों ही वादवेमागीन रिधन बानकेलको बुद्धिन दूर्व बण्डे हरे प्रवादनक्ष्मात्रमे कामपर यक छान थीम हतार योजनी के सानवें आस सहत इप्राप इन्प्रदर होता है।

टडार्डम्-अधीलीहरे नलमार्गम उपर यक शतुप्रमाण वानवलयंग करे हुर है। वा द्दबर - इत्तर और बुधियमें गुवैश परियमनक प्रत्येक दिशामें जनभेगीयमान सेवा है गी केचा मान्या वात्रवार्थीया बाइन्य २०००० योजनः दोनी दिशाभीके वातुवाय होते हैरिकार स्टेडरीडे बनावमें सात्रका माग देनेपर १७१४री योजन सन्द्र मान है, भीर केपी राष्ट्रहें स्थानने सम्बोधीया जमान हो साना है। अन्तर १७१४२ योजनेहें जि करेट हो देनने क्रमकरक्रमाण देशन भारत देशियाँ अभीलीयके नलभागांने एक स्तु हो केंद्रम्ह क्षान्यरपराज्ञ केंद्रशा प्रशास होता है।

क अभ्याप । एक अरम्प्रदाहर हर हर इसाइ अनुम्ह देनहर क्षेत्रकोषिक वर्ष से है विस्तरित की बद्दान है के बंद ने तुर्व है सिन्दू कहान्त्रपत्र व चंद कर है व अवन व के हैंप, बंद, १६४, ११६,

इस यनपालको पहेल सलगामके यनपालकपाने माचे हुए क्षेत्रमें मिला देनेपर पांच साल बालीस हजार बीजमोंके सातमें मागममाण बाहस्थमच जगमनर होगा है।

पुना हमरी हो अधीन पूर्व और परिचम दिशाओं में तामागरें एक राष्ट्र केंचे, वस भागमें साम राजु रहे, यह बाजु करर व्यावर मुक्तमें यह राजु के नामके जान कविक छट राजु रूंदे, और साह दक्षार योजन बाहरकरणे दिवत चानवारवरेत्वयो जागमाजावाने सरनेपर पचनन साम यीत हजार योजनोंके तीनसी नेनालीवर्षे सामाजाव बाहरवरच्च जामनर होता है।

प्रदेशकारण योजनीके जिनने महेदा होंगे उत्तने जगततर लग्ध का जाने हैं। पूर्व और पुरुष्

हसे पूर्वीता प्रमण्डारूपणे आवे हुए शेवमें मिला देवेवर शीव वर्णेड़ कर्यास काळ भरती हुजार योजनींदे सीनसी तेतालीसर्वे मानववाल बाहस्टकच जगवनर होता है।

र प्रदृष्ट्राकृतिहारे व्यवस्थात्वारकारकार । वा प्रवास विश्वस्थान व्यवस्थानिक विवास वा वा वा वा वा वा वा वा वा व कार्यात कर्णावासी कंप्योरि वार्यात वायरिंद्यों कार्यायनकारिये कार्यायमध्यात है वि. का वार्यात वार्या

द् हेर्। बराज् चार्रका प्रवादाध्यामस्त्वत् युन्वश्यमण्डले वस्तव्य निवेदधीर्गाटः ॥ वन्नवस्यः-बेस् जोर्ववर्योगस्तियमस्वयरः वस्त्यारसम्बन्धेरः सप्तन्य सन्विद्वतन्त् ॥ वि. १३४, १३४ रञ्जुआयाम-सोलहवारह-सोलहवारहजीयणबाह-लेग देामु वि पाममु हिद्बारमेने जग पदरपमाणेण कदे चउसहिसदजोयण्ण-अहारहसहस्मजोयणाणं नेदार्रीम-निवदमागवाह्नं जगपदरं उप्पज्जदि १५६३९ । पुगे। सचमागाहिय-छरज्जुम्जविक्संमेण छरज्जुसमेवग एगरज्जुमुहेण सोलह-चारहजोयणबाहरूलेण दोसु वि पाससु द्विदवाद्रयेतं जगपरएपमण्य करे बादालीसजोपणसदस्स नेदालीस-निषदमागवाहन्छ जगपदरं होटि रहेड । पुना सा पंच-एगरञ्जुविकसंभेण सचरञ्जुउस्सेघेण वाग्ह-सोलह-वाग्हजोयणवाहल्लेग उत्रसिन्तेषु

पुनः उत्तर और दक्षिणमें पूर्वते परिचमतक सान राजु विष्कंमम्यते, सानवीं पृष् धीके तलमारासे लोकान्ततक तेरह राजु आयामकपसे भीर मघोलोककी भरेशा सोजह, बार और अर्थलोककी अवेक्षा सोलह बारह योजन बाहस्वक्रपंत शेनों हैं। पार्वमागाँम स्थित धातक्षेत्रको जगमतररूपसे करनेपर एकसी खीसठ योजन कम झटारह इजार योजनी

शीनसौ तेताछीसर्थे भागप्रमाण बाहस्यमप जगप्रतर होना है । उदाहरण—१३ × ७ = ९१ । ९१ × १४ = १२७४ ; १२७४ × २ = २५४८ । सि जगप्रतररूपसे करनेके लिये सातसे गुणा करे और तीनसी तेतालीस का भाग है, वह १७८३६ योजन मोटा जगप्रतर आना है। यह उत्तर और दक्षिणमें सानवा पृथिवीन

लेकर लोकान्ततक वातरुद क्षेत्रका घनफल होता है।

पुनः पूर्व और पश्चिम दिशाम सातवीं पृथिवीके पास एक राजुके सातवें मण अधिक छह राजुपमाण मूलमें विष्क्रमरूपले छह राजु उरलेपरूपले, मध्यलोकके वास प्रकाउ मुखक्त से और सीलह, बारह योजनप्रमाण बाहरणकरासे दोनों ही पास्वीमें स्थित बार क्षेत्रको जनप्रतरप्रमाणले करनेपर व्यालासको योजनोके तीनसी तेतालासपै मानप्रमान चाहस्यरूप जगप्रतर होता है।

ह्य जनप्रतर होता है।
$$\frac{43}{3} + \frac{43}{3} = \frac{40}{3} : \frac{40}{3} \div \frac{2}{3} = \frac{40}{3} : \frac{40}{3} \times \frac{2}{3} = \frac{40}{3} : \frac{40$$

७० ×१४ = ७०० । ७०० ×६ = ४२०० । इसे जगनतर दयसे इस्तेयर ४९ इ

भाग देनेसे ४२०० योजनोंके जितने प्रदेश हो उतने जंगशतर रुध्य भा जाते हैं। पूर्व भीर परिचममें सानवाँ पृथिवीसे मध्यलोकतक बायुक्द क्षेत्रका यही घनफल है।

पुनः मण्यत्येकके पास पकरातु , महत्वोकके पास पांचरातु भीर लोकान्तमें एक रार् विष्कंमरुपसे, सात राजु उन्सेघरूपसे तथा, यारह, सोलह और बारह थोजनप्रमाण बाहरी

१ उदर्व मृत्यु बेही छरच्य मतसब्दान्त्र स्थ्यु च । जेवन पोहब सत्तविशीयो ति हु दस्खिनुहारी ह चानिटक्षेत्रकटं टमपे वाशन्य होह जनपर्त । बस्मयजीवणगुमिदं वर्तमार्व मवसमान रि. श. १६४,

रूप से ऊर्चसीहरू पूर्व भीर परिवम दोनों हो पारवींमें रिधत वातरेश्वको जनमतरममाणसे करने पर पांचसी महासी पोजनोंके उनवासय मान वाहस्वस्व जनमतर होता है।

उद्दिश्या—१ + १ = ६। ६ + २ = ३। ३ x ७ = २१। ३१ x २ = ४२।
४२ x १४ = ५८८ हो जनमेत सम्माणले करने पर ७९ का मान देनेले छुए योजनीत ।
अतने महेरा हो उतने जगमतर सन्ध आते हैं। यहाँ जन्मेलोकके पूर्व और परिचम हो
दिसामीके पातरक सेनका प्रत्यक्ष है।

हीक्के उपरिम मागमें यक राजु विश्केष्ठपते, सात राजु आयामकपते, जुठ कम क योजन वाहरकपते श्यित वातकेष्ठक जममत्त्रक्षमाचे करने पर सीनकी शीन योज-कि दो हजार दोशी बालीलये आगममाच बाहरपत्त्रच जमप्रदर होता है।

उदाहरण—१४७ ४ १९३ ५ १ = १९०० वर्षा लोकके सप्रथामके वातव्यक्षेत्रका वनकल है।

पनफल है। इस सर्थ पनफलको यक्षत्रित करनेपर यक इक्षार कीक्षील करोड़, उद्योस लाक नेरासी हकार वारसी सत्तासी योकनोमें पर लाख नी इक्षार सातसी साउका माग देनेपर केरासी हकार वारसी सत्तासी योकनोमें पर लाख नी इक्षार होता है। को यक माग लघ्य आपे उतने योकनप्रमाण बाहन्ययण जनमतर होता है।

उदाहरणः— ११९८००० + १७८१६ + ४२०० + ५८८ १०३ = १०२४१९८४८७ १८५५ - १४४ - १४४ १४५ १४५० १०९५६० योजन बाहस्यरुप जगप्रतर लोकोर खारों स्मेर वातत्त्र्यक्षेत्रका प्रनफल होता है।

होतियाचे नीमका संवत् वाल्याच्यावांत्रसम्बद्धाः बन्दा तह क्ष्याच्यावदां हाराज्ञ ॥ होतियाचे नीमका संवत्यव्यवया । वर्षा त चाल्य्यवदा । बन्दा तह क्ष्याच्यावदां हाराज्य ।

17. सा. ६१. १ तथ नायबर्शनदस्थितसार्थवस्थापयाच च र म १४ का त्माप्य गाव तु अरवर्श म मरा साम्रावर्शन सम्बद्धान्य कुत्र सम्बद्धानय भाषम् साम्रावस्था मु च, सः ११४-१४. 461 एदं बादरुद्वस्खेचं घणलोगम्हि अवणिदं पदरगदकेविल्खेचं देम्बलोगो होदि। एरं पद्रगद्देक्वलिखेनमधालागमाणेण कदे वे अधोलोगा अधोलोगस्स चदुरुमागेण साहितान उम्पया । उड्ढलोगपमाणेण कदे दुवे उड्ढलोगा उड्ढलोगस्स विभागेण देखणेण सादिरेगा।

होगपुरणगदो केवली केवडि खेचे, सन्वलोगे I

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरहएसु मिन्छाइडिः पहुडि जाव असंजदसम्माइडि त्ति केवडि सेते, लोगस आसे जदिभागे ।। ५ ॥

इस पातन्त्रसेवको चनलोकमेंसे घटा देनेवर प्रतरसमुद्रातको प्राप्त केवशील से रुण कम लोक प्रमाण होता है। प्रतरसमुद्धातको प्राप्त केवलीका यह सेत्र मधीलोहे प्रमागद्भपते करनेपर कुछ अधिक अघोठोकके चौथे भागते कम दी अघोठोक्द्रप्रमाण हैना है। तथा इसे हाँ उप्पेटोक्के प्रमाणकपसे करनेपर उप्पेटोक्के कुछ कम तीसरे मानसे मधिन दो उर्धशोकप्रमाण होता है।

विश्वपार्य - जगभेणीके जितने प्रदेश हों उतने जगमतरप्रमाण सर्व हो क है। इसमें १०११ १८६१ वी सनवमाण सम्मतराँक घटा वेनेपर प्रतरसमुद्धातको प्राप्त केवलीहा होर होता है। मघोलोक्तक प्रमाण १९६ घनराजु है, इसलिय यदि इसे अघोलोक्त प्रमाणक्रदरे कि जाय नी दो जयोज्यों के प्रमाण १९२ घनराजु है, इसाळय याव इस अघाळाइक प्रमाणकरणः करिष्ट अपीज्यों के प्रमाण १९२ घनराजुमाँमें १०००१००० हो अनवप्रमाण जावन स्थित अपीज्यों करे चींचे भागप्रमाण ४९ घनराजु चटा देनेचर प्रतरसमुद्रातको प्राचा केन्द्रके रेख आ जाना है। १९९० जेक्कर सम्माण सेच भा जाना है। उपने हो समाण १४ धनराजु घटा हेनेपर मतरासमुद्रातका प्राप्त कर्णनाई। प्रभावद्यसे दिया आय तो उत्पंतीदके यह तिहाई पतरातु ६९ मेंते विश्वासी बोडबदमान जनप्रनरीको घटाकर जिनना दोच रहे उसे दो ऊप्पेहोकके प्रमाण २९५ प्रनाह ब्देव ब्रोड् देनेपर प्रनरसमुदानको प्राप्त केयलीका होत्र वा जाता है।

हो इन्द्रबाममुदानको प्राप्त केवली समयान कितने क्षेत्रमें रहते हूं। सर्व हो है rrig El

जादेशको जरेक्षा गन्यनुवादमे नाक्रमतिमें नारकियोंने मिध्यादृष्टि गुणायाते टेटर अर्थपन्यस्थारित गुणस्थाननक अत्येक गुणस्थानके श्रीर क्रिने थेपमें राते हैं रोहरे बर्गस्यात्रे माग्यमाय शेवमें रहते हैं।। ५ ॥

[40

एत्य ' आदेसेय ' गहणं जोपपडिसेघफलं । गदिगहणामिदियादिपडिसेदफलं । ١, ٩.] गुवादगर्णं सुनस्स अकहिद्रनपरुवणफले। णिरयगदिणिद्सो देवगदियादिपिढसेयफले। इएसु वि चयणं तत्पतमपुडविकाइयादिपडिसेषफलं । लोगस्स असंस्केजिदिभागे इदि ो संसर्जानाणं क्यं गहणं होदि ? ण, रोच-फोसणसुचाणं देसामासिनचादो ।

संपदि सत्याणसस्याण-विद्वारपदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेडिनयसमुग्पादगद्द-मिन्डा-हुं। केवडि खेचे, चदुग्दं तोगाणमसंरोज्जदिमागे, जहादज्जादो असंरोज्जगुणे । एदस वत्यपरुवणहुमेत्याताहणा युचेदे । तं जहा- पटमार पुटवीए पटमपत्यडिन्ड नेत्रह्याण-मुस्सेपो तिलिंग हत्या। तेरहमपत्पडे सच घणू तिलिंग हत्या छ अंगुकाणि गेरहपाण बुस्सेघो होदि'।

मुद्द-भूभिविसेसिविह हु उच्छेदमजिद्दि सा हवे बड्डी । बड्डी इण्टागुणिदा मुद्दसहिदा सा पत्टं होदि ॥ १० ॥

इस सुदस अनुदा प्रके प्रहणु जरनेका फलु ओपका अतिपेय करना है। गृति प्रके प्रदेश करतेश कर शिंद्रपादिश प्रतियध करना है। अनुवाद यहके प्रदेश करतेश पत खनके अवर्गुकरायना प्रकरण वरना है। वरवमाति पहुके विहेश करतेका फल देयगति आदिका प्रतिचय करना है । नारवियाम इसप्रकारके बवाके देनका कल वहाँके सेवम रहनेवाले ्थिवीकायिक मादिका प्रतियेख करना है।

शुंका - होइके असंख्यातवे आगमें रहते हैं, देवळ इतना बहनेपर दोव लोकांका

समाधान-नहीं, वर्षाक, शेव और श्यांत अनुवोगहारके एव देशामरीक है, प्रदूष केसे हो सकता है है इसलिये 'लेशक प्रसंक्वारार्थ प्राथम रहते हैं ' इतने प्रवृक्त बहनेसे शेष लोगांका भी प्रदण

अब विदाय पर्वेणी अपेशा विश्वादारि नाश्क्रियोंका शेव बदते हूं — श्वश्थानसस्यान, पिद्वारयस्थरयान, वेदनासमुद्धात, वशायसमुद्धात और वैविविवसमुद्धातको प्राप्त हुए मिध्याः हो जाता है। रिश्वनारको जीय वितन होत्रम रहते हैं है लामान्यत्येक आदि बार होक्के बसंस्थातक भागममान क्षेत्रमें रहते दें और अवृत्तिहोणममान मानुगतीव से संव्यातगुचे क्षेत्रमें रहते हैं। । अव इसके अधिक प्रक्रपण करलेके शिथ यहांवर सार्राक्रयांकी अवसाहना करते हैं। पद स्तमकार है- पहली पृथियोंके पहले पायमें नावियोंका उत्सेष तीन शाय है।

तरस्य पायमें तात धनुष, तीन दाय और एड अगुज नार वियोधा उरसेय है। अधिमें मारकी एउटर स्थापन अगुज नार वियोधा उरसेय है। अभिमंत मुलको चटाकर उल्लेखका आग देवपर जा सच्च बाव वह वृद्धिका प्रमाण होता है। अब किस पटलक नारांबगोंक उत्सचवा प्रमाण साना हो उसे इच्छा मानवर उससे

र सच मिन्डद्र ह बहुआपि बसनो दृशी भागाएं। बीप्टिह्मग्रेड उद्भार छ प व, प्र, दरण्यमार arrio picasa 🛪 प्रश्नित्तित 🗸 🗸 व्हानन् एव स्टेट जिल्ल स्त्रेणी कत स्टेश्य हाराण्य र है.

	एर्द		हाए	रेताव	<u>स्त्रास्य</u>	ापत्यः	डेंगरइय	णमुर	मेघा ३	प्राणेय	व्या	तास	491471	
٠	ए५	१५ ग	1614	das	1444			_	- 1	0 1	201	22	12.5	1
1	'प्रस्तार	8	₹	3	8	4	4	9	6	-1		ε	19 18	İ
,	घनुप इस्त अंगल	0 94 0	2 2 6	१ २ १७	R R 84	30	३ २ १८ ^१	8 3	3 3 5 5	3, 5,	B. 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0	٠ ٢ ٤	211	
	1													ins.

युद्धिको गुणित कर दो, और मुखका प्रमाण जोड़ दो। इसका जो कल होगा वर्ष ग्रिका पाथहेके नारकियोंका उत्सेच समझना चाहिये ॥ १७॥ विशेषार्थ —यदापि हितीयादि नरकॉर्मे प्रथमादि नरकॉर्के अन्तिम पटलेक नार्पक्रिक

उत्सेष मुख हो जाता है, परन्तु प्रयम नरकम पहले पायड़ेके ही नारकियाँका उत्सेष्ठ मुख से अतपय उक्त गाथाके नियमानुसार पहले नरकके पहले पायहके नारिक्ष्यांका उनीह म निकाला जा सकता है । पहले नरकम पदल पायड़क नाराक्ष्माक विकाला जा सकता है । पहले नरकम पदका प्रमाण १२ और रोप नरकम अ जितने पायहे होंगे यहां उतना पदका प्रमाण रहेगा। यहले नरकम दूसरा पावश पहला मन्तिम पाथहा वारहवां गिना जायमा ।

उदाहरण-प्रथम नरकमें मुखका प्रमाण ३ हाथ और भूमिका प्रमाण रे हाथ, ६ थंगुल होता है। यक घतुपम ४ हाथ, और १ हाथम २४ थंगुल होते हैं। प्रमाणके अनुसार मुखके अंगुळ ३ ४ २४ = ७२ तथा भूमिके अंगुळ ७ ४४ +३ ४२४ +६३ हुए । उक्त गापानुसार इसकी प्रक्रिया करनेपर ७५० – ७२ = १४९ = ५१३ सं. = = २हाच ८६ अंगुल होते हैं, यह प्रथम पृथियोंके प्रति पटलमें वृद्धिका प्रमाण है।

बय यदि हमें प्रथम नरकके पांचये पटलका उत्सेषप्रमाण निकालना है हो प नियमानुसार ५६३ अंगुलको ४ से गुणितकर प्रथम पटलके उत्सेयका प्रमाण उसने देना चाहिये। "१" × १ + ७२ = २२६ + ७२ = २९८ झ, = १२ हा. ।

 ३ घ. १० अं. यहाँ प्रयम पृथिवाँके पांचये पटलके नारिक्योंके उत्सेधका प्रमाण है। इस उपर्युक्त गायोक्त नियमानुसार पदले नरकके पहले और तरहर्षे वागी रिक्त द्वीप म्यारह पायकुँदे नारकियोंका उत्सेघ छे थाना चाहिये। उन अवगाहनामाँधः यह है-(देशो मृतका नकता)।

१ प्रतिपु केषत्रमञ्जूष एव निर्देशः न प्रस्तागरिषदानि । तानि तु सरोधार्षमस्मानिः हर्षत्र वर्षाः १ रहरूकारण्या २ १९९च्यारुज्योर वदशो धीर्मनवामनप्रकामि । जीनान तृ साध्यमस्यामः बोरिव करणदाहिश्यम त्विषया। सुरुविदे किरिहर्ट विष्यविषद्भीत उच्छेरी । स्विष्यान दूर्य हुन दूर्वन वर्षारे हिंदे टेनिक इचार । कहटजावि कहटजावि कहाजाद निर्धादि निर्माण करिया व विवासिक होता उपने होता है हिंदियों व हिंदिय

वर्षत्वी तिवरण वस्त्व अंश्वाम तात्वमाण वाह महत्त्वा य है पृष्टपण्डेवहत्यो वसाहत्व्यन हर्षेत्र हर्षेत्र हर्षेत् वर्षत्वी तिवरण वस्त्व अंश्वाम तीराण्ड हे दो देश दो ह्या अंतिम दिवरूमंत्रतं होति। स्त बांद्रटाचि च रुच्हों। है दिव ददा दो हथा बिहार्सर बंद्रटाचि पजर्ट । संगेतनामर्दराष्ट्री दार्ग

विट्यिपुरविवनकारसपत्यढे जेरह्याणमुस्सेघो पण्णाह घण्लि वे हत्या वारह و, ٩٠) गुलाणि । समदस्वरचडणेरदयाणमुस्सेषो पुन्त्रिन्तमाहाए आणेदन्त्रो । तेसि पमाणमेर्द

विदियपुढीवेप क्यारसप्त	पव्यिल्लगाहाए आणर्ब्या। वात रस
गलाणि'। सेसदसपत्यडणरहयाणशुस्तप	पु हिन्दल्लगाहाए आपाइन्या। वाच १०। ११
3 3 8	4 8 8 183 58 58 54
प्रस्तार १	16 65 15 15 0 3 5
घडुप ८ ३ ३	5 - 46,046 34 15 15 15 16 64, 16 16 16 16 16 16 16 16 16 16 16 16 16
इस्त रे रेर्ट १८ है १४ है	
अर्थल । ४११	क्षा वासेच वन्द्रह चतुष, दी हाय, बा

हुसरी पुरिवर्गके ग्यारहर्वे पायहेमें नारकियोंका उत्तिव पन्त्रह घतुव, दो हाय, बारह अंगुरु है। प्रथमादि दोच इस पायहोंके माराक्ष्योंका उत्तिव पूर्वोक्त साधाके नियमानुसार है साना चारिये। उन अपगाहनामांश प्रमाण यह है-(देखो मृहका नकता)।

विशेषाप्र-इस इसरी पृथिवामें मुखबा प्रमाण ७ घनुष, १ हाष, १ मंगुल मीर भूमिका प्रमाण १५ घतुण, २ हाथ, १२ बागुल है। सथा, प्रतिपटल वृद्यिका प्रमाण २ हाथ, aoर्र संग्रह है।

चारी बातानि बचावीर्त व अंद्रकाणि वि । हीदि अक्षेत्रीतिवृहदमी परवाह पुरवीर ह बकारी कोर्दरा ार हथा मंदलानि देवंती | दक्षितानि हीदि बदयो विम्यंतवणानि नवलनेन ॥ वंग विन्य गोरंश एको इत्तो व ित वामानि । ठिन्दर्शिम बद भी वण्यदी वामकीयात् ॥ ७ दिव बोर्दशारि चलारी अंट्रठावि वामझे । वण्डेरी गहरणी पश्वित य तिवनासीय ॥ बाचात्रणांनि ॥ विष दो इया तेत्वेद्रवाणि वि । वयत्रणामपञ्जे वण्येरी पानपुरर्गत् ॥ कत व सराज्याने बंद्रवया एवशेत वसदी । वस्तिम व बण्डेहे होदि जाकेत्वामध्य ॥ वय शिक्षसमानि हमाई तिनि कक बंद्रकं । बादिरसीय बदलो रिक्टे प्रस्पारिय व ति. प. व, ११८-११०. र होबाए xx बक्र तेन वण्यस्य चनुरं अहारव्यातो स्वर्णाणी । जीवानिः १, २, २०,

र दो इचा वीलंडड एवालाविद दो दि चनातं । एसारे वहुम्बी ख्रालादेदे स्टिंड बच्छेरी ॥ वह रि॰ सिहारवाणि हो इचा अहतानि वश्तीतं । वृद्यातसिवातं उदसी पुन सिदेवनद्यात् ॥ वर देश वारीतेहतानि वृद्धातिम चडरानं म जेदामो ही मानी शिरिए वहांच उन्हेरे है नव देश विवृद्धे चडनतार देशावि पामानि । एकालसम्बदात उदमी समाहदानेंब जीतम ह दस देश को हत्वा चीरण प्यापि बहु साथ है। व्याकंटि मनिया करनो तमनियमित विदियण स एयात च वाले एथी रची युवदुताचि वि। व्यासारियतका करशे पारित्याम सं देशए ह बास सात्रवानि ए-पानि जहरणी होते । एकस्व समिरणि सपरे बारण्य वन्त्रेती ह साथ स्थानवाम विव हवा जिल्ले अहतानि ४ । एकसमदिवान्याचा वदशे क्रिनिस्प्राधि शिदियाए ॥ तरस्याच व ह या तेवाला अञ्चलाचे यणवार्था । एकास्त हे सांत्रण तिम्यवद्यवस्त्रि उपनेशे । चंदत द्रम कोलसहस्रा के बोहबानि वन्नानि । वृद्यसवयिक्ताह केल्यक की बन्धे के वृद्येचमाई हवा वदास अहतानि चर कारा । एक्सलाह अभिन्य कोक्यम कोस उपनेता है व्यव्माल कोटन हो हमा बासदलाम प । अदिवादक सम्डोडगारम विदियाय उच्छहो ॥ ति. च २, १३१०-२४२.

वदियपुद्धविणवमपरघडिन्हे णेरहयाणमुस्सेघो एकचीस धण् सेसद्वपत्यडणेरह्याणमुस्सेघो पुव्यिन्छगाहाए आणेरच्यो । णवरि ए सहत्याणि भूमी होदि । पण्णरस धण्णि वे हत्या बारह अंगुलाणि सर्द सोहिय उस्तेषेण पत्रहि मांगे हिंदे वहीं होदि। तं विहुं पत्रसु ट

र्याचरेहि गुणगरेहि गुणिय मुहम्मि पक्सिने हिन्छद्दरसेघो होदि । प्रस्तार १ | २ | ३ । ४ | ६

घडरचपुद्रविसचमवरयङ्गेरङ्याणसुस्सेची वासङ्घी घण्णि वे हत्या वीतरी वृधियोक मार्थे पायहेमें नारकियोंका उन्तेण कारीत पतुर

है। होत बाट पायमुद्धि नारक्षियोंका उन्तेय पूर्व गायाके निवमानुसार हो ह इननी विशेषना है कि यहांवर इक्नील धतुन और एक हाथ मृति है। पानुह ह कीर बारह भंगुन सुम है। भृतियान सुलको यहाकर उन्नेष (पर्) मी का वृद्धिका श्रमाण थाना है। (नीमरी पृथिशीम प्रनिगटक वृद्धिका प्रमाण १ धनुन, देन हैं बंगुल हैं।) इस शृक्षिकों भी स्थानों स्थापित करके एक मादि पश्चिम वित्त करके मुख्ये विता देनेपर इक्टिएन पायके नारकियों हा उस्मेध माना ममाल वर है- (देशो मूल्या नहता)।

बीधी श्रीवर्षाक सानवें पायहेमें नागहियोंका उन्मेध वानट धान भीर ही है हेबारू अन्न इन्होतन दुन्दर्शन नतूर प्रकारतमो । ग्रीहानि, है, है, हरे,

६ दुश्य बच्च वा देशो वार्तान अंतुन्ति वी बारा । श्रीवनावद कारशा वसार सावस्त्रीया चेंचारी चर्णान बद्दान्य हा बागा । निवयन्तिहा सच्छा उद्धा नामद्वाप्त बांच प । पनावर्षन दश ष्ट्रहरूचे तिहेशम् । तमाद्रहरूच र्वद्यक्तास्य मार्थम् १०५१म् । वस्तर प्रदर्भव व द्वार बद् et geleg teg geers gewegnig in angen gin ibeam die ite fen in die gurin.

processing days and a second of the second second second TREWER BE B GOOD TO ASSESS OF STATE OF STATES OF STATES Bridge rege a money remove to restrict the property Crokening their to be creamy then to in their fied satelot acording a resident

िय रोग-१९-परघडणेरहयाणमस्नेची आणेडच्यो । तस्य प्रमाणमेर्ड --

	,		-					
प्रस्तार	?	. 3	¹ - ₹	8	4	Ę	v	1
धनुष	34	g o	88	88	43	40	६२	ı
इस्त	२		8		ર	٥	2	ı
अंगुल	20%	\$0%	\$ 4 8 A	303	£ 3	3:	۰	١

र्वचनपुरत्विचमपत्वरक्षार्याणमुस्तेषो पणुवीतुचरत्वरथणूणि । एर्द भूमि करिय तुम्रपदण्डं पत्वराणमुस्तेषो जाणेदण्यो । वैक्षि प्रमाणमेर्द—

ग्रस्तार	1	२	3	8	4
धनुष	196	৩ে	१००	११२	१२५
इस्त		२	=	হ	0

स्ते भूमिकपसे स्थापित करके दोच छह यायहाँमें नारवियाँका उत्सेध के भागा चाहिये। इसका प्रमाण यह है— (वेस्तो मुक्तका नकता)।

विद्यापथि—इस पृथियोमें मुख का ममान देश यनुत, १ हाथ और भूमिका ममान ६९ धनुत, २ हाथ है। तथा, मनिष्टल पृथिका प्रमान थ धनुत, १ हाथ और २०ई भेगुल है।

पांचर्या पृथिणीके पांचर्य वायहेमें नारकिर्योका उत्सेष पक्ती पच्छीस प्रमुप है। इसे मुमेक्यले स्थापित करके रोष चार वायहोंके नारकिर्योका उत्सेष के माना चाहिये। इसुरा प्रमाण पह है— (देगो मूलका नकता)।

विशेषां — वांचवां पूरियोज मुलका प्रमाण ६२ धानुष, २ हाथ और भूमिका प्रमाण १२५ धनुष है। तथा प्रतिषटन कुळेका प्रमाण १२ धनुष और २ हाथ है।

च नड दरा हीत है यो जनशाने बीज कह पवित्ता। चड सावा तुरिवाए पुरारी हानिवर्ताओं ॥
पनितं दें देवए द्रांता वोला बीव जागानि । कांग्रेस चडाया उटको सारिदाण सेता ॥ पाठले के बाद बीजानिक के प्रचार के राज्ये । कांग्रेस कंप्येस त्रारीया सारक्षत्रओं का चडाय के बारिदा से स्वास से बाता हो। कांग्रेस के बाद चडायी । कांग्रेस कंप्येस व्यवस्था व्यवस्था के स्वास के उत्तर व कांग्रेस हो स्वास स्वास द्रितिकां के सार्वाय कंप्यों। तो सम्मा वाधाने को हमा अहात कर्याण । कांग्रियाले बदसो द्रारीय कांग्रियाल जीवाला अद्यावना वाधा कांग्रिया अहात व वर्षाय । चारपांच प्रचार के प्रचार कांग्रिय कांग्रिय कांग्रिय कांग्रिय कांग्रिय के प्रचार कांग्रिय के स्वास कांग्रिय कांग्र

व प्रवर्तिष् अ प्रवर्तिस भक्तम् । जीवानिः ३, १, १२.

३ व १८ साम्रक्षण में दा हुत्या ववस्थान पुरश्यको सक्षत्र हुन्य समाने विगति स्वेतर होई हो वमहुकारियोज्ञाना सोटका सम्बर्गन पुरश्यक । वटनिद्वानिक कदभो करणाने सरकार आशाण हा कलारूटी ददा दो हुन्या वयसोर कोर्गन हुन्यक्रमिक व सन्यासे नारवक्षीतम् उपकेही ॥ युक्त कोर्टर व स्वयास नारवान वरस्तो वरस्ती वासानि र

छद्वीष पुढवीष तदियपत्यडणेरह्याणमुस्तेघो अङ्गाइज्जसद्घण्णि । एदं स्मि करिय सेसदोण्हं पत्यहाणससोघो आणदन्ते । तस्य पमाणमदं-

प्रस्तार ।	१	2	3
धनुष	१६६	206	રૂપ્૦
इस्त	2	१	۰
अंगुल	१६	6	

सत्तमाए पुढवीए वेरहयाणमुस्सेधी पंचसद्धण्वि ।

तेसि पमाणमेदं--एत्य णेरहण्सु उस्सेचअट्टममागो विक्खंमो ति कड्ड परिह्रवमर्द्ध करिय विक्सं मद्रेण गुणिपुस्सेहेण गुणिदे णेरहयाणमोनाहणा होदि । ओगाहण पढि सचमपुरशी

एठवाँ पृथिपीके तीसरे पाथदेमें नारिकयोंका उत्सेच दाईसी चतुर है। रसे भूमि इरसे स्यापित करके दोष दो पायहाँके नार्राक्योंका उत्सेख छे माना खादिये। उसका प्रमाण यह है-(देखे। मृतका नकशा)।

विश्चेपार्थ — छडी पृथिक्षीमें मुखका प्रमाण १२५ धनुष और मूमिका प्रमाण २५० धतुर है। तथा प्रतिपटल वृद्धिका प्रमाण ४१ धतुर, २ हाथ बीर १६ बंगुल है।

सातपी पृथिवीके नारकियोंका उत्सेघ पांचली घनुप है। उसका प्रमाण यह है-

(देखो मृलका नकशा)। यहां नारिक्योंमें उत्सेषके आदर्थ मागप्रमाण विष्करम होता है. देसा समझकर, विष्कृत्मकी परिधिको आधा करके, और विष्कृतमके आधेस गुणित करके उत्सेघस गुणित हरनेपर नारिक्ष्योकी अथगाहना होती है। अयगाहनाकी अपेक्षा सातर्यी पृथिपी प्रधान है।

बारदेशसम्बद्धक अंधवरित हो हत्या। एतक कोर्डरसर्व अध्मादिवं वंचवीतसमिति। पूमयहर चौर्निहर्दित द्वित्रवरित उच्छेड्डी II ति. व. २, २६१-२६५.

t कट्टीर × अङ्गारण्यारं चतुनवारं । जीवानि- ३, २, १२.

२ पुनक गण्डे देवा इ जाई दीरिंग बोज्जंद्र ज्या । क्ट्रीग्र वयदार्थ पीतालं द्वारित हुँगर व काम ही अधिवतर वे दौरा हीति होते हुना व । श्रीटन कथा व पूर्व हित्यप्रश्रम् व उन्हों।। देख्य समामि अहाउस दशानि अहुतुर्व प । वर्षातं करीर वर्द्धिरद्भीवत्रवर्षेते स पण्यापन्धार्थेपणि दोण्यि स्थानि सरावचानि च । क्षंत्रवार्द्धिर्द बीबाल टच्डेही ।। दि. य. २, २६६-१६९.

१ सदस्य रू× पंदधनुनदाई। जीवानि, १. २. १२.

च पंत्रवर्श चनूनि सम्बजनगीर जनविद्यानिय । सन्ति निश्यान कारण्येही दिगारेती ! P. 4. 2, 200.

प्पाणा, पटमपुरविजोगाहणादो सत्तमपुरविजोगाहणाए संखेन्त्रमुणसुवकंभादो। दुव्यं पडि पदमपुरवी पहाणा, सेसपुरविद्व्यादी पदमपुरविद्व्यसम् असंरोज्जगुणनुवसंभादी ।

जोगाहणगुणनातादो दन्त्रगुणमाते चहुमो नि पढमपुरवी पहाणा कापन्त्रा । सामण्येण एत्प अत्यपदं मुचदे । सत्याणसत्याणसत्ती मृत्याविस्त संखेज्जा भागा द्देषि । विद्वतिदेसत्याणचेदण-फसाय-चेत्रिन्ययसमुग्पादरासीओ मृत्यासिस्त संदोज्जिदि भागो । एदमत्त्रपरं सण्डात्य जीजेद्व्यं । युवी अप्पपणी शसीजी रुविय अंगुलस संशेजदिभागमेशोगाहणाण गुणिय चरुहि सोगहि ओविटिरे चरुष्टं होगाणमसंस्थानीर त्रप्रकार्यमान्यमार्थणार् सुन्य वश्वः लागाद आवाहः पदुष्ट लागणनावस्थारः भागो आगण्डारे । माध्यमलेषोषावहिदे असंदेख्याभि माध्यस्येवाणि होति । णदि वेयण-कमारेम् णवगुणां, वेदिन्यसमुम्यादे संवेदक्षमुणा अमादणा सन्दर्य कायन्त्रा । एवं वेयण-कमारेम् मारणीविषयदस्स । णवरि ओवङ्कं ठविज्ञमाणे पटमपुरविदल्जं पद्दाणं कायन्त्रं । हदो १ मारणिविष्टि परिणद्ञीवस्स करव विमाहगईए रञ्जुअसंखेरजीरेजागमेत्तरीहत्तस्स वि

क्योंक, पहली प्रियोकी अवनादनात सातथी प्रतियोकी अवनादना संवयातगुणी पार न्याक, प्रदेश श्रायमा क्यामात्र स्थान एक प्रतिकृति है स्थानि, हिलीसाहि सेय छह जाती है। तथा, दृश्यमालको स्रेश्न यहली पृथिपी nun है, स्थानि, हिलीसाहि सेय छह पूर्णिवियों के त्रस्त्रमाणले पहली पृथियोंका प्रस्य असंस्थातगुणा पाया जाता है। इसवकार सातवी श्रीवर्णोके अवगाहनाके गुणकारते पहली श्रीवर्णके द्वरवयमाणका गुणकार बहुत बड़ा है, इसलिये यदांपर पहली पृथियोको प्रधान करना चाहिय ।

क्षत्र सामान्यरुपसे वटांपर अधेवहता निरूपण करते हैं - स्वस्थानस्यस्थानराशि मूल नारवरादिके संवशत बहुमागत्रमाण है। विदारयस्यस्यान, वेदनासमुद्रात, बजाय-समुद्रात, भीर वीकीवकसमुद्रातको शास राशियो मूलराशिक क्षेत्रवातेषे भागप्रमाण है। यद मर्पवर सर्वत्र जोड़ हेना चाहित्र । पुनः श्रवनी अवनी राशियोदी द्यापित वरके, कर्दै अंगुल्के संब्वातय भागप्रमाण अवगादनासे गुणित करके जो सच्य आये उसे सामान्य श्चादि चार लोकांसे पृथव पृथक् भाजित करनेवर, अर्थात् सामान्य आदि चार लोकांके, तात्रमाण चंद्र करनेपर, बार हो झोका अलेक्यातमा आत स्वय्य जाता है। तमा उक्त प्रमाणकी भानुपालेक्से अपवर्तित बरनेपर अर्थान् उक्त प्रमाणके मानुपालेक्यमाण् संह करनेपर नागुमध्यक्त न्यामाः न्याच्य न्याच्य प्रश्नातः है कि वस्त्रातमुद्रातः और इत्ययसमु सतायात सार्युपण कार्य पुरुष राज्य पुरुष होता है । विश्वविद्यासमुद्रालमें अवगादनाको सर्वेत्र संस्वातः द्वातमें सर्वेत्र मयगादनाको नीमुणी और विश्वविद्यसमुद्रालमें अवगादनाको सर्वेत्र संस्वातः गुणां कर लेता चाहिये। मारणान्तिकसमुद्धातका कपन इसीवकार जानका चाहिय। स्तर्नी पुरावता है कि अपयमेगाके स्थापित करनेपर पहली पृथियोके द्रव्यको प्रपान करना पादिये, वर्षाकि, सारणान्तिक समुद्रातले परिवत हुव जायक यहाँ विप्रद्रगतिमे राहुक 1 देरनावहृत्य तथ तथोरते 🔍 त्रतिस्थय लेतेन विश्वसदार-देण निषया ठाँदेश 🗙 ४ दहा. ६६, १७.

एवं कतायसमुद्राधातप्तवे आवणत त्री। प्रका ३६,१८ संखेजनिमान दर्शनित साख-जाति जासमात द्यदिनि दिन्त्य वा द्यवप् एकत् 🗙 💥 🕻 ६, १६

उन्होंनाहो । तेन आवित्याए अपंस्वविद्यास्यायेचयदमयुद्धविद्यवक्तमणकातेव अल्पेक्ट्रिया अपंस्वविद्यास्य अपंद्यविद्या अस्य अपंद्यविद्यास्य अपंद्यविद्या अस्य अपंद्यविद्या अस्य अपंद्रिय अपंद्र्य अपं

कार कर कर के अपना अपन में पैता भी पार्च जाती है। इसाँटिये आयलीके असंक्यानमें आगवनाय गर र पु पा के प्राप्त करणाले व वांत्रवायपाने वरनेवाली गाविषा भातित वरके तो सम्ब का क कर्णक कलाना बबुज मानाएण भीता क्षित्रदेश करते हैं। संघर बनेक भी सर्मनान कर्तालामाण क्रांत जो र स्थापनी सारलान्तिसम्बातको करते हैं। शुना इस बाउकी क्ष्य पर करे आज रण्य आए पार्ट नक्ष्यम् शालेक अवक्रमणकाण्ये गुणिन करनेपर मार्ग्यानिय केक्टराल्यात होती है। पूज अवस्थितीक मुलावित्सारने भी गुला राजके अर्धनगामर्थे शामि कालका अनकर एएका क्रांटक करनेकर सारकारितकास्यातकाव होता है। प्रवाहरी करार्क रूक कर्णात कर बार वार्य तार्य तार्य असंबदावर्त आवार पूलरी पृतिविधिकती प्राप्त क्षा कर करने हत दिने के के नुसरी पांतरी में प्रथम बीनवाँ र निश्वासी भीव बीते हैं। कुछ कार्रे एकंक अन्यान्य अन्यान अन्य नुस्ता आमश्रम बतानित प्रत्य एवं बहते बुक्तर बरावर विवद के अल्बानिकसम्मानिक क्षाय देनियाँ निर्मेन मिस्मारी क्ष र है न है। हुन वाच कुछन प्रशास्त्रीय नगरन्यानार्थे जानकी आगदानक्ष्मी क्याँगि का बार - नर्रे हे । रिकटर्र ने वे व हुँव विस्तारमधार मारणामिता समुद्रात सरके दूर्ण ह नवार अर्थन क्राय्य अर्थ ह है है, यन्ता बतन बनमा आहिंग, बर्गेहि, सर्देव शहे कार अवक्रि कुर १६० १९ ११ वर कार कार है। यून इस इसकी नी सुनी साईते सूर्वर भरेकोरी अस्तारकाच मुक्ताप्रकार वाह बारता वार्गरेष । यहाँ पर अपनार्तना नद्रवेड THE SEC SICE

मार्गितिपराप्तिमिष्टिप्य दो आवित्याए असंखेजजिदमाये अणोष्मामुने करिय पुष्टरामिस्स भागहरि ठविय सप्पाओरमण आवित्याए असंसेजजिदमाएण मुनिदे मार्ग्गित्यगमी होदि । सेसाविधी पुद्धं व । एवं सम्माजिष्ट्यादृहिस्म । चन्नरि मार्ग्गित्यं पि चन्नि । असंजदसम्मादृहिस्य सामार्थामा । चविर ठववादो अस्वि । मार्ग्गित्य-उवनदेमु मेर्द्र्या सम्माहृहिलो संसेजजा चेव होति । सेसं आणिय वचर्चा ।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ६ ॥

र्व्याष्ट्रियणयमवरतिय सुचे जदा हिद् ' तदी सचर्च पुदवीणं प्रत्वणा जोएएर-यणाप सुद्धिच पढदे । पजवाद्दयणय पुण जवलीवक्रमाणे पदयपुदविषर्वणा जोए-पर्वणाप सुद्धा, सम्बर्गणाणं सम्बर्गदिहि सरिसमुबलमादी । ण विदिणादिचंचपुदवीणं परुवणा जोपपर्वणाणः पदं पढि सुन्ता, सत्य जसजदसम्माद्दीणं उपवादामाबादो । व सचमपुदविषर्वणाणः वि विराजीयपरुवणाण सुन्ता, मासण्यनमादिद्वारणंत्रियददस्य अर्थ-

र्गीप्रकार साठों पृथिवियोंमें नारकी और लोकके अमेरपाउदें बागप्रवास क्षेत्रमें रहते हैं ॥ ६ ॥

वृद्धि यह गृह दूरवार्धिक मयना अवसंवन सेवर शिवार है, दलतिये नामों इत्तिक वाली अस्ति स्वार्धिक स्वर्धा संदेशकार्थिक स्वर्ध महित हो जाना है। वर्षामार्थिक स्वर्ध महितार संदेशकार्थिक स्वर्ध महितार संदेशकार्थिक स्वर्ध महितार संदेशकार्थिक स्वर्ध महितार सेवर्धा स्वर्ध स्वर्धा स्वर्ध स्वर्ध के स्वर्ध है। वर्षामार्थिक स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य

१ मारेषु " बदी दिव करी दिव " वरि वय ।

चर्सम्माइट्टिमारणंतिय-चववादणदाणं च तत्य अभावादो । सत्तर्ण्हं पुडवी**षं जेनाहकान्त्रे** मार्ग्गनिय उत्रवादाणं ठविसमाणरञ्जुमेदो दन्वविसेसो च वत्तन्वो । पदमपुदविमिन्निष मारणंतियसेचं तिरियलोगादे। असंखेअगुणं । इदो १ पदरंगुलस्स संसेजदिमागगुनिरहरू सेदीए संखेळदिमागण गुणिदे तिरियलोगादो असंखेळगुणचुवलंभादो चि['] एगप्देनवाँ कार्न जा उकस्मेन सगुप्तिचरेसो चि मारणातियसेचायामस्सुवरुमादो । ज वरन निर्दे, महामच्छत्तेचद्वाणपरूवणप्णहाणुववचीदो । तत्य जेण सेदीए असंखेजदिवानापानेन मार्जनियं करिय मरना बहुवा, तेण तिरियलोगस्स असंखेळदिभागतं घडदे ।

तिरिक्सगदीए तिरिक्सेसु मिच्छादिट्टी केवडि सेते, सन लोग् ॥ ७ ॥

एदर्ग ग्रुषर्थ पुरुवणा ओ।यमिन्छादिहिपरुवणाए तुन्छा । णवरि वेत्रिवनः गृहुन्यादगर्त्रीता िरियक्षेगस्य असंरोज्जिदिमाग, विश्विष्ठेष्ठ विडन्त्रमाणसभी विन

न्द्रशिनंदर्ग्या मारनाश्चिक और उपनाद पदका कमाय है। यहांपर सातीं पृथिवियाँकी सर् कारणका भेर, भीर मारणानिक तथा प्रपादका स्थापित होनेपाला राहमेर और हुण्य दर्भ पढा करना कादिये। यहली शृथियोके सिक्यावदियोका मारणानिवक्ष िर्देश्टोंको अर्थान्य नगुना है, वर्गीकि, आरणान्तिकरामुखातको प्राप्त राशिको प्रतरागुर्वक संकरणहें सामने मुनिष्य करके पुत्रः अग्नेशीक संक्यातये सामसे मुश्तिक करनेपर तिर्वेषा समें अर्थन्य नमुना क्षेत्र यात्रा जाना है। तथा यकानेदाने लेकर उन्हादकमने अन्त क्रमार्जेड क्रोराज्य आरकान्तिकशेषका भागाम पागा जाता है, इसलिये भी पहली पृतिकी किंदरप्रीय का आवणा-तिकशेष निर्यालीको अर्थवयात्राणा है। और यह कथन अस्टि की वहीं है, क्वी कि, महामान्यके के जन्यानकी प्रकारणा सन्यथा थन नहीं सकती है। बहात कृषि करणेरीके क्रमंभ्यानुर्वे जाग भाषामक्ष्यने मारणानिकलमुदानकी करके मरनेपाँ को र रहन है, इसजिये निर्यम्होद्या अनेस्थानयां ग्रास यन जाना है।

दिर बर्नाट वे दिवंपोंने मिथ्यारिष्ट बीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं। ता होड़े

11011 3 578

इस स्वर्ग अवदका क्षेत्रीयव्यार्गत अवद्याके सभाव है। इसनी दिशेषना है हि देलिरिकसम्बातको आला तिर्वेत जीव तिर्वेत्रोतको असंब्यासये मागप्रमाण क्षेत्रमें सर् हैं , क्योंक, निर्देशीय शिविता दश्येताली शक्षित प्रश्लोतमध्ये भर्मव्यालये मांगमाच समीत्रीय

guren fein gleimen

क काम एरक्ट्राय गर का मार्ग नवामामक्ष्य विश्वयन्त्रवाहरूमं, बाल्योमं अहर्मेन स्रदृत्तम् स्रवेतम् and available make taking analong general general general ART, \$4, \$4,

एगपणेगुल वा ।

दोवमस्स असरोजजिदमागमेचेषणगुरुदि गुणिदसेदिमेचो चि गुरुवदेसादो।

सासणसम्माइडिपहुडि जान संजदासंजदा ति केवडि खेते, होगस्स असंखेञ्जदिभागे ॥ ८ ॥

पदेन देनामासियमुचेन यूचिद-अत्यो युच्चेन सत्यालसत्याण-विहारविहमत्यान-वेदल-कसाय-वेदचिद्रपिट परिणदासम्यासम्यासिट्टी केविट खेच है चहुन्दूं होगामम-संखेडजदिमारो, अद्वाद्रज्ञादो असंस्वेडज्युणे अन्यंति । सामियमालं मत्यामाणे सत्यान-सत्यालसारी मुदराविस्स संखेडजा भागा निससारीको मुदरापिस्स मंगेरजदिमागोगीजो । लावि येडिन्यसाम्यादासी मुदरापिस्स असंबेडजदिमागो । इदी है निस्तेयमु विद्यानाम्याचारीयणे पदरे संबचानायारे। एत्य जीवाहण्यालयारी संगेरजप्रानुम्बेचे,

मुणित जगभेणीयमाण है, वेसा शुरुवा उपवेदा है।

सामादनसम्पर्धि गुणस्थानसे लेकर संवतासपत गुणस्थानतको निर्यंत श्रीह किन्ने धेनमें रहते हैं है लोकके असंख्यानवें मागममाण धेनमें रहते हैं ॥ ८ ॥

भव इस देशामां स्व कृति स्वित अर्थसे करते हैं—व्यवस्थानवारात, विदार-वारवार्वात, वेदनातानुकात, कावावतानुकात और विविद्यंततानुकारक पर विकास नामाएक सम्बद्धि तिर्वेष और कितने देशामें कते हैं है सामाएकोश आहे बार लोगों के लंगानानान मागमाण देशामें भीर अद्वादेशिय सर्वेष्यातानुंगे देशामें दरने हैं। वार्ष्यावारवान आहे कत्त सादिवोंके प्रमाणका करान करने पर वार्ष्यानस्थालान वीवसादि स्वर्शित संख्यान बहुमावप्रमाण है। तथा तेष साविष्यं मृत्यादिके संख्यातवे साववार्या है, क्यों क है कि विविद्यंतानुकारों प्राप्त कार्या मुक्तादिके संख्यातवे आगवार्याव है, क्यों क तैर्पयों विविद्यंत करनेवादे जीव प्रयुद्ध संख्यात हैं। यहां वर अववाद्यावार नामाल्यास है, क्यों क

दिश्विभि— यहां वर अध्यादश्यक शुवाबार को शंक्यान वाश्यात करवा यह प्रतिशुक्त करवा यह प्रतिशुक्त करा है कि विशेष्ट्रवर्षण विश्वेषी स्वाप्त स्वाप्त कर्मा कर्मा है कि विशेष्ट्रवर्षण विश्वेषी स्वाप्त स्वाप्त क्षात्र क्ष

ह बारद्रमा हेड कारामोह वालंबतार्यादा । विदेशीय विद्या वनमध्या । विदेशीय विद्याप्त वालमध्या । विदेशीय विद्याप्त

सासजसम्मादिही केविड खेते ! चदुण्हं लोगाणमसंखेजबदिमागे, अड्डाइज्बादी असंहे गुणे अच्छीति । ओघरासिमात्रलियाए असंस्वेज्जदिमागेण भागे हिदे मरतप्राप्तणक इंद्विरासी हे।दि । पुणा वि आवलियाए असंक्षेज्वदिमागेण' हरिय रुव्गेण गुणिदे म तियसस्यादगदरासी होदि । पुणी वि आवित्याए असंखेजनदिमागेण मागे हिदे मेचायामेन मारवंतियसमुग्यादगद-एगसमयसंचिदरासी होदि । तमावित्यार अ च्बदिमारोज गुणिदे तक्कालसंबिदरासी होदि । एदं संखेजजपदंगुलगुणिदरण्यूए पु

मार्गिविषक्षेत्रं हे।दि । एवमसंजद्-संजदार्शंजदार्गं । सम्मानिष्ठाहट्टीर्गं मार्गिविषं गरि उववादगदसासणसम्मादही केवडि खेले, चदुण्हं लोगाणमसंरोज्बादिमाणे, अ च्यारी अमेलेज्यगुणे । एत्य रासिपमाणमाणिज्यमाणे मृत्ररासिमावतिपाए असेलेज

किया है, तो भी उनके मनांगुलका ममाण उत्तरीत्तर संस्थातगुणा कहा है। यहांपर देवे पर्यानजीकी अध्यय भवगाहमा वक्त्यार संक्यातसे माजित धर्मागुल प्रमाण करी संबदनः घरणाचारने उभी जवन्य अपगादनाके वनकलको द्विमें राउकर 'यह वर्गा

इनीवचार सम्याग्नियाराष्ट्र, असंयतसम्यग्द्रष्टि और संयतासंयत निर्देशों रवाधानम्बरदान माहिक विषयमें समहाना चाहिया मारणातिकसमुदातको मान बारगाहनमाध्यक्षत्रि निर्वेष कितने केत्रमें बहते हैं ! सामाग्यक्षोक मादि बार हो असं करान्य मानवमान क्षेत्रमें और अदृहिश्वीयमें असंस्थातगुरी क्षेत्रमें रहते हैं। मीधार्य व्यक्तीं व वर्षव्यानवे सामने साजित करने पर अरमेवानी सासानुनसञ्चादप्रि निर्वेषा हैं। है। किए भी बायफीके अमंद्यानयें सामने भारतन करके यक्त कम उसने गुनित प दर इत्यान्त्रिक्षमञ्ज्ञातको प्राप्त गाति। होती है। शिर सी भाषणीके समेक्यातर्वे स करीतन करते पर कार्यमात्र आयामकी आयेशा मारणातिकशम्हातको प्राप्त पक्ष सम के बन अवस्थान होती है। हम मानशीके अमेरवातये प्रायम गुका करने पर मारगारि

कर्ते हैं का है। डरप्तरको आन्त्र मानादमनस्यक्ति निर्मेश किन्ने स्वाम रहते हैं ! सामानि कार्न् बार स्वाहित सर्वन्तान है सामजनान के वास वहता है। पानिकार स्वाहित स्वाहित है। पानिकार स्वाहित स्वाहित स् है। यहाँ एवं मान्यावनसम्बन्धि निर्देवींबी द्वापातृत्वाताचा प्रमाण स्रोते पर मूल्लां

समुद्रान्दे बार्ट्स संख्ति हुई रुश्चि होती है। इसे संबंधान प्रत्यांतुरोंने गुणित रातुर्प है करने कर मारकातिक क्षेत्र होता है। इसीयवार असंदानसम्बद्धि और सेदनासंबन निर्देष कारणा निष्मानुदान्ते विषयमे बहना चाहिए । नाम्यामाध्यारहियोहे ब्रारणा निष्मा पंचिदियतिरिक्स-पंचिदियतिरिक्सपन्त-पंचिदियतिरिक्सजाणि-णीसु मिन्छाइट्टिपहुडि जान संजदासंजदा केयडि सेवे, छोगस्स असंसेवज्जदिभागे ॥ ९ ॥

र्वचेत्रियतिर्वेच, वंचेत्रियतिर्वेच वर्षात्व और वंचेत्रियतिर्वेच योतिमती शहोने मिष्याहरि गुणस्थानमे केवर संवकाश्यव गुणस्थान वक्ष सत्येक गुणस्थानके त्रिपंच कितने क्षेत्रमें रहते हैं है लोकके अर्थस्थावरें मागस्थाय क्षेत्रमें रहते हैं ॥ ९ ॥ एरं पि देसामासियं सुचमेन, संगहिदाणेगसुनत्यारो । तं जानं क्यानं सत्यानं निवस्ति स्वामासियं सुचमेन, संगहिदाणेगसुनत्यारो । तं जानं क्यानं सत्यानं निवस्ति स्वामाणनेद्या-क्यायस्य स्वाप्ति स्वापिन्छाइहे के स्वित् स्वाप्ति स्वप्ति
यह भी सूत्र देशामशुक्त क्षी है, क्योंकि, इसमें मनेक स्त्रोंका मर्थ संबद्धीत है इतरा क्यरीकश्य इसम्बद्धार है—स्वस्थानस्वस्थान, विद्वारवास्यस्थान, वेदनासमुखान के बवादमामुद्रामुक्त प्राप्त पंथित्रियतियव निष्यादृष्टि अप कितने क्षेत्रमें रहते हैं। सामा होत्व, उप्पतिक भीर अधालीक, इस तीन होकोंके सर्सक्यातर्व आनुक्या हेरकमें निर्याद्यांक संक्यानमें मागत्रमाण शेलमें भीर भश्रदिशितो असंक्यानमुक्ते हैं के रहते दें । बहार पंचेन्त्रिय निर्वेच भगवीता जीवरादिको छोड़कर पंचेन्त्रिय निर्वेच वर्णान कारिका है। सरस करमा बाहिय, क्योंकि, अयर्थालांकी अवनाहमाने पर्यातांकी अवनाहमा असंक्रात्माची वर्ष अर्ता दे । बहारर क्ष्याचानस्वरचानशाही भूत्रशाहिक संस्थान बहु अर हरून होनी है। ब्रान शासियों सुद्धाांत्रीके संस्थानचे आगायात्र होती है। यहांपर सन्तादनन कुणकार संस्थात सर्वातुत्रप्रमात है। अववर्गनांका कथन जानकर करना वादिय । इस्रेडक देवे देन किर्य वर्षान नथा योशियती निर्यंत विध्यादृश्यिकी साम्यानस्थानगाणि सी समझना कार्रेय । वैतिविष्टसमुदानको मान पंचित्रिय निर्धेस निर्धारि हिम्ब केच्य वहन है। लगान्यलास आदि चार कोचीस अर्थयानने प्राणमान हेर्य क्टर अपूर्वप्रशिक्ष असंकारमाने क्षेत्रमें पहले हैं । इसीयकार पंचित्रिय निर्देश वर्षात हरा देनियमी निधेव निष्यारशियों व विशिवसमुद्रातमा श्रेष जानना चाहिय । कार्य निचम्पार नहीं प्रतन प्रवेश्तिय निर्यंत वर्षाना विष्यापति श्रीय दिनने क्षेत्री रही है। सामाण्यांच, कारेलांच मार क्यांनां प्रवासाय अधि विनन श्रेषा प्र वहि है, करोंकि, प्रेकेट्रकरियंव वर्षात्रशासिका मागरार प्रशिवमके मर्गन्तार्व मानुन दस्य द्वारा है।

सचादो । तं कर्ष ! संसेज्जनस्साउअतिरिक्योनक्कमणकारीण आनशियाण असंरोज्जदि-भाषण तेरासियकमेण मागे हिंदे मरंतपंचिदियतिरिवसियन्छाहद्विपनाणं होरि । एन्य उवन्त्रमणकालाग्मणविधी । बच्चदे- संसेज्जावलियाम जदि आवित्याए अमंनेज्जदि-भागो विरंतरुवक्कमणकाली छन्मदि, तो उवक्कमणाणुवक्कमणप्पयम्मि आयुट्टिदिन्दि केचियमुवक्कमणकालं लगामा चि पमाणेण कलगुणिद्मिच्छमोविद्दे आवित्याए अमर्थे-ज्जदिमागमेनुवनकमणकालो सन्मदि । एवं संस्वज्जनस्माउजरासीणं सांवराणमूनस्कमण-काला अन्नेसि पि आणदच्यां । पुना मार्गितियरासिमिन्छिप अवरं पनिदीरमस्म असंखेजजीदमार्ग भागहारे टविय रुव्णेण गुणिय रज्जुजायामेण हिदरासिमिन्छिप अप्येण पितदीवमस्त असंरोज्जदिमागेण मागहारी दवेयच्यी । प्रणी एत्थरणसंचयमिनिस्स्य मारणंतियउवस्कमणकारुण आविषयाए असरोज्जदिमाएण गुणिय पुना एरं रस्तुगुनिदः संयोजजपदर्शालीह गुणिदे मारणंतिपराचं होदि। एदेण तिष्णि वि लागे मागे दिदे

र्रावा - यह केसे है

₹. ₹. **९.** }

समापान -- संबदात वर्षकी कानुवाले निर्वेकीके उपक्रमणकालका आहरीके भर्मचयात्रवे भागते भेराशिक समेत शाजित करणे यर शतेक स्रायवे शरेनेवाले यंकेन्टिक तिर्धेश मिथ्यारिप्रधेश प्रमाण होता है।

Me uti ur gunnnunge mitel folget weit 2-niegen meinebe भीतर यदि मावलीका अर्थरयातयां आगप्रमान निःश्तर उपश्रमणकार धान होता है, की उपनमण भीर आगुपममणकण आयुषी विश्वतिके श्वीतर वितने उपनमणबास प्राप्त होते. इत्तमकार भाषक्षीके असंबदात्रवें भाग प्रशांत करतातिके उपचमन श्रीर अन्यवस्थानक आयुर्व दियतिहर पुरुष्ठाशशिको गणित वनके और संख्यात आयरीप्रमाच अमाजराष्ट्रिका माग देन पर आवलीके असेव्यातये आगमात्र तप्रत्मकत्रात आप्त होता है। हमीप्रवार संख्यात वर्षकी आरायाती अन्य साम्तर काशियोंका की जदलावतकाल से आता काहिये । करः यह मारवातिक शहिला प्रमाण सामा है, इसस्थि वह स्वश परदेश्यमें असंस्थातन भागप्रमाण भागद्वार रथापित करके और एक क्रम उसीसे गुवित करके राष्ट्रप्रमान आराजकी भपेशा रियन शारी साना दवियन है. इसकिये यह इसरे प्रयोगमेके असंस्थानमें धनाव बसे भागद्वार स्थापित करमा कृषित । युवा सहितर कारणात्मिकसमुद्रासकी आपन अविवारितका रांचय रहिएल है, रसहिये बारणानिकसंबाधी उदबावकार व्यवसीक वसंबदानों बारले गुणित बरके बना क्षेत्र सामेके लिये इस बाहिको बाजुले गुणित संक्यान अत्तरांगुर्नोस मांकन बारने पर मारणानिवदीववा ममाख होता है। इस देवके ममायंस सामान्यहोत कार्य

a Bleuntennen und emainfelteie ! auffnnenne, begenangen, eine ! £. 21. 444

पीलदेवमस्स असंसेज्जिदिभागो आगच्छिदि चि तिण्हं लोगाणमसंसेज्जिदभागे अच्छीत ि सिद्धं । तिरिय णारलेगेरिहतो असंसेज्ज्युणे । एवं पंचिदियतिरिक्सपज्ज्ञच जाणिणोणं वनलं । उववादगदर्गांचिदियतिरिक्सप्रिच्छिप्रच्छाइट्टी केविंड से विण्हं लोगाणमसंसेजिदिगागे । एत्य उवयादरेसेचमाणिज्जमाणे मारणंतियमंगो । णति पदमं उवसंहिस्य विदियदंबिय असंसेज्जिदमागे मागहारो ठवेदन्त्रो, असंसेज्ज्जिम्पणिविदयदंडायमञ्जीवाणं बहुणमणुवलंमादो । एसी एगसमयसंचिदो चि आवलिगण असंसेज्जिदिमाएण गुणमारे अविण्डे रज्जुगुणिदसंखेज्जपदंगुलाणि गुणमारो होरि। एसं पंचिदियतिरिक्सप्रज्ज्ञ जाणिणीणं वचल्वं । सेसगुणद्वाणाणं तिरिक्सोपर्मगो । णशि जोणिणीसु असंजदसम्माहद्वीणं उववादो णारिय ।

तीनों ही लोकोंके आजित करने पर पत्योपमका असंख्यातयो आप आता है. इसलिये सामान्य होक आदि तीन होकोंके असंख्यातये सामप्रमाण सेवमें मारणान्तिकर मुद्धातगत पंचांद्रव तिर्वेद्य पर्याप्त औय रहते हैं. यह बात सिद्ध हुई। तथा मारणान्तिकस मुद्धातगत पंचांद्रव तिर्वेद्य पर्याप्त औय रहते हैं. यह बात सिद्ध हुई। तथा मारणान्तिकस मुद्धातगत पंचांद्रव तिर्वेद्य पर्याप्त औय तिर्वेग्लोक और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुले सेवमें रहते हैं। इतीवार मारणान्तिकस मुद्धातको भाष्त पंचीत्रय तिर्वेद्य पर्याप्त और योगिमतियाँका कथन करना बा है।

उपपादको मान्त हुए पंचीन्द्रय तिर्वेश मिर्ध्यादिष्ट जीय कितने क्षेत्रमें रहते हैं।
सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके ससंस्थादिये आमानमाण क्षेत्रमें रहते हैं। यहां पर उपपारं
देशके लाते समय मारणानिककेशके सामान कथन करना चाहिये। दानती पिरोपता है हि
स्प्रम बंदका उपसंदार करके दूसरे बंदमें दिशत जीवांका प्रमाण लाना इच्छित है, हतीके
प्रयोग्यके सर्सव्यातियें सामानमाण एक दूसरा भागदार स्थापित करना चाहिये। स्थापित स्थापत पात्रम सामानमाण एक दूसरा भागदार स्थापित करना चाहिये। स्थापित स्थापत पात्रम सामानमाण एक दूसरा भागदार स्थापित करना चाहिये। यह पत्रमें
स्थान जीवशादा हो, इसल्ये बायलीके स्थापतार्थ माणित ग्राम्तरक स्थापत स्थापत अपनिक स्थापत स

विरोपाय - यहांपर जो सथम दंह कादिका कथन किया गया है, उत्तर स्मितन कर है कि विभएतिमें मरणहेलने लगाकर प्रथम मेड़ि तक अधिका जो लीधा तमन होते हैं कह स्थम दंह है। नथा प्रथम सोहेते लगाकर दिशीय मेड़ि तक जीवका जो लीधा तमन होते हैं कह स्थम दंह है। नथा प्रथम सोहेते लगाकर दिशीय मेड़ि तक जीवका जो लीधा तमन होता है कर जिनान दंह है। इसीयकारसे तीगरा दंह मी समग्रना चाहिए।

पंचिंदियतिरिक्सअपज्जता केवडि सेते, लोगसा असंतेजदि-भागे ॥ १० ॥

द्रस्स देसामासियसुचस्स अत्यो बुच्चेत्—सत्याण-वेदण-कशायसप्रायदगदा केषडि खेचे ? चदुम्हं लोगाणमसंसेज्बदिमागे । ब्रुट्रो ? उस्सेषपर्णमुक्तं पितृशेवसस्स असंसेज्बदिमागेण खेडिदमेचीगाहणचादो । अहुस्ट्जादो असंसेज्बदायो अच्छीत । विहार-पितृश्यापा चेठिहमचामा । व णार्र्य । मार्ग्यात्य-बबादगदा केबिह रोचे ? तिर्म्द्र लोगाणमसंसेज्बदिमागे ! कुद्र । रासिस्स माग्रहसमूद्रा होद्द्रण जहाजमण दोष्णि तिष्ण पार्र्यापास्स असंसेज्बद्रिमागे ! कुद्र । रासिस्स माग्रहसमूद्रा होद्द्रण जहाजमण दोष्णि तिष्ण अल्डितेगस्स असंसेज्बद्रिमागे छम्मीत चि । तिरिव माणुसलोगादे असंसेज्ब्बपुणे अल्डिति । साम्रमुद्र ।

मण्रसगदीए मण्रस-मण्रसपञ्जत-मण्रसणीसु मिन्छाइट्टिप्पहुढि जाव अजोगिकेवळी केवडि खेते, छोगस्स असंसेञ्जदिभागे' ॥११॥

पंचिन्द्रिय विर्षेष अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं है शेरको असंख्यात्रें मागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १० ॥

मानुष्यातिमें महुष्य, मनुष्यवर्धात्र और मनुष्यातियोगें मिध्यादि शुप्तनानये तेका अपोनिकत्ती गुणस्थान तक प्रायेक गुणस्थानये और कितने क्षेत्रमें रहेते हैं। शिक्षते असंस्थातवें भागममाण धेवमें रहते हैं॥ ११॥

९ मनुष्यवर्तः यहायाता वित्यात्रकारयोग्येकाय-ताना सं वश्यात्रस्ट्रेब्बापुः । सः 🙀 🧸 .

र्दम्य मुनस्स अस्यो तुरुवहे सन्याणमन्याण-विहारविहस्याण-वेहत्र वृद्धः वृद्धः होनाणमसंसेक्वित्रभोत वृद्धः वृद्धः होनाणमसंसेक्वित्रभोत वृद्धः वृद्धः होनाणमसंसेक्वित्रभोत वृद्धः वृद्धः होनाणमसंसेक्वित्रभोत वृद्धः वृद्धः वृद्धः वृद्धः वृद्धः होनाणम्याद्धः । स्ति वृद्धः वृ

मानगरमा १६ अमं तर्ममास्त्री मन्याणमत्याण-सिहानित्याण वेस-कण रेन् जिल्लाहरू देव विवास के विदेश से १ चार्ण्य सोमाणमर्गने अदिमी, अपूर से सन्दर्भ के विद्यास । मार्गनित-उत्सरम् स्वयुद्ध सोमाणमर्गने अदिमीन, अपूर्ण

्र २००० राज्यका स्वतः । पृष्टः अपर्यातः अङ्गाका अगरीयधी संस्थानमें आसामाण है। सनपून वर्ष सर्व अक्ट कार्यक कर्म संस्टेस्टा है है

म २ ८ र -- वटा, चया २, वदीन शत्याचा सावशात संतुष्णेक स्थाना सं करण करू २०३३ विचल जनत है, क्यतिय बहुपर सावशात सत्याहि सेवन लग

स्थान प्रभाव कर कर कर कर के क्षेत्र कर सम्बद्धां से स्थान के कि हैं है के कि स्थान के कि कि स्थान के स्थान

संस्वेजपुणे । सम्मामिन्छार्द्धी सत्यांजसत्यांज-विद्वानिहसत्याज-वेद्द्य-समय-वेउन्यिय-सुग्यादपरिजदा केविंद रोचे ! चदुण्दं लोगाणमसंस्वेजदिमाणे, माणुमसेचस्म संरोजिद-पो । संजदासंजदा सत्याजसत्याज-विद्वायदिसत्याज-वेद्या-कसाय-वेउन्यियसम्बद्धार-वे-रोणदा केविंद्ध खेचे ! चदुण्दं लोगाजमसंस्वेजदिमाणे, माणुमस्येजदिन असंग्रेजपुणे । एजीवियसमुग्याद्याद चदुण्दं लोगाजमसंरोजिद्यागे, माणुमस्येजदिन असंग्रेजपुणे । एजीवियसमुग्याद्याद चदुण्दं लोगाजमसंरोजिद्यागे, माणुमस्येजदिन असंग्रेजपुणे । एक्तिवास प्रचार विन्हार्द्धाणं सास्यासमार्द्धार्योगे । मणुसिणीमु असंजदमम्मादिद्धीणं ।

सजोगिकेवली केवडि खेते, ओषं ॥ १२ ॥

पदस्स सुचस्स अरथो मुलोपमवधारिय लोगस्स असंखेळादमान, असंग्रेजेनु वा गिनु, सुच्यलेनि वा चि वचच्या ।

सिद्द्रसम्बादिष्ट और असेवस्तस्यवादि मुद्राच्य सामायस्थित आदि चार स्रोविक असे-वासवे भाषमात्राच देखाने और अक्ट्रेस्टीयें अध्ययात्राचे रेस्क्रें पटल हैं व्यवधानस्वादात्र (स्ट्रेस्ट हैं व्यवधानस्वादात्र (स्ट्रेस हैं) व्यवधानस्वादात्र की रेस्क्रें पटल हैं व्यवधानस्वादात्र विश्व हूप स्वीत्त हूप स्वीत्त हूप स्वीत्त हूप स्वीत्त हुए स्वीत हुए स्वीत्त हुए स्वीत स्वीत स्वात हुए स्वीत हुए सुण हुए स्वीत हुए स्वीत हुए सुण हुए सुण हुए स्वीत हुए सुण हुए सुण हुए सुण हुए सुण हुए सुण हुए

समीगिकेवली मगवान् किन्ने क्षेत्रमें रहते हैं ! जोषप्रस्पणार्में सपीगिडिनों श

ो क्षेत्र कह आपे हैं, सत्त्रमाण छेत्रमें रहते हैं ॥ १२ ॥

इस स्वतः अर्थे, सूलोध शुक्तः विभाव करके व्ययोगिकेवर्थे आँव लोकेक संक्यात्रये माग क्षेत्रमें, लोकके अर्थव्यात बहुमानामान शेवमें सथका शर्य लोकमें बहुने हैं, वापकार बहुना पार्टिये।

१ सपोदिशकी सामार्थान क्षेत्रह स वि १, ८.



म्णुसअपजज्ता केविंद खेते, लोगस्स असंखेज्जिद्मागे ॥१३॥
सत्याण-वेदण-कसायसमुःघदिह परिणदा चदुण्डं लोगाणमसंखेजिदमागे, माणुनः
स्वेत्तस्त संखेजिदमागे णिचिदकर्मण । विष्णासक्तमेण पुण असंखेजिण माणुसत्वेताणि ।
मार्गातियसमुःघादो माणुसोघतुल्लो । मार्गावियखेचं दविजमाणे मान्त्रनंपुरुप्दन्वर्वद्याम् मार्गावियखेचं दविजमाणे मान्त्रनंपुरुप्दन्वर्वद्याम् सार्गाविय सुण्वेत्त्रमाणे असंखेजिदमाणे असंखेजिदमाणे असंखेजिदमाणे असंखेजिदमाणे आविष्य रूप्युण्य गुणिदे प्रमासम्बद्धि मार्राताक्षी होदि । दे पिहनेत्रमणः
असंखेजिदमागेण जीविष्य रूप्युण्य गार्गावियवज्वक्तमण्यालेण गुणिदे मार्गावियकारमंत्रो
सम्बद्धियार असंखेजिदमाण्य गार्गावियवज्वक्तमणकालेण गुणिदे मार्गावियकारमंत्रो
संचिद्रस्ती होदि । पुणो अवरेण पिल्देवियस्त असंखेजिदमागेणे मार्गे हिरे रन्द्रमान्त्रम् मार्गावियस्त मार्गावियकारमंत्रे स्वित्रमार्गावियस्त होदि । पुणो अवरेण पिल्देवियस्त असंखेजिदमार्गावियस्त क्षेत्रमार्गावियस्त होदि । एवयुववादस्त विक्यंभो पद्रांगुले पिल्देवियस्त असंखेजिदमार्गावियस्त होदि । एवयुववादस्त विक्यंभो पद्रांगुले पिल्देवियस्त असंखेजिदमार्गाव गुणगारो अवणेदस्त्रो । विदियदंदे सेदीए संखेजिदमानापामण मुक्त

स्टब्यपर्याप्त मनुष्य कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातर्वे मागप्रमान क्षेत्रमें रहते हैं ।। १२ ॥

स्यस्थानस्यस्थान, घेदनासमुद्धात भीर कपायसमुद्धातसे परिणत हुए छात्रपूर्यात मनुष्य निवित्तदमसे सामान्यहोक आदि बार होकोंके असंस्थातमें मागप्रमाण हेर्य कीर मृतुष्यसेत्रके संस्थातवें माग्यमाण् क्षेत्रमें रहते हैं । विश्यासक्रमस् तो अवस्थ मनुष्यसम् छाप्यपर्याना मनुष्यांका क्षेत्र है। मारणान्तिकतमुद्धातको प्राप्त है टाज्यप्यांत मनुष्यांका होत्र श्रीयमनुष्यप्रक्षणाके समान है । मारवानिकारिक स्वापित करतेपर स्व्यंगुलके प्रथम और मृतीय वर्गमुलको परस्पर ग्रुचित हार्र को एति मार्थे उसका अगश्रेणीम भाग देशपर सम्बद्धांत मनुष्योग प्रस्थान होता है। इसमें मायलीके असंस्थातय भागमात्र उपक्रमणकालका माग देनेपर एक समय मरनेवाल छाध्यपर्यान्त मनुष्यांकी शादीका ममाण होता है। इसे पश्योपमके समेक्वार्ज मागले माजित करके और एक कम पत्थोपमके असंक्यातव मागले गुणित करतेवर वर समयम संचित दूर मारणानिकसमुद्धातको माप्त छन्ध्यपयान्त मनुष्यराशि होती है। वृत इस राशिको बावलोके सर्सस्यातवे मागप्रमाण मारणान्तिक उपक्रमणकालसे गुणित कर्तन मारणान्तिककारके मीतर सीचत जीवरातिका ममाण होता है। पुनः हसे एक हुसरे पराविक सर्वच्यात्रवे मागले माजिन करनेपर राजुममाण नायामकपते किया है मारणानिकममुन्त दिन्हों ते, ऐसे टक्क्यपर्यास मनुष्योद्धी शासि होती है। मनश्रीतुरुको परयोपमक मसंस्थावर्षे मार्त माजित करतेपर राज्यमाण भावत्रहेतका विस्तार होता है इसीमकार उपपादका मी देश सक हता चारिये । इतनी विदानता है कि जपशहराति एक समयमें संवित होती है, इतिहरे कर हो बाबरों के मने क्यान में आपकार माह आप है यह निवास देना यादिय हो। इसे बुंदर क्याने के क्यान में अपने के अपने के स्वाप्त के किया है। इसे क्याने के क्यान के कियान में अपने के कियान 4. र मारणाम्तिकसमुदात्र क्रिन्होंब, देवे इसरे इंडम जामेनांक संस्थानमें म . . .

मारणंतियजीवे इच्छामो चि अण्णेगो पलिदोवमस्स असंवेजादेमाणा मागहारा ट्वेर्च्य

देवगदीए देवेसु मिन्छादिहिषहुडि जाव असंजदममादिहि। केविह सेते, लोगसा असंसेन्यदिभागे ॥ १४ ॥

सरवाणमत्याणः विहारवद्शितयाण-नेदण-कताय-नेजन्यिसमुग्यादगद्दवमिन्सादि विष्टं लोगाणमसंस्थादिमाम्, विरियलीयसम् संस्थादिमाम्, माणुमानासः असम्बर्णः हरी १ वपाणीकद्वादितियासिवादी । मार्गितेय-उत्रवादपरिवद्धिनर्छाहिङ्की निर्दे छरा । प्रथाणाकद्वासाव प्रधान पादा । भारणावपण्डवादशारणसम्प्राणाद्धाः । १३० स्रोमाणमस्येत्रादिमागे ण्र-तिरिप्लोगोहितो अर्वयेत्रमाणे । प्रथ संवपमाणे जाणिय हरेद्द्यं । संसगुणहाणाणमीयमंगाः ।

एवं अवणवासियपहुडि जाव जबरिम-उबरिसगैवज्जविमाणवानिय-रेवा ति॥ १५॥

पदेण देसामानिवसुर्वेण छचिद-अन्धी वृषदे । वं जहा — मन्यानगण्याण बिहार भादेसस्याण-वेदण-क्रमाय-वेडाध्यय-जनगद्दपरिणद् श्रवणवामियस्थिरिही स्ट्रूप्ट होता-

भोबांको सामा हर है, इसलिये एक वृक्षदा परवेश्यमका अलंबवानको भाग मागद्दार वसारित

्वनातिम् देशम् मिध्यादिष्ट् गुणस्यानते सेवर् अनेयवसम्बर्गाष्टि गुणस्यान् वह मरवेक गुणस्थानके देव कितने क्षेत्रमें रहते हैं है लोकके जसस्यावने मागवमाण धेवसे रवरणानरवरणान, विहारकारकरणान, वश्नातगुद्धान, वश्चायतगुद्धान और धे विषक

सम्बातको सत्य हैव देव भिन्नाहि श्रों सामकारात आहे भूव डोवाह सम्बन्ध मूल राधुकारामा अन्य वृथ वा अववादाह जाव स्वामान्यस्तक का व पान करन के करणान्य व कर विषय रहते हैं, करोहि, यहांवर उन्नोनिक देवरासि अधाव है। सरवानिकसमुद्दात करे जारहरूपते वृद्धिमा हुए निस्माहरि हुंच सामान्त्रों स्थान ह र नार्माना कार्य हार ना प्रमान रेक्स और मनुष्यक्षेत्र तथा तिर्थकोहते असंस्थातम् वे सहसे रहते हैं। स्टास्ट समाज राम्य भार मधीपाल राम्या सावस्थावस स्वत्वचाराच्या सम्मान नरत है। वहार रेडिको प्रमाणको आमकर वेचावित वरमा ब्यादिवे। वैचीने सब ग्राम्य नरत है। वहारू महत्रवाके समान है। इसीमकार होता है ॥ १५ ॥

ण त्याण ६ । अवनवामी देवांसे संकर उपस्मि उपस्मि क्षेत्रेयकके दिवानवासी देवो एकका रूप

भव ६४१ प्रधानवाक ध्वमल याचन हुए मण्या प्रधान के पर देशका है। देवरधानश्वरधान विहारवास्त्रप्रधान वेदनासमुद्रान के व्यवस्थान है। वेषस्थानः वर्षाः । वर्षाः काष्यवस्थाः, क्षणान्त्राकः, वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः व कीरः उपचादकपरी वरिष्यतः हृषः सक्तवस्थाः विश्वपाराष्ट्रं दवः शास्त्रवस्थः वर्णाः i gene gemi oget auf Letagt upremonnen. a. M. 1".

961 णमसंखेजदिमागे, अद्वादचादो असंखेजगुणे । तिरिक्ख मणुसमिच्छादिहिणो कणागरेण हिद्मवणवासियखेचेसु उप्पजमाणा वे विग्गहे काद्र्ण सेटीए संखजिदमामायामेष ुरुपञ्जेता समर्वति, तदो तिरियलागादो अधरीज्जगुणेण उवनादसेतेण होदलागिर । उपपञ्जेता समर्वति, तदो तिरियलागादो अधरीज्जगुणेण उवनादसेतेण होदलागिर । सन्चमेर्द जह सेटीए संस्वेज्जदिभागमेत्रायामो उवनादसेत्तसस लज्मह । किंतु संस्वेज्ज स्विज्युत्तमेचो चेत्र। एचो संखेज्जजीयणाणि हेट्ठा गृत्ण भवणवासियविमाणाणम् हुाजाणुत्रलमादो । ण च तिरियलोगे सञ्जल्य तदवासा, तिरियलोगस्स मन्त्रिमासंबन्तिर मागे चेव तेसिमरियचदंसणादो । ण च उवरिमदेवेसुप्पज्जमाणतिरिक्साणं व भवजवासिए सुप्पज्जमाणतिरिक्स-मणुरसाणं सगुप्पचिदिसं सुरुवा तिरिच्छेण गमणमित्य, बंदुन्दुनाए गईए भवणवासियज्ञमवणिधिमार्गत्व हेट्टावलिए भवणवासिएसुप्पविदंतणादे।। एरं इरो णब्ददे ? भवणवासियाणमुवबादसेचस्स विशियलोगासंखेडजदिमागचण्णहाखुववधीरी । सगच्छिदद्वाणादो हेड्डा ओपरिय मवणवासिएसप्पञ्जमाणाणप्रवगृद्केतायामो सेटी संखेज्जिदिमागो लब्मिदि चि तनगर्ण खर्च, तहा तत्युष्पज्जमाणाणं सुद्ध त्योत्रचादो । एर

मसंबदात्य मागप्रमाण क्षेत्रमें, और महाईद्वीवसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं।

धुका — दर्भरेखाके बाकारसे स्थित अवनयासियों के क्षेत्रॉम उत्पन्न होनेबाडे निर्व भीर मनुष्य मिष्यारिष्ट जीय दो विषद करके जगश्रेणोंक संक्यातये मागममान जागामस्व करपप्र होते हुए याथे जाना संमव है। इसिवये मयनवासियों हा उपपादनेत विवाहीको

समाधान — यदि उपपारक्षेत्रका आयाम जगभेगीके संब्यातवें मागममान वाया आक. असंस्यात<u>ग</u>णा द्वीना चाहिए 🗓 🤭 तो यह दक कपन साय होता । किन्तु, उपपार्श्वेत्रका आयाम संव्यात सूर्वगुडमात्र हो है। क्योंकि, इससे संक्यात योजन नीचे जाकर अयनवासियोंके विमानीका अवस्थान नहीं का जाता है, तथा तिर्पेग्टोकमें भी सर्वत्र अधनयासियांक आवास नहीं है, क्याँकि, तिर्पेत्रोंक मध्यवर्धी मसंस्थातयं भागप्रमाण क्षेत्रमं ही अवनवासी देवाँका सरिताय देवा जाता है। हुनी, स्परिम देवाँमें उत्पन्न होनवाले तिर्थयोक्ते समान भयनवासियोमें उत्पन्न होनेवाले तिर्थय है. मतुर्योदा भगनी तत्त्विकी दिशाको छोड्कर तिरछा यसन होता हो, देना भी नहीं क्योंकि, मनुष्य और तिर्ववादी बाजके समान सीधी गतिसे प्रवन्यासी छोत्रहे समीर हाड़ अधसनभेजीमें स्थित मवनवासी देवीमें उत्पत्ति देवी जाती है।

मुमापान - अवनवासियों का उपपारशेत्र विवेदतोषके असंवत्तावें मागरन

अपने रहते हैं स्वतंत्र की व जारद सवनवासी देवोंमें उत्पन्न है निवास मनुष्य निर्दर्श सम्यदा बर नहीं सकता है, इसने इक कथन जाना जाना है। इररात्सियदा अपनाम अनुभागिक संक्यानीय आग्रमाण पाया जाता है, इतहित कृता बर्च ४१दृत्र है, छिनु, इन प्रहारने उनमें उत्पन्न होनेवारे औय स्थार होते हैं।

हुदो णच्दे १ तिरियलागरसासचेज्यदिमागे जि बस्साणादो । मार्स्कतिपस्पुग्नादगद-मिन्छाद्द्वी तिन्दं सेताणमसंस्वेज्यदिमागे तिरियलोगादो अक्षचेज्यपुणे, अद्वादज्यादो वि असंदेज्यपुणे। सेसमापं। चारि असंयदसम्माद्वद्वीणं उवयादो वित्य। बाणवेतर-जोस्सियाणं देवोपमेगो। चारि असंयदसम्मादद्वीणं उवयादो णांच्य।

> पणुर्वसं असुराणं सेसकुमाराण दस धृंण् चेय । वेनर-मोशिसियाणं दस सत्त धण् मुणेयन्यां ॥ १८ ॥

एरम्हारे। उस्तेहारे। एत्य ओवाहणसेचमाणेर्ड्ड । क्षोयम्मीसाणे सत्याणसत्याण-विहास्त्रदेसस्याण-वेदण-स्ताय-वेडिन्यससुन्यास्यद्विष्ट्यादिष्टी चरुष्ट् लेगाणमसंखे कदि-मागे माणुससेवादो असंवेडजगुणे । एत्य सगलसेचयरिष्टा प्रवणवासिपमंगी । अप्यो। ओहिखेचमेचं देवा विडन्डीति चि जं आहिययवर्णं सण्य पडदे, लोगस्स असं-

ग्रंका- यह दिस प्रशासने जाना है

समाधान-उपपादणीरणत अपनवासी देव तिथैस्त्रोकके असंक्वासवें भागममाण क्षेत्रभे रहते हैं: इस्प्रजादके स्वावपानसे उक्त कवन जाना जाता है।

मारणातिकसमुद्धातको प्राप्त हुप मिध्यादृष्टि भयनवासी वेच सामान्यहोक साहि क्षेत्र होकाँके असंस्थातचे आगश्रमाण क्षेत्रमें, तिर्परोक्षते मसंस्थातगुणे क्षेत्रमें भीर अपूर्व-ग्रीपस मी असंस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। दोष कथन भोषप्रदर्शणके समान है। दक्तों विरोपता है कि असंस्थतसम्बद्धार्थका सम्मान है। दत्तर्भी विरोपता है कि मसंस्थतसम्बद्धार्थका समान है। दत्तर्भी विरोपता है कि मसंस्थतसम्बद्धार्थका समान है। इत्तर्भी विरोपता है कि मसंस्थतसम्बद्धार्थका समान है। दत्तर्भी विरोपता है कि मसंस्थतसम्बद्धार्थका समान है। इत्तर्भी विरोपता है कि मसंस्थतसम्बद्धार्थका समान हो।

मयनवासियोंके दश भेदोंमेंसे प्रयम भेद असुरक्तमारोंके शरीरको वंचार पचीन अनुष भीर दोप नी कुमारोंके दारीरको ऊंचाई दश अनुष्ट है। तथा व्यन्तर देवोंके शरीरको ऊंचाई दश पनुष्ट भीर प्रयोतियी दियोंके शरीरको ऊंचाई सात अनुष्ट जानमा बाहिये है १८ है

इस वर्ष्युक उरसेपते यहां भवगाइनारात्र के व्याना ध्यादिय । कौर्यम चौर देशान करपम रवश्यानरवश्यान, विहारवारवश्यान, वेश्नासमुद्धान, करावधमुद्धान और वैक्तिवकः समुद्धानको प्राप्त हुए मिय्यादि देव सामाग्यकोक ब्यादि चार छोडीके सहक्वानवें माना प्रमाप क्षेत्रमें और प्राप्तवारेख के स्थाना प्रमुख्यान के के विद्यान वर्ष परान होगी। प्रमास अनुवारियों के होत्रके समक्ष करणा खादिय । वेष व्यपने व्यपन वर्ष परान को स्थान प्रमास (विक्रिया करते हैं, इस्त्रकार को अन्य कावार्यों व्यान व्यन है वह प्रटिन नहीं होता है,

१ वि. सा. १४६. तथ चनुर्वेषाये "दस तय सर्राराहजी हु " इति पाउः ह

व क्षेत्रा वेदरदेवा विय-विय-विय-कोहीन वेति वे केते । दूरित वेतियं वि हु वर्तदं विकालवकेत ! वि.य. ५, ६६.

वर्गोह, देना माननेपर लोकके असंवयातय माग्यमाण वैकिष्यक्तमुखातात सेवके मानेवा कर्मग मा जाना है। होधमें बीट ईशानकरामें वृत्तिव्यादियाँके मारणात्तिकतमुखान बीर उपाएगात्के सामा जाना करा सामा करा प्रशासकरामें वृत्तिव्यादियाँके मारणात्तिकतमुखान बीर उपपाएगातक सामा जाना व्यादिय। उपगाएशेयके स्थापित करते सामय कीधमें पैदाान देविष्यादियों ही विकासम्बीके गृद्धि जापिती हो स्थापित करते परावेषके सासंस्थातये मानकप कीधमें बीट देशातकराणी गृद्धि जापित करते परावेषकराणी कर्मा करा होते हो। दुना सम्बन्धि स्थापकरामी करते कर्मा करते होते हो। तुना सम्बन्धि स्थापकरामी करते करते होते हैं। तुना सम्बन्धि स्थापकरामी करते होते हैं। तुना सम्बन्धि स्थापकरामी करते हैं। तुना सम्बन्धि सम्बन

र्श्वा —सीपर्व और शतात बस्ति देवींका श्रवपादरेश सवनवासी देवींके प्रशानिक समान निर्देश्योक समनवात्व सामग्रामण क्यों नहीं होना है ?

समायान — वर्श, क्योंकि, सीयमें देशन कराके श्करीसय प्रपादको प्रश् हे नेकाट सम्में निर्देशके दूसने दृश्का कार्याम समायतीके संस्थानने सामयताय याचा सन है। इस्टिटो सीयमें और इंशानक्षणके देवीका अध्यादकोष निर्मेण्योको सामयत्वनक होता है, यह निम्म इस्टा और्यो और हैए नक्षणके देवीके या गुल्वसमीये सामयत्वनक स्वका बन्न वेश्वयात्वये स्वरूपन स्वत्यात केशके सामय जातना व्यक्ति । सन्दर्भ सन्दर्भ देवन द्वारी सामयत्वे स्वरूपन स्वत्यात्व केशके सामय जातना व्यक्ति । सन्दर्भ सन्दर्भ देवन द्वारी सामयत्वे स्वरूपन स्वत्य स्वत् सासगसम्मादिहिःसम्मामिन्छादिहिःअसंजदसम्मादिहीणं औषमंगी ।

अणुदिसादि जाव सञ्बङ्गसिद्धिविमाणवासियदेवा असंजदसम्माः

दिट्टी केवर्डि खेते. लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १६ ॥

सत्याणसत्याण-विद्वारविद्वस्थाण-वेदण-कसाय-वेउन्विय-सार्णविय-जवनादगद-असंजदसम्मादद्विणा पद्दण्वं त्येगाणमसंसेजजदियागे, अद्वाद्वज्ञादो असंसेजजपुणे अन्धति से वत्तन्वं । णवि सम्बद्धे सत्याणसत्याण-विद्वारविद्वस्याण-वेदण-कसाय-वेठिव्यपदेतु ॥णुसरवत्तस्य संसेजजदिमागे । कथं ॥ सन्वद्धे वेदण-कारायसुरुपादाणं संदिती समुप्पन गणयोवविष्यु-जवणं पद्दन्य वायेगदेसादो, सराणे कज्जीवयासदो वा ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया चादरा सुहुमा पञ्जता अपञ्जता विह खेते, सव्वलोगे ॥ १७॥

वन्द्राप्ति, सामित्रस्यादृष्टि और असंयतसम्यन्दृष्टियाँके स्वरयानस्यस्थान कादि क्षेत्र ओष-अदनसम्यन्दृष्टि कादिके स्वरथानस्यरयान कादि क्षेत्रोके समान होते हैं।

नी अनुदिशोंसे रेकर सर्वार्थसिद्धिनान तकके अवंपतसम्पर्धाट देव कितने में रहते हैं है रोकके असंख्यातवें मागवमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १६ ॥

स्वरधानस्वरयान, विहारवास्वस्थान, वेदनासमुद्धान, कागयसमुद्धान, वैक्षिप्रकसमु प्रारम्भीत्रकसमुद्धात और उपपादकी प्राप्त हुए उक असंवत्तसप्यप्रि देव सामाय्यतीक वार सोकींक भसंक्वातर्थे प्राप्त प्राप्त प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र स्वयं विद्याप्त से क्षेत्र स्वयं विद्याप्त के क्षेत्र क्षेत्र स्वयं विद्याप्त के कि स्वयं विद्याप्त के कि स्वयं विद्याप्त के कि स्वयं विद्याप्त के कि स्वयं क्षेत्र क्षेत्र स्वयं के स्वयं विद्याप्त के कि स्वयं के स्वयं विद्याप्त के कि स्वयं के स्वयं के स्वयं विद्याप्त के स्वयं के स्वयं क्षेत्र क्

इस प्रकार गतिभार्गणा समाप्त हुई।

इन्द्रियमार्गणांके अनुवादसे एकेन्द्रियजीव, बादर एकेन्द्रियजीव, सहस एकेन्द्रिय इर एकेन्द्रिय पर्याप्य जीव, बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्य जीव, सहस एकेन्द्रिय वीव जीर सहस एकेन्द्रिय अपर्याप्य जीव कियने सेवमें रहते हैं है सर्व सोकर्से । १७॥

पश्चित्राञ्चादेव प्रदेशियानी क्षेत्रं कर्रहोदः । छ. छि. १. ८.

परय लोगणिदेसेण पंचण्हं लोगाणं गहणं, देखामर्जकत्वान्लोकस्य । बारतगुरू मादिवयणेण संस्थाणसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउध्विय-मारणंतिय-उववादपरिणद्जीवाणं गहणे, छन्विहानस्थावदिरिचवादरादीणममावादो । तदो सम्बसुत्ताणि देसामासिगाणि चेत्र । व एस णियमो वि, उभयगुणीवर्लमा । सत्याण वेदण-कसाय-मारणीतय उत्रवादगदा एईदिया मेजाडि खेचे ? सच्चलोगे । वेउन्त्रियसमुग्यादगदा चदुण्हं लोगाणमसंसेजनिरमाने । माणुसखेर्च ण विष्णायदे, संपहियकाले विसिद्धवएसामात्रा । तं जहा- वेउव्वियमुहा^{तेन} रासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो । अहवा तस्स ओगाहणा उरसहपर्णगुरुस्स अपंते ज्जदिमागो । तस्स को पडिमागो १ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिमागो । विउच्चमाण-र्यः

र्शका-यदि पेसा है, तो सर्व सूत्र देशामर्शक ही हैं ?

समाधान — सर्थ सूत्र देशामशंक ही है, यह नियम मी नहीं है, क्योंकि, स्त्री दोनों प्रकारके धर्म पाये जाते 🖁 । अर्थात् कुछ खुत्र देशामशंक हैं और कुछ नहीं, इसिंडे

सभी सूत्र देशामर्शक ही हैं, यह नियम नहीं किया जा सकता है।

स्वस्थानस्वस्थान, येदनारुमुद्धात, कथायद्यमुद्धात, मारणान्तिकसमुद्धात, और उपपादको मान्त हुए पकेन्द्रिय जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं । सर्थ डीकमें रहते हैं । बेडि विकसमुद्रातको प्राप्त हुए एकहित्रय औष सामान्यलोक आदि चार लोका के असंख्यान माग्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं। किन्तु मानुपक्षेत्रके सम्यन्धमें नहीं जाना जाता है कि उन्हें कितने मार्गमें रहते हैं, वर्योंकि, वर्तमानकालमें इसप्रकारका विशिष्ट उपदेश नहीं वार्य जाता है। आंगे इसी थिपयका स्पष्टीकरण करते हैं-शिक्तयाको उत्पन्न करनेवाती पकेन्त्रिय जीवरादि परयोपमके अर्थस्यातव भागप्रमाण है। अथवा, विविधानमक एकेन्द्रिय डावार्ड दार्धरकी अवगादना उत्सेघघनांगुरुके असंस्थातवे भागप्रमाण होती है।

रीका — उत्सेघघनांगुरुमें जिसका साम देनेस उत्सेघघनांगुरुका सर्वव्यात्यां साम

राज याता है, उस असंस्थातय भागका प्रतिमाग क्या है ?

समायान — परयोपमका असंस्थातवां ज्ञाग प्रतिमाग है, अर्थोन परयोपमके हुएं स्यातम् मागका रुखेषपनांगुरुम् आगदेनेसे उत्सेषपनांगुरुका शर्सरयातम् आगहा भाता है जो विकियात्मक एकेन्द्रिय जीयके दारीरकी अयगाहना है।

ऊपर विकिया करनेवाली पकेन्द्रिय जीवराति सी पस्योपमके असंववात्व साग

इस स्वम लोक पदके निर्देशसे पांची टीकॉका प्रदण किया है, प्यांकि, यहां होड पदका निर्वेदा देशामशंक है। सुत्रमें बादर और सुरुम आदि बचनसे स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्धात, कपायसमुद्धात, वैकिथिकसमुद्धात, मारणान्तिकसमुद्धात मीर उपगार्वदर्श परिणत हुए जीवोंका प्रहण किया है, क्योंकि, उक्त छह प्रकारकी अवस्थामोके अतिरित यादर भादि जीय नहीं पाये जाते हैं।

घणगुरुस्स भागदारी किमप्यो बहुगी समी वा इदि ण' शब्बदे ? जिंद रिदे पर्णगुलमागहारे। संसेन्जगुणो होदि, तो माणुसस्वेचस्स संसेनजदिमाने । जगुणो, तो असंखेरजदिभागे । अह सरितो, माणुसखेचरत संखेरजदिमागे । एदं चेत्र होदि नि विच्छत्रो अत्थि, तदी माणुसखेन व वन्त्रदि नि सिद्धं। रेरहंदिय-बादरेहंदियवज्ञत्ता सत्याण-चेदण-कसायसमुग्धादगदा विण्हं लोगाण

ांगे, णर-विश्यिलोएहितो असंखेजनसुणे । तं जहा- मंदरमूलादो जनिर जाव ारकप्पो चि पंचरज्जु-उस्सेधेण लोगणाली समचडरंसा वादेण आउण्णा, तं स्सामो । एक्क्रणवंचासरञ्जुपदराणं जदि एगं जगपदरं लब्मदि, सो पंचरञ्जु-लभामे। ति फलगुणिर्मिच्छं पमाणेणोवट्टिदे वे पंचमागूण-एगुणसचरिक्षवेहि

ार्र है भीर उत्सेषघनांगुङका भागहार मी पत्योपमके मसंस्थातमें भागप्रमाण रसिखवे विकिया करनेवाली पकेन्द्रिय जीवराशिले उस्तेयवसांगुलका माग-ोटा है, या बड़ा है, या समान है, यह कुछ नहीं जाना जाता है। अब यदि मिविकराशिसे उरसेधयनांगुलका' मानहार संख्यातगुणा है, वेसा हेते हैं ती रनेवाली पकेन्द्रिय जीवराशि मानुषक्षेत्रके संख्यातवें मानग्रमाण क्षेत्रमें रहती

मेमाय निकलता है। अथवा, विकिया करनेवाली वकेन्द्रिय जीवराशिक्षे उरक्षेष-भागहार मसंब्यातगुणा छेते हैं ते। वह राज्ञि मानुपक्षेत्रके असंब्यातर्थे भागप्रमाज है, यह अभिमाय होता है। और यदि विकिश करनेवाली वकेन्द्रिय जीवराशिसे लका मानदार समान है, देसा छेते हैं तो यह राशि मानुवक्षेत्रके संब्यातवें रेवमें रहती है यह अभिवाय होता है। परंतु यहांदर मामुवशेवका इतना ही भाग , पेसा कुछ भी निधय नहीं है, इसलिये मानुपक्षेत्रके सम्बन्धमें कुछ भी नहीं है। के विकिया करनेवाटी पकेन्द्रिय जीवराशि उसके कितने सागर्ने रहती है. I THE

स्थानस्यस्थान, वेदशासमुद्रात और कपायसमुद्रातको प्राप्त हुए बाद्र एकेन्द्रिय रकेन्द्रिय पर्याप्त श्रीय सामान्यलोक भादि तीन लोकोंके संक्यातर्वे भागप्रमाण ममुष्यलोक भीर तिर्यग्लोकते असंस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। इसका स्पर्धाकरण -मन्दरायलके मूल भागले लेकर उत्तर दातार भीर सहसारकरण तक पांच राज समजतुरस - छोकमाळी यायुसे परिपूर्ण है। जब वसे जगमतरके प्रमाणस्वरूप वि उनवास प्रतरराजुओं के एक पटलका एक जगपतर प्राप्त होता है, तो

तुमाँका क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार वेराशिक करके एक जगमतरप्रमाण फुछ-प्रतरराज्ञप्रमाण इच्छाराशिको गुणित करके वर्गवास प्रतरराज्ञप्रमाण प्रमाणः

तिप्र'न "इति पानी नास्ति । श्यतिप्र ⁴⊸दो चे "इति यातः।

घणलोगे मागे हिदे एगमागो आगच्छदि । ठोगपेर्नवादरोनं संसम्बद्धारण जगपदरं पुज्यपरुविद्माणेरूण एरयेत्र पिक्खितय अद्वृप्टविरोत्तं तेसि हेट्टा हिरवारमः पदरं संखेजजजोपणबाहल्लमाणेद्ण पिक्छिचे जेण छोगस्स संखेजजदिमागमेचं बारेग्रेंदियः बाद्रेद्दियपज्जताणं खेच जादं, तेण बाद्रेद्दिय-बाद्रद्दियपज्जतां लेगस्य संवेत्र्यः मागे होति चि सिद्धं । वेउव्वियसमुख्यादगदाणं एइंदिओवर्भगा । मारणीवय-उववादगदा सन्बलोगे । बादरेईदियअपज्जनाणं बादरेईदियमंगो । णवरि वेउन्वियपरं णित्य । सुर्वे **इंदिया तेसि चेत्र पञ्जनापञ्जना य सत्याण-वेदण-कसाय-मार्**णतिय-उत्रवादगदा सनः होगे, सहमाणं सन्वत्य अच्छणं पडि विरोहामावादी ।

वीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया तस्सेन पञ्जता अपञ्जता य केनीड

खेते. लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १८ ॥

राशिस मात्रित करनेपर, दो घंटे पांच कम उनहत्तरसे घनलोकके भात्रित करनेपर हो पड माग होता है उतना रूप्य आता है, जो कि ५ घनराजु प्रमाण है। उदाहरण—१×५=५, ५÷४९= हैं, जगप्रतर ! स्कियह वातपरिपूर्ण का

र राजु मोटा है, मतप्य ५ घनराजु हुना, जो कि अ१३-६८३-१४४ घनलोक प्रमान होता है। सथा पहले प्रकपित किये गये लोकके चारों और प्रान्तमागम संकार

योजन बाहुस्थकप जगमतरप्रमाण बातक्षेत्रको लाकर इसी पूर्वोक्त बातक्षेत्रमें हिहार क्षमा आहाँ पृथिथियों के क्षेत्र और उनके नांचे स्थित वायुरोत्र, जो कि संस्था पोजन बाहस्यक्ष जनमतरप्रमाण हैं, उनको उसी पूर्योक क्षेत्रमें मिला देनेपर चूंकि हो है संक्यातचे आगममाण बादर पकेन्द्रिय और बादर पकेन्द्रिय पर्याप्त जीवाँका हेत्र होता है। इसल्पि वादर परेश्ट्रिय और बादर परेश्ट्रिय वर्षान्त जीव छोक्के संख्वावव मानवार क्षेत्रमं रहते हैं, यह सिद्ध हुना । बैक्रियिकसमुदातको श्रात हुए यादर एहेन्द्रिय और वार पकेन्द्रिय पर्योक्त अधिका क्षेत्र वैकियिकसमुदातगत सामान्य पकेन्द्रियोके क्षेत्रके सन होता है। मारणानिकसमुदात और उपपादको मास हुए बादर पकेन्द्रिय और बादर वहेन्द्रि पर्याप्त जीय सर्थ छोकमें रहते हैं। बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्तीं सा क्षेत्र बाहर एकेन्द्रिया समान होता है ! इतनी विशेषता है कि यादर एकेन्द्रिय अपर्यास्त्रों के वीहिषकतमुदानत महीं होता है । स्यस्यानस्यस्थान, वेदनासमुद्धात, कपायसमुद्धात, मारणानिकस्पुन

भीर उपपादको प्राप्त हुए सहम एकेन्द्रिय जीव और उन्होंके पर्यान्त अपर्यान्त जीव ही छोक्तमें रहते हैं, पर्योक्ति, सहम आवाक सर्व छोकमें पाये जानेमें कोई विरोध नहीं है। डीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जीव और उन्होंके वर्याप्त तथा अपर्याप्त औ

६ प्रतिषु " ब'दोईदिय» खेलं जाई । तेण बादरेईदियपण्डलालं " इति पाठः 1 दिक्टेन्द्रियाचा डोवस्यासंस्थेयमागः । स- सि- १, ८.

कितने क्षेत्रमें रहते हैं ! लोकके असंख्यातवें मागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १८ ॥

भव इस स्वता अर्थ कहते हैं-- स्थरपानस्यस्थान, विद्वारपास्यस्थान, वेदनासमुद्रात भीर क्यापसमुद्रात, इन पर्वेस परिणत दुव उक शीव साम म्यलीक आदि तीन लोकोंके असं-चवात्रवें आगप्रमाण शेवमें, तिवेंग्लोकके संच्यात्रवें भागमें और अवार्द्धीवसे असंव्यातगुणे शेवमें रहते हैं। इतनी विशेषता है कि तीनी ही विकलेन्द्रियोंके अपयोज्य जीव सामान्यलोक आहि चार छोक्षेंके असंव्यात् मानवमाण क्षेत्रमें रहते हैं। मारकातिकसमुद्ध त और उपपादकी प्राप्त इए तीनों विकलेन्द्रिय कीर उनके पर्याप्त तथा अवयोप्त जीव सामान्यलोक भादि तीन सीकाँके असंक्यात्य मानममाण क्षेत्रमें, तिर्वेग्होक्से असंक्यात्मुणे क्षेत्रमें तथा अहार्रेष्टीयने भी असंख्यातगुणे देश्वमें रहते हैं । यदांपर मारणाश्तिकक्षेत्रके स्थति समय द्वीन्त्रियः श्रीन्त्रियः चतुरिन्त्रिय सथा उनकी पर्याप्त और अपर्याप्त जीवराहिको स्थापित कर उसे मापतीके मसंबदातचे भागमात्र उपमानवात्तेस खंडित करके उसका तो भसंबदातवी भाग भववा संख्यातयां भाग रुष्य भावे, उतनी राशि मारणान्तिकसमुद्र्यातके विना मरण करती है। इसलिये इस राशिके असंख्यात बहुमाग अधवा संख्यात बहुमागप्रमाण राशिको प्रष्टण करके उसे आरणानिकसमहातके उपक्रमण कालक्ष आपलीके असे-वयातमें भागांस गणित वारने पर मारणान्तिक श्रीवराक्षि होती है। यहाँ एक राजमान भाषामसे स्थित मारणान्तिक जीवरादि। इच्छित है, इसल्यि उक्त राशिक मीचे भागहारके स्थानमें पत्योपनके मसंक्यालये भागमात्र भागद्वारका स्थापित करके और माने माने विश्वामक वर्गसे गुणित राजुसे वक राजिक गुणिन करने पर मारणान्तिकसमृद्यातगत धिकत्वच भीर उनके पर्याप्त तथा अपर्याप्त अधिका सारणान्तिकांस्त्र होता है। उपयान-हेरकके लाते समय इसी मारणान्तिक जीवराशिका स्थापित करके और उसमेंसे मारणा

६ प्रतिपु ' असर्खेण्या मान संख्या मान ' इति पातः ह

कालगुणनारम्बनिदे एमानमयमैनिदे। मार्गनियम्मी होरि । तस्य अनेनेज्जा मरा विमाहगुरीए उपयज्जीने नि तस्य अमेरिजे मार्ग पेमून पनिदेशमम्म अमेनिजीस सामेण ओवहिदे सेटीए मेसेज्जदिमागायामेन विदियदंडड्डिसमी होरि ।

नागण आवाहत सदाए मलज्जातमागायामच ।सदयद्वाहृहम्या हतत । पंचिदिय-पंचिदियपज्जतगप्तु मिन्छाहृद्विण्यहृद्धि जाव अजीगि

केविह ति केविड सेते, होगस्स असंस्वेज्जदिशार्गे ॥ १९ ॥

प्रस्त अत्यो-सत्यागमत्याण-रिकास्यरिमन्याग-नेद्रण-कमाय-नेद्रिध्ययम्प्याद्रस्यः
पैचिद्रियमिच्छा।है। निन्हं लोगाणमसंगेत्रज्ञदिमागे निरियन्त्रेगम्न मंत्रेत्रज्ञदिमागे न्यूद्रः
ज्ञादे। असंरोअगुणे । मारणंतिय उत्तराह्यद्विष्टाहर्द्वः निर्णः लोगाणमसंगेत्रज्ञदिमागे,
णर-विरियलोगिहितो असंरोअगुणे । एदार्गं रोगाणमसंगर्भं पुर्वं य काद्रवं । मामगारीन-मोपसंगो । एवं पञ्चाणं पि वचववं ।

सजोगिकेवली ओयं ॥ २० ॥

नितक उपसम्पकालके शुणकारके निकाल सेने पर एक समयमें संधित हुई मार्सानिक जीयरादि होती है। एक समयमें संधित हुई इस आर्मानिक जीयरादि मध्यत्र यहुमाग जीय विमहणतिसे उत्पन्न होने हैं, इसलिये उसके समंद्र्यात मागरी महत्त करते पर जगमेणीके संक्यात्र मागरी महत्त करते पर जगमेणीके संक्यात्र मागरी मार्यामकरीते हुसरे इंदर्स हैयन जीयरादि होती है।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीशोंमें निध्यादृष्टि गुगस्यानमें लेकर अपीति केवली गुगस्यान तक प्रत्येक गुगस्यानके जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? होइके वर्ष

ख्यात्वे मागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १९ ॥

अब इस स्वका अयं कहते हैं— स्वस्थानस्वस्थान, विशास्यस्वस्थान, वेद्यां समुद्रात, कायसस्युद्धात और वैकि.यकसस्युद्धानको धान्त हुए पंचेन्द्रिय मित्र्यारि अवं सामान्यरोक आदि तीन रोकों के संस्थानयो भागप्रमाण क्षेत्रमें नियंत्रीको संस्थानये भागप्रमाण केत्रमें भीर अवृद्धाद्धीये असंस्थानये क्षेत्रमें स्वतं हैं। मास्पानिवक्षप्रत्यात्ये भीर अपपादको प्रान्त हुए पंचेन्द्रिय मित्र्यार्थीय वित्यत्यात्ये भागप्रमाण केत्रमें और सद्युप्यतोक तथा नियंत्रोको सर्वयात्यात्रे क्षेत्र स्वतं हैं। इस्तं क्षेत्रमें अपने क्षेत्रमें अपने स्वतं स्वतं स्वतं प्राप्ति क्षेत्रमें स्वतं स्वतं स्वतं प्राप्ति क्षेत्रमें स्वतं स्वतं स्वतं प्राप्ति के स्वतं
सयोगिकेवित्रयोंका क्षेत्र सामान्यत्ररूपणाके समान है ॥ २० ॥

१ पंदेन्द्रियाणां अनुस्यवन् । स. ति. १, ८,

पंचिदियअपञ्जता केवडि खेत्ते, खोगस्स असंखेञ्जदिभागे ॥२१॥ सःयाण वेदण कमायसमुग्यादगदर्शांचिदियअपञ्जवा चटुण्डं लोगाणममसे अदिमाग इए जादो अक्तराज्ञगुणे। इदो १ अगुरुस्म असंखेळदिमागमेच जोगाइणाहो। मारणीवप-बादगदा तिष्टं सोगाणमसंस्वेज्जदिमामे, णर-तिरियसामहितो अमगेज्ञगुणे । पयमिदियमगगणा गदा । कायाणुवादेण पुढविकाह्या आजकाह्या तेउकाह्या वाउकाह्या.

रपुटाविकाहया नादरआउकाहया भादरतेउकाहया मादरबाउकाहया रवणफदिकाह्यपत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जता, सुहुम्पुटविकाह्या आउकाइया सहमतेउकाहया सहमवाउकाहया तस्सेव पञ्जता नता य केवडि खेते, सन्वलोगे ॥ २२॥ इस रामके अधिकी महत्रका पहते कर आये हैं, इसलिये यहाँ पर पुनः इसका

सदस्यवयाम वंचेन्द्रिय जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं है सोकक असंस्थानक आप-परधानस्वस्थान, वेदनारतगुटात और कवायरागुटानको मान हुव सन्वयर्थीन विव सामायहोन मादि चार होश्रेते असंख्यातव अगममण शेश्में और व्यक्ट क्यातगुर्ज होक्से रहते हैं, क्योंकि, स्टाध्यवयोक्त वंक्रीह्रयोंकी सक्तास्त्र अनुकट्ट

विषात् । वाता १६० ६ वर्षाकः, स्टान्यवामा प्रवादिकः वर्षादिकः वर्षादिकः वर्षादिकः वर्षादिकः वर्षादिकः वर्षादिकः भागमात्र है। भारतास्त्रिकःसमुद्रातः और उपवादकः मस्त दूर सम्बद्धान्ति विस्तासम्बद्धानः वादि तीन सोवोदेः भरतवसाने आगस्त्रावः क्षेत्रसे तसा सनुष्यः इस प्रकार इन्द्रियमार्गणा समाप्त हुई।

त्मार्थणाको अञ्चयदेसे प्रिथिकायिक, अच्छायिक, वैष्टकायिक बाहुकारिक

दिर प्रथिशंकाविक, बादर अच्छायिक, बादर श्रवशकाविक, बादर बादर-बादर यनस्पतिकायिका प्राधिकासीर श्रीव तथा द्वारी चांच बाहर कार-यांना श्रीब, प्रश्न प्रदिशीवाधिक, प्रथ्न अपनाधिक, क्षाम तिमकाधिक, पेक और राही प्रस्मात पर्याण और अपर्याण और विजने धेवसे बहते

2पारेच कृतिर्वाकामारिकमस्पतिकातिका सम्बद्धाः कर्वेतीका ह छ। क्षिः कः 🚓 👵 कः

एदस्स सुनस्स अत्यो चुन्नदे । ते जहा- पुटक्किह्या सुरुमपुरक्किह्या तेष पञ्जचा अपञ्जसा, आउकाहया सुरुमआउकाहया सम्मद पञ्जना अपजना, तेरकहरा सुहुमतेउकादया तस्मेव पज्जना अपज्जना, वाउकादया सुहुमवाउकार्या तस्मेव पाउना अपउज्जना च सत्याण वेदण कमाय मार्गिनिय उववादगदा गठालीए, अमेने जनीपन परिमाणादो । णवरि तेउकाइया वेउन्वियसमुग्यादगदा पैनण्हं सोगाणामनेष्ठजदिमाण, बाउकाइया वेउध्वयसमुम्पादगदा चदुण्डं सोमाणममेरोज्जदिमागे । माणुममेर्व म णच्चेद । पादरपुद्धविकाद्या तेसि चेच अपन्तत्ता सत्याण-वेदण कमापसमुन्याद्द्रात तिर्व लेगाणमसंखेजनिद्दमाग, तिरियलागादी संखेजन्यूणे, अष्ट्रहरूनादी असंखेजन्युण। वंजन जेण बादरपुरविकाह्या सापज्जना पुरवीओ लेव अस्मिन् अन्छीन, तेल पुरवीओ जनपदरपमीणण कस्तामो । तत्व पदमपुरवी एगरज्जीवनसंमा सत्तरज्जीस् सहरम्ण वे जोयणलवस्त्रवाहद्धा, एसा अप्यणा बाहहरस सत्तमभागबाहरू जगपर्र होति।

अब इस स्पन्ना अर्थ कहते हैं। यह इसअकार है-स्वस्थानस्थस्थान, देवन समुद्धात, कपायसमृद्धात, मारणातिकसमृद्धात और उपपादको मात हुद हुईशी। कादिक और सहम पृथियीकायिक तथा उन्होंने पर्याट कीर अपर्यात और, सकाविक भीर सहम अक थिक तथा उन्होंके पर्यात और अपरास और तेजस्तायिक और सम तैजस्कायिक तथा उन्होंके पर्यात और अपपास आय, तजस्कायिक बीर सहस बार् कारिक तथा उन्होंके पर्यान्त और अपपास और, यायुकायिक और सहस बार् कारिक तथा उन्होंके पर्यात और अपर्यान्त और सर्य छोक्स रहते हैं, स्याकि, उड राहियोंका परिमाण असंख्यात छे। इतनी विदेशपता है कि मैक्षिपकतर्त व्यातको मात हुई तैज्ञस्कायिकराशि पांचा लोकोक असंवयातच भागममाण क्षेत्रमें रहते है। विकिथिकसमुद्धातको प्राप्त हुई यायुकाथिकराशि सामन्यलोक जाहि चार लेकि शसंवयातर्यं मागप्रमाण क्षेत्रमें रहती है। वैक्रियिकसमृत्यातको प्राप्त हुई वायुकायिकतारी मानुपक्षेत्रकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहती है। व्यक्तपक्तसमुद्गातको प्राप्त हुई वायुक्ताध्यम् मानुपक्षेत्रकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहती है, यह नहीं जाता जाता है। इत्स्वान स्वस्थान, वेदनाशमुद्द्गात और कपायसमुद्गातको प्राप्त हुए बाद्दर पृथ्वीकाधिक की उन्होंके अपर्याक्ष मोन सामान्यलोक बादि तील लोकोके असंस्थानचे मान्यमान क्षेत्र है। इतह तिर्पण्डोकसे संस्थातमुखे क्षत्रमं और अवारद्वात्व सामभागः सम्प्रीतरण इस प्रकार है-जूंकि वादर पृथियोकायिक जीव कीर उन्होंके अपयात जी पृथियोका आध्य टेकर ही रहते हैं, इसलिये पृथिवियाको जगप्रतरके प्रमाणसे करते हैं उनमेंसे एक राजु चौड़ी, सात राजु लम्बी और बीस हजार योजन कम दो लाझ योजन मोटी पहरों पृथियों है। यह धनफलकी वर्षेक्षा व्ययने वाहन्यके वर्षात् वक्ष हाल अर्थ इज्ञार योजनये सातव भाग बाहत्यकप जगमतरमभाण है।

२ इत अरम्पटपृथिवीतस्पर्कोऽभरतनो गपमागश्चित्रोक्त्यस्रप्तेः त्रबमाभिकारयान्तिमसारेत ॥ इस्र समानः ह

देयपुढरी सत्तममागृण-वे-रञ्जुविवसंमा सत्तरञ्जुञापदा वचीसञोयणसहस्सवाहल्ला रुहसहस्साहियचदुण्हं रुक्खाणं एगुणवंचासमागबाहल्लं जगपदरं होदि । वदियपुदवी प्तच मागहीण-तिष्णिरञ्जुविषसंभा सत्तरञ्जुआयदा अद्वावीयजीयणसहस्सवाहल्ला प्तिसहस्साहियं पंचलक्छञोयणाणं एगूणत्रंचासमागवाहल्लं ञगपदरं रत्यपूर्द्यी तिब्जि-सत्तमागृज-चनारिरञ्जनिवसंभा सत्तरञ्जुजायदा चउवीसजोयण-

स्सपादन्ता छजीपणलकाबाणमेगुणवैचासभागबाहन्तं जगपदरं होदि । पंचमपदयी

उदाहरण-पहली वृथियी उत्तरसे दक्षिणतक सात राजु, पूर्वसे पश्चिमतक एक र भीर पक लाख अस्सी हजार योजन मोटी है, अनुपूर्व १८००० योजनींके प्रमाणसे का माग देनेसे २५७१४ है योजन छन्य आते हैं और एक राजुके स्थानमें अमधेणांका ाण हो जाता है। इसप्रकार २५७१४ई योजनोंके जितने प्रदेश हाँ उतने जगवतरप्रयाज **ही पृथियीका घनफल होता है।**

कुलरी पृथिया एक राजुके सात धार्मों में से एक भाग कम दी राजु खीड़ी, सात राजु बी भीर बचारि इजार योजन मोटी है । यह घनपालकी मर्पेशा चार लाख सोलह गर पेजिनोंके वनेचासर्थे भाग बाहस्यक्त जनप्रतरप्रमाण है।

उदाहरण-इसरी पृथियी उत्तरसे दक्षिणतक सान राजुः पूर्वसे विध्यमक 😲 राजु C १२००० थोजन मोटी:

$$\frac{\partial}{\xi \hat{g}} \times \frac{\hat{g}}{A} = \frac{\hat{g}}{\xi} + \frac{\hat{g}}{\xi} \times \frac{\hat{g}}{\hat{g} + \hat{g} + \hat{g}} = \frac{\hat{g}}{A\hat{g} + \hat{g} + \hat{g}} = \frac{\hat{g}}{A\hat{g} + \hat{g}} + \frac{\hat{g}}{A\hat{g} + \hat{g}} = \frac{\hat{g}}{A\hat{g}} = \frac{\hat{g}}{A\hat$$

तांसरी पूथियी एक राजुके सात भागोंमेंसे हो भाग कम तीन राजु थीड़ी, रात हु लग्नी भीर भट्टाईस इजार योजन मोटी है। यह यनपालको अवेश्त यांच सात्व बर्चात ।१९ घोजनोंके उर्नचासर्पे भाग बाह्य्यब्य जगप्रतस्प्रकाण है ।

उदाहरण-तीलरी पृथियी उत्तरले दक्षिणतक ७ राज लम्बी, पूर्वले पश्चिमतक 😲 र बांधी। भीर २८००० योजन मोटी है।

तम बाह्यस्यस्य जगप्रतर.

थीथी पृथियी वक राजुके सात आगों मेंसे तीन बात कब बार राजु बीड़ी, जात र रुम्बी और बीवीस दबार योजन मोटी है। यह धनपालको मपेशा बाद लाख योजनों हे बासर्वे भाग बाहस्यक्ष जगत्रतस्थ्रमाण है।

उदाहरण-चौधी प्रविदी उत्तरते ब्रांशयनक सात राजु, पूर्वते प्रधिमतक 💝 राट

चचारि-सन्तमागृणपंचरज्जुनिवसंमा सत्तरज्जुआयदा वीसजोयणसहस्यबाहल्ला वं सहस्साहियछण्हं रुक्साणमेगूणवंचासमागवाहरूठं जगपद्रं होदि । रुद्वपूरवी पंचर भागृण-छरज्जुविवस्त्रंमा सत्तरज्जुआयदा सोलहजोयणसहस्सवाहल्ला वाणउदिसहस्सा पंचण्डं रुक्खाणमेगृणवंचासमागवाहरूलं जगपद्रं होदि । सत्तमपुटवी छ-सत्तमागृण-स सत्तरञ्जुआयदा अहुजोयणसहस्सवाहल्ला चउदालसहस्माहियाँ रज्ञविक्खंभा रुपखाणमेगृणवंचासमागवाहरूलं जगपदरं होदि । अद्वमपुरवी सत्तरञ्जुत्रापदा एगर

भीर मोटी २४००० योजन है।

$$\frac{R}{S_0^2} \times \frac{\hat{\delta}}{R} = \frac{\hat{\delta}}{2S_0^2} \cdot \frac{\hat{\delta}}{S_0^2} \times \frac{\hat{\delta}}{S_0^2 \cos \phi} = \frac{\hat{\delta}}{\delta \cos \phi \cos \phi} \cdot \frac{\hat{\delta}}{\delta \cos \phi \cos \phi} + \frac{\hat{\delta}}{R} = \frac{R\delta}{\delta \cos \phi \cos \phi}$$

योजन याहस्यरूप जगन्नतस्त्रमाण.

पांचर्या पृथियी एक राजुके सात मागाँमेंसे चार माग कम पांच राजु योहि। राजु टर्म्या और पील हजार योजन मोटी है। यह घनफलकी अपेक्षा छह लाल बीत 🕻 योजनीके उनेचालये माग बाहस्यरूप जगन्नतरप्रमाण है।

उदाहरण--पांचयी पृथियी उत्तरसे दक्षिणतक सात राजुः पूर्वसे पश्चिमतक 👫 बौर मारी २००० योजन है। 38 × 0 = 38 : 38 × 20000 = 520000 : 520000 : 52 = 58 = 520000

योजन पादस्यरूप जगवतरप्रमाण.

एरी पृथियी वक यातुके सात मागोंमेंसे पांच माग कम एड राजु चौड़ी, सात खांची और सोलद इजार योजन मेली है। यह धनफलकी मपेसा पांच लाख बानने ह योजनीके उनंचासर्वे भाग बाहस्यक्षय जगप्रतस्त्रमाण है।

उदाहरण—छटी पृथियी उत्तरसे दक्षिण तक सात राजा पूर्यसे पश्चिम तक 😲 सीर मोटी १६००० वाजन है।

योजन बाहस्यरुप जगनन्त्रमाण, सानवीं कृषियी एक रामुके सान मागोमेंसे छह माग कम सान रामु बीरी हैं रातु छन्दी और आड हजार योजन मोडी है। यह प्रनेतरलंडी अपेक्षा नीन छान व^{पूर}

इत्रार योजनीके उनेवालये माग बाहस्यमण जगमनरममाण है। टर्इर्च-मानवीं पूर्वियी उत्तरसे दक्षिण तक सान राजा पूर्वने परिवर् To gray the direct constitution to a

त अद्वजोयणवाहरूरा सत्रमभागाहिय-एकजोयणवाहरूरं जगपदरं होदि । एदाणि सन्त्राणि गेंद्रे करे तिरियलोगगाहल्लादो संखेज्जपुणगाहल्लं जगपदरं होदि। एत्य असंखेजा गिमेचा पुढविकाइया चिहुंति, तेण तिरियलोगादो संखेज्ज्ञगुणो चि सिद्धं । एदिह पदेहि क्षापस्स असंक्षेत्रदिभागे चिंद्रंता गदापुद्रविकाह्या सुत्तेच सब्बलोगे चिद्रंति चि बुता, वं क्षं घडदे १ ण, भारणीतिय उवनाद्वदे पडुच्च तथीनदेसादी । मारणीतिय उवनादगदा सुरुरलोगे । एवं बादरअाउकादयाणे तेसिमयञ्जवाणे च । पुटबीसु सन्वत्य ण जलपुनले

$$\frac{R_{3}^{2} \times \frac{\ell}{n}}{n} = \frac{\ell}{n^{3}}; \quad \frac{\ell}{R_{3}^{2}} \times \frac{\ell}{\sqrt{coo}} = \frac{\ell}{3RRooo}; \quad \frac{\ell}{3RRooo} \div \frac{\ell}{R_{4}^{2}} = \frac{R\ell}{3RRooo}$$
(1) End additionally

क्षाठर्यी पृथियी सात राजु छात्री, यक राजु चीड़ी भीर माठ योजन मोटी दे। यह योजन बाहस्यरूप जगप्रतर्प्रमाण. माठना हाजना का का वा अव प्रमुख्या स्थाप प्रस्ते सोहनके सात आग करनेपर उनमेंसे सातवा आग सर्थार एक आग

श्रधिक एक मोजन याहत्यरूप जनप्रतरप्रमाण है। उदाहरण-- माठवीं पृथियी उत्तरसे वृक्षिण तक सात राजुः पूर्वसे पश्चिम तक यक राज और बाढ योजन मोटी है।

१ x ७ = ७। ८ ÷ ७ = ई योजन बाह्स्यद्वय जनमतत्त्रमाण.

रम सबको एकत्रित बरनेपर तिर्यग्लोकके बाहरुयसे संख्यातमुखे बाहरुयक्तप ज्ञाननर ोता है। इस पृथिवियों में अलंक्यात लोक्यमाण पृथियोक्तियक जीव रहते हैं, इसीलेप वे त्रपालीकसे संस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, यह सिद्ध हुमा।

विशेषाध-निर्वण्लोकका प्रमाण सन्यल्लकी अवेशत १४२८५ योजन बाहस्यकण जगमतर है और आठों पृथिपियाँका धनफल ६२३७३६९ योजन बाहस्परूप जगमनर है। इससे स्वष्ट है। जाता है कि तिर्यंक्षोबके ब्रमाणसे बाठों पूर्विवर्षका शेव संख्याल्युचा है। बादर पृथियीकथिक जीय इन माठी शृथिवियोंमें सर्वत्र वाये जाते हैं, इसलिये वे निर्दे

क्लोक्स संस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, यह सिद्ध हो जाता है।

र्यका -- उपर्युक्त स्थम्यानस्थस्यान, वेदनासमुद्धात और बत्यायसमुद्धात, इन परार्पा अपेशा बादर पृथियोकायिक जीय जय कि लाकके असंबगतय भागप्रमाण श्रेषम रहते हैं. तो वे ' सर्च होकम रहन हैं ' देसा जा स्वद्यात कहा गया है यह केले पटिल होना है !

समाधान--- नर्टी, चर्पाकि, सारणान्तिकसमुद्धान और उपपादकी अरक्सा 'कारर पृथियीकामिक आध सर्व सांकमें रहते हैं, ' इसमकारका उपहेरा दिया गया है ।

मारणान्तिकसमुद्रात और उपपादका प्राप्त हुए बाहर पृथिवीकार्यक धर बाहर पुरिचीहायिक अपर्यात जीव सर्व छात्रमें उहते हैं। इसीमधार चाहर भाषायिक भीर उन्होंक अपर्यात जीवांच्य भी कथन करना खादिये। अर्थान् पूधिवांक्यायक और अर्थात् प्राध्ये बादरचमुक्तमयाणं अणुबलंबमाणाणं वि सञ्जयुदर्शमु अन्यिनविरोधामातारी । एवं बार तेउकाह्याणं तस्सेव अपन्यताणं च । णवरि येउन्यिपदमस्यि, ते च पंचाई हैगान संखेजदिमागे । तेउकाइया बादरा सन्त्रपुटवीयु होति ति कर्य णव्यदे ? आगमहो । मादरवाउकाइयाणं तेसिमपञ्चचाणं च । णत्ररि सत्याग-वयण-कमाय-ममुखादगरा वि लोगाण संखेजदिमागे, दी-लोगेहिंती अमंगेरजमुणे । वेउव्ययसमृग्यादगरा रा स्रोगाणमसंखेअदिमाने । माणुसखेर्च ण विष्णायदे । सन्यत्रपत्रजतेम् वेडन्यिपरं गरिव

कायिक जीवोंके समान स्वस्थानस्वस्थान, वेदनाममुद्धात और कपायनमुद्धातकी ^{मह}ी यादरजलकायिक और बादरजलकायिक अपर्यात जीव सामान्यलोक आदि ही न होडे भर्तवयात्ये मागमें, तियंग्लोकले संस्थातगुणे क्षेत्रमें, तथा मारणान्तिकसमुदाव व

दप्पोदको मात हुए बादर जलकायिक मीर उन्होंके मगर्यात जीव सर्व लोकम रहते हैं। र्युफा--पृथिवियाँमें सर्वत्र जल नहीं पाया जाना है, इसलिये जलकायिक व प्धिवियाम सर्वत्र नहीं रहते हैं ?

समाधान— पेसी आईका नहीं करनी चाहिये, वर्षोक, बाइरनामक ना कारीके उदयसे वावरस्यको मात हुए जलकायिक जीव यद्यपि पृथिवियाँ में सर्वत्र नहीं व

जाते हैं, हो भी उनका सर्व पृथिवियोंमें अस्तित्व होनेमें कोई विरोध नहीं आता है। इसीमकार अर्थात् बादर जलकायिक और उन्होंके अपर्यात जीवोंके समान वार

तैज्ञहकायिक और उन्होंके अपर्याप्त जीवींका स्वस्थानस्वस्थान साहि पूर्वींक पर्ति हर करना खादिये । इतनी विदेशयता है कि यादर तैजरकाथिक जीवाँके वैकियिकसमुदावर व होता है और ये पांचों छोकोंके असंख्यातय भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं।

र्यका —बादर सैजस्कायक जीव सर्व पृथिवियाँमें होते हैं, यह कैसे जाता जाता है!

समाधान-मागमले यह जाना जाता है कि बादर तैजनकाविक जीव सर्व श्वीर योंमें रहते हैं।

इसीप्रकार वादर बायुकाथिक और उन्होंके अववान्त जीवोंके पर्दोका इसन इस चाहिये। इनमा विद्याचना है कि स्वस्थान, वेब्नासमुदान, और क्यायशमुदानको अनि बादर षायुकायिक और बादर षायुकायिक अपर्याप्त ओय सामाग्यहोक आदि तीन होती. संवयातर्ये मानममाण क्षेत्रमं और तिर्याखोक अपयोक्त जीय सामान्यलोक साह तात का संवयातर्ये मानममाण क्षेत्रमं और तिर्याखोक तथा मनुष्यलोक रून दो लोकोंसे संवक्तातुर्य सनमं रहते दें। योकोयकसमुद्धातको मान्त दूष यादर वायुकायिक जीय सामान्यलोक ही यार लोकोंक स्थानमान्य चार छो हो के असंस्थातचे आधामणा क्षेत्रमें रहते हैं। किन्तु यहां मतुष्यक्षेत्र नहीं जाता इत है कि उसके किन्ते कार्यों को कि है कि उसके किनने मागमें रहते हैं। समी अपर्यान्त आयोंमें वैकियिकसमुदातपर्द नहीं हो

द्रवणप्फदिकाह्यपचेयसरीरा तस्तेव अपन्त्रचा बादर्गणगोद्षदिहिदा तस्तेव अपन्त्रचा गादरपुढवितुल्ला ।

वादरपुढविकाहया वादरआउकाहया वादरतेउकाहया वादरवण-कृदिकाइयपत्तेयसरीरा पञ्जता केविड खेते, लोगसा असंखेज्जिदि भागे ॥ २३ ॥

एदस्स सुनहम अस्थो पुरुषदे । तं जहा — बादरपुढविषण्जना सत्याण बेदण कतायसम्प्रादगदा चदुण्दं सोगाणमसेत्रेजदियाने, अङ्गहुज्जादो असंग्रेजगुणे । ए य ओवडूणं ठिवय जोएदध्यं । मारणितय-उपयादगदा तिण्हं लोगाणमसंशेनजीरमांगं, णर-विश्विजोगिहितो असंदेरज्ञगुणे । एवं वादरआउकाइयपन्जचा । बादरवणफदिकाइयपचेय-सरीर-पादश्णिगोदपदिद्विदयज्ञचाणम्यं चेव। व्यवश् बादरवणण्यादिकादयपचयसरीरयज्ञचा बेदण-कसाय-सत्थाणेसु निरियलोगस्स संशेज्जदिवारो । पदिनि ससीणं पिन्दीवमस्य अभेरीकादिमागमेचा जगपदराणि पदांगुरुण गांदिदेयगुंहमेचपमाणं होदि। आगाहणा पुण

है। बादर पनस्पतिकायिक प्रत्येक्ट्राधीर और उन्होंके अपर्याप्त जीव तथा बादर निगोद प्रतिष्ठित और उन्होंके अपयोक्त जीय, बादर पृथियीकायक जीयोंके समान हैं।

पादर पृथिवीकापिक पर्याप्त जीव, बादर अच्छापिक पर्याप्त जीव, बादर वैजरहा-थिक पर्याप्त और अहर बाहर बनस्पतिकाथिक प्रत्येकछतीर पर्याप्त और किनेन धेपने

रहते हैं ? सोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ २३ ॥

शव इस स्वका अर्थ कहते हैं। यह इसप्रकार है-- स्वस्थानरवस्थान, बेर्नासगुद्धान और क्यायतमुख्यतको मात दुव बादर पृथियोकाविक वर्षात जीव साजन्यतोक आहि बार लिहोंके सर्वच्यातम् भागप्रमाण देश्वमें और अद्दृष्टिथिये सर्वच्यातमुखे देश्वमें रहते हैं। क्षारवर्ग सर्वत्रपाल स्वत्रकाल रूपम आर्थ अनुस्थारण स्वर्थनात्रुण सम्बद्धात ६० वहांपर संपर्वत्राही वद्यापना वरके योजना वर हेना चारिये । सारणानिवदसमुद्धात और उपगहको प्रान हुए बाहर शृथिवीकाविक पर्यान जीव सामान्यलाक व्याहिकीन लेखि उपरादका आना दुव कावुर हाजवरकार्यक वयान जाव व्यावस्थान जातू ताव रावास्त्र संसंव्यातये मागवमाण संबर्ध, तथा अनुष्य और तिर्यन्तांवसे बसंव्यात्रमुख हेत्वमें रहने है। बाहर मानाधिक वर्षात्त जीव भी क्वक्यानक्वक्थान मादि परीय हसीयवार रहते हैं। व । चारूर न कार्यम प्रवास मार्थ प्राप्त मार्थ की वार्य नियोग प्रतिष्ठित पर्याप्त औरों ब बरोबा पार पारकार करना चाहिये । इतनी विद्यापना है कि वेदनासमुद्धान, व वायसमुद्धान और रपरधान पद्गत बाहर यनस्पतिकाधिक प्रतिकताधीर व्यांन्त श्रीव तिवस्ताकक सक्तानवे रपरपान परमा भागप्रमाण क्षेत्रमं रहने हैं। वायोपमंत्र, मारोक्यानयं भागप्रमाण जगप्रनारकं मनरानुहरून स्व हन करके जो यक साथ रुष्य आवे उत्तमा इन राशियोग प्रसाम है तथा अवशाहना स्टागुटर स्वत्यस्म उक्किम्य ओगाह्णा विसेनाहिण । तस्सेव पञ्चत्यस्स उक्किक्त केल्या केल्य

इक्के सूर्य तेषुक्यारिक भागीत्व जीवकी जाहाय भागगाहता विशेष मधिक है। इसेंस सूर्य है क्रम्यार्थ वर्षात्न क्षेत्रकी प्रश्वेष मानगाइना विशेष स्थित है। इसमें भूतम वर्षान् के क्वी वर्ष्यु क्षण्यावया विशेष कविन्न है। इससे श्रूप भावारिक निर्मानाम कें वर्ष क क्षत्र अन्तराया विशेष स्थापक है। इसमा व्यय अन्तरायक नार्धिक केंद्र के क्षत्र अन्तरायक नार्धिक है। इसमा वृत्याया वृत्याया विशेषक निर्माणक क्षेत्रको क्षत्रक अवनाद्या अर्थकवानमूर्या है। इसमा श्वाम पूरियाँनाविक विश्वपित केंचरी रच्या अवस्थात विशेष अधिक है। इससे शुरुष पूर्णिकारिक नि विभिन्न संबद्धी रुक्ष अवस्थान विशेष अधिक है। इसके बार्य वास्त्रकारिक निर्मित्रिक के की अक्रम अवस्थान अवस्थानमुखी है। इसने बादर बादर निर्माण क्रीचरी छान्छ करमान्त्रा शिरोज अनिकही दशार बात्र वात्रशासक निर्माणीय क्षेत्रची रुक्त अधनादना विशास क्षेत्रक है। इसना नाहर नागुकातक । १९११ मान्यते । स्रोत्रकी रुक्त अधनादना विशास क्षेत्रक है। इसना नाहर है सरकाति निर्माणन में दर्श मान्य वादमानमा वादकारमानी है। इसमा बादक नेप्रवर्शना निर्माणन सीच्यों इ.स्.च क्यान्या शिल्प मांत्र है। इसले वापूर नेप्रकारिय निर्माणीय क्षेत्रको राज्य सम्बद्धान रिवाण स्थित है। इससे साहर स्वयतिक निर्मालिक संबर्ध प्रकार कारणान्या अध्यक्षणानम्बद्धि । वर्षाय वापन व्यवस्थिति निर्माणीय भीक्या सन्तर कारणाच्या प्राप्त आरेक है। इससे सामा कारणीय निर्माणी संबद्धी अनुष्ट करवाहरू विराय क्षेत्र है। इवस वातर पुनिर्देशीय निर्देशीय कियम ओगाहणा असंखेरवागुणा । तस्सेव विव्यवित्रपुरवस्यस्य उपकस्सिया आगी-गा विसेसाहिया। तस्सेव विव्यविष्वज्जवपस्त उवकस्तिया जीगाहणा विशेषाहिया। दर्शिगोदिणिब्दविपञ्जवपस्स जहाँम्यया जोगाहवा असंग्रेज्जनुषा । तस्मेद निम्दिव वज्जनयस्त उक्कस्सिया जोगोहणा त्रिसेसाहिया। तस्सेव निष्वविषज्जनयस्म उक्रस्मिया योगाहणा विवेसाहिया। (विमोदपिदिद्विष्यज्ञचपस्स जहन्जिया जोगाहणा जसेरोज्ज्ञगुष्ता। तसंव जिम्बचित्रपञ्जचयस्स उवकस्सिया ओगाहणा विसेमाहिया। तस्मेव जिन्नीच-पुरुज्ञचयस्स उक्करिसया जोगाहणा विसेसाहिया ।)' बादस्वणप्यद्रकाह्यपचेयमसीहिन्द्रवि पंजज्ञचयस्त जहाँक्याया जोगाहणा जसरोजज्ञगुणा । वेहेदियविज्यविषयज्ज्ञचयस्य झहीकाया जोगाहणा असंखेरजगुणा। तेर्देदियलिष्यविषयज्ञेषयस्य जहन्यिया जेगाहणा शतेरुक्रगुणा। चडारिदयिकव्यविपन्त्रसयस्स बहिनाया आमाहणा संखेतन्त्रगुणा । पाँचिदिनीव्यवि पज्जवयस्स बहीन्नया जोगाहणा सरिज्ञगुणा । तेर्दियाविष्यवित्रपज्जवयस्म उरह-हिसया जेताहणा संघेउजगुणा । चर्जारेदियणिव्यविजयज्ञन्यस्य उन्हरिसया जेताहणा संखेळागुणा । वर्रियणिण्यचित्रपञ्जलयस्य उदयस्मिया जागाहणा श्रेष्ठकगुणा । वादर-वणम्माकार्यपचेपसीरिणिव्यधिअपळ्यपस्य उदकरिसमा आमारवा संगेन्द्रगुला ।

जीवकी अधन्य अवगाहना अलंक्यातगुणी है। इससे बारूर वृथिवीडाविक विकृत्यवर्णन जीवती जन्छ अवसाहना विरोध अधिक है। इससे बाहर श्रीववीकाविक निर्देशकर्यान श्रीवकी उन्हर समाहता विशेष समित है। इसले बार्ट मिनार विश्वेतिकांत श्रीवकी जेपाय अध्याहमा अधारपातगुणी है। इस्तरे बाहर विमोद विदेश्यवर्थान झीनची कन्दर अवगाइना विशेष अधिक है । इससे बादर त्रिगोद निकृतिक्योंन्य जीवकी क्ष्यु जनगहना विरोध मधिक है। (इससे मिगोदमातिकित पर्याप्य जीवकी जासन्य अवनाहना असंक्याप्त गुणी है। इत्तेत तिगोदमितिष्ठत विश्वयययांना श्रीवची उत्तव अधवात्वा विरेष अधिक है। इससे निगोदमाधित किहुनिवयांत्र जीवकी बन्दय अवगारना विरोत अधिक है।) इसारे बाहर यमश्यतिकाधिक अलेक्सारीर विकृतिस्थालेल जीवकी ज्ञान्य अहसाहका अरोबवातगुर्ण है। इसते झॉर्ग्य निर्श्वसिवयांना अविकी अशब्द अवसारता असेकालगुर्वी है। इससे ब्राह्मिय किर्शितपर्याण जीवकी जवाय श्रवनाहका संक्वालगुर्यी है। इससे क्युरिनिय तिकृतिनयोग जीवकी जयन्य अवसारमा संब्धानगुली है। इससे देवेन्द्रिय विश्वास्त्रपाल जीवकी जवन्य अवशादका संबदातगुन्दी है। इससे श्रीन्त्य विकृत्यस्थान त्रकृतिकार अपना मार्चित संस्थातमुद्धी है। इससे बनुरिन्द्रिय क्रिकृत्वरप्रेर डीस्डी इन्हर अपनाहता शब्दातमुखी है । इससे अंतिम्य विश्वस्थान कोवरी वचर जवतम्ब संबद्यानगुणी है। इससे बाहर बक्तपतिवादिक श्रांदेवशारीर विश्वेष्यपदील श्रंपदी श्रमुक

र्पंचिदिपनिन्यीचअपन्वचयस्स उदक्रस्सिया ओगाहणा संखेन्त्रगुणा। देवंदिपनिनारि पुत्रवस्यस्म उक्कस्मिया श्रीगाह्या संसेवनगुगा । चर्डासदियाण्यातिपृत्रवसम् उस स्तिया जोगाइया संसेज्ज्युया । वेइंदियणिव्यत्तिपञ्चत्रसम् उक्कस्मिया अगाय संगेजनुना । बद्रवनप्रदूषचेयसरीरणिन्यविषञ्चचयस्स उक्कस्सिया ओगार्गः संवै रुद्रगुना । प्रेनिदियनिर्व्याचेपस्वत्रयस्य उक्कस्थिया ओगाहणाः संसेरद्र्यगुना । सार्वि मुदुमन्त्र कागाइनागुनगारो आवलियाए असंरोज्बदिमागी । सुदुमादो पारस्य केल इषागुरुगरो पनिदोत्रमस्स असंसेज्बदिमागो^{*}। बादसदे सुदुमस्य ओगारगणु^{नस्त} कार्यन्याद् असंवेज्यदिमाणा । बादरादो बादरस्य ओगाहणागुणगारा वित्रोतस्य उन्हेर्ज्य देशारी । बादराहा बादरस्त ओमाहणागुणवारी संहोज्जा समया । इव बारर रहान देशायन नेयमित्रकापपस्त जहिलाया आमाहणा धर्णागुनस्य अमेराही करों हरि तुने होतू वामेर्द, पर्रामुलनामहारादी धर्णमुलमानहारी संदोन्त्रमुणी विका सन्दरे है रिविन्ते चन्म मैगोन्जिहिमाने वि गुरूपद्मादी । एदम्हादी चेर पृहिसे बेला

करणपुर लंबरणापुरी है। इसने पंचेत्रिय निर्मृत्यपर्यन्त जीवकी उपस अवाहन क्षेत्रक व्याप्त के इसने के दिवस निर्देशियर्थां अधिकी अक्ष अपमादम शंकाला है ११ म ने ब्यूनिनियय तिर्मित्ययान त्रीयकी चल्द्रव मायसावना संन्तासगुरी है। स्थे ही प्रकृति कि कि की वार्त कार्य कार्यादमा संक्यातमुगी है। इससे बाइर बन्सी करीक करोक्सरीत विवृत्तिरार्थाच्य श्रीयकी सन्दर्भ भवगावना संन्यातगुनी है। इसे कर्वा देश देश के जिल्लामा अनिकार कामान अवसामान को बयामानुनी है ।

क्य क्ष्यमञ्जीवन्तं नृत्ये स्वमजीवारी स्वामाहताका सुलकार सावजीका संस्थाति क्षण्य है। स्टामप्रवेशक वानुर प्रीवर्ण भागाहताका गुणकार वारोपमका समेन्याता हुन है। बाववणीवांक स्थानवित्री अवगाहनाका गुणकार वागामा सामानी साने क्षाद्रभाव का वानगानिक वापाद्रमाका गुणकार वापाद्रमाका वाग्याप्त होते । वापाद्रभाव का वानगानिक वापाद्रमाका गुणकार व्ययोगावका वर्गकारमा व्यव कप्रकं क वर्णा अन्याहरण मान्याहरण सुमाना प्रशासका सम्माना । मान्याहरण कार्याहरण स्थाप कार्याहरण स्थाप के स्थाप क्षेत्रको अक्रम करणवन्ति क वृत्र पर्याप जीत्म्य आहि श्रीपीची भवगदमाचा गुवका

क्षण्य स्वार है।

देश - वर्श पर बावर बवस्यतिवातिक प्रांतवतारीर वर्गातरी अवस्य अनुसर्व हतालुटंड सम्बद्धानरे लाग बढ़ा है, थे। बहु संदे ही नहीं भारे, दिश्तु प्रामानुदंड संब इत्य क्रमान्त्रका सामदार सम्मानमुख्य देश्या है, यह देश क्रांस प्राता है है

क्षणायान् — बावरवनस्यात्वरायव प्रायेवतारीत वर्षाया जीव वेरवासमुदान, वर्ष कान प्राप्त काल कर्यन्या नार्याची कारका है हिन्दें हमाराची कारमाल काल वा नार्याची है। इस इस काल कर्यन्या नार्याची कारका है हिन्दें हमाराची कारमाल है आसी देशन हैं। इस बुकारपाम काना कारा है १६ जनगणुरुक समझाने मनीनुरका समादार संकारणाम है

大型机场形式 电电弧器 经经济的复数形式 肥 多电机

हुणाए जीवबहुत्तं च णायव्यं। बादरणियोदपदिहिद्यव्यचा किमिदि सुचिन्ह ण युचा र ण, तेसि पर्चयसरिस् अंतन्मातादो । बादरतेउकाइयपञ्चचा सत्याण-वेदण-कसाय-वेउन्त्रिय-समुग्यादगदा पंचण्हं लोगाणमसंयोज्जिदिसागे । मारणंतिय-उववादगदा चतुण्हं लोगाणम-

संखेज्जदियांगे, माणुसखेचादो असंखेज्जगुणे । बादरबाउकाइयपञ्जता केवडि खेते, छोगस्य संक्षेत्रजदि-भागे ॥ २४ ॥

ष्टदस्स गुचस्स अत्यो युच्चदे- सत्थाण-वेदण-फसाप-मारणंतिप-उबवादगदा बाहरबाउपञ्जाचा विण्डं लोगाणं संखेजदिभागे, दोलोगेहिंवी असंविज्जागुणे । बाहरबाउ-पुरुत्रचरासी लोगस्य संखेरविदमागमेची भारणीविय-उदबादगदी सध्यलींग किया होदि वि युचे वा होदि, रञ्जुपदरमुद्देण पंचररञ्जायामेण' हिदरीचे चेर पाएण वैमिम्रप्पचीरी।

तथा, उक्त इसी गुद्धपदेशले बाद्रयमस्पतिकाथिक प्रायेवदारीरवी सदगाहकार्वे जीवाँकी वाधकता भी जानमा चाहिए।

द्रोद्रा--- सूत्रमें बादरिनशीद्यतिष्टित वर्याप्त शीय वर्षों नहीं वहे ?

समाधान-नहीं, वर्षाकि, बादरिनगेदमतिष्ठित वर्षान्त श्रीवींना प्रत्येकतारीर पर्योप्त यनस्पतिशाधिश जीयोंथे भन्तर्भाव हो जाता है ।

रयस्थानस्यस्थान, पेदनारामुद्धात, कवायसमुद्धात और पैत्रिविकारमुद्धातगत बादर-विश्वदृष्टाविक प्रयोदित औष पांची होशीके असंस्थातचे भागमें रहते हैं। मारणानिक-समुद्रात भीर उपपादगत वे दी बादर रीजरकायिक जीय बारों छोकोंके मसंक्यानये आणी

भीर मनुष्यतीयसे मसंब्यातगुणे सेवमें रहते हैं। यादर बायुकायिक पर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं। होक्के शंएपात्रहें

भागमें रहते हैं ॥ २४ ॥

इस सम्बद्ध मर्चे बहते हैं--श्वरधान, बेदनासमुद्रात, क्यापसमुद्रात, मारकान्त्रिक-समुद्रात और उपपाद पद्मत बादरवायुकाविक वर्यान्य क्रीय सामान्यत्वेक मादि तीन छोडोंके संख्यातवे भागमें और विर्यन्तीक तथा मनुष्यतीक इन दोवों लेकोंसे मसंस्थानगण क्षेत्रमें रहते हैं।

द्वीया -- वाव्र वायुवाधिक पर्याप्तराद्वी छोवके संक्यातके मागममाण है, इव बह मार्गानिश्वासमुद्रात और उपयाद पर्वेशी माध्य हो तब यह सर्व लोकमें वर्षी बही रहती है ? समाधान-वर्धी रहती है, क्योंकि, राजुधनरप्रमाण मुख्ये और पांच राजु बादावस

रिधत क्षेत्रमें ही आयः करके उन बाहर बायुकाविक पर्याप्त जीवाँका क्ष्मांत होती है।

f alleationignial feligate theinflaten questionang monecliannes arts i



1.202

एदं क्रथं मध्यदे । गुरूवएसादी ।

तसकाहय-तसकाहयपज्जतपसु मिन्छाइहिप्पहुडि जाव अजोगि-केविल ति केविड खेते. लोगसा असंखेबजदिभागे ॥ २६ ॥

त्रसकाइय-त्रसकाइयवज्ञचिमञ्छाइही सत्याण-विहारविद्रसत्याण-वेदण-कसाय-वेड-व्ययसप्रकादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेजबदिमागे, तिरियलोगस्स संखेजबदिमागे, अप्राह-आदी असंखेजअपुणे ! मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेजबिदमागे, णर-तिरिय-लोगेहितो असंबेद्धगुणे। प्रथ ओवहणा जाणिय कायन्या। संसगुणहाणाणं पंचितियांगी।

सजोगिकेवली ओधं ॥ २७ ॥

सगमपेरं ।

तसकाइयअपज्जता पंचिदियअपज्जताणं भंगो ॥ २८ ॥

र्शका - यह देखे जाना जाता है ?

समाधान-गुर्देक उपदेशसे जाना जाता है कि बादर यत्रशातिकाधिक श्रीष विधावियोंके ही भाशवले रहते हैं।

त्रसकापिक और त्रसकापिक पर्याप्त जीवींमें मिध्यादिष्ट गुणव्यानीत लेकर अयोगिकेश्सी गुणस्थान एक प्रस्पेक गुणस्थानवर्धी और कितने क्षेत्रमें रहते हैं ! सीकके असंख्यादवें मागमें रहते हैं ॥ २६ ॥

रयस्थानस्वस्थान, विद्वारयस्यस्थान, वेदनासमुद्धात, अवायसमुद्धान और वैति-विकसमहातगत वसकाविक और वसकाविक वर्षात विश्वाराध जीव सामान्वलोक साहि तीन स्रोक्षेंके मसंक्रातये भागमें, तिर्वण्डोकके संक्रातये भागमें और महादेशियाँ मसंचयातगुण देश्यमें रहते हैं। भारणान्तिकसमुद्धात और उपपादणन बसकाविक और असकायिक वर्षात विष्णादि और तीनों छोडाँके असंस्थातवें भागमें तथा मनुष्यछोडा और तिर्वेग्लीकरें मसंस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। यहांपर अपवर्तना जानकरके करना चाहिये। सासादनादि दोन गुणस्यानवर्ती बसकाविक और असकाविक वर्णात औरोंका क्षेत्र पंकादिक अधिने शेवाँके समान जानना चाहिए।

सवीगिरेवलीका क्षेत्र जोपनिरूपित सपोगिरेवलीके क्षेत्रके समान है ।। २७॥ यह धूत्र सुगम है।

प्रसकाविक सन्व्यवर्षात जीवीका क्षेत्र पंचान्द्रिय सन्व्यवप्राप्तकोंके क्षेत्रके

[:] प्रशासिकारो वचे निवंदर है स. हि. १, ४.

एदं पि सुत्तं सुगमं, पुन्वं परुविदत्तादो । एवं कायमगाणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगीस मिच्छादिद्विण्हुडि जाव सजोगिकेवली केवडि खेते, लोगस्स असंखेजदिमार्गे ॥२९॥

एदस्स सुत्तस्स अस्थो चुन्चदे- पंचमणजोगि-पंचविचजोगिमिन्छोदिही सरवान सत्याण-विहारविदसत्याण-वेदण-कसाय-वेउिव्यसमुग्धादगदा तिण्हं लोगाणमसंवेग्जीः मागे, तिरियलोगस्स संखेजजदिमागे, अहार्य्जादो असंखेज्जगुणे । वेउव्जियसपुणारः गदाणं कथं मणजोग-विच्जोगाणं संमवा ? ण, तेसि पि णिष्यण्णुत्तरसरीराणं मणजोग-विजोगाणं परावित्तसभवादो । मारणंतियसप्रुग्घादगदा तिण्हं सोगाणमसंखेरविकारिमाणे णर-विरियलोगेहिंतो असंखेजजगुणे । मारणंतियसम्बन्धादगदार्णं असंखेजजजीयनायापेत टिदाणं मुच्छिदाणं कथं मण-विच्ञोगर्समत्री ? ण, वारणामानादो अवचाणं णिन्मासुर-

> यह सूत्र भी सुगम है, पर्योक्ति, इसका पहले प्रस्तव किया जा चुका है! इसप्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई।

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचीं मनोयोगी और पांचीं वचनयोगियोंने निष्ण दृष्टि गुणस्यानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव किने क्षेत्रमें रहते हैं ? लेकिके असंख्यातवें मार्गमें रहते हैं ॥ २९ ॥

इस स्त्रका वर्षं कहते ई-स्वस्थानस्वस्थान, विहारवास्यस्यान, वेदनासमुकान, क्षपायसमुद्रात और येत्रिविकसमुद्रातगत पांची मनोयोगी और पांची प्रवनयोगी क्रियारी जीय सामान्यलोक आदि तीन छोजोंके असंख्यातवें झागर्मे, तिर्थन्लोकके संक्यातवें झागर्ने भीर अवृद्धिपछे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं।

र्शका — धैकिथिकसमुद्धातको प्राप्त जीवोंके मनोयोग और वचनयोग केंसे संमव^{ही} समाधान — नहीं, क्योंकि, निध्यन्न हुआ है विकियात्मक उत्तरशरीर क्रिनहे, वेष

अ.संदि महोयोग भीर वचनयोगींका परिवर्तन संमय है ।

माराणातिकसमुद्रातमत पांचा मनोयोगी और पांचा वचनपांगी मिध्याहरी और सामान्यटोड मादि तीन शेरोडे असंख्यातव मागम, मनुष्यटोड और तिर्यहोडसे मर्ट क्यानगुणे शेवमें रहते हैं।

र्शका-सारणान्तिकसमुद्रामको प्राप्त, असंक्यात योजन आयामसे रिवर भेर

मुर्विष्टत हुए संब्री आयोंके मनोयोग भीर वचनयोग कैसे संमय हैं।

समायान - नहीं, क्योंकि, बायक कारणके अमाय होनेसे निर्मर (मापूर) होने ९ बोटातुकदेव बादमानवर्वातियां दिश्यात्कव दैवयीयदेवस्यातानां कोदरवार्थययेनामा १ त. है। रे

जीवाणं व वेसि तत्त्व संभवं पिंट विरोहाभावादो । मण-विवागोस उपवादी णित्य । सात्रणसम्मार्द्विष्वदुढि जात्र असम्रम्यादसज्ञीगकेत्रकि चि मृठीयभंगी । णत्ररि साम्रम 100 असंजदसम्माइडीणं उनवादी णिख । कायजोगीसु मिच्छाइट्टी ओघं'॥ ३०॥ सत्याणसत्याण-वेदण-कत्ताय-मारणंतिय-उथवादगदा कायज्ञाणिमिच्छार्द्वी सच्य होए । विहारविदेसस्याण-वेजविज्यसमुग्राह्मस्यात् विन्हं स्रोमाणमसंस्वज्ञद्विमाणे, निरिय-

वार्यः । वश्वरात्रवादात् वर्णान्ववण्यः वर्णाः । वर्षः व्यवस्थानः । वर्णः वर्णान्ववण्यादः । । । । । । । । । । । वर्षाः संखेरत्रदियामे, अङ्गादरजादो असंरोरजापुषे । एरषः औरङ्गा जाणियः सायस्या । सासणसम्मादिहिष्पहुडि जाव स्त्रीणकसायवीदरागछहुमत्या केवाह ते, लोगस्स असंखेजादिभागे ॥ ३१॥

जोगामाबाहो एत्य अजोगीणमग्गहणै । सेसँ सुमर्ग ।

विद्योक समान भवपका मनोपोम और पुषमपोग मारणान्तिकसमुद्रातगर श्र्रिजन मनोयोगी और वयनयोगी जीवाँद उदचाइचर नहीं दोला है। सासाहनमहत्वरहि मानो के हर सम्रातारहित संबोतिहेयही गुणस्यामतह सर्वेष गुणस्यामनी सम् ात विद्याल को प्रदेश होते हैं। विद्याल वात का कार्या कार् १६ जनवामा आवाधा राज कृष्णाच राजक राजान व । व्यवस्थ जागु जब र एक स्वयम्बारिकोर सर्वयतसम्बद्धीर समायोगी और वयनयारी और्योके उपस्पत्तक

व्ययोगियोमें मिध्यादृष्टि जीशेंका क्षेत्र ओपके समान सर्वलोक है ॥ १० ॥ परचानस्वस्थान, वर्गालमुदात, क्यायलमुद्यात, बारणानिकसमुदात और २५ पयोगी मिद्रवाहिष्ट जीव सर्व लोकाँ रहते हैं । विहारवासक्यान कौर वैद्रितिकः कारपेशी विश्वाहिक जीय सामाग्याहोक आदि तीन को बोर्ट आसामान

भावपामा मानवाहास भाव पामापादाम भाव पाम कार्यक भावपाता स्टोकेक संब्यातर्वे भागमें भीर सदाईद्वीपक्षे ससंब्यातमुक्ते शेवमें रहने हैं। यहांत्र दिनसम्पाराष्टि गुणस्यानसे लेकर शीणक्षावबीतरागढरम्ब गुणस्यान तक प्रमाणकार एक प्राणकाक्ष्याम्य अक्षेत्र । मानवर्ते काययोगी क्षेत्र किनने क्षेत्रमें रहते हूँ हैं होक्के अमस्यान्त्र नभाव होनेत इस स्वर्धे वयोगिक्वेटियाँका महत्व नहीं विका गक्त है।

1000

सजोगिकेवली ओषं ॥ ३२ ॥

गुनरिवरमानमेमजोमी किन्न करी ? ग, सजीमिन्टि सेमस अपनेरजेमु बलेन मुनरिवर्गन वा हरि विशेषुवर्गमारी !

ओराहियकायजार्गासु मिन्छाइही ओघं ॥ ३३ ॥

ष्ट्रे क बाव नेद्रण कपाय-मार्गातेषसमुग्याद्रगद्रा सवालीए, मुद्रमाद्रकण कार-रूर्वेचेचु संबद्धा । उद्याद्रिण विस्तु निरुद्धातिषकायजीमाद्रा । विद्यादिन यानगा रित्रं लेक्कावसंस्वत्रदेशात, निरिष्ठतेमस्य सेरोजिदिमाने, स्वयक्तपानिस्य सेरोजिदि क्यान्य संबद्धा केरि वि मुख्यत्याद्री । अद्वाद्रमाद्रो असंरोजगुने । वेशिययस्याद्र स्वा चपुद्र लेक्कावसंस्वादिताते अद्वाद्रमाद्री असंरोजगुने, औरांतियकायज्ञीम विकी वैद्यानकार्यक्रियानाद्रिजनियममुग्याद्रमा असंस्वाद्री ।

कार र प्तार के महिथिक वहीं का धेव ओपनयोगिकेवलीके धेवके समान है।।१६।।

र्यक्षः --- कारणप्रविद् गुणवर्गातमानियन सभी जीवींद्रा यक्त योग वर्गे नहीं दिशा । करते पुरुष "साम्यानपामानिद्वित्यपृति" हालादि श्रृपदा भीर दल "संजीमेद्रानी मेर्च" सुरुषा एवं साम्यान करी नहीं दिला ।

करणपाड --- अर्थी, क्योंकि, अयोगोकपालीके क्षेत्रमें, 'शयोगोकपाली मोडके सर्वे करणक करू ज्याने की क्षेत्र कर्ये होत्रही रहते हैं रहत क्षत्रस्था विशेष करात गाया जाता है क्षत्रों रूप कर्य के संस्थान कर संस्था सर्वी दिस्सा।

में निर्मा क्यान पोनियोंने नियमाशिन भीषों हा भेज भोषों समान गाँ मों है शिक्षी का ज्यान करना है , वारानामध्यान, स्वायमाश्वान भीर सांस्वाधिक सम्वायमां के तो का ज्यान कर के लिए जान कर कर के लिए जान कर कर के लिए जान के लिए

कि कि के कि कार का का का का कि कि कार्य
[·] wax begin and in it see.

सासणसम्मादिद्विषहुडि जाव सञोगिकेनली लोगस्स असंसे-न्जदिभागे ॥ ३४ ॥

फरं सजोगिकेवली लोगस्स असंरोज्जिदिमागे १ ण एस दोसो, ओरालियकाय-जोगे किरुद्धे ओरालियमिस-कम्पद्यकायजोगसहमृद्धवाड-पद्र-लोगपूरणाणमसंमगदो । सासणसम्मादिद्ध-अर्थजदसम्मादिद्वीणसुवगदो णस्थि। पमचे आहारससुग्यादो गरिय। सेर्स जाविक सन्दर्भ ।

ओराहियमिस्सकायजोगीसु मिन्छादिट्टी ओवं ॥ ३५ ॥

द्धारको प्रारंत भीदारिककाययोगी अधिका होत्र तिर्थण्डोकका असंस्थातयां मान पताया है, तह दौका भीदारिककाययोगी अधिकारिकरारीट्याने जीवाँक विकिष्णकायावका होत्र तो विष्णेतिकका संस्थातवा साम तिर्थण्डोकका विष्णेतिक प्रारंतिक प्रारंतिक प्रतिप्रारंतिक स्थातिक स्थातिक प्रतिप्रारंतिक स्थातिक
सावादनवरपग्टि गुणस्थानसे ठेकर सपोगिकेच्छा गुणस्थान तक प्रस्पेक गुण-स्थानवर्षी औदारिककाययोगी जीव ठोकके असंख्यावर्षे भागमें रहते हैं ॥ ३४ ॥

र्रोका- सयोगिकेयटी भगवान क्षोकके मसंग्यातक भागम रहते हैं, इतना ही

समायान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, श्रीवारिकशवयोगसे तिदद्ध शेवका क्योंन करते समय श्रीदारिकामयापयोग और श्रीमंकाययोगके साधमें होनेवाडे कराड़, मतर और शोवपुरण समुद्धार्तीका होना संभय नहीं है। दसलिय श्रीदारिकवाययोगी संयोगि केसली होक्ट वसंक्यात्वें भागमें यहते हैं, पैसा कहा है।

सासाइनसम्पारि और व्यवंतरुक्षायन्ति श्रीशास्त्रकावयोगी अधिके उपपादपद् नहीं होता है। प्रमाश्चानस्यानम् आहारकसमुद्धातपद औ नहीं है, प्रयोग्ड, यहांपर भीदारिक-स्वायंतियोंका क्षेत्र धताया जा रहा है। श्रेष शुव्यवानीम प्रयासंभव वह जानकर वहना पाहिए।

औदारिकमिधकाययोगियोंने मिष्याद्यी जीव ओपके समान सर्वलोकने रहते है। ३५ ॥ ध्वग्रहाममे जीवदाण

बहुत क्षमेगवयणणिदेसी ? ण एस दोसी, बहुण पि जादीए एमनुवर्तनाते। अधवा मिच्छाइड्डी इदि एसो बहुवयणणिदेसी चेत्र । कर्षे पुण एन्य विहत्ती शौतहन्तेर ! 'आइ-मन्झतवण्णसरलेवा ' इदि विहचिलोवादा । सत्थाण-वेदण-कसाय-मारणीतय-उवनार-गदा औरालियमिस्सकायजोगिमिच्छाइट्टी सन्वलोगे । विहास्वदिसत्याण-वेउल्वियमप्रवास णरिय, तेण तेसि विरोहादो । ओरालियमिस्सस्य वेउन्त्रियादिपदिहि भेदसमगरी अव णिदेसो ण घडदे ? ण एस दोसो, एत्य विज्जमाणपदाण परुवणा ओवपरुवणाए तुर्ह्नीच ओषत्तविरोधाभावादो ।

सासणसम्मादिद्वी असंजदसम्मादिद्वी अजोगिकेवली केविंड सेते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३६ ॥

एस्य पुरुवसुत्तादो औरालियमिश्सकायज्ञोगो अणुवदृदे । तेणेवं संबंधी मनदि-

र्शका — मिथ्यादृष्टियों के बहुत होने पर भी यहां सुत्रमें एक बचनका निर्देश कैसे किया गया ?

समाधान-यह कोई दोप नहीं, क्योंकि संख्याकी अपेक्षा बहुतसे भी जीवीके जातिकी विषक्षासे पकत्व थाया जाता है। अथया, 'सिम्छाइडी' यह पद बहुवननश ही निर्देश समझना चाहिए।

शंका-तो किर यहां यहुवचनकी विभाक्त क्यों नहीं पाई जाती है ?

समाधान—'आदि, मध्य और अन्तके वर्ण और स्वरका स्रोप हो जाता है, 'इस

प्राष्ट्रतस्याकरणके स्पातुसार यहुपचनकी विभक्तिका लोप हो गया है।

स्वस्थानस्यस्थान, वेदनासमुद्धात, कपायसमुद्धात, मारणान्तिकसमुद्धात और उपार पद्गत श्रीदारिकमिश्रकाययोगी मिष्यादृष्टि जीय सब लोकम रहते हैं। यहाँपर विहास्तरन स्थान और वैक्रियिकसमुद्धात ये दी पद नहीं होते हैं, क्योंकि, श्रीशारिकमिश्रकाययोगके हार इन दोनों पदोंका विरोध है।

ग्रंका - श्रीदारिकमिश्रकाययोगका वैक्षिप्रयिकसमुद्धात आदि पर्हों के साथ प्रेर गण

पाया जाता है, व्यतएव सुत्रमें 'कोघ' पदका निर्देश घटित नहीं होता है 🖁 समाधान- यह कोई दोष नहीं, पर्योक्ति, यहां श्रीदारिकमिश्रकाययोगमें विचमन स्यस्यान बादि पद्देश्ती प्रस्पणा बोघप्रस्पणाके तुस्य है, इसलिए बोघपना विरोधकी प्राव नहीं होता है।

औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और स्योगि केवली कितने धेवमें रहते हैं ! लोकके असंख्यातवें मागमें रहते हैं ॥ ३६ ॥ इस स्वमं पूर्व स्वतं 'औदारिकमिश्रकाययोग' इस पदकी अनुवृत्ति होती है।

•

जोतारियमिस्सकापजाणीत् सासणसम्मादिद्वी असंजदसम्मादिद्वी सजोगिकेवठी केवदि स्वेष १६ । सासणसम्मादिद्वी सत्थाण-वेष्ट्य-क्रायसमुद्याद्वयद्वा चदुण्यं कोमाणमसंवेजविद्वामां अद्वादः असंपेजविद्वामां अद्वादः असंपेजविद्वामां अद्वादः असंपेजविद्वामां अद्वादः असंपेजविद्वामां अद्वादः असंपेजविद्वामां असंपेजविद्वामां असंपेजविद्वामां असंवदः असंपेजविद्वामां असंवद्वामां असंवदः असंपेजविद्वामां असंवद्वामां असं

इसलिए एउके वर्षका इसकतार सम्बन्ध होता है — भौदारिकमिश्रकाययोगियों साताइन-सम्बन्धि, सर्वश्वसम्बन्धि और स्वयोगिकेसको कितने होत्र में दिन है हैं। स्वरधानस्वरधान वेदगासमुद्रात और क्लायसमुद्रामगत साताइनसम्बन्धि श्री वासामयको सादि चार सोक्षोंक सर्वक्थात्व सामग्रे और अद्दार्द्वापकी सर्वक्थातगुले क्षेत्रमें रहते हैं, क्लाँकि, बीद्यास्त्रिमस्वरायोगार्थे प्रस्तेपसके सर्वव्यात्वे मागमाल्य साताइनसम्बन्धियाँकी एरिका पापा जाना संत्रम है। यहांपर केल विदारणस्वरधान आदि पद नहीं होते हैं, क्योंकि, साताइन ग्रावरानके साय द्वा प्रशेषक पर्वापर विरोध है।

रवस्थानस्यस्थान, विद्रशासमुद्रात और कपायसमुद्रातयत भीदारिकसिधभाययोगी मसंयतसम्यद्वादि जीय सामान्यशोक मादि चार शोकों असंस्थानये मायमें और मनुष्य-क्षेत्रके संस्थानये मायमें रहते हैं, स्योकि, ये संस्थात राह्याययाण होते हैं।

र्यंदा-भीदारिकमिथकाययोगी सासाइनसम्यग्दाध और ससंयतसम्यग्दाध जीवोंके

द्यका—भादारकामधकाययामा सासाइनसम्यग्दाप्र भार मसयतसभ्यग्दाप्र आयोक द्रवरादचर क्यों नहीं कहा है

समापान—नहीं, व्यांकि, श्रीद्वारिकतिष्ठवाययोगमें स्थित जीवाँका पुत्रः श्रीद्वार रिक्तिप्रकावयोगियोंने वयराप नहीं होता है। सप्या, उपाय होता है, प्याँकि, सासाइन बीर अस्वितसायराहि गुणकामने साथ अक्रमते उपाय अन्यारिक प्रथम समयमें उसाय सङ्ग्राव पाया जाता है। दूसरी बात यह है कि क्यस्थानरवस्थान, वेदनासमुद्धान, स्थाप-समदात, केवलिसमदात स्थेर उपयाद हम याँव व्यवस्थानोंके स्वितिक मीदारिक्तिभक्ताप-

दिशेषाँध — यदांवर प्रथम तो श्रीवारिकमिधक वयोगियाँका श्रीवारिकमिधकाय-योगियाँके उपपादका भवाध धतकाया पथा। पुतः, मध्या करके श्रीवारिकमिधकाययोगि योगे उपपादका काम्या भी चतका दिया गया। य देन्त्री कर्ते परस्वर विरुद्ध की अर्थान होती हैं। किन्तु प्रयार्थकः उनसे क्रेर विराध नहीं हैं। भेद केवड कपन-देशीका है। जिसका स्पर्धकरण इस मकार है—प्रथम जो श्रीवारिकमिधकाययोगियाँका

घोगी जीवांका भवाव है।

छनखंडागमे जीवडाणं [१,१,१०

1067

केवली कवाडगदो विन्हं लोगाणमसंखेज्जदियागे, विरियलोगस्स संखेज्जदियामे, ग्राव ज्जादो असंखेज्जपुने ।

वेउन्वियकायजोगीसु मिच्छाइद्विषाहुिंड जाव असंजदसमािरिः! केवडि खेते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३७ ॥

पत्याङ स्तरा, स्टागस्स असस्यज्जादभाग ॥ ३७ ॥ यदस्यत्यो- सत्याणसत्याण-विद्वारविसत्याण-वेदण-कताप-वेउन्यियस्यापत्या निन्द्यदिद्वी निर्दे सेनायमसंरोजनिसाणे, तिरियकोगस्य संदेश्जदिमाणे, अपुरागी

भीद्गिरिकानिमकावयोगियों उपयादका अमाय बनलाया, उसका मिनाय वह है हि भीद्गिरिकानिमकाययोग नियंत्र और मनुष्याकी अपर्यास दशामें ही होना है। ही, अपर्याप्त कार्याप्त कार्याप्त दशामें ही होना है। ही, अपर्याप्त कार्याप्त काराप्त कार्याप्त कार्य कार

कार्य पाया आयमा १ १माण्य पाया आर्थमा १ १माण्य पाया आर्थमा १ १माण्य पाया आर्थमा १ १माण्य पाया किय गाँव आर्थमा १ अर्थमा १ १माण्य पाया सम्बद्धि श्रीवृद्धिकामित्रकाययोगियोक प्रवासका सङ्ग्रव हुव

र विविधानिय काययोशियों निष्याद्य गुण्यानमे लेकर अमेवननगर गुण्यान तक बार्चेक गुण्यानवर्ती बीच कितने धेवमें दश्ते हैं। सोवर्क अमेनना

साम्ये वर्ते हैं। २० () इक्ष स्ववा करे वहते हे— व्यवधानश्यवान, विशायस्ववशान, विद्वाराष्ट्री बचायसम्बद्धान सेन वितिधवनव्यात्मान वितिधवनाययोगी निव्यादि क्रीय सामानीती कार्त्त तोन बच्चीब सक्षया नवे सामाने, निवेश्टोबंड संक्यायों सामने और स्ति

असंरोजज्ञगुणे, पहाणीक्रयज्ञोहासियरासिचादो । सारणीतियसमुग्गादगदा तिण्हं लोगाणम-संरोज्जदिमारो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंरोज्जगुणे । एत्य ओवद्विय दहृष्यं । सासणादि-परूचणा जोपपरूचणाए तुष्छा, णवरि सन्वत्थ उववादो णिय ।

वेजन्वियमिस्सकायजोगीसु मिन्छादिट्टी सासणसम्मादिट्टी असं-जदसम्मादिट्टी केविंड खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ३८ ॥

एदस्सत्थो- वेउन्जियमिस्सकायज्ञामी मिच्छादिष्टी सत्याण वेदण कसायसमुग्यादः गदा तिण्हं सोमाणमसंखेजनिद्भागे, विश्वितामस्य संखेजनिद्भागे अङ्गारजादी असलेख-गुणे । सामणसम्मारिट्टी असंजदसम्मार्डी सत्थाण-वेदण-कसावसम्मग्दारम् चदुण्हे लोगाणमसंरोजकदिमागे, अङ्गार्ज्जादी असंरोज्जगुणे ।

आहारकायजोगीसु आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा केवडि खेते, लोगस्त असंखेउजदिभागे ॥ ३९ ॥

बसंद्यातमुणे होत्रमें रहते हैं, वर्षोक्, यहाँ विविधिकवाययोगके प्रकरणमें ज्योतिक देवराशिकी मधानता है । माध्यान्तिकसमुद्रातनत वैकिविककाययोगी भिष्यादि औप सामाग्यलेक मादि तीन लोकोंके असंब्यातमें भागमें भीर नरहोक तथा तियेखीक, इन दोनों होकाँसे असंद्यातगुणे शेवमें रहते हैं। यहांपर अपयतना सर्व जान हेना चाहिए। सामाइन-सायारहि बाहि होत तीन गुणस्थानयती यी. विकत्त्रययोगी जीवोंके स्वस्थानाहि पहोंडी रेश्यकरणा भी प्रशेषम्बरणानी तुल्य है। विशेषता केयल यह दे कि इन सभी गुणस्पानीन उपपाइपद नहीं होता है।

वैक्षिपिकमिश्रकाययोगियोंमे भिध्यादृष्टि, सासादनसम्परदृष्टि और असंयतसम्यन रदृष्टि गुणस्थानवर्ती जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं है लोकके असंख्यावरें भागमें रहते हैं ॥ ३८ ॥

इस त्वना मर्थ कहते हैं - सत्यान, घेदनारामुद्धात और करायसमुद्धातगत विकि. विक्रियकाययोगी मिध्यादृष्टि जीव सामान्यत्रोक सादि तीन होत्तीके ससंस्थात्य सामान् तिर्वरहोकको संक्यातव मागम भीर अवृत्रदेशियरे असंक्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। स्वस्थान, वेदनासमुद्रात श्रीट क्यायसमुद्रातमात सासाहनसम्बद्धारि श्रीर असंवतसम्बन्धि जीव दामाप्यत्रोक भारि चार छोत्रोंन असंस्थातर्थे आगर्भ और अश्वरहीयसे असंस्थातगुणे शेवमें

. आहारकायपोगियोंमें और आहारमिथकाययोगियोंमें प्रमचसंयत गुगस्मानवर्ती भीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? छोकके असंख्यावर्वे मागमें रहते हैं ॥ ३९ ॥

^=**११**0] एदस्स अत्यो - सत्याण-विद्यास्वदिसत्यागपरिणद्वमनसंत्रदा चरुचं हेकार संखेजजदिसारो, माणुसखेत्तस्स संखेजजदियागे । मारणतिवसमुग्वादगदा बहुचं लेकन

संखेजजित्माने, अहाइज्जादी असंखेजजगुणे । सेसपदाणि णित्य । आहानिस्त्रक जोसिणो पमत्तसंत्रदा सत्याणगदा चदुण्डं लोगाणममंखेजत्रदिमागे, माणुमनेतर मंग ज्जदिमागे ।

कस्महयकायजोगीसु मिन्छाइट्टी ओर्घ ॥ ४० ॥

सस्याण-वेदण-कसाय-उववादगदा कन्मइयकायजीगिमिन्छादिष्टिणो जेब सम् े सम्बद्धं होंति, तेण सम्बसोगे युत्ता। सासणसम्मादिद्धी असंजदसम्माइट्टी ओर्च ॥ ४१ ॥

एदे दो वि रासीओ जेण चढुण्डं छोमाणमसंखेजजदिमागे, अहुएजादी अर्जंड

गुणे खेरे अच्छंति, तेण सुरे ओयमिदि वर्ष । इस स्थका अर्थ कहते हैं— स्वस्थानस्वस्थान और विदारपन्खस्यान (न है पर्वाते परिणत आहारकाययोगी प्रमत्तसंयत सामान्यक्षेत्र आहि बार क्षेत्रीहे अवंश

मागमें भीर मानुषक्षेत्रके संव्यातचे आगमें रहते हैं। मारणान्तिकसमुद्रातगत आहार योगी सामान्यछोक आदि बार छोकोंके असंस्थातय मागमें और हदार ही पते असंस्थात क्षेत्रमें रहते हैं। आहारकाययोगी प्रमत्तसंयतके उक तीन यहाँके सिवाय रेए हाँ नहीं होते हैं। स्वस्थानगत आहारकिमश्रकाययोगी प्रमचलेयन सामान्यहोक आहि होरोंके सर्वव्यातये भागमें श्रीर मानुष्सेत्रके संव्यातये भागमें रहते हैं।

कार्मणकाययोगियोंने निध्यादृष्टि जीव ओपानिध्यादृष्टिके समान सर्वे हो रहते हैं ॥ ४० ॥

स्यस्थान, वेदनासमुद्धात, क्यायसमुद्धात और उपवाद, इत पदाँको प्रज हैं. काययोगी निष्याहोंदे जीव चूंकि सर्वत्र सर्वकालमें पाये जाते हैं, इसलिए वे सर्वहोंहरें हैं. देखा कहा गया है।

कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दाप्ट और असंयतसम्यग्दाप्ट जीव जोपके स

शोरके असंख्यावें मागमें रहते हैं ॥ ४१ ॥ रन दोनां गुणस्थानीको प्राप्त कार्मणकाययेगी राशियां स्टिंह सामागरी है चारा छोडोक मसंक्यातव मानम और अवाददीवस असंक्यातगुणे सेत्रमें रहती हैं। ही

रात्रमें 'ओध ' देशा पद कहा गया है।

सगममेदं सुनं ।

वेदाणुगादेण इत्यिवेद-पुरिसवेदेसु मिन्छाइटिप्पहुाडि जाव आणि एवं जोगमगणा समता ।

यही केवडि सेते, होगस्स असंखेन्नदिभागे'॥ ४३॥ पदस्स अत्या- सत्याणसत्याण-विद्वास्वितसत्याण-वेदण-कताय-वेउण्यसमुग्याद-ादा इतियवदिमिच्छार्ह्यं विष्टं लोगाणमसंवेजनिद्मार्गे, विरियलोगस्स संरोजादिमार्गे, हिम्बजारो अतंतिकत्रमुणे, पहाणीकरदेनित्यिवेद्वातिचादा । भारणीविय-उपग्रह्मारा विद्

वाणमसंत्रेज्जादेशाय णरः विरियलांबाहितो असंवेज्ज्याणे । यस्य जावहृत्या देवीपराष्टा । ाणसम्माहिष्युहि जाव अविधिह वि जोषमंगी ! मधरे असंजद्गसमाहिहिहिहउतारो च । पमचसंजदे ण हॉनि तेजाहारा । खरणणसरमाण-विहारविहारमाण-वेदण कमाप-

कामिणकापयांची सयोगिकेवली मगवान् किनने धेवमें रहते हैं। छोकके असंख्यात यह मागोंमें और सर्वजीयमें रहते हैं ॥ ४२॥

इसमबार योगमार्गणा समान्त हुई।

वेदमार्गणाके अनुवादसे सीवेदी और पुरुषविदेशोंमें मिण्याराष्टि गुणवानमें लेकर प्रानिद्वविद्युवास्थान वकः प्रत्येकः गुणस्थानवर्ती सीव कितने क्षेत्रस्य रहते हैं। होहकः

देश राम्म वर्ष हरते हैं - स्वरचानस्वरचान, विदारचारवरचान, वेश्नासप्रस्थान रायतमुद्द्यात श्रीट वैक्रिविकतमुद्द्यातम्बद्धानः स्थादवाद्वरवानः, वद्गाव्याद्वर्थानः, वद्गावयाद्वर्थानः, वद्गावयाद्वर्थानः, वद्याद्वर्थानः, वद्याद्वर्यः, वद्याद्वर्याद्वर्यस्वर्याद्वर्यस्व ात होहाँ सर्वच्यातम् सामात्रे, निर्मालेकः संस्थातम् सामान् वास्त्राच्याः साम् व्यातामुण श्रेत्रमें रहते हैं, वर्षावि, वहांवर हेवगातिसामधी कांवरताहरी मेमानम है। मारणातिक त्याद्वाम और उपशहराम कार्विश विश्वादिक सामावकोक सार्वि तीन विश्वीक महंत्रपातम् भागम् और महत्वेक तथा विश्वताकः हम दोनी होत्ति सहस्राताम् व रेडिया रहते हैं। पहाँचर अववनीया वेचों हे जायहेब स्थान है। सालाव्यक्तवावाची भवत प्रति है। पहारत अरुवावा ववाह बामस्वक समाव है। सामाविकार है। प्रति कार्यावकार विवाद समाविकार समाविकार समाविकार समाविकार समाविकार सम्बद्धी स्विता स्थाप सम्बद्धी स्थापन प्राप्तान्त एकः व्यावश्राचकत्वः प्रारकाशम्बकः क्यावनः आधारः वत् व व्यक्तः समानः स्वत्रम् सर्वव्यामयां साग्रहः। विद्यापः सात्र वद्वः है कि स्वयम्बद्धानः परिष्ठि गुणारमानमं स्विविदियोक अपणारपङ् नहीं होना है। तथा मनस्वस्थत गुण्डस्थनमे

र वेदानुबादन क्षांत्रद्वाना विश्वास्थयन् नेहांनावादर-तन्त्रं क्षात्रावन्द्वन्त् । हः हः ।

[2, 2, 11.

वेडन्वियसमुन्यादगदा पुरिसवेद-मिन्छारिट्टी तिग्हं लोगाणमसंखेण्वरिमाने, तिभिनः रोगस्य संयोज्ज्ञदिमागे, अङ्गाइज्जादे। असंयोज्ज्ञगुणे खेचे अन्त्रंति । मार्गितरः सार् गरा निष्टं सामानमसंखन्बिरमाम, पर-विश्यितामहिंवा असंखेत्रमुगे । सामग्रमाहिंदैः पद्दि जल अभिपद्धि उत्तमामग्रम्यामा चि ओधमंगी ।

णबुंसयवेदेसु मिच्छादिहिण्हुडि जाव आणियद्वि ति ओपं ॥११॥

मन्यायमन्याय-वेदन-कमाय-मार्गिनिय-उत्रवादगृहण्यंमयवेद्गिमन्यादिशे हान नीद । विहास्वदिमत्याम-वेउनियममुख्यादगदा तिर्व्ह सोगाणमसंशेखदिमाँगे, तिर्वतः र्शं नाम्य मंगे अदिभागे । शवरि वेजन्यियमपुरवादगदा निरियले गरम अमेरी अदिशामे । क्रारक है। असंबेरकपुरी खेते जेग अच्छेति तेम ओपमिदि पहेरे । मानवसामः शिक्टिपर्दे बार अमियही चि एदेभि पि परुवता औषतुल्ला वि औपनिदि इते।

रिकाममूद्राल भीतः मादारकणमृद्रातः सद्धिकेति है। स्वस्थानस्वस्थान, विद्रातसन्तर्यस् बहुम मनुद्रान, कक्त्यममुद्रान भी,र वैजिधिकसमुदानकी आग हुए पुरुष्वेही मिध्याहि हैं कार करतेल आहि तीन मेरशेंके मध्यमानुष मागर्थ, निर्याणिक संविधानुष मागर्थ और मार्गेरीपने मर्गभागाने शेवमें रहते हैं। जारणानिकसमुदात भीर क्याएको मार्ग कुरत ही दिश्याचार जीव समान्य लोक सादि तीत लोकांके समावयात्र सामसे, बरवेच कर्ण रिक्टररे कर्ण कर्ण क्यार महत्वे के स्वते हैं । सामानुस्तर प्राप्त प्राप्त मानिय करिकृतिकाम हारामक क्षेत्र मित्रुशिकरण शहर ग्रामश्राम तक पुरासी क्रीकी राक्यानारि करीया क्षेत्र भोरतीताची समाम है।

बर्नुंबद्देशी अतिमें निय्यादृष्टि गुणस्थानंग लेकर अनिगृणिकरण गुणस्थन रह अभे ह गुण्यानवर्धी जी गोहा क्षेत्र जोत्रधेत्रके समान दे ॥ ४४ ॥

क्ष्यक्षात्राम् अर्थान्यस्य । स्वत्राम् । स्वत्राम् अर्थान्यसम्बद्धाः स्वत्राम् स्वत्राम् स्वत्राम् स्वत्राम् बरमान, इन करोंदी ज्ञान्त सर्वनवेदरी मिध्यानीय और सार्व सामग्री रहन है। रिशाननन बचाय कीन वैकिटियमामूबकात्वतः वि वी बीच सामान्यतिकः आदि नीत लीकोकं सर्वनार्यः कामते की महिन्देरके व समान है समान गर्य है हिन्देर बाम सह है कि पिनिवसम्बन कर क्यूंपकडेटी विकास है। और रिकेरिश के अर्थनवार्ती आगर्ते हरेते हैं। मंत्रा इस रे वै वरी थे काल बहुमदोदी जिल्लाली बेच अहि आहिंदीयोग असेव्यानमूत्र सेवर्ने सार्वे इस्टेंटर स्टूडे बरूर स्टर ' बाद ' रह पर बॉर्य है। आगा है। मामान्यमध्यम् भूव क्यानके रेपण कांत्रपुण्डिण्य गुण्यानात सद दी इन सपुष्यपेती प्रीगीर्थ केपाउण्य के क्योंदिर के बदनारक के मृत्य है, इसमा और मुक्ती र भी व र मेरा नह नहीं है। १, ३, ४७.] खेत्ताणुगमे कसायमगाणाखेतपरूषणं

[? **?** 3

णवरि पमने वेजाहारवर्द णविव । अपगदवेदएसु अणियट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवली केवडि सेचे, नोगमा कार्यकेटनिकार्ये ॥ २५ ॥

लोगस्स असंसेज्जिदिभागे ॥ ४५ ॥ एदस्स अस्यो- चटुण्डं लोगाणमसंसेज्जिदिभागे, माणुससेवस्स संसेज्जिदिमागे

सरयाणस्या अच्छीत । मारणितिपसमुग्यादगदा उनसामगा चदुण्दं स्रोगाणमसंखिज्जदि-मागे, अष्टाइज्जादो असंखेज्ज्मुणे अच्छीत नि बुचं होदि ।

सजोगिकेवली ओधं ॥ ४६ ॥

पुरुषं परुविदरयमिदं सुन्तमिदि प्रथ एदस्स अस्यो व युरुवदे ।

एवं वेदममर्गा सम्बा।

कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईस

मिच्छादिट्टी ओधं ॥ ४७ ॥ चदुकसार्यमच्छादिष्टणे सत्याणसत्याण-वेदण-कसाय-मार्लावेय-उत्रवादगदा ओध-

चिराप बात यह दे कि प्रमत्तनंत्रत गुणस्थानमें नर्नुतक्षेत्रियोंके तैज्ञससमुद्धात और माहारकतमृद्यान, ये दे। पद नहीं होते हैं।

अपगतवेदी जीवोंमें अनिष्ठिकरण गुणस्थानके अवेदमायमे हेकर अपेति. फेरही गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव किवने धेयमें रहते हैं है होहके असंस्थातवें मागमें रहते हैं 11 ४५ ॥

हत स्वका मधे करते हैं— स्वस्थानपद्गत अपपतवेदी जीय सामाप्यतेष्ठ करें, चार छोड़ोंके मसंवपातये माममें और मानुष्रोपके संक्षातवे भागमें रहते हैं। मार्चान्त्रक सनुवातको माप्त उपसामक औप सामाप्यतेक सादि चारों हो स्वेके सरोक्यातवें कर्यों

भड़ाईद्वापित मसंस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, वेसा कहा गया है। अपगादनेदी सपेगियेनटशिका क्षेत्र ओपके समान है ॥ ६६॥

इस स्पन्न अर्थ पदले कहा जा सुका है, इसलिय यहाँ पर इनक् कई कुछ कहा कहा जाता है। इस मनार पेरमार्गण समास हो।

क्षपायमार्गणाके अनुवादमे कोएक्षपायी, मानकपायी, नारकार क्रि होत-क्षपायी जीवोंमें मिथ्यारिष्टियोंका क्षेत्र ओपके समान सर्वत्रोह है हु हु न

स्परधानस्यस्थान, पदनासमुद्धान, श्रयायसमुद्धान, इत्रास्त्राच्या कीर हर्

t xx अपगारवेदाती च सामा-योगः हेपम् । स. वि. हे, ट

मिन्छादिद्वीहि सत्याणसत्याण-वेदण-कसाय-मारणतिय-उननादगदेहि सन्वलोगीन्ह अन्लेष अणुहरंति । विहारविद्सत्याण-वेउन्वियससुरुवादगदा वि तिण्हं लोगाणमसंसेज्जेदिगणे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिमागे, अड्डाइज्जादी असंखेज्जगुणे खेत्ते अच्छणं पंडि अणुरति। तदे। चदुकसायमिच्छादिहिणो दव्बहियणएण ओघचमुबलमंते ।

सासणसम्मादिष्टिपहुडि जाव अणियद्वि ति केवडि खेते, होगस असंबेज्जदिभागे ।। ४८ ॥

एरथ सुचे ओघमिदि किण्ण बुचं र ण एस दोसी, दन्यहियनयावलंगनामारी। सो वि किमिदि णावलंभिदो १ पज्जबहियसिस्साणुग्गहर्द्ध । जिंद एवं, तो दब्रहियसिस

अगणुरगहिदा होति १ ण, पुन्तुत्तसुत्तेण मिच्छादिद्विपडियद्वेण दन्बद्वियसिरसाणम्य पद्गत चारों कवायवाले मिण्यादि जीव, स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्धात, क्यायसमुद्रान, मारणान्तिकसमुद्धात और उपपाद पद्गत आधामध्यादृष्टियोंके साथ सर्थ लोकमें मयस्थान द्वारा भनुकरण करते हैं। पिद्वारयन्त्वस्थान और यैक्षियिकसमुद्रातगत चारी क्रावया मिष्पादृष्टि जीय मी सामान्यलोक मादि तीन लोकोंके असंस्थातय भागम, तियंशिक

संस्थात्व मागमें भीर अदार्द्धायसे असंस्थातगुणे क्षेत्रमें रहनेकी अपेक्षा, विद्वारवास्त्रसान और पैकिपिकसमुद्धातगत श्रोधमित्र्यादृष्टियाँके क्षेत्रका अनुकरण करते हूं, इस्रिय वार्ण ब पावपाले मिथ्यादृष्टि जीव द्रय्याधिकनयकी अवेशा भोवक्षेत्रताको प्राप्त होते हैं। सामादनसम्पग्दि गुणस्थानमे लेकर अनिष्टचिकरण गुणस्थान तक प्रत्ये

गुनान्यानवर्ती चारों क्यायवाले जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? होकके असंस्वात मांगमें रहते हैं ॥ ४८ ॥ र्शुद्धा — इस गुत्रमें 'शिकके सक्षेत्रपतियें भागमें' इतने के स्थानपर 'सोष' स्था

द्वी पर क्यों नहीं कहा ?

समाधानु—यह कोई देश नहीं, क्योंकि, यहाँपर द्रव्याधिकनयका नवनम महाँ किया गया है।

द्वैद्या-उस द्रव्याधिकनयका सवलक्ष्म पूर्वी नहीं किया गया है

समावान — पर्यायार्थिकनयी शियोंका अनुब्रह करनेके लिए यहां द्रायार्थिकारण द्रश्च नहीं दिया गया।

र्ग्नहा---यदि बेसा है, में। द्रष्याधिकनयी शिष्य इस स्वते अनुसूरीन नी वि

मुमापान -वर्षी, वर्गीक, मिन्याद्यश्योंके शेवते प्रतिवद्य पूर्योतः सूचते द्रणारित

ত ক্ৰম্বত্ৰত্ব ক্ৰিব্যৱস্থাক্ত্ৰেক্ত জীৱত্ত্ব কৰি বিশ্বত্ত্বাত ক্ৰিক্ত इप्राप्तीत हेप्या है, जि. १ ८.

माहकरणा । एदेण दन्य-पञ्जबद्धियणपपञ्जापशिणद्वीवाणुमाहकारिणो जिलाः द्दि जाणाविदं । सत्याणसत्याच-विहारविह्मरथाण-वेदण-स्वाया-वेद्विध्य-मारणंविय-उववादगद-सासणसम्मादिष्ट्व-असंबदसम्मादिष्णो पदण्डं लेगाणपासंखेळादिमाने, अद्दुद्वजादे असंदिक-ग्रुणे खेले अच्छीत । ' लोगस्स असंखेळादिमाने ' दृदि सुने वृक्षं, तेण माणुसहेत्यस्स वि असंखेटजदिमाने पदेहि देश्च्यं, लोगवं पाढे विस्तामावादो है ण पस दोसे। होदि पस दोसो, जिद पञ्जबद्धियपरिश्च्य एस लोगसदे द्विदेश क्रित्त इच्छोदणपमक्वेतिकण द्विद्वचादे। सञ्चलेगाममृदस्स असंबस्स वाचगो, तेण ' लोगस्स असंखेळादिमाने ' दृदि सुच्चपणे ण पिरुजदे । लोदं पर्यं, गो पञ्जबद्धियणपमक्वेतिकण द्विद्वस्तालायपण् सुचेण असंबद्धं होदि वि है ल, तिसे, स्वी प्रज्ञित्वदेश असावादेश । विस्तालिनिद्वसायण-होतोगों जेण सुम्बिम बुने। तेण लेगस्स अव्यवमृद्वच्यादि लोगे अस्तिद्व वं वस्तानं तय्या सुचिष्ठकानिदे । एसं सम्मानिन्छाद्वीणं । च्यरि सार्ग्विट-उदवादपूर्वं परिक्ष

मर्था शिष्योंका अनुप्रद कर ही दिया गया है। इस विवेचनसे यह वास बतलाई वह कि जिन भववान झ्ट्यार्थिक और पूर्या-

मार्थित, इन दोनों नयस्वरुप पर्वायांक्षे परिणत जीवांके अनुबह करतेवाले होने हैं।

स्वस्थानस्यस्थान, विद्वारयन्थस्यान, वेदनासमुद्धात, क्यापसमुद्धात, विद्विधिक-समुद्धार, मारणारितकामुद्धात श्रीर कथार, इन पर्शको साथ्य व्यारी कथायपाने सासाहन-स्वयन्ति श्रीर कार्मयमसम्बद्धात श्रीय सामाग्यशोक श्राहि वार रशेकोंके समेक्यातेर्थे सामा और अमूर्विधायेले सर्वयमताको सम्बद्ध वहते हैं।

हुंका — 'लोकके असंव्यातचे थावमें ' दनना ही यह खुमने कहा है, इसतिय 'मानुस्त्रेशके भी अलंक्यावर्व आगने एके हैं 'रेल्स अपे दोना चारिए, क्योंसे, लेक्शकरी कोश्ता सामाग्यलेक, अभेलेक, धर्मालेक, विवेश्लेक और अनुष्यलेक, इन पांचे ही कोशने विशेषताका अभाव है, अर्थान सामानता है है

समापान-धद कोई क्षेत्र नहीं है। यह दोल होना, विह केवल वयाँगार्धकनवड़ा ही माध्य केकर वह शोकदावर विधन शोना। किन्तु यह शोकदावर हुप्यार्थकनवड़ा मक-सन्दन करते शिवत है, अत्यव शकेट सर्थेशोको समूद्ध यावद है, इसलिर 'से को सर्वश्रावर्ष मागमें 'इस मकारका यह रहनवान विरोधकी माध्य मही होना है।

र्गुक्ता-- पदि देला है, तो पर्यायाधिकत्रवना अवश्यक बरके विधन व्यावमान यसक सुत्रोक साथ असंबद्ध दोगा !

समापान - नहीं, वयाँकि, विशेषके व्यक्तिकि जातिक समाव पाया जाना है। चुंकि, विशेषके माहितिक स्व साम्यहोक सहस्य कहा है. इस्तिक स्वेषक स्वयक्ष्य अपनित साहि चार होकोंका साम्रय करके की व्याक्शन किया गया है, यह सूके कि नहीं है, और तु संस्क है।

225 7

राखंडरमे जीवानं

एवं मंद्रशनंदर्श्यं । प्रवरि उपबादपदं पत्थि । सेमगुनद्वाणानि चरुषं हेगात्स्मे क्वरिकार, मानुक्षेत्रस्य वैद्येक्वदिभागे । पारि मार्गितियममुखार्गरा कानुक्षेत्रे उपयोग्याचे होते।

केंद्रहमान्तिनपरपापद्रवन्तरस्तं भगरि-पवरि विनेसी. लोभकसाईसु मुहुमसांपराह्यमुद्धिनंतरा अनन

स्ता नेवडि सेते. लोगस्त असंकेड्जिंदिभागे ॥ ३९ ॥

रहस्य सुवस्य अन्यो सुपया ।

अक्साईमु नदुद्दागमीर्घ ॥ ५०॥

राज्य द्वार्णकरे गुर्वेद्वास्त्राचमीः "अवसीयु प्रवृताः सन्दाः समुद्रारिकति वीती हीर क्यापाइ । यह सामनामा मामा, बाहेशी देश, भीषतेना मेन इति । कप्यार्गः

दृशीहक रावे कार्य कवायवाडि सामानिवामाद्रविमीवा क्षेत्र प्राप्तना मादिए। विव कल नव है कि नव निर्माण मानलारिक नामुवाल और बयाब , ये वेश पर नहीं हो है हैं। हर्ष करण कर करणार है अवनार्शन श्रीका बेट होता है। विशेषना बड है कि इनेंड शाना कत्त नर्ग है। इ.व. गुण्य शास्त्रतीं नाली क्यायपाती प्रश्नित सामान्यतीत माहिनाति। का अमानक अन्यत केंग्र अनुकाष अन्यति आसी बहुत है। शिराम पर है। क्रमण्या रक्ष्यनुष्ट तराणः चार्यः क्याध्यादि संयतः सीव सानुवस्त्रपदि सर्ववानगुर्व संय *** * *

क्या सा अव राजका जिले बना बन गांचीत दिनए बचन गांच बचने हैं-िर्देश काल वह के कि लेक्सवाधी भी तीमें सहमयाम्यमविक्शुविभवत अवि

बील भूपका अप विशेष क्षेत्रमें नहीं हैं है लेखित असंख्यातहें बासमें रहते हैं ॥ ४९ व

इन्द्रसम्बद्धाः व्योगसम्बद्धाः

करण के कि उत्ताकतरण्या अर्थंद भागे गुलसानीहा **धेर** प्रेसी 4723 : 54 4

दरापर (क्षातः जान सुनकात्रवाद सामग्रहे, महीहर, १ अववदार्व मेरण्डी द्वार्त पत्र पत्र व रहर हे । प्रतास्थाप है । प्रेत रक्षाणा प्रतास सर्वाण भारतक के राज्य तर्मा अन्यस्था भी स्थापन के साथ के स्थापन के स्थापन के साथ के स्थापन के साथ के साथ के साथ के सा a to proced to come.

देश — प्रताबण देवा इत्रहालको है। केन्द्र इत्रहानकका व सुवन्त्रको प्रव

कमाओ अक्रमाओ ? ण, भावकभाषामावं पेक्सिट्ग तस्स वि अक्रप्रायचित्रद्वीदो । पहु-चीहिनमानं कार्न 'अकनाएनु' वि विदेशी किणा करी ? ण, पडनयपडिसेधे करे कसाय-विरहिद्यंभादीले वि अक्रमायचण्यमंगादो । दृष्यपश्चिमेहे कहे सी दोसी ज पावदे, एदेण गावरण ओसारिदपमञ्जपिक्षेत्रेहचादी । कस्म णयस्य एस वनहारी 🎖 सदद्वसंबंधस्य भिच्चतमिन्छंतमइगयस्म । 'अशमदेवेद्षसु 'ति दम्बभिदेसी वि एवं चेव वक्छाणे-इच्यो । सेमं सुगमं ।

६वं कसायनग्रणा समत्ता ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणीसु मिच्छादिही ઓ ઘંા પશા

एसा विद्वारणे सचमी, महि-सुदअण्याणीणं मिच्छादिष्टिवदिरिचाणं सासवालं वि

षाय केसे कहा है

t. t. 41. T

समाधान - नहीं, क्योंकि, बहांपर मायकपायके महावकी विवशासि उपज्ञानकराय गुणस्थातक भी भक्तवाययनेकी लिदि हो जाती है।

र्राका-'मर्टा दे कथाय जिनके' येसा बहुधीहि समास करके 'अहुपायाँमें 'हार

मकारका निर्देश क्यी नहीं किया है

समाधान-महीं, ववाँकि, वर्षावके प्रतिवेध कर देनेपर करायके विरहित स्त्रभा-दिकाँके भी भन्यथा भक्तपायताका प्रसंग प्राप्त हो जायगा । किन्तु, द्रव्यके प्रतिपेश करनेपर यह भौतमसंग दोप मही मान्त होता है, वयोंकि, इसी घापक (व्याय) के बारा भार हर होपप्रसंगका प्रतिपेध कर दिया गया।

श्रेषा —यह उक्त व्यवहार किस नवका है है

समाधान-हाण भार भर्धके याद्ययाचनसम्बन्धको भित्य माननेवाले शाहनयका यह व्ययदार है।

येदमार्गणाके अन्तमें दिये हुए (सं. ४५ वं) खुत्रके "अपगतयेदियोसे " इस प्रके ष्ट्रायुनिर्देशका सी इसी प्रकारसे व्याच्यान करना खादिए। दीप कथन समस है।

इस प्रकार कथायमार्गणा समाप्त हुई।

शानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रवाज्ञानियोंमें मिथ्याद्दष्टियोंका क्षेत्र ओघके समान सर्वहोक है ॥ ५१ ॥

यहां पर 'मत्यद्वानी और शताज्ञानियोंमें ' यह सप्तमी विभक्ति निर्दारणके अर्थमें दे. क्योंकि, भिष्यारदि गुणस्थानले व्यतिरिक सासादनगुणस्थानवर्ती भी मत्यकानी और

र मानावनादेन मत्पद्यानिमुक्तामानिनां मिध्यादाविद्यातावनसम्बद्धांनां क्षामान्यांनां क्षेत्रन् । स. वि. १.८.

११८]

संमवादो । सेसं पुन्वं पदुष्पादिदमिदि पुन्युत्तद्वावधारिदसिस्साणुरीहेण ण बुन्वदे ।

सासणसम्मादिङ्घी ओघं ॥ ५२ ॥

एरच पुन्नसुत्तादो मदि-सुदअप्णाणीसु ति अणुबहृदे ? कर्घ णिन्नेपणस्य सन-शर्गा सहस्स अविणद्वरुवेण अणुवती १ ण एस दोसी, एदस्स सुनस्य अवगवनाते द्विदअम्मासहस्स पुन्तसहेग समाणत्तमनेक्सिय सो चेत्र एसी हिंदे परनवाहिग्मल-वरचयशिमिचस्स अणुवचिविरोहामावादो । ससो गदहो ।

विभंगण्णाणीसु मिन्छादिड्डी सासणसम्मादिट्टी केविंड सेते,

लोगस्य असंखेज्जदिभागे ॥ ५३ ॥

एदस्सत्यो- विमंगण्याणी मिच्छाइडी सत्यागसत्याण विहास्त्रदिसत्याग नेतन हमाप-वेउन्वियममुम्पादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेजजदिभागे, विश्विलागस्त संशेग्जी मान, अद्वारम्बादी असरीज्जपुणे। छुदी एदं १ पहाणीकदपञ्जसदेवरासिनादी। मार्गितिः

भुनाबानी पाय जाने हैं। दीन व्यावयान पहले कर भाष है, मतः पूर्वीक अर्थके अप्रमाण बर्बबान शियोंके अनुरोधने चुनः नहीं कहते हैं।

मानादनमुम्पम्बटि गुणस्थानवर्धी मत्यज्ञानी और श्रुवाज्ञानियाका क्षेत्र श्रेपः शानादनगरपारविके समान सीकका असंख्यातमा भाग है ॥ ५२ ॥

दर्श पर पूर्वमूत्रने ' अति धुनावानियोमें ' इतने पदधी अनुरूति होती है !

दंदा - अवेगन भीर शण-शयी बाध्दती अविनयसप्ते अनुपृत्ति केने ही सकति ! मुमापान-चर काई दीन महीं, क्योंकि, इस श्वके समयपकासे शिवन मन कारको पूर्व राज्यक माथ नमानना देनकर 'यह यही है' इस प्रशास्क प्रयुत्रिशानी

क्रवर्गनेहें दि भक्तमून शास्त्री भन्त्रील होतेमें काई विरोध नहीं है।

देख स्वदा भये गर्ड दिया जा चुदा है। विभाग्न नियोंमें निष्यादृष्टि और मानाइनमस्यादृष्टि गुणस्यान शी और किरी हैयमें गरी हैं ! सोहते अमेस्यात्वे मार्गाम रहते हैं ॥ ५३॥

इम स्वदा वर्ष कहेन हैं-स्परकातन्त्रस्थात, विहारवन्त्रस्थात, वेदतामनुहान, बच्चसमुद्रात में र वैद्धिविद्यम्यात्रहे। बाद्य विमीवज्ञानी विश्वादिए जीव सामान्य रेड कारि ते व दोशोद सम्बद्धात्र वागमें, नियंग्डेक्ट्रेड संब्यातमें भागमें सीर भारित्ये क्षतं पराज्याचे धेराचे रहते हैं।

देश-स्वय्यामादि वदमन विसंगतानी सिस्वादि निवेग्टोरोड संस्थानी स्वा क्षेत्र अञ्चलकारी असंस्थानमूजि क्षेत्रज्ञ कृती रहते हैं है

e feant fam fair C'emmenengefent d'armbolegame gw. fe. t. e.

समुत्पादगदा एवं चेव । णत्रिः विश्विक्षोतादो असंसेडजमुगे सि वर्षकः । उत्रवादपर्द णरिष । सासणसम्मादिही सञ्जेहि वि परेहि चटुण्हं लोगाणमन्तेराज्जदिमाने, अहुाह्झादो असंस्वरज्जाणे । एरम् वि उपवादो णरिख ।

आभिणियोहिय-सुद-ओहिणाणीसु असंजदसम्मादिट्टिपहुडि जाव सीणकसायवीदरागछदुमत्या केवडि खेते, लोगस्स असंसेज्जिदि-मार्ग ॥ ५४॥

पर्द गुर्च पुत्रत्यमिदि पुणी ण एदस्त अत्यो बुघदे ।

मणपञ्जवणाणीसु पमत्तसंजदणहुडि जाव खीणकसायवीदरागः दृगस्या छोगस्य असंखेज्जदिभागे ॥ ५५ ॥

समाधान--चृकि, यहांवर वर्षांव्य देखरादियाँ प्रधानता है, हसकिय व्यवस्थानहि जिंगे प्राप्त थे देख तिर्घण्डोकके संख्याताँ आगामें और मतुष्यकोकते असंख्यानगुणे संवर्ष ते हैं।

मारणागिकतामुद्ध तमत विभागवानियों का होत्र औ इची प्रकार ही है। विशेषना का तस्त्री बहना चाहित कि वे तिवंदानों के सर्वेद्धानानुने बेक्सी पहले हैं। विभान कि विभाग के जीविक उपयादयन मही होता है, विभाग कि विभाग के उपयादयन मही होता है, विभाग कराय होता है)। विभागवानी सामाद्रस्त्राच्या होता है। विभाग कराय होता है। विभाग का त्रावानिया का त्रावानि

आमितियोधिकमान, श्रुतमान और अवधिकानियोगि अनेपत्यव्यक्ति गुक्तरा-उत्तर श्रीणवरापयीवरागछसम्य गुक्तमान सत्र प्रत्येक गुक्तमानवर्धी और किन्ने रहते हैं है लोकन अनंस्थानमें भागमें रहते हैं ॥ ५४ ॥

इस रहबता भार्य पराने कर दिया गया है, इसानेय तुनः इसका भावे वरी कहने हैं। मनः प्रियमानियों में प्रमक्तंपत गुक्तशानमें लेकर श्रीयकापवितासकाय ।न तक प्रत्येक सुक्रवयानवर्ती जीव लोकके असंस्थातके मारामें रहते हैं॥ ५५॥

१ xx इब वर्षकावियां च प्रव्याधीयां क्षीत्रकारातायां x x सन्दान्तीत क्षेत्रह स्था हि न, त-



र काविनिशेषिकमुत्तविकारिकारकस्त्रक्ष्यस्य स्थानी विश्ववयाणानामा २००४ सामानेषा वि १,८०

१२०1 स्टब्लंडागमं जीवद्राण - 1

किमहं एदेसु तीसु सुचेसु पञ्जयणयदेसणा १ बहुण जीवाणमणुमाहरू । द्वारी एहिंतो पज्जबडियजीवाण बहुत्तं कघमवगम्मदे ? ण, संगहरुद्जीवहिंती बहुतं नितर रुटजीवाणस्वलंभादो । सेसमवँगदर्ह ।

केवलणाणीसु सजोगिकेवली ओघं'॥ ५६ ॥

एत्य किमहे दन्बहियणुत्रो अवलीयदो ? ण, पज्जवहियणयावलेयण कारणामा पञ्जवद्वियणमा अवलंबिजदे विसेसपदुष्पायणहुं, ण च एत्य की वि विसेसी अति। । च पुन्यमुत्तेहि विपहिचारो, पारेकं गुणहाणेसु तत्य णाणभेदोवलंभारी । सेसं सुगर्म।

अजोगिकेवली ओवं ॥ ५७ ॥

एमा गरम परेमु कत्य बहदे हैं सेसपदसंभवाभागादी सत्याले परे । गुँका-इन ममी कहे गए तीनों स्त्रोमें पर्याप्यिकनयका उपदेश किस विर तिया गया है है

गमापान – यहुनसे जीवोंके धनुमद करनेके लिए वर्षावाधिकनयका उपरेश ^{(त्रा} राष्ट्रा है ।

र्शहा — प्रश्वाधिकमधी जीवाँसे पर्यावाधिकमयवाले जीव बहुत हैं, वर केने काना काना है है

गमापान - नहीं, वर्षोकि, संक्षेपरचिवाले जीवींसे विलाररुविवाले जीव वर्ष याँच जाते हैं।

होत गुवदा अर्थ हो भवगत ही है।

केरनक्कानियोंमें मयोगिकेवलीका क्षेत्र ओपक्षेत्रके समान है ॥ ५६ ॥

रीका — इस सुक्रमें किसलिए दूरशार्थिकमयका भगलावन किया गया है है

ममायान - नहीं, क्योंकि, पर्यायाधिकतथके अवस्त्रवन करनेका वहां के हैं कार क्रों है। वर्षावर्ष्यक्रमवका अवलक्ष्यम विदोष प्रतिपात्मके क्षिप क्रिया ज्ञाता है। हिंगू बर्टचर बेर्ड मी विरायना नहीं है, (जिसके कि यतलोनेके लिए पर्यापिकनवड़) मी हारव दिया जाय)। भेर म यहांपर पूर्व न्यूयो (जो कि पर्यापार्थ के श्री की हैं च हैं। भारत है, क्यों है, बन गुणक्यानों में से प्रोपक गुणक्यानों बान में पाप जना है।

अर्था-प्रदेशका सम्वान औषके समान लोकके अर्थन्त्यानवे साममें रहेने हैं हैं हैं

रीहा —ये बयोगिक्यमी मगयान स्वन्यानाहि मी वर्षेत्रिम हिरा वर्षे रहते हैं? हरायान - अयो गेववणीक विद्यानगरप्रश्यातादि शैन महोप पर संतर्भ है है

हे इद्दर्शनसम्बद्धान प्रत्ये १९ते हैं।

em nigregelier gerint zweinleich freier fie. Dies Lung bereifter auer eint wierenfie freg be. fr. bid. उप्पणपदेसो पर गामो देसो वा सत्पाणं, तस्त वि उपपार्तसणादो । ण च ममेदंपुद्धीए पिट्टमिट्टपदेसो सत्याणं, जंजीगिन्हि सीणमेहिन्द ममेदंपुद्धीए जमावादो वि ! ण एस देसी, बीदगाराणं अप्यो। अध्विदयदेससेव सत्याणवयरसादो । ण सरागाणमेस णाजो, तत्य ममेदंगावसंवयदे । अपवा पस चेव णाजो सन्वरण पेप्पउ, विरोहामावादी । जाद पर सत्याणस्त अत्यो सुरूपिट, तो सासणस्तरमाणकोसणस्त अह चोदसमामा पांचीत वि चे ण, क्रीसणे ममेदंपुट्टिपटिगिटिस्स सस्सामिसंवर्षण वारिदस्त चेव सत्याणववदेन सादी । सेदे सरामं ।

एवं गाणंपरगणमां समसा ।

संजमाणुबादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुढि जाव अजोगिकेवली ओपं ॥ ५८॥

कुं का — मपने वाचय होवेक प्रदेश, घर, माम, अथवा देशको स्वस्थान कहते हैं। इस मारका यह स्वस्थानपत्र भी अपोगिकिवडीं में केवल स्वचारते ही देखा जाता है, (न कि प्यापाँगा)। स्था 'वह मेरा हैं ' इस मकारकी युक्ति प्रतिवृक्ति महेराको स्वस्थान कहते हैं, हिन्दु क्षीणमोडी अयोगी मनवानमें मनेतृंग्रीसका अभाव है, इसलिय (विती भी मकारते) अपोगिकेवलींक स्वस्थानपत्र नहीं बनता है।

समापान-- यह कोई शेष नहीं, क्योंकि, चीतराणियोंके अपने रहनेके प्रदेशको ही समस्पान नामले कहा गया है। किन्तु सराणियोंके लिए यह क्याय ,बहाँ हैं, क्योंकि, हनमें ममेहंमाय संमय है। अपना, 'अपने रहनेके प्रदेशको स्वस्थान कहते हैं' यही न्याय सर्वक प्रहण करना खादिए, क्योंकि, उसके माननेमें कोई पिरोप नहीं है।

र्युक्तां — यदि इस प्रकार स्वरूपानका कर्य करते हैं, तो सांसादनंतास्वर्गाह श्रीको इदस्यानस्वरूपानवद्गे स्पर्धानका क्षेत्र काठ करे जीवह (६ राष्ट्र प्रमाण प्राप्त होता है, (जो कि साने स्पर्धानानीमप्राप्त कावाय नहीं गया है)?

समाधान—मही, वर्षीकि, कारीनानुधोनदारमें, अमेर्युक्ति प्रतिपृशीत और बाने कामिनके सामाधाने रोके हप क्षेत्रकी ही स्वस्थान संबंध मान्त हैं।

दीव सुत्रका धर्च सुगम ईा है।

इस प्रकार कानमार्गणा समाप्त हुई।

संपममार्गणाके अञ्चाहते संपतींने प्रमुखंगत ग्रुप्तशानमे हेक्द अपिनिक्रती ग्रुणस्थान तक प्रत्येक ग्रुणस्थानवर्ती संयत श्रीव आपके समान होक्के असंस्पातके मार्गमें रहते हैं ॥ ५८ ॥

१ संबद्धारेन xxx संवदानां कामम्योतां केयन् । स. वि. १, ८.

१२२ | छनखंडागमे जीवडार्ण [१,३,५%

एत्य किमई द्व्वद्वियणयदेसणा कीरदे ? ण, संजमसामणे पहाणीकर जांप परि विसेसामाबादो । पज्जबद्वियणयपस्त्रणा एत्य जाणिय वचन्त्रा !

। १२ वाचावादान परववाह्यपायपस्त्रपा परय जावय वत्तन्ता । संजोगिकेवली ओघं ॥ ५९ ॥

्र प्राचीगो किण्ण कदो ? ण, खेर्च पडि सेमगुणहाणिहिंतो सर्वागिस्य विशेषकं भादो। जहि एवं, तो सेमगुणहाणाणे पि णाणाविहमेयभिष्णाणं पुत्र पुत्र मुनकरणं पारी

चि च ण, तेसि पहाणीकपरेत्वचंजिद्दितसेसामानादो । एत्य सेसा पन्नगद्विषण परमणा सच्या वचन्ना ।

सामाहयः च्छेदोनद्वावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदणहुडि जाव आणि यद्दि ति ओवं ॥ ६० ॥

ग्रंका— इस ख्वमें द्रव्यार्थिकनयकी देशना किस लिए जा रही है ! समाधान— नहीं, क्योंकि, संयमसामान्यके प्रधान करनेपर शोपक्षेत्रप्रण्यार्थ

अपेसा संपममार्गणाके अनुपादसे क्षेत्रमक्ष्यणामें कोई विदोषता नहीं है।

पहांपर पर्यापाधिकनयकी मक्ष्यणा जान करके करना साहिए।

 सयोगिकेवली मगवान् ओपके समान लोकके असंख्यावर्वे भागमें, लोकिं असंख्यात बहुमागोंमें और सर्वलोकमें रहते हैं ॥ ५९ ॥

र्शन के किया । समापार करी को स्थापन करा वहां किया ।

समाधान - नहीं, क्योंकि, क्षेत्रकी अपेक्षा श्रेष गुजस्थानीले सयोगिकेश्टीके हेर्न विशेषता पार्र जाती है।

र्यका — यदि ऐसा है, तो भाना प्रकारके अदांस भिष्यताको प्राप्त होर गुनस्मारी भी पुरुष रूपक् स्वाध रचना प्राप्त होती है ?

समायान — नहीं, क्योंकि, श्रेष गुणस्थानीकी पृथक् पृथक् प्रधानता करनेवर है क्षेत्र-कानिन विशेषताका समाय है, इसलिय पृथक् पृथक् स्वन-स्वनका प्रसंग नहीं है व होता है।

यहाँपर सभी शुणस्थानसम्बन्धी दोप सर्व पर्यापार्थिकनपकी क्षेत्रप्रकर्णा हार्य सादिए।

सामायक और छेदोपस्थापनाञ्जदिसंयवोमें श्रमससंयत गुणस्थानमे हेक्स करि इतिकरण गुणस्थान वक शरपेक गुणस्थानवर्ती सामायिक और छेदोपस्थापनागुर्दिन्ती औपके समान छोकके असंस्थानवर्ती मागमें रहते हैं ॥ ६० ॥

६ × डायरिकण्डेरोरस्थानगढदिवंदरानां चतुर्वो 🗷 × × डायान्योतः छेदर् । ठ. छि. ५ ५

ښن

[{ ? }

कोपपमचादिरासीदी सामादय-छेद्दोवहावणसदिसंबद्यमचादमो समाणा वि एदेसि पहनवा और मनदि। व च सामाद्य-छेदोबहावनसुद्धिः तुप्रमानभूरा परिहर-सदितंत्रदा अरिष, जेण तदो मेदो होज्ज । किमिदि प्रथम्दा गरिष ? दुगपंतरितिन-छदुमत्यजीवामाबादो । सेसं सुगर्म ।

بسنوء परिहारसुद्धिसंजदेस पमत्त-अपमत्तसंजदा केनडि सेते, लोगस्त : = [असंखेउजदिभागे' ॥ ६१ ॥

पदस्त वि ग्रंचस्त अत्यो पुन्नं पहतिदो वि संपद्दि व युन्चदे । णगरि पमच-संबदे तेबाहारं गरिय ।

बुद्दमसांपराह्यसुदिसंजदेखु बुद्दमसांपराह्यसुदिसंजदजनसमा खनगा केनडि सेत्ते, लोगसा असंसेज्जदिभागे'॥ ६२॥

मोपमं बही गर्द प्रमचसंवतादिवादिसे सामाविक और पंत्रीवरक्षकाम्यादिसंवमकरी मामक करा गर का काराज्याम् वर्गात्याः जाताम्यः नात्र्यः वर्गाय्यायाः समाने वर्गः हेस्स्ति इनके होत्रकी सहययां कामान के समाने वर्गः कार्यः का अवस्थापुरु कामा वर्षावस्थायमामुद्धिसंवसांति वरिहारतिमार्वसंवस्य प्रथमाच्या प्रकार महीं, जिसले कि उनसे उनका भेद ही जाय।

र्युका — परिहारविद्याद्यसंचा, सामाविक और छेशेषस्यायमानुद्रिसंचगौंसे पूचावृत क्यों नहीं है ? समापान - क्योंकि, मध्याधिक और वर्याणाँविक रन दोनों क्योंत भित्र छएरए भीयोंका अभाव है।

परिहार(वैद्यादित्तयतीमें प्रमुचतंत्रत और अवमचतंत्रत और कितने क्षेत्रमें रहते

? लोकके असंख्यावन माग्में रहते हैं ॥ ६१॥ हत रावका भी मध् पहले कहा जा जुका है, इसलिए सब नहीं करने हैं। क्लिक

त्र प्रकाश वर्ष प्रश्न करा जा प्रकार, रामान्य वर्ष करा दा वर्ष व त्र वह दे तिः प्रमुक्तसंघम गुज्यसम्बद्धीं याँस्टारिकान्निसंचमकः वैज्ञसमञ्ज्ञान करि विद्याना परापिकारादिसंपनोमें संस्मानपरापिकारादिनंपन उपस्मक जार सरक

कितने क्षेत्रमें रहते हैं। लोकके अमंत्त्यावर्षे आयमें वहते हैं॥ हर ॥ e alet , tand bib aift ;

र प्राप्त करण्य कारणात्र विकास सक्ष्यास्त्रकार १००० कारा देश्व होत्य । सः १, व EVXX fres lettel gachia, XY V die ale date to the tree

सुदुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु चि आघारणिदेसो । तत्य सुदुमसांपराइयसुदिनंका दुविधा होति उवशामगा खनगा चेदि । ते अप्पणो पदेसु वहमाणा त्रदुष्टं जेगाना संखेजजदिसारे, माणुसखेचरत संखेजजदिसारे होति। णवरि मारणितियपरे माणुन खेचादो असंखेजनगुणे हाँति ।

[ं]जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु च<u>दु</u>ट्टाणमोर्घं ॥ ६३॥

' परंथ द्वाणसदी पुन्युत्तमाएण गुणहाणवाची । चतुण्हं ठाणाणं समाहारी चर्हाणी सा ओपं होदि । उवसंतकसाय-खीणकसाय-सजीगि-अजीगिजिणाणं जहानखादिहासुर्यः संजदांणं अप्यागी ओघपरूवणं होदि वि जं धुर्च है।दि ।

संजदासंजदा केवडि सेत्ते, छोगस्स असंक्षेज्जदिमार्गे ॥ ६४ ॥ एदसा अत्था पुष्यं परुविदो ।

असंजदेन मिच्छादिडी ओवं ॥ ६५ ॥

• स्हमसाम्परायिकनुद्धिसंपतामें * इस पदसे आधारका निर्देश किया गया। ह गुणस्थानमें सहमसाम्बरायिकनादिसंयत दो प्रकारके होते हैं, उपशामक और सपड़ारे दीनों ही मकारके 'स्वमसाम्परायिकसंयत अपने यथासमय पदीमें रहते हुए सामान्यहों मादि चार छोकोंके असंक्यातवें भागमें और आनुषक्षेत्रके संक्यातवें भागमें रहते हैं। विज बात यह है कि मारणान्तिकसमुदातपदमें उपशामक जीव मानुपक्षेत्रसे असंख्यातपुर्ण क्षेत्री रहते हैं।

यथारुयातविहारमुद्धिसंयतीमें उपग्रान्तकषाय गुणस्यानसे छेकर अपीतिकेकी

गुणस्थान वक चारों गुणस्थानवाले संयतींका क्षेत्र ओपके समान है ॥ ६३ ॥

इस सुवर्गे आया हुवा 'स्थान' शब्द पूर्योक न्यायसे गुणस्थानका बादक है। बार गुणस्यानीके समुदायकी ' बनुःस्यानी ' कहते हैं। उनका क्षेत्रं सीपके समान है। अर्थी। उपतान्तकपाय, शीणकपाय, सवीविज्ञिन और अयोगिजिन गुणस्थानपर्यी यथाल्यातिविधि विज्ञादिसंपर्वोका क्षेत्र अपने ओघक्षेत्रके समान होना है। येसा अर्थ कहा गया सम्ब धाहिए।

संपतासंपत जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? खोकके असंख्यातरें मागमें रहते हैं धर्शी इस स्वका सर्थ पहले कहा जा चुका है।

असंपर्वोमें मिण्यादृष्टि जीव ओघके समान सर्व लोकमें रहते हैं ॥ ६५ ॥ 🛚 🗙 🛪 × यथास्यात्रदिशस्तुद्धिवंयतानां चतुष्यां 🗙 🛪 बाबाग्योगः क्षेत्रम् 🕽 छ. वि. 🤁 🕬

९ ××× संवदानंबनानां ×× सायाग्योत्तं क्षेत्रन् । स. सि. १, ८, ६ ×× वर्षपताना च चतुर्वी सामान्योत्तं क्षेत्रम् । स वि. १, ८.

जीवनस्मा अण्डाणाणमभेदेण भेदेण च वा बरा, सा अरुपोप आर्द्रमांचीह द्विपा होदि । आर्द्रसामा दि गुण्डाणभेदेण चीहराविहा होदि । एत्य औपसीह बरमस्स ओपस्स गहलं ! आर्द्रसामस्स अवववभूद्रसिन्छादिटीलमोपस्स । क्योर्स उस्मेर्ट् उस्मेर्ट 15 1 1 124 भर्मस्य आधरंत ग्रहणः जाद्वापस्य जनवन्न स्वाणः जाद्दाणमानस्य । क्षणाद राज्यास्य स्वाणः ज्यानः क्षणाद राज्यास्य प्रचासयीदो । जण्णीहे वि जायदि सह क्ष्यंचि प्रचासयी अस्यि चि मणिर ण, जज्जोहे सह मिक्सिरिहीहि जेम प्रशिक्षण प्रचान प्रचान प्रचान प्रचान प्रचान प्रचान प्रचान प्रचान स्थान स्यान स्थान स्य सह भिन्धादहाह जन प्रवास्त्रण पर्याक्षणए अधावाद्वा एदमस्वपूद स्टब्ब्स्य जाजपन्ता असंबद्धरहाणहाणाणमेगजोवी हिष्ण करो है ण, मिन्छादिहीण संसामुण्डानीहे सह 11 65 11

सासणसम्मादिट्टी सम्मामिञ्जादिट्टी असंजदसम्मादिटी औपं पदेसि विष् गुणहाणाणं चहुण्हं होगाणमसंग्रेगिरियागवणेण माणुमने वारी असरीक्षमुणवर्णेष प्रचासची अस्यि वि समझोगो करी।

घंदरा - बोधमक्ष्यमा गुजरधानोंके जमेदने भीर भेदने जो को गई है, यह अप भीप श्री है। बादेश भी पहें भेदसे में प्रकारको है। बादेश भाद भार पा कर गा है, वह अप कार बार बाह्य भाषक अनुस्त ना अन्तर्य होता है। जाह्या बाह्य प्राप्त अन्तर्यामान अनुस् पीतृत महारून होता है। जो यहाँ । जीय । देखा सामान्यवन नहनेनर हिना औरवन स्टूटन केवा गया है।

पा । समापान – भादेश जीवने भवपवधून विष्णार्शपूर्वोत् भीयका सदय दि पा गण है। शंपा - यह मधं केले मान होता है ? है, यह जाना जाता है।

तमाधान—सत्यासचिते, व्यान् सामीत्वते, व्याद्दा क्षेत्रणः वदण विदा कवा

र्घहा-प्रायासनि तो कर्धवित् अव्य भी भोगोंहे स्थाप ही सकती है।

समापान-देखी होकावर कत्तर देते हैं कि नहीं, क्वांकि, अन्द आहोद काक विश्वाहिशोंके समान प्रकृति से स्वामितका क्यांक है। यह अधीपर सर्वत्र समामा काहिए।

्र व्यवस्थान कारो शुक्रकातीषा यह कोग (सप्तासः) वस्ते वर्ग दिसा है तमाधान नहीं, क्योंके, विश्वादियोंको देख सास इनसन्दर्शाह स्टार्ट कुक पानीक साथ क्षेत्रको अवेका सक्यतम मन्यासन्तिका लगाक है।

व वाच वाच्या अवस्था अवस्थात अवस्थात अवस्था वाच्या वाच्या वाच्या अवस्था पढ़े समान लोड़के असंख्यावर्षे मागमें रहते हैं ॥ इह ॥

त्रवान लाक्ष अवस्थाव जागान १६० व ११ २२ ११ स्म स्थापः तीवो ही सुकाराशोहः सामान्यसाव व्याहे कर रूप्टोब्स सामान्यसाव है हित द्वालः ताना हा शुक्रवयानावः सामान्वत्यक् कात् कर गण्याव कर्णकान्य इत्ताय और बाजु वसेव ते वसंवयानमुख्य केवंब साथ यत्यातान्त्र यात् ज्ञानी है वस्तान्य इत बकार लेवमयनांका लगाम हुई ,

दंसणाणुनादेण चक्खुदंसणीलु मिच्छादिट्टिपहुडि जान सीप कसायर्वादरागछद्मत्या केनडि खेत्ते, छोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥६७॥

मन्यायमन्याय-विहारवृदिमत्याय-वेषण-कथाय-वेउिवयसमुग्यादगरा वन्यु-देगनी मिन्यनिद्वा निर्न्द तीगाणमसंसेखादिमागे, विदियलोगस्य संसिक्षदिमागे, मृत्यन्त असंगठातु । एत्य जीवहणा वाणिय काद्वा । एवं वारणितपसुग्यादगरा । वार्ष निर्म्दलेन्द्रादो असंगठातु । वार्ष निर्मदलेन्द्रादो । वार्ष निर्मदलेन्द्रादो असंगठातु । वार्ष निर्मदलेन्द्रादो । वार्ष निर्मदलेन्द्रादो । वार्ष निर्मदलेन्द्रादो । वार्ष विवाद । वार्ष निर्मदलेन्द्रादो । वार्ष प्रवे चेव उववाद्रगदाणं विवाद । अत्रवः कले सक्तुरं निर्मदलेन्द्रादे । वार्ष प्रवे, तो लाह्यप्रवाद्याणं विवाद निर्मदिक्षा विवाद विवाद । वार्ष दे च निर्मद सम्पुरं निर्मदलेन्द्राद । वार्ष दे वार्ष प्रवे वार्ष प्रवे वार्प निर्मदलेन्द्राद । वार्ष प्रवे वार्ष विवाद वार्ष वार्य वार्ष वार

द्यंतनगीनांके अनुवादने चशुर्वनियांने विश्ववादि गुगरवानने हेका धैन दश्यर रागाउदान गुकस्थान तक प्रत्येक गुगरवाननी और किन्ने धैनने सर्वे हैं। नोबंक आंग्यराहे मानुने रहते हैं।। ६०॥

वक्षण मनम्यान दिहारमाण्यान वेदमानसुवान, क्यायनसुवान मेर वैशिष कहर ज्यम बन्दरसीन विष्णादि और सासान्यकोक सादि तीन क्रांक्रीक समेनगानी सार्व इंटरेश्यको कंप्याम स्थान और समादितीयो समेनगानसुवान प्रशासीनी स्थान है। देव विष्णा कहर रेग ज्यम्बर बन्धा बादिन। व्योत सहार साम्यानिकसम्यानान प्रशासीनी से क्या है। हास ब्याम कर है से साम्यानिकसम्यानानन प्रशासीनी से विष्णा के साम्यानिकसम्यानान प्रशासीनी से क्यान्यक्रियों है। विष्णा कर्मा सहार स्थान स्

है हो -- वृद्धि ने का है, तो संस्थापनीय आँऔं हो स्थानुद्री ने प्रवेश स्थान करते. हो जा है। कि रूप के प्रवेश से वृद्धि स्थान से तो से वृद्धि स्थान स्थान हो जो के से कि स्थान स्थान से वृद्धि से स्थान स्थान से स्

सर्गाराम् — वर कर्ड केन मही, कर्न हि, निर्मूणनानि क्रीनिंद बलुवरीन हैन है, इक्टर काफ कह है कि काल्यारमें, स्वतीन स्नानीलवान स्वतीन केन्द्र वसने विकास बाहुतीन प्राप्ती समुजानिका स्वीतासकी सार्वानका स्वीतासने हैं से इस

e kin ya sa ngrito at lictingo leghago nyang mpagsebbada 3 4, 9 4, f

पैप्चिदियरुद्भियपञ्चलोणे चक्सुदैसणे णात्य, तत्य चक्तुदैसणोवञ्जेमममूष्पर्वाप् अविधा-भोनिचक्सुदैसणक्सुत्रोवसमाभावादो । सेसमुण्डूलाणं पज्यबद्धियपरुवणा जाणिय वर्षम्या ।

.अचक्खदंसणीस मिच्छादिडी ओघं'.॥ ६८ ॥.

सराममेदं ससे ।

सासणसम्मादिद्विषहिं जाव सीणकसायवीदरागछदमत्या ति ओधं ॥ ६९ ॥

पदेसिमणंतरदोत्त्वाणमेगचं किष्ण कदं ! ण, मिच्छादिश्वीह सेमगुणहाणाणं पच्चासचीय अभावादी ।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगों ॥ ७० ॥ केवलदंसणी केवलणाणिभंगों ॥ ७१ ॥

है। हां, चत्रिन्द्रिय मीर पंचेन्द्रिय लग्यवर्णान जीवाँके चशुरुशंत नहीं होता है, वर्णीक, जनमें बहादश्रीनीपयोगकी समुत्पश्चिका अधिनामाची बहादश्रीनावरवाद्यांकी श्राचेत्रशासका ममाच है।

इसी प्रकार सामादनंसम्यण्डि बाहि होत गुणस्थानाँकी वर्धायाधिकनवसम्बन्धी प्ररुपणा ज्ञान करके कहना चाडिय ।

· · · अचसुद्र्यनियोंमें निध्यादृष्टि जीव ओपके समान सर्वहोकमें रहेते हैं 11 ६८ n यह राष सगम है।

सासादनसम्पारि गुणस्थानसे छेवर शीणवतापवीतरागणकम्य गुणम्यान तक प्रत्येक गुणस्यानवर्धी अध्धुदर्शनी जीव औषके समान लोकके अपंत्रवादवे आगर्वे रहते हैं ॥ ६९ ॥

द्रोहा-- इस अनुसारीका देशों सर्वोद्या एका द वर्षी नहीं किया, अर्थान दश शब च्यों नहीं बनाया है

ग्रमाधान - मही, पर्योकि, विश्वादृष्टि श्रवहादुरांनी श्रीवाहि साथ होत गुणवन्त्रकृत वर्ती अक्टार्डानी जीवाँकी मन्यासचिका समाव है।

ः अवधिदर्शनी जीवाँका धेव अवधिकानियाँके समान होवना असंग्यापुरा माग है ॥ ७० ॥

केवलदर्शनी जीवाँका क्षेत्र केवलज्ञानियाँके समान कोकना असेग्यादशी बाद. सीक्षा असंख्यात बहुमाय और सर्वतीक है।। ७१ ॥

र अपरार्द्धनियाँ विश्वास्त्रपादिशीयक्षादासामा सामान्यांने क्षेत्रव व स. वि. १ . c.

e mefteefftemuefte:fter t m. ft. c. c.

& beurent benurang | w. fe. t. c.

एदाणि दे वि सुचाणि सुगमाणि चि पज्जबद्वियपरुवणा व करदे । एवं दसगमगणा समद्या ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय णीललेस्सिय काउलेस्सिएस मिन्डा दिही ओर्ष ॥ ७२ ॥

सत्याणसत्याण नेदण-कताय-मारणंतिय-उननाद्यदेहि सञ्ज्जेगंग्ड्जेण, विहासी सत्याण नेउञ्चियपदेहि तिण्डं लोगाणमंसीचलदिमाग, तिरिपटांगस्य संस्कृदिमाँ, अहुहाइजादो असंसेज्जागुणे खेते अच्छणेण च सरिसचमत्यि वि औपमिदि मणिदी णनरि नेउज्ज्यसमुग्यादगदा तिरियलेगास्य असंसेज्जिदिमाँगे।

सासणसम्मादिही सम्मामिच्छादिही अर्सजदेसम्मादिही और

॥ ६० ॥

चदुण्हं छोगाणमसंखेजजदिमागचणेण माणुसखेचादो असंखेजगगुणचलेण व

ये दोनों ही सूत्र सुगम दें, इसटिए पर्यागार्थिकनयकी प्रहरणा नहीं की आती है। इस प्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई।

लेडपार्मार्गणाके अनुवाद्ते कृष्णलेडपावाले, नीललेडपावाले और कापोतलेडपावाले

जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव औषके समान सर्वलोकमें रहते हैं ॥ '७२ ॥

्यवश्यानस्वर्थान, वेदनाहिमुद्रात, क्यायसमुद्रात, प्रारणानिकसमुद्रात और उरण्य-इन पद्रांकी वरिक्षा सर्वेटीकमें रहिमेंते, विद्वारवस्यस्यान और वैक्षिप्रकार्य क्षेत्र सामान्यटोक बादि तीन होड़ोंके असंक्यातवें आगर्मे, तिर्यप्टीकके संक्यातें आगर्मे और अप्रार्थाति असंक्यातगुर्धे क्षेत्रमें रहिनेकी करेका तीनों बगुम हिस्तायाद्धे मित्राय आयोंके स्वके सहस्रता है, इसलिए स्वमं 'बोध ' यह पद कहा। विशेष बात यह के विदियकसमुद्रातगत तीनों बगुमहेदयायाद्धे मिष्यादिष्ट जीव निर्यप्टोकके असंस्थानी भागमें रहते हैं।

नागम रहत हू । वीनों अञ्चमलेडपांबाले सासादनसम्यग्दिष्टे, सम्यग्निष्ट्यादृष्टि और अपर्य सम्यग्दीष्ट बीव ओषके समान लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ७३ ॥

तीनों बार्मिटरयायाठे उक्त तीनों शुणस्थानवर्षा आयाँ स्वयंतव पर्देशों होती सामान्यटोक सादि चार छोकोंके असंस्थानवर्षे आगमें रहेनसे और याद्यपक्षेत्रसे सर्तक्यानपूर्व

६ टेस्पाद्रगरेन कृष्णनीध्वरसंश्वेदशानी विष्यात्वराष्ट्रवस्याद्यक्तानी जामानीहें हैं^{वर् ।} इ. हि. ६, ८

सरितसुवरुंमारो सिद्दमापच । वितेसरो पुण यारणंतिय-उववादगरा किप्र-णीर काउ लेसियअसंबदसम्मारिहिनो संबेज्जा वि होद्रूण माणुसखेचारो असंरोजनगुणे खेचे-अप्लेति, असंराजनजोपणायाचारो ।

त्उलेसिय-पम्मलेसिएस मिन्छाइडिपहुडि जाव अपमत्तसंजदा

केवडि खेते, होगस्स असंखेज्जदिभागे' ॥ ७४ ॥

वेडलेरिसयमिन्छादिही सत्थाणसत्याण-विहासदिसत्याण-वेदण-कनाय-वेडिनय-समुग्पद्रदाद तिष्टू लोगाणमस्योडनियाम्, तिरिस्छोगस्य संयोजस्याम्, अङ्गाद्रजादोः असंयज्ञत्यां अच्छति । मार्गणियसमुग्पद्रपद्रा एवं चेव । णवाि विरियलोगाद्रो आसंय-अगुणे । ये पण्यं । एवं चेव उत्यादनदार्था । एत्य आवर्ष्य उतिज्ञमाणे मुक्तमार्गि द्विप अपण्यो उवचक्रमणकालेण पित्रीवसस्य असंयज्ञदिमागेण मागे दिहे एत्नमम्पर्ण तत्युववज्ञमणकावाः होति । युणो अवस्थेगं पित्रीवसस्य आसंयज्ञदिमार्ग मंगदार-सस्येण इतिदे रज्जुमायामेण जववादगदरासी होदि । युणो संयोजज्ञदर्गातुस्यवरज्ञादि

सर्वेद रहनेसे सहराता यहि जाती है, हरिलिए उनके क्षेत्रके भोषवना दिन हुमा। किन्दु विरोध बात यह है कि सारवारिकतरामुद्धात भीर वरणाह एरात हुम्म, बीव और कारोल रहरवायों सर्वेदतरामण्डिए संवयात होस्तरे भी मानुविश्वेत संवयातमुखे शुक्त देवर हैं, क्योंकि, उनके मारवारिकतरामुद्धात सीर क्याव्य एरात इंडस आयाम अर्थक्यान पीतन पाया जाता है।

विभोलेश्याबाले और प्रचलेश्याबाले बीबोमें सिम्पारिए गुणस्थानसे लेकर अप्रमुख्याबर्ग गुणस्थान वक प्रत्येक गुणस्थानवर्धी और दिवने क्षेत्रमें रहने हैं है लेक्ट्रे

असंख्यातरे भागमें रहते हैं ॥ ७४ ॥

रवस्यानदशस्यान, विद्वारकारकश्यान, वृश्वासमुद्धान, कार्यसमुद्धान है. द किन विकासमुद्धानयन नैकेन्द्रियायां कियारिष्टि जीव सामारकशिक साई नेन स्विष्टें के अर्थ-क्यायते भागी, निर्देशकि देव रिवार्यक्ष भागी और क्याहिंदियों अर्थकपात्त्र रेव से दर्श है। भारणानिकसमुद्धानयन नेकोन्द्रियायांने विकारिष्ट क्रांबंचा केन भी दर्श प्रकार है। इसी विदोय पात यह कहार पानिस् कि वे निर्वारक्षित्र क्रांबंचा के कान्य स्वीर्थ है। इसी महार प्रवाद प्रवाद नेकोन्द्रियायांने विवार्यक्ष क्रांबंचा के कान्य स्वीर्थ है। इसी भारपर्यानीने स्पानित करते समय सीयर्थकपद्धी क्रांबंचा है कार्य त्यार प्रवाद कर्य अर्थकपत्रियं प्राप्तित करते समय सीयर्थकपद्धी आंत्र हैनेयर पर समय है हमें हस्य संस्थात्वर्य दर्श हो है। इस यह हमा प्रवाद्यक्षा क्रांबंचात्रक्षी माग मान्यारक्ष्य स्थापित कर पर सामारक्ष्य

र देव:१६ हेरपार्थ दिन्दारश्यादश्यदा ताला की वरपार्थ वेदयादा र ब. दि. ६, ८,

गुणिदे उदबादरेवं होदि। जोवहणा जाणिय कायव्या। तेउलेस्त्रियगुणपदिव्याने जायमंगो। पम्मलेस्सियगुणपदिव्याने जायमंगो। पम्मलेस्सियमिष्ट्यादिष्ट्री सत्याणसत्याण-विहारविद्रिस्तयाण-वेदण-क्षायवर्षः ग्यादगदा तिण्हं लेगाणमसंखेज्जदिमागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिमागे, अद्भारत्यारे असंखेज्जयुणे जन्छति, पहाणीभृदतिरिक्सरासिचादो । वेउन्यिय-मारणिविय-उदार्दरा पृदुर्ण्हं लोगाणमसंखेज्जदिमागे, जहाहजादो असंखेज्जयुणे, पदाणीकदसणक्रमार-मार्थिर रासीदो । सासणादियुणपिवचणाणं जप्यमचसंजदंताणं जोषभंगो।

राजारा । सार्वणादगुणपाडवणाण अप्यमचसञ्जदताण आवममा । सुनकलेस्सिएसु मिच्छादिट्टिप्पहुडि जान स्रीणकसापनीदरागः छटुमत्या केवडि खेत्ते, लोगस्स असंस्रेज्जदिभागे ॥ ७५ ॥

सुक्कलेसिसपिष्ट्याइडिणो जेण पिलडोचमस्स असंखेजजिदमागमेचा, वेण सम्बन्धः सरपान-विदारबिदसत्याण-वेदण-कसाय-वेडिवय-मारणंतिय-उपवादपदेहि चदुः होतः षमसंस्रोजजिदमागे, अङ्काद्रज्जादे। असंस्रेजज्जुणे । सेसगुणहाणाणमीपमेगो । बारी

दै। चुनः संस्थात मतरांगुलप्रमाण राजुओंसे गुणित करनेपर उपपादसेवका प्रमान हेता दै। यदांगर सपपर्यना जान करके करना चादिए। गुणस्यानप्रतिपत्र तेमोछेस्पपाठे ब्रांची केक क्षेत्रपोरको समान दै।

स्परधानस्वस्थान, विदार्धनस्वस्थान, वेदवासमुद्धान और करापसमुद्धानान कर हर्रपाणे प्रिष्यार्ग्ध औप सामाग्यशोक आदि तीन शोक्षीके सर्वक्यानये मागम विर्वेत्वके संकारने मागने और अनुहर्ष्टीयसे असंक्यानगुणे क्षेत्रमें रहने हैं, वर्गोकि, वर्गार किर्व सर्वार्ग्य प्रधानना है। वैद्रिधिकसमुद्धान, मारणानिकसमुद्धान और उपपारपुर्व मान के हर्रपाल्य विद्यार्ग्ध औप सामाग्यशोक आदि बार शोक्षीके असंस्थात्य मागने और अस्पर्वेद्धारसे असंक्यानगुणे केत्रमें रहते हैं, वर्गोकि, यहांपर सानगृक्षार-माहेन्द्र देवागिणी स्थानता है। सामान्यसम्याद्ध आदि गुणक्यानप्रतिपन्न औरोंसे हेकर अपनर्वन गुमस्यान नक प्रभ्येष्ठ गुणक्यानवर्ग्य व्यवस्थानश्चित्वक कोष्योक क्षेत्र कोष्ट समान है।

पुरुठेटपात्राज जीशोंने भिष्पादित गुणस्थानमे लेकर शीणकाप्यतिगामहरूव पुरुठेटपात्राज जीशोंने भिष्पादित गुणस्थानमे लेकर शीणकाप्यतिगामहरूव गुणस्थान रक प्रत्येक गुणस्थानवती जुरूलेदयात्राजे जीव किनने शेवमें रहेने हैं। होत्रे कर्मस्थानते क्षाप्रों हहते हैं। ८५॥

चूंकि, गुज्जिरशासाठे विकासकि और वस्योगमध्य असंस्थातये आस्त्रमात्र है। विटिय के स्वस्थातस्वरस्यात्र, विशास्त्रकारमात्र, वाह्यसम्बद्धात्र, विशास्त्रकारमात्र, वाह्यसम्बद्धात्र, विशास्त्रकारम् वाह्यसम्बद्धात्र, विशास्त्रकारम् वाह्यसम्बद्धात्र और उपयक्षस्वर्धाः अपेशः साम्रास्त्रकारम् वाह्यसम्बद्धात्र और उपयक्षसम्बद्धाः अपेशः अस्ति वाह्यसम्बद्धात्र अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति वाह्यसम्बद्धात्र अस्ति अस्

६ कुम्बामार्ग जिलास्कर्णास्त्रं नवगापारः भो बोबन्तामध्येतवालः । अन्ति । रेत

मिच्छादिहित्पहृद्धि सन्वगुणहाणेसु मारणंतिय-उववादपदेसु जीवा संखेजा चैव !

सजोगिकेवली ओघं'॥ ७६॥

एदं सर्च मध्यं । ज्ञा क्यांयमग्गणाए अक्साहया अचा, तथा एत्थ हेस्सा-मगाणाय अलेस्सिया किण्य बचा चि भणिदे चुच्चदे- जत्य दर्वा पहाणीभूदं, तत्य मणिर्द होदि । जत्य प्रम परजनो पहाणो, सत्य म होदि । लेस्सामरमणा प्रम पजयपहाणा प्रथ करा, तेण अलेरिसया ण परःविदा ।

एवं छेरसामगणा समचा ।

भवियाणवादेण भवसिद्धिएसु मिन्छादिष्टिपहुडि जाव अजोगि-केवली ओधं'।। ७७ ॥

एदं तुर्च सुध्वं वि युलापादी अविसिद्धमिदि युलोपपज्जवद्वियपरूवणं लमदे ।

कि भिष्यारप्रि गुणस्थानसे केकर श्रीणकपाय गुणस्थान तक होए सभी गुणस्थानाँनै माद-णान्तिकसमुद्रात भीर उपपाद, इन दोनों पराँमें शुक्रकेदपायाले जीय संव्यात ही होते हैं।

गुझलेक्यावाले सयोगिकेक्लीका क्षेत्र ओपके समान है ॥ ७६ ॥

यह सत्र सराम है।

र्थका-जिल प्रकार क्यावमार्गणामें भक्तवायी जीवींका क्षेत्र बतलावा गया, उसी महार यहाँ क्षेत्रपामार्गणार्थे अलेल्य अधिका क्षेत्र क्यों नहीं कहा है

समाधान—घेसी बाहोबा करने पर कहते हैं-जिस मार्गणामें द्रवय प्रधानतासे प्रदण किया गया है. उस मार्गणाम तो प्रतिवक्षी " व्यक्तवायी " मादिका क्षेत्र मादि कहा वया है। किन्तु किस मार्गणामें पर्याय प्रधान है, उस मार्गणामें प्रतिपृथी 'मलेश्य मारिका क्षेत्र-निरूपण नहीं किया गया है। यहाँ पर छेड्यामार्गणा पर्याय-प्रधान कही गई है. इसलिए मलेस्य जीवीका क्षेत्र नहीं कहा गया है।

इस प्रकार छेदपामार्गणा समाप्त हुई।

भव्यमार्गणाके अनुवाद्से भव्यसिद्धिक अविषे विध्याद्य गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रस्येक गुणस्थानवर्ती जीवाँका धेत्र ओपसेत्रके समान - है।। ७७ ॥

यह सम्पूर्ण ही सूत्र मूल-भोवसे अधिदाष्ट है, इसलिप मूल-भोध-पर्यायार्थिकनपकी मक्रपणाको प्राप्त होता है, अर्थात्, सव्यजीविका क्षेत्र श्रीयमें कहे गये क्षेत्र हे समान ही है !

e सर्वोग्डेडिनामकेश्यानां च सामान्योनां क्षेत्रम । स सि. १, ८-

६ प्रध्यानकारेन सम्यानां चन्नर्देशानां सामान्योतां क्षेत्रम् । स. सि. १, ८.

अभवसिद्धिएसु मिन्छादिद्दी केवडि खेत्ते, सव्वलोएं ॥ ७८ ॥

- सत्याणसत्याण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादगदा अभवधिद्विया सन्वरागे । विहारबदिसत्याण वेउन्त्रियपदहिदा चदुण्हं लोगाणमसंखेरजदिमागे, अहृहरजारी अन 'खेज्जागुणे। कुदो ? तसरासिमस्सिद्ण युचर्वधप्याबहुगसुनादी णज्जेरे। तं जघा-सन्तर्शना धुनवंघमा । सादियवंघमा असंखेजज्ञगुणा । अणादियवंघमा असंखेजज्ञगुणा । अद्भवंदमा विसेसाहिया । केचियमेत्तेण १ धुवर्वधगेणूणसादियबंधगमेत्तेण । तसेसु पहिद्रेतमस असंखेजजदिमागमेचा चेव अमवसिद्धिया होति चि एदं क्रदी णव्यदे १ पित्रिवमस असंखेजजदिमागमेचसादियवधगेहितो असंखेजजगुणहीणचणगहाणुवगचीहो । सादियवंदण पलिरोवमस्स असंखेज्जदिमागमेचा चि कुरी णव्यदे १ जुचीरी । का जुची १ बुच्चरे-

अभव्यसिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सर्व तेकरें रहते हैं ॥ ७८ ॥ -

स्यस्यानस्यस्थान, घेदनालमुदात, कपायसमुदात, मारणानिकसमुद्र त और रा पाद पदको प्राप्त अमृध्यासिदिक जीय सर्व छोक्म रहते हैं। विहारवाह्वस्थान और पिक्रियिक प्रदेशिया अभ्यासिद्धिक औव सामान्यलोक आदि चार लोकाँके असंस्थात मागमें और अवार्धकीयसे असंस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं।

र्शका - यह फैले जाना कि थिहारयत्स्यस्थान और वैकिथिकसमुद्धातगत अप्रवर्धन सामाग्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातयं भागम और मतुष्यलोकसे असंब्धानपुर

क्षेत्रमें रहते हैं ?

समाधान- त्रसराशिका आश्रय करके कहे गये वंधसम्बन्धी मध्यवहुत्त्रातुर्वाण द्वारके सुत्रींसे यह जाना जाता है। यह इस प्रकार है— धुवबंधक सबसे कम है हुई चॅघकाँसे सादिवंधक असंस्थातगुणे हैं। सादिवंधकाँसे अनादिवंधक असंस्थातगुणे हैं। सतादियंपकाँसे समुवर्षधक विशेष सथिक हैं। कितने मात्र विशेषसे सथिक हैं। हु^द वंघकाँसे हान सादिवंघकाँकी राशिके प्रमाणसे गधिक हैं।

' र्युका — त्रसावीम प्रत्योपमके ससक्यातवें भागमात्र ही असम्यसिद्धिक औ

द्वात है, यह केसे जाना जाता है ! '

समाधान — पत्योपमके असंख्यातचे मागमात्र साविवधकांसे ध्रववंपकांहे हते चेवातगुण्डीतना सन्यथा यम नहीं सकती है, इस अन्यथानुवपतिसे जाना जाता है। असरादिमें व्यवस्थितिक अपि पत्योपमके असंक्यातर्वे भागमात्र ही होते हैं।

र्शका—सादिवंध करनेवाले जीव परयोगमके वासंक्यातय मागमात्र होते हैं, वा बैसे जना है

१ अवयानां सरंहोदः । स. वि. १, ८,

क्षेत्र पित्रोबमस्य असंसेज्जिदिमागेमेचा सादिपबंघमा वासपुघर्षतरेण तसिद्विदीए लिरोबमस्य अमस्यज्जिदिमागमेणुक्कमणकात्रुवरूषायो । एईदिएस् संविद्ध्यणेतसादिय-परोहितो पदरस्य असंसेज्ज्जिद्धागमेचा सादिपबंघमा चेसस्य किण्य उप्पज्जीत है ण, न्याण-मस्मागद्वालास्य आयाणुसारि-चओवर्तमादो । जेण एईदिएस् आयो संखेज्जो, तेण सिं यएण वि किष्एण चेव होदध्यं । तदो सिद्धं सादियवंघमा पित्रोबमस्स असंते-जिरमागमेणा ।चि ।

एवं भवियमग्यणा समता ।

सम्मताणुरादेण सभ्मादिहि सहयसम्मादिङ्गीसु असंजदसम्मादिहि-ग्हिडि जाव अजोगिकेवली ओर्च ॥ ७९ ॥

दम्बद्धियमस्यणं पढि विसेसा णित्य वि जापिनिदि युर्च । पञ्जबद्धियमस्यणाप् वे णित्य कोर विसेसा । णवरि खर्यसम्मादिक्षीस संजदासंजदाणं अध्यसपञ्जससंजदान

समाधान — युक्तिले । शुका — यह युक्ति कीनसी है है

सनायान — यह युक्ति इस अकार है — अवशीयोमें परयोपमके असंबयातर्ये तामात्र साहित्यक औव होते हैं, क्योंकि, वर्गप्रकर्क अस्तरसे असकायकी शिवतिका वियोगमें असंवयात्यें साममात्र उपकर्णकाल पाया जाता है।

ग्रंका - पकेन्द्रिय जीवॉमें संवयको मात अनन्त साहिबंधकोमेल जवंत्रतरके अस-

भ्यातर्वे भागप्रमाण सादिवंधक जांव जसशीवाँमें क्यों महीं उरप्त होते हैं है

समाधान—नहीं, क्योंकि, सभी गुणस्थान और मार्गवास्थानोंमें आवर्के अनुसार है। स्वय पाया जाता है। कुंकि, वक्षेत्रियोंसे आध्यत प्रमाण संक्यात हो है, इसलिए बनका यय भी उनना कर्णान् संक्यात ही, होना चाहिए। इसलिए सिद्ध हुआ कि असप्तितीं तारिवेपक त्रीय परगेपनके सर्सक्यातयें भागाश ही होते हैं।

हस प्रकार मध्यमार्गेणा समाप्त हुई ! सम्पन्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्हिष्ट और क्षापिकसम्यग्हिष्ट जीवीमें असै-

रतसम्परिष्ट गुणस्थानसे छेकर अयोगिकेवली गुणस्यान तक अत्येक गुणस्थानवर्ती सम्परिष्ठ और धापिकसम्परिष्ठ जीवीका क्षेत्र ओपके समान है ॥ ७९ ॥ स्थापिकनयके महत्त्वाली केवला सम्मतिषादित जीवीके शेषमें कोई विदोचन नहीं है, स्लालेय दममें 'कोय' देश वर बहा है। योगियिकनयमा महत्त्वामी में कोई विदोचता नहीं है। केवल आधिकसायगरियों संवस संवत गुणस्थानवर्ती मीयोंके समान

र तत्त्र सराज्यादेत स्थानेकतत्त्र्यक्षीतायतंत्रज्ञत्यस्यायनोगकेकान्यातौ अअअ कृत्यास्योतौ स्रेष्ट्र

संजदपरुवणा काद्व्या । असंजदसम्मादिद्वी वि मारणंतिय-उववादपदेसु बहुमाणा संबेज्ञा। सेसं सगमं ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ ८० ॥ पुन्तिरल्लेहि सह खेर्च पिंड पयरिसेग पच्चासचीए अभावादो पुघ सुन्तरंगे।

मेर्न सगमें ।

वेदगसम्मादिद्वीसु असंजदसम्मादिद्विपहूडि जाव अपमतसंनरा

केवडि खेत्ते, होगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८१ ॥

एरव ओघपण्डवरियपस्यणा णिरवयवा सञ्जगुणहाणेमु परुवेद्द्या, विकाः मावादी ।

उनसमसम्मादिद्वीसु असंजदसम्मादिष्टिपहुडि जाव उनसंतकता^त बीदरागछदुमत्या केवडि खेत्ते, लोगस्त असंखेज्जदिभागे ॥ ८२ ॥

वर्षां न संपतानं वर्तोमं संमय पर्वे की भेपसा ही शेत्रप्रकपणा करना चाहिए। मार्गानिक शमुद्धान भीर उपपाद, इन दो पदाँमें धर्नमान ससंयतसम्बन्धिः गुणस्थानपूर्ती साधिकमा क्टींड श्रीय स्वयान ही होते हैं। योप सूचका अर्थ सुगम है।

मपोगिकेवती मगवान्का क्षेत्र ओप कथित क्षेत्रके समान है ॥ ८० ॥ सपोतिकेवनी गुणस्थानकी पूर्ववर्ती गुणस्थानोंके साथ क्षेत्रकी अपेसा प्रक्षीति

हन्तानिका समाय है, इसलिय यह गृथक सूत्र बनाया गया है। दोप सूत्रका अर्थ सुन्द्र है। बेदद्रमध्यादृष्टियोमें अभैयत्मध्यादृष्टि गुणस्थानते सेकर अप्रमत्तमंयत गुगन्त

हर प्रत्येक गुजम्मानवर्ती वेदकमण्यारहि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं। श्लीकि वर्त रूपावर मागमें स्ट्वे हैं।। ८१ ॥

बर्शपर बीयमें वही गई पर्यायाधिकनयसध्यन्थी क्षेत्रप्रकाना सन्तर्भ वर्गी क्रोरा छई गुजस्यानील प्रकथम करना चाहिए, क्योंकि, अससे इसमें कोई विशेष करीं है।

टरग्रममुख्यादि जीवीमें अभ्यतमृख्यादि गुणव्यानमे लेहर उपग्रहारी हित्रास्त्रह्मा गुणव्यात तक अत्येक गुणस्थातवर्गी उपग्रमगरमारिट श्रीव किर्ते हेरी रहते 🕻 ! टीकके अमेम्यात्वे मागमें रहते 🕻 ॥ ८२ ॥

ह ब्राटेनहम्बद्धान्तरहोतामनस्वान्तरवाद्यस्यात्यस्यान्यात् अत्र अ ब्राव्यस्यते हेन्स् । हे हैं

सत्याणसत्याण-विद्वावदिसत्याण-वेदण-कमाय-वेउव्वियससुरमादादा अर्थवद-सम्मादद्वी चदुण्दं लोगाणमसंखेजबदिमागे, माणुसरोबादो असंग्रेजबगुणे अव्हाति। मार्य-तिय-उववादपदेसु पसा चेव आलगे।। णवरि तेसु परेमुं द्विद्वजीवा संग्रेजबा चेव होनि, उत्सामसेद्वीदो आदित्य उत्तममक्षमयेण सह असंबर्ध पढिवणाबीयानं संग्रेजबान्तरंगादा। संसावसमसम्मादिद्वीणं किण्य मरणमत्या चि युत्ते समावदी। एवं संबद्धनंबद्दानं दि । णवरि उववादपदं परिष । सेसाणमोर्ष । णवरि पमधसंबद्धम उवममगम्मचेन तेबा-हार्ष गतिय।

सासणसम्मादिट्टी ओघं ॥ ८३ ॥ सम्मामिन्छादिट्टी ओघं ॥ ८४ ॥ मिन्छादिट्टी ओघं ॥ ८५ ॥

द्याधानस्यस्थान, विदारणस्यस्थान, वेदानस्यमुद्धान, काणस्यमुद्धान और वैक्रि.वेषसमुद्धानसे साम स्यापनस्यम्बद्धि गुणस्थानस्य इत्तासस्यम्बद्धि त्रीष स्वापानस्य मार्ग् स्वाद हो होई स्वरुपानि आगों स्वीद अनुदर्शन स्वर्णनाल्युक्क देवने पहुँ है । आरचा-नित्तस्याचान और उपयाद इस दोली प्यापे सी बद्दी इस होत-सामान अक्षत्र आदिष्क विद्याय वात यह है कि उम दोली पड़ोमें स्वर्थाम् जील संस्थान ही होते हैं, स्वर्थीन, उपयान-शेलीर जतर कर उपरासस्यवस्यके साथ स्वत्यस्यापकी सात होनेकाल जीवीरी शिक्षा

श्रीया-- उपदासभेगीथे ततर बत श्रेशेयाले अपदाससम्बद्ध अधिक अभित्य दोष भन्य उपदाससम्बद्धि जीवीका श्रुष्ठ कर्वी सही होता है है

रामाधान-स्ववायते दो नहीं दोता है।

इसी प्रकारने संवानारंपन गुजरधानवती उत्तानस्वान्यति श्रीवान रेन्द्र भी जानना साहित्य रिवोच बात बह दे कि उनके उत्तवान्यत् नहीं रोग्य है। क्या गुजरचानमी बद्यामानस्वान्यति अधिवेश श्रेष भीच वर्णित श्रेषके समान है। क्यायति स्वान निर्माण के स्वान स्वी है। प्रमासंवन्ति उत्तरामस्वान्य पर्वे स्वान के सम्बन्धान और स्वाहान्य स्वुदान नहीं रोग है।

सातादनसम्पर्टाट जीबोंका क्षेत्र जोपके समान है ॥ ८३ ॥ सम्पन्मिथ्यादिट जीबोंका क्षेत्र जोपके समान है ॥ ८४ ॥ मिथ्यादिट जीबोंका क्षेत्र जोपके समान है ॥ ८५ ॥

र प्रीप्त "बदेरेदा " वी वाउः ।

⁴ Riby 'ft' elft wier !

३ x x x काकारतकावारकोतां कृत्यपित्वतारोतां वित्य हरोवां च कावान्योत कृत्यत् व वा राज्य

· दृष्टबर्खंडागमे जीवहाणं 1

११६] [१, ३, ८% एदाणि तिर्ण्ण वि सुनाणि सुगमाणि ति एदेसि पहन्त्रणा ण कीरदे ।

एवं सम्मत्तमगणा समता ।

साणियाणुवादेण सण्णीसु मिन्छादिहिष्पहुडि जाव सीणक्सा वींदरागछदुमत्था केविड खेते, लोगस्स असंखेजजदिभागे ॥ ८६॥

सत्याणसत्थाण-विहारवदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेउन्वियसमुग्घादगदा मिच्छादिही विण्हं लोगाणमसंखेजजदिमागे, विरियलोगस्स संखेजजदिमागे, अङ्गारुजामे असेखेज्जपुणे अच्छेति । एवं मारणंतिय-उवचादपदेसु वि वचववं । णवरि तिरियलोगकी असंखेजजगुणे इदि माणिदन्त्रं । सेसगुणहाणाणमीचमंगो, तदी विसेसामानादी ।

असर्णा केवडि खेत्ते, सव्वलोगे ॥ ८७ ॥ एदस्स सुत्तस्य अत्था सुगमा ।

एवं सण्णिमग्गणा समता ।

पे उक्त तीनों ही सूत्र सुगम है, इसलिए उनकी प्रदर्गणा नहीं की जाती है।

इस प्रकार सम्यदस्यमार्गणा समाप्त हुई। रोड़िमार्गणाके अनुपादसे संही जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानते हेका शीव

प.पापवीदरागष्टमस्य गुणस्यान तक प्रत्येक गुणस्यानवर्धी संशी जीव किनने क्षेत्रमें रहे र्दे ? छोकके असंख्यात्वे मागमें रहते हैं ॥ ८६ ॥

रवस्थानस्यरथान, विद्वारयास्यरथान, वेदनासमुद्रात, कपायसमुद्रात मीर वैक्तिक समुदात, इन पांच पद्भितो मास संक्षी मिथ्यादि जीव साम्रज्यलोक मादि शीन हान् असंस्थातय मागमें, निर्यग्हीकके संस्थातयें भागमें और अद्वादिशको असंस्थातगुर्ण रहेंने हैं। इसीवकार मारणान्तिकसमुद्रात और उपपाद, इन दे। पदामें बर्तमान संबं किया दृष्टि श्रीवाहा मी शेव कहना चाहिए। केवल इतनी वात विशेष कहना चाहिए हैं विर्यग्टाहम असंस्थातगुण क्षेत्रम रहते हैं। सासाइनादि श्रेष गुणस्थानवर्ती श्रीवाहा स्व भोष रेजिक समान है, क्योंकि, शोषके रेजिस सासादनादि गुजरवानोंके संबी जीवाँक रेप्ट कोर्ट विरोधना नहीं है।

अमंत्री बीत किनने क्षेत्रमें रहते हैं ! सर्व लोकमें रहते हैं ॥ ८७ ॥ रस गुत्रका वर्ष सुगम है।

. इस बदार संहिमार्गेचा नमाप्त दुई l

र एकप्तरादेव कक्षिती चन्नुर्रहीतेवत् । सः वि. १, ८. a me unt mestie: | er. fe. t, c.

आहाराणुनादेण आहारपुर्ध मिच्छादिट्टी ओपं ॥ ८८ ॥ सम्बर्धदेहि ओपपरुनगदी विवेसी गरिव वि जोपर्व जुन्देरे ।

सासणसम्मादिहिषहुढि जाव सजोगिकेवली केवडि खेते, लोगस्स असंबेज्जदिभागे ॥ ८९ ॥

पदस्स सुत्तस्य पञ्जबद्विपपरूवणाः जोधपरूवणाण् तुल्ला । वघरि उदबारेः सरीरगदिदपदमसमण् यचन्त्रे । सजीगिकेविक्सः वि पदरन्त्रेगपूरणसमुग्यादाः वि णीत्प, आहारिचामावादो ।

अणाहारएसु मिच्छादिट्टी ओघं 🗓 ९० ॥

द्व्यद्विपपरुपणाए और्ष होदि । पञ्जबद्विपपरुपणाए पुण उववाद्यदमेक्कं चैत्र अस्यि । सेसं गरिय । सेसं सुगर्म ।

आहारमार्भणाके अनुवादसे आहारक जीवीमें मिण्यादृष्टिपींका क्षेत्र क्षोपके संमान सर्व लेख है ॥ ८८ ॥

मिध्याचीपु जीवाँके दबद्याम मादि सभी पर्देके साथ देशस्वकारी मोग्राहणमारि विदेशका नहीं है, इसलिए उनके देशके मोग्रावना वन जाता है।

सासादनसम्पर्धाः गुण-स्पानवर्धाः संब्री जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं है लोकके असंख्यातकें मार्गने रहते हैं ॥ ८९ ॥

स्म श्रृणकी पर्याचाधिकतयकावाधी शेलमक्षणा ओपक्षेत्रववपणाके समान है। पिराच बात यह दे कि माहारक जीवोंके जयमावयुद्धारित श्रृष्ट वर्गके सम्यावयद्वे वरणा माहित, (पर्योक्षि, नार्थः औष माहारक होता है। माहारक नार्थित हैन कि माहित माहित स्वावयद्वे वरणा शोकपुरणायाद्वात मही देशि हैं, वर्षोक्षि, इन दोगों स्ववस्थानीत केवलेंक स्नारक्षण क्षेत्र समाव है, सर्थान् प्रतर और लोकपुरणायाद्वात ही स्ववस्थाने स्वावीतिकवरी समावद स्वा-हारक एनते हैं।

अनाहारकों में मिथ्यारिष्ट जीवोंका क्षेत्र ओपके सवान सर्वक्रोक है !! ९० !! हम्याधिकनयकी अवश्वास अनाहारक मिथ्यारिष्ट जीवोंका क्षेत्र के समाव होना है। बिन्नु पर्याचाधिकनवकी अवश्वासी करिशा को यक वच्चारपर ही होना है। रोच पर नहीं होने हैं, प्रचीकि, अनाहारक क्षियारिक अवशित वस्ता पर असी पर असेवव है। रोच परवास अर्थ गुराम है।

६ सहाराष्ट्रवाहेन साहारकाली विश्वतद्ववादिशीयवयायान्तामां कामान्तेन कृपन् ३ कर्यन्तेवधिका कोदरहाक्रदेषमानः । इ. ति. १, ८.

सासणसम्मादिही असंजदसम्मादिही अजोगिकेवली केविह सेते, लोगसा असंखेज्जदिभागे' ॥ ९१ ॥

पज्जवद्वियणएण उववादगदा सासणसम्मादिही चदुण्हं लीगाणमसंसे स्वदिनाने, अंड्राइन्जादो असंखेज्जमुणे अच्छीते । असंजदसम्मादिद्वीणं प्रत्वणा एवं नेत्र । अमेनि केवली चदुण्टं लोगाणमसंखेज्जदिमागे, माणुनखेचस्स संखेजजदिनागे।

सजोगिकेवली केवडि खेते. लोगसा असंखेडजेमु वा भागेषु

सञ्बलोगे वा ॥ ९२ ॥

पदरगदो सजोगिकेवली लोगस्स असंबैज्जेमु भागेमु वा है।दि, लेगोरंबिंदर बादवलयवदिरिचसयलकोगखेचं समावृतिय हिदचादे। होगपूरणे प्रण सव्वरांगे मनिः सन्बंहोगमावृरिय द्विदचादो ।

> (एवं आहारमग्गणा समता) एवं खेचाणिओगदारं समर्चं ।

अनाहारक सासादनसम्यग्रहीट, असंयतसम्यग्रहीट और अयोगिकेवरी किले

क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्याववें मागमें रहते हैं ॥ ९१ ॥

पर्यायाधिकन्यसम्बन्धी क्षेत्रप्रकृषणाकी व्यवसा उपपादकी प्राप्त अनाहारक सासार्व सम्परदि जीव सामान्यकोक आदि चार कोकीके सर्वरवातव मागर्मे बार स्वादिति असंस्थातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। अनाहारक असंयतसम्यन्हिए जीवींकी क्षेत्रप्रहणा मी हमें प्रकार जानना चाहिए। अनाहारकं अयोगिकेयली भगवान सामान्यलोक आदि चार हो गाँ र्भसंख्यातमें भागमें और मनुष्यक्षेत्रके संख्यानवें मागमें रहते हैं।

अनाहास्क संयोगिकेवली भगवान् कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके अवंहवार

बहुमार्गोमें और सर्वलोकमें रहते हैं ॥ ९२ ॥

प्रतरसमुद्रातगत संयोगिकेषठी जिन छोकके असंव्यात बहुमार्गोमें रहते हैं। पर्योकि, ये लोकके चारों और स्थित यातवलय-व्यतिरिक्त सकल लोकके क्षेत्रको समागृति करके रियत होते हैं। पुनः छोकपूरणसमुद्धातमें वे हां सयोगिकेवरी जिन सर्व छोकमें रहते हैं। क्योंकि, उस समय वे सर्व लोकको आपूरण करके स्थित होते 🗑 ।

(इस प्रकार बाहारमार्गणा समाध्य हुई।)

इस प्रकार क्षेत्रानुयोगद्वार समाप्त हुआ I

र बनाद्वासकार्या विश्वादितशाहादनसःग्यदृष्टव हंवनुसःग्यदृष्टककोगहेक्डिनां सामान्योर्द हेवन् । १ मि. १,४ २ स्योगिकेवारिनो होकस्यातंस्वेययागाः सर्वेडोको शा । स. शि. १, ८.

रे धेननिर्वयः एतः । स. भि. १. ८.

फोसणाणुगमो





सिरि-भगवंत-पुष्पदंत-भूदवलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-धीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समविणदो

नरस पडमलंडे जीवहाणे

फोसणाणुगमो णमिऊणेलाइरिए विद्वणभवणेस्कर्मगरुपईवे । कल्किन्द्रसुप्तवसणे शुचे कोसासिये बोच्छे ॥

पोसणाणुगमेण दुविहो णिहेसी, ओधेण आदेसेण यं 11 १ ॥ यामकीसयं ट्ययकेसयं दर्यकेसयं रोजकेसयं कारकेसयं भावकीसयं चे एण्यिहं कोसर्ग । तत्य यामकीसयं कीस्यक्षरो । यसो दर्याहेदस्स णिवस्त्रो, प्रयक्षे

स्पर्धतानुगमकी अपेक्षा निर्देश दी प्रकारका है, ओपनिरेश और आदेश निर्देश ॥ १ ॥

मामस्यर्धन, स्वावनास्थर्धन, द्रव्यस्यर्धन, क्षेत्रस्यर्धन सालस्यर्धन मीर मायस्यर्धन मेर्स स्वर्धन एक मध्यरमा है। उनमें "स्वर्धन" यह प्राप्त नामस्यर्धन निरोष है। यह निरोष द्रव्याधिकनयका विषय है, क्योंकि, प्रवर्णनेके विमा वाष्य-याधकप्रापक्त सरस्य

विश्ववनक्षी अधनके अकावित करनेके किए भदितांव मंगलभरीच, और कि कालश्री बहुदरावे संमार्जनके लिए क्लब्वक्स भी वलावांची नमस्कार करके स्पर्धनानु गमाधित स्थाके अधेकी बहुता हूँ ॥

६ राईनपुर्वते-तर् दिविषय् । शासम्बेन विश्वेष व इ स. वि. १, c.

विणा वाचिय-वाचयभावाणुववचीदो । सोयमिदि बुद्धीए अण्णदन्त्रेण अण्णदन्त्रसः एवर-करणं ठवणफोसणं णाम । जहा, घड-पिढरादिसु एसो उसहो अजीवो अहिणंरणो वि ! एसो वि दव्यद्वियस्स णिक्सेको, देण्हमेयत्त-धुक्तेहि विणा ठवणापत्रतीए असंवगरी। आगम-णोआगममेदेण दुविहं दन्यफोसणं । तत्य फोसणपाहुडआणगो अणुवजुतो सभी समसिंदेओ आगमदो दृज्यफोसणं णाम । फोआगमदृज्यफोसणं जाणुगसरीर-भिवप-तन्तरिः रिचर्च्यकोसणमेषण तिविहं । तत्य जाणुगसरीरदच्यकोसणं मत्रिय-बहुमाण-सपुरहार भेएण तिविदं । कथमेदस्स तिविहसरीरस्स फोसणववदेसो १ फोसणपाहुडसहचारारी । जहा, जिससहचरिदो असी, धणुसहचरिदो घणुहमिदि । भवियदव्यकोसणं भिरसकि फोसगपाहुडजाणओ । कथमेदस्स द्व्यफोसणववएसो १ पुब्युचसवस्थाणं द्व्येग एगगारी। जहा, इंदहमाणिदकद्वरस इंदो चि वयदेसो । तब्बदिरिचदब्बकीसणं सचित-अभिक

ग्रीका — इस तीन प्रकारके दारीरको 'स्पर्दान' यह स्पपदेश (संझा) हैने शत

हो। सचना है ! सुमायान - स्पर्शनप्राकृतके साहस्पर्यक्षे उक्तः तीन प्रकारके वार्गरको मी स्पर्शनमं क्रप्त है। इति है। अस, व्यति (तलवार) ते सहबरित पुरुषक्षे प्रति भीर धरावि सहबारित पुरवदी घतुत्र संशा जान्त हो जानी है।

स्वित्यकालमें रपरीन विषयक शालाके बायकको सन्यहत्त्वस्पर्यान कहते हैं।

ग्रहा — इस मन्यवारीन्याठेडे 'इत्यरपर्यन 'यह संझा केने हैं !

समायान-विश्वासन प्रथमी पूर्व भवण्या और उत्तर सवस्थाता इत तुन्हे कन्य क्यान पाना काम है। क्रिय, इन्द्र करानेके नियं सार गर कार्डा १ वर्ड सी रेक्ट इन्हें हैं।

मधी बन सकता है। "यह घडी है " इस प्रकारकी बुद्धिसे अन्य द्वरयके साथ अन्य द्वावरी एकाय स्थापित करना स्थापना निशेष हैं। शैले, घट, विटर (पात्रपिशेष) आहिकाँ 'वा क्रयम है, यह मनीय है, यह अभिनन्दन है र इत्यादि । यह स्थापनानिशेष भी हावाधिर मचना विषय दे, चयाँकि, दो पदाधाँकी एकता बार छुचताके विना स्थापनातिमेनी प्रमुलि असंसप है। आगम और लोगागमके शेदले हत्यस्वर्शननिशेष दो प्रकारका है। इनह क्परांतिविषयक ज्ञाम्यका छायक, किन्तु वर्तमानमें अनुपयोगी और क्षयोगज्ञासमित और काममहण्यकार्तनिकेश्य है। मोभागमहत्यक्यश्चनिकेश्य शायकशारीर, प्राय भीर तद्वारी हिलाइध्यरपर्रातके मेदने तीन प्रकारका है। उनमें बायकदारीर ब्रस्पश्यांन माधी, वर्गमान भीर समुभ्रित (त्यकः) के भेदसे तीन प्रकारका है।

मिस्तपेमेदेण तिविहं। सचिचाणं दन्याणं जो संजोओ सो सचिचद्रव्यक्रीसणं। अनिसापं दर्ध्याणं जो अण्णोण्येण संजोओ सो अधिचद्रव्यक्षीसणं। मिस्सपद्रव्यक्कीयणं एटई द्वाणं संजोएग एगुणसिद्विभेषभिणां। सेसद्रव्याणमायासेण सह संजोओ सेचर्कसणं। अधूचेण आगासेण सह सेसद्रवाणं मुचाणमञ्जूचाणं वा क्यं पोत्रो। ण एस दोसी, अवभेज्जाव-

तहयानिरिक्तद्रपश्यांन स्विचत्तं, अधितः और विश्वतः भेदते तीन प्रवारता है। जो स्विचत द्रापोका संधोग दोना है, यह लिक्तद्रप्यवर्धान बहलाना है। अधित द्राप्पोका को परस्यरमें संदोग होता है, यह अधितद्रप्यवर्धान बहलाना है। विश्वद्रप्यस्यांन चेनन-भवतनस्थरूप एडी द्रापोके संयोगने जनसङ भेदयाला होता है।

विशेषार्थ - किसी विषक्षित राशिक हिसंबीता, विसंबीता आहि अंग निवाटमें के लिए विविधित राशिममाणसे लेकर यह एक कम करते हुए एकके मंद्रा तक मंद्रा स्थापित करना चाहिए। पुनः इसरी वंकिम उनके बाँचे यक्ते सेकर विशक्षित शही तक धंक हिन्नमा चाहिए। यहती पंकिये अंबोंको संदा या साउप संहर हुमरी पंकिके संबोंको दार या भागदार बढते हैं। यहां चढले मान्योंके साथ सगले मात्र्योंका और चटले भागदार्धेके साथ भगते भागदारींका गुणा करना खादिय । युवः भारयोके गुणनपार्थे धान-दारींके गुणनपालका मान देना चाहिए जो इस प्रदार प्रमाण भाव, उत्ने ही विवर्धात क्यान है श्रीम समझना खादिए। इस करणामुत्र (गी. कर्मकोड गाथा मं. ७९९.) के निषमानु-सार एद द्रायोंके संवामी भेग इस बकार देवि-द्रिसंवीकी- इस का किया किसेवीकी प्रस्पेयोगी ६ × ५ × ६ × ६ × ६ × ६ ० ६ । इन सब संयोगी श्रीवाँका योग ६००२००६००६००१००३ रशायन शाता है। इन ५७ भंगोंके अभिरिक्त जीवका जीवके साथ, तथा पुरुतका पुरुष काथ. स प्रशार की भंग भंद भी कांगव हैं, जिन्हें किशाकर ५६ कांदीनी भंग हो जाने हैं। ध्रार्थ-तकाय आहि दीए बार हरन अलंड यह यह ही होने हैं. अनः उनके इस हकारके थहा है। एको भीतर संयोगी भेग सेमय मही है। जीव भाहि छहाँ द्वारोंके प्रथम प्रदेश रह कर र होते हैं, जो असंयोगी (यक संयोगी) होतेसे यहां बहल नहीं किये संय ।

> रीर द्वापीना आनशाद्वत्येक साथ जो संयोग है, यह शेवनारीव नहनात्त है। शेहा – अमुले आनशाक साथ रोष अमुले और मुले हम्पीना नगरी वैसे संभूष है!

गाहगमावस्सेव उवयरिण फासववएसादी, सच-पमेयत्तादिणा अण्गोण्णसमाननेण न । कालरव्यस्स अण्यद्वेहि जो संजोओ सो कालफोसण णाम । एत्य अमुतेण कालस्मे सेसद्ब्याणे जंदि वि पासो णारिय, परिणामिज्जमाणाणि सेसद्ब्याणि परिणामवेष कातेर युसिदाणि चि उवयारेण कालफोसणं युच्चेद । खेच कालगोसणाणि दव्यकोसणिह हिण् परंति चि युत्ते ण परंति, दन्वादो दन्वेगदेसस्स कर्धांच मेदुवलेमादो । भावकोसन दीर्प आगम-णोआगमभेएण । फोसणपाहुडजाणओ उवजुत्ते। आगमदो भावफोसणं । पानगुन-परिजर्वोग्गलदृब्वं गोआगममावकोसणं ।

पदेमु फोसणेसु जीयलेचफोसणेण पयदं । अस्पिशं स्पृत्यत इति स्पर्धनः। कीवणस्त अणुगमी फोसणाणुगमी, तेण कोसणाणुगमण । शिहरी कहुण वक्लानिही एपहो । सो दुविहो, जहां पर्यह । ओषेण विंडेण अभेदेणेनि एपहो । आदेशन भेदन

समापान-यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, सवगारा अवगादकागवड़ी दा दावाहि रगांतवा प्राप्त है, अथया, सस्य, प्रमेयस्य मादिके द्वारा मूर्च द्वस्यके साथ भमूर द्वारी परश्यर समामता होनेसे भी स्पर्शन। ध्ययहार यन जाता है।

कालद्रायका अन्य द्रश्योंके साच जो संयोग है, उसका नाम कालस्पर्शन है। वा बचिर झम्ले बालद्रध्यके साथ दीन हायाँका स्पर्धान नहीं है, तथापि परिवादित के वर् होत इच्य परिचामन्यको भेगेशा कालसे स्पानित हैं, इस प्रकारके वच्यासे कालसीन बहा जाना है।

र्द्धेका — क्षेत्रक्पर्दान और कालस्पर्दीन ये दोशों स्पर्दान, ब्रायश्यर्शनमें वर्षी सरी

धानमून होते हैं है समाधान—पेशी बांबायर उत्तर देते हैं कि देश्वरवर्शन और कावारी इप्यान्यरीतमें अन्तर्भृत नहीं होते हैं, क्योंकि, इय्योध दशके एक देशका वर्षीयन्थी

भावन्दर्शन आगम और नेशिमागमके भेदते दी प्रदारका है। स्परीनिविषक गान्दे चाया आता है। च पड और चर्नमानमें उनमें उपयुक्त श्रीयकी आगसमायस्परीन करने हैं। स्परीपुणमें प्रस् वर्षकार चर्नमानमें उनमें उपयुक्त श्रीयकी आगसमायस्परीन करने हैं। स्परीपुणमें प्रस्

इस इन्द्र छट्ट अकारक क्यांनीमेंस यहांगर जीवद्रव्यवस्था शेवस्यांत्रमें को व बहु समुद्राद्धी में। भागमधायम्पदीन बहुने हैं। है। हो मूनकालमें कारी किया गया और वर्तमानमें स्वश्ने किया जा रहा है, वह कार बहरारा है। कारोबंदे धनुमानो कारीबानुमा बहने हैं, उसने, धर्मान कारोब हुन्तने विर्देश, बचन भीर व्याक्षान, ये नीती एकार्थक नाम है। यह निर्देश प्रदर्शिक शिर्दे

स्थान की बचारका होता है। भाष, पिष्ट भीर भनेद, य शब एकार्थक साम है। भारी, है

विसेतेणीय समाणहो। ओपणिरेसो आरेसीमेरेसो चि दुविहो चेन गिरेसो होरि, इस्न-पज्यसिंद्रपणए अणवरीरिय कहणोबायाभावारो। चीदे एवं, तो प्रमानकस्य अमारी पसन्दे हरि खुंच, होतु णाम अमारी, गुणप्यहानमानमंत्रीम कहणोबायामावारो। अधना, पमाणुप्याद वयणं पमाणवराक्षयारोण खुंचेदे।

ओघेण मिच्छादिद्वीहि केनडियं खेतं पोसिदं, सन्नटोगों ॥ २ ॥

' जहा उरेसी वहा जिरेसी ' कि जावाही तात्र जोवेजीक्षे' वर्षा । सेमगुण्डाण-विहिसेहर्ष्ट विच्छादिहीहि कि वर्षा । केन्नियं रोवे कीसिद्मिदि युच्छानुषं सम्यस्य पमाणवपदुष्पायणक्षतं । क्षेत्राणिजीयहरि सन्त्रममणहाणाणि अस्मिद्ण सन्त्रगुणहाणाणे ग्रहमाणकास्त्रितिहं रोवे पदुष्पादिदं, संवदि वीसवाणिजीयहरिष कि पस्तिनजेही जिसम मगणहाणाणि अस्तिहण सन्त्रगुणहाणाणे अदीदकास्तिनेसिद्ववेषं कीसणे युष्पदे । परव

भीर विदोप ये सब समामार्थक माम हैं। मामिनिर्देश भीर भादेशनिर्देश हम क्रमारसे निर्देश ही क्रमारका होता है, वर्षोकि हरणार्थक भीर पर्यापार्थिकमर्योके अवस्त्रकारिक विना वस्तुरपठपके कथन करनेके जयायका भागाव है।

र्यहा-पदि ऐसा दे तो प्रमाणवाष्यका समाव प्राप्त होना है !

समापान -- वर्ण डांवायर अवशाकार कहते हैं कि अने ही अमाणवाक्यवा आभाव को जावे, क्योंकि, गीणता और अधानताके विका वरमुरवक्यके क्यन करनेके क्यावका औ अभाव है। अध्या, समाणते जापाहित व्यवज्ञे व्यवस्टित समाणवाक्य कहते हैं।

ओपसे मिध्यादृष्टि जीवाने विजना क्षेत्र रुपर्श दिया है ! सर्वनीह रुपर्श

किया है।। २।।

'क्रिय महारसे बहुरा होता है, बसी महारसे निहेंस होता है' इस स्वाबेद अनुसरस्य में पहले 'मोमि 'देश क्यान कहा। साक्षाहराहि होता हुए प्रकारनों दे प्रतिकृत अने के किय' 'मिरायदियों के हारा ' यह बचन कहा। 'सिताय हो व दवसे दिया है ' यह दुस्का सह कालके क्रियाना मिरायदियों के हारा ' यह बचन कहा। 'सिताया होव दवसे दिया है ' यह दुस्का सह कालके क्रियाना मिरायदियान करने दिया बहुर पहले हैं

होड़ा—रोशानुयोगद्वापमें सर्व आर्थनाश्यालीहर आश्रव क्षेत्रक स्तर्धः गुक्तस्याने व वर्गमानकार्याशिक्ष रोजका अतियाहण कर दिया गया है। अब बुनः इस क्यर बानुयोगद्वरचे क्या प्रकृष्ण किया जाता है।

समापान-श्रीहर मार्गणावपानीका आध्य क्षेत्रके सभी गुजरवानीक अनीन (भूत) बास विक्षिप क्षेत्रको नगरीन बना गया है। (अनवन वर्ष क्षीया प्रकृतक हिस्स कारा है।)

[्] इ ब्रायन्त्रेय ग्राप् क्षिणाती कि वर्तेत्रेचः स्पृष्टा (स. हि. १. ८. ६ प्रतिषु "हात् कोर्त्रे च चार्क्षती हिं कोर्त्रेने "इटि प्राव्धः

बद्दमानसेचपरुवर्णं पि सुचिनिवद्दमेव दीसदि। तदी ग षदुष्पाद्दवं, हितु बहमाणादीदकालविसेसिद्खेनपदुष्पाद्यमिदि र्षे वं पुन्नं राचानिजीगहारमरुविद्वद्वमाणसेचं संमराविय प्नायमहं वस्सवादामा । वदो फोसनमदीदकालविसेसिद्रहोचे सम्बर्धामा, बन्दो लागो मिच्छारिङ्कीहि च्छुनो वि जं वुचे होरि र कानेद्वां। अध्या--

पुरसिंदिसूनमद्धं हेत्वादेण सत्तरमोण । हर्दिनाहुरते यणराम् होनि छोमन्हि ॥ १॥

< हीए गाहार आणेद्व्यो। अथवा सचरज्ञाविष्यंम-चोह्स र्वहा - वहां न्यांनानुयोगद्वाहमें वर्तमानकालसम्बन्धी क्षेत्रक निषद्ध हो हुनी जानी है, इसलिए हारीन मनीतकालिशिए शेवका म हिर्दे है, हिन्दु बनेयान श्रीद श्रानिकान्त्रेत विशिष्ट शैनका प्रतिशादन कर

गनाचान — यहाँ रपशंतानुषोधनारमं वर्तमानशेत्रकी महण्या न हिन्दुः वरते क्षेत्रात्रप्रेमदास्य प्रवर्णन वस उस वर्णमानस्वका न्यरण क विचार अपने सार्वासमार्थ वसका सदल किया गया है। सत्त्व अर्थनकारणे विधान क्षेत्रका है। विनयानन करनेपाना है, यह गित हुआ।

्श व हेल्क व सर्वोच् नारम्यं स्थाक विष्णाहिक जीयोक बारा स्वरा निर कहा लक्ष है। वहापुर साक्षका प्रमाण गर्ने केन्द्रमञ्जामार्थ कर्मन गर्ने । रिकाल से सर कार्यक । समापा-

बिकडी कर्जनामने छेरकर क्षाचीर सरवारीको सी विभाग कर हो हेरन दूरक क्षणारंत सुरुक विल्लावनी काथा करके, पुता भागक वर्गन गुणाइर हरू. हे व व वेचार, शाह्यामधी यतनात् हराम होते हैं है है

इच कार्य बनुधार शांच्या यमाण नियालना चाहिए। हिंदेच - हार्या मणान विमाण स्टानपट ती मणा ही मते हैं, मण

कर्मक हमनेत सान्धारण सुन्त । तातू तीत सून अत्राह्माल है स Engel den beit beit be bei ber beit beit beite b E SE SER SER SERVER ! PRESENT SAME

आयामं चोदससंडाहं काद्ण विकसमेण सच संडे करिय होगपमाणादा अधियसेष फ्रिंस्य फेलिटे सगल-विग्रहाययबाहिदहोराखेचं परिष्कुढं होद्य दीसदि। तस्य द्विर-सुचबसेण सन्दाणि खेचसंडाणि आणिय मेलाविदे वि तं चेव होगपमाणं होदि।

विधेपार्ध-- उक्त कथनका समित्राय यह है कि पुरुषकार छोको आकारमें बसनाती तपा उसके मारो पीछे वसवालीके समाव हा जो क्षेत्र है यह सब पूर्व-पांधम एक राह चीहा, वचर-वृक्षिण सात राजु मोटा भीर ऊपर-गीचे चीदद राजु छन्ना दे। इस बगाटाकार भावत चतुरस्य क्षेत्रको सम्बारको ओरसे यक एक राह्य प्रमाणसे संहित करके पुत्र। मोटाँकी भोरते भी यह राह्यमाणते कंडित करना चाहिए। इस मकारते उक कराशकार आपत-चतुरसारे वके पर राजुवमाण छाडे, चौहे और मेटि भर्यात् यसामार लंह १४ x v = ९८) मठ्यानचे होते हैं। पुनः लोकममाणमेंसे इस क्षेत्रके (इन लंडांके) बातिरिक्त को सवशिष्ट क्षेत्र वचा है, वसे लेकर सम विभागोंको ऊपर-नीचे स्थापनकर पूर्वेज प्रमायले दी वक्र वक्ष राष्ट्रयमाणके बंद करना खादिए. जिलका कम इस प्रकार है-सम्बद्धोक्षते वी व वर्धामायके जो दोच दोनों पाइदेवनीं दो आग दें, जन्दें बढ़के ऊपर दूसरेवा विवयशिकसते रक्तना चाहिए। ऐसा करने पर यह सात राज्यमगण सामा, चीमा समयनुरव्य होन यन जाता है, जिसकी कि मोटाई सर्वेष सीव राष्ट्रयमाण हो जाती है। इसके भी एक एक प्रवराद्वयमाण क्षेत्र। करने पर (७ x ७ x १ = १४७) यकती शैंताशीस संदर्ध होते हैं। इसी प्रकारने कार्य-छोक्के भयशिष्ट क्षेत्रको प्रकाशिकके पाससे छिम्न कर देवेपर समाव मापवांत कार भाग हो जाते हैं। इन्हें क्षत्रदाः विदर्णासकथसे स्थापित करने पर सात राहु लाने, सोहे शीन रातु चीह बीट दी. रातु मोटे, देखे दी आयत-चतुरका क्षेत्र ही जाते हैं। चीद इन दोशी मार्गेको भी कीनाईकी भोरसे भिता, दिया जाय, तो सात राज्यकाच अन्ताकीहा क्य समयतरस्य क्षेत्र वन जाता है, जिसकी कि मोटाई सर्वत्र को बाह्य होगी। इसके भी दक्त एक पनराज्ञममाण खंड करने पर (७ x ७ x = ९८) अञ्चानने कंड होने हैं । इस प्रकारते गरम दुप प्रन समस्त खंडोंको जोड़ देने पर (९८+१४७+९८=१४१) संत क्ष्टे तासील चंद्र हो जाते हैं, जो कि मधेक एक एक प्रवशह्यकाथ है। सम्पन इस प्रकारके ि छोकरा मनाव १४१ चनरात निरुद्ध भारत है।

. एत्य . पञ्जवद्वियपरुवणा युच्चदे . । सत्याणसत्याण-वेदणं-इसाय-पारक्षिर उववादगदमिच्छ।दिहीहि अदीदेण वहुमाणेण च सन्वजोगो फोसिदो । विहस्वदिकतान वेउन्दियसप्रग्यादगदेहि वङ्गमाणे काले तिण्हं लोगाणमसंविज्जदिमागो, विविक्तेसर संखेज्जदिमागो फोसिदो । अङ्काद्वजादो असंखेज्जगुणं खेर्च फोसिदं। एत्व जेनहुनार

खेचमंगो । अदीदेण अह चोहसमागा देखणा । तं जघा- छोगणार्छ चोहस बंदे अर्रि मेरुम्लादो हेट्टिम-दो-खंडाणि उवरिम-छ-खंडाणि च एगह्ने करे अह चोइसमामा होती। हे च हेड्रिमजोयणसहस्सेणुणा होति।

सासणसम्मादिद्दीहिं केवडियं खेत्तं फीसिदं, लोगस्त असंसेज्बरि भागों ।। ३ ॥

एदं सुचं मंदपुद्धिसिस्सपंमालणहं खेचाणित्रोगहारे उचमेत्र पुणरित उर्व, अरी दाणागरवड्टमाणकालविशिङ्खेचेसु चोहसमुग्रहागणिवदेसु पुन्छिदेसु तस्त्रिसम्बद्धानिक सण्डं वा दु-कालवितिष्ठक्षेचपरूवणं कीरदे । सत्याणसत्याण-विहारवदिसत्वाव देव

बरते पर बाठ बटे बीदह (क्) आप हो जाते हैं। ये बाठ बटे बीदह राहु तीतरी पृथि मीचेक पक इजार योजनीत हीन प्रमाण होते हैं, इसीलिए इन्हें 'देशीन 'कहा है।

सामादनसम्यग्दृष्टि जीनोने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है है लोकका असंस्पाल माग स्पर्ध किया है ॥ ३ ॥

शेत्रानुयोगद्वारमें कहा गया ही यह सूत्र मंदनुदि शिप्पोंके संमालनेके तिर किर रहा गया है । अथवा, भूनकाल, अविध्यक्तल और वर्तमानकाल विशिष्ट तथा बीरह हर रवार्नेसम्बद्धाः क्षेत्रीके पूछने पर उस शिष्यके संदेव विनाशनार्थं भूतकाछ और स्थितक इन दो कार्टोसे विशिष्ट वर्तधानक्षेत्रकी प्रक्षणा की जा रही है है स्वरचानस्वस्थान, हिसार

९ कामार्यकन्यवादिविवेदिरसार्वययेनामः वादी हार्यं वा चतुर्वद्वनामा देशेनाः १ व. वि. ६, ६,

अब यहाँपर पर्यायार्थिक नयसम्बन्धी अरूपणा कहते हैं -स्वस्थानस्वस्थान, निर् समुद्रात, करायसमुद्रात, मारणात्तिकसमुद्रात और उरवाइ परात नियाहरि अ अर्दातकाळ और पर्वमानकाळकी अपेशा सर्व लोक स्पर्ध किया है। दिहारवास्वस्थान के यिति, पिक छमुद्रातगत मिण्यादृष्टि जीवाने वर्तमानकालमें सामान्यलोक आदि तीन अविध असंख्यातयां आग और तिर्वेग्लेकका संख्यातयां प्राय स्पर्धा क्या का तथा अन्तर्वाकी असंबंदातगुणा क्षेत्र स्पर्धा किया है। यहाँपर अपवर्तना क्षेत्रमञ्जूषाके समान जानना वाहि। विहारयःसस्यान और वैक्रियिकसमुद्रातगत मिष्यादि और्थोने मतीतकालकी मपेका है के (कुछ कम) आठ यटे चौद्द (हुँ) राजुक्षेत्र स्पर्श हिया है, बद इस प्रकारसे हैं - हो इनावि चीद्द चंड करके मेहप्यतिक मूलमागले गांचेक दो खंडांकी और ऊपरके छह चंडाकी प्रकार

कसाय-वेउन्दिय-मार्गतिय-उवबादगदेहि चदुण्हं सामाजमसंसेज्जदिमागा कोछिदी । माणुससेतादी असंसेज्जगुणं खेलं फोसिदं । परय कारणं पुन्तं व वलव्यं ।

अट्ट बारह चोहसभागा वा देखणा ॥ ४ ॥

सासणसम्मादिहीहि वि पुन्वसुवादी अणुबह्दे । अदीदकालतेचवदुष्पायमहिनद सुचमागरं । तं क्रथं मञ्चरे १ अट्ट बारह चोहतमागण्यहाणुववधीरो। जेलेरं देमामासिम-श्चरं, तेणेदस्स पज्जवद्विषपस्वणा पज्जवद्विषज्ञणाणुग्गदद्वं सीरदे । तं जहा- मन्याण-सत्याणगरेदिं तिण्डं लोगाणमसंखेजनिद्यागी, तिरियलीगस्य संखेजनिद्यागी शीविदी। अहारज्जादी असंसेजज्ञुण । अदीदसत्याणसे चरसाणपणनियाणं चुरचंद । तं अधा- तत्य तार विरिक्खतासगसत्थाणखेर्च मणिस्सामा । तसजीवा रोगगाठीए अर्मतरे चेर हैति, णी बहिदा'। सं हदी व्यवदे ? 'अह जीहसभागा देखणा ' वि वयदादी । तदी शतक-

चास्वरयानः वेदनासमुद्धातः, करायसमुद्धातः, वैकिथिकसमुद्धातः, मारवालिकसमुद्धानः बीर क्षपाद, इत प्रश्नेको मास सासाइनसम्बन्धि अधिन सामान्यसोक नाहि बाद श्रीकावा मसंक्यातको भाग रुपर्श किया है। तथा मानुबरोहंसे असंक्यातगुणा क्षेत्र क्यां दिया है। यहांपर कारण पूर्वके समाम ही कहमा धाहिए।

सासादनसम्परदृष्टि जीबोने अतीतकालकी अपेक्षा इन्ह कम भाट क्टे कीरह बाम

तथा इठ कम शुरह कटे चौदह मान प्रमाण क्षेत्र रुपर्छ किया है ॥ ४ ॥

देश सुपर्मे 'सामानुस्वन्यकारिकी' है । बद सुप्र मतीत्रकालसम्बन्धकारिकी' है । बद पूर्व पूर्व सुपर्मे खुनुति होनी है । बह सुप्र मतीत्रकालसम्बन्धकारिकी करनेके लिए शाया है ।

र्थका - यह सूत्र असीतकालसन्दरधी क्षेत्रकी अक्टबार तिए आया है, यह देन mar f

समापान-- बाड बटे बीदह और बारह बटे बीदह मागींदी प्रदेशना अन्वया बड दन मही सकती है, अतः इस अन्ययानुवयक्ति ज्ञाना ज्ञाता है कि यहाँ पर अनीनवास-

राज्याची क्रेजका प्रतिपादम करणा आहीत है।

युक्ति यह एव देशामधीक है, इसकिए इसकी एवांदाधिकनदसारक्यां कर-पना पर्यायाधिक वयाले शिल्पोंके अनुवाहके शिए की जाती है। वह इस प्रकार है-रमस्यानस्थरपानपद्देशे प्राप्त सासाहनसाम्याद्देशियाने सतीतसाहजे साह्यान्यक्रीय आहि हीत शोबोंका असंस्थातमा आग और तिर्थेग्लोकका अन्यातमा आग नगरी किया है। तथा महार श्रीपरी असंस्थातत्त्वा क्षेत्र वपरी किया है। अब अतीतवाससम्बन्धी व्यक्टावर वस्तामध्येष विचासनेका विभाग कहते हैं। वह इस प्रकार है-प्रसमेंसे एट्टरे नियंत्र वाचाहबसम्बद्ध है वर्षेत्रे वदरयानरवरमानक्षेत्रको करते हैं। बसजीय कोकवार्टीके श्रीतर ही होने हैं, बकर नहीं ! शंका - बर वे से जाता है

इ. अतिह " कहिल्ला " मेर्डि एकः ह

पुरुष्मंतरे सन्वत्व सासमा संभवति । तसजीवविराहिदेस असंबेज्वेस स्वरेष 🕶 सामना परिष' । वेरियवेतरेदेवेदि यिचाणमतिय संमत्रो, णवरि ते सत्याणस्या व 🌬 निहारेन परिनद्वादो । वं खेर्च तिरियलोगपमाणेण कीरमाणे एगं जगपरं पुरो 🕶

मानदमानेदि संसेडवरुवेदि खंडिय लई रज्वपदरिष्ट अविषय संसेडवेपुरेदि पुरे दिरेपडोपस्य संसेज्बदिभागं होद्ग संसेज्बंगुलगाहल्लं जगपदं होदि।

संबद्धि बोद्दियसासगर्सम्माद्दश्चिमत्याणसंबं मणिस्सामो । हं बद्धा- बंद्धि भंता, वे म्या । स्वाममुद्दे भनारि भंदा, भनारि खता । धादरशंहे पुत्र 🎵 भंतपुरना । कालोर्यमुद्दे बादाल भंदाहरूना । पोक्शरदीगर्दे बाहनीर बंदाहरू

सन्दर्भे चरमेनारी बाहिरचेतीए चोहालसदमेचा । तदी चंचारि रूपवन्तर कार्व केर् ममापान — 'सामाइनसम्यन्दाचे अविषेते असीतवालमें देशीन माउ को बैरा कार्यान केन कार्य किया है " इस सूत्र वयनसे जाना जाता है कि तसबीय हो कार्य

श्रीपर ही गरते हैं, बाहर नहीं। दण-तद्द राषुकारके शीतर सर्वत्र सामादनसम्बन्धि जीव संसप है। सिन्ध भेरत कर है कि चलाई जांगे विश्तित (मानुगोत्तर श्रीद स्वयंपम परिके मध्यमाँ) में करण अपूर्वे अलगान्त्रमञ्जात्व त्रीय अर्थी देशे हैं। यथिर पैरमाय स्लेगावे शाल हर्दे व क्षण्य हरण करने के जाद गांव नदा दात हा बयाय बस्ताय स्थाप करने के जाद गांव जीवोदी वहां संतायता है। दिग्द वे वर्ष क्यान अकरावा अन्य अर्थ मान अर्थ ता वार्या वहा सामावता का 18-13 वर्ष इन के पर्ये हिन्दैन्त्रीय क्रमानने करनेवर, यस सामगरको साम कह सानेवाने संवतनको क्रमण के क्षाणित करके क्षेत्र करक कार्य, उसे राष्ट्रयतकारीय निकाल करके दुना लेकार क्ष कों से कुन्तर बर्गनेपन निर्वतन्त्रीहरूमा अंक्यानमां आस होफहर संक्यान श्रीपुर बाहणहरू

mandre giver है ! कर मान्यवसम्मान्ति प्रवित्ति देवीले क्यान्यासम्बद्धी सहसे हैं। वर् वि क्षान है - कम्यूनिये हैं। बल्द जीर दें। स्वण्यानपृत्री बार वार्त है वार हैं है : स्वण्यान के है। यात्रयोग्यंत्रते वृत्यय पूत्रक बारह बाद्य सद्भ धीर वारत वृत्ये हैं। बात्रीवृत्यस्त्री शर्मात बान्द कीर ध्यानीक व्यर्थ है। बुचकर देशकोरी बदलर घरत वहत है। बाताइकागुर्वा बान्द कीर ध्यानीक व्यर्थ है। बुचकर देशकोरी बदलर घरत-कीर बदलर हार्र है। बात्रीका

e merit male der a bunggianfta g manffang angen iff n g di a f. f.

क प्रभाग करणां के स्वार्थ कर प्रभाग का प्रभाग कर कर है । है है है । है में में लिए विकास करते हैं अपने के अपने का विकास है।

• 1

7

i

şÌ

ď

ł

ď

जान बाहिरमङ्क पंतीओ गदाओ नि । तदी समुद्दक्तंतरपटमप्तीए नेमद अहासीदिमेता । तदी चदुरुवस्मदियं काद्रूण मेद्रकं जान प्रत्यतणनाहिरपंति वि' । एवं पेद्रकं जान सर्पमरमणतम्हरो नि । वर्षं च-

> चंदाइन्च-महेहि चेवं णवखत-तारहवेहि । दुगुण-दुगुणेहि णारतरेहि दुवमो तिरियटोगो' ॥ २ ॥

एदाणि संस्थिताणाणि मेलानिदे संसेज्जपदर्गजेहि जगपदरिह मागे हिदे प्रा-मागमेचाणि विमाणाणि होति । पुणी साणि-

रैलिस बाहिरी पंकि (बल्व) में यहती बवालीस चन्द्र और इतने हैं। स्वर्थ हैं। इससे भागे बार सक्योको महेरा करके, मर्यात् चार चार बढ़ाते हुए बाहरी माठवीं पंकि भावे तक से बाना चाहिए।

विदेषार्थ — पुष्करार्थाहोयसे ५० हजार वोजन माने जामर स्वीतिम्हलको मदम पदि या पहल है, बहौपर खाद भीर खुव की संक्वा १४४, १४४ है। उससे माने एक एक हाल भीजन माने माने जाकर सात बहल मीर हैं, जिनपर कि बन्द्र और स्वीके तंक्वा ५, ४ बहती जाती है, मर्थास बहौपर कमशा १४८, १५२, १५६, १६५, १६८, १५८, एव सन्द्र या इतने हैं। स्वीति संबंधा हो जाती है। इस प्रकारके बळव स्वयम्भूरमणसमुद्र सह स्वतिस्ति हैं।

हत्तते आगेके समुद्रकी शीतरी पंकिमें दो सी अदाधी यन्द्र वा इतने हैं। पूर्व हैं। इतके आगे मरोक प्रकारत बार बाद बाद बाद स्वर्की संवत परोधी कहरी पंकि को क का बाते हुए के आगा चाहिए। इस प्रकारके स्थानम्यामकसमुद्र तक बन्द्र और एएँची संवता बहाते हुए के जाना चादिय। कहा भी है—

चन्त्र, बादिस (राये), शह, नशन और ताराओं की दूबी दूबी व्हास संव्याओं से किरमार विषेक्षों कि विरामात्रक है ॥ २ ॥

ये सर्थ (बन्द्र या शर्थ) विमान यहहै भिकाने यर संस्थात अवरांगुरुँसे जगमतस्य माग देने पर यह आगमताय विमान होते हैं। युना वे सब---

त्र वह दूधि ति क्या क्या व स्थापित वस्त हरूनाचि । क्योप क्या दूषा क्या विवास्त्र हरें हैं क्षेत्रमा ति त्रीति हिस्तिक्षेत्रकत्यवर्षादेवेंद्री अधितात् । क्षेत्रियोत् क्या अस्य वहण्य क्षेत्रकृत्य क्षा ति ता करता हरें (भड़ासीति च गहा भड़ावीसे तु हुंति नक्तना । एमससीपरिवासे हत्तो ताराण बोच्छावि ॥)

हार्गार्ट्ट च सहस्सं णवयसर्य पंचसत्तरि य हाँनि । एयससीपरिवारी ताराणं कोडिकोडीओं ॥ ३ ॥ एदाहि ताराहि चंदाइच्च गह-णवस्त्रेतिह य पंचडाणहिदं परिवाडीए गुण्यि का विदे जोदिसियसच्यविमाणाणि होति"। तिरियलोगाविहदसयलवंदाणं सपरिवारसका

यणविहाणं चत्रहस्सामां । तं जहा- जंबूरीवादिवंचरीवसमुद्दे मोन्ज तदियसम्बद्धाः कार्ण जाव सर्यभूरमणसमुद्दे। चि ष्दासिमाणयणकिरिया ताव उषदे- तदिवसम्बद्धाः

(यक चन्द्रके परिवारमें (यक स्पर्वके नितिरक्त) नजासी प्रद्व और अवस्ति कि होते हैं, तथा तारोंका परिमाण नामें कहते हैं॥)

यक चन्द्रके परिवारमें छपासठ हजार ती सी पवहसर क्रोसकी १६९७,५०००००००००००००० तारे होते हैं ॥ ३॥

हत ताराभोंसे, तथा चन्द्र, चर्प, यह और नस्त्रोंसे पांच स्थानपर स्वीत्व डपर्युक चन्द्र विधानसंक्रयाको परिपाटी कमसे गुणितकर मिळा देनेपर ज्वोतिक स्वी इपर्य विधान हो जाते हैं। विशेषार्थ — अभी ऊपर जो चन्द्र विश्वोती संक्या निकाळ भार है, उन्ने वर्ष

ावश्याय - अभी ऊपर जो चान्न विश्वोत्ती श्रेचणा निकाल आप है। उन्हें प्रतिप्र स्थापित करना खाहिए। तुनः चृंकि एक चन्न्न परिवारमें एक स्थं, खाती में चहुन चौर ऊपर बताये गए प्रमाणवाले तारे होते हैं, स्तालप इनसे क्रमा की स्थानीपर समस्याय चन्न स्थानीपर समस्याय चन्न स्थानीपर समस्याय चन्न स्थानीपर समस्याय चन्न संस्थाको शुणित करनेपर उनका प्रमाण इस प्रकार मा जाता है-

क अरहीदडावीथा गहरिवधा तार कोवकोकाण । कवि सहस्तावि य मरस्वरणाति ही वि

६ वाणिय व्यवहरूटिं किनूनं पंतरत्वकंतरिं । चंदारिहर्षः दिदिरं श्रोसर्विकारि हतारि । ति. वा. ६९६ ४ इत वास्त्वामेतनः वंदरीः वाम्यत-स्पोतवारिकेष्ट्रनेतारि वार्वाप्त्रवंदगर्दारं विशेषण्यति स्रोतीः श्रीवारिकारप्रेशनेन वस्त्रपत्र सारा वृष्यकः वसानः

र गायंत्रं प्रतिषु नीयतम्बते, किन्तुसरायया स्वास्ता वारियासानियादगोद्वा । इतं गायोहारायः सा सर्वेतस्त्राद्वरकम्पते । (स्राधिः गः कोम, पन्तवन्दे)

गच्छो पत्तीसः चत्रत्यदीवे गच्छो चत्रसही, उवरिमसमुद्दे गच्छो अहावीसुत्तरसयं । एवं इगुणकमेण गन्छ। गन्छति जाव सर्यभूरमणसमुदं ति । संपद्दि एदेदि गन्छेदि पुध गुणिक

माणरासिपरूवणा कीरदे । विदियसमुद्दे वेसदमद्वासीदं, उवरिमदीवे वची दुगुणं । एव दुगुण दुगुणकमेण गुणिज्जमाणरासीओ गच्छीत जाव सर्वभूरमणसमुदं पचाओं वि । संपद्दि अद्वासीदि-विसदेहि सन्वगुणिज्जमाणरासीओ ओवष्ट्रिय रुद्धेण सग-सगगच्छे गुणिय अष्टासीदि-वेसदमेव सन्वगच्छाणं गुणिउज्ञमाणं कायन्त्रं । वर्ष कदे सन्वगन्छा अण्णाेणां पैक्सिर्ण चतुरगुगक्रमेण अवद्विदा जादा । संपद्वि चत्तारिमादि कार्ण चतुरुत्तरक्रमेण

गर्सं र लगाए आगपणे फीरमाणे पुन्तिल्लगच्छेहितो संपहियगच्छा रूजगा होति, दुगुग-जादहाणे चचारिरुवबद्दीए अभावादी । एदेहि गच्छेहि गुणिवनमाणमन्त्रिमघणाणि घउ-सिंहिमार्दि काऊण दुगुण-दुगुणकमेण गच्छंति जाव सर्वभूरमणसमुदं ति । पुणे। गच्छसमी-इनके विमानोंकी संख्या निकालनेकी प्रक्रिया पहले कहते हैं- इतीय समुद्रमें गण्छका प्रमाण बन्तीस, अनुर्ध होएमें रायाका प्रमाण बीसत. इससे आगेके समद्रमें गढाका प्रमाण

पकती बहारेस दोता है। इस प्रकार दूने दूने अमसे गण्ड स्वयम्भूरमणसंपुद तक बढ़ते हुए चले जाते हैं। अब इन राज्छोंसे पृथक् पृथक् गुण्यमान (गुणा की जानेवाली) राति। योंकी प्रक्षणा करने हैं। तुनीय समुद्रमें गुज्यमानराशि दो सी बडासी है, उससे उपरिष्त कीपमें गुण्यमानरादि। इससे दूनी (१८८ x २ = ५७६) है। इस मकार दूने दूने मामसे गुण्य-मान राशियो स्थयक्मूरमणसमुद्र भार होने तक दूनी होती हुई यक्षी जाती हैं।

उदाहरण-२८८, ५७६, ११५२, २३०४, ४६०८, ५२१६, १८४३२ इतादि । (गुव्य-मानराशियां) भव दो सी गटासीसे सभी गुण्यमात शाहाओंको भववर्तितकर सम्पराशिसे अपने

भागे गरछोंकी गुणित करके दो शी अठासीको ही सर्व गरछोंकी गुण्यसानराशि करना थादिए। वेसा करनेपर सर्व गन्छ परस्परकी अवेक्षासे खतुर्गण-क्रमसे मपश्यित है। जाते हैं।

 $\frac{\partial z}{\partial z} = \frac{\partial z}{\partial z} = 0 \quad 2 \times 32 = 30 \quad (2) \quad \frac{\partial z}{\partial z} = 21 \quad 2 \times 38 = 320$

इस्मादि । यहांवर प्रथम गच्छ ३२ से दिलीय गच्छ १२८ चीगुणा हो गया है । अब खारको आदि करके चार चारके उत्तरकामते वृद्धिगत संकलनके निकालनेपर पहलेके गवडोंसे इस समयके गच्छ यक कम होते हैं, क्योंकि, दुगुणे हुए स्थानपर खार रूपको वाँदका समाव है। इन गच्छाँसे गुणा किये जानेवाले मध्यमध्य, चींसउदो आहि करके

दुगुण दुगुणमामसे स्थपम्भूरमणसमुद तक बढ़ते हुए चले जाते हैं।

ŧ

Ę

फरणर्डं सञ्चगच्छेमु एनेगरूचपत्रम्णां कायच्ये। एवं कादण चउमिंड्रस्वेरं मित्रम् घणाणि ओवड्रिय रुदेण सग-सगगच्छे गुणिय सन्वगच्छाणं चउमिंड्रस्वानि गुनिस्व माणचणेण रुवेदच्याणि । एवं कदे विड्डिदेससिस्स पमाणं युच्चदे- एगरूचमीर्दं कर् गच्छे पडि दुगुण-दुगुणकमेण सर्यभूरमणामुद्दो चि गच्छसप्ती विद्विदे होदे। सर्ग

विशेषार्थ—गच्छकी मध्यसंक्यापर जो वृद्धिका प्रमाण जाता है वसे मध्यक कहते हैं। यह धन उत्तरीचर दुगुणकपसे यड़नेयाले गच्छोंने दुगुणा होता जाता है। हर्ण समुद्रका गच्छ २२ है। प्रधम स्थानपर तो चारकी खुद्धि होती नहीं है, अनयप उसे छोड़ जो होप २१ स्थान बचते हैं, उनमें सोलहवां स्थान अध्यम रहता है और उसकी हुआ

प्रमाण देध होता है। औसे— र, र, र, ४, ५, ५, ६, ७, ८, ६, १०, ११, ११, १४, १४, ४, ८, १२, १६, २०, २४, २८, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८, ५६, ५६, १२४, १२०, ११६, ११२, १०८, १०४, १००, ९६, ९२, ८८, ८४, ८०, ७६, ७३, १८,

११, २०, २९, २८, २७, २६, २५, २४, २४, २१, २२, २१, २०, १९, १८, १९, इस कमसे गच्छके मध्यवर्ती सोलहर्षे स्थानपर वृद्धिका प्रमाण १४ जाता है। हार्वि इतीय समुद्रसम्बन्धी मध्यमधन १५ है। इसी प्रकार वारो के हीपका गच्छ ६७ होनेसे उर्व

मध्यमधन १२८ होगा, जो अपने पूर्ववर्ती मध्यमधन ६४ के प्रमाणसे दुगुणा होता है। ह प्रकार आगे आगेके क्षीप और समुद्रोंका मध्यमधन दुगुण-प्रमाणसे यदता जाता है।

पुनः गच्छोंके समीकरणके लिए सभी गच्छोंम एक एक हरको हाति (को करना चाहिए। ऐसा करके चींसढ कपोंसे मध्यम घनोंको अपयाति कर लग्ध्याधि वर्ष अपने गच्छोंको गुणा करके चींसढ संक्याको सध गच्छोंको गुण्यमान राशिक्षके स्था^त करना चाहिए। ऐसा करने पर बढ़ी हुई राशिका प्रमाण कहते हैं—एक हरको मां करके, एक एक गच्छपर दुगुण दुगुण-प्रमुखे स्वयम्म्स्मणसमुद्र तक गच्छपाशि वृजी हैं चर्ला जाती है।

उदाहरण-मध्यमधन ६४।

१ प्रतिषु " पत्रसेण " इति पाठः ।

२ विकोक्यकर्त्या अस अमतोऽपि च "वट्टिंब" स्थाने "पिण "वृति पाठः ।

एवं हिर्संकरणाणमाणयणं चुन्परे- छरुवाहिषावंद्रीविजेश्वणहिं परिहीणराज्युन्छेरणात्री गर्दि । गन्छ सार्च द्वार संकलमा आणिववित तो जीदिसियवीत्रासी ण उपण्यति, नगण्यस्सा वेष्ठपपणगुलसद्वरामामामहाराणुववचीदो । वेण रुज्युन्छेरणासु अण्यति वि तप्पान्नीमाणं संसेज्यस्याणं हाणि प्राद्धम गर्दे। देवेदन्वो । एवं करे तदियसमुद्दे। आदी व होदि वि णासंक्रणियां, सो पेर आदी होदि, सर्वमूरमयसमुद्दस परमागसमुप्पणगरन्युदेशपयस्माणामा प्रणानमान्याकारणार्वो ।

समेभूरमणसमुद्दस्य परदो रज्जुच्छेदणया अतिथ वि खुदो णव्यदेः वेष्ठप्पण्णं-

(१) र्र्भ × १३ ≡ १४ = ८०६४ उत्तरपन । इस उत्तरपनको ५७६ × ६४ ≈ ११८६४ में मिला देनेसे चतुर्व द्वीरसक्तकधा समस्त चन्द्रोंका प्रमाण हो जाता है—

(१६८६४ + ८०६४ = ४४९२८ सर्वपन)

(१) १६% × १२७× १४= ३२५११ वसरपन । इत वसरपन हो १९५२४१२८=१४७४५६ में मिटा हेनेसे सुनुध समुद्रसरक्यी समस्त धन्द्रींका प्रमाण हो जाता है—

(१४५४५६ + ३२५१२ = १७९९६८ सर्वयन)

रसी समसे आगेके प्रशेक द्वीप और लघुदका स्वयंभूरमणलगुद्ध तक उत्तरधन एवं सर्वेधन निकालते आना खादिए।

सप रहा प्रकार के स्वयंदिय में संक्रकार के निकाल के प्रकार के कहते हैं— एह कर स्विक्त कर्मुलीय के अभेटिए रिंख विश्वील शाहुक अभेटिए रेकि मन्दाराशि वना करके यदि सकत्रवासि विकाल आही है, तो स्थोलिक अविसाल कहाँ अस्प होता है, क्योंकि, देसा स्टेनर जानकरका हो की १९८५ न स्टर्ग्युकों के वर्षकामा आपनार कहाँ अस्प होता है। स्वादित स्तुक अपेट होनें संक्षायोग्य अस्य भी संक्षात कर्यों होता है। क्यों महत्त्र स्थारित करता वाहिए। येखा करनेयर नृतीय समुद्र आदि होता है, ऐसी आरोका नहीं करता वाहिए, रिस्तु यदि, अर्थात नृतीय समुद्र कारि होता है, क्योंकि, इसका कारण स्वरम्मात्मकसुद्र के परमागम अयंत्र होताले समुक्त अभेटिए स्टर्सर क्यों होता।

र्युक्त - इत्रम्भूरमणसमुद्रके परमागर्वे रामुके मर्थन्छेद्र होते हैं, यह कैसे जाता ? समापान - प्रयोतिकदेवाँका श्रमाण निकासनेचे टिप पी सी छण्यन स्ट्यंतुकके

[્] હત્મે દ્વારિકેટ કોવું દેવસોદિયા વંદ ! કોવદો સેક્ટરા વર્ષકારોણ ન કપ્પેટે ક્રિકિટ્સ કોવ્યું કે ક્રેડિકેલમોમો સ્ટાર્ટન્ટરા દરે વચ્ચો ! કોર્યુરોયિક દેવા બન્નરતોય વીકિયા ક્ષ કિ. સદ. ૧૫૮–૧૧૧. ૨ ક્ષ કર્યો ' લકામાયલાયલયલકાયલો ' લાવસીઈ ' લકામાયલાયલકાયણો ' કૃતિ સ્ટાર !

1 1, 1, 2

गुलसद्वम्मसुचादो । ' जिचयाणि दीत्र-सागररूवाणि जॅन्द्रीवरहेदणाणि च स्वाहिगानी तिचाणि रज्जुछेदणाणि ' ति परियम्मेण एई वक्लाणं किण्य विरुद्धारे ? एरेन म विरुज्यदि, किंतु सुचेण सह ण विरुज्यदि । तेणेदस्म वक्षाणस्म गर्रणं कायनं, ब परियम्मस्सः तस्स सुचनिरुद्वचादो । ण सुचनिरुद्धं वनन्त्राणं होदि, अध्यवंगादो । स्व

वर्षप्रमाण अयमतरका भागदार बतानेवाले स्त्रले जाना जाता है कि स्वयम्भूरमणण्युर परमागर्में भी राज़के मर्बच्छेद होते हैं।

- श्रेका- 'जितनी द्वीप और सागरोंकी संख्या है, तथा जितने क्रम्बूई। के अर्थकी होते हैं, एक अधिक उतने ही राजुके अर्थच्छेद होते हैं ' इस प्रकारके परिकर्म सुनके सार यह उपर्युक्त व्याक्यान क्यों नहीं विशेषको प्राप्त होगा ?

समाधान—मले ही परिकर्म सुत्रके साथ उक व्याख्यान विरोधको प्राप्त होने किन्तु मस्तुत चुत्रके साथ तो विरोधको मान्त नहीं होता है। इसछिर इस प्रत्यके व्यास्थान को प्रहण करना चाहिए, परिकर्मके व्यास्थानको नहीं, क्योंकि, वह व्यास्थान स्व विरुद्ध है। और, जो सूत्र विरुद्ध हो, उसे व्याप्यान नहीं माना जा सहना के प्रना भतिप्रसंग दोप प्राप्त होता है।

विशेषार्थ — महतमें ज्योतियी देवोंकी संख्या निकालनेके लिए द्वीप सागरींकी संख्या कात करना धवलाकारको व्यावस्थक प्रतीत हुआ। द्वीप-लागरीकी संक्या प्रत्य आवारी खपदेशानुसार राजुके अर्थच्छेरोंमेंसे ६ तथा जन्मूदीपके अर्थच्छेर कम करनेसे प्राण होते है, मेरु य जम्बूहीप आदि प्रथम पांच द्वापनसमुद्रीम जो राजुके छह सर्पछित पह हैं ये पहां सिमिलित नहीं किये गये, क्योंकि, इन द्वीप-समुद्रोकी चन्द्रगणना पूर्व की गई है। किन्तु धयलाकारका मत है कि यदि इतना ही द्वीप-सागरीका प्रमाण विव जाये, तो उसके माधारसे निकाली हुई ज्योतियी देवोंको संख्या २५६ के माधारस निकाली हुई संक्याले विषम पहती है ! उसके वैषम्यको हुर करने कि घवलाकारको यह आवस्यक प्रतित हुआ कि द्वीप-सागरीको संख्या निहालवे कि राजुके अर्थच्छेर्नमें अन्यूद्धीपके अर्थच्छेर्नेके अतिरिक्त १ ही मही, हिन्दु हार्थ सर्थिक संस्थात अंक श्रीर कम करना चाहिए। इसपरसे झात होता है कि केयत है औ

कम करनेले द्वीप-सागरीकी संख्याद्वारा ज्योतिर्पादेशोका जो प्रमाण निकडेता, वह २९६ ह भागहारद्वारा भार संख्यासे बढ़ जाता है। छहसे मधिक संस्थात अंकांके कम करनेमें ध्यलाकारने हेतु यह दिया है। स्ययम्भूतमणसमुद्रसे परे जो पृथियों है, यहां भी रामुके अर्थ-छेत् पहेते हैं, किन्तु वा

भ्योतिशी देव नहीं है। इसिंटिए यहाँके संस्थात अर्थस्टेंट्र भी उक्त गणनामें हम हार्ग १ खेवेच पदरस्त वेजपणांत्रहत्वववमापृथिमार्गण । जी. इ. स्. ५५, सबिद्धित वेशियो वेशकार्थ संप्रकरीय ! में कदं हो राही मोदिशिवसुराण सरवार्थ ॥ वि. प. ७, १०.

जोर्सिया पारिय चि क्रुरो जन्दरे १ व्यन्स्वारो चेन सुचारो । यसा सप्याओगामंतीज्य-रूनादियजंषुरीवछेदणयसहिददीवसायररूपेचरण्य-छेदपमाणवरिक्साविदी ण अण्णाद्दि-क्षेत्रदेसपरेपराणुमारिणी, फेनले तु तिलोयपण्याचिस्रचाणुसारी जोदिभियदेवसागहारपदु-प्याद्यसुचारतंत्रिकुषियलेय ययद्यप्यसाहणद्वमस्द्रीह यहावदा, प्रतिनियतप्रवादप्यक्रमण्य रिनृभितपुचप्रतियप्रतियद्वासंस्थेपानिककावहारकालोपदेसम् आपतन्तुरसलोहसंस्थानी-परेराचदा । तदो ण एरथ इद्वित्यमेवेषि प्रयंतरिमारेण असम्मादी कायण्यो, परमगुरु-

कावरणक है। इस विधानसे परिकर्मचे 'कांचियाणि दीवसागरकवाणि' मादि कथनमें जो विरोध पहना है, जनके विवयमें पवडातारोने यहाँ स्पष्ट कहा है कि कक कथन सक्त विरद्ध होनेसे माता नहीं है। किन्तु द्वान्वव्याणानुगनमें जन विरोधका भी एक मकारसे परिहार क्रिया है। दिस्ती स. आग, सुध ७, यु. ३१-३६)

र्शका -- यहां, अर्थान् स्थयन्त्रूरमणसमुद्रके परवाधने उदे तिन्क देव महाँ है, यह

समापान-इसी खुबले जाना जाता है।

यह तारायोग्य संस्थान क्याधिक जान्त्रीयके सर्धन्वेत्रीं सहित श्रीयसामार्थेक करवमाय राजुमक्यां सर्धन्वेत्रीक मामाणकी वर्गासानिकि स्था मामार्थीकी उपयेग-परश्यको सञ्चलक करनेवाली नहीं है, किश्यु केवल त्रियोगज्ञातीत्वक्त सञ्चलका स्थानक करनेवाली है, की हि श्रोतिनक देवाँके सामहारको उत्पत्त करनेवाले सबसे स्वत्राधिक युक्तिक समसे प्रजुन गराहक नाधनाये, प्रतिनिवन स्वत्रक ध्वश्म-वलते विज्ञुतिस्य मर्धान् तस्यतिमाद कसूत्रक साम्यति गुणस्थान-प्रतिगम सामार्गकस्थानि साहि त्रीचिन प्रतिवद्ध सर्धस्यतः सामार्थिक स्वत्राक्तिक वर्षद्वाके समान् तथा स्थायन प्रतिविक्त

विशेषार्थ -- यहां घवलाकारने क्लान्यपूर्वक दार्शनको लिख करनेके लिख किन विशेषताभीका उल्लेख किया है, उनके कटनेका मध्याय कमझा निस्न मकार है --

(1) परका रहान्य प्रतिनेवत स्वाध्यये सावादमादि गुरुत्वामवर्ती कीचीर भवंतरता प्रावृद्धिकार्यक भवंतर्वेद्ववेद्याय भागावृद्धिकार्यक भवंतर्वेद्ववेद्याय भागावृद्धिकार्यक भवंतर्वेद्ववेद्याय भागावृद्धिकार्यक भवंतर्वेद्वयं २, दे के कुत्त पात भागीवृद्धिकार भागावृद्धिकार परिवादिकार प्रतिक्रमात्र्यकार प्रतिक्रमात्र प्रतिक्रमात्र प्रतिक्रमात्र क्षात्र प्रतिक्रमात्र प्रतिक्रमात्र क्षात्र क्षात्र प्रतिक्रमात्र क्षात्र क्

परंपरागञ्जावष्सस्स ज्ञिचक्रेण विद्धावेर्द्रमसक्षियचादो, अर्दिदिण्सु पदरवेसु स्ट्रस्वस्य प्राणमित्संबादणियमामावादो । तम्हा चिरंतणाइरियवक्तागापरिज्वाण्ण एसा वि क्रिक्टे विद्यादाणुसारिउप्पण्मसिस्साणुरोहेण अउप्पण्णज्ञणउप्पायणहं च दरिसेद्रव्या। तरे व स्व सेपदांयियोहासंका कायव्या चि ।

(३) घपछाकारने जिस प्रकार उस बोनों बातोंकी सात्कालिक करणानुगोगसम्बद्धालांने उत्ते अपया, आवार्योंकी उपरेश-परम्पराक्षे नहीं मिलनेपर मी उस प्रकार सुत्रायलिक उपरेश-परम्पराक्षे नहीं मिलनेपर मी उस प्रकार सुत्रायलिक उपरेश परापर में करणानुगोग सात्रायलिक सुत्रायलिक उपरेश परापर में करणानुगोग मालीक या अवश्ये उपरेश परापर में अवश्ये कर सहित कर रहे हैं कि स्वृत्यम्यम्यमनुष्ट्रके परम गर्ने भी असंक्यात श्लेषकार प्रवास-उद योजनोंसे संक्यात हा शास्त्र के प्रकार स्वत्य स्व

इसलिय यहांवर 'यह ऐसा ही है' इस प्रकार एकानत हठ एकड़ करके अतर मार्च करना चादिय, क्योंक, वरम गुटमोकी वरम्परासे आये हुए उपदेशको मुक्ति इंग मर्चा करना चादिय, क्योंक, वरम गुटमोकी वरम्परासे आये हुए उपदेशको मुक्ति इस स्वयंपायं विद्य करना मनाक्य है, तथा अतीन्द्रिय पदायोंने उपस्य जीनोके हारा उन्नर हिंप्सरों के अविध्यायों होनेका नियम नहीं है। अतत्वय पुरातन आवार्योंके व्यवस्ति विद्या विद्या होत्या (तर्क्याह) के अनुसरण करनेवाले म्युरात निर्मा स्वयंपर तर्मा करनेवाले म्युरात निर्मा स्वयंपर तर्मा करनेवाले म्युरात निर्मा होत्या होत्या होत्या होत्या होत्या होत्या होत्या स्वयंपर निर्मा होत्या होत्या करनेवाले विद्या होत्या स्वयंपर स्व

⁽२) इसरा चप्टन्त आयत-चतुरल होकसंस्थानके उपदेशका हिया है, दिल्ह किमिया समहिनेके हिए क्षेत्रानुमा (इसी खतुर्य माग) के पृष्ठ ११ से २२ तक्का मं विकास पर्योक्त पर है कि घयटाकार के सान विधान क्षण स्थोपसम्बद्धिया साहित्य में आयत-चतुरल होकके आकारका विधान या प्रतिकेष इस में मार्थी मिट रहा था, तो भी उन्होंने प्रतरसमुद्धातगत केयलोंके क्षेत्रके साधनार्थ की गांवी मार्था कि दिला क्षेत्रक एवं एक होने प्रतरसमुद्धातगत केयलोंके क्षेत्रके साधनार्थ की गांवी मार्था कि दिला क्षेत्रक साधनार्थ की गांवी के दिला क्षेत्रक एवं एक साधनार्थ की साधनार्थ कि लोक का आयत-चतुरकोण है, न कि अन्य आधार्योंसे प्रकारत १६५१ मेर्स प्रतराह्ममाव इस सामा गांवी पेक्षा न माना जायगा, तो उक्त देशों गांवामोंकी अप्रमाणका भीर को इस प्रमाणका भीर को प्रतराहमां साधनार्थ की सामा गांवी प्रमाणका भीर को साधनार्थ की साधनार्थ की सामा प्राप्त होगा। इसिटेंट की कहा आकार आयत-चतुरक हो गांवी सामा साथत-चतुरक हो गांवी

द अटिपु " विरुदाविद्व ", स मधी " विरुदावेद्व " इति पाठः ।

र्वकलपाओं आणिय दोण्हें सकलपाण घणं कार्य विदेयमंकलने अविनेदे चेर्रावेदमना गात्री उपान्ति । तात्रो अहारससयसमहिष्वाराहि गुणिहे चौहिनियानं समहित्त-

77

اين

ķ.

,,

यार प्रारको देवकराने देवर परवार गुणा करते। (उनमार पर का करे, पुना मारिका ने जार वारका प्रकारत वृक्त परकार शुका करका जनसार पक्त कर कर कर, जुना कार्यकार संग्रिकत करें, जुना पक्त करा गुजाबारका साम है, जब हरिक्षण शांति करवस होती है। इस भाषाबंदरत सुवते संकलनसानियांको निकालकर दोना संकलनसानियांका पत्र (वाह) करते इस सामित तीलरी संकलनसामिको वटा देने वर चण्ड्रतिस्करी शालाकार वण्ड हो जाती है। वद्रहिरण-मच्छ देश मानिधन ११२०० (मृतीय नामुन्या सर्वतवत्त्र), सर्व हीपसमुद्रांकी संच्या ससंच्यान= १ (कास्पनिक)। मरम छत्रजन- १ × १ × १ = ६४। ६४-१ = ११ १६२० = दर्गर्ग । १४ - १ = ११ ११२० = ११ ११२० | हितीप संतराम- १ × १ × १ = ६४। ६४ - १ = ६१। ११ × ६४ वृतीय संतरण — १×१ ×१ =८। ८-१ =७। ध×१४ १-१ प्रथम संकलन जिलेश संकलम यंत्रीय संकलन कामन बाम कामानार ते । १९५६० १९६४ - यंत्रीय संकलम सम्बद्धाः हत प्रमाणमें पहले बतारे हुई मधम पोच श्रीच लगुर्दोलंशची बंदोंची संस्था लीक-7 787 E 1 वीश वही संवया मधम वांच हाय-समूद्रीको छोड़कर आगेके लीव समुद्र का डीलोड र प्रयक्तिकाले हुए बंद्रोंकी संक्वाके योगस भागी हैं-au neith and Et aufgres) sindings as of minch and

सलायाओं होति । ताओं संस्वेज्यपर्वेगुलिह गुणिदाओं सत्याणये चे होति । मान्यानमे चे

करर बताय गए इस विधानसे प्रकृतित गच्छको विस्त्रन करके छन्नेद एक के क्रार

जन प्रकारते जलक हुई कामावश्यकः दालालामानः वाच्याः व्यवस्थाः मित्रमामारे ग्रामा कर देनेवर अधोतिकः देवोतं सक्त विश्वते दालाकण जन्मक गद। विग्रेडार्ष - अभी पटते जो एक कादका परिवार बनाया करा है, इसस्य रक विराधाय -- भवा पटल भाष्यु जानकः पात्याः पात्राः पादाः इतास्य स्व इत्तर्षे, अञ्चाती सह भीट सहारेत स्वाम, इत्तवी जोत्र देनस्य (१०१०८०५८०१८) . बदर्त द्रवत् कार्यत्व दृत्वे क्यर्थिक क्षत्रकारणीर द्वाव द्वव्यद्व द्वावस्था व

संखेजजरूनिर्हं गुणिय संखेजजपणेगुरुदि आंतर्हिर लोहस्तियग्रसी होहि। एराणि जीहिंग् देषुस्सेपगुणिदिवमार्णवर्धतरपद्रगुरुदि गुणिदे जोहित्यग्रस्थाणग्रसं तिरियलीगस्य सै जजदिमागमेचे .होदि । णविर देषुस्मगुणिदिवमाणवर्धतरपद्रग्गुलाणि उस्पेर्टानाणि कहु पमार्णगुरुताणि कायन्वाणि । उस्सेर्ट्युलाणि चि कर्ष णव्यदे ? अण्यहा जेर्द्रीगं जैयुदीवताराणमाणासामावादो । अथवा एदाणि पमार्णगुलाणि चेव । कर्ष पुण सम्मार्टि ण, जेयुदीव-स्वणसमुदेदि वे अस्सिद्य अवद्वाणादो ।

एक की महारह होने हैं। इसमें ताराओंका प्रमाण जोड़कर शरप्र हुई राशिका स विश्वकी दालाकाओंसे गुणा कर देनेपर समस्त ज्येतियी देवोंके विमानोंकी राजाकार ति आती है।

छन्हें संक्यात धनांगुलींसे गु.णत करनेपर सर्व ज्योतिया देवींके विमानिक स्वत्य सेत्र हों जाता है। स्वस्थानक्षेत्रको संबंधात क्योंसे गुणा करके संवधान धनांगुलींसे बार्य करनेपर ज्योतिष ह देवींकी राद्यि हो जाती है। इस राद्यिको न्योतिष ह देवींके दारितीर्थ गुणित विमानींके सीतरी अनरांगुलींसे गुणा करनेपर ज्योतिष्क देवींका स्वस्थानतेष जाता कि जी कि तिर्थालीक संस्थातये मागमात्र होता है। विदीय वान यह है कि हैं। हारीरके उनसेधसे गुणित विमानींक भीनरी सतरांगुल, उनसेधांगुल हैं, देसा समेंह की

शंका — ये प्रतरांगुल उन्सेषांगुल हैं, यह कैसे जाना है

समाधान-पादि उन प्रतरागुर्खोको उत्तेषांगुळ न माना जायगा, तो जन्द्री भीतर अम्बुनीयस्य तारागर्थोके रहनेको अयकाश न मिल सकेगा।

भथवा, ये प्रतरांगुळ प्रमाणांगुळ ही दि ।

ग्रंका-तो फिर ये जश्तुडीपमें कैसे समाते हैं !

समायाच — नहीं, पर्योक्षि, जानूहीच और स्वयणसमुद्र, इन दोनीकी ही ^{आर्} करके ये ज्योनिष्क विमान संयश्यित हैं। सर्योत्, जन्दूहीय और स्वयणसमुद्र, इन ही केनोमें जन्महोपसन्दर्भी ज्योतिषकविमान बहुते हैं।

विशेषार्थ — अम्बुशियसम्बर्धा दोनों चन्द्रोंके परिवारमें तारोंकी संबंध एक हा तेनीस हजार में सी पचास कोड़ाकोड़ी है। एक सारेखा अपन्य विष्कंत रे कोसा में उन्हेट रे कोशका कहा गया है, तथा उन्सेच विष्कंत्रसे साचा तथा आकार उत्तान मेना सरदा है। (विशेकसार नाथा १३७, ३३८)। तद्युनार मण्यम विष्कंस रे बीडा हेटर री

चेतरदेवसासणसम्माइद्वितरणाणरोचं वि तिरियलोगस्स संसेरजदिमागमेचं होदि। [{ 4 4 8 तं कर्ष १ वितरदेवरामि हृतिय एवेन्डन्डि बेतरावासे संरोज्जा चेत्र वंतरदेवा हाँति वि

तीरेका स्पृष्ट प्रमण्डल $-\frac{2}{8} \times \frac{8}{\xi} \times \frac{2}{\xi^2} \times \frac{2}{\xi} = \frac{3}{40}$ । तथा अस्त्र्योको समस्त ताराँका प्रमण्डल बपुस कपते १६१९५ × १० " × २ = ९९२२ कोहाकोड़ी धनकोश हुआ।

तारागच शोषपीते ७९० योजन ऊपरसे समावर ९०० योजन तक सर्पात् ११० पोजन-बाहरूर भारतामें रहते हैं। (देखो त्रिलोकसार गाथा ३३२-३३४)। अतः एक साझ पातन स्थालवाले जन्द्रशेषके ऊपर ११० योजन शेवका धनकल निकासनेसे---रेड x (e) x (e) x थप्र = ५२८ x १०॥ धनकोश हुए । इस अवार तारीके धन-

पालमं १८ संक हैं, बिन्तु जान्द्रसंपताबन्धी उका क्षेत्रमं केवल १४ शंक माते हैं। इस प्रकार वे सब तारे उक्त होवम महा समा सबते। किन्तु यदि ताराम उत्थेषांगुलांका ममाण स्पाकार हिया ज.य और उक्त क्षेत्रमें समाणांगुर्खेंबा, तो उक्त क्षेत्रके प्रमाणको ५०० ले गुणा कर देने पर यह क्षेत्र ५२८×१३५×१० °= ६६×१० ° अयोत् २२ वंक मसला हो जाता है।

विस्ते उक तारों हो कल क्षेत्रके भीतर लायकाता रहनेके लिए स्थान मिल जाता है। इसीलिये घयटाकारने वहा है कि विमानीके प्रशासमें उत्तेषांगुळ ही प्रहण करना चाहिए,

षयटाकारने जो दूसरे बकारले उक्त वैपन्यका समाधान किया है कि विमानोंके माणमं ममाणांगुल महत्त्व करके मी जम्बूद्यीय और सववसमुद्र, दीनोंके साध्यसे उन मिनांके सपस्यानके योग्य क्षेत्र कन जाता है, सी यह बात गणितमें ठीक नहीं उतस्ती,

गॅकि, जञ्चूरीय सीर स्वयससुद्र दोनोंके ऊपरका ११० योजनशहस्य क्षेत्र केयस-× (o' x 4 x (o' x ४४० = १६२ x १०॥ धनकोश भाता है। यह शेन केपल मंद्रप्रमाण होनेसे देवल अन्त्यांगहे तारांहै लिए भी पर्याप्त सर्ववास नहीं महान कर ता। तिसपर अयनसमुद्रसम्बन्धी चार चन्द्रीके परिवारके तारीको भी वहां अवकास दोना है। इस प्रकार तारोंके विमानोंको श्रमाणांगुलोंके मापमें छेकर धपलाकारने ते किस प्रकार मयकाश प्राप्त कराया है, यह समझमें वहीं माता ।

साक्षाइनसम्याद्धिः व्यन्तरः देयांचा साक्षानक्षेत्र भी तिर्यग्छोक्तवा संक्यातवां माग-रोता है। शंका-यह कैसे !

समाधान-- ध्यन्तर देवोंकी राशिको स्वापित करके यक वक व्यन्तरावासमें संक्यात

[8, 8, 8

कुटो ? तेसिमसंखेज्जचण्णहाणुववचीदो । पुणो वेंतरावासे अप्पणी विमाणन्मंतरांचेन घणंगुलेहि गुणिदे वेतादेवसासणसम्माइहिसत्याणसेचं होदि । एदाणि तिष्णि हि वेर्ग एगर्ट मेलिदे विरियलोगस्स संवेजदिमागो होदि। विहास्वदिसत्याण-वेदण कसाय नेउनिय सम्रुग्पादगदेहि अड चोइसमागा देखणा फोसिदा। केवियमेचेण्णा तिरिपुर्व हेड्डिस्तजोयणसहरसेण । मारणंतियसग्रुग्यादगदेहि बारह चौहसमागा देख्ला कोलिए तं जहा- मेरुम्लादो उविर जावीसिपन्मारपुढिव चि सच रञ्जू, हेट्टा जाव छा 🕏 चि पंच रज्जू । एदाओं मेलिदे सासणमारणंतियखेचायामा है।दि । णवि हेडिवर्जन सहस्सेण ऊणा चि वचन्या । जदि सासणा एईदिएस उप्पञ्जीत, तो तस्य दे। गुन्हाना ही प्यन्तर देव होते हैं, इसिटिए संस्थात क्योंसे मान देनेपर व्यन्तर देवांके आवार्त संबंधा हो जाती है। किन्तु यह कम मधनवासी और सीधमीद करपवासी हेवेंहे की क्योंकि, जनमें असंक्यात योजन आयामवाले संक्यात सवना और विमानीमें असंक्

संसेज्जरूबेहि मागे हिदे वेतरावासा होति । ण एस कमी भवणवासिय सोक्ष्मारी तत्य संखेज्जेसु भवणविभाणेसु असंखेज्जजीयणायामेसु असंखेज्जा देवा देवीजो 🕏

देव भीर देवियां रहती हैं। कारण, यदि पेसा न माना जाय, तो उनकी शांतिके असं पना नहीं वन सकना है। पुनः व्यन्तरों के शायासक्षेत्रको अपने पिमानों के श्रीतरी संब पनांगुर्खेस गुणित करनेपर सासायनसम्बद्धि ध्यम्तर देवींका स्वस्थानक्षेत्र है। जाता है।। धीना है। क्षेत्रको अर्थान् सासादनसम्यग्दछि तिर्येषोके स्वस्थानक्षेत्रको, सासादनसम्ब ज्योतिष्य देवाके व्यवस्थानक्षेत्रको शीर सासावनसम्बद्धि व्यन्तर देवाँके स्वस्थानक इच्छे मिलानगर निर्यालीकका ससंक्यानवाँ साग होता है। विहारवन्तवस्थान, वेदनाव कि कायसमुदान और वैकिथिकममुदानगत सासादनसायग्रहि औयोंने लोकनावीके भागामित देशोन माट माग्यमाण क्षेत्रको रुपरी दिया है।

इंडा-पर्ध देशोनसे तालार्थ कितने बमाज क्षेत्रसे म्यून है ?

मुमापान - तीलची पृथियोके मीचेके एक इक्षार योजनवमाण क्षेत्रसे गृत

देशीवसे सर्वत्र है। भारणान्त्रिकसमुद्रातगत सामादनगध्यक्तियोने शोकनातीके बाद्द गर्दे देशीन काष्ट्र सामाज्ञात क्षेत्रको स्वर्गी किया है। यह इस प्रकारने ज्ञानना बारि सुनेरवर्षनेक मूलमायके लेकर करर देवत्यामारवृथियो तक सान राष्ट्र हैं। हैर हैं। छरी पृथित नह यांच राजु होते हैं। इस दीशीश मिला देनेपर सामादसमायति । बारका मन्द्रश्यको कार्या है। अभी है। दिशेष बात यह है कि छडी पृथिकी है हैं। दच इकार केकर से स्टून क्षेत्र वहांगर मी कहना चाहिए।

t, e, e, j

षोसणाणुगमे सासगसम्माहिकोसणपरूकर्म

11 pr: *

. 1

होति। व च एवं, संवाधित्रोगहारे वत्थ एकविच्छादिद्विगुणव्यदुःपायणादो दन्वाणित्रोगहा कारा प्राप्ताबहाग्रद्भ्वस्य पमाणपुरुवणादी च । को एवं मण्दि स्था सासणा पुरदेश ा वाच प्राप्तावाष्ट्रभवरण नाणवल्यमानः न । का प्रव नगान प्रापा वावणा प्राप्त श्रीपक्षेति वि । हितु ते तस्य मार्गितियं मेल्लीति वि अम्हाण निस्त्रो । गुण ते तस्य 200 उपरजिति चि, टिप्पाडमकाले तत्य सासणगुषाणुबर्लमादी । जत्य सासणाणमुबनादी णरिष, तरप वि जदि सासणा मारणीवैष मेन्छति, तो सत्तमपुद्रतिणरस्या वि सासणपुणण सह विनिधियोद्देशिक्ष मारणीविष मेल्लंतु , सारणाव पहि विसंसामाबादी । ण एस होसी, वर भागात्रभावारमण्यः भारतावा भारत्वका भारताभावार भारताभावार भारताभावार भारताभावार भारताभावार भारताभावार भारताभ विष्णवादिचादो । एदे सचमपुटविकेरहया प्रिविदियतिरिक्तेम गर्मायक्केतिएस धेव

उप्पारक्षतहावा, ते पुण देवा पीनिदिवस पहेदिवस य उप्पाननणसहावा, तदी ण समाण-जाहीया । जे जाए जाहीय परिवर्ष्ण, वं ताय थेव जाहीय होहि सि पिडवजीदर्ध, अच्यहा अणवरयावसंगादो। तन्हा सत्तमवटविणेरहया सात्तवागुणेव सह देवा इव मारणीवर्ष यंका— यहि काताहनसम्बन्धि जीव वकेन्द्रियोमें उत्तव होते हैं तो उनमें (बहांपर)

की गुणस्थान मात दोते हैं । किन्तु पेला गहीं है, क्योंकि, सत्तक्षणा अनुपेगामारमें, एके दियाँमें यह मिष्पारिष्ट गुणस्थान ही बताया गया है, तथा जन्मानुयोगज्ञारमें भी उनमें पक ही गुणस्थानके प्रत्यका प्रमाण-प्रकथण किया गया है। समापान-कीन देला कहता है कि सातारनसम्बद्धि जीव पकेरिन्यॉम हरके दोते हैं ! किन्दु वे बस गुणस्यानमें मारणान्तिकसमुदातको करते हैं, वेसा हमाय निक्र-है। व कि हे इस गुणस्थानमें, नर्धांत् लासारनसरपादियोंने उत्तम होते हैं। क्यार इनमें भाषुच्यके छित्र होनेके समय सासावनगुणस्यान नहीं पाया जाता है।

र्घेका - जहां पर सासारनसम्प्रास्त्रविका जत्याद नहीं है, वहां पर इं :-सासावनसम्बादि जीव मारणानिकसमुद्धातको करते हैं, तो सातवी वृथियोर करणान तासहनतुष्णस्थानके साथ वंदेशिव विषयोगे मारणालिकसमुद्रात करना क्रिकेट सासार्वमा वार्याना कार्या कोर्ना कोर्ने विशेषता नहीं है, अपार्व सदस्य र्याण्यान-यह कोई दोर मही, क्योंकि, देव और नारकी स्टाउन के सभाषान पर कार्या वर्षां वर्यां वर्षां वर्षां वर्षां वर्यां वर्षां वर्षां वर्षां वर्षां वर्षां वर्षां वर्षां वर्षां वर्षा है, आर प देव पवान्यवाम तथा प्रकार के स्वाप्त के स्वयंत् के स्वयंत् के स्वयंत् के स्वयंत् के स्वयंत् समान जाताप नहा ह। का कार्या क जातका माना जाता ६। जायमा । इसकिए सातर्पी पृथियोके नारकी सासान्तगुणस्कन क्रांत्रका

र पादिशा श्रीरिया श्रीदिशा वश्रीदिया अवस्थित क्ष्य के किया, fi. e. e. te. द औ, इ. इ. ७४-७१.

प करित कि तिर्द । देवसासणा एईदिए मार्ग्यटियं दोसाणा सम्बलोदेःदिए स्मार्ग्यतियं करित वि १ ण, तेसि सासणगुणपाहानेः लेगणाटीए बाहिरहप्पत्रवनस्ता मार्गादो । लेगणाटीए अन्मेतरे मार्ग्यतियं करित कि मवणवासियज्ञम्हादोतिः स्मार्ग्यदे । लेगणाटीए अन्मेतरे मार्ग्यतियं करित, जो हेद्वा । कुदो १ सासणगुणपास्मारे च्या । रुज्यद्रसेपपुटवी उविर णित्य । देवा वि सुदृमेदेदिएस ण उपप्यवंति । व १ मार्ग्यदेश्या वाउक्काद्यविदिश्या पुटवीए विणा अण्यत्य अन्द्रति । तदे सासणग्रामिरे स्वचस वारह चोहसमागोवदेसो ण यदि वि १ ण एस दोसो, हिसप्मागुवदेशि व्यवस्त सासणाणमाउकाइएस मार्ग्यतियसंभवादो, अद्वमपुटवीए एगारुज्यदर्गमे स्वच्या सासणाविपकरणं पढि विरोहानावादो च । वाउकाइएस सास्मागियदेस स्वच्या सासण्यतियसंभवादो, अद्यवद्यति सासण्यतियसंभवादो । वारकाइएस सास्मागियदेस स्वच्या सास्मागियदेस स्वच्या सास्मागियदेस सास्मागियदेस स्वच्या सास्मागियदेस स्वच्या सास्मागिय हिदाए तेसि मार्ग्यतियकरणं पढि विरोहानावादो च । वाउकाइएस सास्मागियदेस स्वच्या सार्गितियासंगारे स्वच्या स्वच्या सार्गितियासंगारे स्वच्या वित्या स्वच्या सार्गितियासंगारे स्वच्या विद्या सार्गितियासंगारे स्वच्या विद्या सार्गितयासंगारे स्वच्या स्वच्या सार्गितयासंगारे स्वच्या विद्या सार्गितयासंगारे स्वच्या विद्या सार्गितयासंगारे स्वच्या विद्या स्वच्या सार्गितयासंगारे स्वच्या विद्या सार्गितयासंगारे स्वच्या सार्गितयासंगारे स्वच्या विद्या सार्गितयासंगारे स्वच्या सार्गितयासंगारे स्वच्या विद्या सार्गितयासंगारे स्वच्या विद्या विद्या सार्गितयासंगारे स्वच्या विद्या विद्या सार्गितयासंगारे स्वच्या सार्गितयासंगारे स्वच्या सार्गितयासंगारे स्वच्या विद्या सार्गितयासंगारे स्वच्या स्वच्या सार्गितयासंगारे सार्गितयासंगारे सार्यायसंगारे स्वच्या सार्गितयासंगारे सार्गितयासंगितयासंगित्यासंगित्यसंगितयासंगितयासंगित्यसंगितयासंगित्यसंगित्यसंगित्यसंगित्यसंगित्यसंगित्यसंगित्यसंगित

कान्तिकसमुदात महीं करते हैं, यह बात सिद्ध हुई।

ग्रंका — सारागरमसायाचि देव. अवस्ति यक्तेन्द्रयाँमें मारणातिकसमुबान सर्वे इर पार जान है, तो किर सार्यक्षेत्रयतीं यक्तेन्द्रयाँमें क्यों मही मारणातिकत्त्रण करने हैं।

मुमापान -- नर्दा, क्यों दि, डको सालाइनगुणस्यानकी प्रधानतारे शोकनानी कर्र उपम दोनेके स्यापका भागाव है। और शोकनातीके मीतर मारणानिकनमुजाने करने दूच भी भवनवाती शोकके मूलमागसे उपर दी देव या तिर्येय सालाइनसम्बद्ध और करनार्टन कमुदानको करने हैं, उससे भीचे नर्दा, क्योंकि, उनमें सालाइनस्वानकानी है। क्यानता है।

र्यहा---राह्यननस्थाण वृथियो ऊपर नहीं है। देव सी सदस वहेटिन श्रीतें करों उपच होने हैं, भीर बादर वहेटिन्य और बातुकारिक त्रीगोंको छोड़कर वृतिर्धि दिना अन्तर गरेन नहीं हैं। हमलिए सासादनसम्पर्धाः श्रीयोके सारणानिककेरका वर्ष बटे बीदर (१३) सम्पन्धा उपदेश पटिन नहीं होना है।

मनावान—चड कोई देल वहाँ है, क्योंकि, देल्याचार पृथियोते प्रार सामार सन्दर्भार में का अध्योध सामार्थित सामार्थित सामार्थ है, तथा एक राष्ट्रभार संदर सर्देशको व्याप्त कार्य विश्व आद्यी पृथियोवे जन प्रीयोक्षे प्रारम्भित्वनम्

र्देश — सम्मादनमञ्जलदि जीव, वानुवायिक जीवीवे जारनारि स्वयद्शान्ते सी वर्षो करने के हैं

चरण करें करणपान — वर्षी, चर्यादि, सक्ष्म सांसाहबमानगरदि जीपीना देवीं ह हर्व ij

r

1

संरोजिदिमामो । एत्य सत्याणखेषमेळावणविद्याणं पुन्तं च कायन्त्रं । विद्यात्वदिसत्याण-वेदण-कताय-वेदान्वयसमुम्पादगदेहि अङ्ग चौद्दसमागा देवणा कोसिदा । एत्य देवण-विपाणं पुन्तं च चप्तन्त्रं ।

असंजदसम्मारह्वीहि सत्याणेण विष्हं लोगाणमसंखेळादिमागो, अहारकादो असंखेळ-गुणो कोसिदो, तिरियलोगस्य संखेळादिमागो । तिरियलोगस्य संखेळादिमागखेलुप्पापणे सासणभंगो । विहारविद्याराण-वेदण-कताय-वेडविय-मारणंविपसमुग्पादगदेहि अह बोरसमागा देखला कोसिदा, उबरि छ रञ्जू, हेष्टा दो रञ्जु वि । उववादगदेहि छ बोरसमागा देखला कोसिदा, हेद्दा असंजदसम्मारहीणं उवचादखेलालुवर्लगदो ।

संजदासंजदेहि केवडियं खेतं फोसिदं, लोगस्स असंखेजदि-भागों ॥ ७ ॥

सत्याणसत्याण-विहारवदिसरयाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मार्ग्यतियपदार्णं पञ्जव-

करना चाहिए। विहारपारंपरचान, वेदनासमुद्रात, क्यायसमुद्रात भीर वैकिविवसमुद्रातगर सम्पन्तिस्पारिक जीयाँने कुछ क्षत काठ वहे थीदह (ई) आय स्वर्श दिन हैं। यहांपर देगोलका विपान पूर्वके समान ही बहुना चाहिए। अस्य सामान्य क्षत्र समान ही बहुना चाहिए। अस्य सामान्य क्षत्र हो । यहांपर विकास विपान पूर्वके समान ही बहुना चाहिए। असे सामान्य हो की हो ति सो सो सो सामान्य सामा

बाढ़ बटे बीदह (र्रंट्र) माग स्वर्ध किये हैं, जो कि मेरके मूलसे ऊपर छह पांचु बीर भीचे दो राजुममाण हैं। उपपादवदको मात उन्हीं महावशसम्बग्हिए जोगोने इछ कम छह बढे चीदह

संस्थातयां भाग स्पर्ध दिया है। यहांपर स्वरधानशेत्रके विशानेका विधान पूर्वपत् ही

(रे॰) भाग रचर्या किये हैं। क्योंकि, इससे शीच असंवतसम्बद्ध ऑयोका व्यवस्तिक् महीं पाया जाता है। संपदासंयद ओवीने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है। लोकका असंस्पात्तां माग

विद्वारवन्द्रव्यान, वेदनासमुद्धात, क्षणायसमुद्धात, वैक्रिविक-समुद्धात पद्गत संवतासंवतींकी वर्षावाधिकनयसम्बन्धी स्वर्धान

सम्मामिन्छाइट्टिःअसंजदसम्माइट्टीहि केवडियं खेतं पोसिं, लोगस्स असंखेनदिभागों ॥ ५ ॥

 पदस्स सुत्तस्स अत्यो बुज्यदे । सम्मामिन्छाइई।हि सत्याणमृत्याप-तिहास्त्रीः सत्याण-नेदण-कसाय-वेउन्नियसमुग्धादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंसेजनिदमागो कीन्ति। माणुसखेत्तादो असंखेजजगुणा । कारणं सेत्तर्वगा । असंजदमम्मार्द्वीणं सत्याणश्रावासः ब्रिहारविस्त्याण-घेदण-कसाप-त्रेडिव्यय-मारणितय-उपवादगदाण श्रेतिह बुत्तत्वे। वं रिय' वत्तव्यो ।

🔢 . अट्ट चोहसभागा वा देखणा ॥ ६ ॥

पुन्यसुत्तादो सम्मामिच्छादिहि असंजदसम्मादिहीहि केवहियं खेतं कोसिर्मिर अणुबहदे । अदीदकालेणेचि वयणस्स अज्ज्ञाहारो कायच्यो । हुदो १ एदेनि देण गुणहाणाणं बहुमाणकालविसिद्धवेत्तस्स पुन्वं परुविदत्तादे। सम्मामिन्छादिहाहि सत्ता र्णेण तिण्हं लोगाणमसंखेलदियागा, अड्डाइलादी असंखेलगुणी फीसिदी, तिरिपतीगल

सम्यग्नियथादृष्टि और असंयवसम्यग्दृष्टि जीवॉने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है लीकका असंख्यातवां माग स्पर्ध किया है ॥ ५ ॥

सम्पन्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोने अवीतकालकी अपेक्षा इत इन

आठ बटे चौदह भाग स्पर्ध किये हैं ॥ ६ ॥

[े] इस स्वका अर्थ कहते हैं —स्यस्यानस्यस्यान, विदारवस्यस्यान, वेदनालसुबल, कपायसमुद्रात और वैकियिकसमुद्रातगत सम्याभिष्यादि औषाँने सामान्यहोक जारि चार लोकोका मसंक्यातयां भाग लीर मतुष्यक्षेत्रसे असंक्यातगुणा क्षेत्र स्वर्गे क्यार्टी इसका कारण क्षेत्रप्रकरणाके समझ ही जानना चाहिए। स्वस्थानस्यान, विद्वारवस्त्रमन् षेद्रनासमुद्धात, कपायसमुद्धात, विक्रियिकसमुद्धात, मारणान्तिकसमुद्धात और उपनार्त्त प्राप्त असंयतसम्यग्रहरि अयिका स्पर्धान श्रेत्रप्रस्पणार्मे कहे गये अपकी स्परण करके इति चाहिए ।

यहांपर पूर्वस्वास 'साम्यामध्यादृष्टि और असंयतसम्यन्दृष्टि जीवाने कितना से स्पर्ध किया है ' इतने पदको अनुवृत्ति होती है । तथा 'अतीतकालसे ' इस प्रवण क्री मध्याद्वार करना चाहिए, क्योंकि, बोर्ने गुणस्थानोंके यतमानकालिशिए क्षेत्रका गाउँ प्रहरण किया जा चुका है। सम्यग्निष्यादृष्टि जीवोंने स्वस्थानकी अपेक्षा सामान्याहरू मादि तीन होकोंका असंस्थातमां प्राण, अदार्दहीयसे असंस्थातगुणा तथा तिर्पहोक्ष

र सन्यामणाहरुवश्चमत्रस्यारिकोक्स्यार्थक्वेवसागः वही वा चतुर्देशसाग देशेनाः। ह. हि. १, ६

६ मित्र "संविष् " इति पाढः ।

संरोजित्मानो । एत्य सत्याणसेचमेलावणविदाणं पुत्र्वं व कायव्यं । विद्वस्वदिसत्याण-वेदण-फसाय-वेदिज्यसमुम्पादगदेहि अहु चोहसमामा देवणा फोसिदा । एत्य देवण विपाणं पुत्र्वं व वचर्चः ।

असजदसम्मादद्वीहि सत्याणेण विष्टूं छोनाणमस्योजिदिमागो, अहारुआदो असंसेज-गुणो फोसिदो, तिरियकोमस्स संयोज्ञदिमागो । विरियकोमस्स संयोज्ञदिभागयेसुप्पापणे सासणमंगो । विदारपदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेजविन्य-मार्ग्यावेयसमुग्यादगदेहि अह चोरसमामा देखणा फोसिदा, उचार छ रच्यू, हेद्वा दो रच्यु हि । उच्यादगदेहि छ चोरसमामा देखणा फोसिदा, इंदा असंजदसम्माददीणं जववादसेचाणवर्णमदो ।

संजदासंजदेहि केवडियं स्तेतं फोसिदं, लोगस्स असंस्तेजदि भागो'॥ ७॥

सरवाणसरवाण-विहारवदिसरवाण-वेदण-कसाय-वेउव्यय-मारवातियपदाणं पञ्जव-

संस्थातयां मान क्यरी किया है। यहांपर क्वस्थानसेन्द्रेक किलानेका विधान पूर्यवत् ही करना बादिए। विद्वारपारवस्थान, वेदनासमुद्धात, कथायसमुद्धात और वैकिविक्रसमुद्धातगत सम्यग्निक्यारिह जॉमोंने कुछ कम साह कहें चीहह (हैं) आप स्पर्श किये हैं। यहांपर वैगोनका विधान पर्वेक समान ही कहना चाहिए।

ससंपतसायण्टि जीवाँने स्वर्थानकी संपेक्ष सामाग्यक्षेत्र स्वाद तीन होकोंका स्वसंपतवां मान, अदार्द्धांचेक्ष ससंस्थातगुण क्षेत्र यदि विवंद्धोक्त संस्थातथां मान रहाँ सिंदा है। तिवंद्धोक्क संस्थातथें मानकर क्षेत्रके उत्तय करनेमें सामाहनगुणस्थानके स्वयंत्व का मानकर सेत्रकर स्वयंत्व का स्वयंत्व क्षात्रक संस्थातथा सामाजन स्वयंत्व का स्वयंत्व क्षात्रक संस्थातक सामाज की वर्षात्रक सामाज की वर्षात्रक सामाज की स्वयंत्व का सामाज की स्वयंत्व का सामाज की स्वयंत्व का सामाज की स्वयंत्व का सामाज की अपयोष्य की सामाज की अपयोष्य की सामाज की अपयोष्य की सामाज की स्वयंत्व का सामाज की सामा

संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ! लोकका जसंख्यातवां माग स्पर्ध किया है ॥ ७ ॥

स्परधानस्वरधान, विहारवन्त्वस्थान, वेदनासमुद्धात, क्षायसमुद्धात, वैद्विषिकः स्परधानस्वरधान, विहारवन्त्वस्थान, वेदनासमुद्धात, क्षायसमुद्धात, वैद्विषिकः समुद्धात सीट मारणानिकसमुद्धात वदनत सेवतासंवर्तीकी वर्षावार्षिकनवसम्बन्धी स्पर्धान-

१ संबदासंबर्जनींक्स्वालंब्बंबमानः वद् चत्रवैद्यमाना वा देकोनाः ह ह. हि. १, ८.



रिन्तएगु पंचयु अहमांगमु अहाइजदीनेमु दोगु समुदेसु च अत्य, कम्मभूमिचादो । ' प्यासार्धकतिविकं समस्तकतितमिति ' एदेण सुवेण मन्झिल्लसेचकलमाणिदे सीलस-सचार्वासमागम्महिषचदुसहि-चदुसदरुवेहि जगपदरे भागे हिदे एनभागी आगच्छदि । र्षं रज्जपदरग्दि अविषय संरोहजंगुलेहि गुणिदे संजदासंजदसत्थाणरीचं तिरिपलोगस्स संरोज्जिदिभागमेषं होदि । सेसपदाणं रहेषमाणिज्जमाणे एगं जगपदरं ठविय संखेज्ज-एचित्रंगुरोहि संजदासंबद्दरसेघरस एगूणवंचासभागमेचेहि गुणिदे तिरिपलोगस्य संखे-स्रादिमानमे चराचे हे।दि । कथे संजदासंजदाणं सेसदीव-समुदेश संमवी है ण, पुन्ववेरिय-देवेहि तत्य पिचाणं संभवं पिड विरोधामावा । कथमेसी अत्यो सुनेण अकहिदी अव-गम्मदे ?ेण एस दोस्रो, सुचद्विएण 'वा' सदेण अयुचसमुख्यपद्रेण ध्विदचादी ।

धातकीर्षंड भीर पुष्करार्धं इम बढ़ाई द्वीपोंमें भीर लवणे।दृधि या काले।दृधि इन दो समुद्रौमें संपतासंपत जीव रहते हैं। क्योंकि, यहां पर कर्मभूति हैं। 'व्यासके आयेका यां करके उसका विगुना कर देनेसे विवक्षित शेवका समस्त शेवकल निकल आता है 'इस करण-स्त्रते मध्यवर्ता अर्थात् भोगभूमि-शतिबद्ध शेत्रका शेत्रकछ विकालनेवर जो प्रमाण भाता है यह सोल्ड बटे सचारंस भागसे अधिक बारसी बीसड (१६१३ई) इपॉसे जगपनरमें भाग वेनेपर उपलब्ध एक भागके बरावर होता है।

उदाहरण—मध्यम होजजलका ध्यास
$$\frac{1}{2}$$
; $\frac{2}{2}(\frac{3}{2} \times \frac{7}{4})^2 = \frac{2}{2}\frac{2}{2}$
 $\approx \frac{9}{2}\frac{2}{2}\frac{1}{2}$ $\approx \frac{2}{2}\frac{2}{2}\frac{2}{2}$

यह स्वयंत्रज्ञाचलके आभ्यन्तर मागवर्ती मध्यमक्षेत्रका क्षेत्रफल है।

इसे दक राज्यतरमेंसे निकालकर संख्यात भंगुलोंसे गुणा करनेपर तिर्पेग्लोकके संस्वातव भागभगण संवतासंवतांका स्वस्वानक्षेत्र हो जाता है। विद्वारवास्वस्थानाहि रोष पर्वेदा क्षेत्र विकालनेपर- एक जगवतरको स्थापित करके संपतासंपत अधिके रारीरकी कंबाईके उनंबास मागमात्र संस्थात सूच्यंगुर्होंसे ग्रुणा करनेपर तिर्यंग्होकके संबदातये मागमात्र क्षेत्र होता है।

द्यंता-भातुरोत्तरपर्यतसे परमागवर्ती और स्वयंत्रमाखलसे पूर्वमागवर्ती हो।

द्रीप-समुद्राँमें संयतासंयत जीवाँकी संभावना कैसे दे 🖁

समाधान-महीं, क्योंकि, पूर्वभवके वैशी देवींके ब्रास यहां छे जाये वये तिर्येख तंपतासंयत जीयोंकी संभावनाकी गपेक्षा कोई विरोध महीं है ।

शुंका-सूत्रके महीं बहा गया यह अर्थ कैसे जाना जाता है है

समाधान-यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, ख्यमें दिशत और अनुसन्त अर्थात नहीं ादे गये अर्थका समुचय करनेवाले 'बा' बाण्यसे उक्त अकाधित अर्थ सुवित किया गया है।

सक्तेडागमें जीवहाणे

मारणितियसमुम्धादगदेहिं छ चोइसमागा देख्णा पोसिदा । कुरो १ सव्यत्य होगणक्षे अञ्चर्मत अच्छिय मारणितियकरण पडि विरोहामावादो । केण छणा छ चोहमना १

हेहिमेण जोयणसहस्सेण आरणच्चुद्विमाणाणसुवरिमभागेण च । पमत्तसंजदणहुडि जाव अजोगिकेवरीहि केवडियं सेतं पो^{पिरं,}

रोगस्स असंखेज्जदिभागो^{*} ॥ ९ ॥

द्व्वद्वियणयमस्सिद्ण मण्णमाणे अदीद-बङ्गमाणकालेस 'लोगस्स असंसेज्बिर्माती इदि होदि । पञ्जबहियणए पुण अवलंबिङ्जमाणे अरिथ विसेसो । बहुमाणकालमामिन् पज्जबद्धियणयपरुवणाए खेत्तभंगो । संपदि अदीदकालमस्सिद्ग पज्जबद्विपरहर्व कीरदे । तं जधा- स्त्याणसन्धाण-विहारवृद्धिमत्याण-वेदण-कसाय-वेउव्वियतेज्ञाहारसमुखार गरेहि चरुष्टं लोगाणमसंखेज्जदिमागी पासिदी, माणुसखेत्तस्य संखेज्जदिमागी। विउच्दणादिइ द्विपचेहि माणुसखेत्तच्यत्ते अप्पट्टियममणहि रिसीहि अदीदकाल सर्वा माणुसखेलं पुसिञ्जदि चि ' माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिमागो ' इदि वयर्ण ण घडेरे ! ब

मारणान्तिकसमुद्धातगत संयतासंयत जीवाने कुछ कम छह यहे शाह (र्रा) भाव स्वर्ध हिये हैं। वर्षोंकि, लोकमाठीक मीतर सर्वत्र रहकर आरणानिकसमुदात बरनेहे हैं ने कोई विरोध नहीं है।

रीका - यहांपर यह छह यटे चौत्रह (र्ष्ण) आग किस शेत्रसे कम करना चारिय ! समापान-सुमेरले नीयेके एक इंजार योजनसे और बारण मन्युत विवासी

उपरिम भागसे कम करना चाहित।

प्रमणसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणशानकी

जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है है छोकका असंख्यातवां भाग स्पर्ध किया है ॥९॥

इत्याधिकनयका आश्रय छेकर स्पर्धानक्षेत्रके कहनेपर सर्तात और शर्तमानकार्य स्रोकक सर्वस्वात्यं भागश्रमाण ही स्पर्शनका क्षेत्र होता है। किन्तु पर्यापाँचनवर्ड म ख्डम करनेपर बुछ विदेशिता है। उसमेंसे वर्तमानकालका आश्रय करके वर्षावाधिकार सारकारी राद्यानप्रस्त्वणा करतेत्र क्षेत्रप्रस्त्वणांक समान ही स्वर्धानका क्षेत्र है। वर्ष धर्नातवास्त्रा माध्ययं सेकर पर्यापार्थकतपसम्बद्धाः स्पर्धानवी प्रदर्भा की जाती है। स इम भक्तर है— स्वस्थानस्यस्थान, विहारवत्स्यस्थान, वेदनासमुद्रान, इतावतमुद्रान, प्रिविचनमुद्धान, नेजनस्वरूपान, ।वहारवरूपरचान, धरनासमुद्धान, कार्यानन्तरं जीवीन सामान्यलीक आदि चार होकीका असंस्थानयां माग स्परी विवाद और मान क्षेत्रका संस्थानयां ग्राम क्ष्मतं क्षिया है।

र्देश--- विश्विपादि ऋडियाम और मानुवशेत्रके भीतर भवतिहत गुजरात कवियोंने सर्वातकालसे सालूर्य सालुवसेन वर्षात किया है, इसलिए भारत्यश्वात सा तवां मान स्पर्ध (हया है ' यह बचन घटित नहीं दोता है है

६ अवच्छत्रारीनावर्गत्रदेशावाराची क्षेत्रश्रात्तेत् । स. ति. ६, ८०

एम देगि।, उवति जोयणलकरपुष्पायणेण जोयणलकरप्रसेषयमणे संभवाभावादो। मेरुमत्यय-घटणसमत्याणिमधीय किमिदि जोयणलकरपुष्पाययेण संभवाश होद्र गाम मेरुपव्यद्देशे सा सची, ण सन्दर्य, "माणुसरोवस्स संखेन्बिदमाये " हिंद आहरियनपण्णाहाणु-वनकोदी। व्यवसा अद्देशकाल लिह्नियण्याणिकोहि सन्दे पि माणुसरोवस्त हुतिकब्राहि, सस्स माणुमरोक्षवयद्दारणहाणुबववीदो। सत्याये युग्न माणुकरोवस्त सहिज्जदिमागो पेव भौमिदी। जदि एवं, को पैनिद्यवितिकसाणं पि पुष्ववेतियदेशणं पयोगादो जोयण-स्तराणायणे पाविद है होद्दा, ण की विद्यालामा प्रतिविद्याला प्रतिविद्याला माणुक्तिस्त चुरुष्ट लोगाणाव-संतरजबिद्याला पोतिदो, याणुसरोवादो असंस्वेत्व्जाणो । मार्ग्यतियस्ति विद्यतेणास्स संस्वेत्विद्याला पोतिदो, याणुसरोवादो असंस्वेत्व्जाणो । मार्ग्यतियसिं हिस्स्वेत्व

र्शंहा-सुमेठवर्यंतके मस्तक (शिक्षर) पर खड़नेमें समर्थ ऋषियोंके क्या पर्व

साम योजन उपर उद्दर गमन करनेकी संभावना नहीं है ?

समापान—अले हैं। सुमेरपर्यत्रके ऊर्पायदेशों आपियोंने पमन करनेकी शांकि एही साथे, किन्दु मानुष्यंश्रके ऊरर एक लाल येहन उड़कर सर्यव्र नमन करनेकी शांकि मही है, अन्यपा 'मनुष्यक्षेत्रके संक्यातयं आपमें 'देसा मानायोंका यवन नहीं हन सकता है।

भयया, सतीतकालमें शिक्रियादि लिप्यसम्बद्ध सुनिवरीने सर्व ही मगुष्यक्षेत्र स्पर्ध किया है, वन्यया उसका 'मगुष्यक्षेत्र' यह नाम नहीं बन सकता है।

स्वरधानस्वरचानकी अपेक्षा उक्त प्रमत्तादि संवर्तीने मनुष्यक्षेत्रका संव्यातयां साग ही स्पर्दे किया है।

ग्रंमा — यदि वेला दै, तो पंचित्रिय तिर्वेक्षों का भी पूर्वभवे वेरी देवों के प्रवेशके यत छात पोजन करत तक जाना शक्ष होता है ?

सुमाधान — यदि निर्वचाँका ऊरर एक छाल योजन तक जाना आप्त होता है। ती होंथे, उसमें भी कोई होण नहीं है।

मारणस्तिदश्वमुद्धातगत उन्हीं श्रमसंध्यतादिकीने सामस्यक्षेत्र साहि घार छोडीं हा ससंय्यातयां भाग और अञ्चलक्षेत्रसे कसंस्थातगुणा क्षेत्र हम्झे किया है।

र्युक्त — मारणात्तिकसमुद्धातको प्राप्त प्रमुचसंवताहि गुप्परधातवती प्रविशेषा प्रार् गातिक स्व तिर्पात्रीकका संवयतियां प्राप्त, विर्पात्रीकसे संवयतियां भएषा भरावशात-गुणा वर्षो तर्रा होता है।

समाधान —यह कोई दोव नहीं, क्योंकि, एक छाल योजन ऊपर उड़नेकी श्वेरत एक छाल योजन प्रमाण गमन करनेकी उनमें संमाधना नहीं है।

१ त १ प्रती '- दुदेल प्रवर्धा', सं २ प्रती लग्यतीह प'- दुदेने जा सधी ' इंदि पाटा (१ त प्रती 'को कि', लग्यतीह 'को पि' इति प्रकः ह

ध्वनंदागमे जीग्डामं

[1, 1, 1,

ताव उड्डवट्टाणें पणदालीमजोयणलक्याविकर्ममानें समयरिमंडलर्गहिराणें स्वयन्त आयदार्गं सेचे निरियलोगस्स मैरोज्जदिमागी होदि, मैरोज्जपदर्गमुजमेनमेदिरमानन्ती ण च पणदासीसजोपणसक्यविक्रांभगंगोरजंगुलवाइन्तं भंगोरज्ञराजुत्रापद्कलकिक विमाणमेचतिरिच्छवहाणं रोचं वि तिरियतोगस्य मंगेवनिरिमागः। होदि, एदस पुतः रेक्चादो संखेजज्ञगुणहीणस्त निरियलागस्म संग्रेज्जदिमागगिराया । विमाणनिर्द्धिः असंशिक्तुववादमवणसम्मुहबङ्गाचेमु समृदिदेसु किया नं होत् ? ण, सेडीए अमेनेव्यरि

मागासंखेजजञायणहर्यसेचेचेसु गहिरेसु वि तदमंमगादी । सजोगिकेवलीहि केवडियं सेतं पोसिदं, लोगसा अमंतेजी

भागो, असंखेज्जा वा भागा, सन्वलोगो वा ॥ १० ॥

एदस्स सुचस्स बद्दमाणकालमस्सिद्ण परनविद्विययरुवणाए शैतमंगी। वरीर समापान - नहीं दोता है, वर्षोंकि, कपरकी ओर प्रवर्तमान, पैनालीस साम वीव

विष्कम्मयाने, समयरिमंडल आवारसे संश्यित, और सात रातु मायन, वेत मार्गाना समुद्रात करनेवाले प्रमचसंयतादि औयाँका क्षेत्र निर्यग्लेकका असंख्यानवी माग बहा हैन है, क्योंकि, यह देख संक्यात प्रतरामुख्याय जनभेणीके प्रमाण ही होता है। और न स्वा राजु भायत, तथा कस्पयासी विमानीके प्रमाण तिर्यक्रवसे प्रवर्गमान उक डीवेंका वृज्ञान छात्र योजन थिस्तार और संवयात अंगुल बाहस्ययाला मारणानितक्तेत्र मी वियत्वाचा संबंदातवां भाग होता है, क्योंकि, पूर्वोत्तः क्षेत्रसं संबंदातत्त्वो होन इस क्षेत्रहो विर्वेद्धान

संस्थातयां माग माननेमें विरोध बाता है।

१७२]

र्शका—विमानोंमें प्रतिष्ठित असंक्यात उपपादशस्यायाले अयनोंके समुख प्रकृति र्डक जीयोंके समस्त मारणानिकक्षेत्र संयुक्त करने पर तिर्यग्लोकका संख्यावयां मार्ग स्र महीं हो जाता है !

समाधान — मही, वर्षोकि, श्रेणीके असंक्यातवें भाग तथा असंख्यात योजन दिन्त क्षेत्रोंके प्रहण करने पर मी तिर्वेग्लोकका संस्थातयां मान प्राप्त होना ससंमध है।

सयोगिकेवली मगवन्तान कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका अमृत्याना

मान, असंख्यात बहुमान और सर्वेठोक स्पर्श किया है ॥ १० ॥ रस सुत्रकी यर्तमानकालको आध्य करके पर्यापार्थकनयसम्बन्धी सर्वतिकाल पणा क्षेत्रके समान है। अतीतकालको आध्य करके पर्यायाधिकनयसम्बन्धाः प्रस्ताती क्षेत्रके समान है। अतीतकालको आध्य करके पर्यायाधिकनयसम्बन्धाः प्रस्ताती क्षेत्रके समान के के कि क्षेत्रके समान हो है। यदोण बात यह है कि कपाटसमुद्रातगत केवलीझ हार्यक्र

६ प्रतिपु ' मं ' स्थाने ॰ यु ' इति माठः । क् मित्र " कंदपंच " शति पाटः ।

कारुमस्मिर्ण पञ्चरिद्वपस्चणाए खेनभंगो चेत्र । वन्तरि कनाडमरस्स पणदार्शन-जीयभवरदप्तस्तवाहरूले जगपदरमेगं कनाडसेचं होदि । अन्तरं णबिद्वीयणादरमहस्म-बाहरूले जगपदरं होदि । एवं देशिण कनाडसेचाणि मोर्लदे तिरियशीमादी संरोक्तगुमाणि । (चन्योयपरुचना सब्दा)

आदेसेण गदियाशुवादेण णिरयगदीए जिरइएसु विच्छादिई।हि केवडियं क्षेत्रं पोसिदं, स्टोगस्स असंकेच्जदिभागों ॥ ११ ॥

सत्याणस्त्याण-विहासबिसत्याण-वेदण-कसाय-वेडव्यिय-मारणंतिय-उपबादगहेहि मिन्यादिद्वीहि चदुण्डं लोगाणमसेरेज्जिदिमागो चडुमाणकाले पेशिदेर, माधुमराचादै। असरेरेज्जगुणे । सेसं राचभंगे ।

छ चोइसभागा वा देख्णा ॥ १२ ॥

सत्याणसत्याण-विहात्यदिसत्याण-वेदण-कमाय-वेडिन्सममुग्यादगर्दहि निष्ठा-दिह्नीहि अदीदकाले धरहपहि चडुण्डं सीमाणमस्तिन्त्रविमानी, माणुमरेत्वादी अमेरिजन-गुणो फीसिदो। पसी अत्यो सुचे अञ्चलो कर्ष परुविन्त्रवेद है जा, गुच्योण 'दा' गेर्च विलाशिस साम कोमन पारुवासाल कमामन्यमान क्यारदेश होता है। (यह कार्यानस्तिक्ता होता है। (यह कार्यानस्तिक्ता होता केव्यवीकी सपेसा जामना)। श्रीष्ट कुसा सर्थान् समुविष्ट केव्यवीक क्यारममुजानमा होन्स सप्ति सास वीमन वाहस्याली जमामसम्माण क्यारतम्बालस्वस्थापी क्यारीश्य होन्स है।

इस मकार दोनों कपाटहेशोंके मिला देनेपर तिर्पाशेक्त परणानगुण केंद्र है। (इस मजार कोधम्बदणा समाग्य हुई।) आदेशसे मतिमार्गणाके अनुवादसे नरकमतिमें नारदियोंने मिरपादटि श्रीकोंन कितना केंद्र दुर्परी दित्या है है लोकता अर्थस्यावयां माग स्पर्ध दित्या है।। ११॥

स्वरधानस्वरधान, विद्वारवारकश्यान, वेदनारागुद्धान, बचायसगुद्धान, वैश्विपन-समुद्धान, आरलागिनसमुद्धान और उपवार्षपत्न विश्वारिक श्रेवले स्थानस्वराद आहि चार होतीहा भ्रेत्वपातचा भाग और अनुष्यशेष्ठ स्विक्यात्वा शेष वर्गमावनस्य एर्पो किरा है। शेर कथन रोमकल्पणाके समान आस्त्र वारिय।

नारकी मिध्यादृष्टि जीवाने अधीवकालकी अवेका इछ कम छह करे कीहर

माग स्पर्श किये ई ॥ १२ ॥

द्यस्थानस्यरधान, विदारणस्यस्थान, वेदनासमुद्रात, व वायसमुद्रात और देशिहरू-समुद्रातमात भिरमाददि मारणी जीवाने अभीतवालये सामान्यत्ये द व्यादि बार हो। वेद ससंव्यातवो भाग और मनुष्यक्षेत्रस्य ससंव्यातमुख्या क्षेत्र वयस विवाह

द्यंका -- त्रमें मही बहा गया यह अर्थ बेले बहा जा रहा है ?

٠ ۽ مم

६ विकेषेन मामञ्जादेन वरणपत्ती वयनायी पृथित्या वाल्डेमापुर्देशस्य नेकें क्षणान्तेयसारः सूच. ३ छ. वि. ६, ६०

'समुच्चपहुण सचिदत्तादी । विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय वेउव्विय-खेतावि अरीरकारे तिरियलोगस्स संखेजजदिमागमचाणि किण्य होति चि बुत्ते ण होति, इंदर्यनेदीनर पद्मणाएडि रुद्धसव्यक्षेत्रसा तिरियलोगसा असंखेजनदिभागत्तादो। इंदर्यनेस्दीवद्व-पर्ण्यण्य संचरतेहिं णेरड्यमिच्छाइद्वीहि तिरियलोगस्म संखेज्जदिभागो किण्य पुलिज्जिदि ति बुत्ते व प्रसिअदि, शेरइयाणं परस्तिचगमणामात्रादो । परस्तेचगमगामावे विहास्वदिशत्वाचरम अमारो पसअदि सि बुचे ण पसिअदे, एक्कस्टि इंदर्ग सेडीबद्ध-पडण्गए च संहिर्गामागार-बहुविघविरुगमणसंमदारो । असंस्थेअजोपणमेनायामसेद्रीवद्ध-पर्ण्यया अत्य नि निर्तर छोगस्य संखेळादिमायो होदि ति णासंकणिकं, अवस्त्रे ज्ञायणायामेवेडीवद् परणपान पि तिरियलोगस्स असंखेअदिमागचादो । मारणंतिय उत्रवादपदेहि नेतहपमिन्यादिशी

समाधान---नदीं, क्योंकि, खुत्रमें श्यित और समध्यार्थक 'या' इत्रिने उठ भर्ध श्वित किया गया है।

र्श्वका - मतानकालकी प्रपेशा नारकी विध्यादृष्टियोंके विदारवास्प्रश्वान, देशनः समुद्द्यान, करायसमुद्द्यात भीर येत्रित्येकसमुद्द्यातसम्बन्धी सेन निर्वासीको संस्पनी भागमात्र वया नहीं होते हैं है

ममापान - नहीं होते हैं, वसाकि, हन्द्रक, श्रेणीबळ और प्रश्लीक नाहरिकी

इस भी मर्पक्षेत्र तिर्पेग्लोकका भनेवयानयाँ भागमात्र ही होना है।

र्द्धा-रन्द्रक, भेणांबद्ध और प्रकार्णक नरकीं संवार करनेवाले नारश विकार चीटरेंबि निर्यम्होकका संस्थानवां माग वर्षी नहीं स्वर्धी किया है

ममायान — मही दरश किया है, क्योंकि, मारकियोंका स्वशेषको छोड्डर बरोसी

शहब मही होता है।

र्दाद्या-परकेश्वमं समनका अवाय माननेपर विदारपण्यक्यानहा मनाप मान

ममायान - विद्वारवास्थानका भनाव नहीं मान्त होता है, वर्षीह, वर्ष है। होना है ! इन्द्रक, धेर्राबड या प्रदर्शिक नरकमें विश्वमान श्राम, घर श्रीर बहुन प्रवारक श्रिकी नरह सामव होनेने विद्यारक क्यानगढ वन जाता है।

र्भेडा - असंस्थान योजनवमाण आयामयाने शेपी बद और प्रशाणित मध्य होने हैं

इसंटिर निर्देग्टोलका संस्थातयां साम विद्याग्यान्यक्षातया क्षेत्र वत ज्ञाता है 🕻

ममायान - येमी थी आरोबा नहीं करना बाहिए, वयुंदि, अर्थश्यान वे हरे क्याज्यको अर्थाक्य और अर्थार्थक मन्द्र भी निर्यरशेषके सम्बद्धनार्थे संगमान है। हे नहीं प्राप्तकारम्बरमम्बर्गनः और उपर वृत्द्वालः सार्व्या मध्यार्थः वार्वे सर्वे स्वर्यः

[.] इ. इन्द्रित १ इन्द्रिय १ वर्षि पार्टर (

अदीदयाने ए पोदममामा देखना पोनिदा । उत्तवमार्व देखनतिन्तिज्ञोषनमहस्मं । तिरिक्स-परस्पाणं मन्दरियाम समनासमनामेशवी अत्य नि हर चोहनवामा होति, कर्ष देखनते है पुरपरे- विगाही जीवान कि महेडबी, बाही बहेडबी नि १ व साव बहेडबी, निवारण-प अध्यक्तिमादे। विदिधे कारणे वत्तव्यमिदि । कम्मे तक्कारणे, संसारिजीवसन्यावस्थाणे परमयादेशिकारणाणुपलेमादेश । सत्य वि आणुपुण्यिकामं चेत्र कार्या, अण्यासि सम्बन् पयरीयं पुष पुष कत्राणपुरलंभादो, बुल्कुनरमशीराणमंतरालरोत्ते आशुब्दीय विवामी है।दि सि गुरु रदेगाही या । आणुष्टि उदयामावे हि मुक्त हर्णतियाचियां यह मुबलंभादी णाणुप्रिवक्तं विश्वहे वि णानंकणिकं, तस्म तित्यवस्त्रेव ववासकाविवागाणुप्रविक फलचारो । अंगुलस्य अमंद्रोअदियागमेचबाइछतिरियपदरस्टि सेदीए असंखेलदिमागमेच-श्रीगादवशिषरभेदि गुणिदे तस्य अभिश्री सभी त्रविषमेत्राश्री गिरमगद्दवाश्रीगाणुपुन्त्रीए

तु जाम एट यदे थोरट (६) भाग श्यां विये हैं। यहांपर कुछ कामका समाण देशीन तीन हजार योजन है।

शंदा-तिर्वेच और नारविधोंका सर्व दिशागाँमें गमनागमन सम्भव है. इसलिए

पूरे एद पटे थांदर (कि) भाग ही स्वर्धन क्षेत्र होना चाहिए, किर कुछ कम कैसे कहा है समाधान-विषटगतिमें आंधोंके विषट क्या सहेतक होते हैं। अथवा महेतक है

भदेगुर तो मात नहीं जा खरते हैं, वर्षोंकि, विमा कारणके कार्य पाण नहीं जाता। यदि दूसरा परा प्रदण किया जाता है, अर्थान विप्रद सहेतुक होते हैं, तो उसमें कारण कहना चाहिए ! विष्टवा कारण कर्र है, क्वोंकि, संसारी जीवोडी सर्व अवस्थामीका कर्मकी छोड़कर और कोई कारण पाया नहीं जाता है। उसमें भी आनुपर्धातामक नामकर्म ही विभाइका कारण है, क्योंकि, अन्य सामी कहतियोंके युवक व्यक्त वार्य वार्य कारे करे विभाइका कारण है, क्योंकि, अन्य सामी कहतियोंके युवक व्यक्त वार्य वार्य कारे करे पूर्वदारीरको छोदनेके प्रधान और उत्तरहारीरको महत्त करनेके पूर्व अन्यराखयती क्षेत्रमें मानुप्रातामक्रमका वियाक (उदय) होना है, ऐसा मुददा उपदेश हैं।

द्वारा-आनुपूर्वानामकमेके उदयके नहीं होनेपर भी मारणान्तिकसमुद्वात करने-पाले और्थोंके विषद पांचे जाते हैं, इसटिए विषद आनुपर्वीनामकर्मका फल है. ऐसा नहीं माना जा सकता है है

ममाधान - वेसी आशंका नहीं करना शाहिए, वार्गिक, यह विषद तार्थकरमकृतिके

समाज जिन्ह भविष्यमें उदय दोनेवाले आनुवर्वीनामक्रमेका फल है 1

द्यंता-- सुरुवंगुलके असंस्थातवें ज्ञानमात्र बाह्रस्थवाले विवेश्यवरमें अर्थात राजके पर्तम् अत्रधेणीके मसंस्थानये भागमात्र भ्रयमहत्ताके विकर्ताति मुणा करनेपर पढाँ जो राति भर्षात् भाकात्र प्रदेशीर्का संख्या भाती है उतने प्रमाण नरकगति प्रायोग्यानुपूर्विकी महात्रेयां

रासंद्रापने जीवानं पपर्दाजो । सेने सेटीम् अमस्तिजदिमागमेचओगाइणविगणेहि गुनिदे तितिसमा

जेन्य पुरुशीत् पवितिवष्या होति । पनदार्तामञ्जेषणत्रकशाहरे तिरिवरहे मे

₹#**६**]

· . 4" BI

[8, 8, 88.

कराउछेदसम्बित्यस्ये मेडीम् असंक्षेत्रबदिमागमेचओगाइणविष्णेदि गुनिरे मनुस्की राजेन्य गुरुवार पपडिनियप्या होति । मश्बोयणमध्याहरूतिरियपरी नेरि असमेरक देस गमेन को गाउमियाचे दि सुनिदे देवगदिवाओं गाणुपूर्वीत वसितिगर हे ते वि बन्द-मुतारी अणुपुनियामं संद्वाणियाई योगि वामंक्रिकी शिले रोत महातेषु वासाम्य एकस्थेर वासामितिहामे । ते च आगामदरेमा एख भेर वर्षने होता है। करणे कमें जामिणीके समेवपानी सामसाव सम्माहनाके विकामीने गुला कारे का निर्माणिकान्यानुकूर्योके अवति विकास दोने दें। धैतालीय काण वेजन वादानगरे रिर्मान्त्रण क्राचंकापुक छेपनेथे निष्यम शेवकी जनश्रेमीके सर्मन्यानय सानगर करणा करेंद्रकरा से शुना करनेपर मनुष्यादि मारीत्पानुपूर्विके महति विकास है है है। की की चाकर कावश्ववाद विशेषवारमें समयेगीति संगेतमानयें साममात्र भगगातस विका^{ति} कुण्या चनकरण देवलरिकारोसप्यापुर्वशिक्षेत्र प्रदेशितिकस्य श्रीति हैं। इस वर्गनाचेटके स्वेरे क रूपमा कार्यु में स्था मामप्रामेची महाति संख्यात मर्मानु गुरुण दियाची ही है। क रणपण र - देशी और सार्राका नहीं करती स्वादिण, वर्गीहि, शेव भीर संशासी क्रमापुत क्रमां न क्राणी प्राणी: भीत पुत्रमाविताकी हीते बुद्ध भी जन्म मानुप्राविद्धप्ति वर्ष हैं अ देवें काफन आन लेनेने किया है। बुक्री बात यह भी है कि वे शावामें होते ले

क तर च करत दोवज अन्यत्वत्वकृत्यक रण ए जित्रियवस्याहि क्षणहृत्रामानि सि अस्टिईवर्र हैं करकान्द्रर १ म जन्म पानि इट. कि. हा इवनकाम हिन्द्रपुरम्ण क्षममानसम्ब व वाचिववर हेव हा है हैं all ber alte. Der be ben bal. genegenengen babettegt, uba gur beib! bet. क्षेत्र में लाव विराय में का का करत हुए हम है सब पूर्व विषय हुए हुने कार स्मार्ट अपने के गांध का गांध का गांध कर है के प्रकार के प्रशास के प्रकार के प्रकार के प्रशास कर के प्रकार कर के प्रकार कर क Actual or reserved to the country of the same seem and the fight AC SET AS SE ACT TO COT PLOTEST FOR CESSES OF SEE SEE SEE SEE क प्रभाग न्या केरण uer कार कार्यक्षाद्र हा त्र त्र का कि रावित पूर्व प्रशास है होती है होता है होती रेकर में भूगार हर और अग्रहाब्द रावमहाब्द्वित हैंद्र कि वहां ब्रोग है An expected a series received a series of a series of and of the

फीसणाणुगमे जैस्हयफीसणगरू वर्ण षि ण णियमो अस्थि, समयाविरोद्देण वैसिमवद्वाचारो । तदो आणुंबुटियविवागापात्रोगा-सेचे अवहामं उत्पाणपदम-बिदिय-विदेयवंकेस मत्यि वि देयण्यं पडदे । एसो अत्यो उनीर सन्वत्थ जहावसरं पहनेदन्ती ।

सासणसम्मादिद्वीहि केवडियं खेतं पोसिदं, लोगस्स असंक्षेज्ञदि-

भागो ॥ १३ ॥

एदस्स ध्रचस्त अत्यो खेचाणित्रोगहारे जो युची, सी बचव्यो ।

पंच चोहसभागा वा देस्णा ॥ १४ ॥

सत्याणसत्याण-विहारविसस्याण-वेदण-कत्नाय-वेउध्ययसमुग्पादगदेहि संम्मादिहीहि चंदुण्दं लोगाणमसंदेखदियागा, अहृहस्कादो असंदेकगुणा । वं जपा-णेरस्पाणं विलाणि संखेजजोपणवित्यढाणि, वि अस्यि, असंखेजजञोपणावित्यहाणि वि । तत्य जिंद वि चदुरासीदिलक्खणरहयावासा असंतेजजजीयणविश्यहर हाँवि, तो वि सम्बन् खेचतमासो विरियलोगस्त असंखेजजिदिमागो चेव जपा होदि, वचा वचहरमामो-

स्तान विदोषपर ही रहते हैं, पेखा नियम नहीं है। क्योंकि, उनका अवस्थान परमागमके

इसाक्षिए बाजुपूर्वीनामकर्मके उदयके समायोग्य शेत्रमें सवस्थान उत्पन्न होनेके प्रथम, द्वितीय और नृतीय विमहाँमें नहीं है, भता देशानता घटित हो जाती है। यह अर्थ ऊपर मी सर्वत्र यथायसर मक्त्रण करना चाहिए। सासादनसम्बन्धाः नावकियोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है है लोकका असंस्पान तवां भाग स्पर्ध किया है ॥ १३ ॥

इस स्वका अर्थ जो शेवानुयोगद्वारमें कहा है वही वटांवर कटना चारिए।

उन्हीं सासादनसम्बन्धीय नाराकियोंने अधीतकालकी अवेका इस कम पांच करे विद्व माग स्पर्ध किये हैं ॥ १४ ॥

रेयरपातस्यरपात, विद्वारणस्यरपात, वेदनासमुद्धात, कणायसमुद्धात, भार देशक. कत्तमुद्रातमत सामावनतायम्हि मारकियोने सामायताक मादि चार शोकींग वस तियों भाग और सदार्द्वापने असंक्यानगुका शेत्र स्वर्थी विधा है। यह इस प्रकार से हैं-दियोंके दिल संब्यात योजन विक्तुत श्री हैं श्रीर ससंख्यात योजन विकृत सी हैं। में यद्यशि चौरासी छ.स मारकियोंके भावास असंस्थान बाजन विस्तृत होते हैं, तो सी समस्त मारकापासँका शेव-समास वर्षान् रावांन आहे सिर्यन्तेवका असेकानको साम

णिरयावासा के वि परिमंडलायारा, के वि तंसा, के वि चउरंसा, के वि पंचेता, के िर छंसा । एदे सञ्चे वि समीकरणे कदे चउरंसा असंखेज्जजोयणवित्यडा होति । स^{यतः} णेरइयरासिणा घणेगुलस्स संखेज्जदिमाने गुणिदे वट्टमाणकाले णेरहएहि रुद्धेतं होरि। वटमाणे णेरइयरुद्धिलस्यविलमागादो अरुद्धमागो संखेज्जमुणो चि संखेज्जस्वेहि गुणिरे णेरहयाणमदीदसत्याणसेचं होदि। तेण विरियलोगस्स असंस्वेज्जदिमागतं ण विरुत्तरे। एवं ' या ' सदद्धचिदस्स अत्यस्स परूनणा कदा होदि । साम्रणस्स णिरयगदीए उन्नारी णत्यि, सुत्तवितिसद्भादो । मारणंतियससुम्बादगदेहि पंच चोदसमागा पोतिदा । इरो ! सत्तमपुदर्वीदो सासणाणं मारणंतियकरणसंभवामावा । तं कुदो णव्बदे ? एदम्हादो वेर सुत्तादो णब्ददे ।

सम्मामिच्छादिष्टिः असंजदसम्मादिद्वीहि नेवडियं स्रेतं पोसिदं लोगसा असंखेज्जदिभागो ॥ १५ ॥

नारिकयोंके आयास कितने ही तो योल आकारवाले होते हैं, कितने ही तिकेंक कितने ही चतुरकोण, कितने ही पंचकोण और कितने ही नारकावास पदकोण होते हैं। त समी बाकारायाले नारकापासोंके समीकरण करनेपर वे बनुरस्न भीर मसंस्थात वोज विस्तृत हो जाते हैं। सम्पूर्ण नारकराशिले धनागुलके संख्यातथे भागको गुणा कानेत यर्तमानकालमें मारकियांत करा क्षेत्र होता है। यर्तमानकालमें नारकौदारा रोके इर महर्षे दिल-मागते मध्दमाग संवयातगुणा होता है, इसलिए संवयात क्योंसे गुणा करनेपर बार काँका भतीतकालसङ्क्यी स्वस्थानक्षेत्रका प्रमाण हो जाता है। मतः तिर्याक्षेक्रका प्रम चयातवां भाग (जो ऊपर स्पर्शन क्षेत्र बताया गया है, यह) विरोधको नहीं प्राप्त होना है। इस प्रकार 'या ' दान्यसे स्थित अर्थकी प्रक्रपणा की गई है।

सासादनसम्बन्दिए जीयका भरकगतिम जपपाद नदी होता है, क्योंकि, इत्र गुजम प्रतिपेध किया गया है। मारणान्तिकसमुदातगत सासावृतसम्पन्तिवृत्तं वाह हो चीदद (रो) माण स्पर्श किये हैं, वर्गोंक, सातर्ग पृथियीसे सासादमसावताहिकी मारणान्त्रिकसमुद्धात धरना संगव नहीं है।

शंका - यह देशे जाना जाना है !

ममाधान—इसी दी ग्रूबसे जाना जाता दे कि सावधीं पृथियीके शासारमतानती नारची मारवान्तिकसमुद्रात नहीं करते। (यदि करते होते, तो प्वम छर बटे बीहि (it) गुरुपानिष्यादृष्टि और अर्भयवसम्पन्दृष्टि नारकी श्रीयाँने कितना धेर तर्प क्षात्रे स्पर्धका उत्तेच होता है।

हिया है ! सोकका असंस्थातको माग स्पर्ध किया है ॥ १५ ॥

सत्याणसत्याण-विहासविदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेउन्यिसमुग्पादमदेदि सम्मा-विद्वादिक्ष्यां क्ष्यादिक्ष्यिक्ष्याम् विद्वादिक्ष्याः विद्वादिक्षयः विद्वादेक्षयः विद्वादेक्षयः विद्वादेक्षयः विद्वादेक्षयः विद्वादेक्षयः विद्वादेक्षयः विद्वादेक्षयः विद्वाद्वादः विद्वादः व

विकासमुद्रालयत सार्यान्यस्थाति भीर कांच्यतसम्बान, करायसमुद्राल और दितिकांमान्यस्थात सार्यान्यस्थाति भीर कांच्यतसम्बद्धाति कारणी अभिने वर्गमान्यस्थे
कांमान्यस्थोत् कांचि वार होण्डोंका कांक्यानवं मार्ग और कांग्यसमुद्राल कांच्यानवर्गने
देवर्ष विद्या है। इसका कारण केंक्यक्रणाली तिव्य है। कांग्राम्यस्थे कांद्रानामुक्त देव पुणक्पानवर्गी नार्यः अभिने एक्ष्र दोनों वर्षेक्ष अध्या सामान्यस्थे कांद्रा ति हो होने प्राव्यानवर्गी नार्यः अभिने एक्ष्र दोनों वर्षेक्ष अध्या सामान्यस्थे कांद्रिक कांद्रा कांद्रा कांद्रा कांद्रा कांद्र कां

यगदिसाए वियदगमवादोः तिरिच्छं गच्छमावार्णं वि जीवावमप्त अष्णदिसाणं गमणाभावादो, उप्पञ्जमाणदिसं गर्छताणं वि माणक्षेचसमाणद्वाणमपानेद्व अंतराले सन्वरय उज्जवलणीमायाः हिता माणुससेचमागुच्छताणं सम्मादिद्वीणं णिरयात्रासप्विद्धिः चदुण्हं सोगाणमसंखेज्जदिभागे। चेत्र । अथवा णेरहयसम्मादिहः (व) पणरञ्जवदरसञ्जागासपदेसीहतो (ण) णिग्गमणमरिय, चेरह्यपडिबद्धार्णं मणुसगङ्गाओग्गाणुषुःचीर्णं तिरिक्सगङ्गाओगगाः गासपदेसाणं रज्खपदरान्हि सन्वरयामावादो । कि तदमाविताम ?

समीकरणे करे जिंदे एक्क्लेरइयाबासिवक्संमी एगसेति भेडिविदियः होदि, तो तस्स सेनफलं जगपदरं सेदियदमवगगमृलेण खंडियमेन काले तत्य द्वार्ट्ण उर्द्व मारणंतियं मेरलंताणं एदं खेनफलं सुहं बनका गमन एक दिसामें ही, अर्थान् उत्पत्तिक्षेत्रकी और ही, नियत है भीमन करनेवाले भी जीवाँके अपनी उत्पन्न होनेवाली दिशाकी छोड़कर का

मही होता है। उत्पन्न होनेकी दिशाकी जाते हुए भी जीगोंके सपने उत् हामान धार्य स्थानको नहीं प्राप्त करके सम्तरालमें सर्थेत्र जानुपसन । बक्ताति होनेका भमाय है। इसलिए समी नारकायासीसे मनुष्यक्षेत्रके नारकावासम् प्रतिशित होते दूर नियत शेवकी सीर प्रयनेतान सम्यक्ति सामान्यतीक मादि बार श्रीकीका मसंस्थातवी माग ही है। बदवा, प्रजुत्वीमें इन्द्रज्ञ होनेके कारण नारकी सम्पादिएयोंका वहकि हाजान धनराज्ञानरहे गर्वे भाकाशायरेगोंसे निर्ममन नहीं होता है, व्योठि इतिबद्ध हतुष्यमित्रायोग्यातुपूर्वायात्र औषांक निर्वमातिवायोग्यातुप्रवियतः अ श्रीवृद्ध बाहारा बहुराहित राज्यनरमें सर्वत्र भमाव है।

र्वेहा—१स सर्वत्र ममावहा दिंग क्या है, मर्योत् यह किम मापारसे समाधान-इक ब नहा बनानेय सा यही स्परीनगरू है।

छ-विद्यस करनेपर यदि एक मारकायासका थिकान एक मणनेपीकी दिल्लीय बरोब्राम्स महिन करमेपर यह मह साथ दीता है, में इमका सेवरण

क्षण कान्या कान्या कान्या वर्ष का साथ हाना है, मा इसका धावाण . इसम कान्या अग्रामाण्डा कहिन कानेपा यह बंह मात्र होना है। पुन सर्ग get edas Blagt file filentinientung andning है ता है के व क्कृतन्त्र शहरमाण वामास काक दे

आपामा होदि । एत्य उसमेषेण खेषकर्क गुणिदे विरियकागादी असंसेज्जगुर्ण मारणंतिय-लेर्स होदि वि पूर्व ण होदि, शिरपायाशो ण एको वि एरिसविवस्तंत्रसिक्षो अरिय । क्रमेस्ट्रं परिन्धिज्जसे ? 'बेरस्या असंजदसम्मादिष्टी सम्बप्देशि अदिदकाले विरियकोगस्स असंस्वज्जदिमागं पूर्वति 'वि गुष्ठवयणादी । केषित्रो पुण बेरस्यावासाणं विवसंसो होदि वि पूर्व असंस्वज्जनेयणमेषो होदि । वं बहा- सग-सगसरयाणवेषे दृतिय सग-सगिरित-संसाप औवष्टिदे एगिकेल कहरेपचमसंस्वज्जवेषणविवसंसामामे होदि । संस्वज्जर-जृदि गुणिदे व्याविकसंसद्व मारणंविषयेषं होदि । वर्द विस्तंताए गुणिदे व्यवसं मारणंवियदेशे होदि । यदं विरियकोगस्म असंस्वज्जदिमागं होदि । सन्योक्स्या-पासाणं सादक्रसम्बेरिक्जज्ञोयणमेणं हेन्द्र्ण वपर्यव्जवस्तान असंस्वज्जदिमागमेणं चेष होदि । इरो १ 'असंजदसम्मादिष्टिमारणंविषयोसणं विरियकोगस्स असंस्वज्जदिमागमेणं चेष

ग्रेहा—यहाँपर मर्थात् उक्त केश्में उत्सेधसे केश्वकलको गुणा करने पर ती तिर्याक्षेत्रसे मसंबदातगुणा मारणाभिकस्त्रेत्र हो आता है है

समाधान-नहीं होता है, क्योंकि, इस प्रचारके विष्क्रमधे सहित एक भी नारका-

र्मका-पर केंस जाना जाता है है

समापान — 'मारको मसंयतसम्याकीट सर्वपर्येको भेरेशा सतीतकासमें तिवेग्लोको ससंस्थातमें माणमाच क्षेत्रको स्पर्ध करते हैं ' इस मकारके स्वत्यवस्य उक्त बात जानी जाती है।

र्यका-नारकोंके भाषासीका विष्यम कितना होता है !

समापान — असंक्यात योजन प्रमाण होता है। यह इस प्रकारसे हैं — अपना अपना स्यरधानसेन स्यापित करके अपने मणने दिखोंकी संक्यामेंसे अपवर्तन करनेपर एक निजसे उन्होंने असंक्यात योजन विष्क्रम और. आधामपानर हो जाता है। उसे संक्यात राजुमांसे गुणा करनेपर यह दिख्य आध्य करके आरणाधिकसमूद्रातमन क्षेत्र हो जाता है। इस प्रमाणको विजीती संक्यात गुणा करनेपर सक्त आरणाधिकसोंद हो जाता है। यह भारणाधितकसेन तिर्पेग्लोकके असंक्यातर्थे आगयमाण होता है।

सर्प नारकाणासीना चनपाल असंन्यात योजनप्रमाण होकर भी पक राज्यस्तरका मसंस्थातवां मागमाच हो होता है, चर्चारेंक, 'सस्येतस्तरवादि नारकांका मराजातिकः पर्यान तिपंत्रोक्क सर्वक्यातवे भाग होता है 'येला चुरन्वकव है। यदि कहीं भी पक विकास देवनल प्रमुक्तरके संस्थातवे आगममाण होता, तो ससंयवस्थापनहि नारकों

तो असंजदसम्मादिद्विमारणंतियणेसणं तिरियलोगादी असंखेळाणुणं होह, तिरियल्यं वाहछादो मारणंतियखेचवाहरूलस्य असंखेळाणुणचादो । पदमपुद्रविसत्याण्येषं स्वेत्र संखेळादिमारोगं गुणिदे असंजदसम्मादिद्विमारणंतियणोसणं तिरियलोगादो असंबद्धकं होदि ति के वि पञ्चवहाणं कुणित । तण्य यहदे, सत्याणखेचं वितसलागाहि असंबद्धकं सदस्य वरमामृलविक्संभेण अद्धरुज्जआयामपोसणविस्तुवलं नादो । ण उद्वं गत्य वित्तं स्वयं पञ्चे गत्य वित्तं स्वयं पञ्चे प्राच्छेताणं वहुपोसणं, तिरिच्छं गंत्य वित्तं पञ्चे गच्छेताणं वहुपोसणं, तिरिच्छं गंत्य वित्तं पञ्चेताणं वहुपोसणं, वित्तं प्राच्छेताणं वहुपोसणं, वित्तं प्राच्छेताणं वहुपोसणं, वित्तं प्राच्छेताणं वहुपोसणं, वित्तं प्राच्छाताणं वित्तं प्राच्याणं, वि

पटमाएं पुटबीए णेरइएसु मिन्छाइड्डिप्पहुडि जाव असंजदसमा दिड्डीहि केवडियं सेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंसज्ञदिमागो ॥ १६॥

सरयापासस्याण-विहारविदसस्याण-नेदण कसाय-वेउडियय-मार्ग्गतिय-उवनार्कः मिच्छादिद्वीणं परुवणा बङ्गाणकाले खेचसमाया । सस्याणसस्याण-विहारविदसस्यान नेर्कः कसाय-वेउटियसमुग्यादगदेहि भिच्छादिद्वीहि अदीदकाले चदुण्डं लेगाणमसंसेजिदिमाने

मारचानिकहरदीनक्षेत्र विधन्तीकले मल्यातगुणा होता, क्योंकि, तिर्वव्यतरे बाहाने मारचानिकरोत्रका बाहुक्य मल्यायातगुणा है।

प्रचम गृपियों हे रक्ष्यानश्चेत्री वाग्नेजों संक्षानये मागसे गुणा करनेर सर्वान स्वान गृणा करनेर सर्वान स्वान होता है, देवा स्वान होता है, देवा स्वान होता है। किन्तु वह चटिन नहीं होता है। व्यान होता है। किन्तु वह चटिन नहीं होता है। व्यान हित्त होता है। किन्तु वह चटिन नहीं होता है। व्यान हित्त होता है। किन्तु वह चटिन नहीं होता है। व्यान करते स्वान
क्षां अवाद कार्याम्य पात्रा जाता इ । वृत्तां अवाद साम्युग्यस्यादिक भीर सर्वयम्यव्यव्यक्ति जारवीते व्यव वृत्तेवश ही

प्रयम पृथिशीमें नागिहयोंने निष्याद्दि गुणस्थानों तेकर अमंपननापारी नागदी बीशीने किनना क्षेत्र राग्नी हिया है है लोकहा अमंत्यावती माग सर्व कि

म्बन्धानम्बन्धान, विदारणन्वरमान, वद्यान, बर्गान, विदियक भीर झारणां।। समुद्रात मया त्रणाद्यान निर्णाद्यंत्र सारकार्यः वर्गमानद्याद्यः वय्योननद्यास्य स्वत्यास्य सम्बन्धः १ : क्वन्यानस्वरूपान, विदारणस्वरूपान, विदान वयाय, और शैक्षितद्याद्यानस्य विश्यपद्धि नारकार्यः अर्थनद्यात् स्वामान्यस्यादः साद्यास्य साधानस्य स्वामान्यस्य भीर भदार्रद्वीपसे ससंच्यातम्मणा सेन रपरा किया है। इसका कारण यह है कि ससंस्थात पोजन विकासमाले मारकायासोंके पनकारको स्थापित करके तामायोग्य संख्यात विवासला-कामोंसे मुख्य करनेपर तियंग्लोकोक ससंस्थातमें सागनमाण शेन उपलाप होता है। मारणानिकसमुद्रात भीर उपपादात विध्यादिश नारकोने भतीतकार्य सामाय्यलेक माहि तीन लोकोचा ससंस्थातयां माग, तियंग्लोकका संस्थातयां याग भीर सङ्गादीपसे मसं-स्थातम्या केन स्थापित हो।

श्रीका - यहांपर तिर्पेग्टोकचा संख्यानयां मार्ग कैसे कहा है

समापान — पक लाज करती हजार योजन अयम पृथियकि बाहरवर्मि नीचेका पक हजार योजनप्रमाण होत्र नाराकेशीन किती भी समय नहीं तुमा है, पेता करके उस मामापमित पक हजार योजन निकालकर शेर वक लाज बन्याती हजार याहत्याले राजु मामापमित पक हजार योजन निकालकर शेर वक लाज बन्याती हजार याहत्याले राजु मतरको राज्याति वर्षो उत्तेवार तेती है, पर्याकि, पक राजु देवाला, सात राजु छावा भीर पक लाज देवाला, सात राजु छावा भीर पक लाज योजन बाहत्याला विध्योशक हैं येला वर्षो परि मुं को मामाप्य पक लाज योजन बाहत्याला विध्योशक हैं येला वर्षो हो मामाप्य पक लाज योजन बाहत्याला विध्योशक हैं येला वर्षो हो मामाप्य होते हैं, उनके वर्षो होता विध्योशक स्वत्याल स्वत

दिशुपूर्य — यहां वर प्रथम वरकते विष्यादृष्टि खींषांचा भारणानिक भीर उपराद् क्षेत्र तिर्पेरतोकका संव्यावयां भाग इस महार सिद्द किया गया है —यदि इस तिर्पेरहोक्के एक रातु रूपने पींडू प मोटाईके सत्याद्या समाण मोट खंड करें तो १९५५ थे प्रेमन मोटाई-याते १५. खंड होते हैं। अब यदि एक ट्याल यस्सी हजार पोजन मोटी भीर एक राजु इन्हारी चीड्डा प्रयम पृथ्यीके अमाणमेंसे नारकियांसे खदैय मस्टूष्ट एक हजार पोजन मोटा ण च एदं घडदे, एदम्हि उनदेसे पडिंगाहिदे लोगन्हि निष्णिसद-तेदालमे वचनर न्यूचन णुप्पत्तीदो, ' रुज् सत्तमुणिदा जमसेढी, सा विम्मदा जमपदा, सेढीए गुणिदकापरी घणलोगो होदि ' नि परियम्मसुनेण सन्बाइरियसम्बदेण त्रिरोहप्तसंगादो च । कर्तुमीर

अपस्तन माग पृथक् करके दोप १७९००० योजनके एक राजु छन्ने चौडे ४९ **बंद करें ते** प्रत्येक संदर्भ मोटाई ३६५३ है योजन प्रमाण होगी जो पूर्वेज तिर्धाहिक खंडी मोटाईले लगमग चतुर्थांश पहती है। इल प्रकार यह समस्त क्षेत्र तिर्यतोकका संज्यानवी माग सिख हो जाता है। किन्तु लोककी मृत्गाकार मान्यताके बतुसार उक्त क्षेत्र तियांशेका संबदातयां माग नहीं, किन्तु तिर्यंग्लोकले भी अधिक पड़ जाता है, क्यों कि, यह यह सह म्यासयाले गोल तथा यक लाख योजन मोटाईयाले तिर्यंग्लोकके पूर्वप्रकार ४९ कंड करें तो प्रयेष संड एक राजु ध्यासयाला गोल सचा २०४० हुँ योजन सोटा होगा । इसी प्रकार वर्तुजाबार होककी मान्यताले उक्त मारणानिकक्षेत्रके अंड भी एक राजु ब्यालयाले गोल तथा १५५३। योजन क्रोटे होंगे भीर उनका समस्त घनफल पर्तुलाकार तिर्घरलोकके घनफलसे द्वान न रहका श्राधिक हो जायगा !

उदाहरण-

(१) भाषत चतुःक तिर्थकोक १×७×१०००० यो. = १°× १०००० × १९

5,× 506'000 × 86 (२) उक्तः मारणान्तिकशेष १×१×१७९०००=

(३) वर्तुलकार तिर्पेग्लोक १×३ x र प्रे × १००००० = - हे × १०००० x पर्

(w) वर्तुमादार शोकरी भाग्यतासे उक्त मारणाग्तिकसेय- $\frac{R}{g} \times \xi / d^{2} \circ \circ \circ = \frac{R}{g} \times \frac{R_{0}}{\xi / d^{2} \circ \circ \circ} \times \frac{\xi}{R_{0}}$

इस प्रवारके उक्त क्षेत्रोमें प्रथम दूसरेसे १३१ = ११६१ = कुछ क्षम चौगुना प्रयोग

संच्यानगुणा सिद्ध होता है। तथा, थीया तीसरेस कुछ कम तुगुणा अर्थान् सानिरेड कि होता है। हिन्तु यह घटिन नहीं होता है, क्योंकि, इस उपदेशके न्यीशार करनेपर होता

बाराव टांवसी देनारील घनराजुमीची जनात मही होती है। दूसरे, " राजुबी सात्मे दुन बरते बर अगोर्जा होती है, अगोर्श्वाही अगोर्श्वामि गुजा बरते पर अगार्थत होती. बीर जनप्रमान्दी जानेप्रणील गुना चरने पर धनलोच होता है ' इस सर्व आयापित नाम दरिवर्त सूचने विशेष यी प्राप्त होता है । वंबीन्द्रवर्तियं, वेबीन्द्रवर्तियं

पंचेरियांतियं योनिमती, ज्योतिष्य भीर व्यन्तरदेवाँके नुराध्याप्य-सिक्ष, इन्तपुन्यसारियाने स्वयारकाशींके सहत्युम्य अनावसर्व्य भाग देने पर ये क्या सार्वाच लोहर हो आवेती, विन्तु रिसा है नहीं, प्योंकि, यन आवेंके छेद्दका समाय है। (इत्त्युश्य स्वारि शाक्षिणेंके लिये देखी तीलार भाग रू. २४९)।

दूसरी बान यह है कि द्रश्यानुवेशनहारके ब्यावशानमें करे शेथ अवकान और ज़परिम विकस्य अभावको माध्य होते हैं. वर्गोक, उन्न प्रकार से लोक वर्गविद्दीनशीक्षित सनुस्वल होता है।

र्श्वका -- तीन की तेवालीस धनशत्रुधमाण क्षेत्रका नाम उपमालेक है। इसने धन्य पाँच हम्बोका आधारभून क्षेत्र भिव है। यदि देखा माना आप, ता यह सह उपर्युक्त कथन

,घटित है। सकता है है

समापान — मही, वर्षोकि, उपनेवकि कामावर्षे उरमार्थः करवार उपलियं वर्षो होगी है। मर्पानं परि उपमार्क वेगव किसी प्रश्निक कांगिन क माना जारणा, ते विश् उपमार्था सार्थिकता कहाँ पर होगी। है इसीलण उपस्थानेगुक भीर प्रवालोगुक की रुक्त के विक है रिक्स उपनेविकि तथा परियोग्न और सारिशिया संविक बालकर वर्षमेगोंके विद्यान होने वर उपमार्थ असीपानिक, प्रमाणां कुल एक और सागस्त्र महीनण पांचा माना है। अनवह वर्षो एक भी उपनेवर्षक कोन्ते, नामा प्रमाणकी कांग्रस उपमालेशकर अनुसरण कांग्रसण वर्षेण हार्योक्त भाषास्मृत कोक होना वार्षित्य, भाषवा दलका लाम उपनाला हरे सरी सर्वन ।

क क्षेत्र प्रतिविश्व के विद्योगितकारम्य वृद्धि देव नित्वकार नमे वृद्धि वृद्धि स्वत्व वृद्धि
साराणसम्माइद्वि-सत्याणमत्याण-विहास्यदिमन्याण-वेदण-कमाय वेदणिक सर्व तियसमुग्यादगद्शेचपरूचणा वर्द्धमाणकाने रोचममाणा। मृत्याणमन्त्राण-विद्यासम्बन्ध वेदण-फसाय-चेउव्यियसमुख्यादगँदि साग्रणसम्मादिद्वीहि अदीदकाने चदुर्ख केसान संसेन्जदिमागो, माणुसरोचादो असंसेन्जगुणा फोसिदो। एत्य पण्डनहियपस्त्रमा निक

विशेषार्थ - यहाँ घवलाकारने लोककी वर्तुलाकार मान्यताके विरुद्ध गांव हेन् हिं

है। जो इस प्रकार हैं--(१) प्रथम पृथिवीके मिण्यादिष्ट जीवींका मारणान्तिकक्षेत्र तिर्वंग्टोकका संस्थात्व माग कहा गया है। किन्तु यदि छोकको आयनचनुरस्त्र न मानकर वर्नुलकार सन्त अपे तो यह क्षेत्र तिर्थग्लोकसे द्वीन नहीं किन्तु साधिक दो जाना दे। (देखी ए. १८४)

(२) परिकर्ममें राजु, जगसेणी, जगमतर भीटलोकदा सम्बन्ध वनलाकर सननोक्से ३४३ राजुममाण सिद्ध किया है। यह प्रमाण च व्यवस्था बर्नुलाकार लोकमें नहीं पार्र अली।

(३) खुदावधमें पंचेश्वियातियंच, पंचेश्वियतियंचपर्यात, पंचेश्वियतियंच योनिमनी, ज्योतिषी और व्यंतर देवोंके अवदारकार्टीको छत्तयुग्मराश्चि अर्यान् चारसे पूर्णनः माडिन होनेपाला कहा है, और इनसे जगमतर निरयशेष भाजित हो जाता है, जिससे जगमतर मी कृतयुग्मराशि सिद्ध हुमा। किन्तु यतुलाकार छोककी मान्यनामें जगमनर महत्युमान पहेगा किससे उक्त अवहारकालाँद्वारा यह पूर्णतः माक्रित नहीं होनेसे वे पंचित्रिय विक्न, पर्याप्त, योनिमती आदि राशियां संछेद् हो जाती हैं।

(७) द्रव्यामुयोगद्वारके व्याक्यासमें ग्रुणश्यामों य मार्गणास्थानोंके मीतर जीवी प्रमाण उपरिमाधिकस्य और अधस्तनधिकस्यों द्वारा भी समझाया गया है। किन्तु यहि होहहें डक प्रकार बर्तुलाकार मान लिया जाय तो उसमें वर्ष व वर्गमूल प्रमाण नहीं प्राप्त होने

, में विकल्प यन दी नहीं सकेंगे। (देखी तीसरा भाग, प्रस्तावना पू. ४८)

(५) यदि यह कहा जाय कि शीन सी तेतालीस राजुममाणयाले होकको हम्मान होक न मानकर केवल करिपत उपमालोक है। माना जाय, तो यह मी ठीक नहीं है। स्थाप उपस्यके अभावमें उपमाका अस्तित्व ही नहीं रहता है। तथा अंगुल, परयोपम, आदि जो अन्य उपमाप्रमाण माने गये हैं उन सपके आधारुप उपमय प्रत हैं। बह प्रमाणलोकको भी कास्पनिक न मानकर सोएमेय ही स्थीकार करना बावस्यक है।

स्यस्थानस्यस्थानः विदारवास्यस्थानं, वेदनां, क्यायं, विक्रीयकं और मार्स्णातिकः समुद्धातगत सासादनसम्बन्धि मारकी जीवाँके वर्तमानकालिक स्परानसेका वर्दा क्षेत्रग्रहणणके नामकी सेपमस्पणाके समान है। स्वस्थानस्वरुपान, विद्वारवत्स्वस्थान, वेदना, बनाय और बीर पिकसमुद्धातगत सासादनसम्पन्दाष्ट नारको जीवान वरतितक्षतम् सामान्यलोक शाहि वार होर्ह्योका स्रसंस्थातवां माग और मनुष्यक्षेत्रसं असंस्थातग्रुणा क्षेत्र स्पर्ध किया है। वर्ष स

१ व-६ प्र.योः ' अदीदकांडे ' इति पाठी नारित ।

दिद्विसमाणा । मारणेतियंसमुग्यादगदेहि विष्टं लोगाणमसंसेठजदिमागो, विरियलोगस्स संसेज्ञदिमागो, माणुससेचादो असंसेठजमुणो फोसिदो । एत्य कारणं मिन्छाद्र्द्दीणं व वर्चन्द्रं ।

सम्मामिन्द्यादिहि-जसंबद्धम्मादिद्दीणं अपणे सन्यपदाणं बद्दमाणकाठे सेष-भेगो । एदिहि देखि युण्डाणिह अदीदकाले सत्यायसत्याण-विद्वादितराण-वेदण-कसाय-वेउन्यितसहम्बादाशदेहि चदुण्डं लोगाणमसंबीज्वदिवागी, अद्वाद-वादी असंतर्य-गुणो फोसिदो, एगाजिररावाससस्स असेवेआध्येगुल्लाण द्रविय तप्पामोग्गादि संतर्य-विद्य-सलागाहि गुणिद तिरिसलोगस्स अमेखेआदिवागमेचदंशगादी । मारांगिय-व्यवादगदिहि असंबद्धसम्मादिद्वीदि चदुण्डं लोगाणमसंबीज्वदिवागो, अद्वाद्य-व्यव्यादिक्षाण्ये पादिदेश इदे । सद्दुच्येनदुवाद्याणं राद्यक्षकस्य विदियलोगस्य असंबेज्जदिमागपुष्ठंवादि । बादि वि वद्वं गेत्य सत्तरिव्यग्यमुश्विषक्षेत्रम सक्तुस्य गयदिल वि शिरियलोगस्य-संव्यवस्यागो, तिरिच्लेण कद्वसेषस्य विलक्षेत्रचन्यम्ब्युणीदसदीय् संखेजदिद्याग-पमाणवादी । एदसस्वपदं सन्वत्य जद्वानेयसं क्षानित्य जोवयवरं ।

पर्यापाधिकतपक्षम्वयी कार्यानक्षेत्रकी प्रक्रपण विष्यादिश्यानक्षात्रके स्वयान है। सारबार-निक्तसमुद्रातगत नारकी साधाक्षमध्यप्यदि श्रीयोव वर्षात्रकारकी सर्वशः सामाग्यतीक्ष स्वादि श्रीत सर्वेशका व्यवेश्यात्रयां भाग, विश्वात्रक्या संव्यात्रको भाग वीट सञ्चलकेशे सर्वेष्यात्रपुष्टा क्षेत्र क्यां क्षिया है। वहां पर बारण विष्यादियोके स्वयात स्वता बारिय ।

सम्योगम्याद्याद्वी और असंवत्तस्ववन्ध्ये भारकी जीयोंने अपने सर्ववृद्धी रामित सम्याप वर्तमानस्वत्य रिवानस्वयादे समान है। दश्यानस्वयंत्वा विदारप्यवर्षान, विदारप्यवर्षान, विदारप्यवर्षान, विदारप्यवर्षान, विदारप्रवर्षान, अस्वियानस्वर्षान, विदारप्रवर्षान, विदा

वादि उपर जावर सपने विश्वेष वर्गमुण्यसाया विषयस्त्री सार्थो इन्नुस्ति सार्थे हुन्सिन्से सार्थे हैं, तो भी निरंपानिका अविध्यानकी भाग हा क्यांकोक परण है, कर्मेंट, हिन्से क्येस सार्थ उस संक्षा समात्रा, विवस्तवस्त्री आवत्र वर्गमुल्ले गुप्ति कर्मकर्मीय क्लान्स्ति सार्थे होता है। वह स्रथेष्ट्र वर्षेत्र च्यांकोक काव कर्मक होतुन्त कर्मिन्स

विदियादि जाव छट्टीए पुढवीए णेरङ्एसु मि^{ङ्}छादिद्विसासणे संम्मादिद्वीहि केवडियं खेतं कोसिदं, लोगस्स असंखेञ्जदिनांगो ॥१०॥ सत्याणसत्याण-विहारयदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेउविगय-मार्गितय-उत्रहरणः

मिच्छादिद्वीणं उववादिविरहिदसेसपदिद्विसासणपम्मादिद्वीणं च प्रविगाए स्वतंत्री, पट्टमाणकालपडियद्वचादे। ।

एंग वे तिण्णि चत्तारि पंच चोइसभागा वा देसूणा ॥ १८॥

परच ' वा ' सद्य चिद्रवं ताव वत्त्रहस्सामा । सत्याणमस्याण-विहास्वदिमत्याण-बेदण-कसाय-वेडस्व्यसमुग्याद्गरेहि विदियादि पंचपुद्विमिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वीहि चंदुच्हे लेगाणमसंखेडजदिमागी, अहाद्रजादो असंखेडजगुणी अदीदकाल कीविदी। एव कारणं पुच्यं य वत्तव्यं । मारणंतिय-उववादगदेहि मिच्छादिई।हि अदीदकाले एगी बेहम सीनो बिदियाए पुढवीए फोसिरो। तदियाए वे चोइसमाना, चउरवीए तिष्ण चोहमनान,

हितीय प्रथिवीसे लेकर छठी प्रथिवी तक प्रत्येक प्रथिवीके नारिक्योंने विश्या होटे और सांसादनसम्यग्दिए जीवोंने कितना धेत्र स्वर्ध किया है ? लोकका असंस्थात मार्ग स्पर्श किया है ।। १७ ॥

स्वरधानस्वरुयान, विदारयत्वस्थान, वेदना, क्याय, वैक्षियिक और मारणानिक समुद्रात सथा उपपादपदको प्राप्त निष्याराध नारकी जीयाकी तथा उपपादपदको प्राप्त निष्याराध नारकी जीयाकी तथा उपपादपदकी प्राप्त श्रीय पदमितिष्ठित सासादनसम्बन्धि जीवोंकी स्पर्शनसम्बन्धि क्षेत्रमक्ष्या वर्तमानक्ष्ये प्रतिबद्ध होनेसे क्षेत्रप्ररूपणाके समान है।

उक्त जीवोने अतिवकालकी अपेक्षा चौदह भागोमेंते इन्छ कम वर्क, हो, वीन

चार और पांच माग स्पर्ध किये हैं ॥ १८॥

यहांपर पहले 'था' शान्त्रसे स्चित अर्थको कहते हैं - स्पस्थानस्वस्थान, विशि यस्यर्थान, वदना, क्ष्याय और योकायिकसमुदातगत दिनीयादि पांच पृथिवियादि क्रिया हिं और सासादनसम्बद्धा नाराक्ष्योंने सामान्यलोक आदि चार लोकांका असंस्थात भाग और अनुष्ठियसे असंस्थातगुणा क्षेत्र अतिकालमें स्पर्श किया है। यहांपर कार्य पूर्वते समान ही कहता चाहिए। दूसरी पृथिवीम मारणागितकसमुद्धात और उपानित मिष्याहिष्ट नारकी जीवाने असीतकालमें एक यटे चौदह (हुई) माग हर्रा किया है सीसरी पृथिशके नारकी जीशोंने दो यटे बौद्ह (हुँह) माग, चौथी पृथिशके नारहिये

१ दिशीयारिषु मानककृत्या मिष्याद्वश्चिम सामादनसम्बद्धिमिन्नीवस्यावदेवसामः, वृद्धि १८ अनुहरूमातः सामानकरूपः - ^ कारता पेच प्रदेषमाण वा देशीनाः । स. वि. १.८.

पंचमाण् चनारि चोदममामा, छहीर पंच चोदगमामा, मन्दरब बेरह्याणममन्मलेतेणुगा कि बदारी । एदे शाहरानम्यादिशीयं वि बचार्य । व्यक्ति उत्तरादी वृतिय । किमद्रमेदेशि-महीदकाले एशिएं रहेशे होदि रे किम्ममन-परेसणे पढि सम्मादिहीणे व शिपमामावा । भोतग्रीसमंद्रावाधेटिदा असेरोडजदीव मश्रदा बाह्यहाई कर्ष पुतिबजीते हैं या, तत्य वि वेहंद्याचे विस्तामवा-परेस पढि विरोहाबाजादी ।

सम्मामिन्छादिहि-असंजदसम्मादिशीह केवडियं खेत्तं पोसिदं. होगस्स असंबेज्जदिभागों ॥ १९ ॥

एदेनि दोण्हे गुणहामाणं वहमाणकाले सरवाणादिवंचनदाहियाणं मार्गतियपदहिय-अमंबदसम्मादिद्दीणं च परुषणाए रहेवमंगा । एदेहि चैव अदीदकाले सत्थाणादिवंचण्ड-

साम बहे चौदह (%) भाग, पांचवाँ पृथियोके नार्यक्तीने चार वहे चौदह (👸) भाग श्रीर छटी पृथियोंके नारकियोंने पांच बडे बीहर (है) माग प्रवामक्षेत्र स्पर्श किया है। इस सभी पृथिवियाँके सारवियाँका देशीन क्षेत्र नारवियाँके अगृहवक्षेत्रसे कम वहुना थारिए। इसी प्रवारके उक्त प्रधिविधोंके सर्थ प्रत्यन सासाहनसभ्यात्रीय जीवींका भी रपर्शमक्षेत्र बहुमा चाहिए। विहोध वात यह है कि उनके उपवादपद महीं होता है।

र्राष्टा-- उक्त मारावियाँका भतीतकालमें इतना (स्थोक) स्वर्शनक्षेत्र क्यों होता है ?

समाधान-इतमा अधिक स्पर्धानक्षेत्र इसालिए होता है कि उक्त पृथिवियों में निर्ममन और प्रयेशनके प्रति अर्थान् जाने और गानेकी अपेशा सायारि जीवींके समान मिथ्यारि अविवेशा नियम नहीं है।

र्यका - भोगम्मिकी स्थानाले संस्थित असंस्थात श्रीप-समूद नारकियोंने कैले सार्थ किये हैं है

समाधान-नहीं, क्योंकि, बद्दांवर भी नारक्षियाँका निर्मेशन भीर प्रवेश होनेसे कोई विरोध नहीं है। अर्थान प्रारणान्तिकसमदातकी अवेक्षा नारकी श्रीवीका उक्त क्षेत्रमें प्रवेश और निर्गमन वन जाता है।

द्वितीय प्रथिशीते लेका छठी पृथिती तक प्रत्येक पृथितीके सम्परिमध्यादृष्टि और असंप्रसम्पन्दरि नारकी जीवोंने कितना क्षेत्र स्वर्श किया है ! लोकका असंख्या-सर्वा भाग स्पर्ध किया है ॥ १९ ॥

सभ्यानिश्याद्वपि भीट वसंयतसभ्यन्द्वि इन दोनी गुणस्थानीके स्वस्थानश्चरामान विहारपास्यायात, चेत्रता, बायाय और वैकिथिकसमदात, इन पांच पहीपर स्थित मारबी शीवीदी तथा मारणान्तिकपद्दिवत अक्षेत्रतसम्बन्धि जीवीदी वर्तमानकातमे स्पर्शनकी प्रस्पाण क्षेत्रप्रद्रणाके समान है। द्वितीय प्रथितीसे लेकर छठी प्रथियी तकके वक्त गण- हिदेहि मारणंतियपदहिदअसंजदसम्मादिद्वीहि य विदियादि-छहिपुढविविसेसिएहि चर्द्स होगाणमसंखेरजदिभागो, अष्ट्राइरजादे। असंखेरजगुगो फीसिदे। । कारणे पुरुवं व वनवं । विदियादि-छसु पुढवीसु असंजदसम्मादिद्वीगमुनवादी पारिय ।

सत्तमाए पुढवीए णेरहएसु मिन्छादिट्टीहि केवडियं क्षेत्रं पेतिरं,

लोगस्स असंखेज्जदिभागो[ँ] ॥ २० ॥

एदं सुत्तं बङ्गाणखेतपरूषयं, उबरिमसुत्तेण अदीदाणागदकालविसिदृष्ठेवपहर णादी । एदस्य परूवणाए खेत्तनंगी ।

छ चोइसभागा वा देसृणा ॥ २१ ॥

सत्याणसत्याण-विहारयदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेउन्वियसमुग्वादगदेहि मिन्छा दिश्लीहि तीदाणागदकालेस चदुण्डं लोगाणमसंखेजजदिभागो, अहुाइजजादो अत्तेवज्ञापुणी की सिद्दी । एत्य कारण पुन्यं व वचन्यं । एसी 'वा' सहस्या । मारणितय उपनाहराहि मिन्छादिद्वीहि तीदाणागदकालेस छ चोहसभागा चिताए जीपणसहस्सेणूण हेड्डिमवर्गी

स्यानयती स्वस्थानादि पांच पर्स्थित जीयोंने भीर भारणारितकरद्श्यिन मसंवन्तारवारि अविंके भर्तानकारमें सामान्यलोक आदि चार लेकिका अवंग्यानयां भाग भीर मार्ग ह्रायस मसंवयानगुणा क्षेत्र वयर्श किया है। इसका कारण पूर्वके समान श्री कहना बारिय। द्विनीयादि छद पृथिवियोंमें असंयतसम्यग्हिए आयोका उपयाद नहीं होता है।

मातवी पृथिवीमें नारिक्ष्योंमें मिथ्यारिष्ट जीवोंने कितना क्षेत्र सर्व किया है

शोकका असंख्यातमां माग स्पर्ध किया है ॥ २० ॥

यह गुत्र धर्नमानकालिक क्षेत्रकी प्रकपणा करनेपाला है, क्योंकि, भागेके स्वजात सनीत सन्तापत दालविदिए शेवकी प्रस्तुणा की गई है। इसकी संगीत बनेनातहार्वे दारीनसेवडी प्रस्पना सेवडे समान है।

मान्त्री पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकियोंने अवीतकालकी प्रथेश इंड इन डर

प्टे बीदह माग स्पर्ध किये हैं ॥ २१ ॥ स्यस्थ नश्यस्थान, विदारकस्थरभान, धेनुना, स्थाय भीर वैजिविकामुद्रान्त मिरपारादि नारकी भीवीन अनीन और अनागन कालम सामान्यती साहि बार हो है है सर्वकरात्रश साथ और सहार्रहिष्में सर्वक्यात्रमुणा क्षेत्र क्यारे क्या है। यहाँ यर सी हात पूर्वद समान परना चाहिर। यही 'चा' दायदा मध्ये है। मार्गानिक समुना हो हरपाद परमत सिथ्य दाँर नारडी प्रीयोंने मनीत और अनागनक लग्ने विश्व दिवा है वह

[।] कुल्प्या मुख्यमा जिल्हार जिल्ले व्यवस्थात वद चतुर्वेदमाता मा देवीना । इ. हि. दे. है. & x'eg : 4644 ' 4/2 4/2. [

सहरमेहि छला फोमिदा । ण केवलं हेहिस्लजीयणेहि चेव छला, किंतु अल्पी वि देसी रोगणालीए अन्धेतरे मेरद्रपृष्टि अन्छत्तो अस्यि । तं कथं मन्बदे हैं ' विदियाए प्रद्यीए एगा पारममागा देखना र हाद मुचत्रपणादा । जन्महा एदस्स देखनचं विहिद्य संपुष्णी एसा पोरमभासी होउब, विचाए जीयणमहस्मवनेमादी । एस्य प्रमी केण खेरीणणी एमा चार्यमामा सि युवे बुच्चदे-शिर्यमहवाजीमालवाच्य-वीनदियतिरिक्छमहवा-जीम्माणुपूर्वीहि पडिषद्दरीचं मीचूल अण्यरीचेणुगी । बादुरुदुस्ववतिषुगचं किणा युच्यदे ? ण, सत्य वि आणुपुटिशविवागपाओगगरोत्तार्ण संभवं पडि विरोहामात्रादी ।

सासणसम्मादिष्टि-सम्मामिन्छादिद्वि-असंजदसम्मादिद्दीहि केवडियं

खेतं फोसिदं. लोगसा असंखेज्जदिभागों ॥ २२ ॥

इजार योजनते कम भीर अधारतन चार वृधिवियासम्बन्धी चार हजार योजनीले कम छह बटे चौद्रह (🐈) भाग प्रमाण होत्र राही किया है। यहां पर केवल प्रथिवियोंके अधस्तन एक एक एक एकार योजनींसे हैं। कम क्षेत्र नहीं समझना, किन्त भन्य भी देश (क्षेत्र) लोक-मार्टाके जीतर नारकियोंसे महता (मरप्र) है।

द्रांका-पद केले जाना !

1. 7. 33.1

समापान- 'द्विनीय पृथिवीका स्वर्शन देशीन यक वटे चीदश आग है 'इस सूत्र-वयनसे उत्त पात जाती जाती है। यदि वेला न माना जाय, तो इस पृथिशीका देशी न क्षेत्र पिटिन मर्यात प्रश्नित होकर सम्पूर्ण एक वढे थोरह (हैं) मान हो जायमा, प्रशेक्ति चित्रा प्रधिपीश यक इजार योजन उस यक शाजमें ही प्रविष्ट है।

द्यंका - यहां पर यह बटे चौदह माग किस क्षेत्रसे कम कहा है!

समाधान-धेकी भारीका करनेपर उत्तर हेते हैं कि सरकातिवायाग्याग्यां भीर पंचित्रियतियंगातिप्रायीत्यात्रायी, इन दोनांसे प्रतिबद्ध क्षेत्रको छोइकर अन्य होय क्षेत्रसे थम कहा है।

श्रीहा-पायसे दके हुए सर्वक्षेत्रसे कम उक्त क्षेत्र पयाँ नहीं कहे !

समाधान —नहीं, पर्योकि, वहांपर भी भातपूर्वीनामकर्मके विषाकते प्रापीग्यक्षेत्रके संभय होनेमें कोई विरोध नहीं है।

सावनी पृथिवीके सासादनसम्यग्हरि, सम्यग्निध्यादीष्ट और असंयवसम्यग्हरि नारकियोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लोकका असंख्यातवा भाग स्पर्ध किया है स २२ स

र स मता ' पनेहदी ' वृदि पाठः ।

र हेर्बिशिविडोंबरवाहरूवेवमागः । स. सि. १. ८.

[1, 8, 3

. एदेभि निष्हें शुणहाणाणे सत्तमाण पुडवीण मार्ग्यनिय-उत्तवादपदा वन्ति। नेवर्ग पद्टिएहि तिष्णिगुणहाणजीवेहि तीदाणागदवष्टमाणकान्तम् चदुःहं लेगाणमसंसेज्बदिस माणुसखेतादी असंखेडजगुणी कीसिदी । कार्ण प्रवर्ग व वत्तव्यं । तिरिक्सगदीए तिरिक्सेयु मिच्छादिशीह केवडियं सेतं फोसि

ओर्घ ॥ २३ ॥

ंसत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मार्गितिय-उपवादगेदहि मिन्छादिद्वीहि वीदाना बङ्कमाणकारेख्य सञ्चलोगो फोसिदो । विहारवदिसन्याणपरिणदेहि तीदाणागरवहमाणकार तिण्हं लोगाणमसंखेउजदिमागो, तिरियलोगस्स संक्षेत्रजदिमागे।, अद्राहरुवादो असंवेत्रग् फोसिदो । असंखेजनेमु समुद्देसु तमजीवविराहिदेसु कर्घ विहारविद्रमत्याणपरिणद तिरिक्खाणं संमवा १ ण तत्य पुरुववेरियदेवाणं पर्यागदी विहारविरोहाभावादी। अरीहरू

इन तीनों ही गुजस्यानयर्ती जीयोंके सानयीं पृथिवीम मारणानिक भीर अपर ये दो पद नहीं होते हैं। दोप स्वस्थानादि पांच पदींपर थिवमान उक्त तीन गुणस्थाना अधिने वतीत अनागत थीर चर्तमान, इन तीनी कालाम सामान्यलोक वादि बार लोकी बसंख्यातथा माग और मनुष्यतीक्षेत्र असंस्थातगुणा क्षेत्र स्परी किया है। इसका का पूर्वके समान ही कहना चाहिए। तिर्यंचगतिमें तिर्यंचोंमें मिण्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है। जीव

विहरंतितिरिक्खेहि छुत्तेखेचायणविहाणं बुचर्द-पुच्यवेरियदेवययोगादे। उवरि बीयणव्स

समान सर्वलोक स्पर्ध किया है ॥ २३ ॥

स्यस्थानस्यस्थान, येदना, क्याय, मारणान्तिकसमुद्धात श्रीर उपगार्गन विश्वा तिर्येश्व जीवॉने मृत, मिवण और वर्तमान, इन तीनों कालॉम सर्वहोत स्पर्ध किया विद्यारयतस्य स्थानस्य परिणत तिर्येश्व सिक्याराधि जीवीने अतीत, अनागत और वर्तमान र्तानों कार्लोमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंस्थातयां माग, तिर्यलोकका संस्थान भाग भीर भदाईद्वीपसे असंस्थातगुणा क्षेत्र स्वर्श किया है।

श्वता - त्रस जीवाँसे विरक्षित असंस्थात समुद्रामें विद्वारणस्यस्थानेसे परिवर ! तिर्पर्धोका यस्तित्व बैसे संभव है ? समाधान - नहीं, क्योंकि, पूर्वमवके वैरी देवोंके प्रयोगसे विहार होते में

अब अतीतकालमें विद्वार करनेवाल तिर्वचोंस स्पर्श किय गए क्षेत्रके विकार बिरोध नहीं है। और इसलिए वहां पर उनका अस्तिन्य मी संभव है। विधानको कहते हैं— पूर्वप्रवृक्ष येथी देवोंके प्रयोगस चित्रा पूर्वियोस कपर यक हास वीज विधानको कहते हैं— पूर्वप्रवृक्ष येथी देवोंके प्रयोगस चित्रा पूर्वियोस कपर यक हास वीज

र निर्वागर्ता निष्या निर्वायक्षारशिक्षः सर्वज्ञोकः स्वष्टः । स. वि. १. ८० र जापती 'लुच ' इति पातः ।

विज्ञमेर-नृप्यस्य भृंदस्य श्रवम-माणधुषार-मणिद्वश्यप्यदादिरुद्धरोषं योष्ट्य सम्बं कुसंवि षि प्रवस्तानेपप्रवादहं रूटव्यपूरं द्विय उद्वर्षणृत्यवेणाससंद्राणि करिय प्रदाणारेण द्वरे गिरियरोत्तरम् संदेशादिसाणेषण्येषं होदि । वेडिस्ट्यसङ्क्रपाद्वश्यक्षं यद्वसाणकाले संवर्षमा । ठीदाचायद्वान्यु विष्टं होगाणे संवेज्जदिमाणो, होदि होतिहित अर्थेक्टन पूजा फोलिदो । कार्त्य, बाउवाद्यवीया बिल्दोन्यस्य असंवेज्जदिसालेणा विज्ञप्यम् वरस्या षद्वमाणकाले होति', वे रुनुषद्रं पंत्रस्वज्ञादक्षं अदिश्वले कुसंवि वि ।

सासणसम्मादिहीहि केवडियं खेतं फोसिदं, लोगस्स असंखेजदि-भागो' ॥ २४ ॥

एदरम गुचरस अन्यो सेचन्दि पस्विदो !

सत्त चौद्दसभागा वा देसूणा ॥ २५ ॥

एरप ' वा ' सद्दे। युर्चेद् े सत्याणसत्याण-विद्वात्वदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेद्यित्वसमुख्यादगुदसामणसम्मादिद्वीदि धोदाणागदकालेस तिण्हं क्षेत्राणमस्त्रेत्रस्यामा

सामादनसम्पार्टि विर्यंत्र कीशीने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लोकका असं-रूपातकों भाग स्पर्ध किया है ॥ २४ ॥

इस स्वका धर्च संवत्रस्यमार्वे बहा आ सुका है।

सामादनमम्पारिं तिर्येषोंने भूत और अविष्यकातकी अपेक्षा कुछ कम सात बटे बीटह भाग स्वर्ध किये हैं ॥ २५ ॥

दस त्यारे स्थित 'या' शस्त्रका अर्थ वहते हैं — स्वस्थानस्वस्थान, विहारपत्रकः स्थान, वहना, जगाप और धेविधिवसमुद्धातपत्र सासाहनसम्बन्धिः ओवीने भतीत और

ર યાગ્રાવપટ. ૨ ત્રહિયું વોહિવું કહે વાસો ચાર્યલા)

स्वासंदन्तक्यकारिक्षेत्राहरपास्यम्भागं स्था चहुदेशमानां वा दक्षोताः इ.स. ६. ६. ८.

अंब्दीवा खेत्रगुणिदेण-

्तिरिवलीमस्स संखेजजदिमागो, अष्ट्राइजजादे। अगरेजगुणी फोनिरी। एच तत सासणसत्याणसत्याणयेत्राणयणविद्याणं युज्यदे— स्वयण-कालोरा-संयद्याणसम् सेससमुदेस णित्य सत्याणसत्याणसासणा, तत्युष्पणत्वनजीताणमागादे। । सत्याणस्याण अतिय सत्याणसत्याणसासणा, तत्य तसजीवाणमुष्पत्विदंसणादे। । सत्याणस्याण सन्ये दीवा विष्णि समुदा वीदकाले पुसिज्जति वि सैसिमाणयणद्वमिमा पह्सण

सत्त जंब सुण्य पंच य राज्यव चहु एक वैच सुण्यं च ।

जब्दीवरसेदं गणिद्रस्तवं होह णायावं ॥ ४ ॥ जनागतकालमं सामान्यकोक सादि तीन लेक्सिका ससस्यातयां मागः तिर्गलोकः वियो भागः और अवादेशीयसे जसस्यातगुणा क्षेत्र स्वयं किया है। सय यहांपर विवेद

... जवणसमुद्र, कालोइकसमुद्र और स्वयम्म्रसणसमुद्रको छोड़कर देग हैं 'स्वस्थानस्वस्थान पर्वाले सासारनसम्बद्धः औष नहीं होते हैं, क्याँहि, वर्धार होनेवाले जस जीवाका अभाव है। हां, सर्वहीयोंमें रवस्थानस्वस्थान पर्वाले वा सम्बद्धान्यहि जीव होते हैं, क्योंकि, बहांपर जसजीवोंकी उत्यक्ति रेली जाती है। हा समस्यानपर स्थित सासारनसम्बद्धारे विवेच जीवोंने सर्वहीय और तीन समुद्र क्रीत

ंदनसम्यादृष्टि अधिके स्वस्थानस्यस्थान क्षेत्रके निकालनेके विधानको कहते 🐫

-स्पर्धः किये हैं, इसलिए जनका स्पर्धनक्षेत्र लानेकेलिए यह प्रक्षण की जाती 'जन्द्वीपके क्षेत्रका गणित करतेपर--सात, जी, शून्य, पांच, छह, नी, खार, यक, यांच और सम्बन्धीय ७९०९६।'

सात, त्री, शून्य, पांच. यह, त्री, खार, एक, पांच और शून्य प्रधीर ७९०५६५ वर्गयोजन प्रमाण अम्बुद्धापका क्षेत्रफळ होता है, ऐसा जानना चाहिए ॥ ४ ॥

र जंदर्शयेक्यतम् । एको कोलो दंदा सहस्वयेवकं हुवेदि यंव स्वया । तेवस्वयः जंद्रशास्य केसार्थं । जड्डेच्ड्रियः । एको कोलो दंदा सहस्वयेवकं हुवेदि यंव स्वया । तेवस्वाए सहित हिन्दू स्वेवहम्पर्धं । की. र दंद १५५३ । ०१ वर्षो होदि विक्यो सम्बं पाद्यिय जंतुलं युक्तं । जव क त्रिय ज्या जिलागि । व्याद्या म ६ ॥ १ । ०१ १६६३ । कम्यवरोशीए हुवे बाल्या। जवस्योरम्पर्यत् ॥ वस्तुल अवंशत्रा तेति । विक्रियः प्रदेशियः । कम्यवर्णाया जोल्यावस्यात सहा प्रकृति । स्वयत्त्र अवंशत्रा तेति । हिन्दै किदशा और। अवतर्णवास्त्राहं प्रवक्त्यत्त परस्वाया लेला। हारो एकं लक्षं पंत्र सहाति वर्षाण्या। ॥ वश् ॥ इन्द्रियेकेट्रेन्ट्रियः सात्राव्यक्षेत्राः । प्रयाद्यक्षेत्राः प्रयाद्यक्षेत्राहं सब स्वप्ताया सुरुष्ट स्वर्णाः वर्षाः । वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः ।

1.8. 34. 1

एदरस एया सलागा होदि १-। एदेण पमाणेण लवणसमुदे कीरमाणे सी जंब-दीवादी खेलगणिदेण चउवीसगयी होदि। वर्ष च-

> बाहिरसईबगो। अन्मंतरसदृत्रगपरिहीयो । जेन्द्रीवपमाणा खेडा ते होति चउवीसा ॥ ५ ॥

एदीए गाहाए सन्वेसि दीव-समुदाणं प्रथ प्रथ खेचफलतलागाओ आणेदन्याओ । तत्य अद्रष्टं खेचकत्यसागाओ एदाओ-

1 5 | 58 | 588 | 805 | 500 | 556 08 | 805 08 | 564 085

स्वणसप्रदलेतपुरस्वपण्यो पमाणेण एगं होदि। स्वणसप्रदपमाणेण घादइसंद्रव्हिः कीरमाणे छुरगुणो होदि । कालोदयसमुदो अद्वावीसगुणो होदि । पोक्खरदीको बीसचर-सदगुणी होदि । पीक्लरसमुदी चदुसदछण्याउदिगुणी होदि । एवं लक्ष्यसमुद्रजंबुदीव-

इसकी मर्थात जानुद्धीयके उक सेमफलकी यक शलाका (१) होती है। इस ममाणेस क्रवणसमृद्रका माप करनेपर यह जस्कृतिको शेषप्रसंसे बीबीस गुवा होता है। बहा भी है-लयणसमृद्रकी बाह्यसूचीके वर्गको उसीकी माम्यन्तर सूचीके बगेके प्रमाणसे बार

करनेपर अन्त्रहीएके क्षेत्रणसंप्रमाण उसके बीबीस खंड होते हैं । ५ ॥ इस गायके अनुसार समस्त श्रीप और समुद्राँकी पृथक् पृथक् शेवफल हासाकार्य

है साता साहिए। उनमेंसे बाद द्वीप समुद्रांकी सेक्फल शहाकाएँ इस बकार दोती हैं-**१, ६४, १४४, ६७२, २८८०, ११९०४, ४८३८४, १९५०७२.**

उदाहरण-(१) एवणसमुद्र-बाह्यसूची ५ साख , भाग्यन्तरसूची १ खाव योजन-4 - 2 = 44 - 4 = 28.

(३) धातकी खंददीय बाहासची १३ टाल, माभ्यन्तरस्य प साच योदर्ग, 13' - 4' = 149 - 24 = 188.

(१) कालीदधि-वाद्यस्थी १९ हान, आभ्यन्तरस्थी ११ लाल योजन ३९' - १३' = ८४१ - १६९ = ६७२। इस्पादि ।

छदणसमद्रका उत्पद्ध द्वमा क्षेत्रफल अपने प्रमाणकी अपेश्य पक होता है। स्टच्छ-समुद्रके प्रमाणसे घातकी खंडका प्रमाण करनेपर धातकी खंड छह गुला होता है। बालोशिक समद्र अमार्रसम्बाहि । पुण्करवरकीय वक सी वीसमुखा है । पुण्करवरसमुत्र बारसी दयानवे गुणा है। इस प्रकारते स्थवसमुद्रको अञ्चूहीप्रधमाणदास्त्रकाओं है व और सायरीस्तरकारी

र बारित्युर्वाणी कार्यात्रत्यारकावपृतियो । अस्यास कारिया हिटे बाँकवरीत्र दिवंत्ववार्य ह हि. व. ५, ६६. का देश्यांकां कामक्षांत्रकारप्रतिहें । अनुकारिकार्य क्षित्रदेशाने खालांके । वि. छ। ६०६.

सलानाहि दीव-सायरबंधूदीवसलामात्रो ओनहिय गुनमारा उप्पादेद्या । १। Cक्वंदानमें जीवहार्य १२०1४६६१२०१६।८१२८। एवं उत्रिद्गुणगारमलागाहि लवणमप्रसंबद्धातमः युणिय जैत्र्दीवजोयणगदराति सुणिदे इच्छिददीव-सायरार्थ संगहनं होदि । संग्रह ह चेत्र सेचकलमाणेदुमिन्छामो चि अपयो। इन्छिद्दम्बन्द्रसमुद्राणं लग्नमपुरसून सलागाणयणाविधाणं वुच्चदे- त्ववणादयसमुद्दादो कालोदयसमुद्दी सेनक्टेण बहुर्गानमु विन्दि उप्पाहकतमाणे दो रूचे ठविय पठमस्य बहुी णिय पि एगरूवमविषय संवर्ष

भव सेवल समुद्रोंका ही क्षेत्रपाल निकालना चाहते हैं, इसलिए सपने अपने हर स्वणोवकसमुद्रसे कालोदकसमुद्र क्षेत्रफलकी अपेता अहारस गुणा है। हवे

नेपादह है। होते हैं। उन्हें दूना कर उनमें ते चार कम कर देने पर कालोदकसमुद्रची मार्गि

(३) पुष्करक्षीय-गुणकारशासका १२०। १२० × २४ × ७९०५१९४६५० पुष्का द्वीवका क्षेत्रफल। हत्याहै। समुद्राहा स्थापतम् द्रममाण गुणकारवासामामीक निकालनेका विधान कहते हैं— क्रमा करनेके लिय दो रुपको स्थापनकर ध्रयमसमुद्रकी सुदेश अद्वारस गुणा ह । ...

विरतिय सोतस दाद्व अन्मोन्जन्मामे कदे सोलस होनि । वे हुगुणिय चन्नारि जानि कालोदयसपुरस्त ग्रहाथीस गुणगारसलागा उप्पर्जनि । वेहिं तनणोदयमुद्दस्त जम्म्हीपममाण दालाकार्यः अपयोतितज्ञर गुगकार उत्पन्न करमा चाहियः जो इस महार बोर हैं - १, ६, २८, १२०, ४९६, २०१६, ८१७८।

उदाहरण—(१) खयणसम्दर्भ जञ्जूबीपणलाकार्ष २४। छ. स. की बीप सा. समन्त्री

रालाकार्ष २४ । ११ = १ लयणसमुदकी गुणकारराजाका।

(२) यातकीखंडदीपको प्रमाणराळाका १४४। १९४ ६ गुणकारराळाठारी

(३) कालोइकसमुद्रकी प्रमाणसलाहा ६७२ । 💖 = २८गुनहार

हैत मकार स्थापन की गई गुणकारदासाकाओं संस्थापसमुद्रकी जार्शीएकार याद्याकार्थोको ग्रुणित करनेपर पुनः उसे अम्बूदीपके प्रतरासक योजनीत गुणा करनेपर इन्छित झीर सीर सागरीका क्षेत्रफल आता है। उदाहरण—(१) धातकीडीव-गुणकारशस्त्रका ६।

६ प्र २४ प्र ७९०५६९४१५० घातकीडीयका क्षेत्रफ्छ। (२) काछोदाधि-गुणकारशासका २८;

२८ × २४ × ७९०५६९४१५० कालोक्षिका क्षेत्रफल ।

संचक्त मुणिदे कालोद्रवसमुद्दस खेनकार्ड होिदे । तम्बन्धमुद्दादो पोक्सासमुद्दी स्वेचमुणिदेव चनास्तिद्दछण्ण उदिमेचमुणो होिदे । तम्बिह मुजमारे आणिजनमाणे विभिन्न समुद्दा नि कहु रुव्यूणं करिय निरित्तेय रुपं पढि सोत्रव दार्ग अप्णोप्प-स्मासे कदे वेददछपण्या होित । ते दुमुणिय पुत्र इतिय पुणे पुन्तिरुप्त स्वित्त दार्ग अप्णोप्प-स्मासे कदे वेददछपण्या होित । ते दुमुणिय पुत्र इतिय पुणे पुन्तिरुप्त सिर्तिय करिय जरणमासि दुम्प सार्मिद अपणेद पोक्सासमुद्दा पुण्यासम्बद्धामा होित । तेहि उत्यवसमुद्दान करिय प्राप्त दुम्प पोक्सासम्बद्धामा स्वेच अपणेद दुम्पुणं महित्त प्राप्त सार्मिद अपणेद प्रमुणं सिर्दा प्राप्त प्रमुणे प्राप्त सार्मिद अपणेद प्रमुणं सिर्दा प्राप्त प्रमुणं प्रमुणे करिय विकास सार्मित प्रमुणं प्रमुणे सिर्दा प्रमुण सिर्दा प्रमुणे सिर्दा प्रमुणेद स्वर्णे प्रमुणं सिर्दा प्रमुणेद स्वर्णे प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणेद स्वर्णे प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं प्रमुणं प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं प्रमुणं प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं प्रमुणं प्रमुणं प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं प्रमुणं प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं प्रमुणं प्रमुणं प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे पर्ति स्वर्णे प्रमुणं प्रमुणं प्रमुणं प्रमुणं प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं सिर्दा सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं सिर्दा स्वर्णे प्रमुणं सिर्द स्वर्णे प्रमुणं सिर्दा सिर्दा सिर्दा सिर्दा सिर्दा सिर्दा सिर्द सिर्दा
उदाहरण-कालोदधि लवणसमुद्दते दूसरा समुद्र है, धनः काशलावा ६.

२-१= १; १-१६। १६×२-४=२८, बालीइवतसुद्वारी मुणकारसाता.
बालीइकसुद्वारी मुणकारसाताशां में प्राप्त करवासमुद्रके संप्रकारको मुणकारसाता.
पर कालिइकसुद्वार संकारक हो आता है। स्वयासमुद्रकी संप्रसा पुरकरसमुद्र भेक्पकर हो आता है। स्वयासमुद्रकी संप्रसा पुरकरसमुद्र भेक्पकर हो अपने स्वयासम्बद्धिया वारकी स्वयास मुण्या है। स्वयास पुणकार सिकारते के स्वयास प्रकार माति संतरह है कर प्रस्तपार में स्वयास करते प्रता स्वयास करते हैं। स्वयास प्रकार करते प्रता स्वयास करते प्रता स्वयास
उदाहरण-पुष्करसमुद्रकी भागशसासा है.

1 - 1 - 2 2 2 2 = 44, E46 E46 X 2 = 422

बारमेंसे यह कम करके रोजको चिरतजबर और सन्यक्त करके मान सज्जह हेकर परस्यर गुवा करजेपर बार हजार छन्नानये होने हैं। जर्मे दुगुव्यवर पूचक स्थापनकर पहुंचेकी विश्वनायसिको विरादित कर कन्नो प्रति बार वेकर परकार गुवा करजेरा गुणे करे चउतद्वी उप्पन्नदि । पुणे पुल्मिल्ट्युगुणिद्राक्षिट्टि एद्मयणिदे चउत्पम्<mark>यस्</mark> गुणमारसलामा होति । एदाहि लवणसमुद्देवकके गुगिदे चउत्यसमुद्देवकके हेरि। एवमणेण बीजपदेण सन्वसमुद्दार्ण खेतकलमाणेदन्ये ।

तत्य सन्यपिल्डमस्स सर्वग्रस्मलसप्रदृश्य खेतकलागयंग प्रमादे- दीव-माणः क्रवाणि अद्भिदे समुद्दसंखा होदि । ताओ समुद्दसलागोओ रुत्याओ करिव विस्तिष क्रवं पिंड सोलस दाद्ण अण्गोणणन्मत्ये क्रदे जोपणलक्षवरमेग छत्तीसप्रस्वादिष विसहस्सपदुप्पणेण जगपदरिष्ट मागे हिंदे एनमागो आगन्छि । पुणो पर्व दुर्गुणिय पुष द्वाचे पुण्यस्मित्र सागे हिंदे एनमागो आगन्छि । पुणो पर्व दुर्गुणिय पुष द्वाचे पुण्यस्मित्र सागे हिन्द एनमागो अगन्छि । पुणो पर्व क्रवं पात वाद्य अप्णोजनस्त्र क्रवं छप्पणाजोपणलस्त्राए सेढि खेंडेद्ण एमलंडमागच्छि । वं पुण्यसद्वादिष्ट अपणिदे सर्वभूरमणसम्बस्सर गुणगारसलागा होति । पदाहि लवणसप्रदृश्चेकले प्रविदे

उदाहरण—चतुर्थसमुद्रकी क्रमशलाका ४।

धxधxध १११=६धः ८१९२-६ध=८१२८ चतुर्घ समुद्रती गुणकारशलासः

इन गुणकारपाटाकामीले छंवणसमुद्देके सेवफळको गुणा करनेपर बीधे समुद्रोक सेवफळ हो जाता है। इस प्रकार इस उक्त थीलपद्रसे सभी समुद्रोका सेवफळ विकालग चाहिए।

उनमें सबसे अनितम जो स्वयम्भूरमणसमुद्र है, उसके क्षेत्रपालकी निकारनी विधान कहते हैं—सर्वहीय और समुद्रांकी जितनी संबय है, उसे आधा करने पर सर्व समुद्रांकी संक्या हो जाती है। उन समुद्रशालामांकी एक कम करके विराजनकर और प्रत्येक रूपके प्रति सोलह देकर आपसमें गुणा करने पर तीन हमार कर सो छनीससे गुणित एक लाल योजनके वर्गसे जनमनर में मान देने पर पर मान अने है। पुना हसे दूना करके पुणक स्थापित कर पट्टेंकरे विराजनको विराजितकर प्रति करों कर करके साम पर देन साम सम्माण साम स्थापित कर पट्टेंकरे विराजनको विराजितकर प्रति कर कर स्थापित कर पट्टेंकरे विराजनको प्रतिजनकर प्रति कर स्थापित कर पट्टेंकरे विराजनको प्रताण जनमें स्थापित कर पट्टेंकरे विराजनको प्रतिजनकर प्रति कर स्थापित कर पट्टेंकर कर स्थापित स्थाप स्थाप स्थापित स्थाप स्थाप स्याप स्थाप स

समें भुरमणसञ्जद्दरस खेचफले जगपदरस्स वासीदिमागो सादिरेगो होदि'। एत्य फरणगाहा-

सीटह सोटसर्टि गुणे रूप्योगहिसटागरांचा वि । द्रमणिह तरिह सोहे चडकरहदं चडकं त ॥ ६ ॥

संपरि सन्वसमुदाणं सेचफलसंकतमा युवरे-लगणसपुरस्य एमा गुणगारसलाग, कालोदयसपुरस्स अद्दावीस । परेसि संकलमाणिज्ञमाणं 'रूपोतमाहिसंगुणमेकोनगुणो-नमिवतिमन्तरं परेण अञ्जालंडेण आणेदर्ज । एममारि कादण सोलस्पुणकर्मण गदा वि

इन दालाकार्योसे लवणसमुद्रके क्षेत्रपत्रको शुनित करनेपर स्वयम्भूरमणसमुद्रका क्षेत्रपत्र जनवतरका साधिक प्यासीयां भाग बाता है। इस विषयमें करणगाया इस-प्रकार है—

विविक्षित सामुद्रकी कामशालाकाकी संवधानेंसे एक काम करके शेष संवधाके प्रमाण सोलद्रको सोलद्रसे गुकाकर उपलब्ध पारिको दूसा कर दे-और विव्यवन पारिस्नमान वारको पारसे गुजाकर लायको कस क्रिगुणित पारिसमेंसे प्रटा देनेवर विविक्षत सामुद्रकी ग्राणकार-सामाकार्य या जातो हैं ह ६ व

उदाहरण—सर्वेद्वीय-समुद्रोंकी संच्या = २४१ सर्वसमुद्रोंकी संच्या २४ = अ

$$\xi t_{gl} = \xi = \frac{\xi \cos \cos \alpha_i \times \xi \xi \xi \xi}{\pi \sin \alpha \xi} = \alpha_1 + \times \xi = \xi + \xi$$

४ म - १ = वर्ष वर्षा १ व - स = व्यवध्यवसमुद्रदी गुजवारसाहा

भर तार्य समुद्रों में शेवणात्रका संकातन काते हैं—स्वयमसमूदकी गुणवारदासाव्य एक है, वाशोदकसमूदकी गुणकारदासावार्य समूद्रति हैं। इतका वंकस्त एने के किए वका प्रशास्त्र मात्र दारावारमा में में ' एक कम करके दोशको न्यादित गुणक करे और पुत्र एक वह गुणवार-दारावारम आग देनेश इतियार वाति अवस्य हो, आती हैं ' इस व्यायांवारेस दरियन संकात से सामा वादिय। मृद्धि यकको जादि तेकर सोसह गुणिनकमसे साद्रा वही है, इसटिय सं

६ सर्वपुरवयसहरूरस केवचर्च अमसीश्व काथ मण्डनेति हाथिय क्रमण्यकारिकनेति सांजर्वय कुणी पुरव्यक्तस्य सासस्वर्शस्यपेक्षस्योवनिहे हृष्यिराज्ञात् सम्मारिव होति । ति. स. पण १०१.

पहु दो रुवे टिविय' अदिय पुष' टिविय उत्तरि एगरूवं दादर्ग । पुनी वं संज्वेद 18,8,82 मुणिय ' रूपेषु मुणम्भेषु वर्माने । एदेण अञ्चामदेव लढिनम्हण्यानेमु स्कृतेन करि संगुणेम रुवणगुणमारेण मनिरेमु जे लई ने दृगुणिय पंच अवनिरे परमे मनागरंछन होदि। कथं पंच समुख्यना है बुन्वविसम्मिष्मादिनसूमुवकमेन गद्गामि नेनीस अवगयगरासी आगन्छिदि । यदाहि पुरत्तुनमंहरूणमनागाहि स्वराममुख्यनसं गुन्हि त्रवा कालोदयम् युद्दार्ण रहे सम्दर्भ हो दि । निल्हं समुद्दार्ण से मक्त्रवंकरणा वृषदे निल् रुवेस प्राह्ममयानिय प्रम् हिवय सेसम्ब्रिय ह्वस्मुतिर वार्माण द्वीव वस्तुति सं टिविय होटिम उपरिमरूवाणि सालसेहि गुणिय 'रूपेषु गुणमर्थेषु बर्गार्न ' एरेन जना

क्योंको स्थापितकर भाषा करके पृथक स्थापितकर अगर एक कप दे देना बाहिए। इक उसे सोलदसे गुणितकर 'क्याम गुणा और मधाम गणा' इस मार्थानं उसे मार होती एन क्रोंमेंसे एक कम कर माहिस संगुणिन करनेपर तथा एक कम गुणकारसे माण होने को राशि लाय हो उसे दुशुनाकर उसमेंसे पांच पटा देनेपर एक पसर्म मधीन हेस

उदाहरण-स्वणोदक और कालादकका गुणकारशालकाओंका संकलन-काळोदककी शळाका २, १×१६,१×१६,१६×१६ = २५६,

 $\left(\frac{\{\hat{\mathcal{E}}-\hat{\mathcal{E}}\}}{\hat{\mathcal{E}}_{\ell}\hat{\mathcal{E}}^{\ell}}\right) = \frac{\hat{\mathcal{E}}_{\ell}\hat{\mathcal{E}}_{\ell}}{\hat{\mathcal{E}}_{\ell}\hat{\mathcal{E}}^{\ell}} = \hat{\mathcal{E}}\hat{\mathcal{A}}^{\dagger} \quad \hat{\mathcal{E}}\hat{\mathcal{A}} \times \hat{\mathcal{E}} = \hat{\mathcal{E}}\hat{\mathcal{A}}^{\dagger} \quad \hat{\mathcal{E}}\hat{\mathcal{A}} - \hat{\mathcal{E}} = \hat{\mathcal{E}}\hat{\mathcal{E}}$ र्शका—यहांवर पांच केंसे उत्पन्न हुए !

समाधान-पूर्विक प्रकृती बादि छेकर धनुगुणितकमसे शुद्धान राशिहोनिंग देनेपर भपनयनराद्दि। या जानी है।

उदाहरण-पांचकी उत्पत्ति-१+४८५ अपनयनराशि (दी समुद्राँकी अपनयनराशकः/। रन पूर्वोक्त संबद्धनहाळाडाओंसे लयणसमुद्रसावाधी सेवक्टको कृतित बर्तक त्रपणसमुद्र शीर कालीदकसमुद्र, इन देनोंका क्षेत्रफल है। जाता है।

उदाह(ण— लगणसमुद्रका क्षेत्रकल- ७१•५२९४१५० x २४:

लयणोरक और कालोरककी संकलित गुणकारशालाका रहः ७९०५६२४६५० x २४ x २९ स्वयोदक अंग कालोदकस संह⁹³ संत्रकल्ड.

वय नीन समुद्रोंक क्षेत्रक्रका संघटन करने हैं— नीन क्योंग्स रहकारी िहर उसे पुश्क स्थापित करें। पुनः शेषका आसा वर कपके ऊरर वर्गवाहारोहे स्टॉर्ग र्थान करों भीर उसके ऊपर देवकी स्थापितकर अध्यक्त और उपके ऊपर वगवणाः — अस्ति उसके उपरोही स्थापितकर अध्यक्त और उपरिम्न क्योंने सील्डर्भ डुट्टर र मांतर ' विष ' क्वंत पाठ: I

संदेण ठदा चारि सहस्ता छलाउदी। 'स्पानमादितंगुणमेकोतगुणोत्मधितमिल्छा' ९देण जजनारोदेण लद्भाणि वे सदाणि वेहचराणि, एदाणि दुगुणिय एकावीसमयणिदे गुण्यारस्तामामंबरूणा होदि। क्रपमेक्डीसस्म उत्पत्ती! एगरूर्व विरक्तिय चचारि दार्ण अष्णोणान्मस्यं करिय पंचिह गुणिय एमादिषद्रगुणमंबरूणं पविस्ते अवण-यणस्ताप्तराणं प्रमायीते होदि। वस्य करणाराहा—

१९सटामासुको चत्तारि परोपरेण संगुणिय ।

पंचगुणे विचन्या एगादिश्वदुगुणा संरक्षणा ॥ ७ ॥

एरय सन्तरण दुरुन्गामध्ये विराहेदन्ये ५।२१।८५।२४१।१३६५।५४६१। यदाभी अयगपणपुवरासीओ जगताहेद्विमं चदुवि गुणिय रूपं पविस्तवे उपपन्यंति जाय 'रूपीमें गुणा और सर्वामें वर्णमा' इस मार्यासंडसे बार इमार ज्यानये (४०९६) संवया मार शेरी है। पुना उक्त प्रकारसे मान राजाचामोभेसे 'यक कम करके रोणको माविसे गुणा करे, पुना एक कम गुणकारपारतकाश मान है, तो इष्टाग्नि उत्तरम हो मानी है' इस सार्यासंडसे समुसार दो सौ तहर (२३) संक्ष्य मात होती है। इस संवयाको दूनाकर उसमेंसे इसीस पहा देनेवर गुणकारपाराकाशभीका संकलन हो जाता है।

उदाहरण-प्रथम तीन समुद्रीका संकलन- शलाका रे।

1 x 14

₹ x ₹६ x ₹६ ~ ४०९६;

1 × 15.

 $\frac{80 \cdot 8 - 2}{28 \cdot 10^2} = \frac{80 \cdot 8 \cdot 4}{84} = 203;$ $203 \times 2 = 988;$ 988 - 22 = 924

तीन समुद्रोंकी संबक्ति गुणकारशलांदा ।

र्शका - पहांपर घटाई जानेवाला इक्कील संक्याकी उत्पश्चि केले हुई ?

समाधान — बक्तवको विरक्षित कर उसके उत्तर बारको देवरूपसे देकर कन्योन्या भ्यास करके उसे पीवसे गुणाकर यकः भारि वर्तुनृशंसकलनको महेत्य करने पर भवनयन-राष्ट्राकाका मनाण इक्कोस हो जाता है।

उदाहरण—२१ की उत्पाचि—२ ~ २ ≈ १, १ ≈ ४, ४ × ५ ≈ २०, २० + १ ≈ २१ सीन समुद्रोंकी भपनयनदालाक.

इस विश्वयमें यह करणगाया है--

इए राहाकाराशिका जो प्रमाण हो उतने बार खारको रचकर परस्परमें गुणा करे, पुनः उसे पांचसे गुणा करे भीट फिर एक आदि चतुर्गुव्यकंत्रुनराशिको प्रक्षेप करना चाहिए। ऐसा करनेपर व्यवस्थनराशिका प्रसाण मा जाता है ॥ ७ ॥

यहांपर सर्पत्र दें। कर कम नव्यसारिका विरक्षत्र करना चाहिए। ५, २१, ८५, ३४१, १३६५, ५४६१, वे घटार्र आने वाली शुक्रातियों जनन्तर वयस्तन राशिसे बारसे गुणाकर 3.2 }

द्रशांकाले क्षेत्रका

18. 4. 35

कोर्यक्रक्ते ति । मेर्कि सरेक्षण्यानवृत्तिकित्यानवृत्तेतकस्वारकोतः कुल्डें- रोव बारमस्य हे अर्थ समृति सिक्षित को पति विलय कार्य अपनेपासी को चेरम्पुनियकेयानसम्बन्ध संविद्येकी, बगामुबस्य अप्रवासकारे । १९ कुर्णार करते हो के कि मेन हैं कालि कालि कुरून अल्लेलाकारों की है तो भें त कुर्करण कार्योष कंथिये मेदील पद्भागी आसमादि । आप को पति को लाहर्ष

कर्णा लक्कारों के ही, तर जोरकार समारामेन विवास्मातमी मगर्म शुनिहन नगर्म है। क्यों जिले क्ष्याचें ज्ञासकारि । पुत्रों सै कर्युं करिय एथेप आहिता गु^{त्रित} पणार्थ

र्जन कर्णाट कर कारण करवेपुर पापण बोगी हैं, और दशी क्यांट कापण मृत्यानामृत पर ware fiel go wir mirt fit

रेक रूपण भारत है है है अर्थ के में करों स्वाहत संस्था है है अर्थ के में करों स्वाहत કતા પુત્ર પુત્ર થયું, થયું તાલું કર્યું તાલું કર્યું વાલ

15. 4 3 = 20 8 8 8

A Andrewalder Siderie Linitale Ma as

वन कारवन्त्वर्थः द्वयुष्याक्ष्याः वृष्युः । १००० क्ष्युः ।

काक कामराज्ञानका मान्या विश्व कर होता. व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति विकास विकास विकास कर्तर हैं है व लेल लावृह कर दिल्ली लंका है पह लाखक प्राति एक बार रहे

केल प्रतिक प्राटक्षण के प्रश्न बाद के वाद इसकारात तो की बुक्त प्रतिकार तीला कार्या है अस अर कर शिर देवन गाउँ क्षेत्र स्था अधिक स्थान सर्थाय व्यवस्था वृक्षत्या वृक्षत्या वृक्षत्या वृक्षत्या वृक्षत्या ক্ষম প্রতি ক্ষা ক্ষ্ম ক্ষ্ম ক্ষ্ম ক্ষম করে করে করে করে করে করে করে করি করে করি করে করি করে করি করে করি করে করি है अर भक्त अन्य पर कार्य गर कार्य गर के कार्य का कार्य का कार्य का कार्य है कुंच कर करा है या है न होतर हक महि छत्तीरह है हैन्द्री) कारित मुश्ति संस्था पहले And at at animer to en ein er er

Breating a server

रनेहि भागे हिदे जोयणनवरावर्गण चालीयाहिययचेनालयहस्यस्वमुनिरेण जगपदरिद्द भागे हिदे एगमायोः आयन्द्रदि । एदं दुगुणिय सेटिअसंस्टब्बिदमागमेचनवणयणरासि इतिनन्दराणादाण् आणिद्रभवणिय लवणसह्यद्रशेवकलेज गुणिदे सर्पभूरमणविद्दिद-गदुराणं गेनपानं होति । सं केलियमिदि भणिदे प्रयूवधालीसाहियवारससदस्वेहि आगं-पदरिद्द भागे हिदे एगभागवभाणं होदि । तत्य मृतिस्त्रदेशिक्त्रस्वे संस्वेन्त्रम् लोयपपदरमेचमवालय रज्युवदरिद्द अवनिदे एक्वंचालस्वेहि साहिरेगेहि जागवदरिद्द संदिदे एगसंटो आयन्द्रदि । संस्वेन्त्रस्विक्तेसि गुणिदे तिरियलोगस्स संस्वेन्त्रहरि

पुतः इते, अर्थान् १६ के गुलितकमसे उपलब्ध राशिको, यक कम करके आदि स्थानवर्गी पकले गुलितकर, पन्नह क्योंले आस देनेयर बातील अधिक सेताकील हकार कर्यान् मेंनालील हकार व्याक्ति (५००४०) क्योंसे ग्राचित लक्ष योजनके यगेसे भाजित कामनरका यह माग करता है।

$$\frac{3418441-5}{441} \left(\frac{600000, \times 5138}{400} - 5 \right) = \frac{600000, \times 40000}{400}$$

हत प्रमाणको जुनुनाकर उत्तमें वृश्येक करणायाची शिकाली हुई क्षांग्रेणीके धर्मपात्रमें भागमाना वानवनत्तिको यहाकर सवयसमुद्रके क्षेत्रकते गुणा करनेवर स्वयम्मूरमानसुद्रमे वीत त्रेष समस्य समुद्रोका क्षेत्रक को जाता है। यह स्रोत्तकते हिन्तना होता है, यहा पूर्णनेवर उत्तर होते हैं कि यह उनतातीक वर्षिक सारह सो मर्पात् बारहर्सी उनतातीस (१२१९) क्योंसे माजित जामकरका वक मान बनाच होता है।

चंदाहरण—
$$2\left(\frac{c_{2}c_{3}}{c_{2}c_{3}c_{3}c_{3}c_{3}c_{3}c_{3}c_{3}}\right) - \frac{\pi}{c_{3}} \times \pi = \frac{c_{3}c_{3}}{c_{3}c_{3}}$$
 स्वयम्भूरमणको प्रोह शेष समुद्रोका क्षेत्रकलः

(इसी प्रमाणको उत्पन्न करनेटी प्रक्रियाकी विस्तारके िय देनो गोरमहसार जीवकार से टीका पाहिंगी अनुवाद गाया ५४०, ए. ९६४ माहि.)

स्पदम्भूष्यणसमुद्रसे रहित शेष समुद्रोंके उक्त क्षेत्रफलमेंसे मृत अपांत् आदिके स्वकोत्ति और कालेलि इन हो समुद्रोंके प्रतपात्रक संकात पोजनप्रमाण क्षेत्रफलको प्रशास तुनः क्षेत्र शासिको प्रतपात्रक राजुके प्रमाणमेंसे स्टा देनेपर साथिक इकायन कपांति जगजताके संदित करनेपर पक संद मा जाता है ?

उदाहरण— $\epsilon' - \left(\frac{\chi v'}{122} - 5 < B\right) = \frac{\chi v'}{V!}$ (इड 4 | 2 < 5 > 6 विवेश्वोधका संस्थातवी साम तिर्वेश सासाइन जीवीका स्वस्थानक्षेत्रः

मागमुत्तं तिरिक्संसासणसत्याणखेतं होदि । सेसपदसासणसम्मादिद्वीह तंन्ने दीन सम पुन्ववेरियदेवसंबंधेण पुरिवर्जिति चि कड् जीयणलक्सवाहल्लं तप्पात्रोमगबाहल्लं गरा पदरमुहुमेगूणवंचासुर्वेढाणि करिय पदरागारेण इहेदे विरियटोगस्य संखेजबदिनामो हेन्दि। 'वा ' सहस्स अत्था गदा ।

ं मार्णंतियसमुग्धादगदेहि सच चोहसमागा देखणा पोसिदा । तिरिक्सतन मेरुम्लादे। हेड्डा किण्ण मारणांतियं करेंति चि बुचे णेरहण्स किण्ण उपवन्नति ? समानते। ज़िंद एवं, तो हेड्डा समावदी चेत्र मारणंतियं ण मेलंति ति किण्म घेप्पदे १ बिंद समा सम्मादिहिणो हेहा ण मारणातियं मेलंति, तो तेसि मनणनासियदेनेसु मेहनलाही हैं। हिदेस उप्पत्ती ण पाविद ति बुत्ते ण एस दोसी, मेरुतलादी हेहा सामणसम्मादिशी मारणंतियं णत्थि चि एदं सामण्यावयणं । विसेसदो पुण भ्रण्णमाणे लेरहण्स हेहिन

उक्त पक खंडको तिर्थेचोंके सवगाहनासम्बन्धी संस्थात स्थ्यंगुढोंसे गुना सर्वेन् तिर्येग्सोकके संख्यावर्षे झागप्रमाण तिर्येख सासादनसम्यन्दरि श्रीयोक्ता स्वस्थानकृत है जाता है । चूंकि, विद्वारयस्थरयानादि शेष प्रदस्थित तियव सासादनसम्बद्धविके इत समस्त द्वीप और समुद्र पूर्वमवके वेश देवांके सम्बन्धते स्पर्श किये गये हैं, इसकिर व योजन बाह्य्यवाले अधवा तत्मायीग्य बाह्य्यवाले राजुवतरके जरहकी बोरले वर्तवाल व करके प्रतराकारसे स्थापित करनेपर तिर्यग्डोकका संस्थातयां भाग हो जाता है। हमन्त्राहे यह स्त्रपठित 'या' शस्त्रका अर्थ हुआ।

मारणान्तिकसमुद्धातको प्राप्त तियश्व सासादनसम्यग्डियाने कुछ कम सत के कौंदद (रूँ) माग संपर्श किये हैं।

र्शका—तिर्येव सासादनसम्बन्धि जीव सुमेदपर्वतके मूलमागसे गीवे गारण न्तिकसमुद्रात क्यों नहीं करते हैं।

प्रतिश्वेका — यदि पेसी शंका करते हैं, तो आप ही बताइए कि तियँड सामार्प सायांदृष्टि जीय नारकियों में क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं !

समाधान-मे नारकियोंने स्वभावसे ही उत्पन्न नहीं होते हैं।

प्रतिसमाधान — यदि पेसा है तो सुमेठपर्यंतके मृलमागसे नांचे मी वे स्थानि मारणान्तिक समुद्धात नहीं करते हैं, ऐसा क्यों नहीं स्थीकार कर हेते हैं !

ग्रंका—यदि सासादनसम्यन्दि जीव मेहतलसे नीचे मारणानिकसमुद्रात हो करते हैं तो मेरतलसे नीचे श्यित भवनवासी देवोंमें उनकी उत्पार्च भी नहीं प्रात होती है समाधान—उक्त शंकापर घवलावार उत्तर देते हैं कि, यह कोर दोए औ

क्योंकि, भैरतलसे भीचे सासादनसम्बद्धि जीवोंका मारणान्तिकसमुद्धात वर्षे होता है बद्द सामान्य अर्थात् द्रश्योधिकनयका ययन है। किन्तु विशेष अर्थात् पर्यासीयका

प्रंदिएसु नाण मारणीतिर्य भेलीति वि एस परमत्यो । कथमेत्य देवणर्च ? ण तान हेट्टिम-[204 जोयणसहस्तेव कणा सच चोदसमागा, वित्विस्तसासगेहि मनणनाक्षिएस मारणीविष मेस्लमाविहि तस्स वि छुवयसंस्रवीयलंभादी । मेरुम्लादी हेद्वा देएणवीयणलहर्स 🕃 भंतान सातादणाणं सच-चेदसमागेहि सादिरेगेहि होदच्चिनिहि है ण एस दोतो, छमामा पपद्वेहि पढिणिययउरगचिद्वाणेहि तसजीवेहि णिरंतरं ण सच रज्ज् क्रसिन्बीतं, तथा समरासंमगा। सो वि कर्ष णव्यदे १ देवजनयणण्यहाणुननचीदो । उचनादस्य एकारहः चोहसमामा पोसिश चि वचव्हं । सुने अउचं कथमेर् णव्यदे १ कम्मह्यकायज्ञीशिसासणाणमेकारहःचोदम-

विवस्ताते कथन करने पर तो वे नारकियोंने अयुवा मेरतलसे अधीन ववनी एकेन्द्रियकी वीने मारणान्तिकसमुद्रात नहीं करते हैं, यही परमार्थ है।

र्शका-चहांपर अर्थात् मारणान्तिकतमुद्धातगत सामाइनताव्यरियोके क्षेत्रमें वैद्यालता मर्यात् इछ कम सात बढे बीद्द मागका कथन कैसे किया, वर्योक्त मेडनहरू अधीमागवर्ती एक इनार बोजनेते कम सात कटे की दह (१४) आग ही माने महीं जा सकते। इसका कारण यह दे कि अवनवासियाँमें आरणानितकसमुखानको करतेवाले निर्धेव सालारनसम्बादाहियों के द्वारा उसके भी छुए जानेकी संभावना वाई जाती है। इसिटिए मेड-तलले नीचे कुछ कम एक छझ थोजन प्रमाण क्षेत्रको कार्यो करनेवाले निर्मेष सामाक सम्बन्दियोंका मारणानिक कार्यानक्षेत्र साथिक सात बढे बीर्ड (गूँ) माग होना

समाधान-पद कोई दोष मधीं। इसका कारण थह है कि छटी मागीकी प्रहुत्त, श्रचीत् पूर्व, पश्चिम, बचर, बृह्मिन, उत्तर्थ और अधीदिता सम्बन्धी छहीं मागाँसी जानेवाले, यदं मतिनियत जनि क्यानवाले क्तजीवाँके द्वारा निरम्तर सात राज्ञ दश्री नहीं विके

घंका-वह भी केले जाना !

समाधान — 'वेद्योत्र' वसनकी सायया अगुवपलिले । अर्थान् यहि आरणानिनः समुद्रात करनेवाले असमीवीके झारा निरम्तर सात राष्ट्र प्रयाण क्षेत्र क्या किया ज्ञाना. ता पहुनी 'देशोत' यह वयत नहीं दिया जाता। इस अध्ययानुवर्णासेले जाता जाता है हि पारणानिकत्तनुद्धान करमेवाले बसाबीयोंके द्वारा सात राजुक क्यां किये जावकी निरम्बर

वरपः इपरको माध्य तिर्वेच सालावनसञ्चाहियाँने स्थारह वटे खीवह (१०) मान पर्ध किये हैं। येसा कहना काहिए। पंका - एक्से नहीं कहीं गई यह बात केले जानी जाती है।

भागपोसगपरूवयतुनादो', सुदावंबिस्म उत्तरादपिवयमासगावभेतहतह-वेहसमा पोमणपरूषयमुत्तादी च जन्मदे । एत्य महेते उपपादगीमगमेने मेते मार्गतिपर्कतमेन किमहे परुविदं १ ण , एस्य उत्तरादविषयमाण् अमासदी । नदविष्यमा हिल्लिखंका, सामणाणमेहंदिवसु अणुष्यज्ञमःभागं तत्यः मार्गितियोद्याणिवंतमा । तेम उत्तारम

एक्कारह चोहरामागा फोसणमूबलब्संद । सम्मामिन्छादिई।हि केवडियं सेतं फोसिदं, होगस्म अमंबं

ज्जिदिभागों ॥ २६ ॥ पदस्य सुत्तस्य यहमाणकान्त्रं सञ्चयद्यक्षणाण् योनमंगी । मन्यानम्बानः विहारयदिसत्थाण येदण-कपाय-येउन्यियपदृष्टिद्मम्माभिन्छारिङ्गीहि सीदाणागदकोन्स् निर्

समाधान-कार्मणकाययोगी सामादनसम्यग्दिश जीवीके ग्यारह यटे चीत्र (🚻 भागप्रमाण स्वर्धनक्षेत्रके प्रकारक वागे कहे जानेवाले इनी स्वर्धनप्रकाणके स्वर्भ,तवायुरी बंधमें कहे गय उपपादगरिणत सासादनसम्यग्द्रष्टियोंके ग्यारह बटे चीदह (👯) मागप्रमान

स्पर्शन करनेकी प्रक्रपणा करनेवाले सूत्रने जाना जाना है कि उपगाइपहकी प्राप्त विवेद सांसार्नसम्यग्दिएयाँने ग्यारह बडे शीवह माग सार्श किये हैं। ग्रेका — उक्त मकारसे इसना अधिक उपपान्यदका रार्शनसेत्र होते हुए मी वर्ष

पर मारणान्तिक रपर्शनक्षेत्र ही। क्षिसलिये प्रकाण किया है

समाधान-नहीं, प्रयोकि यहां पर उपपात्पदकी विषयाका अनाय है।

र्शका-अपपादपदकी विश्वशा न होनेका क्या कारण है रै

समाधान — उपपादपदकी विषक्षा न होनेका कारण प्रेनिट्रयॉमें नहीं उपप्र हैं षाले सासादनसम्बन्धि अधिका उनमें मारणाश्विकसमुद्रातका विधान है। श्र्यांत् सामा बनसम्पन्दि। जीव प्रेकेट्रियोंमें उत्पन्न मही होते हैं, किर मी वे उनमें मारणान्तिहसमूता करते हैं। इसलिए यहां पर उपपादकी विवस्त नहीं की गई, और इसीलिए उपपादकी ग्वारह यटे चीवह (रैंडे) भाग प्रमाण स्वर्शनक्षेत्र प्रक्ष हो जाता है।

सम्परिमथ्यादृष्टि तिर्यंचीने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लेकिका अप्तरमानां भाग स्पर्श किया है ॥ २६॥

इस स्वकी वर्तमानकालमें स्वस्थानादि सर्व पर्सक्यन्थी स्वरीनप्रक्षणा हेत्रहे पणाके समान है। स्वस्थानस्वस्थान, विहारवन्द्रवस्थान, वेदना, कथाय ग्रीर वैकिषिकसमूद्रवस् हन पांच पर्योषाले सम्बन्धिमध्याद्दष्टि तिर्वचीने भृत और मधिष्य इन होनों कालाम सामाज्ञह भादि तीन लोकोका असंबंधानयां भाग तिर्यम्लोकका संबंधातयां भाग और अन्निति

१ कम्बरवकायजीगीष्ठ xx साखवसम्बादिद्वीहि xx पृकारह चोहनमामा देवणा ! जी. की. की. की. के अतियु " किनगर्वधना " इति पाउः। **र म प्रती 'ण ' इति पाठो नाहित ।** प्र सम्बन्धियादिमिलोक्स्यासंस्थेयमायः । स. ति. १, ८.

रेताणमसंतेत्र्वदिमासो, तिरिचनोबास संरोजदिमासो, अहुम्स्वादी अर्थरेज्वपुणी । एन्य परवर्षाह्यस्य स्वणा सामुण्यस्यणाणु तस्सा ।

अर्जेजदसम्मादिष्टि-संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, छोगसा

असंखेजनिद्रभागो ॥ २७ ॥ अस्पित्यक्षेत्र तिस्वेद्य वि महाधिकारे अणुग्रहरे । यूर्व ग्रुवं बहुमाणकारु-विभिद्रभगंत्ररमस्मादिहि-संबद्धसंबदस्वेच जरो प्रत्येदि, तदो एदस्य प्रस्वणाए सेचमंगो ।

छ चोइसभागा वा देसूणा ॥ २८ ॥

अभेजर्मभारिद्वीहि सस्भागारे यहमाभोहि विन्हें सेतालामसंदेऽज्ञरिभागाः, तिरियसोगस्म संखेडमारिभागाः, अद्वार्यज्ञारो असंखेडमपूर्णाः अरीरकाले पोनिदाः । एदे असंजर्मम्मारिद्विणो सर्थाणपरे सन्धरीतेष्ठा होति, स्वरण-कालोदय-सर्वभूरमणसद्वेद्व पा तम्हा सेससद्वर्यभूगरञ्जपररं स्तय सर्वागरोत्तं होति । एरस्सालपणविचालं पुन्ने व सार्व्यं । विहार-पेरम-कसाय-पेउन्मिपपुरेतु बहुंता अरीरकाल विन्हें सोतालमसंस्वज्ञरि-

धर्मस्यातमुखाः क्षेत्र स्पर्तः हित्या है। यहांपर पर्याणार्थिकनयकी स्वर्शनयकाष्याः सालाइन-गुणस्थानकी स्वर्धनयकपणाके तृत्य जानना खाहिए।

असैयतसम्यारीए और संयवार्थयत गुणध्यानवर्ती वियेणीने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ! लोकका असंख्यातवां माग स्पर्ध किया है ॥ २७॥

'तिर्वेषगतिमें तिर्वयंत्रि' इस महाधिहारकी यहांपर अनुवृत्ति होती है। चृक्ति यह एव पर्तमानकार्वाद्याद्य असंवतसम्परिष्ट और संवतासंवत तिर्वेषोंके स्रातंत्रशेषका प्रकरण करता है, इसकिए इसकी प्रकृषण क्षेत्रके समान हो है।

६क्त दोनों गुणमानवर्धी विश्व बीबोंने अक्षेत और अनागतकालकी अपेक्षा इस कम सह बटे चौदह माग स्पर्ध किये हैं 11 स्ट 11

स्वस्थानपद्वर धर्तमान असंयतस्वयनशि तिर्वयोति सामान्यत्येक माहि तीन रोक्रांक असंस्थातवर्धा माम, तिर्वयोक्षया संस्थातवर्धा मान और समृत्राह्मान्ये असंस्थातवर्धा संग्र अतीनकालयो स्पर्धी दिवा है। ये असंसामान्याशि तिये स्वस्थानस्वयनात्वय सर्थे द्वांगीम होते हैं, तथा स्थानसमूद, बाओक्ष्यसमुद्र और स्थयम्प्रद्यालस्वद्रमें भी होते हैं। स्तिद्य दोय समूद्रीरे श्रेष्ट दीन राजुक्तर यहीयर स्वस्थानक्षेत्र होता है। इसके तिकालमें विभाग पूर्वरे समान ही करना साहिय । विदारसन्यस्थान, वेदन, कराय और वितियनसमुद्रात, इन पद्मापर पर्तमान अधिने क्षतिस्वारमें सम्मान्यक्षेत्र आहि तीन

॥ अर्तवत्रत्ववस्थितिः संवत्रावंपर्तेओकस्यासंरुवेषवायः यद् चतुदेशमधा वा देशीमा । सः वि. १, ८.

198

[1, 1, 10

मार्गः, तिनियानेशस्य संसेन्बदिसार्गः, अब्वद्यबद्धाः असंसेन्बसुर्गः कुर्गति । को ै 🎁 वेतिपदेशस्त्रीताही जीपगणकृत्वाहरूकं मंसीक्जजीयणबाहरूकं वा राजुरहरं हमान्रीरहे चुनैति ति । सार्वतिपरदे बहुमानेदि छ चोहममामा देखना पेतिहा । इही किक् कार्याते उत्तरि तेत्रिमुणकीम् अमाराही तत्य गमगामता । म श उपनियेशः सि राज्यं मेनवरिः, जरूपनंगा । उत्तरि श्वमेराज्येषु मिन्छादिष्टिगो बरि उपाने हे है कर्णवरमान दिश्वां मेवदानंबदार्यं च उप्पत्ती किमिदि व होत्रव ! मिन्छादिशि एव लिनेन उपन्ति में. एरे विद्यानिया भेर उपपन्तित संबंधि होगी। उपार्ति है क, मृत्यम् देव्यमने चेदममागचण्यमगारी है च एस दीमी, श्रीर R सर्गारी इन्हें नियो पर्वतरमञ्चारिष्ठी सेत्ररास्त्रहा च उपान्त्रीति, ती हि सन चौर्यहरण व रे १. माहरोजा हो चेर सम्पारतीहा । उत्तरहर्महि अहीरहाते निर्म लेगात

बान्त कर कर्तकारको आस, विवित्ताकका संख्यालया आस सीट सहार द्वीपने बर्नकार व क्षण करणां विकार है, करोति, पूर्वप्रकृति विशेष प्रशास कार मामकारण क्षण कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य क्ष्मान क्षेत्रकार ने इन वाहायवाचा राज्यान त्या क्ष्मान क्षात वाहा है हिन्दू । क्षमान क्षमान ने इन वाहायवाचा राज्यानक्षम वर्षक्ष क्षानिकामधे वार्षे हिन्दू । अनुसारिक्षणम् श्रम्पार्यपः सर्वतास्य त्रीगीतं कृष्णं कत्त छत्त्र की कीएड मार्ग (१) शर्म हि है करू व अन्तर्भवनार्थ प्राप्त वतात वहानक छह वह आहर सार १६८० इस करूप अन्तर्भवनार्थ प्राप्त वतारी वहारतक समाच बोनेसे बहोगर नागवां बना है - बोन क्रमामान्यक्षः क्रिया करके शतन तर्शना समाय कामभाव सामभावा स्थापना होता स्थ देव' - अवनुनवानने प्रतम नहि सन्तिनेवशीमें विद्यादिए सनुना ब्राम है वह

सः कर्तः क्वान अवस्था में और अध्यानां ध्वान निर्धानी चार्याच व्याप्त मही बीचा वाहित विदेशी क च के रिक्शकार व जुल कुलारियों इताल बेले हैं, मेर वे भी प्रशामिती है। इता है। इंपर्क कर्त दान नहीं है। नीत करा आप सि में क्षिपीया में हिला है। क्षेत्र करा आप सि में क्षिपीया में हिला है। नार्यं करा का सकता है, वर्षात्र, तिरा शार्त्रानेश्वत्रे वृत्तीन लाम वंद ने स्ट (है) है LANE : L. SHAZA PHI!

क्या हार - यह बारे ने व नहीं, वर्गीक, वन्ति अवधानवीते हार्वाक्षी अन बाप क्रायान्यानीय बोन श्रामात्र न जीत श्रामा वेशे हैं, तो ती सान की कारणकार कार्तिकारण करी ज्ञान बाना है, क्यांकि, यन अववेदगर्दार्व के क्यांकित कार्तिकार कार्तिकारण करी ज्ञान बाना है, क्यांकि, यन अववेदगर्दार्व के क्यांकित दल्य हर हे कर्तन हर्ने बन्त ही शतक हत है निर्वेच नहीं।

in a fill space to the country of th

संवेज्जिदमागो, विरिप्तांगस्स संवेज्जिदमागो, अङ्गाद्रज्जातो असरीज्ज्ञगुणो पोतिदो । ए जहा- विरिद्धमे विरिद्धा-देव-वेग्र्यसम्मादिष्टिणो ण उप्पञ्जीत थि । इदो ? सहावादो ।
मणुसरद्द्यसम्मादिष्टिणो चेव उप्पञ्जीत, पुण्यं विच्छपक्षिरिष्टि यह विरिद्धाउज्ज्ञादो ।
ते वि मोराभूमीस चेव उप्पञ्जीत, दाणादिस्यवत्रसम्मादिष्टीहि पुराज्जिद वि तस्साण्यणविपाण पुर्चिद सर्पद्धानमागो सम्बो चेव उचवादपरिष्णद्धसम्मादिष्टीहि पुराज्जिद वि तस्साण्यणविपाण पुर्चिद सर्पद्धपञ्चदारो प्रमाणो होहि व याधिह रज्ज्ज्यंच्छमागो रज्ज्य जप्पानामा सरोज्जा मागा व होति । तेसु रज्ज्जिक्संमिन्द केडिदेस अवसेता विष्णि अङ्गाणा रज्जुण संवेज्जिदमागो वा होति । एदेण विक्खंमायारेण हिदवम्मादिष्टि-उक्बदिसंच--

रिस्तंभक्तगदररगुणकरणी बहस्स परिहुओ होदि । विस्तंभक्तजस्मानो परिहक्गुणिदो हवे गणिदं ॥ ८॥

एदीए नादाए पदरानारेण कदे जनपदर अहसवावणमतान्महियचाकीसेत्वर-चदुहि सदेहि खंडिद-एयमानो साहिरेमो आगच्छदि, राष्पाओम्मसंसेन्जरुवेहि छिप्पेम-

होक मादि तीन होकोंका मलेक्यातयां भाग, तिथै होकक संक्यातयां भाग भीर महार्द्धापले मंतर स्वाद्धापले क्रिक्ट होते हैं। यह दूस प्रकार है— तियंकोंसे तिवंक, देव भया मार्द्धा एरावाहुमार होते हैं, एरावेंकि, प्रेस्त स्वभाय हो है। केवल शायिक-सम्बद्धा होते हैं, प्यांकि, उन्होंने पूर्वें तियात्रायते संविक्त लिएगामीके द्वारा तियंक मायुक्ते बांच लिया है। हो वे वो अंध ओव शोर्प्यात्रेक संविक्त लिएगामीके द्वारा तियंक मायुक्ते बांच लिया है। हो वे वो ओव शोर्प्यात्रेक तियंक्षामें हो उत्तरम होते हैं, 'व्यांकि, समस्यक्षियां हो मार्क्सि समस्त एरा प्यांकि स्वृत्योदमा विपत्तान रहती हैं हैं। इसिल्य स्वयंक्ष प्रकार प्रवेक्त उपार्थित सर्वे भाग उपयोद्धायित स्वरेत्तसम्बद्धि तियंक त्रीयंक्षेद्धार स्वरंति हमारक व्यत्त हैं—

्वयंत्रमा पर्यति परमाधवर्ती होत्र बीनों ही बाध्यीस राष्ट्रणे पांच बढे साह (है) भाग सथया राष्ट्रके सम्प्रायोग्य संवयात बहुयाग प्रमाण होता है। उन भागंकों राष्ट्रके विभागममें स्टा देनेवर सीन बढे साह (है) भाग अवसीच होता है। उन स्वायंकों राष्ट्रके विभागमाण होता है। इस विभागम और स्वायामें स्थित सम्वयाधिक उपचारहोगको—

विश्वतादा वर्गकर उसे व्यासे गुवा करके उसका वर्गमून निकाले, वही वृत्त वर्गात् गोलाइति क्षेत्रकी परिधिका प्रमाण हो जाता है। पुनः विष्टमने पर्मागने परिधिको गुणा करमेपर क्षेत्रफल को जाता है। ८३

हस गाधायुके मनुसार प्रतराकारके करनेपर माठ बढे सखायन मागने अधिहर सार सी चाहीस (४४०%) गामीसे संहित साविरेक एक भागप्रमाण क्रायज्ञ होजा है 1 भागो वा । तं उस्सेयसंखेज्जंगुलेहि गुणिदे तिरिक्ससम्मादिहिउववादंवेते सेहैं। संजदासंजदेहि सर्याणपदिष्टिएहि तिण्हं छोगाणमसंखेजदिभागो, तिरियलोगस्स संबेज्जी भागो, अहुाइज्जादें। असंखेजगुणो । एत्य सत्याणखेत्तमाणिज्जमाणे तिरिक्ससमारिह ज्वनादपद्रखेत्रमुस्सेघगुणगारवज्जिदं रज्खपदरम्हि अवणिदे जगपदरं साहिरेषपंचरा रूवेहि भजिदएगमागो आगच्छदि । तं संखेज्जुस्तेर्धगुलेहि गुणिदं संजदासंजदतत्वान्त्रवे तिरियलोगस्स संखेजजीदमागमेचं होदि। विहारवदिसत्याण-वेदण-कसाय वेठव्यिपर्पर देहि संजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेजदिमागा, विश्यिलोगस्स संखेजदिमागा, अग्ना

संजदासजदाह तिण्ड लागाणमसखादमागा, विद्युलगास तिल्यास क्षेत्र है।
$$\sqrt{\frac{2}{c} \times \frac{3}{c}} \times \frac{1}{c} \times \frac{1}{2} \times \frac{1}{2} \times \frac{1}{c} \times \frac{1}{2} \times \frac{1}{c} \times \frac{1}{c$$

उपपादका क्षेत्रफल-

विशेषार्थ - यहां उपलब्ध मागप्रमाणको सातिरेक कहनेका अभिप्राय यह है कि मे रें का वर्गमूल रेरे ले लिया गया है यह यथार्थ वर्गमूलसे कुछ अधिक हो गया है अले मागहार कुछ बढ़ गया है। पहले इसी विश्वस्मको छेकट परिधिके मिन्न प्रमाण हारा कि क्षेत्रफल निकाला गया है। (देखी पू. १६९-)

अध्या तथायोग्य संव्यात क्योंसे भावित जगमतरका एक भाग आता है। वर्ष संर्पात उत्तेभांगुलांस गुणा करनेपर विध्व सम्यन्द्रि जीवोक्त उपपादसेन हो जाता है। स्वस्थानस्यस्थानपद्स्थित संयतासंयत तिर्यचीने सामान्यलोक आदि तीन हो सं

असंच्यातयां भाग, तिर्थग्लोकका संक्यातयां भाग और अदारियित असंस्थातगुण स्पर्धा किया है। यहाँ स्वस्थानस्थालक्षेत्रको निकालनेपर उत्सेषगुणकारते रहित निक ससंवतसम्यन्दियोंके अपवाद प्रतरक्षेत्रको शाकालनपर उत्सम्यावकारण स्थापकारण प्रतरक्षेत्रको शाकुत्रतरमेंसे घटा देनेपर साधिक द्वान क्योंसे माजित थक भाग जगनतर वाता है।

उदाहरण-तिर्वेच सम्यन्द्रशियोंका अपपाद्मतरहोत्र =

जाता है, जो कि निर्यंग्टोकका संस्थातवां भागमात्र होता है।

विदारवास्वरयान, वेदना, क्याय और वैक्रियकसमुदात, इन प्यास परिन का संयतासंयत अधिने सामान्यकोक आदि तीन छोक्षेत्रा असंस्थातमा माण, तिर्देखीना ज्ञादो असंसेटज्युको अदीदकाठे फोबिसो। इदो है संजदासंजदाणं वेरिपदेवर्सकंपेण जोयणत्रनस्वादस्वं विरियपदरस्य अदीदकाठे पोसो अत्य वि । मारणंवियससुग्यादगदेहि संजदासंजदेहि छ चोहसमाया देशणा फोसिदा, विरिन्ससंजदासंजदाणमञ्जूदरूप्पा वि मारणंविरुण गमगसंमगदो।

पंचिदियतिरिक्स-पंचिदियतिरिक्सपञ्जत-जोणिणीसु मिन्छादि-द्वीहि केवडियं सेतं फोसिदं, लोगस्स असंसेजदिभागो ॥ २९ ॥

पदं सुचं बहुमाणकालसंबंधि चि छद्सस परुवणाए सोसमंगी !

सब्बलोगो वा ॥ ३० ॥

परिसंसादो एदं सुचं वीदाणानदकारुसंबंधी। एत्य ताव ' वा ' सद्हो उच्चेर्-ठि-विसंसमावितिहस्तवाणांतितिक्वियम्बादिष्टीहि तिच्हं तोनाणमसंखेरजदिमानो, तिरिव-होतास्त संदेरज्यदिमानो, अङ्कादरजादो असंखेरज्यपुणो पेसिदो । एदं खेषमानिरजमाने असंखेळास सहरेस मोनभूमिपडिमानदीवाणमंतोस्त दिदेस सरपानपदाहिदनिविदा तिरिक्खा

संस्थातयां मान भीर बहार्रहाचसे ससंस्थातगुणा क्षेत्र सतीतकाठमें स्पर्श किया है, क्योंकि, सम्बत्तास्थानत तिपंत्रींका वैदी देखेते हरणावश्यक्ती राक साम्य बोहत पाहस्यपाते तिर्वक् मतास्थानतीवत्तासी प्रायो किया गया है। मारणाध्यकसमुद्धातयत तिर्वेच संवतास्थ्यतीते इन्छ कम यह बढे कीवह (२५) मान व्यश्नी किये हैं, क्योंकि, तिर्वेच संवतास्थ्यतीक्त सन्द्रतकाय समामाध्यक्तमसुद्धातसे गया संवत्त्व है।

पंचेत्रियतिर्वन, पंचेत्रियातिर्वेच वर्षात और वंचेत्रियतिर्वेच योनिसतियोमें मिण्याष्टि जीवोने कितना धेत्र स्पर्ध किया है ? स्रोक्का असंख्यातवा भाग स्पर्ध किया है ॥ २९ ॥

यह सूत्र विधानकालसम्बन्धी है, इसलिए इसकी राशीनवस्था शेवमस्यागले समान सातवा चारिए।

डक्त होनों प्रकारके तिर्यंच जीवोंने श्रवीत श्रीश श्रनागत कालनें सर्पतीक स्पर्ध किया है ॥ ३० ॥

पारितान्यायके यह स्व मूल और प्रविष्वहारसम्मधी है। यहांपर पहले 'बा'
दारहता मर्च कहते है--पंचित्रपतिर्धव, पंचित्रपतिर्धवयांत मीर पोतिमतो इन ठोन विहोदान्द्रका मर्च कहते है--पंचित्रपतिर्धव, पंचित्रपतिर्धवयांत मीर पोतिमतो इन ठोन विहोदानी विशिष्ट दश्यानपदिष्य विश्व विच्यादिष्ट मोर्चिन सामाप्यक्षेत्र भादि सीन होवोद्धी
सक्ष्यावार्ष्य भाग, विभिन्नविष्ट संस्थावां भाग भीर महार्द्धीपये संस्थानपुत्रा होत रहेव सिन्दा है। इस दोष्ये निवासनेपर ससंस्थान समुद्रोंने और प्रोग्यके पतिसावर प्रांगिके सम्बद्धानी दिष्ट सेवोदे व्यवसावपरियत उन्ह सीन महारेह विषय मही है, दससिय इस

णियं ति एदं खेतं पुरुविघाणेणाणिय रज्जुपदरम्हि अवणिय संसेज्जमनिकंगुडेहि ! विरियलोगस्सं संखेज्जदिमागमेर्चं पंचिदियतिरिक्छाविगमिच्छादिद्विसत्याणसेर्वं हो विहारवदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेउच्चियपदपरिणद्विविहमिच्छादिद्वीहि विग्हं लेगा संखेजनदिभागो, तिरियलोगस्स संखेजनदिमागो अङ्गाइजनादी असंखेजनपुणी फीरि कदो ? मिनामिन्तदेवनसेण सन्बदीन-सागरेगु संचरणं पढि निरोहामानाहो। तेणत्य सं गुलबाइन्लं तिरियपदरमुद्धमेगूणवंचासखंडाणि करिय पदरागरिण टर्डे वंचिदिपतिरी तिगमिच्छादिद्विविहारवदिसत्याणादिखेचं तिरियलोगस्स संखेळदिमागमेचं होदि। 'वा' स

तिर्पेग्छोकका संख्यातवें मांगश्माण पंचेन्द्रियतिर्येख, पंचेन्द्रियतिर्यंचपर्यात मीर योगि इन तीन प्रकारके मिथ्यादृष्टि तियंचीका स्वस्थानक्षेत्र हो जाता है । विदारवास्वस्थान, वे कपाय भीर वैक्रियिकसमुद्धात, इन पद्देंसे परिणत उक्त तीन प्रकारके मिध्याद्देष्टि तिर्पे सामान्यलीक भादि तीन छोकोंका असंस्थातयां माग, तिर्यग्लोकका संस्थातयां माग मदार्देद्वीपसे असंस्थातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, पूर्वमयके मित्र या शहरूप देव बरासे सर्व द्वीप और सर्व समुद्रामें संवार (विहार) करनेके प्रति कोई विरोध नहीं इसलिए यहांपर संख्यात भंगुल बाहस्यवाले तिर्यक्ष्मतरको जगरसे उनवास का की मतराकारले स्थापित करनेपर पंचेन्द्रिय तिर्येच आदि शीन मकारके मिध्याहि तिर्ये जीवोंसम्यन्धी विद्वारवत्स्यस्थान मानिका क्षेत्र हो जाता है, जो कि तिर्परलोक्का संस्थान

गदे। । मारणंतिय-उववादगदपंचिंदियतिरिक्शतिगमिच्छादिद्वीहि सन्वलोगी पेक्षिर छोगणालीए बाहिं तसकाइयाणमसंभवादो सन्वलोगो ति वयणं कर्ध घडदे ? गएस र मारणंतिय-उनवादहिदत्तसजीवे मोत्तृण सेसतसाणं बाहिरे अरियत्तप्पडिसेहारो'। क्षेत्रको पूर्वियानसे लाकर और राजुमतरमेंसे महाकर संस्थात स्वयंगुलांसे गुणा करे

मागमात्र होतं है। इस प्रकारते ' वा ' वाप्यका अर्थ हुमा। मारणान्तिकसमुदात और उपपादपद्रगत पंचेन्द्रिय तिर्यंच मादि तीन प्रकार मिध्यादारे तिर्वेख जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है।

र्शका-छोकनाछिके वाहिर असकायिक अधिकि असंभव दोनेसे 'सर्वतीक स्व किया है ' यह बचन कैसे घटित होता है !

. 71

समाधान-यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, मारणस्तिकसमुद्रात और अपगरि रियत त्रसंजीयोंको छोड़कर क्षेत्र असर्जायोंका त्रसंनाशीके बाहिर मरितायका प्रतिरोध हिया गया है।

१ वनगद-मारणियपरिणदत्तस्यविष्ठम वेतत्वा । तत्वमानिमाहिरन्ति य गरिव मि मिनेहि सिर्धी गो, औ, १६६३

सेसाणं तिरिच्छगदीणं भंगो ॥ ३१ ॥

सेतांणिपिद उत्ते सामणमम्मादिहि सम्मामिक्टादिहि असंबद्धस्मादिहि संबदासंबदा देशक्या, ज्ञ्लेसिमधंभवादो । एकिस्ते तिरिस्त्यादीण तिरिस्त्यादीणामिदि
सद्दाणिदेशो कर्ष पददे हैं ज एस दोसो, प्रक्रिस ति तिरिस्त्यादीण ग्रण्डाणोदिभेषण
सद्दुपशिदाभावादो । पदेसि चदुन्दं गुण्डाणाणं स्वत्या बहुमाणकि सेत्तसमाणा ।
अदीवसाले पदेसि विरिक्सोपपर्वणाण सुद्धा । अवीर बोधिणीसु असंबदसम्मादिहीणं
द्ववादो णदिः प्रित विरिक्सोपपर्वणाण सुद्धा । अवीर बोधिणीसु असंबदसम्मादिहीणं
दववादो णदिः परित्र परित्र विरिक्सोपा

पंचिदियतिरिक्सअपञ्जत्तएहि केर्चाडयं सेतं फोसिदं, लोगस्स असंस्कृजिदभागो ॥ ३२ ॥

बहुमाणकाले सत्याण-बेदण-कतायपदे बहुमाणवींचिद्वितिश्वंत्रप्रवज्ञवदिह पदुष्टं होगाणमसेपेवनिद्माणां, अहुादुवनदि असंवित्तवर्षाणां पीधदो । मारणंतिप-उद्यादपेटि तिष्टं होगाणमसेवेवनदिमाणां पर-विदियतोगिर्दितो असंवित्तवर्णाणां ।

धेर विभेचगविके क्षीबोंका स्पर्धनक्षेत्र ओयके समान है ॥ ३१ ॥

'होप' पेसा पत् कहने पर सासाहकसम्पर्टाडे, सम्बव्धिकस्पर्टाडे, स्रक्षितसम्पर्टाडे और संप्रतासप्त तिपँचोंको सहस्र करना चाहिप, पर्योके, इनके श्रीतिक अन्य तिपँचोंका महत्र करना मसेमच है।

श्वेता-- एक ही विवेचनविके होने पर ' विश्वितनहींनं ' यह बहुवधनका , निर्देश

केसे घडित होता है !

समाधान-यह कोई दोष नहीं, वर्षोंकि, यक तिर्वेश्वगतिसामान्यके होने पर भी

गुणस्थान आदिके भेदसे बहुत्वके होनेमें कोई विरोध नहीं है।

दन दक चारी गुजरवानांशी वर्गानमस्थाना वर्गानवस्थाने शित्रके समान है की स्वान है कि दिन के समान है कि दिन के स्वान है कि दिन के स्वान है कि दिन के स्वान के स

पंचीन्द्रयाविर्यंच स्टब्यपर्याप्त बीबीने क्तिनाधेत्र स्पर्ध किया है है सेक्का असं-

एयातवो भाग स्पर्ध किया है ॥ ३२ ॥

स्तेमात्रकार्यमें रवस्थानस्वस्थान, वेदना, और वश्यवसंयुद्धात, देन पर्येपर वर्तमान, एपेंदियातियम सप्वमानीन सामान्यतिक भादि चार सोवीया सर्वयातवी मात्र भीर महाद्विपसे मर्ववस्थानगुण क्षेत्र स्थर्य दिश्य है। मार्च्यात्विकसमुद्धात और उपयाद एद्याउँ पंवेद्दिय साम्ययपीन विपेषीने सामान्यत्वीक भादि तीन रोजीय मर्ववस्थाना मात्र मार्द्

14, 4, 16

सव्वलेगो वा ॥ ३३ ॥

पंचिदियतिरिक्सअपन्यतेति अणुबहृदे । एत्य नाव वा मरहो उन्हें सत्याण-वेदण-कसायपदगदेहि पंचिदियनिरिक्सअपज्जनएहि निर्दं होगानक्केनिक भागा, विरियलोगस्स संवेजदिमागा, अहाइन्जादी असंगन्जगुणी फोलिशी हो अहुाइज्जदीव-समुदेस कम्मभूमिपढिमाने सर्वपहपन्यद्रपरमामे च तेमि समारी। बरीर काले सर्यपद्यव्यद्यस्मार्ग सेव्ये ते पुश्ति चि विरियलोगस्स संसेजिदिमाममेन वेर् होदि । तस्त्राणयणिक्षाणं युग्रदे--सर्यपहपन्यदन्मतस्त्रेतं जगपदस्स संवेजदिका र्ज्जुपदरान्दि अविषिदे सेसं जगपदरस्य संशेज्जादिमागी देदि । तं संशेजप्रवित्रंगुजी गुणिदे' विरियलोगस्स संखेकदिमागी होदि । अवज्वचाणमंगुलासंखेज्बदिमागीणाहम् क्षं संखेजनगुरुस्सेघा लन्मदे । ण, मुत्रपंचिदियादितसकतेवरेस अंगुरुस्त संवेति मार्गमादि कार्ण जाव संखेजजजीयणाणि चि कमवड्डीए हिटेसु उप्पत्रमागागमग्रहणा संखेजजेगुलुस्सेषं पिंड विरोहामावादो । अथवा सच्चमु देव समुरेसु पंचिदिगितिस्य

अथया, समी द्वीप और समुदान पंचीत्रय तिर्वेच सक्त्यपर्यास्त जीन होते हैं। क्वीती

पंचेन्द्रियविर्यंच छण्यपर्याप्त जीवोंने अवीव और अनागवकालकी अपेका धर्वेटि स्पर्ध किया है ॥ ३३ ॥

इस स्वमें 'पंचेत्रियतिर्यंत्रमपर्याप्त' इस पदकी अनुवृत्ति होती है। अर वार्ति 'आ' सम्पन्ना मध्ये कहते हैं— स्यत्थान, चेदना और कपायसमुद्धात, हत पराडी प्राव पंबेरिह्म तिपंच अपर्याप्त अधिने सामान्यकोक आदि तीन कोर्बोका असंस्थातनो मान तियां को कका संक्यातमा माम और अदाहरीयसे असंक्यातमा माम स्वरी है। व्याम अवृतिश्चीय भीर वो समुद्रामि, सथा कर्ममूमिके मतिमागवाले स्वयंत्रमपर्यते वरमागम के किपारिपंच क्रम्पपूर्यान्तं श्रीवाका होना सम्माव है। अतीतकालमें क्रपंतमप्वतं सार् परंप्राणको में अधि इपर्श करते हैं, इसलिए यह क्षेत्र तियंग्लोकका संद्यानया प्राणान होता है। अब उस क्षेत्रके. निकालनेके विधानको कहते हैं— स्वयंत्रपत्रवर्तका आम्या क्षेत्र जामतरके संबंधावर्षे माध्यमाण है। उस राजुमतरमेंसे घटा देनेपर दोर सेत्र जामता संस्थातमां प्राप्त होता है। उसे संस्थात स्वयंगुठीं श्रेण करनेपर विषेत्रीका संस्थात भाग हो जाता है।

धेका — भेगुरुके मसंस्थातवे मागमात्र मवगाहनवाले शब्दपप्यांच क जोगाँह हं सी

भगुटप्रमाण उत्सेघ केसे पाया जा सकता है। समाधान - महीं, क्याँकि, मृत पंचीरद्रवादि असतीयोंके श्रीतके संक्यांत्वे संग्री कि संक्षांक कारि करके संक्ष्मात क्षेत्रका तक क्षत्रकृतिक दिस्तत कारोधीन ज्यात क्षत्रकार का क्षत्रकार का क्षत्रकार का क्षत्रकार का क्षत्रकार का क्षत्रकार क्षत्रकार का का क्षत्रकार का का क्षत्र का क्षत्र का क्षत्र भीषोंके संस्थात अंगुल उत्संघके प्रति कोई विरोध नहीं है।

अपन्या। अरिष । इ.दो, युन्यवेरियदेवर्सवंचेण एगर्वधणवद्धवन्तीवणिकाश्रोगाद-सन्मभूमियदिशानुष्णणाश्रोगातियदेहबच्छादीणं सक्यदीव-समुदेसु संमवीवर्छभादो । महा-मच्छोगाहणिट एग्राचधणवद्धवन्त्रीविकायाणमित्यणं कर्ष णव्यदे है वरगणिट्द उत्त-अप्यावद्गादि । तं बहा- ' सन्दर्योवा सहसन्दछसरिर पदरस्य असंस्वेज्वदिमागमेणा ससस्यद्यांचा । वेडकाह्य बीवा असंस्वेन्त्रमुणा । को गुणमार है असंसेज्वत्र तेलि गिर्ड-भागो वि असंसेज्वत्रेलायेणो । एवं आडकाह्य विकेसा है असंसेज्वत्रेलायेणो । तेलि गिर्ड-भागो वि असंसेज्वत्रेलायेणो । एवं आडकाह्य विकेसाहिया । वाडकाह्या विसाहिया । यणप्यक्राह्मपा अर्णकामणे । एवं आडकाह्या विकेसाहिया । वाडकाह्या विसाहिया । यणप्यक्रमाया अर्णकामणं हिर्म देव विवाहिया । व्यावस्य विक्राविकामणं हिर्म तेत्र साह्याणं च संभवादो । ण च सुरवरीर चेव पाँचिद्वप्रयच्यवाणां सभवो चि योष्ठं उत्तरं, सस्य विधाययस्वातावा । महानच्यादिदेहं तेसिमरियचस्य स्वयं पुण दरमप्यावद्वगसुर्यं होदि । सस्यज्ञचरससीदो तस्यपञ्जवससी असंस्वन्त्रगुणो । तेण जस्य तसनीयाणं

पूर्वमक्ते परि देवों हे साकायते एक बंधनमें यद चट्कायिक आरोके धम्रूदेते स्वास भीर कर्मभूमिके प्रतिमाणमें अलग द्रुप भीदारिकदेहवाले महामण्डादिकोंकी सर्वद्वाप और समुद्रोंने संमायना पार्व आती है।

र्द्यका—महामण्डकी जनगाहनामें यक बन्धनसे यह पट्काविक ओयोंका अस्तित्य कैसे जाना जाता है।

समापान—पर्णणार्क इसे बडे प्रये अस्यबहुत्वानुषोगद्वार से जाना जाता है। वह इस सकार है— 'महामार्क जानिय संबंध का जागातर के सर्वस्थात मागमाज जरकारिक जीय दोते हैं। यह जसकारिक जीवाँसे तेजहरूप्रविक जीव सर्वस्थातर होते हैं। गुणकार क्या है। क्षांच्यात होते हैं। गुणकार क्या है। क्षांच्यात होते हैं। गुणकार क्या है। क्षांच्यात होते हैं। शुणकार क्या है। क्षांच्यात होते हैं। क्षांच्यात होते क्या प्रयोगने अधिक होते हैं। क्या प्रतिमाग भी अर्थक्यात होता है। इसी प्रवास्त शृथियोक्तायिक जीवांचे स्थापिक जीवां

सहामध्यक्ते दारीत्में अरह कहे गये थे सक आब केलत वर्षोत्त हैं। नहीं होते हैं, किया बतते दारीत्में असकाविक संभवपार्थात्त जीव कीर तेजरकाविक सीवांदा भी होता संभव है। तथा मृत दाहित्से ही पंचेन्त्रिय स्टब्यवर्षात जीव संभव है देसा में कहना युक्त नहीं है, क्योंकि, इस बातके विधायक सुकदा मनाव है। किया महामध्यादिके देहमें अनके स्वित्त्यका सुकदा बहु उत्त मररकृतवा्त है। अस्ता महामध्यादिके देहमें अनके स्वित्त्यका सुकदा बहु उत्त मररकृतवा्त है। अस्ता महामध्यादिके देहमें अनके स्वतित्यका सुकदा बहु उत्त मररकृतवा्त है।

संभवो होदि, तत्य सन्वत्यं वि पञ्जतेहितो अपञ्जना असंखेज्जगुणा होति। त्या संखेजजंगुलबाइल्लं तिरियपदरमेगृणवंचासखंडाणि करिय पदरागरेण खंद निरि लोगस्स संखेजजदिभागमेचं पंचिदियतिश्विखाअपज्जचसत्याण-वेदण-कसायसेतं होरि। ' या ' सहद्वी गदी । मारणीतय-उववादगदेहि सञ्जलोगी पीसिदी, सञ्जल गमनामन पडि विरोहामावा ।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपन्जत्त-मणुसिणीसु मिन्छादिईहि के डियं खेतं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागों ॥ ३४ ॥

पदस्स सुचरस अत्था खेचाणिओगद्दारे परुविदी चि गेह परुविज्जदे।

सन्वलोगो वा ॥ ३५ ॥

पत्य ताव ' वा ' सदद्वो उच्चदे- सत्याणसत्याण-विहारविदसत्याण-वेद्ग-क्स्पर-पेउड़िययपरिणदेहि चदुण्हं छोगाणमसंखेजजदिशागो पोसिदो, वीदाणागदकालेख बेरिपदे। संपंधेण वि माश्रुसोचरसेलादो परदो गमणामाता । माश्रुसखेचस्स पुण संखेज्जीदमणे

संमापना होती है यहाँ पर सर्वत्र ही पर्याप्त जीवोंसे अपर्याप्त जीव असंव्यानगुर्वे होते हैं। बत्यय संययात भंगुल बाहस्यवाले तियंक्यनरके वनंचास खंड करके प्रतराहारस सारि करने पर तिर्येन्छोकके संक्यातम् आगमात्र पंकत्रित्य तिर्येच साम्यवर्यान अगिंश श्वाम पदना भीर कपायसमुद्धातगत क्षेत्र होता है। इस प्रकारसे 'या' वार्वक सर्थ समावहुम। मारणात्रिकसमुद्धातगत क्षेत्र होता है। इस प्रकारसे 'या' वार्वक सर्थ समावहुम। मारणात्रिकसमुद्धात और उपपादगत पंजेन्द्रियतियंच स्टब्स्यपर्याप्त त्रीवीन सर्वेड

स्पर्ध किया है, क्योंकि, उनके सर्थ छोकमें गमनागमनके मति विरोधका भ्रमाय है।

मनुस्यगतिमें मनुस्य, मनुस्यपर्याप्त और मनुस्यनियोमें मिध्यादृष्टि श्रीभे किवना धेत्र स्वर्ध किया है ? लोकका असंख्यावयां माग स्पर्ध किया है ॥ ३४ ॥

इस स्वका अर्थ क्षेत्रानुयोगद्वारमें प्रक्षण किया जा खुका है, इसिंदर वह गर कि मरूपण नहीं किया जाता है।

मिध्यादिष्ट मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोंने अतीत और अनापी

कालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ ३५ ॥

थव यहांपर पहिले 'था' द्वान्त्रत मर्थ कहते हैं — स्वस्थानस्थरपात, तिर्ण चंद्रस्यान, प्रदेश, क्याय और धैकियिकसमुद्रातसे परिणत उपर्युन जीवीने साम्बन्धन मादि चार स्थाय के मादि चार शेकांका मानेक्यातयां भागवश्यां कियादी, वर्षोक, अर्थात भीर भनामन्त्र कि देवोंके सम्बद्धाः देरों हे सम्बन्धि भी मानुशीत्तर दीश्वेस पेरे मनुष्यों है नमन्या भगाय है। हिन्दु मनुष्यात मिच्छादिद्वीणं आपासगमणादिविसचिविरहिदाणं जोयणलक्यवहरूलेण फासामावादे । अपना सन्वपदेहि माणुसलोको देख्णो पोसिहो, बुट्यवेशियदेवसंबंधेण उर्ष्ट्र देखणजीयण-लक्सुप्पापणसंभवादो । एसो 'बा' सहदो । मार्गिविय-अववादगरेहि सन्वलागा पोसिदो, सन्दलीचे गमणागमणे विरोहामाबाही।

सासणसम्मादिईहि केवडियं सेतं पोसिदं, होगस्य असंसैज्जदिः भागों ।। ३६ ॥

पदस्य सम्राम् अत्था पूर्व्य पराविदे। ।

सत्त चोहसभागा वा देखणा ॥ ३७ ॥

सत्याणसत्थाण-विहारविसत्याण-वेदण-कताय-वेउध्वयसमृग्यादगँदहि सम्मादिहीहि चरण्डं लोगाणमसंरोजनदिमागो योनिदो । माणुमगेनस्य गंगेजनदिमागो थै।सिरी । अधवा विहासिर-अवसिमवदेहि माणमरोत्तं देखनं चै।मिटं । बेल दानं । विश्व-

संप्यालयां भाग स्पर्ध किया है. वर्योकि, बाकाशमधनादि विद्याप दानि से विरक्ति विषया-देषि क्षियोंके एक लाल बीजनके बाहरपते सर्वत्र स्वर्शका बजाव है। अथवा, सर्व वर्शकी भागरत मिष्यादृष्टि मानुर्वीने चेत्रीत मानुरवलीकवा स्वरी किया है, क्वींकि, पूर्वमक्त वेरी देवाँके सम्बन्धते उत्पर कुछ कम यक लाल योजन तक उनका जाना आता संसक है। इस प्रशाद यह 'था' शासका सथे समाप्त सभा !

मारणानिसद्यमाञ्चान और उपानपत्रात कतः शीला बदारके मानप निरणार्शक अविने सर्पहोद्य स्वर्श किया है, क्योंकि, इन क्षेत्रों वहाँकी अवेशा सर्वहोदके जीतर आने भागमें कोई विरोध महीं है।

मनुष्य, मनुष्यपूर्याप्त और मनुष्यनी सामादनसम्यरहि जीशेंन दिनना शंद रपर्छ किया है है लीकवा असंख्यातवां भाग स्वर्ध किया है ॥ ३६ ॥

इस स्वत्र अर्थ पहले बहा जा चुका है। मन्दर, मन्द्रपूष्पात और मन्द्रपत्री सामादनगण्यादि श्रीदान अर्दात श्रीह अनागतकालकी अपेशा बुछ बम सात बुट चौदह माग स्वर्ध किये हैं ॥ ३०॥

वयस्यानस्थरयान, विद्वारयास्थरथान, वेदना, बायाय और वैति:धेव सम्हानगर सामा हमारकारणि प्रत्योति सामान्यतीक आहि बाद खोदाँदा असंबदानमां साय दयरां दिया है. तथा प्रानुपक्षेत्रका शंक्यानको प्राय क्यते किया है। अथका, विद्वारकपक्ष्यानाहि प्रापति प्रांची भवेशा ब्योन मनुष्यक्षेत्रको स्वर्श विद्या है।

र्द्धा-पर देवीन पहले विभाग बार देव विव दिन है ?

[॥] सम्राद्दरावद्यातिकोवस्यात्वर्वेदस्याः काः चार्यव्याना वा दर्यना व स. वि. व. ८.

कुछसेल-मेरुपव्यद्-जोइसावासादिणा । माशुसेहि अगम्मपदेसस्स तस्त कर्प मानुन्ति धवएसी १ ण, स्रद्धिसंपण्णमुणीणमगम्मपदेसामाना । मारणतियसमुग्धादगदेहि सर बोर् भागा देख्णा पोसिदा । किं कारणं ? सासणाणं मारणंतिएण भवणवासियलेगारो रा गमणामाबादो, उवरि सञ्बत्य मारणंतिएण गमणमंमवादो । उववादगदेहि तिन्हं सेतान्य संसेज्जदिमागो पोसिदो; विशियलोगस्त संखेळ्जदिमागो पोसिदो । व ता वग्र सासजार्ण मणुसेसुप्पज्जमाणार्ण पोसणं तिरियलोगस्स् संखेजजदिगाणी होति प्रश्ने दुवादुखेचकलस्स वरहपअसंजदसम्मादिद्विमार्गितियखेचकछस्सेव तिरियलोगार्सनार्थः मागतुवलंगादो । पादीदकाले अहरज्जुमाऊरिय हिददैवसासगार्ण मणुरसेतुःपाउमान प्रवत्रादपोसपं तिश्यिलोगस्य संखेज्जदिमागो होदि, छन्नायक्रमणियमण्डेण प्रमा^{त्रक}

तमापान—मही, क्योंकि, लिधसम्बद्ध मुनियोंके लिप (मनुष्यतीके हीत)

सन्तरप हरेदाका भगाव है।

समापान- विवार्थियो, बुलाचल, मेधपर्यंत सीर ज्योतिक भाषास मासि रे प्रदेश विवक्षित है।

र्शका-मनुष्यांसे अगम्य प्रदेशवाले इस कुलायल शादिके होवही मनुष्यांने यह शीम केले मात है है

मारणाश्चिकममुद्धातमत सासादनराज्यादिए मनुत्योंने कुछ कम सार करे बील (१) माग नगरी किये हैं। इशका कारण यह दे कि शासादनसायग्दरियों न तारणाहित समुद्दानके द्वारा प्रवत्नासियोंके निवासलोक्त भीच गमन नहीं दोता है। किन्तु आर सी मारणारिकतामुद्रातके मारा गमन संभय है। उपपाद्यत उक्त तीनी प्रहारक आणार सम्यन्दि मनुष्याने सामान्यहोस माहि तीन लोकोंका सर्वस्थानयो माग शर्मा किरो कीर निर्वेग्हें। इ.च. संक्यानयां भाग रश्शे किया है।

र्यहा -- मनुकार्वे कथात्र होनेवाले जारकी सामादनसम्बद्धियाँकी सामिने के निर्यागीक का राज्यान वाला कारका सामादनसावादाश्याका कार्यान कियान के कियान के कार्यान के कियान के कियान के कियान हिलाँह) साने दोनों शेरवे वृंशकार व मुझाकार शेत्रीका शेत्रकण, सारती सर्वव नामाती स्वीक मनकार के स्वीक वृंशकार व मुझाकार शेत्रीका शेत्रकण, सारती सर्वव नामाती में के मारणान्त्रकारण स्थानार च मुझाकार श्रेत्राका शेत्रतका, मारता मण्या हाती है। में के मारणान्त्रकारण स्थाना, निर्माणीक के असंव्यानमें मण्यामाण वाता हती है। कोर व कर्नातचाटम हो बाद बाजुदमाण क्षेत्रको स्थानपाल क्षेत्रकारम पान रीने बाट स्मादनसम्बद्धाः देशेन प्रवाहन सहस्यः हियान भीर सर्वाहन होने बाट स्मादनसम्बद्धाः देशेन विद्यानिक स्वाहन

है 'दुश्चमनुश्रद्वोत्तरहरूनको' इस पदका अर्थ बहुत हाछ नहीं हुआ। प्राण व्यक्ति है है अर्थ है १८७०मा -मी का पुत्र है। (देखी पूर् १८००) इस पदकी बनाशक सार्वकरी विकास स्थाप करें है। मार्थ है। (देखी पूर् १८००) इस पदकी बनाशक सार्वकरी विकास है की स्थाप है। रुपा है हे स्पन्न है व उन सम्बद्ध बहे सु बहु विनीहे भाग हो | विनीहर्पाणी है।

₹, ₽, ₹७ Ì

ञोपणलक्राविक्रं म-अट्टरच्जुस्सेह्भद्रपाणालीसु मणुअलोगमागच्छंताणमुक्तादरो पफलस्स तिरियहोगादो संखेजनसुणनुबलंभादो । व तिरिबखेदितो मणुरसेसुष्यज्ञमाणसासणाण-सबवादखेसं वि तिरियलोगस्त संसेज्बदिमागो होदि, तत्य वि चदुहि चेव पंयेहि आगमणदेसणादे। चि ? षत्थ परिहासे उच्चदे- व वाव शेरहयसासणे अस्सिर्ण उच्चदोस्रो, तिष्णवंधणुववादकोसणवलेण तिरियलोगस्स संखेजबदिभागचाणव्यवगमादो । ण देव-सामणे अस्सिर्ण उत्तरोशो वि, अहरवज्यसेहलोगणालीए समचउरस्साए अंतोहिददेव-सामणाणं हेहिम-उनिरमाणं च कंडुज्जुनाए गईए चढणोपरणनावारेण मणुवले।ग्राणिध-मार्गत्व एग-दोविगाई करिय मधुमेसुप्पज्ञमाणांगं विरियलोगस्स संखेजजदिभागमेष-फीसणस्त्रपलंगादो । तिरिच्छं गेत्न विन्महं करिय देवसासमा मणुसेसु किण्ण उप्पत्नीति ? मणुसगर्शवरिहयदिसाए सहावदो चैव तेसि गमणामानादो । य च मणुसगरसंग्रहमार्गदण विगाई करिय मणुस्तेसुप्यणाणं खेचं बहुजमुरलग्माः, तस्येवस्य तिरियलोयस्य संखे-

माग होता है, क्योंकि, मवात्तरमें संवायको समय पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊपर और मीचे. इसप्रकार छह दिशामाँमें गमनागमनस्य पद मपक्रम-नियमके बलसे पैतालीस साम योजन पिप्तम्भपाले व लाड राजु उत्सेचवाले क्षेत्रमें चारी भोरसे मनुष्यतोकको भानेवाले जीवीका उपपादसम्बर्ध शेत्रप्रह, तिर्वन्होकते संख्यातगुणा पाया आता है। भीर म तिर्पेधींसे मनुष्यीमें जरपम होनेवाले सालाइनसम्यग्दिश्योंका उपपारक्षेत्र भी तिर्थन्तीकता संबदातयां माग होता है, क्योंकि, वहांतर भी चारों ही दिशाओंके मागोंसे भागमस हेला. काता है है

समाधान-भव उर्व्युक्त भारांबाका परिहार करते हैं- न तो सारकी सासाहत. सावाद्विपाँको माध्य करके उक्त दोव प्राप्त होता है, क्योंकि, तक्षिमिश्चक उपपादसाकाथी रपर्रानके बलसे तिर्पेग्लोकका संब्यालयां माग नहीं स्पीकार किया गया है। भीर म देख सासादनसम्यादियाता भाभव करके भी उक्त दोव आन्त होता है, क्योंकि, भार राज् क्रिक्रवाही समयत्रास होकनायीके बन्तारियत देव सासादनसम्याहियोका भीर बघस्तन तथा उपरिम जीवीका भी बाणकी तरह सीधी शतिसे खड़ने और उतरने हप स्थापारते मनध्यक्षेत्रको प्रणिधि (तट) को आकर और एक या दो विम्रह करके मनुष्याँमें बत्यस है। मेपाले अभिका तिर्पेग्लोको संस्थातमे भागमात्र स्परीन पाया जाता है।

श्री -तिरछे जाकर पुना विवह करके सासादनसम्बन्धि देव, वनुरवीमें क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं ?

समाधान-मनुष्यगतिसे रहित दिशामें स्वभावसे ही उनका यहन नहीं होता है। तथा, मनुष्यगतिके सन्मुल आकर और विषद्ध करके प्रमुख्योंमें कराप होनेकाले शीबोंका भी क्षेत्र बहुत नहीं पाया जाता है। क्योंकि, उस क्षेत्रके तिर्पेश्लोकके संक्यातमें

ज्जदिमागपहाणचादो । तम्हा एवंविहाणियमवसेण तलफोसणमेचस्तेद संगही कावनी मणुसोववादिणो देवसासणा मुलस्रीरं पविसिय काल करेति चि भणताणमिष्णाल तिरियलोयस्स संखेज्जदिभागमेचमेदं फोसणं समत्येदव्वं । तिरिक्खसासणेसु मणुरेष्ठ प्पन्जमाणेसु वि विरियलोगस्स संशेज्जदिमागो फोसणमुत्रलन्भइ, विरिग्खसासणसम्ब **इह**ीणं चउग्गईसुप्पज्जमाणाणं तिरिक्खमवाभिष्ठहसेसगइजीवाणं च तिरिच्छं गंत्ग विन्न करिय उप्पत्तिदंसणादो । अतएव च ' विरोऽश्चन्तीति तिर्वश्चः'। एदेतिमेनीता में अरिय चि कुदो णच्यदे ? देवसासणीववादस्स पंच-चोइसमागपीसणपरूवणणाहाणुववर्षती तदा ण पुरुवत्तदोसप्पसंगी ति सहहेयव्यं।

सम्मामिन्छाइडिपाहुडि जाव अजोगिकेवलीहि केवडियं क्षेत्रं

पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो' ॥ ३८ ॥

सम्मासिच्छाइद्वीणं बद्धमाणकाले सगसन्त्रपदेहि खेत्रमंगो । सत्थाणपरहिणी चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुवखेत्तस्त संखेजजदिभागो पेशिदो। विहासी

र्शका — इन तियंचांकी इस प्रकारकी तिरही गति होती है, यह कैसे जाता शर्मी समाधान-अभ्यथा देव सासनसम्बर्धशियोंके उपवादसम्बन्धी वांच बहे बाह (रें) मागममाण स्पर्धानक्षेत्रकी मक्षणण नहीं हो सकती थी। इसहिट पूर्वेज होता

प्राप्त होता है, येमा शहान करना चाहिए। मनुष्योंने सम्यागिष्यादृष्टि गुणस्यानमे लेकर जयोगिकेवती गुणस्य ग प्रत्येक गुणस्थानवर्धी जीवीने कितना थेत्र स्पर्ध किया है? स्रोकका प्रवेषपाता हर

रार्च किया है ॥ ३८ ॥

सम्यागिमध्याद्दि मनुष्येका वर्तमानकालमें स्पर्धनक्षेत्र अपने सर्व वर्गांदी होण हेन्द्रप्रहाणां समान है। स्वस्थानस्यस्थान यद्दियन उक्त गुनास्थानवर्गी मधुर्यान कर्त होन्द मादि चार होन्हों हा ससंबदानयों साम और मानुष्रीवदा संवदानयों मनु

मागकी ही मधानता है। इसलिए इसप्रकारके नियमके घरासे भेठके तलमागके स्पर्धनताहरू 🐧 संग्रह बरना चाहिए। मृतुष्यीमें अन्यन्न होनेयाले देय सासावनसम्याहाई जीव मृत्रावीर प्रपेदा करके मरण करते हैं, पेसा कहने चाले आवार्यों के अभिगायसे तिमलोकका संगान मागमात्र इपरीन होता है, देसा समर्थन करना चाहिए। तथा तिर्यंव सासान्तरगाहित भीर मनुष्योंमें भी उत्पन्न होने वाले अविधे तियंग्लोकके संवयातय भागमाण स्पर्वने पाया जाता है, चर्योक, चारों गतियोंमें उत्पन्न होने चाले तियंच सातादनसम्पारियों है औ तिर्यवमयने मिम्युल बीच गतिके जीवोंके तिरछे जाकर और विग्रह करके उनाते के जाती है। भीर इसीलिय वे 'तिरछे जाते हैं सत्तवव तिर्वेश हैं। वेसी खावित की गाँ है।

सत्याण-वेदण-कसाय-वेउव्विषपदेहि चरुष्टं लोगाणमसंदोज्जदिमागो, माणुससेनरम संदो-जजीटमारो। पोसिदो । अदीदाणागद्यष्टमाणकालेस मणुमत्रमंत्रदस्मनादिष्टीणं मणुमममा-मिच्छादिहिमंगो । णशीर मारणंतियसमुग्यादगदेहि विण्हं हो,शाणमसंरोडजदिमागा, विरिय-क्षेगस्स संखेजजदिवामी पासिदा । वं कथे है मणुसुसम्मादिहिदेवेमु मार्गिवियं करेना संरोज्जपंथ-संरोजजविमाणेस चेव मारणंतियं करेति, बाणवेतर-जोदिसिएस रामिम्राचनीए अमाबादो । तस्य एकेविस्से बद्दाए बदि वि अवस्तित्वज्ञोयणसम्बद्धाहरूलं होति, ता वि विश्वित्रोगस्य असंरोज्जिदिमागमेर्व चेव खेर्च फीमिर्द होज । तेणेदमप्यशणे । मणुना प्रवरं विरिक्तेस बद्वापुगा पन्छा सम्मर्च पन्ण विरिक्तेस उप्पन्नी, एई गेर्च प्यान। क्षपेन्द्रमाणि अदे ? सपंपद्यव्यदादी जविश्मरी चिवन्तं में ठिविय--

व्यासं योषदागणितं योषदासहितं विकासमूहतं । ज्यासिकाणितसहितं सहमादि तद्ववेगसम्म ॥ ६ ॥

किया है। विद्वारकत्वस्थान, वेदना, कवाय और वैकिविकसगृहान, इन एहाँकी मेरास मन्पाने सामान्यलेक भारि चार होकाँका भसंब्यानवां भाग भीर मनुब्य लेकरे। संब्यानकां माग रपर्श किया है। अतीत, अनागत और वर्तमान, इस सीसी बासीमें मतरब सलेवत-सामाद्यियांकी क्यांत्रप्रकृपणा समाय साम्याविक्याद्याविकांके सामा है। विराय कान यह है कि मारणानिकत्तम् दातगत समयत समयोगे सादाग्यत्ते । आहे श्रीत होशांना सर्वक्षामु मारा भीट तिथेग्लोक्स संबदासयां भाग क्यूरी किया है।

धेका - मारणानिकसमुद्रातगत असंपतसम्बद्धि मनुष्योंने तिवैग्ताकका संवतः तवां भाग केसे स्पर्ध किया है

समाधात-देवीम मारणानिकसमुद्धात करने बासे सरवन्त्रके ममुष्य संस्थान मार्ग वाले संबदात विमानाम ही मारणान्तिकसमुखात करते है, क्योंकि, उनकी वानक्यरनर और बेरोतिका देवीमें प्रश्वित नहीं देखी है । बनमें यह यह मारणानिक समग्राकी मार्गका यथापि असंब्यात लाख योजन बाहस्य होता है. तो भी यह शेव (सब विवहर) निये-क्षीत्रके असंक्यात्रके भागमात्रका क्याँ किया गया होगा। इसरिंद यह शेव दर्श वर मत्रयात्र है । पहले तिर्पेशीर्व क्रिक्टीने भागु बांच सी है ऐसे मतुष्य कोंछे सरदश्यको पहल बारके तिवंचोंमें उत्पन्न होते हैं, यह क्षेत्र यहाँ यर प्रधान है !

रीहा- बदायुष्ट मनुष्यांका यह उपशक्तिक केसे निकाला ज्ञाना है है

समाधान - स्वयंत्रम पर्वतसे उपस्ति केवते विष्यम्मको स्थादिन बरके -

स्पासको सीसहसे गुणा करे, पुना सीतह जोते, पुना नांत, यह और यह अपीन् एकती तेरद (११६) का भाग देवे। युना व्यासका निगुना कोन देवे, तो ध्रमने भी सूरम परिधिका प्रमाण का जाता है है % ह

s का क पत्रों, "जारी वंद्रीतरवारी का " क्षी पत्रा (

पदील गाहाए परिषि । श्रीप निक्सं मचउन्मागे गुणिय संसेज्यंपुनेरे गुनेरे निरियलेगास संसेज्यदिमागो मारणितपक्षेत्र होति । अहार्य्यादे असंसेय्यप्रं । उत्तरायदेह असंसदसम्मादिहीहि निष्टं लोगाणमसंसेखिदिमागो, तिरियलेगास हेने खिदमागे । ते जहा-जदि वि यहर्य्यक्षेत्रं रज्यविक्सं ममर्शेदकाले चर्नाता रे । आउरिय हिरा असंबदसम्मादिहीणि मणुसेस उप्पज्यति, ते । वितियलेगाम मंगेखिदिमागो पोसणे, देवसासणाणे व तत्यत्यअसंबदसम्मादिहीणे मणुसेसुप्यकालक मंगामनिष्यमायलेगारे । एमो अत्यो अध्यत्य वि यवच्ये। अहार्खारे अमेनेक्युरे पोनिही। संसदासंबदारे बहुगाणपस्यणा स्वेतमंगे । सत्याणतस्याणे अदेरकं भेवदासंबदिह चर्च हे लोगाणमसंसेखिदिमागे। माणुसिस्यस्य संस्किदिमागो वेशिशे। विदारविद्याले अदेरकं भेवदासंबदेह चर्च हे लोगाणमसंसेखिदिमागे। माणुसिस्यस्य संस्किदिमागो वेशिशे। विदारविद्यालेगाचेस्य संस्किदिमागो वेशिशे।

इस मापाके अनुसार परिधिको निकालकर और विकालके खनुर्माणने गुणार युना संक्यान अनुसीने गुणा करने पर निर्यम्तिको संक्यानये साम्यवसाण सारवानिनक्षेत्र को कामा है। यह केत्र महादेदीयसे ससंक्यातगुणा होता है।

उदाहरण-१ववंबत वर्षनते बर्शस्य भाग मर्थान् मीतरी क्षेत्रहा विकास

$$\xi = \frac{c}{d} = \frac{c}{3} + \frac{c}{3} \times \frac{1}{3} \times \frac{1}{3} + \frac{c}{4} \times \frac{1}{3} = \frac{1}{3} \times $

यह प्रशासनिक समुदासमान असंयमतायावधि अनुत्योका क्षेत्र है हैं। सङ्गान क्षेत्र करें स्थापन क्षेत्र करें स्थापन क्षेत्र कर्मा क्षेत्र कर्मा करा कर्मा कर कर्मा कर्मा कर्मा करा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर कर्मा कर्मा कर्म

हाराव्यव्यन अभेजनगडवाहि अधिन नामाण्यके आदि तीन होशीं हो कि भागको प्राप्त और निविश्वास अध्यानयो प्राप्त करते किया है। वह इसवहार है न्यां। अभिन इसके मांद्र बाद आपन और यह बाद विश्वत होशहो क्यांत्र करित है। अध्यानके अभेजनाव्यवस्थित हैन, प्रमुखीस उत्यान होने हैं हो ही वह वह वर्गतिकेंद कि लेख अध्यानके स्थाप हो इता है, क्योंकि, जाताव्यक्तमालिक वर्गोक अध्यान वर्गक हुने क्यांत्र होने कांत्र अध्यानस्थानहृत्य के जायसभ्या विषय पाया साता है। वह सर्ग अध्या का करता करित रस्ती असिन कहाई होताने असीव्यानगुष्ता केंद्र वर्गी हिना है।

करणकरन समुख्येची वर्गमान्दरिक वर्गमान्द्री स्वयंका सर्वेद स्वयं है। इरक्ट-अन्यव्यान व्यव्या व्यवस्थितम अनुष्येन धर्मान्द्रावर्थे सामान्दर्थि हो कर संबंदि अक्टान्यर अन्य और सामान्द्रिका अवस्थानिक स्वरंदिका माणुसयेनस्स संसेजदिमाणो, संसेजा भागा वा पेशिया । मार्गितसमूरपार्यदेशि चदुष्टं होगाणमसंसेज्जदिभागो, बहुद्दुजारी असंसेज्ज्युणा पेशियो । कार्गं विजिय वर्षन्यं । पमससंबद्धपुरि बाव अजागिकेवित चि जोर्षे ।

सजोगिकेवर्रीहि केवडियं क्षेतं फोसिदं, लोगस्स असंखेळिदिभागो, असंक्षेत्रज्ञा वा भागा, सन्वलोगो वा ॥ ३९ ॥

एदस्य सुचरस अत्ये। पुन्यं त्रचो चि संपदि ण उन्यदे । एवं पण्यचमशुन-मशुसिणीसु। वर्षारे मशुक्षिणीसु असंबद्धम्मादिद्वाले उच्चादो लक्ष्यि। पमचे ने बादार गरिय ।

मणुसअपउजतेहि केयडियं सेत्तं पोसिदं, छोगस्स असंखेउजदि-भागो ॥ ४०॥

सत्थाण-वेदण-कतायसबुरपारगरेहि चरुण्डं लेगायमधंत्रेजबरिमाणा, माणुव-खेतरस संरोजनदिमाणा पेतिरहो। मारणंतिय-ज्यवादगरेहि तिण्डं सीमाणमर्गामंजबरिमाणा, दोलोगिहिंबो असंरोजनवृणो पोतिरहो।

होक मादि बार हो हो का अर्थकातयां आग और मनुष्यक्षेत्रका संक्षातवां आग अर्थका संक्षातवां आग अर्थका संक्षातवां संवातवां आग अर्थका सहातवां संवतानं वात माने वात स्वातवां स्वातवां संवतानं वात माने वात स्वातवां स्वात

संयोगिकेवली जिनोने कितना क्षेत्र स्वर्ध किया है है छोकका अर्थन्यात्रवा बाग,

असंज्यात बहुमाग और सर्वलोक स्पर्ध किया है ॥ ३९ ॥

दस मुख्या अधे पहले वह आपे हैं, हारांक्षर वह नहीं बहने हैं। इसी क्यार प्रांच्यामुख भीर मनुष्यत्रियोज्य क्यांक्सिक अभाग च्यांक्सि हिस वान यह है हि अध्यापियों अधेरतरारम्हरि जीवंडा उपचार नहीं होना है, और प्रमचनंत्रत्र मनुष्यत्रियों अधेरतराम्हरूम करी होने हैं।

हरूपपूर्वाध्य मनुष्यीन कितना क्षेत्र स्वर्श किया है है होकका अमेरहरावती

भाग स्पर्श किया है।। ४०॥

दश्यानस्वर्धान, वेदना और बचायनबुद्धानम्ब त्याप्यवर्धान्य सनुर्धेवे स्वायन्तः लेक्स्यादि त्यार शिवीदा सर्ववयानये प्राप्त और अनुष्येशन्त विश्वयान्त्ये प्राप्त करते दिस्य है। आरामानिकस्तुत्वान और उपयोज्यानस्वरत व्यक्त ग्रीकृते स्वायन्यश्यास्त्र स्वीद स्वीत्येश अर्थस्थातयां आग्र और अनुष्य तथा त्विवेश्योत्यमें सर्ववयानमुख्य सेव वयरी विषये हैं।

सब्बलोगो वा ॥ ४१ ॥

सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्धादगदेहि चदुण्दं लोगाणमसंखे अदिमागो, माणुक्तेत्स संखेखदिभागी, संखेखा भागा वा अदीदकाले पासिदा । मारणंतिय-उत्रवादगरिह मन-लोगो पोसिदो, सञ्बत्य गमणागमणे विरोहामात्रा I

देवगदीए देवेस मिच्छादिट्टि-सासणसम्मादिट्टीहि केविंदं हेर्न

पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो' ॥ ४२ ॥

प्त्य ताव मिच्छादिष्टीणं उच्चदे- सत्याणसत्याणपरिणदेहिं तिण्हं होगाणमर्घते जजदिमागो, तिरिवलोगस्स संखेजजदिमागो, अहाइज्जादो असंखेज्जगुणी पीमिद्रो। स् विहारविद्वसत्थाण-वेदण कसाय-वेउव्वियपदाणं पि वत्तव्यं । मारणंतिय-उववादगदेहि निर्व लोगाणमसंखेजजदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेजजगुणो पोसिदो ! सास^{मसम्बा} दिहिस्स सरयाणसरयाण-विहारवदिसरयाण-वेदण-कसाय वेउञ्चियपदाणं खेषोषं। भार^{वितिक}

स्टब्प्पपर्योप्त मनुष्योंने अधीत और अनागतकासकी अपेक्षा सर्वतीक सर्व किया है।। ४१॥

रयरधानस्यस्थान, घेदना श्रीर कवायसमुद्धातगत लज्ज्यपर्याप्त मनुष्यीने सामान लोक मादि चार लोकोका असंस्थातवा भाग, मनुष्यक्षेत्रका संस्थातयो माग अपया संस्था बहुमाग अतितकालमें स्पर्धा किया है। मारणानितकसमुद्रात और उपपादगत मनुष्यों की होक स्पर्श किया है क्योंकि, उनके सर्वत्र गमनानागमनमें कोई विरोध नहीं।

देवगतिमें देवोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्बग्दृष्टि कीवोंने हितन हैर स्पर्श किया है । लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ४२ ॥

यहांपर पहले मिरवादि देवींका स्पर्शनक्षेत्र कहते हैं-स्यरवानस्वस्थानपर्स परिवा मिध्याद्यार देधोने सामान्यत्योक आदि तीन छोक्षीका असंख्यातयां माग, तिर्थातीका आदि तीन छोक्षीका असंख्यातयां माग, त्यां माग और अवृत्देशियते असंदेशात्या माग, तियाला क्यां साम और अवृत्देशियते असंदेशात्या साम और महार्देशियते असंदेशात्याणा क्षेत्र स्पार्ट किया है। इसी प्रशास विकास स्वरपान, पेदना, कपाय और पेक्सियकसमुदात, इन पदीको प्राप्त देशीका मी हार्तनीर पहला चाहिए। माराणानिकसमुद्धात और उपवादगदको मारत द्वाका मा मादि तीन लोकोंका असंस्थातयां माग भीर नरलोक तथा तिर्यत्लोको असंस्थात्यां मा स्पर्ध किया है। स्वस्थानस्यस्थान, विद्वारयस्यस्थान, येनूना, क्याय श्रीर वैक्तिविकार्धनेत्र साराहतसम्बद्धनिक क्यां सासादनसम्बर्ग्याच देवींका स्पर्धानक्षेत्र भोष्यक्षेत्रका प्रह्मात्र है। प्रात्वाहितः

उपराद्यप्राणं पि रोजोपमेव होदि। एसा बहुमाणपमाणप्रत्यणा । अदीदाणागद-प्रत्यणहमाइ-

अट्ट णव चोइसभागा वा देसूणा ॥ ४३ ॥

सत्याणसत्याणिमन्छादिद्वीदि विष्ट्वं लागाणवर्षस्य ज्ञादमागा, निरियलागस्य संस्वेच्यादमागा, अद्वाद्वजादो अमस्य ज्ञापका गिसिद्दा। एत्य जापकारणं वचवरा सामान सम्मादिद्वीदि सत्याणसत्याणपरिणदिदि विष्टं लागाणनवर्षस्य जिद्याना, निरियलागस्य संस्वेजविद्याना, अद्वाद्यजादो अस्य अस्य गिसदि । एत्य वि जीपकार्णं वचवर् । विद्यान्य स्वेच्यान्य व्याप्य क्याप्य वेच्यान्य सामान्य विद्यान्य स्वाद्य स्वेच्यान्य व्याप्य क्याप्य वेच्यान्य सामान्य वेच्यान्य स्वाद्य व्याप्य क्याप्य क्याप्य क्याप्य सामान्य विद्यान्य स्वाद्य स

मुद्रान भीर जयरार्व्यक्षेत्रे जीवीका भी व्यक्तिक्षेत्र क्षेत्र केक्सक्यलाके *रासाद हैं। दोनर* । इसक्षार यह वर्तमानकालिक व्यक्तिक्षेत्रके प्रमाणकी प्रकारण रामाग्र हुई। अब अर्गन र मनायन कालमञ्जूषी व्यक्तिक्षेत्रके प्रकारण करनेव लिए आरोवर तक्क बहुन हैं—

मिध्यारिष्टि और सामादनसम्पग्रित देवीने अर्थन और अनागतकालकी अरेका रक्तम आठ पटे चीदद भाग और इड कम नी यटे चीदद भाग रक्त किये । ४३॥

क्यरपानदेवरपान पद्यांने विध्यादि देवीने साधान्यत्येश आहि तीन शोधीका क्यात्ये आहे. निर्माणका विध्यात्ये आहि निर्माणका क्षेत्र आहिता निर्माणका क्षेत्र आहिता विध्यात्ये आहे. आहिता क्षेत्र व्याद्वियों अविध्यात्येष्ट क्षेत्र विध्यात्ये । पद्यांपद वादण आधिको शतान क्ष्या आहिता क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये आहिता क्ष्यात्ये अस्य क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये अस्य क्ष्यात्ये अस्य क्ष्यात्ये अस्य क्ष्यात्ये क्षये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्षये क्ष्यात्ये क्षये क्ष्यात्ये क्षये क्षये क्षये क्षये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्ष्यात्ये क्षये क्षये क्ष्यत्ये क

द्रीका-पष्टां भाउ पट चीएड भाग किस केवले बम दें !

सम्पान - सुर्वाय कृष्टियोल अध्यक्त तलसम्बन्धा यब इकार योक्नांसे, तस्त विद्योग भगम्य मेहरोले, यस हैं।

मारवानिकारमुद्रामान विश्वाहरि और सामाइनसम्बन्धि हेरीने बंदरावस्थे राष्ट्र और अपर साम राष्ट्र, इस प्रधार कुछ बच मी बढे व्हें एह (हुई) आप वस्टे - #

मिच्छादिहि-सांसणसम्मादिहीहि पंच चोदसमागा देष्टणा पो मेदेसिम्बब्बादामात्रा।छकावकमणियमे संते पंचचोद्दसमागकोर चदुन्हं दिसाणं हेड्डुविरिमदिसाणं च गच्छंतेहि तदा मारणं पडि का दिसा नाम ? सगहाणादी कंडुरुजुरा दिसा णाम । संगवादे। का विदिसा णाम ? सगडाणादी कण्णायरेण हिरसे बीना कञ्जापारेण ण जांति तेण छन्नानकमणियमी जुजेद । ण होपेन उन्तरि सरिसा होति चि विषमो, एगंगुडादिविषप्पेहि ति

काऊज विरिक्स-मणुमाणं विदियद्देश्य सगुम्पनिद्वाणपावणे विरोहा उप्पन्तमाणितिसमुनवादखेचे गहिदे पंच रज्ज् सादिरेया किला हिटे हैं। डरगार्यस्मन मिथ्यादिष्टे भीर सासारनसम्पर्शेष्ट देशोने हुए (१४) आम नगरी किये हैं, पर्योक्ति, सहस्तारकस्पते जपर इन दोनी गु

र्ध हा — छट्टॉ दिशाओं अं आने आनेका नियम होनेयर सासादनग्र बन्दांनक्षेत्र पांच बढे बीहद मागन्नमाण नदी बनना है ? ममाधान – वेशी बार्वास वहीं करना चादिय, वर्वीक, नारी करर तथा भोनेकी दिशालोका नमन करनेपाट जोपाँके मारणानिकसम् ferin nei & i

यंदा-दिशा दिले करते हैं?

मान्यान — भाने व्यानसे वालकी नरह गींच शेवको दिसा करते वे दिसार्य सह है। होती है, क्योंकि, साथ दिसाओंका होता सर्गमन है र्यहा-विश्विता हिन कर्न है ? हामायान — वयन क्यानसे क्यांन्याके माजारसे स्थित शेवका शिक्षा

ष्ट्रिक आरक्षात्मक समृद्धातः भीर उपनाद प्रदेशन साम्रा जीव कर्णसार कार्यम् (त्रहेशु स्तर्था अन्य अन्य आत् । आत् व्यवस्थाः प्रदेशतः स्तर्भाः आत् व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः आत् इत्योजप्रस्मित्रस्थाः स्वतः अत्य अत्य आत् । विद्या कर क्षेत्रक है। वस्ता कर विद्या कर विद्य कर विद्या कर विद् स्वामकाम् हा अन्त है । स्था निमान के जात के fore and man arms

13.87 84. 1 कीसमाजुनमें देवनेतसगपरूवर्ग विमादं काठण मद्रणवासिएसपुण्याणं पदम-विदियदंबेदि अद्दिकाले रुद्धरोगाद्दो सहसार रुवादसेजार उपरियमागस्य संखेनज्ञात्रवा। विमाणसिहस्यस्यहन्। १८६८। १६६सा-विमाणसिहस्यस्यहन्। 1220. उनिममानो, सहस्यास्त्रसम्बद्धन्त्रसाणस्य स्वरायमाणनायणेहिनो बहुत्रसारे । तं हरी वन्तर १ देखार्यनः चोह्समाग्रक्षोसवव्याहायुक्तस्य वर्गाः वन्तर् सम्मामिन्छादिहि असंजदसम्मादिहीहि केनिडियं सेतं पोतिरं, लोगस्त असंखेज्जदिभागो ॥ ४४ ॥

पदस्त सुचरम अत्या खेचवस्त्वणाए उचा चि हृद् ण उच्चहे। अह चोहसभागा वा दैस्रणा ॥ ४५ ॥

समाधान — ऐली होता करने पर उत्तर देते हैं कि महीं होता है, वर्धों है, स्रीपंड की संपेक्षा काम क्षेत्रकों आधिकताका उपदेश पाया जाता है। पणा वर गर्भ भाग गाम प्र समाधान मापि वंडाकार भागमावेशोंसे जनरकर और विमह वरके अवस्वारियोंसे रामाधान — मान्य प्रकारण व्यास्त्रमान्य वार्यक्र व्याद्याचन व्यास्त्रमान्य व्यास् हरावरात आवाम स्वयं भाग कारण विश्व स्थान स्थान भागवताल व्यवस्था वाटकार वाटकार ा प्रधानसायामा अपारम भाग राज्यामधुणा छ, स्वत्त्व्य भागा साथ भाग स्व स्थापनस्य विवस्तित है। देशोर निसर्वास्त्र मि करवर्त अस्त तकका क्षेत्र करोज अर्थात् अस्त वर्ती है, वर्षाकि, स्टनकरें अवेदे त महाजवीहरूको भवेषा सहस्रास्ट २००३ विशानशिक्षस्य अवस्था व्यवस्थानम् । कृष्णिकार्वेद्वस्थाः

माधान — भाष्यया सातादनतायाति देवांका देशान वांक करे कीहर (है) रेडिन वम नहीं सबता है, इस मायवानुववनिते जाना जाता है कि मानवानी दे वह भारत पा गांव राज्या के केन मान्यापुर्यां मान्य वार्ता के मान्य किया है। मान्य है विद्यात्वासी देवांका क्षेत्र यहां वह अधाननास ग्राहण किया हथा है। विमध्यादृष्टि और असंपत्तसम्बर्ग्याटे देवीन कितना क्षेत्र रहाई हिया है है

प्याचन नाग रुच्य करणाम् वहा नया है, इसलिय यहा यर वही वहा अन्ता वे लगम्पाराष्ट्रि और असंप्रतसम्पाराष्ट्रि देशीने अर्थात और अनागत्वात्रस

सत्याणसत्याणपरिणदेहि सम्मामिन्छादिष्टि-असंजदसम्मादिङ्कीहि तिष्टं सेषानं संखेजदिमागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिमागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुगो शोमो। एसो 'चा'सद्द्वे। विहारवदिसत्याण-चेदण-कसाय-चेजिज्जय-मारणतिपसपुग्वारमेरी असंजदसम्मादिङ्कीहि अङ्क चोहसभागा देखणा पेसिदा। उचनादगेरीह छ चोरमण पेसिदा, अच्चद्रकप्पादो उजिर मणुसनदिरिचाणधुननादामाना। एवं सम्मामिन्छरिङ्गं पिसदा, अच्चद्रकप्पादो उजिर मणुसनदिरिचाणधुननादामाना। एवं सम्मामिन्छरिङ्गं पि। पाचरि मारणंतिय-उननादम्मा णिर्थि।

भवणवासिय-वाणवंतर-जोदिसियदेवेसु भिच्छादिट्टिसासणसम्म दिट्टीहि केवडियं सेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेजदिभागो ॥ १६॥

वाणवेतर-जोदिसियमिच्छादिहि-सासणसम्मादिहीणं खेतमंगो । अज्ञानार मिच्छादिहीहि सत्थाणसत्थाण-विदारबदिसत्थाण-वेदण-कत्राय-वेडिक्यससुम्यादगरेदिसः माणकाले चदुण्दं लोगाणमसंखेजदिभागो पोसिदेर। अहुद्दुज्जादो असंखेजज्ञुणो। उद्गर्स परिणदाणं पि एवं चेव वत्तववं। जदि वि एदं बहुमसंखेजजतेहीमेणै, तो ति निर्धर

स्परधानस्वरधानवद् प्रशिकत सम्योगस्यादृष्टि और असंयतस्वरदृष्टि देवीने सामके होता आदि तीत हो बाँका असंस्थातको आग, तिर्थरहोकका संक्थातको आग और भारिति संक्थातको आग, तिर्थरहोकका संक्थातको आग और भारिति संक्थातको आग हो है। विहारवरपरधान, वेदर, स्थाप, वेदिविक और भारणानिकत्तसुद्धातकत असंयतसम्यव्धि देवीने हुए बहे बीति स्थापत स्यापत स्थापत
भागनरामी, बानध्यन्तर और ज्वोतिक देवोमें मिध्यादृष्टि और सामार्वण । गट्टि बीवोने कितना क्षेत्र स्पर्ध फिया है है लोकका असंख्यात्वा भाग स्पर्ध कि

यान यान कोर व्योतिक मिध्याष्टि नथा साताइनसस्यारि देवीहा हार्य केवदकपन्नते समान है। व्यवज्यानस्यक्षान, विद्वादक्ष्याक्ष्यान, वेदना, बताय और हैरे दिस्यनुद्धान्त्रान्त सपनवाली सिच्यादि देवीन वर्गमानकाल्ये सामाप्रकोड मार्थिक दोष्टों हा सर्वक्ष्यान्यों सात क्यों क्यि है। नया मार्चुक्यनेक के क्षेत्रपानुता कि सर्व दिया है। उपपादाद्यक्षित कन देवीला सी इसी सहारके क्योंनक्षत बहुना बादिर वर्षे दि द्वाराद्यक्षयन्त्रकारी मार्ग क्षेत्रवान क्षेत्रीतमाण दोना है, तथावि निर्वादी हे मर्वता

इ मेरियु १ ६५४ १ वरित शहर ह

तेतास्त अभेर्येज्ञदिमार्गं चैव उपबादेश बहुवाक्कोले फुमीदे, विरिवलागमंत्र्यामित्र तर् सर्वज्ञदिमार्गे चेव भवणावासाणकंबहार्यादे, वदवहिदरिमें मीर्ज्जव्यदिमार्थं गमणा-गवादो, हेहा ओपरिप उपक्जमाणांश सहु थोकचादे। मारणेविषयमुग्यादगेदीहे निर्दं होतालमसंखेजज्ञदिभाषो, शर-विरिवलोमेहिनो असंखेजज्ञपुणे । भवणवानिषयाम्वानज्ञमम्मार् देहीलं संस्थानो ।

अदुरा वा, अह णव चोहसभागा वा देसूणा ॥ ४७ ॥

भवणवासियमिन्छारिहाँ संस्थाणमध्याणयरिणदीहे चरुण्हे लेगानामभैगाउन्नहि-मागो, अहारजादी अमेविज्जयुक्त पासिदो । विहारवरिसद्याण-गेदका-समाग-वेडिश्व-पदेहि अहुद्दा या अहु पोहमनामा या देखना । अहुद्दरुक् मयमेव विहानि । क्यामारहु-रुज् जादा ? भैदात्लाहो हेड्डा होग्लि, उपित जात्र मोधममिनमालिसहरपसदेहा नि दिवहुरुज् । उपितदेवपयोगण अहु रुज्य । मार्गानियसमुग्यादंगदेहि एव पारममामा

तर्षे भागममाण देन हैं। उपणाची कारा पूर्वभाववालमें दरमें किया जातर है, प्रसंदि, विपारोक्ति मध्य भागमें भीर जबते भी सर्वस्थानये भागमें ही भवनवाली देवीने कारा-मीर्ग भवस्थान है। तथा, तिस्त दिसामें दिवान सर्वात्य हैं उस दिसामें सोन्दर अपनेत्यांमें गमम स्तिका अमाय है, तथा, तींच जनत्वर उपण होनेवाने जीवित्य कारा कार्यक्र तथा है मास्या सहत्व तथा है। मास्यामिकसमुद्धातान उका देवीने सामायत्योग आदि तीन रोजीवित सर्वध्यापकी साम भीर महास्यक्षित तथा तिर्वश्येत, इस होनी रोजीवित सर्वध्यातमुख्य दोव वर्षा है। अवस्था

वासा साराहरनावर दि द्याण व्यवस्था क्षत्राव व्याण साराव हा । निष्पादि और साराहरतावर विष् वस्ताविक देवीने अर्गत और अनाम क कालकी अपेका लिएनालीके प्रवृद्ध भागीमेंते इक कम साहे कीन माग, आठ माग और नी माग रुक्त किये हैं॥ ४०॥

स्वरधानस्वरधानपरिणतः अवनवाति विश्वास्थि देवीने वामान्यतीक मातृ बार सीवर्रेंबा मर्सक्यातवी साम भीर भाराविषये अभेक्यानमुका क्षेत्र वरसे विचा है। हिएक-प्रश्वरधान, पेरना, क्षाव भीर वीवविक्तमुद्धानपर्यात क्षेत्र देवीने बीरह क्षाने देवे देतीन साहे तीन मात, (क्रे) अथवा आह आत (क्रे) प्रमान क्षेत्र वरसे विचा है। बहर-वासी देव साह तीन पतु ववयं हैं विदार वरते हैं।

शंबा-साबे भीन गञ्ज केसे दूप !

समाधान — धंदरायकोः सात्रमामो नीच नीमरी प्रतियो नव हो आहु और द्वार सीधमेंदरायो विमानके शिकारण विधन व्यवस्थित कहेंद्र राष्ट्र, इस नकार सिवादर साह तीन राष्ट्र दुर्ग

उपरिम अर्थान् अपरके आरच-मच्युत बस्यशसी देवेके मदीवासे बाह राष्ट्रप्रकार

देसणाः पोसिदाः। उपरिःसत्तः, हेद्वा दोग्णि, एवं णव रक्जू । उपवादगरेणदेवि स्रि लोगाणमसंसेज्जदिमागो, विरियलोगस्स संखेज्जदिमागो, अश्वाइज्जादो असंसेज्ज्ये। जोयणलक्समाहकुं तिरियपदरमदीदकाले किण्ण पुसिजदि ! ण, तिरिच्छेण भवणाईरसेन गंतुणः हेद्वरः मुक्तमारणंतियाणमुजनादेणः हेट्टनरिमासेसखेचफुसणामानादो । पुत्रे वर्ष तिरियलोगस्त संखेजिदिभागचं खुज्जेदे ? संगाविहदपदेसादो हेट्टा गंतूण तिरिक्त पच्छित्र्य संगमवणेसुप्पण्णाणं तिरियलोगस्य संखेळदिभागो उत्रवादफोसणं होदि। अन्तर किण्या होदि . १. मवणवासियपाओग्गाणुपून्विपितस्तागासपदेसाणमवहाणवसण मार्गित संभवादो । भवणवासियसासणसम्मादिष्टिसञ्चषदाणं भवणवासियमिञ्छादिहिमंगो । वार वेंतरभिच्छाइडिःसासणसम्मादिहीहि सत्याणेण तिण्हं लोगाणमसंखेजदिभागो; तिरियलेगस

बिहार करते हैं। - मारणान्तिकसमुद्धातगत उन्हीं - मधनवासी देवाने भी बटे- बाद (रा) माग स्पर्श किये हैं। मंदराचलले ऊपर लोकके अन्य तक सात राहु और नीचे तेली प्रिविधी तक दो राजु, इस मकार भी राजु होते हैं। उपयादपरिणत उक देवाने सामामाने आहि तीत लोकोंका अलंक्यातयां आग, तियंखोकका संव्यातयां आग बीर अहारिका असंक्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है।

. गुका — अयनपासी मिथ्याराष्ट्र देवीने सतीतकालमें एक जाल योजन बाह्नसब तिर्यक्षतरप्रमाण-क्षेत्र क्यों नहीं स्पर्श किया है है-

संमाधान-महीं, क्योंकि, तियंगुक्यके अयगस्यत प्रदेशको जाकर नीचे नार वातिकसमुद्धातको करनेवाले अविवेक उपपादपदकी व्यवसा नीचे और कारहे संब क्षेत्रको स्पर्धान करनेका समाय है।

र्शका-तो किर मयमयासी देशोंके उपपाक्ष्यकी अपेक्षा तिर्थेखोंकका संस्थान शारा स्पर्शनक्षेत्र कैसे बन सकता है ?

समायान -- अपने रहनेके स्थालसे नीचे आकर पुनः तिरहे क्येते पहर हो

अपने प्रथमीं जापक होने वाले जीवींका तिर्थेग्लोकके संक्यातवें सागप्रमाण इंग्यानी शहरेक्यी स्पर्शनक्षेत्र ही जाता है।

द्यंद्व:--- यह स्पर्धनक्षेत्र अन्य प्रकारले वर्षी नहीं द्वीता है ?

समाधान-क्योंकि, अवनवासी देवोके योग्य बानुपूर्वनामकासे प्रतिषद मार्का प्रदेशों हे अवश्यानके बहासे आरणाश्तिकसमुदात होता है, इसलिय उक्त स्पर्धतिसे क प्रकारसे नहीं वन सकता है।

भवनवाली सासादन सम्यन्दि देवोंके स्वस्थानादि सभी वर्गे वा स्वर्गेन से व स्वर्गेन । विष्याराष्टि देवोके समान है। विष्याराष्टि और सासाइनसक्पाराष्टि वानापूर्वत विके देशसानरररवात्रको निवेश सामान्यहोकः आदि तीन कोलीका सर्वस्थात्रवी मान् होते धिनार्किकार्यः । अङ्गारकारोः व्यक्तिकारमुखे । नं वरा-वर्ग वरावर्द देविय नामाधीमा-धिन्नपर्यागुर्वेद भागे दिदे वेनमायामाय प्रमाणं देवित नेनमायामायाद्यान् स्मित्रपर्य-प्रमाणमाणात् गृणिदे भागे त्रीत्र व्यक्ति व्यक्ति विविद्यान्याम् संग्रेज्यदिमायमेषे व्यक्तद्देर् देवित कर्मान्यकारम्य प्रमाणकार वेनमायामा अण्यकात् वि वहु दूरे अपिदे । अह अहं मे प्रेण प्रमाणः स्माप्त्रकार अस्प्रेन्द्रसाणि वर्दगुलाणि आगारारं दिवित वर्षान्यकार्यः देवित कामाप्त्रकारम्य अस्प्रेन्द्रसाणि वर्दगुलाणि आगारारं दिवित वर्षान्यकार्यः वेदाय कामाप्ते देवित पुण्यिदे निर्माणकारम्यादिद्वादि समाप्त्यक्त्यः आह्निय-वादम्यापादि काम्याप्ति । वर्षान्यकारम्य अह्माप्त्र वर्षान्यकारम्य देवित वर्षान्यकारम्य गृह्यपाद्यादि व्यव व्यवस्थामा विभावः वर्षान्यकार्यः विभिन्ने । वर्षान्यकार्यः निर्मित्रमार्यः निर्मित्रमान्यस्य स्माप्ति वर्षाम् वर्षान्यकार्यः अस्प्रेन्द्रम्य विविद्याः वर्षान्यकार्यः अस्प्रेन्द्रमार्यः निर्मित्रमान्यस्य स्माप्ति वर्षाणकार्यः अवस्थित् विद्वित्याः वर्षान्यकार्यः अस्प्रेन्द्रमार्यः स्माप्ति ।

क्लंकचा शंक्यालयां साम श्रीर सहार्रद्वीयमें स्वयंत्वाल्याला शेच वर्षों किया है। यह इस वर्षार है— यह जाजनवं चार्याल करते लाजायोग संवयान प्रतासिकीय आप है। वर्षेत हैंनान संवयान प्रतासिकीय आप है। वर्षेत संवयान प्रतासिकीय आप है। वर्षेत संवयान प्रतासिकीय आप है। वर्षेत संवयान प्रतासिक है। वर्षेत संवयान प्रतासिक का स्वयंत्र के स्वयंत्र प्रतासिक का स्वयंत्र होता है। वर्षेत संवयान प्रतासिक संवयान संव

विद्वार बन्यान, वेदना, क्याव और कैविविक्यव्यविक्ति निर्याशि भीर मासा-इनसम्बद्ध स्वयवासी वैद्येत व्यवस्था आर्थान अपने आप बुछ नम साद रीत केंद्रे औरह (१) आन क्यों किये हैं। किन्तु वरमस्यके नमीन नम्य वेवीके स्थोपते कुछ इस बाद वर्ट चीवह (१) नाम क्यों किये हैं। सारवानिकत्वसुरतानम उक्त दोनों जुनसामस्यों कर्मा देवीन में वर्ट चीवह (१) आम क्यों किये हैं। व्यवस्थान क्या स्थान क्या जीवीन सामान्यदाक साद तीन के क्योंक्स सर्वजनानी आग, विर्येश्वास्य संवयात्वी आम कीर सर्दार्टियस सर्वजनामुका क्षेत्र क्यों किया है।

होता— करपायकी भरेका तिर्थासीको असंस्थातपुणा क्षेत्र वर्तमानकारमें ज्यास स्टब्स् रिपत व्यक्तर वेय अतीतकारमें कैसे तिर्थेग्सोको संस्थातचे आपकी स्पूर्ण करते हैं र मोगाहणात्रो उत्रवादविसिद्वाजी एगर्ड करिय गहिदे होदि । तेण निरियजेणको मेन मिन्छ।दिष्टि उपवादसेचमसंसेज्जगुणं जादं । पोमणम्हि पुण जीवप्पडिहिर्गणहण्ये ण घेप्पति, किंतु तीदकाले उववादपरिणदमिन्छ।दिहि-सासणसम्मादिहिवेवोहि विश संतमेव घेप्पिद, वेतरेस वि ण देवां णेरह्या वा उप्पत्नीत, ण च एरियां नि लिदिया, किंतु सण्णि असण्णिपचिदियतिरिक्तः मणुमा चेत्र । ण च वैत्राप्तरण सोधम्मादिसु तिरियलोगबाहिरेसु कप्पेसु अत्यि, तबाबदेसामावा । ण च हम्सवाल बाह्छितिरियपदरव्हि सञ्बत्य वैतराबासा चेव, जादिमियत्रासाण वेलंघरपणागारिशास्त्र च अमायप्यसंगा । ण च भूमीए चेत्र वेतरात्रासा होति ति णियमा अत्य, आणुतर् हियाणं पि वेतरावासाणं संभवादो । ण च तिरियलीमे चेत्र वेतरावासाणमत्यविकाल हेडा पंकवहलपुढवीए वि भृत-रक्ससावासायमुबलमाहो । तम्हा किंचूणमनापर्व वेजन बाहरुरुतिरियपदरं ठिथेप सचकदीए ओवड्डिय पदरागारेण टडेरे तिरियलीगम पंरामी भागवाहल्लं जनपदर होदि । एवं चेव जोदितियाणं पि वचटा, गर्वीर उदशान

समाधान - यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, सर्व जीवीकी उपपादविशिष्ट प्रवर्गार स्रोंको पकट्टा करके प्रद्रण करने पर 'क्षेत्र' यह नाम होता है, इसिंखए मिश्यारि प्रत देवांका उपपादक्षेत्र तिर्यग्टीकृते अलब्दात गुणा हो जाना है । पर स्वर्शनम् प्रतिष्ठित अवगाहमार्थं नहीं प्रहण की जाती हैं, किन्तु अतितकार्से उपपादपरिणत थीर सासादनसम्बन्दिष्ट व्यन्तर देवाँसे स्पर्शित क्षेत्र ही बहुण किया जाता है। मी न तो देव अथवा नारको जीव उत्पन्न होते हैं और न वकेन्द्रिय स वि के द गर्दा केपल संग्री यं असंग्री पंचीदित्यतिर्थेच और मनुष्य ही उत्पन्न होते हैं। तथा तिर्थ बहिर स्थित सीर्घमिदि कर्गोमें भी व्यन्तर देवाँके आवास नहीं होते हैं, क्याँकि प्रकारके उपदेशका अनाव है। और न छात्र योजन वाहरुययांछे तिर्यक्ष्मतरम ही सर्व देवोंके आवास होते हैं, अन्यथा चन्द्र, स्वर्गाद ज्यातिक देवोंके आवासांका और वर्ष पर्यंग आदि भवनवाती देगाँक आवासीक अभायका प्रसंग प्राप्त हो जायना। धी व्यन्तर देवीके मावास होते हैं, ऐसा भी नियम नहीं है, क्याँकि, माधान ध्यन्तरों के धावास सम्मय हैं। और न तिर्यन्तोक्ष्में ही ध्यन्तर देवीके श्रापासी क्रीन नियम दे, पर्योक्ति, नीचे रतप्रमा शृधिवीके पंकवहुन भागमें भी भूत और राहास नावर स्व देवींक आवास पाय जाने हैं। इसलिए कुछ कम क्षेत्रको नहीं जोडकर दो लाब बाहरपत्रां तर्वक्षत्रम् । रक्षालप कुछ कम क्षत्रको नहीं जोडकर दा सा स्थापित करते एक विकास साथित करके सातको हिन सर्थान् पर्गसे स्पर्यार्तिकर प्रवासित स्थापित करते एक विकास स्यापित करने पर निर्यन्त्रोकक संस्थातय आगप्रमाण बाहस्याता आगप्रत हो जाते। हमी प्रकारसे ही ज्योतिका देवींका भी स्पर्शनक्षेत्र कहना चाहिए। विहेत बार्

[॥] राज्यवदी वृत्तिरामा अवस्थादिवस्था अभिवत्रक्षेत्र । तम्बासे विभिन्नमा बादरास्त्र जिल्ला सर्वे संबद्धाने वाताना इव सहस्त्र निवत्या । वित्रपृष्टकारिकार हिन्दु । हा ११०० । सन्वर्ध संबद्धाने वाताना इव सहस्त्र निवत्या । वित्रपृष्टकारिकार्वेदरवन्तियार है (१९००) सन्दानि दील:इवाहिक्वतिन्व 3 सन्त्रपुरावि दश्तिराष्ट्रदीने उत्तीर बाहाना ह ति. य. पत्र ६९६-

णि णरजोपणमदग्रहां तिरियपदरं सक्तदीण संक्षिदे पदरामारेणं इहदे तिरियन रोजजदिमागपतां जमपदरं होदि'। म्मामिज्छादिष्टिन्असंजदसम्मादिद्वीहि केजडियं खेत्तं पोसिदं,

असंखिज्जदिभागो ॥ ४८ ॥ इरस सुचरम अरयो- सत्याणसत्याण-विदारवदिसत्याण-वेदण-कक्षाय-वेउन्विय-रदपरिवादि सम्मापिरवादिह-अमंबद्दसम्मादिष्टीहे अभ्वजानिक्पर्वेतर-वोदि-

त्राचीयार्थ्यः वार्यायार्थ्यः विश्वविद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्य दिविद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्यः विद्यान्य इत्युद्धाः वा अड्ड चोद्दसभागा वा देस्णा ॥ ४९ ॥

त्याणसत्थाणम्यणयासिय-वाणवेतर-वोदिसिय-सम्माभिन्छदिद्धि-असंबदसम्मा-तेर्व्दं होत्पाणसर्वरज्ञदिभागेः, तिरियनोगस्स संसेज्जदिभागोः, अहुदर्ज्ञदिर्दे को वीसिद्दाः। णवरि भवणवासियस चटुण्वं होत्पाणमसंसेज्जदिभागोः वीसिद्दाः व । विद्यत्यदिसरयाण-वदण-कसाय-वेजन्यर-मारणविपयदपरिणदेहिः सम्मा-

तर हाता **४ ।** म्परिमध्याद्दष्टि और असंयतसम्परद्दष्टि मयनत्रिक देवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध[ा] स्रोकका असंरुपातवा माग स्वयो किया है ॥ ४८ ॥

साहका असरपातवा माग राग्र क्षिया हो। ४८ ॥ ॥ रास प्रवक्त अप बहते हें— रारधानरपरधान, विदायनयस्थान, वेदाना केदिक और मारणानिकसमुद्रान, इन वहाँचे चरिनत सम्यागम्यवाहि और गरिए अपनयासी, स्थानर और स्थानिक देवाने सामान्यवाह आर्र खार

स्थानस्वरधानपुष्पादे प्रवच्यासे, वानाय्यस्य भीर प्रथितिकः स्वस्थापप्यादिष्टं तस्वयदारि देवीने सामाय्यशेकः आदि तीन दश्यांकः मसंक्यात्वां मात्रः, । संस्थातवां भागं भीर अदृर्ददिवाने असंक्यात्याया रोज स्वर्ते स्थित है। दिन्देर १६ महत्वासियों सामाय्यरीकः आदि वार ठोडीकः सर्वत्यात्ययो भागं स्वर्ते सा कहना पादिय । विद्यायस्वरुक्तः, पेनूना, क्याप, विभिन्नेकः भीर मार्चा-प्राट्यो होस्सं प्रवच्यात्रात्रे जोक्या ॥ इन सम्बद्धः संविध स्वर्ते अधिवासः

सा कहना पाहर । (पहारवास्पास्थान, पहार, क्याय, पाध्यक ब्यार प्राच्या १८इटा द्वितः पृथ्यवद्युरोर्हे जीवच्दा ठर्डेंड व्यवच्येले क्येष्य वैद्याय जीहीत्वा ह

मिच्छादिहि-अर्मजदमम्मादिद्वीहि अदृहा चौहमभागा देवणा चोहँममामा देसमा पामिदा । मन्द्रि मन्मामिन्छ।दिहीणं मार मोधम्मीमाणकप्यामियदेवेसु मिच्छादिद्विण

सम्मादिद्धि ति देवीर्घ ॥ ५०॥ मन्याणमन्थाण-विहारचित्रमन्थाण-वेदण क्रमाय वेद्रविद्यप

दिहीहि बहुमाणकाले चहुण्हं लोगाणमसंखन्त्रदिभागा, अङ्गाहलाहा मारणांतिय-उत्रवादपरिणदृहि निण्हं लोगाणमसम्बन्धतिमागा, णर-निर गुणा गामिदा । मनमुणहायक्षीविह अध्यय्यणा पटेम बहमाणहि क्रियामा, अङ्कुद्दाता असंस्थानसुषो पानिका। नीदे सार्त्र मे। मिच्छादिहि सामणमम्मादिई।हि सन्थाणमन्थः णगदयरिणदेहि चहुन्हं मानो, अहुद्दरजादो असंसेरजागुणी पोमिनो । नं जहा- मन्त्र ह विन्धहा, मेटीबद्धा अनेम्ब्रज्जनायणविन्धहा, पश्णायवा मिन्सा । तः

निक्रममुद्धातः, इन पर्देशेमः परिवान सम्यग्निक्याहर्ष्टि और असंयनसम्यान्तरे ह्याम्ययमे कुछ कम साट्टे मीन बट वीवह (;) मीम स्परां कि ह इंछ कम बाड यह धाडक (६) भाग स्वर्श किय ह विशव यात पह ह । ९ि देवीके मारणान्निकपद नहीं होना है।

मीधम और टनान कल्पनामी देवोमें मिश्याचि गुणस्थानन मध्यान्त्रीष्ट्र गुणस्थान नकः प्रत्येकः गुणस्थानभने। देशोहः। स्वतनसन देशहे

हरक्यानक्यक्याह, विद्वारम् क्युक्यान, रहना, क्याय शार १४ पर मिरमार्हाह देवान यनमानवालम भामान्य होत्र आहे व र अव का स्थान व्यविक्षेत्रियम् असम्यानम्याः भाषास्य ग्रहः आत् य र शहः । । । । स्वर्षानम्यानम्याः स्वर्षाः स्वर्णाः स्वर्णाः सम्बाधन्तरसम् र । । । विद्यान में तमे प्रदेशन देशन विमान्तिहार आहे. में स्थानिक स्मार्ड कर्मा है । स्थानिक में तमे प्रदेशन देशन विमान्तिहार आहे. मोत्र शहर के एक स्मार्ट कर्मा भेद राष्ट्र स्वरं राष्ट्रात्र राष्ट्र के केवल राष्ट्र राष्ट्र भाग राष्ट्र के राष्ट्र स्वरं राष्ट्र भाग राष्ट्र भवत्व में भारती होते प्रमान क्षेत्र के स्थान के स्थान क्षेत्र के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान क्षेत्र के स्थान के स् भित्र के तम्बर्ग के भागवान ने संस्थादत के देश संस्थान के कि स्थाप के कि स्थाप के कि स्थाप के कि स्थाप के कि स् स्थाप के कि स्थाप के स्थाप के स्थाप के कि स्थाप के कि स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स् The growing form the transfer of the telescope of telescope of the telescope of the telescope of the telescope of telesc The Management of the Hall and the Control of the C

.

؛ م

7

<u>ب</u> ۲

مج غ

16

ł

it

21

,1

.

विमाणाणि अमंखेज्जजोषणवित्यद्वाणि वि धेपंति, सो वि सटवीवमाणखेतफलसमासो तिरियलोगस्स असंखेजदिमामो चेव होदि । तं जहा- एमविमाणापामो असंखेजजोपण-मेपो पि षष्टु असंखेजजोपणविवस्येमेणापामं शुणिप विमाणस्मेहसंखेज्जोप्रेहि शुणिदे तिरियलोगस्स असंरोजदिमामो हेति, एक्केक्कियाणापाम-विवसंमाणं सेदियदमवम्म-मृतादो असंखेजज्ञप्यपमाणवादो । वं सोपम्मीताणविमाणसंखाए शुणिदे वि तिरियलोगस्स असंखेजजदिमामो होदि वि । एत्य सन्यक्त्याणं क्रमण विमाणसंखापक्रयमाहाओं---

बसीतं सोदम्मे आर्यासं तहेव ईशाले । यादा सगद्यन्तरे आहेव य हेति वाहिटे ॥ १० ॥ मादे करो बदोष्टी य चलारि स्वयहस्सार् । एस् बरोस् व वर्षे यउपक्षेत्रे सम्बद्धाः ॥ ११ ॥ यज्ञातं सु सहस्सा स्वरायन्त्रान्द्रियस् वर्षेत्र ॥ १२ ॥ स्वश्रमसासुत्रेस्स य चलानेसं सहस्सारं ॥ १२ ॥

प्रकार्णकविमान मिछ अर्थोत् संक्यात और असंक्यात योजन विस्तारपाले होते हैं। यहांपर यहि सर्मा विमान असंक्यात योजन विस्तारपाले हैं, येवा समझकर महण करते हैं से भी समी विमान असंक्यात योजन विस्तारपाले हैं, येवा समझकर महण करते हैं से भी समी विमान के सेवा है। इस इंस मकारेले हैं— एक विमानक आदार असंक्यात योजनमाण होता है। इसिए मसंक्यात योजनमाण होता है। इसिए मसंक्यात योजनक उत्तरिवस्पण संवार्ण अंगुलीते गुण करते विमानक उत्तरिवस्पण संवार्ण अंगुलीते गुण करते प्रकार असंक्यात विमानक ज्ञायाम और विमानक अस्ति योजन क्यां माण कर्म प्रकार क्यां क्यां प्रकार करते विमानक ज्ञायाम और विमानक अस्तरिवस्पण क्यां क्यां करते विमानक अस्तरिवस्पण क्यां क्यां करते विमानक ज्ञायाम और विमानक अस्तरिवस्पण क्यां क्यां क्यां करते विमानक ज्ञायाम और विमानक अस्तरिवस्पण क्यां
प्रकार ६— सीपर्मकरपर्मे वसील हाल विवास हैं, उसी प्रकारले देशानकरपर्मे बहुर्गास हाल, सतरहामारकरपर्मे वारह हारर तथा मारेस्ट्रकरपर्मे बाह साथ विवास होते हैं ॥ १० ॥

प्रक्ष भीर प्रक्षोत्तर करूपमें दोनों कर्योंके भिराकर चार लाख विमान हैं। इस प्रकार इन क्रार प्रकार गये रह कर्योमें विमानोंको संख्या चौरासी साम्र होती है ह ११ प्र

र्वते— १२०००० + २८०००० + १२०००० + ८०००० + ४०००० स्ट ८५०००० सीयमंदि ग्रह स्वर्गेडी विमानसंस्था,

छात्रय भीर काविछं इन दोनें कदयोंने वयस्य इजार विमान देशे हैं। हाद भीर महाराख करपमें काटीस हमार विमान हैं है ३२ है

६ व अवभेग्मधुमहोनपमानचादी " इति पावः प्रतिमाति ।

द्यन्त्रेत सहरसाई सयारवरी तडा सहरसारे । सनेव विमाणसभा कारणकपण्लुदे चेप ॥ १३ ॥ एक्क्ससर्व निम्न देत्रिनेस तिसु मध्यमेसु सल्हिये । एक्कानडदिविमाना तिसु गेराजेसुपरिनेसु II रे४ II रेजरताणवरिमया जन चेत्र अगुदिसा विमाणा ते । सह य अगुनरगामा पेनेन हवेति संवार ॥ १५ ॥

विहार-वेदप-कमाय-वेउन्वियपदेहि अह चोदममागा देगना पोनिहा। मण्डे पी गरेरि भिन्तारिकि मासमेहि मत चोइसमामा पी भिदा । उत्तराहरिकेरि भी चे रणमाना पेमिरा । सोघन्मकच्ये घरणीतलादी दिवद्वरण्डमोस्मरिय विशेषि क्लिलारिक्वरि मन्यानमन्यानपरिनदेशि चरुक् सेशानमसंगेरनदिमामे, अ वर्तत्रेत्वतुर्वे। प्रीतिरे । विहारविस्तामा वैदण-कमाव वेवविशयप्रशिमेषि मा माना देवारा पोतिहा । एवं अनेजद्यस्मितिद्वीणं वि । वारि मारवंतित्व मह रे करण, उरशरेण दिरहु मोहयमामा देखना पामिता । मेलवे देशाही मोधम्बरे !

शानार और महस्रात कराने छद इतार निमान होते हैं। भागन, प्रापन और अन्युष्ट, प्रम चार प्रशामि मिलावार सातगी विवास होते हैं श १३ में

भाग्यनाथ मीतः विवेशवर्गीर्थे तावा की क्याकड् विमाल, मध्यम तीन मिन्द्रीने व कार दिकान और जारिस बात में स्पूर्णों स्वापानये विमान मेर्ड में है है है है.

कड केंद्राकों के प्रार अस्तियां की आधारित में। दिसान वीर्त हैं। इन के क्रार के

कमान रे पाच विवास होते हैं है है। है

जिरानकारकात्रम्, वेद्राह सक्य और वैश्वित्यसमुखान, इन गर्हे हो वाह हो है केंग्यन करा ह मित्यार्गय और सामायुनमुख्यात्मान्य विश्वति हार की आह वर्ष है। र्ग है है है जान न्यारी विश्व हैं। मारमास्थितपुणस्थानावानी वृथान होर का भारत है है है। मारमास्थितपुणस्थानावानी वृथान होर का विश्वापारि भीते स्वर्धा क अक्षान है है है भी बहे भी नह (हैं) आश नगरी हिन्दें हैं। स्थानगर गरिमन स्थान हो -- प्राप्त १६०० आता काला (क्या है) प्रणाव्यक्षाता प्राप्त है इंबर को नहीं हैं, अपने काली किये हैं, क्योंकि, बीधर्मक्या धरणीन की है। है। अन्य के रोजन के कण वासीका अस्वत्रस्य जनकरामप्रवृत्तिकम् आस्युतिस्यावित विवेत सामा^{याः} । कण वासीका अस्वत्रस्यका साम, क्रीट अवृतिहर्षाः अस्वयानम्बर्धः स्वर्णः । स्व ेश्यामा च क्यांन्यात्र क्यांन्य क्यांन्य क्यांन्य क्यांन्य क्यांन्य क्यांन्य क्यांन्य क्यांन्य क्यांन्य क्यांन क्यांन्य क्यांन्यात्र क्यांन्य कम कार का कारत (है) काम कारो कि दें।

हरू द्वार र अध्ययम्बद्धार देश हरू द्वार र अध्ययम्बद्धार देशोगा और ध्वरीनथा आवता वार्रि हे हे एक अव्ययम्बद्धार सन् सन् है त्य कल्पनकाराज्य वृष्ट्र में साम्यानिकास्त्र तथी भोगा देव स्त स्त स्तान स्तान स्तान स्तान स्तान स्त सर कोहर । ं साथ जेन इत्यादकी क्षणार्थनिकसमूत नकी कोशी हैं? जिस है :

अत्थि तेण देवोपभिदि सुनवपणं सुदू सुधडमिदि ।

सणक्कुमारपहुडि जाव सदार सहस्सारकप्पवासियदेवेसु मिन्छा-गृहुडि जाव असंजदसम्मादिट्टीहि केवडियं क्षेत्रं पोसिदं, लोगस्स केव्जदिभागो ॥ ५१ ॥

एदेति पंचण्डं करणाणं चरुगुणहाणक्षीरोहि जहासमयं सत्याणसत्याण-विहारवि-ग-वेदण कराय पंजीवय-मारणविय-उववादपतिणदेहि चहुन्हे स्रोमाणमसीरोज्जहि-, अष्ट्रारज्जहो अमस्यज्जगुको पोसिदो । एसा बहुमाणपह्वणा ।

अट्ट चोहसभागा वा देखूणा ॥ ५२ ॥

र्षयकत्त्वाभिषणपुरुणहाणभीवेदि सरबाणसत्याणपदपरिणदेदि अदीरहाले चदुन्हे जिससेरोज्जदिभागो, अङ्ग देखादो असंखेज्जुर्युणो चीसिदो । विहारविस्तरवाण-वेदण-व-वेजियप- मारजंविय-पदवरिणदेहि अङ्ग चोडसमामा देवणा चीसिदा । उत्रवाद-वदेहि सणवद्गार-माहिददेवेहि विध्या चोससमामा देखणा चीसिदा । वस्द-वस्ट्रचर-

चृति देवीके भोगरवर्शनले सीधर्मकरवर्में कार्ड विशेषता नहीं है, इसालिय 'देवीय' ! खन्यवान मले मकार सुपटित होता है।

सनत्कृपारकरपेस क्षेत्रर शतार सरसारकरण नरके देशोवें विध्यादि गुणस्थानसे इन असंगतसम्यग्राट गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानयती देशोने कितना क्षेत्र रूपर्छ इया है है क्षेत्रका असंस्थानमां माग स्पर्ध किया है ॥ ५१॥

र रास्त्रात्रपर्यात, विद्वारयास्यस्यात, वेदना, क्याच, वेशियिक, आरवासिकसमुद्धात शेर उप्पन्न, इन प्होंने यथासंत्रय परिवार उक्त पृथ्वी करवीने कारी. युक्तस्यातीय रहने-शक्ते देशीने सामाव्योज आदि चार शोषीका असेच्यातयो आग और सब्हाईशिये ससं-क्यातुत्रात् हिं सुंब रहरी थिया है। यह सर्वमात्रशास्त्रिक स्वर्यानिक, शेषकी प्रदर्शन हैं।

सतादुमारकरारी टेक्टर सहस्रारकरण तकके मिण्यादिष्ट आदि चारों गुण-स्थानवर्की देवोंने अकीव और. अनागत कालमें कुछ कम बाठ वटे चौदह माग रुपरी किंग्रेटी । ५२ ॥

सनादुमाशादि वांच करणें के वारों गुकरधानवर्ती स्वस्थानस्थरधान पर्वपरिणत हेयोंने भातित्वाहर्त्ते सामाध्यतीक आदि चार सोवांचा अवस्थातयां माग और अवृत्तीयांकी अस्तियात्तां माग और अवृत्तीयात्ते अस्तियात्तां ग्राम क्यार वांकियक आति चार सार्व्यातां वेदना, क्याय वेदियक केरि मार जातिकस्यात्राता, रत पर्देशे वार्यक्र क्यारे होते हुए वह साववेद वेद्याद (दूर) भाग स्पत्ते विशे हुं। वयपादपारिणत सनत्क्रमार और माहेन्द्र करणवासी वेदोंने हुए कम ठीन बढे बीदह (तुर) भाग स्पत्ते विशे हुं। अस्ति सहस्य होते हुं स्वस्ति हुए सम्बन्धित करणवासी वेदोंने हुए कम ठीन बढे बीदह (तुर) भाग स्पत्ते किये हैं। महा और महावेद्य करणवासी वेदोंने हुए कम ठीन बढे

कष्पवासियदेवेहि आहुङ-चोहममामा देगुमा पामिदा। संतप-का माता देवणा पातिदर । स्वतं महामुक्तदेवीदे अद्वर्पनमः नीहमः सदर-सहस्सारकप्पनामियदेवेहि पंच चौहनमागा देखगा पीमिदा

इहीणं मारणंतिय-उत्तरादा गन्यि ।

आणद् जाव आरणच्चुदकप्पगासियदेवेसु मिन्द असंजदसम्मादिशीह केनडियं खेत्तं गासिदं, होगस भागो ॥ ५३ ॥

एदरस सुचस्स बङ्गाणसंचपरूत्रयस्स अन्यो पुरुवं परुविदी (छ चोइसभागा वा देसृणा पोसिदा ॥ ५४ ॥

भिच्छादिहि-सासणसम्मादिहि-सम्माभिच्छादिहि-अमेनदममादि सत्थाणपदगरिणदेहि चदुण्डं लोगाणमसंसेजनदिमागो, अङ्कारजादो अमंसे एसो 'वा' सद्द्वा। विद्वारविद्वारयाण वेदण कताप-वेउन्दिय मार्गानियपरि सीन यदे चाँदह (२८) माग स्पर्धा किये हैं। सान्तप भीर कापिष्ठ करवा कम चार वटे चीयह (हैंट) भाग स्पर्धा किये हैं। शुक्त और महागुक्त करपवा

कम साढ़े बार बढ़े चौदह (२६) माग स्पर्श किये हैं। शनार भीर सहस्र वैयोंने कुछ कम पांच बढे चौदह (हर्षे) आग स्पन्न किये हैं। विरोप बान यह मिष्यादृष्टि वेवोंके मारणानिकसमुद्धात और उपवाद, ये दी पद नहीं होते हैं। आनतकरुपसे सेकर आरण-अर्ज्युत तक करूपवासी देवोमें मिण्यादृष्टि लेकर अर्धयतसम्पार्टिष्ट गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्यानवर्ती देवोने क्रितना किया है १ लोकका असंस्थातवां माग स्पर्ध किया है ॥ ५३ ॥

मर्तमानकालिक स्पर्नानहोत्रक मक्रपक इस स्वका सर्थ पहले कहा जा इसछिए पुना नहीं कहा जाता है। चारों गुणस्वानवर्ती आमतादि चार करपवासी देवोने मठीत और भ्रमागट भवेशा हुछ कम छह बडे चौदह साग स्वर्ध किये हैं॥ ५४॥ स्वस्थानस्वस्थानपद्वपरियात मिरकाकति धसंयससम्बद्धाः अधिने कारणाः

٢

. 1

F

÷i

21

भागा देखणा पोसिदा, विचाए उत्तरिमतलादी हेट्टा एदेसि गमणाभावादी । मिच्छादिहि-साराणसम्मादिद्दीणं उत्रवादो चदुण्दं लेगाणमसंदोडबदिभागो, माणुसखेतादे। असंवेअ-ं गुणो । पुरो १ एरापणशासीसजोपणसम्बन्धिम संयोज्जरज्जुआपरप्रवचादखेलं तिरिय-लोगस्स असंखेजजदिभागं ण पावेदि वि । सम्मामिच्छाइहीणं मारणंतिय-उववादघदं णत्थि । असंजदसम्मार्ड्शहि उववादपरिणदेहि अद्भुखः-चोदसभागा देखणा पासिदा । आरणच्चरः कप्पे छ चोइसभागा देखना पोतिदा । किं कारणं ? विश्वित्वत्रमंत्रतममादिट्टि-संबदा-संजदाणं वेतिपदेवसंवंधेण सम्बदीव-सायरेख द्विदाणं वत्धुववादीवलंभादी ।

णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु भिन्छादिहिणहुडि जाव असंजद-ः सम्मादिद्दीहि केवडियं सेत्तं पोसिदं, छोगस्स असंक्षेज्जदिभागो ॥५५॥

एदस्स सुचरत बहुमाणपरुवणा खेचमंत्री । अश्वदपरुवणा वि खेचमंत्री थेप । हरी १ चहुण्हं सामाणमसंदेशहिमागचेण, माणुमखेचाही असंदेश्वगुणचेण च समाणनु-.. इत्से १ चड् ्रयसंगादी ।

छह बट बीरह (रूप) भाग रवर्श किये हैं, क्योंकि, विका पूर्ववर्धक उपरिम तलसे मीचे इनके गमनका समाय है। उक्त मिध्याद्यक्त सीर खासायनसम्यग्दाधि वृयोका उपचायकी 🗸 भपेशा रार्शनक्षेत्र सामान्यलोक बादि चार लोकोंका असंक्यातवां आग और मनुष्यक्षेत्रसे 💉 असंख्यातगुणा है, वर्षोकि, पेंतालीस लाख योजन विष्यम्भयाला और संवयात राज्यमाण भाषत उता देवींका उपचादशेक भी तिर्धन्तीको संकातवे भागको नहीं प्राप्त होता है। सम्बाधिक देवाँके मारणान्तिकसमुदात और अपपादपद नहीं होते हैं। भानत-प्राणत े, सम्योगमध्यादाधे देशक मन्यणान्तकसमुद्धात मार जनगद्रपद नदर दात द र भानतःमाणत र्' बन्धके उपगादपरिणतः भसेयतसम्यग्देष्टि देवीने कुछ कम साढ़े यौव वटे घीतृह (१३) भाग रपरी किये हैं। भारण भीर भण्युतकारपर्ने उका पद्परिणत जीवीने कुछ कम छह बढे चौरह (क्षे) भाग रुक्त किये हैं। इसका कारण यह है कि पैरी देवोंके सम्बन्धते सर्व श्लीप अर सागराँमें विधानम तिर्वेच धसंपतसम्बद्धि और संवतासंवतांका भारण अस्पनस्त्रमें वपपाद पाया जाता 🛍 ह

नवप्रदेयक विमानवासी देवोंमें मिध्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयवसम्पन्दृष्टि गुणस्पान तक प्रत्येक विमानके गुणस्थानवर्धी देवीने कितना क्षेत्र रपर्छ किया है ! लोकका अर्धरुपातवां भाग स्पर्ध किया है ॥ ५५ ॥

इस राजदी वर्तमानकारिक कार्यनाहरूपण शेवपरापणके समान जानना चाहिए। तथा अतीतकारिक राजीनग्ररपणा भी क्षेत्रग्ररपणांके समान हो है, वर्णीके, सामान्यरोक ूर्ध सादि चार हो गाँके मसंच्यातर्थे मामसे तथा मनुष्यक्षेत्रसे असंक्यातगुलिन क्षेत्रकी अर्थना ्रे समानता पाई जाता है।

अणुदिस जाव सञ्चट्टसिद्धिविमाणवासियदेवेसु असंजदममा दिद्वीहि केवडियं सेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंक्षेज्जदिभागो ॥ ५६ ॥

एदेसु द्विदअसं जदसम्मादिद्वीहि सत्यागसत्याण-विहारवदिसत्याण-वेदणकम्प वेउन्यि मारणतिय-उत्रवादपरिणदेहि चदुःई लोगाणमसंखेजजदिभागा, माणुवहनते असंखेड्युणो, णवगेवज्जादिउवरिमदेवाणं तिरिक्खेस चयणीववादाभावादी। णवि वं परपरिणंदेहि सब्बहुसिद्धिदेवेहि वाणुमलोगस्य संवेज्जदिमागी वोसिदी।

एवं गडिमग्गणा समसा ।

इंदियाखनादेण एइंदिय-वादर-सुहम-पञ्जत्तापञ्जतएहि केविडिंग सेतं फोसिदं, सब्बलोगों ॥ ५७ ॥

एईदिएहि सत्थाणसत्थाण-चेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि तीर-वहुमा कालेसु सन्वलोगो फोसिदो । वेउन्वियपरिणदेहि बट्टमाणकाले चदुण्हं लोगाणमसंस्वरीर

नव अनुदिश विमानोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तक विमानशासी देवोंने असंवत्तम ग्रहीट जीवोंने क्षितना. क्षेत्र स्वर्श किया है ? लोकका असंख्यातमां भाग स्पर्ध किया हैंगा. ५६ ॥.

इन नघ अजुदिश और पांच अजुत्तर विमानोंमें रहने वाले स्वस्थानस्वस्थान विद्वारयास्त्रस्थान, वेष्ट्रना, कपाय, यीकियक, मारणानित त्रसुद्धात और उपयादक्षित सस्यस्तरम्बर्गात् विमानि सामान्यक्षीक आदि चार लोक्कांका असंस्थातया भाग और मार्ड समसे असंवयतगुणा क्षेत्र स्वत्री किया है, क्योंकि, सब्प्रेयकादि उपरिम इश्वाम देयाँका ज्ययन होकर तिर्ययों में उपयाद होनेका अभाय है । विशेष बात यह है कि स्वशी नाति पांच पर्देशि परिणत सर्वाधिसिदिके देवाने मनुष्यलोकका संव्यादय प्राप्त करी किया है।

इस प्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई।

इन्द्रियमागणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, एकेन्द्रियपर्यान्त, एकेन्द्रियगपर्यान; नत एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रियपर्याप्त, बादर एकेन्द्रियअपर्याप्त, स्वाप्त गर्वेद्रिय, हार एकेन्द्रियपर्यास्त आर ग्रह्म एकेन्द्रियअपर्यास्त जीवोने कितना क्षेत्र स्वर्ध किया है। सर्वेठोक स्पर्न किया है॥ ५०॥

स्वस्थानस्यस्यान, वेदना, क्याय, मारणान्तिकसमुद्धात और उपवार, जिल्ही परिचन पकेन्द्रिय जीवोंने अतीन और पर्तमानकालमें सबेठोक कार उपपान की पर्पाणित परेन्द्रिय आर्थेन यर्गमातकालमें सामान्यलोक आर्थि चार लोकों सामान्यलोक आर्थि चार लोकों सामान्यलोक

[■] दन्दिवानुवादेन वृद्धेन्द्रियेः सर्वजीकः स्मृष्टा । ल. थि. १, ८.

मागो पोसिदो । माणुमधिर्म ण ण्यदे । अदीदकाने निष्टं लीगाणममीनअदिमागा, जरनिरियलोगेहितो असंगेअपुणो पोसिदो । अदीदकाने विषटं लीगाणममीनअदिमागा, जरनिरियलोगेहितो असंगेअपुणो पोसिदो । अदीदकाने पंचण्डकादाई निरियपहाँ विजयमाणा याउराद्या पूर्वति थि । याददेदिय-पारेगेहियपवजनीट न्यरणानेदरण-सामासरियदेट वर्षमणकाने निष्टं लोगाणां संखेकदियागा, दोन्योगेहितो असंग्रेज्युनो फोमिदो ।
कि कार्या है जेल पैनावज्वाहरूके व्यक्तप्रदेशायाग्रीव्यं आदारणदेव्यक्तिमानि ।
कि कार्या है जेल पैनावज्वाहरूके व्यक्तप्रदेशायाग्रीव्यं ।
कार्याव्यक्त लेशांविद्वाव्यक्तप्रयोग्यं च एगा घर्ट होतामा मंग्यदेव्यक्तिमां होति नि ।
पेदेदि अदीदकानि वि एणियं चेव वर्षणं पीपिदं, विवरियरदर्शालामानेदिय मन्यद्वाव्यक्तिमाने ।
कार्याव्यक्तवावादो । विद्ययवद्यगियदेटि वद्दायाकाके चहुन्हं लेगानामांग्येक देशाने,
माणुवायोगाहो अमुणिद्विमागो कोनिदो । भीद कार्ये निष्टं लेगानामांग्येक्यानाने,
देलिगेहिना असंग्रेज्युनो कोनिदो । मार्यानिय-प्रवादवर्षिवदेटि नीद बद्दायकाके च्या

ग्रीया-चारर घरेम्ब्रिय और बारर खेरेन्द्रियवर्धाल आयोजा सामान्य नेव बर्नाह

तीन शीवींके रेक्यानचे भाग क्यसँगदेश होनेका क्या बारण है ?

सम्पान—इसका कारण यह है कि योज राजु बाह्यवय ला राष्ट्रवराव्यास्य केन बायुक्तविक अविधि परिवृत्ते हैं और बादर यहेरिह्य श्रीकील अरो पृथ्येवयां स्थापन है। इस पृथ्वियोक कीय विध्यत्र बीत बीत इसका योजन बारवयारे तीन हैन बायमकर केने बीट स्रोबानमें रियम यानुवादिक जीवीत होवड़े। यह कि बारनेवर वराज-योगन करने तीन स्रोबान संव्यानयां आग हो जाला है।

 सञ्चलेगो। पोसिदो। एवं वादोइंदियअपञ्जलाणं पि वृत्तकां । णवरि वरित्ववं विश्व सङ्मेइंदिय-सङ्क्रेमेइंदियपञ्जलापञ्जलपहि सत्याणसत्याण-वेदण-कसाय-मार्णतेष-असर -परिणदेहि तिसुं वि कालेसु सञ्चलेगो। पोसिदो, 'सुहृमं। जल-यलागांते सन्तर्वहेंते' वि वयणादो ।

वीइंदिय-तीइंदिय-चर्जिदिय-तस्सेन पञ्जत्त-अपज्जतणृहि^{क्रेत्र्रंत्रं} खेत्तं फोसिदं, स्रोगस्स असंखेज्जदिभागो[°] ॥ ५८ ॥

पदस्सत्यो- वेइंदिय-वेइंदिय-चर्डारंदिएहि वेसि पञ्जेवहि य सत्याणज्ञान विद्यात्वदिसत्याण-वेदण-कसायपरिणदेहि विण्डं छोगाणमसंखेडजदिमागो, विरिक्तान संखेजजदिमागो, अङ्कादज्ञादो असंखेजजगुणो पोसिदो। मारणंतिय-उवनादगरिणदेहि वि छोगाणमसंखेजजदिमागो, दोछोगेहिंवो असंखेजजगुणो पोसिदो। वेसि चेत्र अपन्नेत्र सत्याणसत्याण-वेदण-कसायपरिणदेहि चदुण्डं छोगाणमसंखेजजदिमागो, मासुन्वेत्रं

सर्पछोक स्पर्धा किया है। इसी प्रकारके बादर एकेन्द्रियमपर्यान्त जीयोंका मी सर्धार्थः कहना खादिए। विदेशय बात यह है कि उनके विक्रियकसमुद्धात नहीं होता है। स्वस्ता स्वस्थान, पेदना, कथाय, मारणानिकसमुद्धात और उपयादगरिजन सङ्ग यकेन्द्रियः प्रकेन्द्रिययपर्याप्त और सहम स्वकेन्द्रिय जीवोंने तीनों है कालोंने सर्वनेष्ठ किया है, स्वीक, 'सङ्गकायकजीय जल, स्यन्न और बाकार्य सर्पय होते हैं। कालार्य स्वयं होते हैं। कालार्य स्वयं होते हैं।

द्वीन्द्रिय, डीन्ट्रियपर्याप्त, द्वीन्द्रियअपर्याप्त; त्रीन्द्रिय, व्रीन्द्रियपर्याप्त व्रीन्द्रियअपर्याप्त; चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रियपर्याप्त और चतुरिन्द्रियवर्याप्त और कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ! क्षेत्रका असंख्यातयां माग स्पर्ध किया है ॥ ५८ ॥

इस सुनका अर्थ कहते हैं—स्वस्थानस्यस्यान, विहारयन्तरस्यान, वेहन और कार्य समुद्रानसे परिणन झीन्द्रिय, जीन्द्रिय, खतुरिट्ट्रिय और उनके पर्यारत जीवीन सर्तानर्थ भारि तीन छोनों हा असंस्थातयों आग, तिर्पय्होकका संस्थानयों आग और मार्जिय ससंस्थानगुष्पा सेन स्थाँ किया है। सारणात्तिकसमुद्रात और उपपारस्थात्तिन उर्ड प्रेट सामान्यरोक भारि मीन छोनों हा असंस्थातयों आग और नस्टोक तथा निर्देश्योक, वर्ष रे छोनोंने संस्थानगुष्पा क्षेत्र स्था है। स्वस्थानस्वस्थान, येदना और स्थानन्तर्ध परिचय स्थानिक स्था

र दिक्केट्रियेट्रावस्याधंक्षेत्रमानः सर्वेडोको वा । स. ति. १, ८.

, 1

. 1

ď

असंगिजनपुणी फोसिदो । एसा बहुमाणप्रस्वणा पुरवुवरसंगाठणणिमिचं कदा ।

सब्बलोगो वा ॥ ५९ ॥

एर्य ताव 'वा' सर्द्वा उच्चर्र- बीह्दिय-तीह्दिय-ताहिद्यि तेषि चेत्र पत्रचिद्व प्रस्ताद प्रस्ताव पत्रचान्ति विद्यानि विद्

वर्तमानवालिक स्पर्धनक्षेत्रकी प्रस्तवाग वृष्टे और उत्तर अर्थके अर्थान् अतीत और असागतं कालसम्बन्धी स्पर्धनक्षेत्रके संमालनेके लिए की गई है।

द्वीन्द्रिय, श्रीन्द्रिय और अतुरिन्द्रिय जीव क्या उन्हींके पर्योप्त और अपर्शाप्त भीवोंने अतीव और अनागत कालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्ध किया है ॥ ५९ ॥

यहांपर पहेंत 'या' शाक्त अर्थ कहते हैं — स्वस्थानस्वस्थान, विहारपास्यस्थान, वेदना और करायसमुदासपरिकात होस्ट्रिय, कोस्ट्रिय, खहुरिस्ट्रिय और उनके हैं। वर्षोस्त जीपोंने सामाग्योत आहे तीन होर्केश अर्थस्थातयां माग, निर्धेन्तीकस संव्यासयां भाग और मानुमप्रेन्थते संस्वयातमुगा शेव वर्तास्थालमें स्परी निर्ध है।

रवरपानरपरपानस्य विपतिनित्र अधि स्वयास्त्रश्येतके परानामाँ हो होते हैं, हिस्तित्र परानावर्षी होत्र को व्यक्ति स्वयास्त्रपर्यानस्थ्र विर्वेश पूर्वेत सामाज तरपास्त्रपर्दे स्वाधित स्वयंत्रपर्दे विदेशित्र अधिया स्वयास्त्रपर्यानस्थ्र विविश्वोत्तरे स्वयास्त्रपर्यानस्थ्र विविश्वोत्तरे स्वयास्त्रपर्यानस्थ्र विविश्वोत्तरे स्वयास्त्र सामाज्ञ हो होता है। सारपानित स्वयास्त्र होता है। सारपानित स्वयास्त्र को प्रवाद स्वयाप्त्रपर्याच्य के अविषयां स्वयास्त्रप्रामाज्ञ हो होता है। सारपानित स्वयास्त्र को प्रवाद व्याप्त्रपर्याच्य के अविष्याद्वीत्र स्वयाप्त्रपर्याच्य स्वयाद्वीत्र सारप्रयानस्थ्यान् स्वयाद्वीत्र सारप्रयानस्थ्यान्, वेदना और स्वयाप्त्रस्थ्यात्रस्थानस्थ्यानस्थ्यानस्थ्यानस्थ्यानस्थ्यानस्थ्यानस्थ्यानस्थ्यानस्थ्यानस्थ्यानस्थ्यानस्थित्रपर्यानस्थितस्य स्वयानस्थ्यानस्थितस्य स्वयानस्थानस्थितस्य स्वयानस्थितस्य स्वयानस्थानस्य स्वयाद्वीतस्य स्वयानस्थानस्य स्वयाद्वीतस्य स्वयानस्य स्वयानस्य स्वयानस्य स्वयाद्वीतस्य स्वयानस्य स्वयानस्य स्वयाद्वीतस्य स्वयानस्य स्वयानस्य स्वयाद्वीतस्य स्वयानस्य स्वयानस्

विस्कित्यायप्रज्ञवाणं अधा कारणं उचं, तथा एत्य वि पुप पुष पंचिदिय-पंचिदियपञ्जत्तएसु मिच्छादिई।हि के लोगसा असंसेन्जदिमागो[']॥ ६० ॥

पद्स्त सुचस्त परुवणा राजपीचिदियदुगपरुवणाए तुल्ला कातावलंकमं पडि साधममादी ।

अह चोइसमागा देसूणा, सञ्चलोगो वा ॥ ६१ इविधर्षचिदियमिन्छादिङ्कीहि सत्थाणपरिणदेहि तिण्डं साग त्रियदागम्म महिमार्गा, अङ्गहिजादो अमेसेजजगुरो । एत्य बैन्सक्तम्बद्धानं अहीरकाल पंचितियतिरिक्षेत्रहि सत्याणीकपरोणं च प गैरोज्जितिमागो द्रिमेदच्यो । एसो १ वा ! सदग्रियत्त्यो । निहार

हमाच-वेजियमस्मिदेढि अह चोहममामा चासिदा, मेरुम्लादी उत्तरि । बन्तां वसमा तिम प्रकार (जना क्षेत्र दोलेका मो) कारण कदा है, उसी धी दृष्टक कुछक होत्रियादि थिन देन्तिय संपर्धान सीवादा देन बतजान हुए

वर्षे-द्रिय और वंबेन्द्रियवर्षाहोंने निष्यादृष्टि जीवोने किन्द्रा हो है है में इका अमेल्यानची माग स्पर्ध किया है ॥ ६०॥ इस मुक्ती धननमा पंत्रे, देव और गंगिदियपर्याल, इस दोनीही ह राज व है, क्योंक, होनों ही स्थानीयर वर्तमानकालके मन्त्रकालके मन्त्रकालके मन्त्रकालके मन्त्रकालके मन्त्रकालके

इनेन्द्रिय त्रीत वेनिन्द्रपययोज्य श्रीसेने अनीत श्रीर प्रनाम कार हैं इस अट करें भी रह माग और गर्ननेक रुपये किया है ॥ ६१ ॥ भागामान्यत्वात्रवारियाम् वंभीतियः श्रीतः वैभीतियययोगः उत्तराभीते देवे ज्या विकास विश्व विकास विश्व क्षेत्र विकास विश्व विकास
दे हैं है कर्मार में मान की मानामार्थित भारत की सामाण माना की अनुमानी भारत की माना की काम की माना की काम की माना की काम की माना की काम किया है। देवह अञ्चल हो। त्यात्वह और द्वात्व ह है है, वायातीस हम संवक्ष तथा पर इक्ष-प्रदेश केंद्रपार जान कार ध्वानन हैं गढ़ वायानी सहस सम्बद्ध प्रदेश पर स्थापन क्षेत्र कार्या कार्या कार्या प्रदेश करणाम् है। स्वकारणी आग्रीकाता स्थान व्यवसातकास्था तक्यम स्थान हिन्द्र करणाम् है। स्वकारणी आग्रीकाता स्थानम् यदः या उत्तम स्थान हिंद के क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्राच बाह राज्यक्षमं वाचारा कर्म कर्मा वेशक हिंद इ.स. १९८७ व्यापक विकास क्षेत्रक विकास क्षेत्रक व्यापक विकास हिंदी ٤, ٤, ﴿﴿.] ष्त्रीसमाणुगरे पंचिद्रियर्गेनसणपरूबमं

[484

सासणसम्मादिहिषहुिं जान अजोगिकेनिः ति औषं ॥६२॥ एदेशि मुणद्वाणाण् वद्वमाणकालिभिद्वसंचयस्त्रणा एदेशि चेत्र सेचाणिओम-रामेपारेट उत्तपस्यमार तन्ता । इसे १ साम्यपद्धि जाव संनदासंत्रहे ति सन्वपद्धा चडुण्डं लीमाणमतंत्रेअदिमागचेण, माणुसत्तेचानी असंतेअगुणचेण च एदेसि चेव त्रेष्ठा व्यापात्रकावर्वेहि साध्यम्भवस्य मादो । संसमुबहाबार्वा वि सन्ववदेहि सरिसवरंसः त्ववााणभाषक्षात्व वात्त्व वात्त्व वात्त्व व्यवस्थात् । वाव्यवहात्वात् व्यवस्थात् व्यवस्थात् व्यवस्थात् व्यवस्थ माहो च । अदीदकालमस्सिर्य यस्त्वम् दीरमाणे वि वर्षिय भेदी, वीचीरेयवहिरिवाणः पहिचळ्याणमभावा ।

सजोगिकेवली ओषं ॥ ६३ ॥

परम वि तिविधं कालमिन्तर्ग ओयवरूवणा चेव काद्य्या, उवस्य पीयदियर्च पढि भेदामाया ।

बाना महारके पंजेरिद्रय और वाचे जाते हैं। मारणानिकसमुद्रात और उपपाइपद्रपरिवात दोना अवारक प्रधान्य जाय थाव जात हा भारणात्त्वकृत्वाक्षण जार जपगद्वपर्यास्त्व बत्त दोनो प्रकारके श्रीयोने सर्वेटोक स्पर्ध किया है, क्योंकि, श्रतीतकालकी यहाँ पर विकास वातादनतम्बर्दाधे गुणस्थानमे लेकर अयोगिकेवली गुणस्यान वक मरवेक गुण-

यानवर्ती वंचेन्त्रिय और वंचेन्त्रियवर्योच जीवांका स्वर्धनसेत्र ओपके समान है॥ देश हत गुणस्थानोही वर्तमानकालविश्विष्ट रुग्दाँनको सहयका, रुद्धाँ त्रीयोक सेन्यानुयोतः रेत कोयमें कही गई हैत्रयहरूकाहे. तुरुष है, क्योंहि, सासाहनसम्बद्धि गुक्सकाहे ९६ जाधम रुवा गर स्वभवरूपणान, गुरुर हा, क्याहर, जास्तर्वस्थयन्द्राप्ट ग्रावस्थान्त्र इ. संस्तासंत्रत्र गुणस्यात तहः सर्व वहाँहा स्यूर्गेन सामान्यलोक साहि चार लोकारे ंद सरवालयन गुनस्थान तह स्थ प्रशास स्थान सामाध्यक्षक स्थाद सर सामाक स्थातव मागले और मानुबहेन्त्रते सर्वच्यातानुषे होत्रते दर्मों पूर्वेकः जीवोक स्थान प्रतित्व कहे तमें पहिल्ला साथकों जाया जाता है। क्या असक्तियानि होर गुजरातान सम्बद्ध प्रतित्व कहे तमें पहिल्लामा साथकों जाया जाता है। क्या असक्तियानि होर गुजरातान हारत वह गव प्राक्त ताव लावक्य पाचा जाता हा तथा अवस्थानकर दार अवस्थान जीवोंक भी सर्ववर्गेके साम सरसाता देखी जाती है। जतीतकास्वर आस्रव लेक्टके वायात मा च्यूपान वाय कर्यात प्रवा वात व र व्यावकाटन वायय टकरक प्रकृतवाके करते पर भी कोई भेद नहीं है, क्वींहि, वंबीट्रिय अविके छोड़कर गुक् सयोगिकेवली जीवोंका स्वर्शनक्षेत्र ओपके समान है ॥ ६३ ॥

पहां पर भी तीजों कालों हो। आधार लेकर मांच स्वर्शनमक्षणा ही करना बाहिय, चेवावा सामान्योण राज्यम् । सः ति १, ८.

खेजदिभागो ॥ ६८ ॥

पाचिंदियअपज्जतएहि केवडियं खेतं पं एदस्स सुचस्स परूनणा खेनभंगा। उत्तमेन किनि

मावा १ ण, मंद्रबुद्धिमवियजणक्षंमालणदुवारेण फलोवलंभादो । सन्बलोगो वा ॥ ६५ ॥

सत्याण-वेदण-ऋषायपरिणदेहि तीने काले तिण्हं लोगागम लोगस्स संसेजनिदमागो, माणुसर्वेत्तादो असंसेजनगुणो पासिदो। अपन्त्रचाणं व तिरियलोगस्स संसेखदिभागचं दरिसेदव्यं । एसो मार्गितिय उत्रवादपरिणदेहि सञ्चलोगो कोसिदो, सन्त्रलेगान्दि एरे अपन्त्रतार्थं गमणाममणवडिसेहाभाता ।

एवभिदियमम्मणा समता।

टबस्पवर्शान पंचेन्द्रिय जीवाने कितना क्षेत्र स्वर्ध किया है रुवानरी माग स्पर्ध किया है ॥ ५४ ॥ इत तृषको २७३१नमस्यका क्षेत्रमस्यकाके समान है।

रोका - कही गई बान ही पुन- क्यों कही जाती है, क्योंकि, कह दूर केंद्रियास मही है ? ममापान - नहीं, क्योंकि, मैदनुशि मध्यमनोके संवासनेकी संवा बरनेबा फ्राः पाया जाना दे।

हडरपुषपाम वृथेन्त्रिय जीवान अतीन और अनागन कानारी प्रयंत्र दर्श हिया है ॥ इन ॥ हेबरणानम्भानं, प्रत्ना भीर इत यसमुदानपारेवान इत सारपायान

ह को विकास कराव गांव, यहता भार वय सम्मादात्रमारेणत उत्तर साध्यास । भारत वर्षात्रमार्थ्य सामान्यस्योदः भार्तः त्रीत्र सावश्रीतः साध्यास्य । ।।। संबद्धानपुर ताल कीर तनुष्याच्याचा भाग है भीन खात्रीका प्रसंप्रपानया भाग । टक्का देव-कृषु न्याव वीवाद समान हा निर्वेश्याद्यम् भाग स्थापित स्थापित । यहा वर्षाः सम्बद्धाः ध्यान व राज्यम् स् वान्यम् स् वान्यम् Wat TH Arm

कायाणुनादेण पुढविकाहय-आउकाहय-तेउकाहय-वाउकाहय-1280 दरपुढविकाइय--वादरआजकाइय-वादरतेजकाइय-वादरवाजकाइय-दरवणफदिकाहयपत्तेयसरीरत्तस्सेवअपञ्जत्त-सुहुमपुढविकाइय-सुहुम-उकाह्य सुहुमतेउकाह्य सुहुमवाउकाह्य त्तस्तेवपञ्जतः-अपञ्जतएहि डियं स्नेत्तं पोसिदं, सन्वलागों ॥ ६६ ॥

8, 54.]

पुढविकाद्य-आउकाद्य-तेसि चेत्र सन्यतुष्ट्रमेहि सत्याणसत्याण-वेदण-कताय-विय-जनवादपरिणदेहि तिसु वि कालेसु सन्बलोगों पासिदो । बादरपुडिनिकाइय-गाउकाइय तेसि चैव अपन्त्रच बादरतेउकाइय-तस्त्रेव अपन्त्रतवनणकादिकाइयण्सेय-ादरिणिगोादपदिष्टिद-नेसि चेत्र अपग्जनएदि य सत्याण-नेदण-कसायपरिणदेहि गद्यह्माणकालेषु विष्टं लामाणमसखेजादिमाना, विरियलोगादा संखेजनागुणो, उपादो असंखेजनमुणो पोमिदो। तिरियलोगादो संखेजनमुण्यं कथं पन्तदे ह

कायमार्गणाके अञ्चवादते पृथिवीकायिक, जलकायिक, अधिकायिक, वायुकायिक ा बादर प्रथिवीकायिक, बादर जलकायिक, बादर अधिकायिक, बादर बायु-और पादर बनस्पविकायिकप्रत्येकप्रशिर जीव तथा इन्हीं पांचांके बादर काय-अपर्याप्त जीव; यक्ष्म पृथिवीकायिक, सहम जलकायिक, सहम अधिकायिक, कापिक और इन्हीं सहम जीवीके पर्याप्त और अपयीप्त जीवीने कितना क्षेत्र । है ! सर्वलोक स्वर्ध किया है ॥ ६६ ॥ स्वास्त्रस्थाम, वेदमा, कवाय, भारणान्तिकसमुद्धात और उपपादपद्यरेणत क और जलकायिक जीय और बन्धिक सर्व सहमकायिक जांगीने तीनों ही

क्षीक हार्री क्यि है। सस्यान, पेदना और क्यायणक्ष्यरिणत बादर श्रुविधी-दर जलकायिक और उन्होंके अगुर्यान्त भीशेंने, वादर अग्निकायिक और उन्होंके वान, वनस्पतिकापिकवरोकसमीर बादरानिमोदमतिशित और उन्होंके अपर्याप्त त, अनागत श्रीर यतंमान, इन तीनों चालोंमें सामान्यलोड आहि तीन लोडोंच मान, तिर्यम्होक्ते संस्थातगुणा तथा मगुण्यसेत्रते सर्वस्थातगुणा क्षेत्र स्पर्ध

उक्त भीवोंने निर्यंग्होकसे संख्यातगुष्म क्षेत्र स्पर्ध किया है, यह कैसे जाना ?

दिवादेन स्थाव(बार्यिक: सर्वेतीक: स्पृष्ट: | स. सि. १, ८.

उच्चदे- एदे पुदवीयो चेत्र अस्सिद्ग अच्छति । सन्त्रपुदवीयो च सचानुसार्गः पढमपुढवी साविरंगएगरज्जुरुंदा [१]। विदियपुढवी छहि सनभागेहि समईरसम्ब रुंदा रिहे । तदियपुढवी पंच-सत्तभागाहिय वे रज्जुरुंदा रिहे । चडत्वपुद्धी नर्गः सचमागाहिय-तिष्णिरञ्जुरुँदा 🖫 । पंचमपुढवी तिष्णिसनभागाहिय नवांगिःहर् १३ । छहपुदवी वे-सचमागाहियपंचरज्बुरुंदा | ५३ । सत्तमपुदवी व्यानवकार्याः छरज्जुरुंदा हि । अङ्कमपुद्रवी सादिरेयएगरज्जुरुंदा । पडमपुद्रविवाहष्टं अमीदिसः हियजोयणलक्षपमाणं होदि १८००० । विदियपुढवी वर्षः के व्यवस्था २२००० । तदियपुरवी अहानीसजायणसहस्सवाहल्ला २८०००। चउत्यपुरवी चार जीयणसङ्स्मग्रहल्ला २४००० । पंचमपुदवी वीसजीयणसङ्स्मग्रहला २००॥ ण्डपुदनी सोलमजोयणसहस्सनाहल्ला १६०००। सचमपुदनी अङ्गनोयणसहस्तार ८०००। अहमपुरवी अहजोयणबाहल्ला ८। एदाओ अहपुरवीभी कार् तिरियलोगबाहरूलादो संखेळागुणबाहरूलं जगपदरं होदि । मार्गणतिय-उपशर्दाः समाधान - व बादर पृथिवीकायिक सादि जीव पृथिवियाना ही साधर रहते हैं। और सभी पृथिवियां सात राजुपमाण आवत हैं। प्रथम पृथियी साधिक ए थोड़ी है (१)। दितीय पृथियी छर बटे सात आगोंसे अधिक वक रातु वीड़ी है (१) वर्गाय पृथियो पांच बडे सात मार्गोले अधिक दो राजु बीड़ी दे (२३)। धीवी पृ^{धी} यटे सात मागोंसे मधिक सीन राजु चीड़ी है (३४)। पांचवी पृथिवी तीन वडे सार श्रीधक चार राष्ट्र चीड़ी है (१६)। छत्री पृथियी वो बढे सात मागींत गांधक पांच हाई दै (५))। सातर्यो पृथियी एक यटे सात भागसे अधिक छइ राजु धीरी हैं(। व्यवसी वृथियी कुछ मधिक यह रामु बीही है (१)। मधम वृथियोही है। सं सारती दत्तार योजन प्रमाण है। १८०००)। जिलीय पृथियी बसोल हजार योजन (३२०२०)। तृतीय पृथियी अट्टाईस हज्ञार योजन मोटी है (२८००) नौर्था पृथियी है हमार यो अन मार्टा ई (२४०००)। पांचर्य पृथियी वीग हमार यो छन मोरी है (१४०००) Gटी पृथित्री सोल्ड हजार योजन मोटी है (१६०००)। सानवाँ पृथित्री सोह हार है मारी है (२०००)। ब टर्स पृथियी अ ट योजन में टी दै (८)। इन भारी पृथियी अह

भनेराशास्त स्थापित वस्तेपर तिर्पेश्यक्ति बाहरूपत संन्यातमुखा बाहरूपप्रमाण हाता है (तहां पू ०१) इसलिय उन्त जीवीना स्थानमुखा पादराज्यात्री मारकार-विकास मान भीर उपचादपत्परिकाम उन्त जीयोन भूम, भविष्य भेगाँ

वादाणावववश्वमाणावा वाक्यामा माववः । अवः वाव्यवः । वादरि वेउच्चियपरिणदेहि बुद्धमाणकाले प्रवण्हं लोगाणमानेवेखदिमागो, तीदे तिण्हे वादाणाग्दवहमाणकाल्मु सञ्चलोगो पोसिदो । इदो १ तस्तदावचादो । वैऊणं पुरविभंगो होगाजमसंसेअदिभागो, विरियलोगस्स संसेअदिभागो। वं जधा- वेउकारमा पजाचा पेत्र पेउन्वियसरीतं उहार्वेति, अवज्ञतेमु तदमाता। ते च पज्ञचाकम्मभूमीसु चेत्र हाँति वि। संपद्दपन्त्रद्परमागलेलं जगपदरे गर्दे विरियलीगस्त संराज्ञदिमागी है।दि ति । अधना भारततज्ञाह्यपञ्जचा सम्मभूमीए उपाणा बाउसंबंधेण संखेननज्ञायणबाहरू तिरियपदर्र विद्याण राज्याम् १९०५ण । व नाव्य स्वारमण्याच्या एववास्थामः पर्यवास्थामः पर्यवास्थामः पर्यवास्याः पर्यवास्याः व इत्तेत्रकास्याः बादरपुद्धविद्यां, बादरपुद्धविक्रस्या इव बादरतेत्रकास्याः व सब्बपुद्धविद्याः न्दराजनात्त्रः मान्द्रज्ञानमाम् नाद्रश्चणात्रमाद्रमः वत्र मान्द्रपण्याद्रमः वत्र जन्मजनमास् राष्ट्रिति सि । यांवरि वेडिव्ययदस्य तेडकाद्दयवडिव्ययदसंयो । वाडकादयाणं तीदाणाः कालेस नेउकारपाण भेगो । णवरि वेउन्धियस्त बङ्कमाणकाले माणुसखेचगद्दिसती ण गुजादि । अदीदकाले बेउण्यिपारिणदेहि बाउकादपहि विन्हं छोमाणं संखेजजिदमागो, पोर्हिनो असंस्वज्जायुगी पासिदो । सत्याण-वेदण-कसायपरिणदेहि बारस्वाउकारपहि मों बाहों में सर्पतीय स्पर्श किया है, बर्गोक, उनका यह स्परीवसेत्र स्वायसे हैं। है। १४कः वाचाका रचधान्त्रत्व शुच्चारमाञ्चल जावाक राजान जामना जाहरू । व्यवाद चात हेः धिहै,विकतमुद्यातपद्यरिणतः क्षतिहाविकः जीवीने वर्तमानकात्त्रते पांची महारके च परनाप कराद्वसारा पर्वभारमात काम काम का प्राप्त वासान काल प्राप्त साम समारक असंत्यातवां माम तथा भूतकालमें सामान्यतोक साहि तीन लोकोका असंक्यातमां र तिर्वेग्लोकका संक्यातमां भाग राश्चे हिया है। यह इस प्रकारते हैं-प्रकारिक प्रयोग जीव ही विजितिक वरिएको उत्तरम् करते हैं, वर्षोके, अवयात inventur, प्रथात जाय है। भारतक काराध्यत व्यवस्त करत है, स्थाक, स्वयस्त केरिक हार्यर के दिल्हा हालेका झामार है। और से प्रयोग और कार्यस्त भीवध्वाहारक वापन करन्या शामका नामाव द । ज्यार व प्रथान जाव कम्पूर्यक्र इसिलेस् स्वयम्प्रमाप्तके प्रधानयमें श्रेषको जामसरक्यसे करनेपर निर्दे स्पातयो मान दोता दे । स्रथम कर्मभूमिम जन्म हुए बादर तेजस्कायिक प्रपत्ति प्पाचन मान दाता द । जनना क्रमणूनम अपन हुए बादर ताजरकावक प्रवास सरकारते सर्वातकालमें संच्यात वोज्ञम बाहरवराले सर्वे तिर्वकृत्वतरको स्वास

प्रहरत है, यहा अर्थ प्रदेश करतेपर तियोशोकका संस्थातका भाग ही होता । वरत ६, वर्षा वर्ष भद्र वर्षप्रभट् १०४०००० चर्षात्वा वास्त्र वाद्र शिववीद्याविद्य जीविद्य व्यक्तिके नररायकः जायाकः रप्यापदान चान्त् प्राच्याच्याच्या जायाक रप्याच्याच्या कि, सद्दर दृष्टिर्वीकार्यिक जीयाँ हे समान कोक्ट् नेजक्कायिक जीय भी समी ते हैं। बिरोप बात यह है कि विक्रियकपट्टा स्वाम तेवस्थापक जाय था सथा त्व । १४६१४ थात ४६ है कि वाकावकावकावका वाकावकावक जावाक समाम जामना चाहिए। वायुकाविक जीवोका स्वर्धनसेत्र भनीत और लवान जानना चाहिए। धायुणायक जायाका रपरानद्दत्र अनात जार तेष्ठरुक्तिः जीपोक्ते लमान है। विरोध वात यह है कि पर्वमानकास्त्रमें प्रवच्यापक व्यापक रामात्र व । प्रवच्या यो क व क प्रवचनकारक मध्यप्रदेशात विदेशमा नहीं आभी आनी है। स्वीतहालमें प्रक्रियहण्डू-भुपुंच्यात् । विभागमा वद्याः कामा कामा द्याः वाभावकावकः वास्वपस्परः । शहः प्रोवति सामाश्रद्धारः सादि तीते सामाना सम्बद्धातकां सामा सीर प्तः ज्ञाबान सामान्यकाम् बाद् तान काकारा स्वच्यातवा भाग कार तथालार, इत दोनो लोगोंसे असंस्थातामा क्षेत्र स्वयो हिसा है। सस्यान-र क्रायसमुद्रातपरिणत बाहरबायुद्धाविक श्रीयोत श्रेतील, धनायत श्रीर

छक्खंडागमे जीवराण

तीदाणागदनहमाणकालेस तिण्हं लोगाणं संखेजजदिमागा दोलोगेहितो अस्तान्त्र फोसिदो । वेउन्वियपदस्स बहुमाणकाले खेत्तमंगो। तीदे काले वेउन्वियपदस्स सउम्ब चेउव्यियमंगो । मार्गितिय-उत्रवादपरिणदेहि बादरवाउकाहएहि सञ्चलोगो पोनिरो। सं भादरवाउकाइयअपज्जनाणं । णवरि वेउव्वियपदं णतिय । सुहुमतेउकाइयसुहुमवाज्वर तेसि पज्जत्त-अपज्जत्तएहि य सत्याण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि कि गदवद्दमाणकालेसु सञ्चलोगो पोसिदो । बादरपुढविकाइय-वादरआउकाइय-वादरतेउकाइय-वादरवणपरि

[1, 8, 7

काइयपत्तेयसरीरपञ्जत्तएहि केवडियं खेतं पोसिदं, होगसा अंते ज्जदिभागो ॥ ६७ ॥

प्रस्त सुचस्स अत्यो जघा खेचाणिओगहारे उची तथा वचनो।

सव्यलेगो वा ॥ ६८ ॥

पत्य ताव ' वा ' सद्हो अधेद- बादरपुढविकाइयपज्जत-बादरआउमारगा षादरणिगोदपदिहिदपज्जचएहि य सत्याण-वेदण-कसायपरिणदेहि विण्हं होगावनी

यनमान, इन तीनों कालोंने सामान्यलोक सादि तीन लोकोंका संख्यातया भाग भीर हरी

छोत्र तथा तिर्धे छोत्र, इन दीनों छोत्रांसे असंक्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। विनिधित बानपदका रपद्यानक्षेत्र धर्नमानकालमें क्षेत्रमरूपपाके समान है। मतीतकारमें वैशिविकर डातपहरा रखानक्षेत्र पायुकायिक जीवोंके धिकियकपट्के स्पर्शनक समात है। मार्गाली खमुद्धान और उपपादपद्मित वादरवायुकायिक जीवाने सर्वलोक दर्शा दिया है। है प्रकारसे बादरवायुकायिक अपर्यास जीयोका स्पर्धांन जानमा चाहिय। विशेष मान मा दनेश बीरिविकसमुद्धातपद महीं होता है। सम्यानम्बस्थान, पेदना, क्याप, मार्गानिकी दान भीर क्यागाइपद्पश्चित श्वम तेजस्थाधिक, स्वम वायुकायिक भीर उनके वर्षात्र मपर्यात जीवाने वर्तात, बनागत भीर वर्तमान, इन तीनो बालामें तर्पतीक गरी दिना

बादर पृथियीकायिक, बादर अपकायिक, बादर तेत्रसमयिक भी हाँ बनस्यतिकाविकप्रत्येकप्रशिर पर्यात जीवोंने हिनना धेत्र स्पर्ध हिमा है। होर बर्मस्यात्वां माग स्वर्धं किया है ॥ ६७ ॥ इम गुषका वर्ष जैमा क्षेत्रानुषोगजारमें कहा गया है, उसी प्रकारते बर्ग हैं।

टन्ट बीवीन अर्रात और अनामनकालकी अवेथा मर्पनेक रार्च किया है। यहाँवन वा शास्त्रका अर्थे बहुते हैं — अध्यातमध्यात, वेश्वा और वर वार्यान र्याचन बाहर वृध्यतीकाविक वर्षात्र, बाहर जलकाविक वर्षात्र भार कर्मानिका

स्रोदेमामा, निरिपहोमादी संगेअगुणो, माणुनगेचादी असंतेक्जगुणी पीसिदी। मारणंतिय-. उददादपरिणदेष्टि मध्यनीको प्रतिनदेश । बादरवणकारकायपप्रधेयस्विश्यत्रचयदि य सत्याण-, परण-समापपरिणदेहि तिण्यं लोगाणममेग्रेज्जदिशामो, विरियलोगस्य संरोजदिशामो । कि कारणे ? सप्यप्रदर्शेश बादरवणकादिकाह्यवर्षेपसरीरवञ्चला णत्य, 'विचाय उपरिममागे पेर अन्यि ' वि आइरियचगणादी । अध्या, वर्षेयसरीरवञ्चना तिरियलोगादी संसेडज्युचे रोनं प्रमंति । प्रदे। १ पार्राणिगोदपदिष्ट्रियन्त्रचाणं विधिकांगादी संरोज्जगुणपीसगसेष-व्ययगमारो । ला च वर्षेपसरीरपञ्जाचनदिशिचवादरविगोदपदिष्टिदपञ्जाचा अतिय । ' बाटाणिगोटपरिहिटा सच्छे पर्श्वेषसभीश चेत्रेति कर्छ बच्छेट हैं

मीन जोणीभूदे जीवी वसमह सी व अध्यो वा । थे वि व मनादीना ते प्रतेया प्रस्माए ॥ १६ ॥

इदि गुलवपवादी गुण्यदे ।

एर्णात जीवीने मामाम्यलोक आदि तीन होकाँका असंव्यातवां माय, तियाहोकसे संबदात-शवा भीर मानुवसेत्रसे असंस्थातगुणा सेव स्पर्श किया है। मारपालिकसमुद्धात की क्रपादपद्रपरिणत जीवान सर्व छोड कार्रा किया है। सस्यानसस्थान, पेर्ना और क्यान-स्ताडातपरपरिणत बाद्द धनस्यतिकाविकश्लोकप्रारीर प्रयास जीवीने सामान्यद्योक कार्न शीन द्रोपीया वसंवयानयो माग और तिर्पन्होदका संस्थातयां माग श्राही दिया है।

श्रीका-बाइर यनस्पतिकाविकारशेकदारीर पर्याप्त श्रीवीके तिर्यास्त्रीक क्रिकार . भागमात्र स्पर्धानकेत्र होनेबा वया बारण है है

समाधान-सर्व पृथिवियामें बात्रस्यनस्यतिकायिकमस्येकसारीर प्रयोज्यान होते हैं, प्यांकि, 'वित्रापृधिशंके उपरिम भागमें ही बाव्रयनस्यतिकारकान्यानिक वर्णान और होते हैं रे दस वहार सामावीका वयत है।

कार्य हात है है। महार पानाना का निर्माण है। संक्यातगुण होहही हन है अध्या, मत्यानारा चार्यात कार्याचा तिर्येग्लोकसे संकरत्या चार्येश क्याति, बार्रानेणात्माणका दर्षाहार दिया गया है। तथा प्रयोद्यारीर वर्षाया आधादो छोद्दर रहाल्यान्य ह्याकार क्षत्य गया द । चया आँव नहीं होते हैं । इसकिय उनका क्यानिक मार्थिक वर्ष संबदातगुणा यन जाता है।

र्शका --- बाइरानगोदभतिष्ठित औय सभी प्रत्येक दारीसिंदी 💬 दे 🗺 दूस क्राफ्ट समाधान — 'यानीमृत वीजाम बटी पूर्व पर्याववाटा ईड क्यार क्यार हुक्या है शाय प्रथमण करता है। और जो बाज मुलादिक बाद्यरेर्ट्टिन करता क कीय है थे तब प्रथम अवस्थामें प्रत्येकदारीए ही होते हैं हु का इस समयमनस जाना जाता है कि वाइरानिगोहर के हर करते

द्वा होते हैं।

[1, 1, ...

पादरणिगोदपदिद्विदयज्ञत्ता सन्त्रासु पुढवीसु अत्य ति कथ पन्तरे । सन्त्रस् विज्ञमाणपुरविकाह्यपज्ञचपोसणेण सह एगचेणुवदिष्टअसंखेज्जाणि विरियपराणि 🕅 वक्ताणनयणादो णव्यदे। तम्हा पत्तेयसरीरपञ्जतेहि पोसिदखेत्रेण तिरियहोगारो हेर्न गुणेण होदय्यमिदि । जधा पचेयसरीरवणप्कदिकाइयपञ्जचा सव्यास पुरर्गनु हि तथा बादरआउकाइयपज्जेचेहि वि सन्वासु पुढवीसु होदव्वं । अधवा बादक्षिणेदिः द्विदपञ्जत्तपत्तेगसरीरा चेत्र सञ्जयुद्धतीसु होति । वादरिणगीदाणमजीणीभृद्रवेतगरिः पज्जता चित्ताए उत्ररिममागे चेत्र होति चि कड्डु वाद्ररवणफदिकाइयपवेपसांता पादरणिगोदाणमञोणीभृदे चेव घेचूण तिरियलोगस्स संखेजनदिमागो वि देवनी मारणंतिय-उपवादपरिणदेहि सञ्चलोगो पोसिदो। एवं बादरतेउकाइयपज्जनाणं दि स्वर्म णवरि वेउध्वियस्स तिरियलोगस्स संखेजज्ञिदभागो वच्यो।

वादरवाउपज्ञत्तएहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, लोगसा संवे^{ह्नारि} भागो ॥ ६९ ॥

र्चका-चादरनिगोदमातिष्ठित पर्याप्त जीव सर्व पृथिवियाँ में होते हैं, यह कैसे अन समापान- 'सर्थ पृथिविवाँमें विश्वमान पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवाँहे हार्छ में साय प्रत्यक्षे उपदिष्ट असंख्यात तिर्वक् प्रतरप्रमाण स्पर्धनिक्षेत्र होना है हा हर्न व्याच्यात्मयस्यनेस आना आता है कि बाइरनियोदमनिष्ठित वर्षात् और सर्थ पृथितिर्यं

द्दोंने हैं।

इसलिए प्रत्येकदारीर पर्याप्त जीवोंसे स्टूए क्षेत्र निर्यस्तीकते संक्रातपुता वि चाहिय । जिम प्रकारस प्रत्येकप्राद्दीर यनस्यतिकायिक पर्याप्त जीव सभी पृथिवियाँ । है, बसी प्रदारत बादर जलकारिक पर्यान जीन भी सभी पृथिषियों होता वाहिए। बादरीनगादमानिष्टन वर्षान्त अवेदारादिरबाले औव ही सर्व वृत्विविधी होते हैं। हर्त निर्माद के बयोतीमून प्रत्येक शारित वर्षात्व जीव विज्ञा वृधिक्षेत्र जाएँ होती. इंग्रिटर बाहर निर्माहोंके अधानीमृत बाहरवनस्पतिकायिकमणेकासीर और है। हत कारक अर्थान् । अथानामून बादरवनस्यतिकायिकम्यकारीर अप कारक अर्थान् उनकी बादर विद्यालया । अर्थनाम्य आप होना है 'वेसा अर्थ मान व्यादियः मारणान्तिकसमुद्धान और क्ष्याद्यद्यारणन जीवीन सर्व श्रीक स्पर्ध हिना है। महारस बाहर नेमावारिक पर्यांक्त जीवींका भी स्वर्धानस्थ बहुता बाहिए। विकास बहु है कि तम्बर्धारक पर्योंका जीवींका भी स्वर्धानस्थ बहुता बाहिए। विकास बर है कि वेहरकारिक प्रधान जीवीका भी क्यर्रानक्षेत्र करता बाहिए। सि सम्बद्धिक वेहरकारिक प्रधाने वैकियिकसमुद्धान पक्ता क्यर्रानक्षेत्र निर्धाटीका सम्बद्धा स्मा होता है, ऐसा बहना बादिए।

बादरमानुकाषिक पर्यान्त जीवीने कितना क्षेत्र स्वर्ध किया है। होडी र्देणपादची माग स्वर्ध किया है ॥ ६९ ॥

प्टरस सुवरस अत्यो जापा सेवाविजोगद्दो उची वया यवन्त्री, बद्दमावकाल-मस्मिट्ण द्विद्वारे ।

सन्बद्धोगी वा ॥ ७० ॥

सत्याणसत्याण-वेदण-कसाय-वेडिज्यपरिणदेहि तिर्ण्ड लेगाणं संखेडजिदमागो, दोलोगेहितो असंखेडजगुणो पोसिदो। मारणंतिय-उवबाटपरपरिणदेहि सन्वलोगो फोसिदो।

वणफ़रिकाइपणिगोदजीवबादरसुहुम-पज्ञतः अपन्जत्तएहि केव-डियं सेतं पोसिदं, सब्बटोगो ॥ ७१ ॥

यणप्तिः सायागियोदभीवगृहमपज्ञम-अपज्ञप्तर्शः सस्थाण-वेदण-कराय-मार्गः-तिय-जदवादपरिवदेहि तिग्रः वि कालेग्रः सञ्चलोगो पोरादेशः । यादरवणप्तदिकादय-यादरिवरोदि-स्तिः पञ्जाम-अपज्ञापर्दिः सस्याण-वेदण-कसायपरिवोदेहि तिग्रः वि कालेग्रः

इस राष्ट्रका अर्थ जैसा क्षेत्रानुषोगगारमें कहा है, उसी प्रकारसे यहां पर कहना चाहिय, वर्षोक्ति, वर्तमानकासको माध्यय करके यह खूब स्थित है मर्यात् कहा गया है।

पादर बायुकापिक पर्याप्त जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा सर्वलोक स्पर्ध किया है ॥ ७० ॥

राखामस्त्यान, वेदना, कवाव धीर धिर्मियकसमुद्रातपरिवत वन अस्मित सोमायकोक मादि सोन लोकोंका संवयातको आप और अनुव्यत्योक सधा तिपालोक, इन सोमायकोक मादि सोन लोकोंका संवयातको आप और अप्रायमितकसमुद्यात और वपरादंपद-पारिकत कक भोवोंने सर्वलोक स्वयंतिकार है।

पनस्रिकः।पिक क्रीय, निगोद बीय, यनस्यिकः।पिक यादर बीय, यनस्यिकः
कायिकः ग्रास्त श्रीयः वनस्यिकः।पिक यादर वर्षाप्त बीय, यनस्यिकः।पिक यादर
अपर्योच्य जीय, वनस्यिकः।पिक ग्रास्त बीय, पनस्यिकः।पिक ग्रास्त अपर्याच्य
बीय, निगोद यादर पर्योच्य जीय, निगोद यादर अवशीक्ष बीय, निगोद ग्रास्त पर्योक्ष
बीय और निगोद ग्रास्त अवर्योक्ष बीयोने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ! सर्वेलोक स्पर्धे
क्रिया है ॥ १९ ।।

स्वरतात, बेदना, बनाव, मारणानिकसमुद्रात और उपवाद, इन वद्दोसे परिचत यत्रस्तिहरूपिक निर्माद जीव और उसके स्वस्न तथा वर्दीक और स्वर्गत आधित होते हैं कारोंमें सर्वेशेक स्वर्ग दिया है। बहस्यक, बेदना और क्यायस्त्रात्वरप्रदिशत बादर यत्र-स्तिकापिक, बादर निर्माद उसके पर्योप्त क्या अपर्योप्त आंभोने तिनों ही कारोंमें समाग्य-

विष्ट्रं होगाणमसंस्वजदिमागो, विरियहोगादो संस्वेजगुणो, माणुसस् पोसिदो । मारणीतिय-उननादपरिणदेहि तिसु नि कालेसु मध्यलोगो पे तसकाइय तसकाइयपञ्जत्तएसु मिच्छादिद्विषहुहि

केविल ति ओषं' ॥ ७२ ॥

वडमाणकालमदीदकालं च अस्तिद्ग जया औधन्हि सासणा कदा, तथा एत्य वि कादच्या। गयरि मिच्छादृष्टीणं पींचदियमिच्छादिहि

उनवादपदं मोन्ण अण्यत्य सच्चलीगचामावा । तसकाइयअपज्जताणं पीचिदियअपञ्जताणं भंगो ।

षड्माजकालमस्सिर्ण जघा पंचिदिषअपग्जनाणं परुवणा करा, यहमाणकालमस्मिर्ण परुवणा कादच्या। जधा अदीदकालमस्मिर्ण कमायबदेहि निग्हं सोमायमसंखेजिदिभागी, विश्यिसोमस्त संसेळदिभागी,

रोक मादि तीन सोकोका सर्वस्थानयां माग, नियम्होकले संक्यानगुणा भीर मांच्यानगुजा क्षेत्र स्वशं किया है। सारवास्तिकसमुद्रात शीर उपगाइपर त्रीपाने माना ही कालाम सर्वलोक स्पर्श किया है।

त्रमकाियक और त्रमकाियक पर्याप्त जीवोंमें निध्यारिट गुनहर बदोभिक्षेत्रन्तः गुणव्यान तक प्रत्येक गुणव्यानवर्गी अविका स्वर्णनभेत्र औ 11 50 113 बनेमानकाण भीर भनीतकालकी भाभय करके जैभी भीप स्परीत्रवस्ताम

क्षादि हुकस्थानों ही प्रकरणा की गई दें, उसी प्रकारने यहारत मी काना थार्दर कान यह है कि अग्रहारिक और जनकारिक पंचीत विध्यास्त्र अंताही स्ता चेतिन्द्रविश्वाहर्षि श्रीवीक मामन ज्ञानना साहिए, च्याहर, मारणाननसम्ब हराहरूद्वहा छोड्डन अन्यन अर्थान शेव पश्ची नवंत्राहरमाण नवश्नहावहा अन्य वसक्रायक सरस्यवयाम जीवीका स्वधनक्षेत्र वंपीत्रयनस्थात्व । इन व होहहा असम्बातको माग्र है ॥ ७३ ॥

बन्द्र नव, देवा बाध्य वृत्व विश्व प्रवासी पेनीट्य एएप्यापास अविति स महत्वता च. १९ ह टेब्स प्रचारम वट्टार प्रचारम वेचान्य संस्थावान प्राप्त कार्य स्टब्स हर के तथ करा करा करा करावश्व कर है। यनशामक एका भाषाप कर है है। जिल्ला हें इसन है वे न वा मान्यवंत्र स्व १९ वीन शाक्षाका स्वतं क्षाक्षाका । भाग मान्यवंत्र स्व १९ वीन शाक्षाका स्वतंत्र स्वतंत्राम स्वतं सार करणा

असंरोजज्ञाणो, मारणंतिय-उपनादपदेहि सन्गलोगो पोसिदो नि पंचिदिपानपज्ञामाणं पहला पदा, तथा एत्य वि कायच्या ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि पंचवनिजोगीष्ठ मिच्छादिद्वीहि केव-डियं सेतं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो'॥ ७८॥ एदं सुभं यहमाणकारामसिन्द्रण हिद्यिदि एदस्य पहन्वणं कीरमाणे जथा खेमणि-संमातणहं परमणा कार्व्या ।

कोगरार संयमकः विज्ञानिकारिहु। व परवणा करा, तथा एरथ वि संदयुद्धितिस्सः अह चोद्सभागा देखणा, सन्नलोगो वा ॥ ७५ ॥

प्रमण प्रविज्ञानिहादिहाहि सत्याणसत्याणविणदेहि तिण्हं लोगाणमसंसे ण्डादेमामा, विस्वित्यसम् संवज्ञादेमामा, बाणुसलेशादो असंवज्ञानुगो पासिद्धी। ज्यावनाताः । ज्यावनात् । ज्यावनात् । ज्यावनाताः ज्यावनात् । ज्यावनात्र । ज्यावनात् भाग और अवादिवित बार्वच्यातम्या होत्र कार्य किया है, तथा बारवाविनकसमुदात और

साम भार अद्दाहरापस अल्ड्यानयुका सूत्र राश किया है, तथा आरचालिकास्यस्था जार वरपाइवर्षपरिवात अधिने सर्वलोक स्पर्ध किया है, इसमहारसे जैसी प्रवित्तितस्थाप्यवसीत जनवाहर हमारचा वाचार प्रकार करा । काम का रेसन मारस जान प्रवास्थानकर वाचा प्रवास्थानकर वाचा प्रवास्थानकर वाचा प्

योगमार्गणोकः अञ्चणद्रसं पांची मनोयोगी और पांची वचनयोगियोमं मिष्णदृष्टि विनि हितना क्षेत्र स्वर्ध किया है ? सोकका असंख्यातवा आग स्वर्ध किया है । पद तम बतामकालका माधव वरके विश्वत है, इसलिए इसकी महत्वा कलियर

ा बाजातुषात्वारक वाचा मनाचामा भार पाचा चयमवामा स्वन्याद्वार ज्ञावामा अवस्य महे है, वहीं प्रकारते यहां पर भी मंतुर्वि तिष्योहे खंगालमेहे तिए स्वसंभावस्य भावों मनोपोगी और पांचों बचनपोगी मिष्टवाहष्टि जीजोने अवीत और अनागत ी अवेशा हुछ बम आठ पटे चीदह माग और सर्वतोक स्वर्ध किया है ॥ ७५॥ ने अपना इठ फान जाठ वर्षा पुरुष नाम जार प्रवरणका रोज म्हण व ॥ ४०॥ संस्थानसस्यानपुरुषियत वांसी मनायामी और पांची बचनवामी मिरनाराष्ट्र

व्यवसायकार्या वर्षेत्राच्या वर्षेत्राच्या वर्षेत्राच्यात् । वर्षेत्राच्यां । वर्षेत्राच्यात् । वर्षेत्रच्यात् । वर्षेत् िष्यत्रका नामार्थानापुरा दान राजा । अस्ता १८०४ ०। अस्ता राजरण्यामध्यस्थाम साध्यस्थ । इत विधान ज्ञान करके करना चार्डिए। यह 'या 'शहरूके स्विनेत अर्थ है। विहार-

वागावरादन वाहवायनवा-गाँवाधावाद हें बढाव रवायनववद्याय अहां चत्रदेखवाणा वा देशोगा छहे. . 19 १, ८.

₹५६]

वेदण-कसाय-वेउन्त्रियपरिणदेहि अह चोहसमामा देखणा पोसिदा। पर **छ**क्षेद्धागमे जीवडाणी वेदालीयस्विहि छिष्णेममागो, अधोलोगं साद्धचउन्शीसस्विहि छिष्णेममागे मागूनसाद्वहारस स्त्रीहि छिणागमागा, णर-तिरियलोगहितो असंखेजनगुना चं उचे होदि। मारणंतियपदेण सन्वलागी वे।सिदो।

सासणसम्मादिहिषहुडि जान संजदासंजदा ओघं'॥

बहुमाणकालमस्सिद्ण जघा स्तेचाणिजागहारस जोगिह एरेपि च हानानं संचयदन्वणां करा, तथा एत्य वि निस्सतंमालणहे परवणा कार्याः विसनो । अर्शहकालमस्सिक्ष जधा वासणाणिश्रीमहारस्य श्रीपिह तीहाला

यनवश्यान, वेहना, बनाय भीर धैनितिवक्तपृत्विश्यत उत्ता त्रीयोंने हुछ बम भाउ हो (हैंर) माम कारों किये हैं, जो कि बनाकार सीककी बाहरें मागसे कम नेन तीन (करोंने विमन्त करने वर यक माग, अथवा संघोलोकको साहे घोणीस (१४)। विवक्त करने पर यह माग, मथवा ऊर्चनीकही बाउचे मागते कम नाहे आहार [[करों में दिनात करने पर यक मान अभाग होना है। अर्थान उक्त नीनें ही परनित्रीने

विषः छवे पर वहीं देशीन बाट शतु बमाण बा जाना है। उद्देशमा—(१) यनलोक-३४३ ÷ ३४३ ≈ ८१।तु.

(२) मधीलो हा- १९६ ÷ ४९, = ८ शतुः.

(1) प्रखेलेड-१४३ - १४३ = ८ शतुः

इन्त्रकार नामान्यांक धादि नीम छोड़ीका नंबवायनी दाम भीर मानंदरी विष्टेश्टरे हमें अन्यकानगुणां के ब व्यव्ये हिया है। मारणानिवय्ययां ताम भार नरणां . व्यव्ये विक्र के

रामाप्रमामगर्हार्षः गुणानाममे लेखा भंवनागंवतः गुणानाम तदः वनंदर्गः क्षान्दर्भे दृश्यो समीर्यामी बाह वाची क्षान्यामयव गुणलान प्रक्र हे तह £ . 31 1

है नुक्त कर है । साथाय हर है ही। क्षेत्र नुपालग्रारक भाषा वृत्र बारी हुबबारी हो को कर है । स्वास्त्र के स्वास् चन्त्रान्य । त्या के त्या के त्या कार्य केती अंत्र नृपातप्रात्य भाषा इत वारी तृबकः चरता च १८५ व्या अवात्य पहा पत्र भी त्यापप्रीत भीतात्रव । त्या वात्रवी चरता च १८५ व्या । the contrate of the state was a state of

, एरेरि चर्गुमहाणशेरेरि छुवनेतवस्त्रवा करा, तथा एन्य वि कार्वा, विसंसाभावा । णशेरि सानणगरमारिहि-अमेनदसरमारिहिणु उदबादेश वास्ति, उदबादेण पंचममन्त्रिय-जेलालं सदश्यरहालस्त्रस्यभिरेतहा ।

पमतसंजदणहुि जाव सर्जागिकेवलीहि केवडियं सेतं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिगागो' ॥ ७७ ॥

एर्सिमहर्षः गुणहापाणं ज्ञघा पेत्रमानिज्ञेताहारस्य जोपनिह तिन्ति काले ज्ञित्तर्य परुपता करः, तथा एरच वि कादणा । जादि एवं, तो सुने जोपनिहि किष्ण पर्रादे १ ण, तथा पर्ययाण कायज्ञेताविकाताविकानित्यज्ञित्ववहत्तमुग्वाहरेखपाहिसेह-मन्त्रवादा ।

वर्ग श्रीवॉत रप्रशिन रेक्क्सी प्रकण्या की गर्द है, उसी प्रकारते यहां पर भी करता चाहिए, चर्चोक, उसमें कोर्द विशेष्ता नहीं है। विशेष बात यह है कि खासारत्रसम्परहि और अस्त्रसम्परहिट्योंने उपयापन नहीं होता है, चर्चोंक, उपयापक साथ पीवी महोचोग आर पीवी वयनपार्गेका सहानवश्यानवस्त्य विशेष है, अर्थात् उपयास्में कक योग संमय नहीं हैं।

प्रमण्डंपर गुणस्थानमे छेकर सयोगिकेनली गुणस्थान वक शलेक गुणस्थानवर्धी उत्त. श्रीशेंने किनना क्षेत्र स्पर्ध किया है है लोकका असंस्थावर्श माग स्पर्ध किया है।। ७७ ॥

इन मार्डो गुणस्यानंत्री स्पर्धानायुगेणदारके भोषमें तीनों कार्लोका भाषय करके जैसी स्पर्धनयक्त्यम की गर्दे है, उसी बकारसे यहां पर भी करना खादिय।

र्द्यम् —पदि देमा है, तो स्वर्मे ' श्रोव ' देखा वह क्यों नहीं कहा है समापान — नहीं, क्योंक, उस प्रकारकी प्रकाश कायगोगके जीवनामांथी संवीतिः

केयशीचे बार्री प्रकारके समुद्रातक्षेत्रके प्रतिवेध करतेके छिए है।

त्रियोपी - यदि धनमें ' कसंखेजनिद्यामो ' पदके स्थान पर ' कोपं ' यसा पह दिया जाता हो केवत मनीयोगी कीट चयनयानियोगा स्पर्यत्नेत्रेत्र बताते समय, जो तेयत साययामे निमित्ते ही केवलीके समुद्धान होता है जिसका कि स्पर्यत्तेत्र होतका सक्तंत्रपतियां भाग, अर्थस्यात वहुमाव और चर्चलेक है, उक्का मिलोप नहीं हो पाता, भर्यात् मोन्द्रप्रतियं भाग, अर्थस्यात वहुमाव और चर्चलेक है, उक्का मिलोप नहीं हो पाता, भर्यात् मोन्द्रप्रतिन उपस्थित हो जाता। उदी अनिवासके प्रतिवेशके लिए स्वर्थे ' ओर्थ ' पद न देवर ' अर्थलेजनिद्यामो ' पद दिवा है। कायजोगीसु मिच्छादिट्टी ओघं ॥ ७८ ॥

सरयाजसस्याज-चेद्भ-कसाय-चेडन्विय-मारणैतिय-उववादपरि**णर्कावकेलिक** रिद्वीनं तिसु वि कालेसु सन्वलोगनुवलंगारो, विहास्वदिसत्याण-वेउन्यिपरेषि पान काले विच्दं सामानमसंसेआदिमामचेषा, निरियलोगस्य संसेआदिमामचेत्र, कार्यके अमेलेज्बदिगुनचेन; अदीदकाले अहु-नोदसमामचेम च तत्लनुबर्लमारी, सुने 齢 निदि उसे ।

सासणसम्मादिहिष्पहुडि जाव सीणकसायवीदरागण्डुन

ओर्च ॥ ७९ ॥

ष्ट्रेमिमेहारमण्टं गुणहाणाणं तिनिहं कालमस्मिद्य सत्याणादिवहानं का बीत्रकाचे पेत्ममागिभोगरारोपन्डि जमा निविहकालमस्सिद्ग एकारवर्ष प्रकास म चना दितमत्त्रात कहा, तथा काइण्याः गरिय परय कोति तिसेशी !

सजोगिकेयही ओधं ॥ ८० ॥

कानयंशियोंने निक्षारिक जीगेका स्वर्धनश्चेत्र त्रोपके समान सर्वत्रोह है।।अर्ध क्ष्यक्षणावक्षक्षात्, धेनुना, क्षणाय, धेकियक, मारणान्तिकरामुद्यान भीर स्थान बर्च रूप क वर्षेणी विश्वादित श्रीवींका श्राप्तिक स्त्रीं ही सामित सर्वेक वाना म है। इंटरून्न्य क्या कारण और वैशियस्य द्यारीलाम समा सा सामाना साम कर्णय जीन करणे के अर्थन्यात है सामन । कर्णय जीन करणे के अर्थन्यात है सामने, निर्येग्लोक संनयत मानने, और हा प्रकार करकाममूर्व केवडी आंत्रा, मंगा मनीमकालमें बाद बंद बीदद (१) बानका क्तर्र बले कृत्यमा मार्ड आती है, इसलिए सुचमें "भाम" देसा वह बहा है।

सन्माद्व सम्यान्त्रीय गुणस्यानम् स्टेकाः शीणक्यायशीतगामध्यस्य गुणमानं सं

कार्वेड सुक्त्यानवर्ती वाययामी जीशेंदा शार्थनवेत्र जीपके समान है।। ७,॥ हर महार मुख्यमानीं ही मीनी कारी ही आधार करके स्वत्यामारि वाँ ही प्रवर्ण (क्ष्मानिक मुख्यमानीं ही मीनी कारी ही आधार करके स्वत्यामारि वाँ ही प्रवर्ण कर्ने पर क्योनानुपानपुणके क्षेत्रमें जिल्ला प्राप्ता व्यापन करके व्यवस्थानार पा कुणन्यानीयो स्वयास्त्राति व्यवस्थानीय प्रवास्त्र मीती वाणीया प्राप्त कर्मा है कुणा प्रवासी मार्ग है कुणा प्रवासी प्रवासी क्षेत्र है कुणी प्रवासी मार्ग है कुणा प्रवासी क्षेत्र है कुणी प्रवासी मार्ग है कुणा प्रवासी क्षेत्र है कि प्रवासी कि प्र बरारा बार्परण, करोर्ड, बहुर नर करी विशेषका नहीं है ।

कार्यसम्बद्धाः स्थापना नदा व । कार्यसम्बद्धाः स्थापना नदा व । स्थापना
बाब, बस्परात बहुबाम बीत मुहेरीहाहै ॥ ८० ॥

पदस्य ग्रमस्य प्रमारंभी किंग्नजो १ ण, सञ्चोभिन्नेनलि-चमारिसग्रमादा काय-जोगानिणामानिणो भि मदमेहानिज्ञणान्योहणकलमादो । एमजोमं कार्ण जोण्मिद् उसे जामावणात्मावणात्म व्यापनात्मी वि चहुक् समुम्पादाणमात्मितं गरिन्छन्त्रदे थे, म प्त होती, जोपमिट्ट जर्च हमाणि पदाणि जरिप, हमाणि च णिय मि (ण) णव्यद् । जाणि प्रमंति पदाणि तेति पहलवाजी जीपपहलवाप तृष्टा वि एवियमेचं चेव णव्यदे । तेण पुत्र सुवारमी कावजीमीहरू चडिनहत्तमुग्यादाणमस्यिववदुष्पायणकले वि ।

ओराहियकायजोगीसु मिन्छादिष्टी ओर्घ ॥ ८१ ॥ दरम्हिचयरवणाय् ओष्षं जन्त्रदे । पञ्जनाहिचयरवणाय् पुण ्ओषणं णिर्धः आरातियवारो विरुद्धे विहारचेविच्ययदाणमङ्क-पोहस्मामचाणुन्दमाहो । तही एस जाराराज्यवास् विद्न सरवाणुसस्याण-वेद्वण-कताय-मारणीविषयरिणदेहि विद्व विकासम् भद्भवन्या कारत् - वर्षाम्यार्याम्यवर्षाम्यायम्यारमायम्यारम्यारम्यायम्यारम्यायम्यारम्यायम्यारम्यायम्यारम्यायम्य सम्बलामो सोतिदो । उदबादो मास्यि, होम्ह्रं सहायवहायमस्यायस्यारम्यास्य

र्हका - इस समके पृथद भारत्म करमेका क्या फल है ? चमापान — देखा नहीं बहुना, क्योंकि, स्वयोगिकेवलीमें वृंड, क्वाहादि बारों सम द्वात कापवामक नापवामक। वात के, केंद्र वातका अनुस्थावा जनाका कान करात इस स्वका प्रयक्त निर्माण किया गया है, और यही स्वके प्रयक्त निर्माणका कान करात

पक्षा — प्रवास बार इस सम्बा यक वाग व्यवाय यक स्वास करक बाय . देता करने पूर भी बोयत्य मानवयातुक्वति काववोगी स्वोगिकेवलामें वक्कारणाविक पता करन पर आ भाषत्य अन्य यात्रप्रवादल काववाना वाधानकवलान वृत्रकाराहाह वारों समुद्रातों हा अस्तित्व जाना जाता है, किर पृथक एक निर्माणको क्या उपयोगिता है? समाधान वह होई दोच महीं, वर्षीक, क्षीय में देस हदवर भी से अमुक संभाषान - पद कार वाप लहा, प्रधाक, न्याव - पसा कहनपर आ प न्याक पद होते हैं, और ये महाक एह नहीं होते हैं, पेसा, विदोध नहीं जाना जाता है। किन्त प्रवासम् पत्र वात वर्रणात् प्रमान पर्याका पर्याका का प्रचार वाच्य पहर सामा आता व सावन्य पह संसद है बनकी सहस्रवाद को समहत्रवाहे साम सासाव होती है, रतनासाव ही आता ता है। हसानेद प्रयह रहका आर्थ कायवोगी संदोशिकवनीन बारो कारवामाक हा जाना पुरुष्

भारताय भारतपारम् करणकम् भारतपारम् ॥ ॥ भौदारिककाययोगी भीवोमें मिष्पादिष्योका स्पर्धनसेत्र भोपके समान सर्वः हरवार्षिकत्ववशे प्रहरणामें तो भोषवना चाहित होता है, किन्तु वर्षावार्षेकतवहरे

हे प्याप्ति नवर करणात् वा व्यवस्त वाका कात्र व क्वाच्या प्राप्त हो कि वा प्रमुखायक विद्य करनेपर भिक्ष भाषणमा भारत कहा है। वाह है। वहां का अधारक, आदावरक्षकां भारत कर कर कर कर के स्वीवह हो है है है है है है से अह हुटे बीहह (है) आस नहीं परव्यस्थान भार पात्रापकः पद्मक रच्यानकः। सन व्यव वट व्यवह हुन्। साथ नहा ताता है। इससे वहाँपर अदमक्षणा की जाता है। स्वर्धानस्वस्थान, वेद्रमा, क्षाप पाता ६ । इसाल चढापर चडनकरणा का आता छ । चडच्यानवचरणान, घडना, कवाप रिचारितकरहरायिक भीहारिककरायोगी विस्पारित जीवाने सीवा है। कालों विभागकण्यपारचातः भारतारकण्यपानाः त्वर्थास्य जायान ताना हा कालास स्पर्ते किया है। यहांचर उपयास्पद् नहीं है, व्याक्तिः भीदारिकस्प्रथयोगः सीर र्थतः १६०० ६। प्रतापः वधमानुष्यः गहाः कः वधाः गान्। प्रकारकाव्यक्षाः वार इ. इत दोनोक्षां सहात्वस्थानस्थानस्था विरोध दे । यतीमानकाससे वीकेविकण्यपरिणा -चेउन्त्रियपरिणदेहि चदुण्डं स्रोगाणमसंखेअदिभागो, माणुसखेशादो अस्बेन्त्रगुणे केवि। सीदाणागदेस तिण्हं लोगाणं संसेडजदिमागा, दोलोगहिना असंतेजजगुना, बारकार चेउन्वियकोसणस्स पाघण्णविवक्खाए । विहारपरिणदेहि औरालियकायज्ञांभिन्जादिश 'बट्टमाणकाले तिण्डं लोगाणमसंग्रेज्जदिमागा, तिरियलोगस्य संवेज्जदिमागा, अनुसन्त्रकी असंखेजजगुणी पोसिदो । तीदाणागदकालमु निण्डं लोगाणमसंखेजजदिमागो, तिरिक्तेमह संखेळदिभागा, अहाइज्जादी असंखेज्जगुणी पेसिदी।

.सासणसम्मादिद्वीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, होगसः असंकेजी भागो ॥ ८२ ॥

एदस्स बहमाणकालसंबंधिसुचस्स खेचाणित्रोगहारे औरालियकायबीगिमान : सत्तरसेव परूपणा कादण्या I

सत्त चोइसभागा वा देसूणा ॥ ८३ ॥

सस्याणसस्याण-विहारवदिसस्याण-वेदण-ऋसाय-वेउध्वयपरिणदेहि साम्बण्या

क्त जीवोंने सामान्यछोक आदि चार छोकोंका असंव्यातयां भाग, और मतुन्यहेल असंस्थातगुणा क्षेत्र स्पन्न किया है। अतीत और अनागत, इन दोना काटाँमें सामानक भावि तीन डोकोका संद्यावयां माग, और मरछोक तथा तिर्पछोका हन दोना हो असंस्थातगुणा क्षेत्र रुपर्य किया है, क्योंकि, यहाँ पर यायुकायिक जीवाँके क्षेत्रिक्त साकची स्पर्शनक्षेत्रकी प्रधानतासे विवक्षा की गई है। विहारपास्यस्थानपहसे तीर्ण - श्रीदारिककाययोगी मिध्यादृष्टि जीवांने यतमानकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोक • असंक्यात्वयां भाग, तिर्थेन्छोकका संक्यात्वां भाग और अदार्रश्रीपते असंक्यान्या है स्परी किया है। उन्हों श्रीयोन स्वशतका साम कोर खड़ाइद्वापस सम्बन्धा । स्परी किया है। उन्हों श्रीयोन स्वतिकाल और अनायतकालम सामान्यलेक साहि होत्तीका सर्वस्यातयां भाग, तिर्यग्डीकका संस्थातयां भाग और अवृद्धिंगते सर्वशानुव . क्षेत्र स्पर्श किया है।

औदारिककाययोगी साम्रादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किंग र

'स्रोकका असंख्यातवां माग स्पर्ध किया है ॥ ८२॥ इस वर्तमानकालसम्बन्धी स्वर्की क्षेत्रानुयोगद्वारमें कहे गये श्रीदारिकार्यने सासान्तसम्बन्धियाँ के क्षेत्रमहत्या करनेवाठे स्वते समान स्पर्शनमहत्या हता वाति।

उक्त जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा इंड कम सात हो कीर भाग स्पर्ध किये हैं ॥ ८३ ॥

स्परचानसस्यान, विद्वारयासस्यान, वेदना, कपाय और पेश्रिवेडर्पा^{त्री}

A 6 64.7 दिङ्गीदि निष्टं लोगायमसस्त्रेण्जादिमागो, निरियलोगस्य संदोज्जदिमागो, माणुसरोत्तादे षोसणाणुगमे बापजोगिषीसणएरूवणं असंतेकत्रमुची पासिदो। उवबादो णावि । शारणीतेयवरिवादेहि सम चोहसमामा देयणा पातिहा । केल ऊणा ? इमियनमारपुटबीए उपशिवसहल्लेण । सम्मामिन्छादिद्दीहि केवडियं सेतं पोसिदं, लोगस्स असंसेन्जिदिः भागो ॥ ८४ ॥ पदस्य ग्रम्स परमण सेवाविश्रोगदारोरातियकापनामामन्छादिद्विसुव-परुवणाल तेला । सत्याणसत्याण-विहारबदिसत्याण-वेदण-क्रमाय-वेउवित्रयरिणदेहि औरा-विषसम्माविद्धारिद्दीहि वीहाणागद्कालेसु विष्टं सोगाणमहरीन्त्रविद्यागो, तिरिपलोगस्स

वेंदिजादिमाना, अत्रुद्धरजादो अवत्वेरज्ञ्युणी पोतिदो । मारणीतिय-उववादा परिच । असंजदसम्मादिद्दीहि संजदासंजदेहि केवडियं सेतं पीसिदं, लोगस्त असंबेज्जदिभागो ॥ ८५ ॥ सासाइनलाचराष्ट्रियाँने सामान्यलोकः आदि तीन लोकोका असंक्यात्वयां आग, तिरंग्लोकका काराहर तक्ष्यां के हि आनुपहें इते अतंहरातगुवा हे व स्वरं किया है। इस अधिक उपवास प्रवाशिक्ष मां कार माध्रवस्थाल महत्त्वाच्या स्व रास क्ष्या व रहत वास्त्र अप्याव पद मही होता है। बारणानिकामस्यरियत वक्त बीवीने कुछ कम सात करे बीहर (गुरू) चंत्रा — पहांपर कुछ कमले किनना कव क्षेत्र लमझना खादिए !

समाधान-इपायानभार पृथि शंक उपरिम भागके बाह्रक्वयमाणले कुछ कम क्षेत्र समहाना चाहिए। औदारिककापयोगी सम्योगस्याद्दष्टि जीवीने कितना धेत्र स्पर्ध किया है ? शेदका असंख्यातवां भाग स्पर्ध किया है॥ ८४॥ इस स्टब्हों प्रस्पना सेनागुर्वागाहरमें यांनित औरगरिककायवोशी सागीमस्वाहिर इस स्वका प्रश्वणा संवाजवातहारम् वाका व्यवस्थानम् । इ. सेवहा वर्णतं करतेवाले सुवशे प्रहणको तुत्व हे स्वस्थानस्वस्थान् (वहारवस्वस्थानः त्र कार्यकात्र कार्याचार द्वारा महत्त्वात्र प्राप्त हार्यक द्वारामान्यस्थान व्यवस्थान । त्रा, क्राय क्षीर धेरियवयत्रचरियात् भीत्रारिकहाययोजो सस्यमिस्यारिट सीयोने मा, कार्य भार पानापक प्रदेशकाता भारता करण्यामा अस्य सामाध्यको क्षेत्र आहे. असे तीन लोकोका असंबद्धातयो भाग कारका राष्ट्राच्या भाग भार अधूरीकारका जायन्यास्थ्य राष्ट्र प्रस्था प्रथम वर्षे मार्चिमा सम्मित्त्वाहिष्ट असिंह मारणानिहस्सम्बात और बण्याह, ये ही पह औरारिककावयोगी, अक्षंयतमस्यादृष्टि और संघनासंयत भीनोने कितना क्षेत्र

केया है ? लोकका अर्सस्पातचा माग स्पर्ध किया है ॥ ८५ ॥

छंबंखंडागमे जीवद्राणं

सत्याणसंत्थाण-विहारवदिसत्याण-वेदण-कसाय-वेउिक बदसम्मादिङ्गीहि संबदासंजदेहि चटुण्हं लोगाणमसंदोज्जदिमागे गुणो वड्डमाणद्वाए फोसिदो ।

छ चोहसभागा वा देसूणा ॥ ८६ ॥ सस्याणसत्याण-विहारवदिसत्याण-वेदण-फसाय-वेउडिवयप

दिह्वीहि संजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंतेजजदिमागो, विरियलो अङ्गाइज्जादो असंसेज्जगुणो । एसो 'वा'सहस्रचिदत्यो । मार परिणदेहि छ चोइसमामा देखणा पोसिदा, अन्छरकप्पादा उपरि संजदासंजदाणमुच्चादाभावादो । पमत्तसंजदप्पहुडि जान सजोगिकेवलीहि केवडियं लोगस्त असंखेन्जदिमागो ॥ ८७॥ प्देतिमहुण्हं गुणहुाणाणं तिण्णि वि काले अस्तिद्ण परुवणं

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवस्त्वस्थान, वेदना, क्याय, वैत्रिविक भी समुद्धातपदचरिणत असंयतसम्यग्हिः और संयतासथत जापाने सामान्यर ष्ट्रोकोका ससंक्यातयां भाग, और मनुष्यद्योक्तते ससंक्यातगुणा क्षेत्र वर्तमा किया है। औदारिककाययोगी उक्त दोनों गुणस्यानवर्ती जीवोंने अतीत औ

कालकी अपेक्षा इछ कम छह यटे चौदह माग स्पर्ध किये हैं॥ ८६॥ स्वस्थानस्यस्थान्, विहारवन्सस्थान्, वेदनां, क्यायं और वैक्रिविकसमुद्रात परित्तत बीशारिककाययोगी असंयतसम्यग्टिष्टि भीर संयतासंयनीने सामायज्ञेक होहाँका सत्वातवां माग, तिर्यस्मेकका संव्यातवां माग और अवार्तवित मत सेत्र स्वर्त किया है। यह ' या ' शब्दले स्वित सर्य है। सारणातिकसमुद्रात भीर परवरिष्यत उक्त क्षीयोने कुछ कम छह बटे चीवृह (११) माग स्वर्ग किये हैं।

मञ्जूनकरासे द्वार संसंयनसम्पाहिए और संयनासंयन जीवीहा उपवाद नहीं होता प्रमत्त्रमंत्रत् गुणस्यानमे लेक्टर संगोतिकेन्नः भौदास्त्रिकापयोगी जीने द

पोक्षणाणं मुलोपपमचादिगरूबणाण् समाणा परूनणाः काद्रम्बा । णवरि सजीगिकेवलिन्दि कराट-पदर सोगपुरवावि वात्विं। तं कर्ष वान्वदे हैं सजोगिकेवसीढि सोगस्स असंग्रेज्जा मागा सब्बलोगो या फोसिदो वि सुचेण अणिरिद्वचादो ।

ञोराहियमिस्सकायजोगीसु मिन्छादिद्वी ओर्प ॥ ८८ ॥

सत्याणसत्याच-चेदण-कसाय-मार्त्णांतिय-जनवाद्वादेवादेहि ओसालियमिरसकाय-जीमिमिन्यादिद्वीदि तिमु वि कालेमु जैन सम्बलोगी कीसिदी, तेण श्रीयचमेदेसि व विकत्तदे । विदारवित्तरपाण-वैजन्त्रियपदाणमेत्यामाता कोपर्च छन्जदे है होद्व गाम

क्षेत्र श्रीर चपरांत अनुयोगद्वारके मूलीय प्रमचाहि गुणस्यामाँची प्रक्रपणाके समान प्रकपणा करता बादिए। विरोध बात यह है कि स्त्रोगिकेवली गुणस्थानमें कपाड, मतर और टोहपूरवसमुद्रात नहीं होते हैं, (क्योंक, श्रीशरिकस्त्रवर्णाणकी अवस्थाम केवळ एक दंडलमुदात ही होता है।) र्धेश- यह देसे जानते हैं कि भीदारिकहाययोगी संयोधिकेवलीके कराट माहि

तीन समुदात नहीं होते हैं। विष्णान — पद बात सयोगिकेचस्यिनि स्रोकका असंबयात बहुमाग और सर्वस्थाक इपर्रा हिया है ' इस एक्से निर्देष्ट महाँ की गई है। (मतः इस जानते हैं कि मौदारिकः

काययोगी संयोगि क्षित्रमें कपाटाहि तीन समुद्धात नहीं दोते हैं।) विद्यपार्थ - माहारिककाययेगाकी अवस्थामें केवल एक पंत्रसमुदात ही होता है' भवारत वादि नहीं। इसदा कारण यह दे कि क्यारसमुद्रातमें भीशारिक्रमिथकार-थेम, और प्रतर तथा छोकपुरणसमुद्धातमें सानेपकायशेस होता है, पेसा वियम है। इसिशिए

हर्द, भीदारिक काययोगकी अक्रवण करते समय संयोगिकेयलीमें क्याट, अतर और छोक-जीदारिकमिधकापयोगियाँमें मिध्यादिष्ट जीवोंका स्पर्धनक्षेत्र जोयके समान र्वलोक है ॥ ८८ ॥

ललानसस्यान, वेदना, क्याव, मारणान्तिकसमुद्रात और उपवादपक्वरिणत औहा

विश्वकायदोगी मिष्पादि श्रीमोर्न सीमो है। कालाम संकि सर्वलीह रस्से हिया है। लिए भोषपमा इन पदावाले जीवांसे विरोधको मात नहीं होता है।

र्धका — बोदारिकासभवाययोगी जाँबोमं विदारयन्त्यस्थान और पैकिविकसमुदान, स्न प्रका समाय होनेस श्रीमयना नहाँ बनता है, हसाहित सुवनें 'श्रीय' पर नहीं हेना वाहिए? का जनाव कार्या कार्या कार्यामा अधिक विद्यारव संस्थान व्यर वैस्टिरिकसमु-

र बांसन इन्ह्रमें कराक्ष्यरने च स्टब्स शिरम उन चररेन कोलूरी कम्बेक के बीदि बाहस्त्रों स

345.7

छ रखंडांगमे जीवद्रांगं एदेसि दोण्हं वि पदाणममानो, तपानि पदसंखानित्रक्खामाना निज्जमाणक ओपपदफोसणेण तुछत्तमत्यि चि ओपत्तं ण निरुज्जेदे ।

सासणसम्माइडि असंजदसम्माइडि-सजोगिकेवलीहि के फोसिदं, लोगस्स असंक्षेज्जदिभागो ॥ ८९॥

पदेसि तिष्टं गुण्हाणाणं ग्रहमाणपरुवणा खेत्तर्मगो । सत्याणसत्याणने उन्तादपरिणद् औरालियोमस्तसासणसम्मादिहीं है अदीदकाले तिर्ण लेगाण मागा, तिरियलोगस्स संखेजबेदिमागा, अङ्गाहज्वादी असंखेजबगुणा। कर्म ति संसेन्जदिमाग्तं १ देव णेरहयमणुस्य-विरिक्तसामणसम्मादिहीहि विरिक्तमणुस सरीर चेत्त्व ओरालियमिस्सकायजोगेण सह सासणगुणमुन्दरेतेहि अरीरकाले स बाह्छरज्यपदरं मज्जिलसमुद्दवज्यं सन्त्रं जेण कृतिस्त्रहित् तेण विरियहोगस्य सह

मागो भि वयणं अजदे । एस्य विहार-वैजन्तिय-मारणंतिय-पदाणि गरिय, एदेसिनी मिस्सकापजीराण सहअवहाणिनरीहा । उननादी पुण अत्य, सामणगुणेग सह अ बान, इन दो पर्देश्या समाव मले ही रहा आये, तथापि परीकी संक्याडी विवसा ह हा इनमें दिपमान पदाक स्पर्धानकी शोधपदके स्पर्धानके साथ तुन्यता है हैं, इसदिए में हा विरोधको मान नहीं दोता है। त्रीदारिकामिश्रकापयोगी तासादनसम्यग्रहि, असंपत्तमम्यग्रहि और संगेरि \$ 11 00 11

हैनती जीवोंने किनना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लोकका असंख्यावर्ग माग समीहिं १। ७० ॥ इन तीनों है। युणस्यानों हे. स्पर्धांनकी यनंभानकालिक प्रवपणा क्षेत्रके समावे। स्वस्थानस्वानात्, वेद्भाः, व्यायमञ्जानाः स्वरानकाः वर्तमानकाञ्चिक प्रस्पवा अत्रक प्रणा सामान्यसम्बद्धानः वेद्भाः, व्यायमञ्जानः और उपयाद्यद्यस्थिन भौतानिविभक्षार्यः साताइनताम्बरिक भीषाने अनेतिकाल्ये सामाग्यलोक सादि तीन होतीका अनेतिकाल्ये सामाग्यलोक सादि तीन होतीका अनेतिकाल्ये साम, निर्वाचीका अन्यान अनानकाल्य सामाग्यालेक आहि नीन साकाका मान्यानी सामाग्यालेक आहि नीन साकाका मान्यानी सामाग्यालेक अस्ति सामाग्यालेक स्वाप्ति सामाग्यालेक स्वाप्ति सामाग्यालेक स्वाप्ति सामाग्यालेक स्वाप्ति सामाग्यालेक सामाग्य र्वेश - निर्वासंद्रश्चा संस्थानयां माग केले कहा ? ममायान — कृष्टि देव, नारबी, मनुष्य भीर निषय मामाहनभावारी हैं। ्षयाभयतः । त्रियंत्रः श्रीतः स्वतुर्वेशे उत्पन्नः सीत् विषयः सामाहतमावन्तः । पावदः साम सामान्यः । सीतुर्वेशे उत्पन्नः होतः । शाहित्वः प्रदण करते श्रीसावाधाः । पेविह साम सामादनगुष्कानका धारण होकर शारिका ग्रहण करके भोताराज्य सक्यत्र अत्तर क्षाण्यात्रका धारण करते हुए ग्रनीतकालाई सैपह सनुद्रश वर्गी साम्बर्ग संकात अतुत्र वाह्यवालका धारण करते हुए अनीवकाटमं कीयर समुद्रशण इ.स. सकतालक वाह्यवालका सामुज कानुस्तरस्य क्षेत्रका क्यां करते है, स्वाटर १९९९ < था सकालका माग यह वसन मृतिस्का है।

पदा पर विद्वार कार्यान प्रात्म है। द्वारी कार्यान विद्वार और मारणानिक पर नर् शार है गाँ हैं दर्शेषा क्षेत्राव्यक्षित्रकार वेद्वांवयः भीर मारणानिक वर तर शार र है, दर्शेष, साराजनाम, वायवानक साथ अवस्थातका विशास है। १४ मू १९४४ साथ है, क्यांह, सामाज्यायामहामान मान व्यवसावका विश्वास है। हानु १९४४ वर्ग

उदानमयगरीरपटमगमप् उपपादीवरुंमा । मिन्छादिश्वीणं पुण मार्गितिप-उपपादपदाणि रुष्मेति, अर्णनी औरालियमिश्मेईदियअपज्जाचरामी सद्वाणे परद्वाणे च वक्तमणीवक्रमण-करेमाची त्रम्मदि शि । गत्याणसत्याण-बदण-कसाय-अववादपरिणदेहि असंजदसम्मादिहीहि भारानियमिरमकायजोगीहि वीदे काने विष्टं सोगाणमसरोअदिमागो, तिरियलोगस्स. संगेजदिमागो, अहुारुआदो अर्गनेक्जगुणो फोसिदो। क्यं विश्यिलोगस्स संरोक्जदिमागर्च ? ण, पुरुषं तिरिक्त-मणुरतेषु आउभे वंधिय पच्छा सम्मर्च धेतृण - देशणमोहणीयं खरिय ' बद्धाउपरेण भागभूमिसंटाणश्रक्षरेज्ञद्वीवेतु उप्पण्णेहि भवसरीरग्यहणवडमसमए बङ् माणीर औरालियमिरसकायओगअसेजदसम्मादिहाहि, अदीदकाले पोसिद्विरियलोगस्स संरोक्तदिमागुपलंगा । कवाडगदेदि सजोगिकेवलीहि जोरालिपमिस्सकायजीगेः पहुमाणेहिः तिर्व्हं लोगाणम् संरोज्जादेमागो, तिरियलोगस्य संरोज्जदिमागो, अहाइज्जादो असंखेज्ज--गुणी। अदीदेण तिरियलोगादो संरोज्ञगुणो पोसिदो । एत्य कवाडखेचादी जगपदरुप्पा--यगविधाणं जाणिय बचर्यं ।

उपपाद पाया जाता है। मिथ्याहि जीवोंके भी मारणान्तिक भीर उपपादपद पाये जाते हैं, क्योंकि, अनम्सर्वक्यक श्रीदारिकमिश्रकाययोगी यकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि, स्यस्थान और-परस्थानमें भपकामण भीर उपकामण करती हुई, अर्थान् जाती आती, पाई जाती है। स्वस्थानः स्वस्थान, वेदना, क्यायसमुद्धात भीर व्यपाद्यद्वितत शीदारिकमिश्रकाययोगी असंवत-सम्यन्दिष्ठ जीवीने अतीतकालमें सामान्यलोक मादि तीन लोकीका असंक्यातयां भागः ' तिर्परक्षेत्रका संब्यातयां माग, और मदाईद्वीपसे असंक्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है।

द्युंद्रा -- भीदारिकमिधवायवीगी असंवतसम्बन्धियोंके वपवादशेशको तिर्वेग्लोकका संस्थातयां भाग केले कहा है

समाधान-मही, पर्योकि, पूर्वमें तिर्वेच और मनुष्योमें मायुको बीमकर पीछे ' सञ्चलको भ्रहण कर, और दर्शनमोहनीयका शय करके बांधी हुई बायुके यशसे भोगभूमिकी.. रचनावारे मसंस्थात द्वीरोमें उत्पन्न हुए, तथा, अय-दारीरके प्रहण करनेके मधम समयमें वर्तमान, येसे भीदारिकमिधकाययोगी असंयतसम्बन्दि जीवोंके द्वारा अतीतकालमें स्पर्ध / किया गया क्षेत्र तिर्यग्टोकका संस्थातयां भाग थाया जाता है I

कपाटसमुद्रातको प्राप्त, भीदारिकमिशकाययोगमें वर्तमान सयोगिकेविख्योंने ' सामान्यलोक भादि तीन लोकाँका असंक्यातवां भाग, तिर्यंग्लोकका संक्यातवां भाग, भीए" अदार्द्दीपसं असंस्थातगुणा क्षेत्र स्वर्श किया है। अतीतकालकी अपेकासे तिर्परलोकसे संस्थातगुणा क्षेत्र स्परी किया है। यहां पर कषाडसमुद्धातगत क्षेत्रकी अपेक्षासे स्पर्शन-क्षेत्रसम्बन्धी जगमतरके अत्पादनका विधान जान करके कहना चाहिए। (इसके लिए: देको क्षेत्रप्ररूपणा ए. धर शावि)।

वेउव्ययकायजोगीसु मिच्छादिईहि केवडियं सेतं पोसं,

लोगस्स असंखेजजदिभागो ॥ ९० ॥ एदं सुचं जेण बहुमाणकाले पडिवर्द्ध तेणेदस्स वक्खाणे कीरमाणे जवा बेचने ओगद्दारे चेडव्यियकायजोगिमिच्छाइंडिप्पहुडि-बद्धसुचस्स वक्खाणं करं, तवा एन

विं कायच्यं । अह तेरह चोइसभागा वा देखुणा ॥ ९१ ॥

सत्याणसत्याणपरिणद्-वेउव्यियमिच्छादिद्वीहि तिण्हं लोगाणमसंवेज्यस्म तिरियंलोगस्स संखेज्जदिमागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । विहासिक्त वेदण-कसाय-वेऽव्यियपरिणदेहि अड्ड चोहसमागा फोसिदा । उववादो णार्थ । मार्पणदे विद्या परिणदेहि अड्ड चोहसमागा फोसिदा । उववादो णार्थ । मार्पणदेहि तेरह चोहसमागा फोसिदा, हेड्डा छ, उविर सच रज्जू । यणलोगमेगस्यस विद्यासमाग्रण-सचावीसस्येहि खंडिद्यग्यखंडं फोसंति चि खुर्च होह ।

विक्रियिककाययोगियों मिथ्यादृष्टि जीवीने कितना क्षेत्र स्पर्ध क्रिया है। से स्पर्ध क्रिया है। से स

भारत भारत्याच्या नाग स्थल १६०१ ह ॥ ६० ॥

चृति यह सूत्र वर्तमानकालसे सम्बद्ध है, इसलिय इसका व्याच्यात करने स्रति

मकारसे क्षेत्रात्योगमासमें विकित्यक्तायोगी मिथ्यादि सादिक जीवीसे प्रतिवद्ध सूर्व

मकारल क्षत्राञ्चवामद्वारम याकायककायथावा । सध्यादाह आवदक आयात विकास ध्याक्यान किया है, उसी प्रकारसे यहाँ पर भी करना चाहिए। प्रिकृपिककाययोगी मिध्यादि जीवोंने तीनों कालोंकी अपेक्षा हुए क्ष्म आ प्रदे चौदह, और कुछ कम तेरह पटे चौदह भाग स्पर्ध किये है।। ९१ ॥

स्यस्थानस्यस्थानयद्यरिक्षतः वैक्षितिककाययोगी मिर्ध्यादि जीयोने सामानी स

भारणन वक्त जावान (कुछ काम) तेरह बटे बीदह (रहे) माग स्पर्ध हिंद (मार क्रिकेट को क्रिकेट को क्रिकेट को क्रिकेट को क्रिकेट के क्रिक

सासणसम्मादिङ्गी ओषं ॥ ९२ ॥

पदस्स बङ्गमाणपरुजाग स्वेषमंगो । सत्याणसत्याणपरिणद्वेउव्यिपकावजोगि-सासणसम्मादिद्वादि विष्टं स्रोपाणमधरोजादिभागो, विरिष्णोगस्स संवेज्ञदिभागो, अङ्काद्-ज्ञादो असरेवज्जाणो । षत्य विरिष्णोगस्स संवेज्जदिमागपरुजणं पुन्तं व वचन्तं । विहातपदिसत्याण-येदण-प्रसाय-येउन्ज्यिपरिणदेहि बङ्ग चोहसमामा फोसिदा । उचनादे। णत्य । मारणविषपरिणदेहि पारह चोहसमामा फोसिदा । वेणोगमिदि सुन्नदे ।

त्य । मारणातपपारणदाह बारह बारहमामा फोसिरा । तेणोवांमीदे जुझदे । सम्मामिच्छादिही असंजदसम्मादिही ओघं ॥ ९३ ॥

जंगेदेसि बहमाणस्वया खेषायपस्वणात् तत्वा, तेणोर्य होदि। अदीदपस्वणा दि फोसगोर्पेण तत्वा। तं बहा- सत्याणसत्याणपरिणदेहि तिन्दं लोगाणमसंखेळादिमागो, विरियलोगस्स संखेळविमागो, अहादञ्जादो असंखेळवागुणो फोसिदो। बिहास्यदिसस्याण-बेदण-कसाय-बेटच्य-मारणंतियपरिणदेहि अह चोहसमागा देखणा फोसिदा। असंजद-

वैक्रियिककाययोगी सातादनसम्बन्धिः जीवींका स्वर्शनक्षेत्र ओपस्पर्शनके समान है ॥ ९२ ॥

इस सुष्की यसैमान रुपर्मानमक्यणा होष्मक्रपणाके समान है। स्वर्थानस्वय्यान-प्रपूर्णारण विकित्यकानयोगी सासाइनसम्बन्धार जीवोने सामान्योक जादि तीत होत्योक मर्सक्यातयां माग, तिर्वेच्छोक्क संक्वातयां भाग, वीर अक्षादेशियो मर्क्यातागुणा होत्र स्वर्धी स्वर्धा है। यहां यद तिर्वेच्छोक्क संक्वातयं भागकी प्रकरणा पूर्वेके समान ही करना बाहिए। विद्वारस्वरस्थान, वेदना, कराय और वैकियिकसमुद्धात, इन प्रशिस परिणत विकित्यकायपोगी अधिने इफ कम भाट बदे बीरह (ई) भाग स्वर्ध किये हैं। इनके व्ययस्वर्म नहीं होता है। माग्जानिकसमुद्धात्त्वे परिला का जीविने स्वर्ध करे बीरह (१) भाग स्वर्ध क्रिये हैं। इस्तिट्य सुष्की दिया गया 'भोष 'यद यह युक्तिसंत्रत है।

दैकिंपिककाययोगी सम्यग्निध्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीयोंका स्पर्धन ओपके समान है ॥ ९३ ॥

सम्मादिष्टिस्स उववादो णत्यि । सम्मामिच्छादिष्टिस्स भारणतिय-उववादो पति। तेन वि ओघत्तमेदेसि जुजदे ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिहि सासणसमादिहि ^{अहं} पोसिदं, लोगसा असंवेजि ्रजदुसम्मादिद्वीहि केवडियं खेर्त

. विरियलोगस्स संखेन्जदिमागो, अङ्घाइनजादो असंखेन्जगुणो फोसिदो । विशासिन्त

भागो ॥ ९८ ॥ पदस्त सुत्तस्त बहुमाणपस्त्रणा खेत्तमंगो । सत्याणसरयाण-वेदणक्रमाय सर्राः ःपरिणद्वेउन्वियमिस्सकायज्ञोगिभिच्छादिद्वीहि अदीदकाले तिण्हं लोगाणमध्वेज्यदेको

ाघेउिचय-मारणंतियपदाणि णत्यि । सासणसम्मादिष्टिस्स वि एवं चेत्र वचक्तं, नतार -बोदिसियदेवाणमसंखेनावासेमु विरियलोगस्स संखेजिदिमागमोहृहिय हिंदे साउरी मृप्पिदंसणादो । असंजदसम्माहट्टीहि सत्याणसत्याण वेदण-कसाय-उदशहरीतरी ्षाउण्डं लोगाणमसंखेजदिमागो, अहाइज्जादी असंखेज्जगुणो फोसिदो, बाणवेतः बीरिक ैसिकायकाययोगी असंयतसम्यन्दिष्ट जीवोंके उपपादयद नहीं होता है। · सम्योगिष्यादृष्टि जीवोंके मारणाश्विकसमुदात और उपपाद, ये दे। पर नहीं देनि हैं। हैं

• प्रश्नी चर भी भोषपना यन जाता है। वैक्रियकमिवकाययोगी जीवीमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यादृष्टि जीर मंग :सम्यारिष्ट बीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है है लोकका असंख्यावर्ग मान सं

्विया है ॥ ९४ ॥ इस मुत्रकी वर्तमानकालिक रार्शनयक्षणणा क्षेत्रके समान है। राग्यानगर्ण चेर्ना, क्याय और उपपादपव्यथित वैकिथिकमिश्रकाययोगी मिथ्याहरि जीवीर करें बाटम सामान्यरोक बादि तीन रोक्रोंका असंस्थातयां मान, निर्वेकोहन संस्थाति है। भीर सम्मादियसे ससंस्थातमुणा क्षेत्र स्थरी (कया है। यितियक्तिमध्यायोगी गृही

, विदारवन्दवस्थान, पैकियिक शेर मारणानिकसमुद्रात, थे पर नहीं होते हैं। नामानिक सागदा स्थान करके दियन यानव्यानर और ज्योतिक वेषाँक समस्यान सावानी है। इरसम्बन्धार आयोधि क्यांनि देवी आती है। इयस्थानस्वस्थान, वेदना, बदा है। व

पारपर्यात्वा अत्याच द्या जाती है। स्वस्थातस्वस्थात, वहता, वस्य । पारपर्यात्वा धात्रिवस्थियस्यपीती सार्यवतस्यात्व जीवीन सामान्यत्रीह ना : क्रांच्या असंक्यान्य भाग और अस्त्यानसम्बद्ध जीवान सामान्यना भवणवासिएम् एदेसिमुबबादामावाः सम्मादिद्विउवनाद्यात्रोग्गसोधम्मादिउयरिमविमाणाणं विरियलोगस्य असेरोज्ञदिभागे चेव अवद्वाणादाः।

आहारकायजोगिः आहारिमस्सकायजोगीसः पमत्तसंजदेहि केवडियं सेत्तं पोसिदं, टोगस्स असंखेज्जिदभागो ॥ ९५ ॥

> करमहयकायजोगीसु मिञ्छादिद्वी ओघं ॥ ९६ ॥ सर्याणसर्याण-वेदण-कसाय-उववादपश्चिदेति निच्छादिद्वीदि विद्या वि कालेस

पानव्यत्तर, क्योतिष्क भीर मयनवाशी देवीम दुनका, अर्थात् वैक्रियक्तिश्वकाययोगी श्रीवीका, व्यपण्य नहीं होता है। साम्पव्हि जीवांहे उपवादके प्रायोग्य स्वीपमीदि: उपरिम विमानीहर विपानीहरू ससंस्थातयें प्राप्ति है। स्वस्थान देखा जाता है।

आहारकसाययोगी और आहारकशिश्रकाययोगी जीवोंने प्रमणतंपरोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है ! लोकका असंस्पातनों माग स्पर्ध किया है ॥ ९५ ॥

हर स्वर्ण यर्तमानकालिक स्वर्गमक्षण क्षेत्रमक्षणाके समान है। स्वर्णान-स्वरणान, विदारपरवर्णान, मेदान कीर क्षणवस्त्रुवानविज्ञ काहरस्कायणीन प्रमण् संवत अधिने मतास्वरण्यान मेदान कीर काविकालिकालिकाली मान क्षेत्रमुख्य । क्षेत्रका संस्वायणं मान स्वर्ण क्षित्रण है। काहरस्कायणीनियांके उपयाद कीर विवादिकाल नहीं होते हैं। मारणानिकस्वरिक्त काहरस्कायणीनी जीवीन कामान्यलेक स्वरिद्ध स्वरक्षण मान स्वर्णाक्षण मान स्वर्ण क्षित्र काहर स्वरक्षण मान स्वर्ण काहर स्वरक्षण मान स्वर्ण काहर स्वरक्षण क्षेत्र स्वर्ण किया है। स्वरणान स्वर्ण क्षित्र स्वर्ण किया है। स्वरणान स्वर्ण स्वर्ण क्षित्र स्वर्ण काहर स्वरक्षण स्वर्ण काहर स्

कार्मणकापयोगी जीवोंमें विश्यादृष्टि जीवोंकी स्पर्धनत्ररूपणा क्रोपके समान है।। ९६ ।।

स्प्रधातस्यस्यान, वेदका, कवाय और व्ययाद्यद्यश्यित कार्मणकाययोगी मिष्या-दक्षि जीवोंने तीनोंदी कालोंने जुन्दि सर्यलाग स्पर्दा कवा है, इसामय सूचमें 'साम ' जेण सुच्यलोगो फोमिटो, तेण गुत्ते जोपमिटि गुर्न । एत्य विद्वास्त्रदिक्यालकेणि

मारणंतियपदाणि णरिय । सासणसम्मादिहीहि केवडियं क्षेत्रं फोसिदं, छोगस असंबेवीः

भागो ॥ ९७ ॥

·एदस्स ग्रुचस्स बद्दमाणपस्त्रवा शेचर्मना ।

एक्कारह चोइसभागा देसणा ॥ ९८ ॥

एरय उपवादवदिरित्तसेसपदाणि णरिय, अम्मइयकायज्ञागविवक्सारी । उसरी बहुमाणा साम्रणा हेड्डा पंच, उपरि छ रज्जूओ कुमंति वि एक्कारह चोहमुमाण केलि खेचं होदि।

असंजदसम्मादिद्वीहि केयडियं खेतं फोसिदं, लोगसा असंह ज्जदिभागो ॥ ९९ ॥ एदस्स परुवणा खेचमंगो, बहुमाणकालपडिबद्धचादी ।

छ चोइसभागा देसूणा ॥ १०० ॥

पद कहा है । यहां, अर्थात् कामणकाययोगी मिच्यादृष्टियोंके, विदारपन्द्यस्थान, के मारणान्तिकसमुदात, इतने पर नहीं होते हैं।

कार्भणकाययोगी सासादनंतम्पग्दृष्टियाने किवना क्षेत्र स्पर्ध किया है ! शेका असंख्यातवां माग स्पर्ध किया है।। ९०॥

इस सुप्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्रकृपणा क्षेत्रके समान है। कार्मणकाययोगी सासादनसम्यण्टि बीचोंने तीनों कालोंकी अवेहा इड इर

ग्यारह बटे चौदह माग स्पर्श किये हैं ॥ ९८ ॥ यहांपर उपपान्यदको छोड़कर दोप पन नहीं हैं, क्योंकि, कार्मणकाययागकी विश् की गई है। उपपादपदमें वर्तमान सासादनसम्बन्दिए जांच मेदके मूलमानसे नांचे वांच पर

भीर क्रपर अन्युतक्रमतक छह राह्य प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन करते हैं, इसिट्य गाहि है भीदह (रें) माग प्रमाण स्पर्श किया हुमा क्षेत्र हो जाता है। कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दिष्ट जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है। होहर्य

असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥ ९९ ॥ पर्तमानकाल्ले प्रतिसंबद होनेसे इस स्थकी स्पर्धनप्रकपणा क्षेत्रप्रकपणा हे समते

कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंने तीनों कालोंकी अपेशाम इंड ईर एक घटे चीदह सात स्पर्श किये हैं ।। १००॥

दान हि जनशहरहेरेको थेर । तिरिक्शाधिमसम्बद्धानी केणुन्ति छ प्रमुक्त द्रायमध्ये हे वेत क्रेन्स्य वेशस्य का क्षेत्रणायमंत्री क्षेत्रि । देश कृत्यन विवास रात्ते व कार्यः, देवन्यं बहुदान्यः विशेषसे विशेषसामामा ।

सजीविर नतीहि बेनडियं क्षेत्रं कोविदं, छोगसा अगस्तिना भागा सन्बहींगी वा ॥ १०१ ॥

ettererus beite augen nich billet, wingeblettenen वर तिकार हरवाते । अवस्ति हराकृति क्षांत्री, क्षांत्राच्या प्र विदेशीर-198441 64 ajahasa tata 1

देवाजनारेण हारिनेन पुरिसनेनएस भिन्जानिहीहि बेन्धियं रोसं धीतः, होवसा असंसेड्यारमागो ॥ १०२॥ द्वात क्षुवात दश्वया खेवश्यो, बद्दपायकात्रविद्वयाही ।

रवां कर क्षेत्रक वक्ताहराती होता है। निर्देश मार्थशतकरवाति और पृक्ष giang gie bet ging mirey gang fij g' guige feigelien word int af. कोर्ड में सांत बदात होता है। कुछ नामी मूद्र काल मात्र काराताताता का कार कर उन ता है, बहु है, बहु की असंबद्धान्यमादि औरोहा तिब्बार्थ अवसाह करी होता है।

State to Style West Style Beat Ba tot Bell & 1 1918 181 रिकार बहुआम और महिलेक रक्षी किया है।। हिन्हें ।।

Settliktion bill galleng finnt om tant auftig be fo करोते काराना साम कवाजवाद धाकक मानवात वहाराच प्यस कर कर

दशपकार बीगमार्गभा समास दरें।

वेदबार्यवाके अग्रवादये श्रीवेदी और प्रवचनेती औरतीने विश्वपादियोंने es ein ben & i mest aufentut mit fan ben & il for il

+ feite (a Willifelin g. Bujanaprpament and a a) a) q. q. q. q. q.

2001

स्टब्स्डेडागमे जीवराय 18,8,9

बेन सन्तरोगो फोसिदो, तेन सुचे ओघमिदि युचं । एत्य विद्वारविसरधाणनेउन्दि मार्गितिपपदाणि गरिय ।

सासणसम्मादिद्वीहि केवडियं स्रेतं फोसिदं, लोगरस असंक्षेजी

भागो ॥ ९७ ॥

एदस्य सुसरस षष्ट्याणपरुवणा शेर्मभंगा।

एक्कारह चोइसभागा देसुणा ॥ ९८ ॥

एन्य उत्तराद्वदिश्चिमेसपदाणि णत्थि, कम्मइयकापजीगविवस्ताही । उत्तर बहुमाना मानवा हेडा पंच, उपरि छ रज्जुओ फुसंति शि एकतारह गोहसभागा कोसि

मेर्च रेति। असंजदसम्मादिश्चीहि केवडियं क्षेत्रं फोसिदं, लोगस्स असंहें

रजदिभागो ॥ ९९ ॥ ब्दम्य वरणमा लेखभंगी, बदुमाणकालपरियद्वतारी ।

छ पोरसभागा देसुणा ॥ १००॥

कड़ कड़ा 🖢 । कड़ो, कर्यांच कामैलकायगीनी निष्यादक्षियोंके, विवारयप्यवस्थान, वैकियिक शौ मार्ग्यानिकालमुक्तान, दर्शन वर्ष मही देशि दि । कार्यकारकोगी मानादननभगरतियोन हिनना शेव सार्व किया है है लेकड़

अरंगपार्यः भाग गाउँ दिया है ॥ ५०॥

इच क्ष्यारे वर्णमामकातिक काशीनग्रहणमा क्षेत्रीह समात है।

कार्यक प्राप्तकारी कामान्त्रपरमाध्य श्रीवीन तीनी कालीकी अरेधा इत कर करनर बंदे भीतर मास स्पर्ध िं "॥ १८॥ ? fraut

व्यक्ति है, क्वीरि को कई है। सामानगान 🦿 नमध्यम्याचि श्रीत in traer . के x इत्तर क्रध्यन दश्यन

क्षेत्र (📅 🛊 सम ् धेष श

गरीय बीची

अर्थन्यत् ए सम् ** 1

. # 1

मीन गोप गार

C 818

एत्प वि उचनादपदमेक्कं चेत्र । तिरिक्खासंजदसम्माहहिणो जेणुतरि छ रज्यूको गत्युष्पज्ञीते, तेण फोसणसेचपरूजणं छ-चोदसमागमेचं होदि । देहा फोसणं पंचरज्यु-पमाणं ण रुरुभदे, वारस्यासंजदसम्मादिहीणं तिरिक्चेसव्यादामावा ।

सजोगिकेवळीहि केवडियं सेतं फोसिदं, छोगसा असंसेज्जा भागा सन्वरोगो वा ॥ १०१ ॥

पदरगरकेन्द्रशिह स्रोगस्य असंखेउजा भागा फोसिदा, सोगपरिगद्धिद्वाद्वरुष्णु अपविद्वजीवपदेसपादा । सोगप्रके सन्बस्तेगो फोसिदा, वाद्वरुष्णु वि पविद्वजीव-पदेसपादा ।

एवं जोगमगगणा समता ।

वेदाशुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदएसु मिच्छादिद्वीहि केवहियं खेतं फोसिदं, छोगस्स असंखेज्जदिभागों ॥ १०२ ॥

पदस्स सुचस्स परूपणा खेचमंगो, बहमाणकालपरिवद्यचारी ।

यहां पर भी केवल जयपहरहरी होता है। तिवेंब असंवतसारगरि और चूंकि मेटतससे ऊपर छह राजु आकरके उत्पद्य होते हैं, रस्तिय रयर्गनश्चरी अस्यया छह बटे चीरह र्रंह माग प्रमाण होती है। मेहतलके नीचे यांच राजु प्रमाण स्पर्गनश्चर वहां आता है, प्योंकि, सारकी असंगतसम्बाहि जीवांका तिवेंबीमें उपपाद वहां होगा है।

कार्मणकाययोगी सयोगिरेवितपीने हितना धेत्र १९ई हिया है। होहदा

असंख्यात बहुवाग और सर्वेठोक स्पर्ध किया है ॥ १०१ ॥

मतरसमुद्धातको मात केपलियोंने लेकके असंत्यात बहुमान वर्गा दिवे हैं, क्योंकि, लेकपर्यंत दिवत वातवलयांने केपली प्राधानके भागमान्द्रीय प्रत्यस्थानिक स्वाधानके मिक्क नहीं करते हैं। लेकप्राधानुद्धातमें सर्वेलोक करते किया है, क्योंकि, तरके आगे और स्थान चातवल्योंने भी केपली अगवानके आगमान्द्रीय मणिक हो माने हैं।

इसवदार योगमार्थणा समाप्त दुई ।

वेदमार्गणाके अञ्चारते स्विवेश और पुरुवेशी आंशों मिज्यार्टियोंने क्षित्रता क्षेत्र स्पर्ध किया है। लोकका आसंस्थातनां माग स्पर्ध किया है। १०१। वर्षमानकारके सम्बद्ध होनेके कारण इस पुष्की महण्या शेषके समान है।

६ वेदाहरारेक-माहुर्दर्शियाताहिरिक्षों वरताहेक्वेवनामा सहसा वाच वयुरेस्यामा वा देवाला. वर्के कोची वा t स. ति. ६, ८.

अडुबोइसभागा देखुणा, सब्बेलांगी वा ॥ १०३ ॥

सत्यावत्येदि मिन्छादिद्वीि अदीदकाले तिण्दं लोगाणममंत्रीकादिमाणो, निरि स्तेनस्य मंत्रेक्वदिमाणो, अद्वादकवादी असंदीक्क्युणो कोसिदी । एत्य वाण्येतरन्त्रीं निर्माणने संखेन्नवीयनवादेन्तं स्कृतदर्वं च वेणून निरियलोगस्य सौदीमदिमाणो सादेदर्गे विक्तर्याद्वनत्यायन्त्रेद्वनक्त्रयायन्त्रेवन्त्रयपरिणादि अद्व चोल्लासाणा कोसिद्वा, अद्वर्ग वच्छन्त्वत्यद्वत्रस्यायन्त्रयाणानिव्यवदेवित्यपुरियोद्वित्वाद्वीत्राष्ट्राणपुरत्याच्यो । मार्गाली वदस्यत्यत्रित्वेत्वि वच्याचेनो कोसिद्वी, दूषद्वरियद्वित्वाद्वीत्रमाम्बर्गद्वायाचारो ।

सासगसम्मादिशिह केवडियं सेतं फोसिदं, लोगस्स असंसेज दिनागो ॥ १०४ ॥

वरान मुक्तम प्रवाण लेवभंगो, पश्चमाणकानपश्चिद्धनारी । अट्ट णत्र चौरसभामा देखणा ॥ १०५॥

माँ देश भीत पुष्पति । सिष्पादशि औरोंने अतीत और अनागत कातकी अपेश इक चल भार बोर भी रह जाग तथा गरीओग रुपयी किया है ।। १०२ ॥

कामाणामा नारिक्षी भीर पूरावेक्षी विकास सिनिक्षा मिर्गान सामाणामा सामाणामा नार्य के विकास कामाणामा सिनिक्षा मिर्गान के सिन्क्षा मिर्गान के सिन्क्षा के

को बेर दुरुवेरी कामान्त्रमध्यातीत श्रीवेति दिलता बोच मार्च दिया है।

रोजका अर्रश्यास्था मान व्यव दिया है ॥ १०४॥

करेज्यनकार व्यवस्था के के के कारण हुन स्वतंश प्रत्यक्ष क्षेत्रवाण के व्यवस्था है। भी और कुरकोरी मन्तरस्थानकर रिवॉन के लि और कारण करवारी गोवी इक कम मार करें के दर कहा भी की चीतर माल क्या किये हैं !! रेक्स !! मन्यालस्पेहि मासणसम्मादिङ्कीहि विण्हं होमाणमृतसंग्र्यादिभागो, विरिवसोगस्स
भैगेजादिभागो, अङ्गार्ग्यादो अभरवेग्यापुणे फोसिदो, अदीद्कालिववस्यादो । एरय वि
पुर्वं व निण्म गेमाणि पेम् पिरिवसोगस्स संरोज्यदिभागो दिस्तिद्व्यो । एरो ' पा '
सद्दे । दिसायदिस्त्याण-वेदण-वसायपणिदेहि अङ्ग पोहसमामा देखणा कोसिदा, अङ्ग राज्याद्वर्यस्थान्यस्थाने देविश्यिः श्रीससासाणां ग्रमणागमणं पिर पिरिसेहामाया मार्गावियपरियदि णव पोहसमामा देखणा कोसिदा । हेडा पंच रज्ज कोसणं किण्य हरू हे ए , वेरहपहिलो स्थि-पुरिसबेहे सायणाणं विरिक्त-मणुरसेसु मार्गावियमेस्स-माणाणमायादो, विशिवसिय-पुरिसबेहसासणाणं णिरवर्याद्व सार्यावियं नेस्त्यमाणाम-मावादो च । उववादपरिणदेहि एककारह पोहसमामा देखणा कोसिदा । सुचे उवयाद-पोसाणं हिष्ण पुर्तं है ण, कोसणसुकी उवयादिवयक्सामासा । शिरयादो आसार्चविदि पंच

र्धका-मेयतछले भीचे पांच राज्यमाण स्पर्शनक्षेत्र पर्यो महीं पाया जाता है !

समाधान--महाँ, बचाँकि, नारकियाँके की और पुरुषवेदी तिषकों और महुष्याँमें मारणात्मिकतमुद्धात करनेवाके सासादनसम्बन्धार औवाँका अभाव है। तथा नरकपतिके मात मारणान्मिकतमुद्धात करनेवाके की और पुरुषवेदी तिष्य सासादनसम्बन्धार अविकेश भी अभाव है।

उत होनों घेरपांते स्वस्थानस्य सासाइनसम्बर्धष्ट श्रीवॉने सामान्यलोक आदि तीन होनेबा व्यवस्थायं भागः विपेष्टोक्ड संववातयो भाग और सङ्ग्रित्तेपते सर्ववस्थान्या हो। यदांपर मी पूर्वके रामा सेव स्यार स्थि है। व्योक्त, यहांपर वर्गातकालको विपक्ष है। यदांपर मी पूर्वके रामान तीनों संबोधो महण करके विपेष्टोक्ड संवयतयो भाग दच्चेना व्यादि । यद्ये एक्पिटन 'था' दाण्ड्क कर्ष है। विहारवास्वस्थान, वेदना, क्याय और वीक्रियकसमुद्रात-परिणत उक्त जीपीने हुए कम काड वटे वीवृद (क्रूं) भाग स्थां किये हैं। क्याँकि, माड-राहु बाहस्याल राहुम्बलके भीतर वेद्य ली और पुरुष्येदर्श सासाबनसम्बद्ध जीवीके प्रमानामस्कृत भित सैतियका कमाय है। महत्त्वास्वसमुद्रावयरिवत उक्त जीवीने हुछ ' कम सी वटे धीरह (क्रूं) भाग स्वर्श वियेष्ट

उपपादपदपरिणत उक्त जांबोंने कुछ कम स्यारह कटे बीदह (१४) माग स्पर्स कि हैं।

राका — स्वमं उपपादपदसम्बन्धा स्पर्धानका प्रमाण वर्षो नहीं कहा है समाधान — मही, क्योंकि, क्योंकातुगमसम्बन्धी स्वमं उपपादपदकी विवसाका समाप है।

नरकगतिसे बानेवाले जीवोंकी अपेक्षा पांच राजु, और देवगतिसे बानेवाले जीवोंकी

रज्ज, देवेहिंतो आगच्छेतेह छ रज्जू फोसिदा चि एकारह चोदसमागा फोसणयेर्न होदि। सम्मामिच्छादिद्रि-असंजदसम्मादिद्रीहि केवडियं खेतं फोसिदं,

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १०६ ॥

एदस्स सुत्तस्स परुवणा खेचमंगो, बहमाणकालविवक्खादो ।

अट्ट चोइसभागा वा देसूणा फोसिदा ॥ १०७ ॥

सत्याणारेविह तिर्व्ह लोगाणमसंखेज्जदिभागो, निरियलोगस्स संखेजदिभागो, अङ्काइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, बीदकालविवक्सादो । विहारविसरपाण-वेदण-कसाय-वेजिवय-भारणंतियपरिणदेहि अङ्क चोहसभागा देशला फोसिदा । जबरि सम्मा-मिच्छारङ्कीणं मारणंतियं जात्य । उत्रवादपरिणदेहि छ चोहमभागा देश्रला फोसिदा । जबरि सम्मा-संमामिच्छारङ्कीणं उत्रवादो जात्य । इत्थिवेदेशु असंजदसम्मादिङ्कीणं उत्रवादो जात्य ।

संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, छोगस्स असंखेज्जदि-गागो' ॥ १०८ ॥

अपक्षा छह राजु स्पर्धा किये गये हैं। इस प्रकार ग्यारह बटे जीवह (👯) माग उपपादका स्पर्धनक्षेत्र है।

ं सीवेदी और पुरुषेदी सम्यग्निध्यादि तथा असंगतसम्यग्दि बीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है है लोकका असंख्यातवां माग स्पर्ध किया है ॥ १०६ ॥

धर्तमानकालकी विवक्षा दोनेसे इस सुत्रकी अरुपणा क्षेत्रमक्रपणके समान जानना

चाहिए। उक्त जीवोंने अठीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चेंदिह

उक्त जीवोंने अठीत और अनागत कालकी अवेक्षा कुछ कम आठ बटे बेदिह भाग स्पर्ध किये हैं ॥ १०७ ॥

सस्यानस्य कीयदी और पुरुयेदी हतीय व चतुर्थ गुलस्यानयर्शी जीयोंने सामान्यलीक धादि तीन लोकोंका असंस्थातयां माग, विध्गलोकका संस्यातयां माग, और मनुष्यलोकके असंस्थातगुण क्षेत्र स्पर्ध किया है। वयीकि, यहाँ पर असीतकालकी विषक्षा की गरि है। विद्वारात्यस्यस्यान, वेदना, कथाय, वाकियक और मारणात्तिकपद्माराज्य कर जीयोंने कुछ कम यह किया है। हिंदी ये यह यह है कि सम्यग्निययारि जीयोंके मारणात्तिकसमुद्रात्यक्ष कर जीयोंने कुछ कम यह की स्थानिकस्यमुद्रात्यक्ष कर जीयोंने कुछ कम यह व्यवस्थानिकस्यमुद्रात्यक्ष कर जीयोंने कुछ कम यह व्यवस्थानिकस्यमुद्रात्यक्ष कर जीयोंने कुछ कम यह व्यवस्थानिकस्यमुद्रात्यक्ष कर जीयोंने कुछ कम यह व्यवस्थानिकस्यम्बद्ध जीयोंक अस्यात्यक्ष कर जीयोंने कुछ कम यह व्यवस्थानिकस्यम्बद्ध जीयोंक अस्य क्षात्र के सम्यग्निकस्थान्य अस्य किया किया है। स्थानिकस्थान्य क्षात्र किया किया है। स्थानिकस्यानिकस्थानिकस्यानिकस्थानिकस्यानिकस्थानिकस्थानिकस्थानिकस्थानिकस्थानिकस्

स्तिदेश और एहरावेदी संयतामंत्रत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है !

लेक्का अमंख्यावयां भाग स्पर्ध किया है ॥ १०८ ॥

१ अनंबनुबन्दारिभिः संबनार्वतेश्रीहरवार्वस्येयमानः वट् चनुर्देशमाना वा देशीनाः । छ. छि. १, ८०

एदरम् गुचरम् परुवणा रोचभंगो, विवरिसद्बद्धमाणकालनादो ।

छ चोइसभागा देसूणा ॥ १०९॥

सत्याणसत्याण-वेदण-स्वाय-वेडान्यवारिणदेहि तिण्डं स्त्रेपाणमसंसेज्जादमाणे, तिरियसोगस्स संपेज्जादमाणो, अङ्काद्यजादी असंसेज्जपुणो पोसिदो, विविध्यदातीदकारु-पादो । मारणेतिवपरिणदेहि छ चोदसभामा देखणा फोसिदा, अन्तुदकरपादो उत्तरी तिरिक्तवंजदासंजदाणमुख्यादाभाषा ।

पमत्तसंजदपहुडि जाव आणियट्टिजवसामग-खवएहि केवहियं क्षेत्रं फोसिदं, स्रोगस्स असंखेज्जदिमागों ॥ ११० ॥

पदस्स सुचस्स बङ्गाणपरूवणा खेचभंगा । अदीरकाले एदेहि सत्याग-विद्वारं वेदण-कसाय वेडिन्यचरिणदेहि चडुण्डं सोगानमसंदीज्जेदिमायो, माश्रसखेचस्स संखेजज्ञदि-मागो फोसिदो। पमचसंजदे वेजाहारचराणं वि एवं चेव वचन्यं । णवरि इत्यिपेदे वेजाहारं

वर्तमानकालकी विवक्षा दोनेसे इस ध्यकी स्पर्शनप्रकपणा क्षेत्रप्रकपणीके समान ज्ञानका चाहिए।

सीवेदी और पुरुपवेदी संयतासंयत जीवेति जीत जीत जानवकः सकी विवधाते इस्त कम सह यहे चौदह माग स्वर्ज किये हैं ॥ १०९ ॥

सस्यामसस्यान, पेरुना, वयान और विशिषकपदगरियत क्रीयरी भीर पुरुप्येग्री संयतासंयत अधिन सामान्यटोक मादि तीन छोन्नोका अवस्यातयां भाग, विद्यानोका संक्यातयां भाग, और अनुर्वाहीयये अविक्यातगुणा क्षेत्र राग्नी किया है। प्रयोगित प्रदायर सतीनकात्मात्र की प्रदेश भी गोर्ट है। प्रारमानिकवर्षात्मिक उन्न आयिन कुछ कम छह कटे सीन्द्र (१४) भाग दश्तों किये हैं, व्याति, अव्युतकरासे क्यर वियंग्र संवगासंयत आयोका उपयान नहीं होगा है।

स्विदी और पुरुषोदियोंने प्रशत्तवायत गुणशानके लेकर अनिश्विकरण उप-पामक और ध्वक गुणसान वक प्रत्येक गुणसानवर्ती जीरोने कितना क्षेत्र स्वर्य

किया है ! लोकका असंख्यातमां माम स्पर्ध किया है ॥ १९० ॥

हस स्टबर्ग यर्तमानकालिक स्वर्धनमहत्त्वका क्षेत्रमहत्त्वको समान है। महोतहरालमें स्वरक्षानस्वरक्षान, विद्वरक्ष्यसम्बद्धान, वेदना, क्याव और वेदियेकसमुद्धन्त्वरितन रहाँ उन अर्थान हामान्यलेक मादि चार लोकों अर्धन्यानयों माण, और मञुष्यते वहा संस्थानयों आर्थान स्वर्धी निवाद है। मण्डकंषत गुणस्यानमें तेत्रस्वसमुद्धान और भाइरक्ष्यसमुद्धान, इन दीनों ही पहुँमें दक्षी प्रकारसे स्वर्धनस्त्रेत्व बहुना व्यक्तिय। विद्योग बात वह है कि स्वरिद्ध

१ प्रमणायनिद्वतियादशन्तानी सायान्यांन्द्रं स्वर्धनम् । सः सि. १, ८.

टक्खंडागमे जीवहाणं णृत्यि । मारणंतिय-परिणदेहि चढुण्हं लोगाणमसंखेजदिमागो, :

णजंसयनेदएसु मिन्छादिही ओवं ॥ १११

सत्याणसत्याण-नेदण-कृसाय-भार्त्णाविय-उत्रवाद्वरिणद्वण्डु स विकालेस जेण सञ्चलांगो फोसिदी; विहारपरिणदेहि तिस वि पंतिज्ञदिमागी, विरियलीगस्स संखेज्जदिमागी, अङ्गह्रज्जादी असी वैण ओपर्च खुज्जहे । किंतु वैजिब्सप्यहस्स ओपर्मगी ण होदि, ता

माणकाले विरियलोगस्य संदोजिदिमागमेनमदीदकाले उमयरथ वि चि १ ण, पद्विसेसविवकसामावण आघणिहेतस्य विरोहामाया । सासणसम्मादिङ्गीहि केविडयं खेतं फोसिदं, लोगस

भागो ॥ ११२ ॥

रीजस और माहारकसमुदात, ये दीनों पद नहीं होते हैं। नारणानिकपश्या एकत जार जावराजात्रकान व स्थान व सामाग्यलोक भावि चार लोकोका व्यसंव्यातयां माग, चीर व स्थानीयते व नदंबकरेदी जीवोंमें मिथ्याहिष्ट जीवोंका स्पर्धनक्षेत्र ओपके देग १११ ॥

र्वका-न्यस्थानमस्थान, बेदना, कपाय, मारणानिक मीट उपपा परिवान मधुमकवदी मिच्यारिष्ट जायोत तीना ही कालाम चुकि सर्पनीक स्पर्ध रिहारकश्वरवानपर्परणत उनः जीयाँन तीनां ही कालाम सामान्यलोहः सादि र वर्षस्यातवां भाग, नियम्बोष्ट्यः संस्थातवां भाग, भार महास्वीयस् असंस्थ स्या दिया है। इसटिए सुसमें कहा गया शोधपना घटित है। जाता है। दिग्तु की स्त्या प्रध्या हा कामण्या है। स्त्रामसीय शामक समान पटिन नहीं होता है, क्योंक, यहां वह, सर्यात् भी देखा हु. १४८), शैक्षिकवरका वर्गमानकालम तिर्यालोकका संवरात्रवी माग ९२०। १० ६०० । व्यतिनदासमें दोना ही स्वस्टायर, सर्यान् भाषाकरणामं भीर मारेशयकरणाह सार

भाग कार्य वटे चीत्रह (६) तथा पांच वटे चीत्रह (१) मागवमात्र स ममायान-मही, क्योंक, प्रतिशेषची विवशाचा मधाव होनेसे ग्यमें भी विदेश विराधको भाग नहा होना है। नवुमहर्वेटी मामादनमध्याष्ट्रि चीजीं -

सम्ग्रान्त्रा साम रूपन किन्त

एदरस सद्भागपरूपण धेरावंगी।

चारह चोदसभागा वा देखणा ॥ ११३ ॥

सत्याणसत्याण-विहानविहारपाण-वेहण-कसाय-वेडिव्यपरिणदेहि ण्युसपतासणेहि सीदालारारकालेसु तिष्ट्रं लेगाण्यमसंदेवजदिकालो, विदियलेगरस संवव्यदिकालो, व्यह्नस्-व्यादो असंविद्याणो कासिदो, पदाणीकरोविह्यसारावारातिषादो । उपवादपरिणदेहि एका-रह चोदसमागा देखणा कासिदा, ण्युसगबेदवित्यसारावेष्ट्रसारावेद्याणे छ-पेचरच्याकरसविदियम्हरपोसणोवलेगावो । मारणविष-परिणदेहि पाट चोहसमागा कासिदा, णरहप-वितिचसाणं पंच-सचराज्यबाहरूतरुज्यदरकोसणोवलेगावो

ू सम्मामिच्छादिद्वीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंक्षे-

ज्जिदिभागों ॥ ११४ ॥

पदस्त सुषस्त यद्गगणपरूपणा खेषभंगो । सत्याणसत्याण-विद्वारविसत्याण-वेदण-कसाप-वेदिनवपरिणदेहि णर्बसप्येदसम्मामिन्छादिद्वीहि तीद काले तिण्हं लोगाणम-

इस स्वरी वर्शमानकालिक रपर्शनप्रकपणा शेत्रप्रकपणांक समान है।

नपुंतकपेदी सामादनसम्पन्दछि जीवोने अतीव और अनागतकालकी अरेखा कुछ कम बारह पटे पौदह भाग स्पर्ध किये हैं।। ११३॥

व्यवस्थानस्वर्धानं, विहारस्वरस्वस्थानं, विहास, स्वयं और वैकिविकरदृश्यितम् सर्वे सक्वेदी सालादृत्तक्वस्वर्धाः विद्यास्वरस्वरस्यानं, विहास्वरस्वरस्यानं, विहास्वरस्वरस्यानं, विहास्वरस्वरस्यानं, स्वर्धानं स्वयं सालाद्यां साला, विविद्यां के स्वर्धानं स्वयं सालाद्यां साला, विविद्यां के स्वर्धानं स्वयं सालाद्यां साला के स्वयं के स्वर्धा है, क्वींकि, यद्यां प्रतिकृति के स्वर्धानं के स्वर्धनं के स्वर्

नवस्यवेदी सम्योगिष्यादृष्टि जीवोने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है । लोकका

असंख्यातवा माग स्वर्ध किया है ॥ ११४ ॥

इस सुत्रकी वर्तमानकाशिक स्वर्शनमक्त्रणा क्षेत्रके समान है। सस्यानसस्यान, विद्वारयन्त्रस्यान, वेदना, कराव और वैजियिकवद्यरियन नवुंत्रकवेदी सामगिनव्यादि श्रीवृत्ति मतीक्षत्रकों सामान्यकोक बादि शीन सोशीन मसंव्यानयां भाग, विदेग्टोकक्र

१ सम्बन्धिप्यादशिविवींकरवासंस्पैयवाया शृहः । स. हि. १, ८.

२७६]

णूरिय् । मारणंतिय-परिणेदेहि चदुण्हं छोगाणमसंस्वे अदिमागं पोसिदो ।

णजंसयनेदएसु मिन्छादिही और्घं ॥ ११: सत्याणसत्याण-नेदण-कसाय-मारणीतेय-उत्तपादपरिणद् स विकालेस जेण सन्बलोगो कोसिदीः विहास्परिणदेहि निस . धंत्रेज्जिदिमागी, विरियलोगस्स संस्वेज्जिदिमागी, अप्टूदिज्जाही उ वेण ओपर्च खुजनद् । किंतु वेजिन्नपपदस्स ओपर्मगो ण होदि, भाणकाले विरियलोगस्य संस्वेजदिभागमेन मर्शदकाले उमयन्य चि १ ण, पदविसेसविवक्सामावण आंघणिहेतस्य विरोहामाचा । सासणसम्मादिष्टीहि केवडियं खेतं फोसिदं, लो

भागो ॥ ११२ ॥

वैज्ञस और आहारकतमुदात, ये दोनों पद नहीं होते हैं। मारणान्तिकपर वक्षत्र भार भारतास्त्र प्रतास्त्र प्रतास्त्र प्रतास्त्र प्रतास्त्र प्रतास्त्र प्रतास्त्र प्रतास्त्र प्रतास्त्र सामान्यस्त्रेक् सार्वि सार स्रोकोक्षा स्रतेष्यातयां मारा, और स्वार्रियसे नपुंचकरेदी जीगोंमें मिथ्याहाटे जीगोंका स्पर्धनसेत्र अोपके र्शका—सस्यानसस्यान, वेदना, कवाय, भारवान्तिक भीर उप

धारणत मधुसकधेशी मिष्याहरि जीवीने तीनों ही कालोंने सुंकि सर्वेशीक स्थ बहरणा मुद्राम्मवर्षित वहः जीगोंने तीना ही कालाम स्थाप पायणाम स्थ क्षत्रच्याच्या नाम् विकास कार्याच्या कार्याच्या व्याप्त कार्याच्या व्याप्त कार्याच्या व्याप्त कार्याच्या व्याप द्धार्थ क्या है। स्वाप्त यदित नहीं होता है, क्योंकि, वहां पर, क्यांत्र वरशास्त्र जावन वाता नामा नामा नवा वर्त वाता वन वर्गामा वरा वर, नवात् (देखो पु. १४८), वैकिथिकवर्षका यतमानकातम् तियान्तिकका संवरातयां मा (१९८१ ४ - १०८ म् अन्याच्यापर सर्वात् कोध्यक्षरणाम् कीट वार्शमान् अन्याच्याः स्थापन अवशवकालम साथा वा रचलाचक जनवाद जानककरणाम जार जाउरामककरणाम ज्ञार १६९०मा आठ वटे छीड्ड (१४) तथा वृद्धि कडे बोट्ड (१४) मागवमाण कता है।

. समाधान—नहीं, क्यों है, प्रशिदोषकी वियसाहा मनाय होनेसे स्ट्रम ह निर्देश विरोधको माप्त नहीं होता है। नपुंसकतेदी सासादनमञ्जाकि 🚅 🐃 💍 वसंख्यातवां याम --- ०

्षदस्य ब्रह्माणपरःवणा रोचमंगा । - चारह चोदसभागा वा देसूणा ॥ ११३ ॥

सरपानस्याण-विद्वासन्दियःबाण-वृद्धण-वृत्याय-वृद्धीःस्वयपित्यदेवि वृद्धयम्मन्दिः वीदाणागद्दसन्तेषु विष्टं स्थापानसंगरःब्रियामा, विध्यन्तमान्य संवर्धाद्वमाः, बद्धय-व्यादोः अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति । एदाणीक्रदेनिवित्यसायन्त्रमानिष्यादे । दन्दरद्भ गेन्द्रोद न्याद द्व चोदम्बासा देवणा काणिद्वा, वर्षमानद्वित्वस्यामानव्याप्यव्यवसादे द व्याद्वारं छ-पेषा-वृद्धायहःस्वितित्यद्वराक्षेत्रमानवान्त्रमादे । आस्तित्व पनिर्दादे वाद वर्ष्ट्यस्व

कोतिस, वेस्स्य-तिस्वियावं वेष-मवास्त्रवाहम्याज्यवद्वस्योवद्यंत्राहो। सम्मामिन्छादिट्टीहि वेयडियं खेर्च कोनिदं, स्रोगम्य असँगे ज्जिदिसागों ॥ ११४ ॥

एदान गुचरम बहुमाववस्यका श्रेषमंत्री । सन्यासमादान्द्रीरहार रिज्ञान्त्रे । बदण-कराय-वेदनिवयविज्ञेदि वर्तुनचेदनममानिन्द्राटिहारि नीर वार जिन्हे ने नालस

्रदर शुप्रकी यर्तमानकालिक क्यर्शनप्रकण्या क्षेत्रप्रकण्यां करणाव है ३

सरपानरपरपान, विशासनस्थान, विश्वा, सन्य और दिशिकारवर्णक कृ सम्योगी सारोग्नारयण्यदि अधिक कार्मान वीर साराग्नार कार्योश सारोग्नारयण्यदि अधिक कार्मान वीर साराग्नार आधि कार्योश कार्योश के हिंदी है। स्टार्टिक कार्योश का

मधुसकोदरी सम्यागिमध्याद्यात श्रीकोले कितना क्षेत्र करते किए है ! ही कहा

अमेल्यात्वा माग रपर्श्न किया है ।। ११४ ॥

इस स्वर्णा यमेगामवाधिक कार्यमध्यायका क्षेत्रके स्थान है। स्वयाजनस्य न विद्यादक्षण्याम, सेर्मा, वचाव और वैविधिकप्रवर्णानम क्युकावेडी साथ जिल्लाएं क्षेत्रोंने स्रतीतवासमें कार्याकारोक साहि सीव को वेडिंग कराव्याका अन्, रिकारी इस

⁴ prefieren & Aniatembelteurt ein in fe. 4 .

संगेरजदिमामा, तिरियरोगस्य संगेजदिवामा, अद्वारज्जादी असंगेरजपुरी, ति 👈 🛴 पापणादी । सार्वतिय-उत्तरादा सन्ति ।

असंजदसम्मादिष्टि संजदासंजदेहि केवडियं क्षेत्रं फीनिदं, हं • असंखेज्जदिभागो ॥ ११५ ॥

> एदस्य गुचस्य बङ्गायपरुषया सैन्त्रंगा । छ चोदसभागा देसुणा ॥ ११६ ॥

सत्याणसत्याण विद्यासविद्यायाम चेदण क्याण वेत्रविद्यामणी गेदीह गाँगमाहत्र जदसम्मादिष्टि संजदान सदिद निष्दं स्थापाममंग्रेड अदिमागी, निर्मान मनिद्यं सामी, अद्वादकादी असंगेड जमूनी । एमी 'बा' मरहें। । मार्गिनियानियदि ए गेर मार्गी देखा। कीमिदा, अन्तुद्कणादे। उत्तरि निरिक्तार्मजद्यम्माहि नंजदानंजद मामी देखा। कीमिदा, अन्तुद्कणादे। उत्तरि निरिक्तार्मजद्यमाहि नंजदानंजद गमणामावा। उववाद्यदं पश्चि। णवरि अमंजदममाहि उत्पादिहीह उववादगरिगदेदि । इ

पमत्तसंजदपहुडि जाव अणियद्वि ति ओवं ॥ ११७ ॥

संख्यातमां माग, भीर अवृत्रहें गिले त्रलंभ्यातमुणा भेत्र रणतं क्रिया है। वर्गोक, यहां रर्गे स्वितिको प्रधानता है। यहां पर मारणा लिकसमुद्धान और उपयाद, य हो। यह नहीं होने नपुमक्तेदी असंयतसम्बन्धि और संयतास्थन जीवोंने कितना क्षेत्र

किया है ? लेकिका असंख्यातवां माग स्वयं किया है ॥ ११५ ॥

इस स्वकी धर्तमानकालिक स्पर्धानप्रकपणा क्षेत्रप्रकपणाके समान है।

उक्त की बोने अतीत और अनागतकालकी अपेश कुछ कम छह बटे ची.

साग स्पर्ध किये हैं ॥ ११६ ॥ स्वरुवानश्यस्थान, विहादयस्थान, वेदना, क्याय और प्रेक्टियकप्रपतिन नर्ज

सक्येदी असंधतसम्पर्धाष्ट और संधतासंधत अधिने सामान्यत्रोक आदि तीन सहिकी असंध्यातयों माग, तिर्वालोक्स संख्यातयों माग, तिर्वालोक्स संख्यातयों माग, तिर्वालोक्स संख्यातयों माग, और अमादिलोक्स संस्थातयों से एवं स्थानि हुए की एवं से प्राप्त क्षेत्र हैं। मारणातिकपद्यदिणत उक्त जीवोने हुए की एवं बेट वीद्र (है) माग पर्या किये हैं। मारणातिकपद्यक्ति उत्तर असंवत्तराम्पर्धि और संवत्तरासंध्यति त्रित्तर क्षेत्र होते होते हैं। स्थानिक अध्युतकर्मेत उत्तर असंवत्तराम्पर्धि और संवत्तरासंध्यति तिर्वलोक मागला अमाय है। यहाँ पर उप्तान होते होते हैं। विशेष संवत्तरासंध्यति सामान्यत्रोक्ष मादि चार लोका असंस्थातप्रकृष्टि जीवोने सामान्यत्रोक्ष मादि चार लोका स्थानिक्ष संस्थातप्रकृष्टि स्थानिक्ष संस्थातप्रकृष्टि स्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि जीवोने सामान्यत्रोक्ष माति चार लोका स्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि जीवोने सामान्यत्रोक्ष माति स्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि जीवोने सामान्यत्रोक्ष माति स्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि जीवोने सामान्यत्रोक्ष माति स्थानिक संस्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि जीवोने सामान्यत्रोक्ष संस्थानप्रकृष्टि स्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि स्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि जीवोने स्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि जीवोने स्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि जीवोने स्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि जीवोने स्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि स्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि स्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि स्थानिक्ष संस्थानप्रकृष्टि स्थानिक्ष संस्थानिक्ष संस्थानिक्य संस्थानिक्य संस्थानिक्ष संस्थानिक्य संस्थानिक्ष संस्थानिक्ष संस्थानिक्ष संस्थानिक्य संस्थानिक्य संस्थानिक्य संस्थानिक्य संस्थानिक्य संस्थानिक्य संस्थानिक्य संस्थान

उक्त नपुंसकनेदी जीवोंमें प्रमक्तसंयत गुणशानसे लेकर अनियुधिकरण गुणसान क्र प्रत्येक गुणसानवर्धी जीवोंका स्वर्धनक्षेत्र ओषके समान लेकका असंस्पावन् भाग है।। १९७॥ पपने तेज्ञाहराभागारी ओवर्ष ज जुज्जरे १ ण, सुचै पर्विवनसाय विणा साम-ष्णिकिरेमारो । सेवं चितिय दचवं ।

अपगदवेदएसु अणियट्टिपहुडि जान अजोगिनेत्राले ति ओर्घं ॥ ११८ ॥

एदस्स सुचस्स बहुमाणादीदकालगरूवमा ओपादो ण भिवनदि वि सुषे ओप-मिदि भणिदं।

सजोगिकेवली ओषं ॥ ११९ ॥

एमजोगी किन्न करो १ ज, पुरुक्तिन सजीमिजेयस्स अरीर-यहमानकालेसु मुख्यानावारी एमजीमचाणुववचीए । प्रस्त नि सुनस्त अरथी सुनमी वि न सिंचि सुरुवारी

एनं बेदमग्गमा सन्ता ।

श्चेका - ममच गुणस्थानमें नयुंतकपेशी जीवींके तैजल और माहारकसमुद्रातका भमाव दोनेसे सुत्रीक भोगवना नहीं घटन होता है है

समाधान - नहीं, वधींकि, खुवमें कक दे नों पद्भिरेल्पें की विवश्के विना सामाध्य निर्देश किया गया है।

द्योप पश्चीका स्पर्धनक्षेत्र विचार बरके बहुता खाहिए।

अपग्रदेरी बीर्वोमें अनिष्ठतिकरण गुनस्थानते केहर अपीमिकेवधी गुगस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्गी जीवींका स्वर्धानधेत्र शोषके समान है ॥ ११८ ॥

इस सुचक्की धर्ममान और भनेतनालसम्बन्धी सारीनद्रवयमा भोगस्यरीनप्रवयमासे भिन्न नहीं है, इसलिट सबर्धे 'भोग' यह यह बाहा है।

चयों नहीं किया है

सुमाधान-नहीं, सर्वावि, अमस्तविताहिके होत्रवे सर्वाविवेदहांके क्षेत्रके अतीव भीर दर्तमानकल्में समानताका सभाव होनेसे बक्वागवना नहीं वन सकता है।

इस स्वका भी भर्य सुयम है, इसहित विरोध कुछ भी नहीं कहा करा है। इसमकारसे वेदमार्यना समान हुई।

र अवद्दरेदानी च सामान्ये के स्वर्धेनन । स. ति. १. ८.

छक्खडागमं जीयद्वाणं

[१, १, १२०, कसायाणुवादेण कीधकसाई-माणकसाई-मायकसाइ-लोभकसाईसु मि**ञ्छादि**हिपहुडि जाव अणियहि त्ति ओघं ॥ १२० ॥

एदरम सुचस्स अदीद-चट्टमाणकाले अस्सिद्ण परूवणे कीरमाणे फोसणमृलोपादी ग केण वि अंसेण भिज्जीद चि ओचमिदि सुचवयणं सुद्ध संबद्धं । तदी मूलोघपरुवणं सुद्ध

. प्रमालिय एत्य सिस्सार्ग पडिबोहो कायच्या ।

होहगयविसेसावबोहणहमूत्तरमुत्तं मण्णोर् —

णवरि लोभकसाईसु सुहुमसांपराइयउवसमा सवा ओर्घ ॥१२१॥ इदो ? ओपसुरुमसापराइयउवसम-खबगेहिता एदेसि विसेसामावा । सो च वेसेसामाचे सिस्साणं सन्जिदरिसेयच्यो ।

अकसाईसु चहुडाणमोघं ॥ १२२ ॥

कपायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकपायी, मानकपायी, मायाकपायी और लीम-हरायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्यानसे लेकर अनिवृधिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुण-

त्यानवर्धी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओवके समान है ॥ १२० ॥

इस सुत्रकी भर्तात और धर्तमानकालको आधव करके प्रक्रपणा करनेपर रार्शनान-रोगद्वारकी सन भोषप्रमारणाने किमी भी भंदाते भेर नहीं है, इसलिय ' भोष ' पेसा सूत्र-रवन सुसम्बद्ध है। मनपद मूल भोधनकपणाको मछेनकार संमाल करके यद्दीपर शिप्योंकी रिवेरियन करना चाहिए।

सब स्रोतहरायगत विदेशकांके सबबोधनार्थ उत्तर शत करते हैं-

विशेष बात यह है कि लोमकतायी जीवोंमें ग्रह्मसाम्परायगुणस्थानवर्धी उपः

तुमक और श्वयक बीवॉका क्षेत्र ओपके समान है ॥ १२१ ॥

क्योंकि, ब्रोधिनकपित शृहमसाम्परायगुणस्थानवर्ती उपरामक भीर श्राकांसे हत्तापमार्गणाची रुष्टिने प्रकृषित हुन जीवींके कोई विदेशका नहीं है। यह विदेशकाश समाप

राप्यों हे रिए मरीमांति दिकाना चाहिए।

अक्रपायी जीवोंमें उपधानक्षाय आदि भार गुनम्यानवानोंका स्पर्धनक्षेत्र बोबके समान है ॥ १२२ n

१ करावानुगारीय बन्नावनातानी

[.] बदरादानी व हाबहुबीटी शर्वनेत्र ३ व. -

षोसमाग्रममे महिन्युद्वयमाणिकोसमस्वयं णामेगदेसमाहणे वि णामिछात्रेपछत्रो होदि चि चहुडाज्यहेल दीदरागानं पहुन्हे राणहाणाणं गहण होरि । वेसि परूचणा सगमा, जोपनमाणवादी । णाणाशुनादेण मदिअन्णाणि-सुदअन्णाणीसु मिन्छान्द्रि और्प एवं बसायमग्या सनसा। 11 823 11 ेचेच सत्याण-वेदण-इताय-मारणेविय-उत्तवादपरिणद्यदिन्तुद्दम्दन्तिन्त्रमानिनिकः देहीहि वियु वि कालमु सम्बन्धामा, विहार-विजयपरिणदृष्टि अह चारममामा फामिरा, गैन भोषांपदि जुम्बदे । सासणसम्मादिही ओएं ॥ १२३ ॥ भोषो जेण अण्यवचारा मिन्छादिद्विजीचादिनदेण, गेण करमीवरम राच राहमें होदि चि ण णव्यदे हैं जेणोधेण सासणसम्मारिहीणं पगरिमेण पद्मामची अस्ति, तारेन्द्र ंकिसी भी मामके एक देशके महण बरमण्ड भी नामवास्थ्य नामण्ड हो हाल है । इस न्यायहे अञ्चलार 'बनुशयाम' दावान करातावनकाव आहि वी नामां कर्मा व - १६६ च्याचन मुद्रास्त व्यवस्थातः अवस्थान व्यवस्थान स्थाप व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान सुमारमानिका महत्या है। जाता है। जनके व्यवस्थान में स्वत्यमा क्षेत्रके वासन होनेसे हमान है। मानमार्गवाके अनुवादम सरवज्ञानी और शुनावानियोंने निध्यार्थन श्रीका रपर्धनक्षेत्र जोधके समान है ॥ १२३ ॥

वर्षेति दश्यामस्याम, वर्ता, वपाच, माराणानिवनम् कार कववर्षकः रियम् मत्त्ववानी तथा श्वनावानी विश्वाहरि जीवान सन्ति है। बालांस सर्वत्र सन्ति त्या है। तथा विद्वादयस्थान् और हैनि विकास सामा राजा है। चारान सरकार करते या है। तथा विद्वादयस्थान् और हैनि विकास सामा प्रकार करते करते करते हैं प्य है। तथा विहारवायवच्याम मार मात्राच्य ग्यानाचरवारकात आवाव मार क १) आप देशों किये हैं। हरातिय सुवीसः क्षेत्र वह स्वयक स्टास्त आवाव मार क उक्त दोनों प्रकारक अवानी सामादनसक्यक्ति खीक्षोका क्ट्रांट्रेड बार्ड्ड पुर्वे । विश्वादि के.य. सामाहत्वस्थान्त्राह कंच अर्रह केरून अर्च प्रवादक है, देशांनव बहाबर किस ओहका शहर करा इन कहें दह कर इनक समाधान जिल भोषाचे साथ सासाहरूलाश्टर हो जायान कवनास करणार्थ

E B of the Colombia was a property of the colombia and a colombia

गहण । केण सह एत्य पुण पगरिसेण पचासची विज्ञदे ? सासणसम्मादिद्विस्स व बहुमाणकाले चदुर्ण्ड लोगाणमसंखेजनादिमागो, अहाइन्नादी असंखेजनगुणी सगस

खेनवरुंमादो । वीदे काले वि सत्याणेम विण्डं लोगाणमसंविज्जदिमागस्स, विरिय संखेजबदिमागस्म, अहाइआदो असंखेजबगुणस्सः विहारवदिसत्याण-वेदण-कमाय-वेद परेसु अह चोहसमागमचस्स, मारणंतिय-उत्तरादपदेसु वारसेकारस-चोहसमागखेत मादी । एदमत्यपदं सञ्चत्य वचन्त्रं ।

विभंगणाणीसु मिच्छादिट्टीहि केवडियं खेतं फोसिदं, हो असंखेडजदिभागो ।। १२५ ॥

एदस्स सुचस्स परवणा खेचमंगा, बहुमाणकालधंबंधिचादो । अट्ट चोइसभागा देसूणा सन्वलोगो वा ॥ १२६ ॥

सत्यानपरिणदेहि विभंगणाणमिन्छादिद्वीहि वीदे काले विण्हं लोगाणमसंखे मागी, तिरियलोगस्स संसेज्जदिमागी, अट्टाइज्जादी असंखेज्जपुणी कीसिदी । एसं

समामान-सासादनगुणस्यावके भोषके साथ प्रकर्णतासे प्रत्यासति है, प वर्तमानकारमें सामान्यरोक मादि चार होत्रोंका मसंबदानयां माग मीर महारे

इंस्ड-- तो यहांपर किस भोषके साथ मकर्वतासे प्रत्यास**ति है** ?

असंबदानगुष्पा अपने सर्वपश्चित स्वर्शनशेष पापा जाता है। अतीतकालमें भी सरवान भरिसा नामान्यहीक भादि तीन होक्रीका भनेन्यानयां माग, तिर्यग्हीकका संब्यानयां श्रीर अदार्रशासे असंस्थानगुला। तथा विद्यारयस्यस्थान, बेदना, बाराय शीट पैथि करें में बाट केंट को इह (🖧) भागमात्र तथा मारणानित सीर उपपाद, इन दी पहीं में बारद बरे बीइद (है) भीर श्यारद बरे बीइद (है) मागप्रमाच रप्यांनचा क्षेत्र क्षाना है। यह अधेरद सर्वत्र कहना बाहिए।

हिमेरक्कानियोंमें मिष्यारीष्ट जीयोंने दिलना क्षेत्र रार्त दिया है ! सी क्षमंख्यात्वां माग ग्यां किया है ॥ १६५ ॥

यर्गमानवाल्से सम्बन्ध होनेके कारण इस सुवकी स्वर्शनप्रकाश क्षेत्रके समा हिनंगज्ञानी बीबोन बतीत. और बनागत कालकी बरेखा बाट करे पीदर

बीर मरेटोक रुपर्य किया है ॥ १२६॥ क्षक्यानस्वक्यानपूर्वे परिचय विश्वेगवानी शिष्यापति वीर्योने भरीतकाणमें गाम होता करी, टीज होतीया बसंक्यालयां बाग, निर्यण्योदया शक्यालयां बाग, धीर बंदार्थ

क्रमंत्रातनुष्य सेव कार्य दिया है। यह 'वा' शायवा अपे है। विदानवावायान, वे

र विकास केरो क्रिक न्यू को इ.कामधानवयुगानः सही । सपूर्वस्थानाः वा देवेताः, वर्वतानः

सहहो। विहारविदेसस्याण-वेदण-कसाय-वेजिन्यपरिणदेहि अङ चौहसमागा देखलाः मारणंतियपरिणदेहि सञ्जलोगो कोसिदो । सेसं सगर्म ।

सासणसम्मादिङ्वी ओर्घ'॥ १२७॥

इरो १ वहमाणकाले सगसन्वपराणं चडुण्डं लोगाणमक्षरीअदिभागवेण, अहुएः जनारी असंविज्ञायाचेषाः विदे काठे सत्याणस्य निन्दं छोगाणमस्योज्ज्ञात्रभागाचेन, जन्म ज्यादा जारतज्यात्रप्रणात् वात् काण वाष्णात्रः १८० जात्रात्रा राज्याद्वाराण्याः विरियतोगस्स संस्वेजनिभागचेषा, अहुम्ब्जादी असंस्वज्याप्रचणाः विस्तादिनित्ताणः वेदवा-मसाव-वेद्यात्रपदाणं देवणः बहु-वोद्यमागवणं मार्गाविवसः देवण-वाद्य-वाद-वोद्य-

नारवन्तु ना वास्तिवास्त्रावन्त्रस्य क्रिके वि एसवालंबवाणस्वलं सा । आभिणिवाहिष-सुद-भौषिणाणीम् असनदसम्मादिष्टिषहुडि जाव

सीणकतायवीदरागछडुमत्या ति ओघं ॥ १२८ ॥ कराय, और विकित्तिकपद्वपरिणत बक्त जीवाने इत्त वस बाढ वर बाँदद (१०) माग करते हि द करायः, भार पानापकरक्षारणात वका जायान कुछ वस मात वट बावह (११) मान करहा कि । मारणातिकसमुद्रातपद्रपरिणम कुछ जीवाने स्वश्लोक वर्ण्या किया है। बीच अर्थ पिनम है।

ज्ञानकसम्बद्धातपद्रभारमम् कमः ज्ञामान सम्बद्धाः स्पर्धा स्वता हः बार कार प्राप्त हः विभागामी साक्षाद्वनतस्परहोटे जीवाका स्पर्धनम् ज्ञापके समान दे ॥ १९७॥ विमानानी सावाहनसावाहियांचा व्यस्ताहोत को वह सावक राजा व म १५ छ। विमानानी सावाहनसावाहियांचा व्यस्ताहोत को वह सावक राजा व म १५ छ। विभावना साधावनसम्बन्धाः व्यवनात्रः वास्त्रः वास्त्रः वास्त्रः वास्त्रः वास्त्रः वास्त्रः वास्त्रः वास्त्रः वास इ. ति. वर्तमामकालम् साक्ष्रीयः सर्वपकृति कर्णामसेवहीं सामास्त्रतात्रः वादि वार साक्ष्रोतः वार्तः ह ।हः भवभान वालभ त्वकाप स्वपदाक वादानका वका तामान्यता क्वाव वार कावक क्वाव प्यातमें सामके, तथा सङ्गदेशीयों वारांच्यानग्राणितसेवको क्वानेत्वकारमें वदर पावस्व क्वाव क्वाव क्वाव क्वाव क्वाव ध्वात भागत, तथा भदारका वर्षा काराव्याना प्रधानका भागत काराव वर्षा याव वर्षा प्रधान वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्ष मामावरहोडाः आदि सीन् क्षेत्रेकेः असंक्वातम् आगरीः, तिर्धातकके संक्वानके मामारा, सदा निर्माण्यातः व्याद तान जाकाकः भवन्यात्य व्यापतः सावन्यायः व व्यवस्थानः व्यापतः गयः इर्गेड्डिविते असंस्थानमुणितः सेन्नतः, विद्वारयस्यातः, वेदनाः, क्यायः सं. र वेदिन्यस्यानः गयः इ. व. व्याहर (१४) आगरी अपेडा, की प्रकृतित सासाइन सम्पन्धि शुक्रस्थान है स्वर्धेक

रीका — साहरवसाथ दोनेवर राषीम 'ओश' वर झारा बक्त व वेसे बटा श

समाधान — वही. वहाँकि, हारणार्थेड नथानेडाधनक स्पत्रहारीकी सहसाम होनेहर न्याप्रसार १९५८ १९४ मान ६ । अभिनिवाधिकज्ञानी, भेनतानी और अवधिकानिधाँने अनंदनसम्बाहर सुरू-

नेतान का प्रशासन के अपने का कार्यकार के अपने कार्यकार के अपने कार्यकार के अपने कार्यकार के अपने कार्यकार के अप हातादबसन्द्रल्डाचा सादभवीन स्वश्वद स म । ..

'भुज्जदे ।

एदस्स सुचस्स अत्था सुगमा, मुलोधम्ह वित्यरेण परुविद्वादो । तत्य णान-विसेसणेण विणा सामण्येण परुविद्विदि चे ण, सामण्येण परुविदे वि सा मिदि-सुदणाण-परुवणा चेय, मिदि-सुदणाणविदिश्चिल्द्वमत्यसम्मादिद्वीणम्णुवर्लमा । ओविणाणविर्विद्व-सम्मादिद्वीणस्वरंकमा ओविणाणस्स ओचचं ण खुऊदे चे ण, एत्य द्व्यपमाणेण अविपारा-मावा । ओवअसंजदसम्मादिद्विआदिकोसणिह ओविणाणअसंजदसम्मादिद्विआदिकोसणाणं सरिसस्वर्लगदो ओविणाणस्स ओचचं जुः चे चेय ।

मणपञ्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव स्त्रीणकसायवीदरागः छदमत्या ति ओधं ॥ १२९ ॥

. अदीद-चड्डमाणकाले सन्यपदाणमोधसन्यपदेहि सरिसन्त्वलंभादो एत्य वि औषर्च

. केवलणाणीसु सजोगिकेवली ओर्घ ॥ १३० ॥

. १स स्वका भर्थ सुगम है, क्योंकि, मुलेधमें विस्तारसे प्रकारण किया जा सुका है। धैकी—उस मुलेखं स्पर्शनमक्तपणामें तो आनमार्गणाक्य विरोगणके विना सामा-

. श्यसे ही कथन किया गया है है समाधान--- नहीं, क्योंकि, सामान्यसे प्रकारित होनेपर भी यह मतिकान भीर शुत-

कानको ही प्ररूपणा है, क्याँकि, मतिहान और श्रुतहानसे रहित छप्रस्य सम्यग्हीर जीव मही पाये जाते हैं।

र्ह्मंत्रा—स्थाधिकानसे रहित सम्यग्हिए जीव तो पाये जाते हैं। इसलिय अपधिशानके कोचपना मही घटित होता है है

समापान—नदीं, वर्षोक, यदां वर द्रव्यवमाणके स्विकार वा प्रकरणका समाय है। में,प संस्वतसम्बन्धि सादि वीर्योके स्वरानक्षेत्रके साथ अवधिकानी संस्वतसम्ब-कृषि सादिकाँके स्वरानसम्बन्धी शेत्रोकी सद्यासा यांच जामेले अवधिकानके सोधयना पाटत

हो ही जाता है। मनःपर्ययमानियोंने प्रमचसंयतगुणसानसे क्षेत्रर शीणकपायबीतरागटग्रस्य गुणः

स्वान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्वर्धनश्चेत्र ओषके समान है ॥ १२९ ॥ सर्तान भीर वर्तमानकारुमें मनावर्षकानियोंमें संगयिन सर्ववर्षेके स्वर्धनकी स्वेप-सर्विन सर्ववर्षेके स्वर्धनके साथ सरसना वार्ड जानेसे वहाँ वर जी सोमवना मुलितंगन है।

उद्दर्शः स्थानक साथ सरशाना पार जानस यहा पर मा भाषपना सुक्ताना क केदळदानियोंने सुपोगिकदली जिनोका स्पर्धनक्षेत्र ओयके समान है॥ १३०॥

षीसणाणुगमे संजद्दषीसगार गर्ग एदस्स अस्था मुगमो, व्यापन्दि पस्त्रविदत्तादो, केवलगाणविदिश्चमवोगिकेवलीक भावा ओषसजोगियरूनणाणं यहि सामण्या । अजोगिकेवली औषं ॥ १३१ ॥

पदस्य वि अत्थो सुगमा, भोषािह पर्विद्वादो । पुप सुवारंग हिमहो ? ज, सबोरी-अवोरिकेवलीलं बहुमाणादीदकालेण पच्यामधीए अमाबादी समझासायुः

संजमाणुरादेण संजदेसु पमतसंजदपहुडि जाव अजोगिकेवलि 'ओवं' ॥ १३२ ॥

परथ ओवप्रस्वणादी व को वि अदी अधि, विविवस्दर्भन्नमणास्थादे। व परच आभवर बणादा व का 14 सदा आव्या, विवास जिमसामण्यादिविद्या राजदा अस्यि, वीनिमसंजद चरवसंगादा ।

सजोगिकेवली ओषं ॥ १३३ ॥ हरा सदका अर्थ हुनमा है, क्याँकि, भावमें महत्त्व किया जा शुवा है। हुनगे कन

यह मो है कि वेदार बाम हे रहित हाशांतिक प्रतिस्थित बाग्य के प्रधान में प्रवाद । है पर व म जिनोंकी प्रक्रपणाओं है प्रति समानता है। के उत्तर वाति वाति के प्रतिके प्रतिके कियों का स्वयंत्र के व की प्रके समात है।। १३९ व

भोपने मठावेन होनेसे इस खुवका भी वर्ष शुगव है। वेदा — ता किर प्रवर मुक्का भारत किसातिए किया गया है! प्रभाषान मही, क्योंकि, ल्योंकी और अयोगिक वित्यंक वर्गमाव और अर्थान

रेशायान नहां क्यायः, लयामा नाट व्यवसम्बद्धाः व्यवस्य कार वर्णाः कारके ह्याय प्रत्यासिक्तः अशाय होनेसे यह योगयत कार वर्णाः संवयमार्गणाके अञ्चादमे संवतीम प्रमचनंत्रत गुरुत्तानने सेदद अरोति इतप्रकार काममार्गना समाम हुई।

ती पुणसात वह प्रत्येह पुणसात हती श्रीहोहा हरदानभेह स्वेपके हसात है। १३१४ जियाना प्रचा नाम जीवाना प्रधा आवादा प्रचानक वालक व्यवस्था विशेष विशेष अधिक विशेष के विशेष के विशेष के विशेष के संपतीम मयीगिरवरीका रचर्मनक्षेत्र प्रोवके महान है । १२६ ।

र सम्पादनारेन नेर्दालां सरेना मामस्याद व व्यवस्था के सामस्याद के सामस्याद के सामस्याद के सामस्याद के सामस्याद stal alla ate a D sace

पुघ सुचारंमी किमहो ? ण, पुन्तिन्छेहि सह फोसणेग पच्चासचित्रमानप्यदंसन फलचादो । सेसं सुगमं ।

सामाइयच्छेदोवद्वावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदपहुडि जाव अणि यद्विति ओधं ॥ १३४ ॥

एदं पि सुर्च सुगमिनिद ण एत्य किंचि वचव्यमित्य ।

🖖 परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्त-अपमत्तसंजदेहि केवडियं सेतं पोसिदं,

लोगस्स असंक्षेजदिभागो ॥ १३५ ॥

एदस्स बहुमाणगरूवणा खेचभंगा । सत्थाणसत्याण-विहास्वदिसत्याण-वेदन कसाप-वेउन्वियपरिणदेहि चदुण्डं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेचस्स संखेजदिभागी; मार्गितियपरिणदेहि चदुण्डं लोगाणमसंखेअदिमागो, माणुसखेतादो असंक्षेत्रगुणो वीदे

काले फोसिदो । पमचे तेजाहारं गरिय, लद्धीए उपरि लद्धीणममाया ।

र्धका - तो फिर पृथक स्त्रका बारंग किससिय किया गया है !

समाधान - नहीं, वर्षोंक, वर्षोंक जीवोंके रवर्शनके साथ सयोगिकेयलीके रवर्शनके मतामतिके अभावका प्रदर्शन करना है। पूर्यक सूत्रका फल है।

दोष बर्ध समय है। सामापिक और छेदोपस्यापनाग्राद्विसंपर्वोमें प्रमत्तसंपत गुणस्यानमे सेकर अनिः कृषिकरम् गुमस्यान तक प्रत्येक गुणस्यानवर्ती श्रीवाँका स्वर्धनथेत्र श्रीवरे समान है ॥१३४॥

यह गृष मी गुगम है, इनलिए यहांपर कुछ भी बक्तव्य नहीं है।

परिहारविद्यदिसंपर्योमें श्रमण और अग्रमचर्सपर्योने कितना क्षेत्र रंपर्य किया है 🖁 रोहस्य अनंस्थातमां माग सर्व किया है ॥ १३५ ॥

इस सुवर्धा वर्गमानकाशिक स्वर्धभन्नववना क्षेत्रप्रवरणाचे समान है। स्वर्धान स्थरदान, विदारचन्द्रवरयान, येदना, कवाय और वैक्रिविकपद्परिकत इक्त क्रीयोंने सामाग्यमेकि कादि कार सोबोंका अर्थक्यालयां आग और समुख्यक्षेत्रका संस्थालयां आगः तथा मारशाः लियः बर्फरिकत इन्ह ब्राइति मानान्यरोक भादि बार सोडीका भनंबपानवी माग भीर मनुष्यः क्षेत्रसे असंकानगुष्प क्षेत्र अनीनदानमें सार्श दिया है। विशेष बान वह है कि प्रमणगुण-

कुछ हरिययो नहीं होती हैं।

स्टानर्वे टैजनसमुदान थीर भारान्यमुदान, व दो पर नहीं होने हैं, स्वीदि, हर्गिंड उत्तर

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयः उदसमा

[34

खः

मोधं ॥ १३६ ॥

एदस्स सुचस्स अत्यो सुगमो, जोष्टिह परुनिदचादो ।

जहानसादविहारसुद्धिसंजदेसु चदुट्टाणी ओपं ॥ १३७ ॥ चदुव्ह हाणाणं समाहारी चदुहाणी; सा आर्थ भवदि, वहाक्खादमंत्रद्वपुरुष-ाणं परुवणा ओपसरिसा चि जं बुवं होदि ।

संजदासंजदा ओषं' ॥ १३८ ॥ संजयाजुबादेण संजमासंजय-असंजमाणं कथं गहणं होदि १ एमा संजमाजुबादी जममेव परुवेदि, किंतु संजर्म संजमार्यजममसंजर्म च । वेणेदेसि वि गहण होदि । रवें, तो परिस्ते मागणाए संज्ञमाणुवादवबदेतो वा, खजदे है वा, और विश्वरणं व

धरमसाम्पराधिकञ्जदिसंपतोमें धरमसाम्पराधिक उपज्ञमक और शपक श्रीरोटा त्र ओपके समान है ॥ १३६॥ मोधमें महरित होनेसे इस खत्रका अर्थ खुगम है। रथारुवातविद्यादिसंयतीमें अन्तिम धार गुणन्यानवर्धी जीवींद्या रचर्यनथेर

चार स्थानोंके समाहारको चतु स्थानी कहते हैं। वन चारी गुणस्पानोंकी क्याँन

महत्त्वना क्षेत्रके समाम होती है। अर्थात्, वयाक्यातसंवसकाळ मानस बार गुणस्तावोरी महरणा भोषके सरदा होती है, देखा कहा गया समग्रना खाहिए। संयतासंयत जीवांका रुपर्यनधेत्र औपके समान है।। १३८॥ र्देश-स्वममार्गणाहे अनुवाशो संवमासंयम धीर मसंवम, इन रोमीना महस्र केसे दोता है !

समाधान -- स्वममार्गणाके समुवाहरे न वेचल सवमका ही भटन होता है. दिश्व संयम, संयमासंयम भीर असंयमका भी बहन होता है।

र्वेका — यदि वेका है तो इस मार्थवाको सवमानुषाहका नाह देना युक्त नहीं है ?

समापान-नहीं, क्योंकि, ' आध्यन 'वा 'तित्रकत क समान प्राथान्यकरण गाधव लेकर 'संबनातुकारस 'यह व्यवस्था करना युग्ध युग्ध हा जाना है

र अञ्चलकात्रकात्रां अञ्चलकात्र्याः स्वर्धेनक् । सः सि १,००

असंजदेसु मिन्छादिष्टिपहुडि जान असंजदसम्मादिहि ति ओर्घ ॥ १३९ ॥

परं पि सुनं सुगमं, ओयम्हि मिच्छादिहिआदिचरुगुणडांगपरूपणाण परुविदत्तारो। एवं संजननग्रामा सनना ।

दसणाणुवादेण चक्सुदंसणीसु मिन्छादिदीहि केवडियं सेतं पोसिदं, स्रोगस्स असंक्षेजदिभागों ॥ १४० ॥

एदं सुचं सुनमं खेचागित्रोगहारे उचहारी ।

अहं चोदसभागा देखुणा सव्वहोगो वा ॥ १४१ ॥

सरपागत्येहि चवलुदंसिकिमिच्छादिङ्कीहि निन्दं लोगाणमसंक्षेत्रदिमागी, विरिय-टोंगस्य मेंसेज्जदिमागा, अड्डाइज्जादो असंराज्जगुणी: विहार-वेदण-कमाय-वेउन्दिय-

परिनदेहि देखगढ्ढ चाहममागाः मारणांतिय-उत्रवादपरिवदेहि सव्वलीगी पीसिदी ।

अमंपन बीरोंमें मिथपारिष्युणस्थानमें लेकर अमंपनमध्यारिष्ट गुणसान तक प्रापेट गुनस्यानानी अमेवन श्रीतीका स्पर्धनशेष ओपके समान है ॥ १३९ ॥ . यह गुत्र भी शुगम है, क्योंकि, भोषमें मिस्यारिए माहि खारगुणस्थानों से मन-क्याओंडा निष्यत्त हिया गया है।

इन प्रचार संवयमार्गना समाप्त हुई।

दर्जनमार्गनाके अनुरादमे चशुरर्जनियोंने निष्पादृष्टि जीरोनि कितना थेत्र सार्ग हिया है। सेंक्का अनेस्यात्रों माग स्वर्ध किया है ॥ १४० ॥

दर मुच मुगम है, वरों 🔍 क्षेत्रानुयोगप्रारमें इनका अर्थ करा जा पूका है। चभुटर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवीन जनीत और अनागत कालकी अवेधा इछ कम

बाट बंटे बेंदर मान और संशोध राई किया है ॥ रेपर ॥

स्वरूपनस्य कानुदर्गनी निष्यादि अधिन सामान्यसीच मादि तीन हो।चींबा क्रमंन्यात्वा माम, तिवैस्टीदवा संवदातवो माग भीत महादेशीयते भ्यंत्रातगुणा क्षेत्र कार्री हिया है। विद्वारकान्द्रस्थान, वेदना, कवाय और वैजितिकादश्यरियन प्रसाधीयोंने पूछ कर कार बट बे रह (ई.) काम स्पर्धा किये हैं। आरणा निकासमुदान और उत्तपादपद्मितन इन्द्र ब्रीटीन मध्येष्ट मारी हिया है।

> a a more a quarte mana a fe, t, c. क बहुतानुब हुन बहुत्वाक्रम क्रिक्यम्बनानिहासक्यान नामी व्यविद्ववसूत्र मा हिर १०४०

 १, १, १११.]
 भोसणामुगो चनगु-अचनगु-ओप्टिन्निक्तमणस्ट्रं सामणसम्मादिडिणहाडि जान सीणकसायगीदरागछदुमत्या ओषं ॥ १४२ ॥ आपसासवसम्मादिहिबादिसयलगुषहाणाहेना चनगुरंमविषायवसम्मादिहिङ्गा

विहालार्व व कोर्नि सेटी, चन्तुरदेशवनदितिवस्त्रित्वसांद्रणहानाममानदा । के अनुभयुद्रमणीसु मिन्छादिट्टिप्पहुडि जाव र्माणकगायनीदरागः मत्या ति जोषं ॥ १५३॥

पहं वि ग्रुचं सुम्मं, आपिह बिस्मान पन्धिहत्ताहूँ। व व आपपनदिहिन्छा-्र महित्रीयक्षमात्रपटमंत्रमुकहाणाले अवन्तर्रमणीवाहिरानि अस्ति । वास्त्र पटान्य । अस्ति । भारो । तेणेदेशि सध्येशि वि ओपनं शुक्तदे ।

ओधिदंसणी ओधिणाणिभंगों ॥ १४४॥ धगममेदं गुर्च ।

तासादनसम्बद्धि गुणस्पानमे हेक्त धीलक्षाप्वीवससाहस्य गुणस्यन टक मत्त्रेक गुणस्थानवर्ती चहादधेनी जीवीका क्यांनक्षेत्र भाषके समान है ॥ १४२ ॥ श्रोत शास्त्रधारकारति बाहि सम्प्रण गीनात्राचा करित्युची सम्भारकार्यक् भूतरात्राच्या आद सामान्त्र हिल्लाहरू कार्य पर्वाच कार्य के के के कि करते हैं। करते हैं, करते हैं, करते हैं, करते हैं, करते हैं न्त्रीतिहें हिता साताहमाहि गुणस्यामांका अमाव है हेशांति काल कर कर कर सम्मे घटिन हो जाना है। अपसुरमनियोंमें निष्पादृष्टि गुणन्यानेन हेवर शीलक्षादर्शनामा पुणस्थान तक प्राचेक गुणस्थानकर्ती अवधुदराती ओधीका क्रस्टनहेन होती है ६३ ॥ यह त्रव भी स्ताम है, क्यांत, ओसमस्त्रकामें विक्तास्त सम्बन्ध हिस्स स्व ag da mi dune e anno minorem de la compania de la compania esta de la compania esta de la compania del compania del compania de la compania de la compania del co हित स्थापित है से ती
एन है। अवधिरदानी जीवाका क्यानसेच अवध्यानियोह सहत्व हैं है हैं हैं है

केवलदंसणी केवलणाणिमंगो ॥ १४५ ॥ एरं पि सगमं ।

एवं दंसणमग्गणा समता ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-गीललेस्सिय-काउलेस्सियमिच्लिक् ओर्घ' ॥ १५६ ॥

जेण सत्याण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-ज्वेबादपरिणदेहि क्षण्ड-णील-काउकेस्तिः
निच्छादिष्टीहि विसु वि कालेसु सच्यलोगो, विदारपरिणदेहि अदीद-बहमाणेष वि
लोगाणमसंखेजनदिमागो, तिरियलोगस्स संखेलदिमागो, अहुाइज्जादो असंखेल्युणे
बहुमाणकाले वेजन्यियपरिणदेहि (तिण्हं लोगाणमसंखेजनदिमागो,) तिरियलोग्स् संखेन्नदिमागो, अहुाइज्जादो असंखेजनुणो; अदृदि वंच चोहसमागा गीवरा, व अस्त खुल्दे विदार-वेजन्यपदेसु देखण्ड-चोहसमाग्यासणखेलामावा ओषवं ण मार् इदि पच्चपदाणं ण कापच्यं, सुचे पद्विससामावा । सन्त्रलोग्यमेचेण सरिसतमालोगिः आपनुवयनिष्टा

केयलदर्शनी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र केयलज्ञानियोंके समान है ॥ १४५ ॥ यह सुत्र मी सुनम है।

इस प्रकार क्दीनमार्गवा समात हुई।

त्तरयामार्गणाके अञ्चवादसे कृष्णलेखया, नीरालेख्या और कापोवलेख्यायाले मिष्णा इटि जीवॉका स्पर्णनक्षेत्र आपके समान है ॥ १४६ ॥

बार करणा वा १०० ।

रोका-विशास्य न्यस्थान श्रीर शैकि विकासमुद्धान, इन दो परोंमें देशोन गाउ की

बीरह (﴿;) मानप्रमान स्पर्धानक्षेत्रके ध्याप होनेत भोषण्ता ग्राटित नहीं होता है ! समाधान—वेट्या दोवा नहीं बच्यी शाहिष, वर्षीं द, गुवर्धे पर्विशेषणी विश्वाणी स्राप है। अर्थेशेष्ट्रमाण क्षेत्रकी सर्वाणाक्षेत्र के संग्राणा वस ज्ञाता है।

क केम्प्यून तब कुम्मोठकप्रोपकेर्डियां प्राप्तिकः कर्नक्षकः स्पृष्टः ह स. वि. १, ४, ५० वर्ण केर्र विद्याने म्यूट्टेन्ट्या ह से, सी. ५० त.

4

-

सासणसम्मादिङ्गीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं, टोगस्स असंसेज्जदि-भागों ॥ १८७ ॥ [298 एदस्म मुनस्म परुवमा श्रेषमंगो, अल्लोणब्हमाणवादो ।

पंच चतारि वे चोहसभागा वा देसणा ॥ १९८ ॥ सत्याणसत्याण-विहार-वेदण-क्रमाय-विज्वयपरिणदेहि किन्द्र-भील-काउनेहिन्नय-सामणीह तीदे काल तिष्ट लोगाणमृत्रसे अदिमागो, तिरियलागस्य संस्कृतिस्थाना, अहार-व्यादा अवायव्यादामा भागपूर १४४ भागूम भार्यभागपूर्व भागपूर्व भागपूर्व भागपूर्व भागपूर्व भागपूर्व भागपूर्व भागपूर विवादीम् विवादात्रात्रा भागपूर्व १४४ भागूम भागपूर्व भागपूर्व भागपूर्व भागपूर्व भागपूर्व भागपूर्व भागपूर्व भागपू विषया । मारणीतप-उवचाद्विणदृहि किन्द्र-नील-काउलेस्मियमावणहि जहाकम्य देवा पुत्र चन्नारि ये चोहसमामा पासिहा । बार्डमहिता विरिक्तेष उत्तरसमामामण् परिस् ्व एसा कीसणपुरुवणा कदा । देवहितो छ्र्द्रियम् भारणीतवे मेल्डमाणसाम्बागम् गारस्

उत्तः तीनों अञ्चयलेखात्रोंनाले सामादनसम्परहाटि जीशीने कितना क्षेत्र स्पर्ध वा है ? लोकका असंस्थावयां भाग स्पर्ध किया है ॥ १४७ ॥ है। जाताका जातरणाध्या नाम राज करना था क्वर व वर्गमामकालको व्याम करनेले इस स्वकी मक्त्रणा क्षेत्रके समान है।

वीनी अञ्चलेक्यात्रावाले वामार्नमस्यार्टि जीवाने अवीत और अनागन बालको जवेशा कुछ कम गांच बटे चीरह, पार बटे चीरह और हो बटे चीरह माग हमर्थ किये हैं ॥ १४८ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, विहारकारस्यान, वेदना, क्याथ और वैक्शिवकवर्षारिकार हुन्या, भीत और हाणीतहरवायां अध्वारणण्डचाण् वनगा क्याच वार व्यववयव्यव वारणः हन्। वार्षेत्रहरवायां सामहत्वसम्प्रहृष्टि आयोव स्वतिवहात्से सामान्यस्थ स्मार् नात कार्यकार्थवाक स्थानावनसम्बद्धाः व्यावन काराव्यस्य स्थानाव्यक्तिक व्यावन काराव्यस्य स्थानाव्यक्तिक व्यावन काराव्यस्य स्थानाव्यक्तिक व्यावन व्यावन्तिक स्थानाव्यक्तिक व्यावन व्यावन्तिक स्थानाव्यक्तिक व्यावनाव्यक्तिक स्थानाव्यक्तिक स्थानाव्यक स्यक स्थानाव्यक स युवा क्षेत्र रेपहाँ किया है। बाल्यवानी देवोंको छाङ्ग्हर त्रास्की अवसीत सम्बद्धानी सामग्री विता का प्रति । भागा व । भागापाल प्रवास प्रवास का कर पाटका, वास्त्रात वास्त् भार प्रशासकात से वह स्थल मुक्तिस्तात है। शास्त्राध्यक्ष सम्बद्धात थार उपयान प्रदेशत वहाँ द्वित्रों मारको सामाहम्भवा हा नाम्यास्थान का कार्यास्थान विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास बढे बोदर (१४) भाग मीललेरपायल पाँचवी पृथ्योह मारही सामाहमसस्यादाह सीसी इछ दस बार बडे बांदर (ं) भाग, और बाधानहरूवायांत नीतरी प्रांवशेंद नारवी वितारमतामाटां श्रामांन वृत्त कम की कट बाक्षर (" भाग कमां कि है बार्गक भागारमानवर्षण्यास्य वाधान द्राणं काम द्राः चावरः । साम वेपसा वर्णः वर्णः वर्णः वर्णः वर्णः वर्णः वर्णः वर्णः व पति निवरोति उत्पत्त रेलियारः सासाइनस्तरप्रकाष्ट्रं श्रीवीहा रेसवर वर्णान् उनक्षं अर्थस्यः या राज्ञंनमरूपणा की गई है। t ministerioristerioristerioristerio de que la masterio de Carrolle de la como de la com इ क मता : ११११व : दान वाल) बाह्न ।

पुन्तिक्लखेषेण सह जहारुमेण वातस-एकारस-णव-चोहसमागमेसखेलं किण्ण रुम्मीः वि उत्ते ण रुम्मीः, देवाणमप्पणे आउवचित्ससमञ्जो ति पुन्विक्लतेउ-पम्म-सुक्ररुरसाणं विणासामावा । किण्ड-णील-काउलेस्सियितिस्त्य-मणुससासणाणमेहंदिवसु मारणितंपं मेस्ट-माणाणं सच चोहसभागा उवि रुम्मीति चि हेडिल्लखेसेहि सह वारसेकारस-णव-चोहस-मागमेसिखेचं किण्ण रुम्मीदे एत् वितिक्स-मणुसउवसमसम्माहद्वीणं उवसमसम्मकालम्मीते सुद्ध संकिलिङ्काणं पि संवदासंजदाणं व किण्ड-णील-काउलेस्साओ ण हाँति चि गुरूपरे-संवतालावणद्वं तहाणुबदेसादो । देवसु तितिक्स्तमईए उववण्णेसु उववादस्स एकारस-दत-अट्ठ-चोहसमागमेसिखेचं किण्ण रुम्मदे १ ण, किण्ड-णील-काउलेस्साहि सह अस्टिकण पच्छा वाहि सह उववादामावादो । ण च रुस्सा उववादसमाणकालमाविणी ममगणा होई,

गृंका — देवाँसे पके विद्यामें मारणान्तिकसमुद्धात करनेवाले जीवाँके सासाइत गुण-स्थानसम्बन्धा क्षेत्रके प्रदण करनेवर पूर्वोक क्षेत्रके साथ वधाकमसे बारह वटे बौदह (१४) प्राम, ग्यारह बटे बौदह (१४) भाग, और नी वटे बौदह (१४) भागप्रमाण स्वर्शनक्षेत्र वर्षो मही वाया जाना है ?

समाभान — पेक्षा बांका पर उत्तर देते हैं कि नहीं याया जाता है, क्योंकि, देवींके अपनी शापुको मन्तिम समय पर्यस्त अपनी पूर्ववर्ता तेज, पश्च और मुद्ध देहराओंका विकास मर्दी होता है, हमनिष्य उक्त मकारका क्षेत्र नहीं कहा गया।

र्यहा- रूप्त, भीन भीर कापोत स्ट्रायायास तथा एकेस्ट्रियोम मारणातिकसमुद्रात करनेवाल सामादनमध्यादार निर्वय और मानुष्योक सात करे खीदह (१४) मान तो करर कार्यक्रिय पापा जाना है, कालिए उसे अध्यनन उक्त क्षेत्रोके गाथ प्रहण करने पर बारह कर बीदह (१४) मान और भी यरे खीदह (१४) मानुष्याय क्षेत्र करी पर बारह करे बीदह (१४) मानुष्याय क्षेत्र करों नहीं याया जाना है?

ममापान — नहीं, वर्षों कि, उरहासमारक दवाल के विभार अस्तान सोहेशको प्राण हुद भी निर्वेष और अनुष्य उपशासमस्यारणि जीवीके संयानांपनीके समान कृष्ण, नीव और कारोज केरवार्र नहीं होती हैं, इस प्रकारका यक दूसरा गुरुषा अपेशा है, यह बान बन्दतनेके जिब वैमा उपदेश नहीं दिया है।

र्यहा-निर्वेचमन्त्रि उत्पन्न होतेवाले देवीमें उपपन्त्यहण अपारह बटे बीहर, द्या बटे बीहर बीहर महर बटे बीहरू मागममूल क्षेत्र क्यों मुद्दी वृष्य आता है है

समायान-सदी, क्योंकि, हजा, श्रीष्ट और कारोप केदवासीके शाध रहकर पीछे इन्होंके साथ रकान् वहीं पाया कता है।

स्पिरार्थ - देवाँने टीनी अञ्चल्हेरवाएँ अवर्थानकालमें ही होती हैं। बीठे निवस्ती

8, 8, 886.] ष्ट्रोसणाणुगमे त्रिण्_{र-१८०}-सन्उटेरिसयकोसणपरस्वर्ण

आधेषपुरनुचरकालेमु असंतीए बाहारचनिरोहादो। तम्हा सुनुचमेत्र होर्द्द, शिवस्त्रचादो। . सम्मामिच्छादिट्टि-असंजदसम्मादिट्टीहि केनडियं सेत्तं फोसिदं, [२९३ टोगसा असंखेन्जदिमागो'॥ १३९॥

प्दस्स बहमाणपस्त्रणा स्वेवभंगो । सत्याणसत्त्राण-विहारवदिगत्थाण-वेदण कसाय-

डीमेलरण हे। आती है। अनस्य हत्त्व, नील और कार्गतलस्याके लाथ रहतेयाले देशों हे र्धेभवद्शा है। आता है। लगप्त रूप्या, गाव जार का वातवद्रशाक वाद दिवसाव व्याप्त व्यवपृष्ट बंगाय बतलाया, क्याँकि, देवींका मरण में तो अव्यक्तिकालमें ही होता है और म विभावता महाम बतालावा, प्रवासन देवामा बरण म ता मध्यातकालम हा हाता ह आर म दूरी अञ्चल समाप्त हुए विना है। सतः यह बहना युक्तिसम्त ही है कि हुस्स, मीस और कापोत हरवाओं के साथ रहकर वीछे उत्रवाह नहीं दोता है।

दूसरी बात यह है कि लेहवामाराणा उपवाद समान कालगावित्री नहीं है, क्योंकि, हैसरा बात यह है १६ लहरामाध्या जपगर जनान माळगावना नहा है, प्यास, भाषेतहर पूर्व बार जनर कालाव अविवासन लहराक भाषारवनेका निरोध है। रसलिए बाधवरूप पूर्व बार ७७६ कालाव वावधवान ७५४१० नाथास्वरूप (४८१४ है। स्वाट्स स्वीतः हैं। हरदोनसेयका प्रमाण होना चादिए, क्योंकि, वही प्रमाण निर्देश पाया ज्ञाता है।

विरोपार्थ - यहांपर लेख्यामार्थया वयवार्-समानदातः ग्राविनी नहीं है, देसा वहनेका यह अभिमाय है कि जिस महारसे विश्वसित जीवके पूर्व सबकी प्रीकृति पास ण्डमका पह व्यावभाध है कि जिल अकारक विशासन जावक पूर्व अपका छाकृतक प्रधान उत्तर भवको महण करलेड साथ है। यति, योग, आहर कार्न् प्रयासम्ब किन्ती ही सार्ग-उत्तर भवना महण करनक साथ हा भाव, थाग, माहार काव थयासमय किनना हा माग-णारं परिपतित हो जाती हैं, उत महार छेड़पामार्थणा परिचित गर्दी होती है। हसका भार पारचाता हा भाग है। जन मन्तर छरगामानूना पारचाता कहा होता है उससे हैं हारम यह है कि औब जिस छेरवाले मरम करता है उसी छेरवाले हैं। उसम होता है। वस्त्र होता है। वस्त्र होता है। वस्त्र होता है। वस्त्र कारण यह है। कोर इसी नियम है कारण सबसमिक देवों है सववास्त्रकार होता है। पस प्रभाव भाषम ह। भार देवा भाषमध्य प्रदेश भाषमध्य प्रथम भाषमध्य प्रभागका भारतात्र भागा गणा दा देशा भावका १७५५ करणक १९५५ आ बद्ध १६वा गया है। इसका भी मिनियाद युद्दी है कि यहि उपयोह होते के साथ ही तेदयाहे परिवर्धनका नियम प्रवास को बासभाव प्रशास है। कार वर्षात है। वह वर्षात कार्यक व्यवस्था प्राप्तवका। मध्य बत्रहर्ममध्ये हैं। तो सरण करने हे प्रविद्यालमें और उत्तरहालमें विवासित हैरणा है चवरचमाचा हाना, वा भरण करणक प्रकालम ब्यह वचरमलम व्यवसाल स्ट्याह परिचातित हो जामेले खाणार माध्ययना बन जाता, अर्थान, मरबहाल और उपपारणाळहण पार्थाता हा जानत भाषार कार्यवर्थाता चनु आधाः भ्यापः भर्याच्या भाषा वस्त्र आसे शहर वस्त्र भाषेत्र वस्त्र आसे होनेवाली हेट्या आसार वस्त्र आसी । हिन्तु सब द्वाचरकाल जाध्य का जात जार जान कात्वादा लहें वा जादार का जादा र किया विद्याति होता नहीं है। इसिटिए कहा गया है कि मापेर पारप्रतानः हा जान पर भा ल्यावास्थवनं होता नहा दः इसाल्य कहा गया ४ कि मापर-रूप पूर्व भीर उत्तर बालोमें विवस्तित लेखाडा परिवर्तन न होनेसे मापारपना नहीं बन सकता है।

उत्तः तीनों अग्रुभनेस्यानाने सम्यग्निध्याद्दिः और अभयनमम्बन्धः औरोने कितना क्षेत्र स्वरं किया है ? टोकका अमंख्यातवां माम स्वर्ध किया है ॥ १४० ॥ पत राष्ट्र । वर्गमानकाक्षिक स्वरंतनावर्षणा श्रेतवर्षणाक समान है। स्वरंपान हेत संबर्ध प्रवाधनकारक रूपरावक्षक्षणा स्वयंक्षक्षणाक विभाव है। स्वरंधन हेवरपान, पिहारवासस्यान, पेन्ना, रूवाय और वैदिवहण्डेवारक वीना अनुबद्धरावान

ngju R

र तर्ने

रे काम्दिनभ्याद्वासम्बद्धानिकां ब्रह्मानक्ष्यमाम् । सः स्ते ।, ८०

वेउन्त्रियपरिणदेहि तिलेस्सियसम्मामिच्छादिहि-असंजदसम्मादिहीहि तिण्हं सोमाणमसंसे-ज्जदिमागो, (तिरियलोगस्स संखेज्जदिमागो,) अहाइज्जादो असंखेज्जगुणो । बुदो ? पहाणीकपवितिकसरासिचादो । मारणीविय-उक्तवाद्यरिणोदेहि किण्ह-जीलेलेसिययसंजद-सम्मादिहीहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्बदिमागो, अट्टाइज्बाट्री असंखेबगुणी, छट्ट-पंचम-प्रदर्शिहेरो माणुसेसु आगन्छमाणअसंबद्धममादिहीणं पणदालीसजीपणलक्सविक्संग पंच-चत्तारिरञ्जुआपद्सेनुवरुंमादो । मारणंतिय-उववाद्वरिणद्काउलेरिसयअसंबद्सम्मा-दिई।हि विण्हं सामागमसंखेजबिदमाया, विशियलागस्य संखेळदिमाया, अष्ट्रह्मादी असंते ज्ञापुणी, काउलेस्साए सह असंरोक्षेतु दीवेसु पडमपुडवीए च उप्पानमाणसहय-सम्मादिद्विञ्चतसेचम्गहणादो ।

तेउलेस्सिएसु मिच्छादिड्डिन्मामणसम्मादिद्वीहि केनडियं

पासिदं, लोगस्स असंक्षेज्जदिभागों ॥ १५० ॥ एदस्म प्रवा रोचभंगा, अङ्गणवहमाणचाटे।।

सम्याग्निष्यार्थि और मसंयतनम्यार्थि जीवाने सामान्यलोक मादि तीन लोहाँका मसंक्या-तथा माग, (तिर्थन्तोकका संश्वातयां माग,) और अहाईहीयसे असंस्वातगुणा क्षेत्र स्टर्जा शिया है. क्योंकि. यहांपर निर्येष शशिका प्रधानना है। मारवानिकसमुदान भीर उपपाद-पश्यरिक्षत कृष्ण और मीलकेदवायांके असंवतसम्बर्गस्थि जीवांने सामान्यक्षेक्र आहि बार लोकीका भनेक्यानको भाग भीट मगुईद्वीयने भनेक्यानगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, प्रवीकि एरी और पांचरी पृथियोंने मन्त्रीमें भानेशांत अमहार हरण और बील लेहवाहे चारक अलेक्नसक्कार अधिके वैनावीम हान 🖣 🔏 . भौद्रश पाँच राष्ट्र भीर गांवशी पृथितीकी भगेशा चार

1109.

fa.".

काना है। ब्रारकान्त्रिकमञ्जान और उपगादगदगरियत क्षांबंद साहास्यरोध माहि में व **મ**ર્વગ્યાસથી भैत महाद्वीराने मनेश्यानगुणा 48184

देश्याहे साथ धर्मस्यात हीयः र गिति अन्तिवे क्वार्टिन रेक्ट्रा प्रदेश कि

रेबोरेक्कारायों कि क्तर्य हिया है। टोकका 🦫

बर्वतायधारको प्रश्

a a करी १ में उत्पाद १ वरि पाट

ष्रोसमाणुगमे तेउहेस्सियमोसणप्रस्वणं

जह णव चोदसभागा वा देखणा ॥ १५१ ॥ सत्याजयस्वरिवदिहि तेउत्पेरिचयमिच्छादिहि सायगसम्मादिहाहि तीदे काले निर्द सोगाणम्ससंद्रवादिमागा, विश्वित्वीमस्य संस्ववादिमागा, अहारवादी असंस्वत्वातु 1294 भागा, भारणविष-उत्रवादपरिणदेहि णत-दिवह-चेहिसभामा पासिस्।

सम्मामिच्छादिद्वि असंजदसम्मादिद्वीहि केविडयं क्षेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंसेज्जिदिभागो' ॥ १५२ ॥ एदस्स पहल्या सेवमंगा।

अह चोहसभागा वा देसूणा ॥ १५३ ॥

ाड । सत्याणपरिषदिहि देशुच्हाणवीबिहि विन्हं लोगाणमसंखेजबिदमागो, विरिय-

तैज्ञोतेस्पानाले मिध्यारिष्ट् और सामाद्रनसम्पर्राष्टे थ्रौनोने अवीत और अनागत् काटको अरक्षा कुछ कम जाठ बटे चौदह और कुछ कम नी बटे चौदह भाग स्पर्ध किये हैं ॥ १५१ ॥

स्वरधानसरुवावपर्वरेषात तेत्रोलेस्यायाले विस्वाशिट और सासार्वसम्पराष्टि विषय प्रतिकालम् सामानकोकः सादि तीन लोकोकः सर्वकावयां मान् तिपन्तिकः। वारात वाधावर्थका वाकाव्यक्त भाग वाक्यका व्यवस्था स्था । वाक्यक्त व्यवस्था स्था । वाक्यका स्था । व्यवस्था स्था । परपारेणत सन्दां जोवांने हेड बढे चीन्ह (१०) आत स्वर्धां किये हैं।

वैज्ञालिङ्गावाले सम्योगभ्याराष्टि और अर्ध्वयवसम्यग्रिटि जीवाँने किवना क्षेत्र स्पर्ध किया है ? लोकका असंख्यातवां साम स्पर्ध किया है ॥ १५२ ॥

इत जीवोंने अतीत और अनामत कालको अवेशा कुछ कम आउ पटे पीर्ट भाग स्पर्ध किये हैं ॥ १५३ ॥ च्यानपद्वित्वतं सम्याग्याहिः और असंयनसम्याहिः स्न होनां सुणस्चानवर्ता

र तेशक य हर्रण कीमान जनसाव नवेश हैं। अहनीशकर पर से देन्या हरिने विश्वेष हरी, जी, घडर-व देव में सहितार वह ब्राह्मणाटक के हिंचा है। वह उद्योग हिंदि के देव के केवी भी भी स्थाप करणा प्रकार करणा प्रकार है प्रदेश सहितार वह ब्राह्मणाटक के हिंचा कर्मार करणा पर को प्रकार है। प्रकार करणा ब्राह्मण प्रकार प्रकार प्रकार

२९६]

होगस्स संसेज्ञित्मागो, अष्टुाइज्जादी असंसेज्जामुगो । निहार-वेदण-कसाय-वेज्ञिय-मार्णविषपरिणदेहि देशण-अङ्गोहसमागा । उत्रवादपरिणदेदि दिवङ्ग-चोहसमागा देशण पोसिदा । णवरि सम्मामिन्छादिहिस्स मार्गितिय-उनवादा णित्य । सणक्क्रमार-माहिदे तेवलेस्सा अतिय नि जनवादस्स देमूण तिण्मि चोदसमामा किण्म होति १ ण, सोपम्मी साजादो संदोज्जाणि चेत्र जोपमाणि गेत्ग सणक्कुमार-माहिंदकप्पपारमा होर्ग दिग्रु-रण्डाहिह परिसमचीदी । तस्मुशियपेरी तेउलेस्प्रिया किण्य होति ? ण, तस्त हेट्टिम॰ विमाणे चेव तेउलेस्सार्वभवीवदेसा ।

्, संजदासंजदेहि केवडियं क्षेत्तं पोसिदं, लोगस्स असंकेज्जदि-भागों ॥ १५३॥

एरस्स परुवणा खेत्तभंगा, बहुमाणकालसंबंधादी । दिवड्ड चोहसभागा वा देखणा ॥ १५५ ॥

गर्चनानयं मान, भीर अनुगर्देवीयसे असंख्यातगुणा सेत्र रुपक्षं किया दे। विद्वारयन्यस्थान, रहमा, ब पाय, धीर्वाचक भीड् मारणानिकगाइयरिणन उत्तर भीयोन कुछ काम माठ बटे बीहर हैं।) मान बनमें किये हैं। उनमादयश्मरियन उक्त अधिन कुछ कम हेड़ बटे थीनह र्थ) मान बारी किंत हैं। विदान बान यह है कि सम्पन्तिस्वारित मीधोंके मारणानिक

ग्रैहा — भान हमार भीर माहेन्द्रचहपूर्वे तेत्रीलेश्या हेशी है, हरालिए उपपादका ेप मान बढे चीहर (है?) सामममाण स्वरांमधेन क्यों महीं होता है है ममापान-नहीं, क्योंकि, सीधमें और ईशानकश्ये संन्यात योजन ही उत्तर हर सारम् प्रार चे र मार्टम्बरण प्रारम्म होकर हेन् राष्ट्रपर समाग्र हो जाना है। र्रोडो — मानक्षमार मार्थ्य स्थेषे व्यक्ति विमानके भागतक ने मोलस्पायांन श्रीव व्या संत्र है ?

महायान-नहीं, वर्योह, उस करणंक धवन्तन विवानीय ही नेकांत्रवाहे ग इप्रदेश पापा माना है।

तेकोडेरपासले मेयतामयन बीबोने कितना क्षेत्र व्यक्षीकिया है। नोक्का पतिको साम क्यमें हिया है ॥ १-४ ॥ हर्वेज्ञानदारम सम्बद्ध हानम हम स्वर्ष घटपणा क्षेत्रह समान है

है है है है देश का है मानताने पन अविनि इंड इस हेंद्र बड़े चीदह माग व्यक्त हिये है बहर मध्देर दरद बुनवहरून । सन्तरेष्ट्रदेशन । इ.स. - व. १४ . १, ४,

1, 8, 648. 1

सत्याणसत्याणः विहासपदिमत्थाण-वेदण-कसाय-वेउन्नियपरिणद्तउलेस्तियसंत्रदा-संबद्धि तीदे बाले विष्टूं छोगाणमसंदेखदिमागो, तिरियलोगस्य संदेखदिमागो, अङ्गास्त्राक्षे

एदं सुचं सुगमं, ओपन्हि पस्निद्वादी ।

पम्मलेस्सिएस मिन्छादिहिषहुडि जाव असंजदसम्मादिहीहि केव-डियं सेत्तं पोसिद्, ह्येगस्स असंक्षेनदिभागो'॥ १५७॥

अंड चोइसभागा वा देसूणा ॥ १५८॥ तत्याणवरिणद्षमनेतिसयमिच्छादिहि-सासणसम्मादिहि-असंगदसम्मादिहीहि सीदे काले विष्टं लेगाणमसंस्वेनमिन्मो, विरियलोगस्य संसेनमिन्मारी, अञ्चारमानी असं-

. इषरचानस्वर्थान, विदारपास्वर्यान, वेदना, क्याप और वीकावेकपद्मपरिणत तेजी-प्यर्थान १४५८मान, १४६८६ प्रत्याम, ४५७४, ४५७४ मार वाकायक्रप्यप्रस्था करा इंडरायांके संयतासंयत जीवांने असीतवालमें सामात्रकोक सादि तीन क्षेत्रीका सर्वयातमां हर्ताबाह क्षणवास्त्रक काचान नवास्त्रक काचान्यका नाह जान काचाना नवन्यवास माम, तिर्वाहाहा संब्वाहार्थ माम, बीट बहार्रसीयते बसंब्वाह्युका केंद्र कहाँ किया है। भागः (तथन्याककः चार्यवायः भागः, मार् मन्भावायः मार्गम्याद्यमः स्व राथ । वर्षः स्व सर्वानिकसमुद्रातपर्यरिवतं उक्तः शीवाने (इछ कमः) हेद्र करे चीरहः (१४) मागः स्वर्धः किये हैं। इन जीवोंके उपपात्पद नहीं दोता है।

े वेजोलेहरपानाले प्रमचसंयत और अत्रमचसंयत बीवॉका स्पर्वनसेत्र ओपके समान है।। १५६॥

भी पर्में महारित होने से यह सुत्र सुनम है।

प्रवेडचावालाम् मिप्पादिधः गुणसानवे लेकरः असंपनसम्पादिधः गुणसान वकः भेष्यक्ष मुक्तानवर्ग जोशोने हितना क्षेत्र स्वर्च हिता है है छोकका असंस्थावर्ग माग स्पर्ध किया है ॥ १५७ ॥ रत्या ६ ।। ६,० ।। क्षेत्रमरूपणामें कहे जानेके कारण यह सुत्र सुनम है।

पद्मलेड्यावाले उक्त गुणस्यानवर्ती जीवीने अवीत और अनागत कालकी अपे कुछ कम आठ पटे चौदह माम स्वर्ज किये हैं ॥ १५८ ॥

न आठ ४८ पान्य जान राज्य काम र ११ र १८ ११ स्वरंगानवर्ष्वारेवात वस्त्रेरवावाते मिष्याराष्ट्रे, सासाइनसायण्टप्टि भीर मसंवत प्रतर्थात्रपुर्वे अर्थातनसङ्घे सामान्वद्धाः सादि तीन द्धोर्के सांस्थातम् भागः र प्रमस्तायम् रेलो स्ट्यंसस्येयमाणः । सः वि- १, ८ Ħ 18. t, <.

द पदारेशीमध्याद्ध वापनवन्त्रवन्त्रवन्त्रवन्त्रवन्त्रवाचन्त्रवाचनः व्यापः वर्षेत्रवाचा वा देहीनाः

खेज्जगुणोः, विहार-वेदण-ऋसाय-वेउन्विय-मार्त्णातियपरिणदेहि देखणह चोहसभागा पोसिर्दी। उनवार्परिणदेहि देखणपंच चोहसमागा पोसिदा'। णनरि सम्मामिच्छादिहिस्स मारणेतिय-उववादा णरिध ।

संजदासंजदेहि केवाडियं खेतं पोसिदं. होगस्स असंसेज्जदि-भागों ॥ १५९ ॥

एदं पि सुनं सुगमं. खेचाणिओगदारे उत्तरयादो। उत्तमेव किमिदि पुणा उच्चेदे ? ण, भद्रवृद्धिविस्सस्स संभारणहं तप्परूवणादो ।

पंच चोइसभागा वा देसूणा ॥ १६० ॥

सत्याणसत्याण-विद्वारविद्वसत्याण-वेदण-कसाय-वेउध्वियपरिणदेहि पम्मलेस्सिय-संजदासंजदेहि विण्हे लोगाणमसंखेजजदिमागी, विरियलोगस्स संखेजजदिमागी, अहुाइजादी असंखेजजगुणीः मारणंतियपरिणदेहि देखणा पंच चोहसमागा पौसिदा ।

तिर्यंग्लोकका संख्यातयां माग और अदाईडीयसे असंद्यातगुणा क्षेत्र स्पर्ध किया है। विहार-धत्स्यस्थान, धेदना, कपाय, धैकिथिक और मारणान्तिकपद्परिणत पद्मलेद्यायाळे उक जीयोंने कुछ कम आठ घटे चौदह (😽) भाग स्पर्श किये हैं। उपपादपदपरिणव उक कींपोंने कुछ कम पांच बढे चौदह (री) भाग स्पर्श किये हैं। विशेष बात यह है कि सम्यग्निच्यादृष्टि जीवोंके मारणान्तिकसमुद्रात और उपपाद, ये दो पर नहीं होते हैं।

पप्रलेख्यायाले संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यात्वां माग स्पर्ध किया है ॥ १५९ ॥ यह रात्र भी सगम है, क्योंकि, क्षेत्रानयोगद्वारमें इसका अर्थ कहा जा चुका है।

शुंका - पहले कही गई बात ही पुनः क्यों कही जाती है !

समाधान-नहीं, क्योंकि, मैद्दूदि शिष्योंके संमालनेके लिए पुनः उसका महरण किया गया है।

पद्मरेरयात्राहे संयतासंयत जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अरेका 🕫

इस पांच बटे चाँदह माग स्पर्ध किये हैं ॥ १६०॥ क्यस्यानकस्यान, विद्यारयस्यस्यान, वेदना, क्याय और वैक्रियकपद्यश्चिम प्रमः

हरपायाँट संयतामंयतींने सामान्यहोक बादि तीन होत्रीका असंस्थानयां भाग, तिर्पेग्टोहका संस्थातयां माग, थीर अवार्रहीयमे असंस्थातगुणा क्षेत्र स्पर्ध किया है। मारणान्त्रिकसगुकात-बरपरिवन इन्द्र ऑयोंने कुछ कम गांच बट चौदश (🖧) मान स्पर्श किये 🖟 ।

६ बस्मन्त व कहालनहात्रादहृतेष्ट हैदि बहमदह। अवधीदनशाहा वा देशूना हॉटि निवरेत # A. 25. 486.

६ तररादे बद्दरदर्द यस कोहत सहदन क देवून । तो, और ५४९० वयर सम्बद्धि हो वस्त्राम स्थेत्रवालाः वीच स्पूर्वद्यवालाः वा वैद्योताः । व. वि. १. ६.

पमत्त-अपमत्तसंजदा ओधं' ॥ १६१ ॥

सुगममेदं सुने ।

सुकलेस्सिएस मिन्छादिद्विणहुडि जाव संजदासंजदेहि केवडियं सत्तं पोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १६२ ॥

एदं सुनं सुगमं, खेचाणिओगहारे उत्तत्थादी ।

छ चोहसभागा वा देसूणा ॥ १६३ ॥

जन्म संस्थाना ना चुना में उन्हान के उन्हान स्वाधनायिक
पप्रदेशपासके प्रमुख और अप्रमुखसंयत जीवोंका स्पर्धनचेत्र ओपके समान है। १६१॥

यह खूत्र सुगम है।

शुक्कतेत्रमाबालोंने मिष्याद्याट गुणस्थानसे लेकर धंयवाधंयत गुणस्थान सक्र प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है है लेकका असंख्यातवां माग स्पर्ध किया है ॥ १६२॥

यद सुत्र सुगम है, फ्पोंकि, क्षेत्राञ्चयोगद्वारमें इसका भर्ध कह दिया गया है। शुद्धलेश्यायाले उक्त जीवोंने अतीत और अनागृत कालकी अपेक्षा कुछ कम छह

षटे चौदह भाग स्पर्ध किये हैं ॥ १६३ ॥

रपरधानपरपरिणत शुद्धनेदयायांछे विश्ववाहाँह, सासाइनसारवाहरि, सम्यिक्षध्याहरि श्रीर असंपत्तसम्बद्धारि अधिने सामाध्यक्षेत्र आदि श्रीर असेष्या असंव्याताचा आग्र त्रियंक्षोत्रका सव्यातायो आग्र और महाहेद्वियं आंदरपाताया सोश रुपरे किया ■। विदार-पास्त्रस्थान, येषता, काम्य, विश्वियंत्र और सारकानिकारपरपिका आयोने कुछ काम घड बढे बीदह (१) आग्र स्पूर्ण किये हैं। उपपादपश्यरिका श्रीर्ट्स्यायांके विश्ववाहर्थ और सासाइनसम्बद्धि अधिने सामाय्यक्षेत्र आहि चार शोर्च्या असंव्यातयां आग्र और सासाइनसम्बद्धात्राम्या होत्र स्पूर्ण किया है। स्वस्था काम्य यह दे कि विषय निम्यादिष्टि और सासाइनसम्बद्धात्रमाणी श्रीर्थका शुक्करपांत्र साथ वेपॉर्स अपपाद नदी होता है। पंताहीस

र प्रमाणप्रमाविकोरस्यामारुविद्याना । स. ति. १, ८.

२ शुक्रकेर्यविभ्यादम्मादैवयतात्ववतात्वेल्याद्यादेल्यवभागः वर् चत्रदेशमाया वः देशताः । सः सिः १, ४० १ सुद्रस्य य तिहाचे प्रस्थे कच्चोरता शीचा ॥ गोः औः ५४%,

सम्मादिद्वीणं सुक्कलेस्साए सह देवेसु उववादमावा। पणदालीसलक्सजोपणविक्संमेण पंच

रज्जुआयामेण द्विद्खेचमाऊरिय सुक्कलेस्सियमिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्विमणुसाणं चेत सुक्कलेस्सियदेवेसुनवादुवलंमा । ते तत्य म उप्पन्नंति ति कर्ष मन्तरे ? पंच चोहममागुः वेदेसामात्रादे। I: उत्तवादपरिणद्असंजदसम्मादिङ्कीहि छ चोद्समामा फोसिदा, विरिक्त-

असंजदसम्मादिद्वीणं सुक्कलेस्साए सह देवेसुववादुवलंमा । सत्याण-विहार-वेदण-कसाय-वैउन्वियपश्णिदसुक्कलेस्सियसंबदासंबदेहि विण्हं लोगाणमसंखेडबदिमागो, विरियलोगस संखेरबदिमागो, अहुाइरबादो असंखेरबगुणो; मारणंतियपरिणदेहि छ चोइसमागा फोसिरा,

विरिक्खसंजदासंजदाणं सुक्कलेस्साए सह अच्छदकरणे उनवादुवलमा । सम्मामिन्छाः दिद्विस्त मारणंदिय-उववादा णरिय । पमत्तसंजदप्पहुंडि जान सजोगिकेविहां ति ओर्थं ॥ १६४ ॥

छाख योजन विष्क्रममसे भीर पांच राजु आयामसे स्थित क्षेत्रको ब्याप्त करके शुरूछेदयायाले मिथ्यादृष्टि और साखादनसम्यन्दृष्टि मनुष्यांका ही शुक्कुलेखायाले देवाँमें उपवाद वाया काता है।

र्धंका—शुक्रकेरवाषाले तिर्वेच, शुक्रलेश्यायाले देवीमें नहीं रायन्न होते हैं, यह कैसे ज्ञानः ?

समापान-चृकि, यांच वटे चौत्ह मागप्रमाण राजीनक्षेत्रके उपरेशका समाव दै। इससे जाना जाना दे कि शुक्र छेदयाबारे तियेच जीव अरकर शुक्र छेदयाबारे देवीमें नहीं रुपम होते हैं।

रपपाइयदपरिचन गुक्रछेदयायाछे सस्यनसम्याष्ट्रीय आयाने कुछ कम धद बढे भौदद माग (१५) राज किये हैं, क्योंकि, तियेंच समयतमध्यक्ति जीयोंका गुहुलेखाके साथ देवोंमें द्रपताह पाया जाना दे। स्वस्थानसम्यान, विदारयन्त्रस्थान, वेदना, बताय भीर धेकिः षिकपद्परिकत हाज्ञ हेदशयोज संबनासंबनोंने सामान्यलोक मादि तीन लेकोंका मर्मक्यानयाँ भाग, निर्देश्टीकका संबदानको भाग और भड़ाईद्वीपंत असंबदानगुणा क्षेत्र रुपरी किया है। सारका निकारप्रारंकात इक जीवीने छह बड़े बीदह (री) साम स्पर्ध किये हैं, वयीकि, निर्वेश संयतानंत्रनीया शुक्रकेश्याके माथ अच्युतकस्पर्मे उपपाद पाया जाता है। साय-िसच्यादारि राष्ट्रिस्यावारीके मारणानिक और उपगाद, वे दो पद नदी दीते हैं।

प्रमाणसंघत गुणस्यानमे लेकर नयोगिकेवली गुणस्थान तक अत्येक गुणस्थानसर्गी

य प्रयम्परिवर्षे रहेवान्यम् को अवश्यको च स्थापन ना व्यवस्था स. वि. १, ४,

इन्द्रेटरपाराठे जीवींद्री स्पर्धनक्षेत्र ओपके समान है ॥ १६४ ॥ र सबने कहत्वार्यास्य क संबाहारा दृश्ति आसा राष्ट्र बन्नो ना कह आनो पानो है दि ति निर्माणि C. C. 339 1

एदं गुर्च सुगमं, तदो ण किंचि वत्तव्यमत्थि ।

एवं छेरसामग्यम समता ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएष्ट् मिच्छादिट्टिपहुडि जाव अजोगि-केविल ति ओपं ॥ १६५ ॥

षदं पुषं सुपषं, यहमाणादीदकाले अस्मिर्ण जापन्हि परावेदकाहै। अभवसिद्धिएहिं केवडियं खेत्तं पोसिदं, सन्यतामों ॥ १६६॥

सत्थाण-वेदण-कथाय-मारणैतिय-उववादपरिणदेहि तितु वि कार्यतु मन्दर्गनीय पीमिदो । विहार वेडिययपरिलदेहि बहुवाणकार्ल तिष्हं स्तेताणमनंगर-बिद्मानो, निर्दय-स्तेतास्य संरोक्तिदमानो, अङ्गाइत्रवादो अस्तिकतुण्यो, अर्थार-बसागीतु नैनिमगंगर-बहि-मान्येची ताप तस्य अभव्यसांति वि उवदेसादे। । अद्दिल अङ्ग व्यारमभागा पीमिदा।

यह सूत्र शुगम है, इसविय कुछ भी भग्य यक्तव्य मही है। इसम्बद्धार रेश्यामार्गवा समाध्य हुई।

भव्यमानिवाके अनुवादसे अव्यविद्धिक औरोमें विव्यादृष्टि गुण्यानमें लेकर अयोगिकेनली गुणस्थान क्ल अल्बेक गुणस्थानवर्ती औरोका रश्चेनरेव आंचेक नयान है ॥ १६५ ॥

यह राष्ट्र सुनम है, पर्योकि, वर्तमान और धनीतवालको आध्य वरने केन्छें इसवा महत्वण हो पुना है।

अमृश्यसिदिया जीवोंने कितना क्षेत्र स्वर्ध किया है ! सर्वलोक स्वर्ध किया

है। १६६ ।। स्वरमान स्वरंपान, भेरता, कवाय, जारणानिक समुद्राम और स्वरमार स्टर्मान स्वरमान स्वरंपान, भेरता, कवाय, जारणानिक समुद्राम और स्वरमार स्टर्मान स्वरम्पानिक जीवीने तीनी ही। कारोंसे समेक्ष्रक, वर्षा क्रिया है। विराज्य कराय भीत क्रिया क्रिया क्ष्मा क्रिया क्ष्मा क्रिया क्ष्मा क्

इसम्बद्धार भागमार्थमा समाप्त हुई।

द अन्यापुरायेन प्रत्याची विषयाकनायकीरवेकावालाई लाका वीते वयर्वेन्द्र हता. ति. २, ८, ६ सदर्वेद्र करेनीका शहर हता कि. ९, ८,

सम्मत्ताणुनादेण सम्मादिहीसु असंजदसम्मादिहिपहुडि जान सजोगिकेविल ति ओधं ॥ १६७॥

एदं सुचं सुगमं, ओधम्हि विण्यि वि काले अस्सिद्ग परुविदचादो ।

सहयसम्मादिद्रीसु असंजदसम्मादिद्री ओघं ॥ १६८ ॥ एदस्स बहुमाणपरुवणा खेत्तमंगा । सत्याणपरिणदेहि खहुपअसंबद्धम्मादिहीहि

तिन्हं सामाजनसंखेजदिमामा, विश्यिलायस्य संखेजदिमामा, जहाइज्जादा असंखेज्जपुणी, विहार-चेदण-कसाय-चेउच्चिय-मारणंतियपरिणदेहि अङ्क चेहसभागा फीसिदा । उत्तराद-परिणदेहि विन्दं स्रोगाणमसंसेजादिमागा, अद्वादजादो असंस्थेजागुणी, विरिपसीगस संवैज्ञदिमागी । तं क्यं लब्मदे ? बदाउअमणुसख्यसम्माहिशीमु तिरिक्लेमुप्पन्यः

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंने असंगतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे हेका अपोगिकेन्सी गुणस्यान तक प्रत्येक गुणस्यानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओपके समान है।। १६७ ।। यह गृत सुगम है, वर्षोकि, तीनों ही कालेंका नाध्य करके मोधमें प्रक्रपण किया

मानेमु असंराजदीवेसु अञ्छिय साधम्मीसाणकःपेसु उप्पज्जमाणसङ्ग्यसम्मादिद्विष्टुचरीपं

मा चुचा दे ।

खारिकमन्यन्दृष्टियोमे असंयतसम्यादृष्टि जीशोका स्पर्धनक्षेत्र औपके समान है 🛭 १६८ 🗈

इस भूवर्षी वर्गमानकाशिक बरवीनवस्थामा क्षेत्रके समान है। व्यवधानवस्थानपरः परिचन असंबन काविक सम्पन्धियोन सामान्यलेक आदि तीन लोकीका वासंस्थातयो मानः निर्देग्लेक्का संस्थातयां माग भीर भड़ाईडीयन असंस्थातगुणा क्षेत्र स्वर्ध किया है। विहार बारवरयात्र, वेदना, बचाय, धैनिविक भीर मारणान्तिवायस्परिणत उना तीयीन बाड बडे भीत्र (👣 भाग कारी किये हैं। उपपात्रपत्रपत्थितम असंयम् आविकसायावकियोन सामान्य-कोच काई तीन शोबीका मनेक्यातयां प्राप्त, अवाईश्रीयमे अनेक्यात्मका और निर्वेशीकी संकालको साम कार्श दिया है।

र्देश- इक्फान्यन असंयन आविष्टमानगरि अभिनेश स्वर्धनशेष निर्वाली है संस्थात्वे सारव्याच केन वावा आता है है

मुसाराज-निर्देशीये कारण श्रीनेपाँड श्रावापुण्य शावित्रमध्याराथि मंतुःगाँहे अमेरपान डीपॉने नह परके चुन- मन्त्रपत सीवर्ग और ईशानक्सीमें क्याप देतियाँ है

[॥] कम्पनवापुर अस्य कार्यवनप्रकार केर्यान्य कार्यवनप्रकार वार्याच्या कार्यान कार्यान कार्यान कार्यान कार्यान कार्यान turm duerenture: 14, fr. e. c.

मणुस्सेसुप्पञ्जमाणखर्यसम्मादिष्ट्रिगोसिट्खेणं च चेत्त्व सम्मद्दे । एट्टिम खेवे आलिङ-माणे देवणजोपणलक्यवाहरूर्व रञ्जुषद्दं उद्दे सचयमोग छिदिय परसागरेल टरेद तिरिर-स्रोगस्स बाहरूरादो संसेज्जदिमाणवाहरूर्वे चयपद्दं होदि । एवं संजादे जोवनं कर्ष खज्जदे ! ण, उवगदिवरहिदसेसपदस्वेचेहि तुस्तत्त्वसाविस्त्रिय ओयनुववर्षाए ।

संजदासंजदपहुँ जान अजागिनेनलीहि केनडियं सेतं पोसिदं,

होगस्स असंलेज्जदिभागो ॥ १६९ ॥

एदस्स बङ्गाणपरःवणा स्रेषभंगा। सत्याण-विदार-वेद्ण-वःमाय-वेटित्यदिरादेदि खद्यसम्मारिष्टिसंजदासंजदेदि चदुष्टं लोगाणमसंगेरजदिसामो, साणुमग्रेषम् संगे-ज्जिदिमागा, संरोक्ता भागा पा, पोभिदा, खद्यसम्मादिष्टिमंजदार्गजदार्गं दिगिरसेसु अर्थस्-बादो । मार्ग्यावेयपरिणदेषि चदुष्टं लोगाणमगरीक्जिदिसामा, अङ्कार-जादो अर्गानङ्गाणी सीदे काले पोसिदो, पणदालीयजीपणलस्याविवर्गभेग संगोजसम्बद्धाः

शायिकतस्थारियोंते रणीतिन क्षेत्रको, शया वहति व्यवस्य सनुष्योंते जनक होदेशके शायिकतस्यारियोंते रणीति क्षेत्रको प्रदृष्ण करके निर्देग्लेवके श्रीव्यानवे झागममाच वर्णीत-क्षेत्र पापा जाता है।

इस बचा क्षेत्रके निवालनेपर बुक्त कम यक लाग्य योजन बारम्बन ने गहुक्त्रकों इत्यस्ते सातके वर्ग (४६) झारा छेदकर मतराकारते स्थापित बर्ग्स पर निर्वग्रेश के बाहायके संक्यातमें भाग बाहस्यगाला जनमतर होता है !

् श्रंका - येशा द्वीने पर श्र्वीण ओवरण केने घटिस होता !

समाधान — मही, वर्षीकि, जरपाइपदको छोड़ होत्र वहाँके वेरबाँदे काच क्रास्त्रना हैलकर कोवयमा यम जाना है।

सायिकसम्बन्धियों संबवासंबत गुणस्थानमे लेकर अदीविकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्धी जीवोने कितना क्षेत्र क्यां किया है है लेकका असंस्थानसं आग स्पर्ध किया है।। १६९॥

हर गुजरी यर्गमानवाहिक वयाँनवाहण्या क्षेत्रवाहणाणि स्थान है। वरत्यान व्यवसान, विदायपनस्थान, वेद्रमा, काव और दिविववद्यांगिक इंगोपकाइन्यादें रियातायंग्नीत सामायगोन साहि बाह होवीन स्रवेत्यान्य साम और बहुर स्टेन्ड इंग्यानवं मान, स्थाय संस्थान बहुमान क्यां विष हैं, क्योंने, शायिपकादमार्ग शंस्य संयत संयद्ध विवास होना कांग्रम है। मान्यांत्रवद्यांत्रय साधि काम्याय्यं स्वस्था संयोग सामायांत्र आदि बाह होवीन संयोग्न मान मान स्थाय स्वाप्त कांग्रम के सम्याय स्थान स्थायमार्ग स्थाप विचा है, क्योंने, वैनाहील कांग्रम विकार देशकात राज्यस्थान स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्था पमचोदिगुणद्वाणाणं ओघमंगो, विसेसामावा ।

ः सजोगिकेवली ओधं ॥ १७० ॥

ं. एदं सुत्तं सुगमं, ओयम्हि परुविद्चादो ।

ः वेदगसम्मादिद्वीषु असंजदसम्मादिद्विषहुडि जाव अपमत्तसंजर ति ओर्घ ॥ १७१ ॥

्रदस्स सुचस्स जेण अदीद-बहुमाणपरूबणा मृह्योदम्हि उत्तबहुगुणहाण अदीद बहुमाणपरूबणाए तुष्टा, तेण ओषचे जुजादे ।

चवसमसम्मादिद्रीसु असंजदसम्मादिद्री ओर्घ ॥ १७२ ॥

चट्टमाणपर्वयाण सञ्चपदाणे जोचचं होतु लाम, विसेसामावा । अदीद-महत्वणाप वि. सर्याणस्स विरियलोगस्स संखेळादिमागमेचखेतुच्चमादो । विहार-वेदण-क्रवाप-वेजनिय-पदाणं य देवणह-चोह्समागमेचखेतुच्चमहो जोचचं कुउजदे । किंतु मारणेविय-उपगर

प्ररूपणा थोघके समान है, क्योंकि, उसमें कोई विरोपता नहीं है। सपोगिकेवली जिनोंका स्पर्शनक्षेत्र जोपके समान है। १७०॥

यह सुत्र सुगम है, क्योंकि, लोधमें इसका प्रक्रपण किया जा चुका है।

चेदकसम्पर्दिः जीवोमें असंगवसम्पर्दिः गुणस्तानसे हेक्त अप्रनवसंपर्ग गुणस्तान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्यनचेत्र ओपके समान है ॥ १७१ ॥ चृतिः स्य स्वर्का अर्वात और वर्तमानकालिक स्पर्शनप्रनपण मृत्रोपमें बरी गर्र

उक्त चारों गुणस्यानों की अजीत और वर्तमानकात्रिक प्रकृषणाके समान है, इसिंहर मोप एना वन जाना है।

अपिश्वसिकसम्बग्दृष्टियोमें असंपतसम्बग्दृष्टि बीत्रोका स्पर्धनक्षेत्र श्रीपके समान

है॥ १७२ ॥ पुन्ता — वर्तमानवास्त्रिक रणतीनवी सरुपलामें सर्थ पर्वेक मोधपना मने शे रश मार्थः प्रोटि, उसमें कोई विशेषना नहीं है। मनीनवास्त्रिक प्रस्पाम मी सर्थ पर्वेक मेण्यना

रहा भावे; क्योंकि, धर्मानवरुपचामें भी स्वस्थानपद्दश स्रायोनक्षेत्र निर्यायोक्स संस्थानमें भागमात्र पाया जाना है । तथा, विहारवरूवस्थान, वेदना, कराय, भीर येदिरिकररॉडी स्रायेनक्षेत्र कुछ कम थाट कटे बीहरू (हुन) मागवमात्र वाये जानेसे मोयरना बन जाना है।

क् सारीपर-विवतन्त्रतरीयो साम्राज्योत्तर् । सः सिः ४, ८० ५ भीतवस्थितन्त्रस्यक्षातायन्त्रतृतन्त्रस्यातीयते साम्राजीयन् । सः सिः ४, ८०

परिणदाणमोपपं णत्य, ञोषिम्ह उत्तं अह-चोहसमागरीनं मोष्ण चदुर्ष होणाणम-संसेजदिमागो, माणुसरेनादो असंसेन्डागुणमेचपोतणसेनुवर्णमा । इदो १ मणुसगरि मोष्ण अप्यत्य उत्तससम्मचेण सह मरणाणुबरुमा १ ण पस दोसो, मारणीतप-उत्तबादे मोषुल सेसपदेहि सरिसचमरिय चि ओपसुबनचीदो ।

संजदासंजदणहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्येहि केवडियं खेतं पोसिदं, स्रोगस्स असंखेज्जदिभागों ॥ १७३ ॥

एदस्स सुचस्त चडुमाणपस्त्रणा खेचमगा। सत्याण विहार वेदण कसाप नेउलिय-परिणद्वस्त्रमसम्मादिक्व संवद्यसंवदेदि वीदे काले तिष्टं लोगाणमसंख्वन्तदिमागो, विरियलोगस्स संख्यादिभागो, अङ्गाद्ग्यादो असंख्वन्त्रमुणो पोसिदो। मारणंविपपरिणदेदि चदुण्टं लोगाणमसंख्वनदिभागो, अङ्गाद्ग्यादो असंख्वन्त्रमुणो पोसिदो, मणुसग्दीर चेय मारणंविपदंतणादो। सेससच्यमुणद्वाणाणमायमंगो।

किन्तु मारणानिकसमुद्धात भीर उपपाइपद्वारिकत जीवींके शोधपना नहीं बनता है, क्योंकि, मोधमें कहा गया भाठ बटे चीहद (र्रूट) भागमाण क्षेत्र छोड़कर सामाग्यलोक भादि चार छोजींका भक्षेत्रवातयो भाग भीर मनुष्यक्षेत्रके असंवयातगुणे माराणवाला स्पर्धन-क्षेत्र पाया जाता है। और इसका कारण यह है कि मनुष्यतिको छोड़कर मान्यत्र वयदान-सन्यक्यके साथ मरण नहीं राथा जाता है।

समाधान — यह कोई दोच नहीं है, क्योंकि, मारणान्तिकसमुद्धात श्रीर उपचार, इन दोनों पदीको छोड़कर दोच पदीके साथ सरदाता है, इसलिय कोषपना पन जाता है।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपयान्तकपायशीतरागढणस्य गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्धी उपयासम्यग्दिष्टगोने कितना क्षेत्र स्पर्ध किया है। लोकका असंस्थातयां भाग स्पर्ध किया है॥ १७३॥

इस सुनकी यर्तमानकालिक रहानियान्यका क्षेत्रप्रकाणके समान है। रवस्यान स्वरुपान, विदारप्रव्यक्षान, येदना, कथाव और विविधिकरप्राप्तित उपरामस्वयन्ति संवत्तांयत जीवींने सतीतकालमें सामान्यलोक सादि तीन लोकंका ससंस्थातमे भाग, तिर्पेग्लोक्स संक्यातवां सामा और स्वृद्धियोक स्वक्यतत्तुन्ता रोज रचर्च स्टिप्ट है। मार-पातिकसमुद्धातपद्गारिणत उक्त जीवींने सामान्यलोक सादि चार लोकंका सरंप्यात्यां साम और अवृद्धियोज संस्थातगुणा रोज रच्यां क्या है। इवक्य कारण यह है कि मृतुष्य-साति है। उपरामसम्पन्ति जीवोंके सारवानिकसमुद्धात देवा जाता है। रोर सर्प गुण-स्वानींका क्यांनियोज कीवोंके समान है।

१ धेपानां कोकस्थातंक्षेयवायः । सः ति. १. ८.

सासणसम्मादिही ओघं'॥ १७८॥

सम्मामिच्छादिही ओषं ॥ १७५॥

मिच्छादिड्डी ओघं ॥ १७६ ॥ एदाणि विण्मि वि सुचाणि अवगदस्याणि, ओवस्हि परुविदचाव परुवणा ण कीरदे ।

एवं सम्मत्तमग्ग्णा समता। सिण्णयाणुनादेण सण्णीसु मिन्छादिद्वीहि केवडियं खे

लोगस्त अंसंखेज्जदिभागो' ॥ १७७ ॥

एदस्त सुचस्त परुचणा खेचमंगा, समङ्घीणनदृमाणकालचादो । अड चोइसभागा देखूणा, सञ्चलोगो वा ॥ १७८ ॥

सत्याणपरिणदेहि सण्गिमिच्छादिङ्कीहि चीदे काले. तिण्हं लोगाणमसंखेज

सासादनसम्यार्टिष्टे जीवोंका स्पर्जनक्षेत्र औषके समान है ॥ १७४॥ सम्प्रामिष्यादृष्टि जीवाँका स्पर्धनक्षेत्र ओपके समान है ॥ १७५ ॥ मिध्यादृष्टि जीवोंका स्पर्धनक्षेत्र ओपके समान है ॥ १७६ ॥ ये उत्तः तीना है। सूत्र कोयमें प्रकापित होनेसे समगतायं हैं, समीन हन

बाना हुमा है। इसलिए इनशी प्रकरणा नहीं की जाती है। इस बकार सम्यक्त्यमार्गणा समाप्त हुई। संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोंमें मिध्यार्राष्ट्रवोंने कितना क्षेत्र स्पर्ध ह है ! होकका असंख्यातवां माग स्पर्ध किया है ॥ १७७॥

घर्तमानकाशको भाषाय करनेल इस स्वक्षी स्वरातमध्याणा शेत्रप्ररूपणाके समान मंत्री जीवोने अनीन और वर्नमानकालकी अवेक्षा इछ कम आठ वटे चीव माग और मर्बलोक स्वर्ध किया है ॥ १७८॥ ध्वम्यानव्यम्यानपरिवन संबी विष्याद्दश्चि भीयोन धनीनवालमें सागाग्यनोहः भारि तीन शिक्षोक्ष भवंस्थानयां माग, निर्वेश्योक्षका संस्थानयां माग, भीर भगारीगये। मासक्यान तिरिपलोगस्स संखेळदिभागे, अहृध्कादो असंखेज्जगुणो पोसिदो । विहार-वेदण-कसाप-वेडव्यिपपरिणदेहि अहृ चोहसमागा, मारणंतिय-उववादपरिणदेहि सव्यलागो पोसिदो ।

सासणसम्मादिद्धिपहुडि जाव सीणकसायवीदरागछटुमत्या ओघं ॥ १७९॥

एदेसिमोपादो ण को वि' भेदो अस्थि, सांध्यरहिदसासणादीनममाता । असण्णीहि केवडियं सेत्तं पोसिदं, सन्वद्योगों ॥ १८० ॥

सत्याय-वेदण-कताय-मारणंतिय-उववादपरिवादेहि असण्यिहि विद्यु वि अहागु सन्बसीयो पीसिदे। विदारपरिवादेहि विष्टं स्रोपानमसंद्रीउजिद्याणा, निरियसीयस्य संवेजज्ञिद्याणा, अहारज्ञादो असंवेजज्ञ्याणो विद्यु वि कालेनु पीमिदे। विज्ञीनपपरितादेहि पदुष्टं स्रोपानमसंवेजज्ञित्रायोग, माणुसखेषादो असंवेजज्ञ्याणो बहुमाणे पीमिदे। श्रीदे पंच चौहसमाता वि प्रवर्षं में

एवं शिव्यवस्थाया समता ।

गुणा क्षेत्र रुपर्रो किया है। विहारवारवारवान, विश्वा, कथाव, और वैश्वियकपद्वारवान संदी विषयाकृष्टि और्वोने माठ बढे चीहरू (😲) भाग रुपर्रो किये हैं। मारणानिकसमुद्धान और वपपाइपरागित संदी और्वोने सर्वेशोक बग्दी किया है।

संत्री जीवोंमें सासादनसम्बग्धि गुणस्थानसे लेकर शीलस्थायवीवरागठसम्ब गुन-स्थान तक प्रत्येक ग्रुणस्थानवर्धी श्रीवोंका रुपर्रानक्षेत्र श्रीयके समान है ॥ १७९ ॥

सान तक प्रत्यक गुणस्थानवता जावाका स्पर्धनस्थ्य आपक समान ह ॥ रूपर् ॥ इस गणस्थानीकी स्पर्धानमस्पर्णामा भोजस्पर्धनमस्पर्णात कोई केन मही है.

क्योंकि, संक्रियते रदित सातादनादि गुणस्थानीका अधाय है।

असंबी जीवीने कितना होत्र रुपयं किया है ! सर्वेटोक रुपयं किया है । ॥१८०॥
रप्रधानस्वर्धान, वर्गा, क्याय, मार्ग्यानिक और उपयार्पर्यानिक नर्मसं
जीवीन सीनों ही बाटोंसे सर्वटील रुपयं क्याये हिया है। बिहारक्ष्यर्थानस्वर्धार्थन अंबीने
सामायद्योद न्यादि तीन रोजीक कांक्ष्यत्याच्ये साम, तिनेद्यांत्र सं स्थायनी साम, कोर्ट मानुप्यदोक्तरे मार्ग्ययान्युणा रेज सीनों ही बाटोंसे स्थापे विचा है। विशिवस्तर्यात्त्रम् मार्ग्य जीवीने सामायद्येक नादि वार सोनी ही बाटोंसे स्थापे विचा है। विशिवस्तर्यात्त्रम् सामेश्वरात्त्रम् संस्थानस्वर्धक नादि वार सोनीना स्थापेत्रस्यात्वर्थे आम और मनुष्यदेशके

इस मकार संक्षीमार्गणा समात दुई।

र प्रतिष्ठ "कोरिय" इति यात्राः, स प्रती "को मि "इति दात्राः। ९ सब्दिनिः सर्वेशेषः स्ट्राः । स. हि. १, ८.

एक्खंडागमे जीवडाम

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छादिङ्टी ओवं'॥ १८१ ॥ 1 1, 8, 101 उववादस्स रज्जुत्रायामो आहारणिकृद्धे ण स्टब्पदि, तेत्र सन्दरीमी पासणामाया णोपचं जुन्जदे १ ण, सरीरगहिद्यदमसम् बहुमानजीवेहि आऊरिद्यान्बरोगुनरंमारो । सेसं सगमं।

. सासणसम्मादिद्विष्पहुडि जाव संजदासंजदा ओघं ॥ १८२ ॥ एदस्य बहुमागपस्वणा खेचमंगा । तीद्दशालपस्वणं मन्त्रमाणे पासणीपान्हि

चदुन्दं गुणहाणाणं बहा उचं तथा वचव्यं । प्रवरि सामग्रसमादिहिः त्रसंबद्धम्मादिहीहे दवबादपरिणदेहि निष्टं लागाण्यसंखेबिरिमागा, निरियलागस्स संखेरबिरमागा, अहार-च्यादी असंखेजनगुणी पीसिदी। पमत्तसंजदपहुडि जाव सजोगिकेवटीहि केवडियं खेत्तं पोसिदं,

रोगस्त असं**लेज्जदिभागो** ॥ १८३ ॥

्रआहारमार्गनाके अनुवादसे आहारक जीवोमें मिध्याराष्टियोका स्पर्टनसेय औपके समान है।। १८१॥

र्मेद्धा — माहारमार्गनाको अनेदश कथन करनेपर उपरादपदका राजुनमान मायान मर्डी पूर्वा ज्ञाना है, हमन्त्रिए हार्षेटी श्रवमाण होत्रके श्यक्षीनका समाय होनेस सीयपना नहीं बनता है ?

समापान-नदीं, क्याँकि, दारीर प्रदेश करने हे प्रथम समयमें यनमान जीवाँसे व्याम सर्वतीक है याचे जानेस भी घपना बन जाना है। शेष अर्थ सुगम ही है।

माबादनमम्पाराष्टि गुणस्यानमे लेकर भेषनाम्यन गुणस्यान नकः प्रत्येक गुण-स्पानस्त्री बाहारक बीरोंका स्पर्धनक्षेत्र जोपके ममान है ॥ १८२ ॥

इस श्वकः वर्गमानकारिक स्वर्शनप्रवरणमा क्षेत्रक समान है। अनीनकारकी प्रक

का करनेतर स्वर्धनके क्षेत्रमें देखा कि इन वार्ग गुवलानीका कार्रीनक्षेत्र बहा है, हुगी कारसे बहुबा बाहिद । दिशेन बान यह दे कि उपनाश्यक्तिन नानास्त्रसम्बद्धार मीर फंदरमारासारि बांगांन मामान्यतोह माहि नं.न लाहाँहा धमंदगान्यां ग्राम, निवासोहस

बरान्डों मान भीत महार्रहीयने सम्बन्धानगुणा क्षेत्र रुपरी विया है बाहारक इति में प्रमानभ्यत गुजन्धानमें तेका मधीगिकानी गुजन्धान नक

पेड गुनन्यानवनी असीन हिन्ना भेन भाग हिया है ? मोडडा अपण्यानवी नाम

नवंदर क्षेत्रपुरत । तत्र देशराद्धर वृद्धर प्रक्रिका सम्बद्ध है । क्रिका क्षेत्रपुर है । क्रिका क्षेत्रपुर है ।

एदस्स सुत्तस्य परुवणा अदीद-बहुमाणेहि ओघतुल्ला । णगरि सञ्जोपकेवली पदर-लेगपूरणपदा णत्थि ।

आहारएसु कम्मइयकायजोगिभंगों ॥ १८४ ॥

क्दो ? फम्मश्यकायजोगीतु सच्चेतु अणाहारिनुवर्तमादे। । अजोगिअणाहारिषरूजणहमुख्यतुत्तं मणीर्-

णवरिविसेसा, अजोगिकेवळीहि केवदियं सेतं पोसिदं, लोगस्स असंखेजजदिभागो ॥ १८५॥

एदं सर्व सगर्म ।

(एवं अ.१.११सग्यामा समत्ता)

एवं क्रीसणाणुगमी वि सम्मत्तमणिशीगहार ।

इस मुक्की प्रकाश क्षतीत और पर्नवान इन, देखों कार्यार्थ वेशरा वेशवहरूतके समान है। विदोष पात यह है कि संयोधिकेयरीके प्रतर और शिकपृश्यलगुडात, वे देश पर महीं होते हैं।

अनाहारक श्रीवेंने संभवित गुणस्थानवर्ती श्रीवेद्या वर्ण्यनवेद दार्मणदाय-योगियोंके क्षेत्रके समान है 11 १८४ ॥

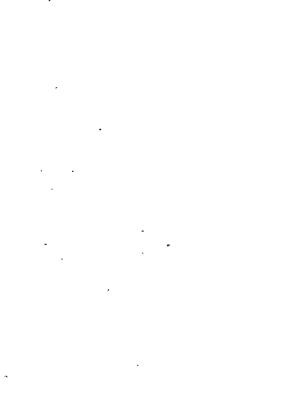
इसकां कारण यह है कि सभी कार्मणकाययोगियों के समहारक्यमा पाण कार्या है । भगादारी भयोगित्रियके रचनीयरेजके प्रकाण करनेके लिए उत्तर गृह बहुने हैं — विदोरं बात यह है कि अयोगिकेयलियोंने कितना क्षेत्र स्पर्ट किया है ! लेक्स

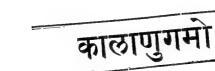
असंख्यादवां भाग स्वर्ध किया है ॥ १८५ ॥ यह सम सम्बद्ध ।

(दस प्रकार बाहारमार्गका समान दुरे।) इस प्रकार स्पर्धनानुगम नामक अनुयोगदार समान हुआ।

र बनागुरनेत्र किनाशिक्षिः वर्गकोदः स्ट्राप्टाः कालायवतन्त्रपादिकिरेनस्पारनदेशसम्पः, स्ट्राप्ट स्ट्राहेतमाम् वादेशीयाः असोधिनवकिना केन्द्रवातस्त्रेतसम्बद्धाः वर्गकोद्धे वा ३ व. वि. २, ८०

द बारी गृरे दक्षियां को परवालं क्षेत्रमायः । छ. छि. १, ४.









सिरि-मगवंत-पुष्कदंन-भ्दविः पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-चीरसेणाइरिय-विरद्दय-धवटा टीका-समण्णिरो

पढममंहे जीयहाणे कालाणुगमो

षाम्मवर्रःङ्कतिकां' विवुद्धसम्बर्धमुनंबर्षमणं । णमिजन उसहसेनं कारुविक्षेयं भविस्मामा ॥

कालाशुममेण दुविही णिद्देसी, ओपेण आर्देमेण यं ॥ १ ॥ णामकालो ठवणकालो द्रष्यकालो भावकालो चेदि कालो चटनिको । राष नामकालो णाम कालसदी। कर्ष सद्देश अप्पाणं पढिवाजादि चे, ज एस दीमा; में-परप्रायममण्डमार-

कर्म इर करांक्त उचार्ण, सर्व बर्गाचे जानवेवाले, और धरन सर्दन करांच्य सरा वरित, देश प्रवासिक सवास्तर मानवार करते वह बालानुवास्तर करते है ।

कालानुरामसे दी प्रकारका निर्देश हैं, जोपनिर्देश और बाददानिरेंग ॥ रै ॥ नामकाल, स्थापनाकाल, प्रत्यकाल, और आवकाल, इस अवारसे काल कर महारका है। देनमार 'बाल 'इन प्रकारका होर नामकार करताना है। रीका - हाम् ई ते अवने आएका शतिपारित करता है ?

प्रभाषात — यह कोई होच नहीं है, क्योंब, सार्व्ह दव-परस्वासासक स्टान्ट्ड f mal ential . Gerauftaben fin ein

trace by named to ove or the e ain negag in fafen mint da dann a m

पडिवादीर्णंग्रवरुंमा । सो एसो इदि अण्णम्हि बुद्धीए अण्णारीवर्णं ठवणा णाम

द्विद्दा, सन्भावासन्भावभेदेण । अणुद्रत्तए अणुद्र्दस्स अण्णस्स सुद्रीण स सन्भावद्ववणा । तत्व्यद्विरिचा असन्भावद्ववणा । तत्य सन्भावद्ववणा । तत्व्य सन्भावद्ववणा । तत्व्य सन्भावद्ववणा । क्रिय-इतिद-इजिट्र-भ्रह्रित-क्रिट्र-इजिट्र-भ्रह्रित-क्रिट्र-क्रिट्र-क्रिट्र-क्रिट्र-क्रिट्र-क्रिट्र-क्रिट्र-स्विद्-क्रिट्र-क्रिट्र-स्विद्-व्यक्ति वि सुद्विद्-विक्र य । आग्नमदी क्राल्पादुवज्ञाणमी अणुव-प्रविद्यक्ति द्विद्दी, आगमदी णोआगमदी य । आग्नमदी कालपादुवज्ञाणमी अणुव-णोआगमदी दव्यकाली जाणुगवरीर-मविय-चल्वदिरिच्नेभेदण तिविद्दी । ताय जाणु-णोआगमद्वयक्ति सविय-यव्यक्ति स्वयक्ति क्रिय्र-विक्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्रिट्र-स्विट्-क्ष्यक्ति हो। सो वि बहुता पुन्न प

प्रतिपादक शास्त्र पाये जाते हैं। ' यह यहां है' इसप्रकारसे सम्य परतृमें युद्धिके द्वारा भं आरोपण करना स्थापना है। यह स्थापना सद्भाय और अस्त्र प्रेम के अहसे दो प्रकारण अस्त्र एक स्थापना है। यह स्थापना सद्भाय और अस्त्र दो प्रकारण अस्त्र एक स्थापना है। उनमें स्व प्रकारण अस्त्र प्रकारण करने यह स्थापना होती है। उनमें से एक स्वापन्य प्रकारण अस्त्र है।

कागम और नोमागमके भेदसे द्रध्यकाल दो मकारका है। कालथिययक माध्र बायक विश्व पर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित और आगमद्रप्यकाल है। बायकदारीर, और तद्य्यतिरिक्के भेदसे नोमागमद्रप्यकाल तीन मकार है। उनमें बायकदारीर नोमा द्रमण कागी, वर्तमान और स्वक्त भेदसे तीन मकारका है। यह भी पहले बहुत मकर्गण किया जा शुका है, इसलिय यहांपर शुनः नहीं कहते हैं। स्विप्यकालमें भी कालमामुक्य कायक होगा, उसे भाषीनोमामद्रप्यकाल कहते हैं।

को दो प्रकारके गंध, पांच प्रकारके रस, आठ प्रकारके स्पर्ध और पांच प्रक वर्णसे रहित है, कुम्मकारके बककी अधरतन शिद्धा या ब्हिलके समान है, वर्तना ही जिल्

१ भा प्रती "पर्देशियादीय-"। क प्रती "पवादीय " एति पातः ।

र वन्त प्रजाः । वस्यबद्धणा वर्षेवस्थानादिशत्त्र्र्येः विश्ववासारेशितं काठो नाम । १शि पारः। वेस्तररात्रावः वेषवं व्यवस्थानावाः ररहप्योचर्च थियाचं प्रशिवाति, व तु मृत्येपावः। व वरी स्थार-रिपानपूर्णः च शि विराहत्वस्यते । वेन वर्षशाह्यानस्य बुध्यिश्वे । वा प्रती व वरहरशस्यांने नोपत्रस्य

६ मन्ति " मणिवेदः वेदम- " इति पातः । म नती " मणिवेदः " इति पाता नोतकन्यते ।

अत्यो तन्द्रदिरिचणोआगमदन्त्रकालो' णाम । वर्ष च पंचतिवपाहढे-काली ति य ववरसी सन्मावपहत्वजी हवह गिण्यी 1 बष्णापदेसी अवरो टीहेकराई ॥ 🕽 ॥ बारो परिगाममंत्रो परिणामो दस्त्रग्रहसंस्त्रो । दोण्हं एस सहाओ काली खगमगुरी नियदी ।। २ ॥ ण य परिणमह सर्व सो ण य परिणानेड अञ्चनञ्जेहि । भिनिहपरिणामियाणं हवड सहेऊ सपं काली ॥ १ ॥ छोपापासपदेसे एकोलके जे हिया दू एकोलका ।

> रयणाणे रासी इव ते कालाय मुजेयन्या ॥ ॥ ॥ जीवसमासाए वि उसं-

छप्यापविद्याणं अत्याणं जिलासीबहटाणं । . आणार अदिगमेण य सदहणे होह सम्मर्चे ॥ ५ ॥

लक्षण है, और जो लोकाकाश्वमाण है, पेले पदार्थको तद्वपतिरिक्तनीभागमहत्त्वकास कहते हैं। वंद्यारितकायप्राधनमें कहा भी है-

'काल' इस मकारका यह नाम राशाक्य निरायकातका प्रकपक है। और बह निध्यकालद्रम्य भविनासी होता है। दूसरा स्ववहारकाल अल्प्स और प्रमंश होनेवासा है। सवा मावसी, परंप, सागर आहिके रूपसे बीवंदाल तक स्वावी है ॥ १ ॥

व्यवद्वारकाल पुत्रलोंके परिणमनसे उत्पन्न होता है, और पुत्रलाहिका परिवास प्राप्तकारके द्वारा होता है। दोनांका पैसा स्वभाव है। यह व्यवहारकास शक्तमंगर है, वरण्य निधयकास नियत मर्थान् भविनाशी है ॥ २॥

यह कालनामक श्वार्थ न तो लये परिणमित होता है, और न अग्रको अन्यदयसे परिणमाता है। किन्तु स्वतः भाना प्रकारके परिणामाँको प्राप्त होनेवाले प्रश्नायाँका काल सर्व सहित होता है ह र ह

लोशाबाहारे एक एक महेदापर रालांकी शाहिके समान को एक एक कपसे रिएन हैं, वे बालाजु जानना बाहिय ह थ ॥

जीवसमासमें भी कहा है-

जिनवरके द्वारा वपहिए छह द्वारा, अथवा पंच महिनकाय, अथवा वह पहार्टीका भाकारो और मधिगामसे शकान करना सम्यक्त है ॥ ५ ह

१ वहरद्रप्रवृत्त्वभारती वहरवादेश्य अञ्चलको य । अहरहादुरी अहरो बह्यवनमाः व काले कि इ ६ वैदारित, या. १०८, है पंचारित सा १००. duffer, vil. %v. ¥ 4], 2], 964. 4 Ct. 41, 41 4.

तह आयारंगे नि युत्तं--

पंचित्यया य रुज्जीवणिकायकालद्व्यमण्णे य । आणानेज्ये मात्रे आणाविचएण विचिणादि ॥ ६ ॥

तह गिद्धांपछाइरियण्पयासिटतच्चत्यमुचे वि 'वर्चनापरिणामिकया परतापर कारुस्य' १ इदि दच्चकालो परुविद्दा । जीवद्वाणादिसु दच्चकालो ण वृत्तो वि तस्सा ण बोर्चु सिक्षिञ्जदे, एर्य छदच्चपदुष्पायणे अहियासामा । तन्हा दच्चकालो अति धचच्चा । जीवाजीवादिअहमंगरच्चं वा णोजागमरच्चकालो । मावकालो दुविहो, अ णोजागमभेदा । कारुपाहुडबाणजो उवजुचो जीवो आग्रममावकालो । दचकालज परिणामो णोजागमभावकालो मण्णदि । योन्गलादिपरिणामस्स कर्च कालवचरसो? ण

उसी प्रकारसे वाचारांगमें मी कहा है-

पंच श्रास्तकाय, पदजीविभिकाय, काल्ड्य तथा श्रम्य जो पदार्थ केवल आहा है जिनेन्द्रके उपदेशसे ही ब्राहा हैं, उन्हें यह सम्प्रकृषी जीव श्राम्नविचय धर्मप्यानसे । करता है, श्रम्बात् श्रद्धान करता है ॥ ६॥

सथा शृद्धपिष्ठाचार्यहारा प्रकाशित तत्त्वार्थस्थमं भी 'यर्तमा, परिणाम, पि परत्य और अपस्या, ये कालद्वस्यके उपकार हैं 'इस प्रकारसे द्रव्यकाल प्रकृषि श्रीयस्थान आदि प्रयोगे द्रस्यकल नहीं कहा गया है, इसल्पि उसका अमाव नहीं सकते हैं, फ्यांकि, यहां जीवस्थानमं छह द्रव्योक प्रतिपादनका अधिकार नहीं है। इस 'हरवाल है 'येला स्वीकार करना साहिए।

अध्या, जीव और अजीव आदिके बोगसे यने हुए बाठ मंगकर दृष्यको नीमा हृष्यकाल करते हैं।

शिरोपार्थ — जीय और अजीयकृष्यके संयोगसे कालके बाट मंग इस मकार हैं — १ वह जीयकाल, २ वक अजीयकाल, ३ अनेक जीयकाल, ४ अनेक सजीयकाल, ५ अनेक जीयकाल, ५ अनेक जीयकाल, ५ अनेक जीयकाल ६ जीव पक अजीयकाल १० वक अजीयकाल ६ जीव अनेक अजीयकाल १ (देखी मंगलसम्बन्धी आढ आपार, सन्यः १, १, १ विकास मनेक अजीयकाल १ (देखी मंगलसम्बन्धी आढ आपार, सन्यः १, १, १ विकास मनेक जीयकाल कहते हैं। इस मार्थ अजीयकाल कहते हैं। इस महा सार्थ के होनेयाल वह अध्यक्ष सम्बन्धी कालको वक अध्यक्ष अक्षर होने होने इस महा सार्थ के सार्थ के सार्थ कर्या करते हैं। इस महा सार्थ कर्या करते होने होनेयाल वह के सार्थ करते हैं। इस महा सार्थ करते होने होनेयाल वह के सार्थ करते हैं। इस महा सार्थ करते होनेयाल वह के सार्थ करते हैं। इस महा

धानम और नोजानमंद्रे महंसे भाषकार दो श्रहारका है। कार-विवयक माध्य-श्रावक और वर्गमानमं क्यायुक्त जीव काराम भाषकार है। प्रथ्यकार से जीनत परिवास परिवास नोमानमायकार कहा जाया है। 7

j

ŕ

दोसी, कञ्जे कारणीवयारणिवयणचादी । युचं च पंचरियपादुडे वगहराकालस्य अन्यिक सन्मासहाराणं जीराणं तह य पोग्गटानं च ।

परिवाहगसंमुको बाह्ये निवदेन पण्नले'॥ ७॥ समजो निमित्त बड़ा बळा व बाली नही रिनास । मास रहु अपम संस्कृते वि बाडो पग्यको ॥ ८॥ णिव विदं वा जिन् दुवारिदं हु सा वि यह दुवा'।

पीमाठरच्येण दिया तथ्दा बाटा एकूच्च मने ॥ ९ ॥ दिहै। पत्थ केण कालेण पगर्द है जीआगमदी मावकालेस । तस्म समय आवित्य गर्द स्व-बहेत्व-दिवस-वक्त-नेस्य-वहै अवल-सुक्त्यर सम्बद्धन । कार्य नाम नाम नामान्त्र साई-त्रवाहो । क्षमेनदस्य कालवववत्तो है म, कन्त्रन्ते संस्तायन्ते कर्य-वह कालोविहरूनोहरू

रोहा — पुनल भादि मध्येहे वरिवासके 'काल ' यह गांवा है से संवव है ? समाधान-पह कोई दीन नहीं, क्योंकि, कार्यन कारकद करकारक निकंपकार द्वस्थादि हर्षोके परिणासदे भी काल श्रेकाका कारण कारण कारण का

देशाहिनकायमाधूनमें ह्ययहारकाहका स्थानिक करा थी गणा है। इसाहिनकायमाधूनमें ह्ययहारकाहका स्थानिक करा थी गणा है। विधारमकायमाध्यम व्यवहारकारच कारनाय कहा था गया ह-क्षप्रतिहरत कीर आकाराम्बर्ग विशिष्णकार को विशिष्णकार करें, वह विश्वास कार्यक कार्यक के समय, निरिय, बाह्य, बहरा, माली, तथा दिन और बाहि, सास, कर्नु अवन और स्थायः भागतः वाधाः वर्षः माठाः माठाः स्थाः वर्षः मार्थः स्थाः स्थाः स्थाः वर्षः मार्थः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः विक्षित् देखादि कालः वर्षायस् है। सर्वात् जीलः, ब्राह्मः यसे स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स

वर्गमारदित विर अध्या शिवनी, अरुन् वराव और अवस्पनी, वार सम्मन वन्ताराहत । चर व्यवका व्यवका, व्यवस्य चरव्य कार अवस्थितः, व स स्वक्त अस्य विद्याने । व स स्वक्त अस्य विद्याने ह धीरा — कपर पर्वित भनेन प्रकारने बाह्यस्थि बटावर विस्व बाहल प्रदेश के हैं ? समापान-माभागमभाववालस प्रवेशान है।

प्रभाषाम् मानारामधापम् १००० वर्षाः । १००० वर्षः सास के स्टर , पुन, पूर्व, वर्ष, परवावम, सामरोवम बाहि हर है। पैका - मा पित इसके 'काल 'वसा व्यवस्था केसे हुना ' P. SE . Ami , E.S. 4.2 .

नेनेति कालग्रन्दन्युत्पत्तेः । कालः समय अदा इत्येकोऽर्थः । समयादीगमरवो वुन्तरे-अणोरष्यंतरव्यतिकमकालः समयः । चोद्मरञ्जुआगासपदेसकमणमेतकाले अ

चोइसरज्जुकमणक्समो परमाणु तस्त एगपरमाणुक्कमणकाली समत्रो गाम । अमंत्रेज्य-समए घेतूण एया आवंलिया होदि। तप्पात्रीगगसंस्वेज्जावित्याहि एगी उस्सासणिस्तासे होदि । सचिह उस्मामेहि एगे। योवसण्णिदो कालो होदि । सचिह योवेहि लगे नाम कालो हे।दि। साद-अङ्कचीसलवेहि पाली पाम काली हे।दि। वेहि पालियाहि सुदुचीहोदि।

उष्ट्रासानां सहस्राणि त्रीणि सन्त रातानि च । विक्षप्तिः पुनस्तेयां मुहुर्वे देवत इप्यते (२७७३) ॥ १० ॥

निमेपाणां सहसाणि पंच मूयः शतं तथां। दश चैव निवेपाः स्युर्मृङ्क्तें गणिताः सुधैः (५११०) ॥ ११ ॥

त्रिंघन्म्रहर्ते। दिवसः । महर्तानां नामानि-चैदः स्वेतश्च मेत्रथ तनः सारमटोऽपि च ।

दैत्यो वैरोचनधान्यो वैश्वदेवोऽमित्रित्तपा ॥ १२ ॥ रोहणो बळनामा च विजयो नैश्वतोऽपि च । वारुणधार्यमा च स्युर्माग्यः पंचदशा दिने (१५)॥ १३॥

समाधान-नहीं, क्योंकि, ' जिसके द्वारा कर्म, मय, काथ और आयुक्ती स्थितियाँ

करियत या संप्यात की जाती हैं, अर्थात कही जाती हैं, उसे काल कहते हैं दस प्रकारकी काछ दाष्ट्रकी म्युग्पत्ति है । काल, समय और बदा, ये सद पकार्ययाची नाम हैं ।

समय मादिका अर्थ कहते हैं। एक परमाजुका हुसरे परमाजुके व्यतिक्रम करनेम जितना काल लगता है, उसे समय कहते हैं। अर्थान्, बाइह राजु माहाहामदेशोंके मतिकमण मात्र कारसे जो धीवह राजु मनिकमण करनेमें समर्थ परमाणु है, उसके एक परमाणु मनि ममण करनेके कालका नाम समय है। असंख्यात समयोको अहण करके एक बावली होती है। तत्रायोग्य संस्थात आयारियोंसे एक उभ्यास-निःभ्यास निष्णन्न होता है। सान उभ्यासाँसे पक स्तोकसंदिक काछ निष्पन्न होता है। सात स्तोकाँसे एक छय नामका काल निष्पन होता है। साड़े महतीस स्थासि यक नाली नामका कार निष्यस होता है। दो नालिकामासे पक मुहुन होता है।

उन तीन हजार सात सी तेदसर (१७७२) उच्छासींका यह मुद्रतं कहा जाती tute #

विद्वामीने एक मुहर्नमें पांच हजार एक सी दश (५११०) निमेप मिने हैं हरे! तीस मुद्रनीका एक दिन सर्पान् सहोरात होता है। मुद्रनीके माम इस बकार हैं-

१ राह, र भेरत, १ मेत्र, ४ सारमट, ५ दैत्य, ६ घेरोचन, ७ वैभ्यदेय, ८ ममिहिन्।

साचित्रं पुरस्तक्ष्य दारको दन दन व । चापुर्वनावानो मार्चुरवयनोऽटको निवित्त ॥ १० ॥ विकापः विक्कोनस्य विद्यासी योग्य दन व । पुण्यत्तनः सुरुपर्वे मुद्धार्थे प्रवेशक्षेत्रका मनः (१५)॥ १५ ॥ सम्प्रो पानिदनवीद्वाचा समा स्वतः। चलाहाणे दिवे चानि वदासिक्य व्यक्तिता॥ १६॥

पंचदश दिवसाः पश्चः । दिवसानां नामानि-

नस्या भदा जया रिता पूर्ण च निषयः प्रशान् । देवनाधान्द्रमधेन्द्र। जात्रासी धर्म एव च ११ १७ ॥

९ रोहण, १० वल, ११ विजय, १२ केंक्सच, १६ चाटण, १४ वर्षेयम् और १५ धारमः । वे पैप्रह सहस् विजये होते हैं के १९-१६ व

शुक्र राव्यत क्षान के र र प्यत्य । १ सावित, २ शुक्रे, १ ज्ञानक, ४ यस, ५ वायू, १ कूनाराम, ७ व्राप्त, १ वेडस्प्य, ९ तिवार्य, १० तिवार्यन, ११ विशोध, १९ योग्य, १९ कुण्यत्य, १७ जुण्यवं कार १५ व्याप्य १ ये पहक सन्दे शविते द्वेति है. येवा सामा वार्य है । १५-१५ ।

शांत्रि और दिमका समय तथा गुरुने समान कहे गये हैं। हां, बजी दिमको छर

मुद्दर्न जाते हैं, और बामी राविकी सह मुद्दर्न जाने है । १६ ।

पानुह दिनोंदर यदा पश होता है । दिनोंदे बाम दल कदार है ---बंदा, भन्ना, जया, दिला और पूर्वी, इस बदार दमसे पान विधियों होती है । इन्हें

देवता बमसे बन्द, सर्व, इन्द्र, वाबादा और धर्म होते हैं ह १३ ह

विद्रोप्य — बन्दा आदि तिथियों बास प्रतिवदासे साथ वरवा कार्ट्य कराँ व स्रीवदाका नाम सन्पतियों है। दिलीयका नाम सद्दिगीय है। वर्णायका क्या कराँ नर है। बनुर्धावा नाम दिलातिये हैं। येक्सीयर नाम यूर्य निर्धि है पुन वर्षों वर क्या करिया त्या कि तिथि है, एसादि। इस सर्वेश सिवदा, वहीं और स्वाद्ध वा क्या कर्यानिय है हो ने प्रत्या करिया कर

द्वी पर्छ। मासः । ते च श्रावणादयः प्रसिद्धाः । द्वादशमासं वर्षम् । पंचिर्षरं पैर्युगः । एवमुवरि वि वत्तव्वं जाव कप्पो चि । एसी कालो णाम । कस्स इमी कालो ! वीव-पोग्गलाणं । कुदो १ तप्परिणामचादो । अधवा इमा सुअमंडलस्स परियद्वणलक्सणसः, तदुदयरयमणेहितो दिवसादीणग्रुप्पचीए । केण कालो कीरदि १ परमहकालेण । रूप कालो १ माणुसराचेकसुज्जमंडल वियालमोयराणंवपज्जाएहि आवृरिदे । जिद्रे माणुस खेचेकसुञ्जमंडले कालो हिदो होदि, कथं तेण सन्त्रपागलाणमणंतगुणेण परीशे व्य स-परप्यासकारणेण जनसासि व्य समयभावेणात्रहिदेण छद्दव्यवरिणामा प्यासिज्जेते ! ग एस दोसो, मिणिज्जमाणद्व्वेहिंसी पुषभृदेण मागहपत्थेणेत मवणविरीहाभाग । प चानवरया, पईनेण विज्ञवारा । देवलोंगे कालामावे तत्थ कथं कालववहारी है ण, इहत्येणेव

दी पर्सोका एक माल दोता है। ये माल शायण मादिकके नामले प्रतिस हैं। गाउ मास का एक वर्ष होता है। पाँच वर्षोंका एक युग होता है। इस मकार अपर अपर भी करी उत्पन्न होने तक कहते जाना चाहिए। यह सब काल कहलाता है।

गुंका—यद काल किसका दे, अर्थात् कालका सामी कीन दे !

नमापान — जीव और पुहलोंका, अर्थान् वे दोनों कालके लामी है। पर्योक्त, काह तपरिचामाग्यक है।

मधया, यरिवर्तन या प्रदक्षिणा लक्षणयाले इस सूर्यमञ्चलके उदय भीर मस्त होनेते दिन धीर गति मादिकी उलालि होती है।

मंदा— काल किमने किया जाता है, अर्थान् कालका साधन क्या है है

गमापान - यनमार्थकालने बाल, भर्यान् स्वयदारकाल, निचन होना है।

र्यं हा — काल कहांगर दे, अर्थात् कालका अधिकारण क्या है ?

गमायान-विकालकाचर अवस्त वर्यायीके वरिवृतित एकमात्र मानुवर्शेत्रमध्यभी स्देवंडसमें हैं। बाल हैं; भर्यात् कालबा बाधार सन्ध्येत्वसारमधी स्पेशंडल है।

र्यहा-चाँद जनमात्र ममुष्यक्षेत्रके सूर्यमेदलमें ही काल भवस्थित है, तो सर्व

चुत्रसानि सनम्बगुति तथा प्रदीपके समान न परप्रवाशको बारकश्य, शीर यपसीति स्त्राच समयवयम अवशिवन वस वासंद्र हाम छन् द्रव्योंके परिणास बैसे प्रशाशित किंग ¥海茶!

समाजान-यह बोर्ड दोण नहीं, क्योंकि, माने जानेवाने पूरवीने पूजावृत्र मानव (देशीय) अन्यह समान मार्यनमें बोर्ड विशेष सही है। महसमें बोर्ड धनवाना बंग ही अन्ता है, करीव, प्रश्चित कथ व्यक्तिकार माता है। भर्मान क्रिक बीवक, घर, पर भारि क्रम्य दश दीवा प्रवास व देरियान की क्यां क्रांत आपका प्रवासक होता है, वंत प्रवासित

7 . P. S. F. J काटेण वेसि ववहारादो ! विद वीत्र पोम्मलपरिणामो काला होदि, वो सब्बेस वीत्र-प 1.75-17-1 े एक इन्हें। जन्म पंटिएण कालेण होद्दनं, वही माणुसस्वेचेकसुन्नमंडलहिंदी काली वि ण पहरे रतना हिंदू एस दोसा, जिरवज्ञचादो । दिन्तु व तहा छोमे समए वा संवयहारा अदिया अवा

: स्वरं हणहनेण सुत्रमंडलकिरियापरिणामेसु चेत्र कालसंवत्रहारी पपटे। तम्हा एदस्सेत्र र कायच्चे । केनियरं कालो ? नणादिनो अपन्ननसिदो । कालस्स कालो कि तथी पुपा rie fil क्रा सं र अवाको मा है व तान पुष्पभूनी अतिय, अवनहावप्यसंगा । वावाको नि, बाहरण कार भावपत्रमा । वदा काउस्स काउंच विदेशी च गहरे १ ण, एस होगी, ज नाव ग्रुह ئينج پ 1000 -'45" efr

करनेके लिए बाग दीवकडी बायहवकना नहीं हुमा करती है, देशी मकारते कालदाय भी कार्य जीव पुत्रल, बादि द्रष्योंके परिवर्तनका निधिष्ठकारण होता हुमा मी अपने आपका वार कार नेराज मार सम्मान मार्ग्यात कार्य करती साव द्वरवर्षी सावद्वरकता सही वसनी है। इसीलिए सनपरथा दोच भी नहीं साता है। -15 व्यवहार केले होता है।

र्छका—देवलोकमें हो दिव-राविकच बालका बाभाव है, जिर वर्षा पर बालका

तमापान-नहीं, वर्षोंके, यहाँके कालसे ही वेवतोक्त कालका व्यवहार होना है। धेका— विदे जीव और पुत्रलॉका परिवास ही बात है. तो सभी और भीर पुरस्तोंसे बाहरी संदिधत होना चादिए। तब पेसी दशामें ' मनुष्यांत्रहे वह स्पेमेंहरामें है। बात दियत है ' यह बात घटित नहीं होनी है है

समाधान - यह कोई वीज महीं है, क्योंकि, उक्त कवन निश्वय (निरींक) है। विज्य संक्ष्म या साह्यमें उस प्रकारने संव्यवदार वहां है, पर अवादिनियक्तवरुप्त भन्ते वाक्रम वा शायम वस अवस्ति वस्त्रहा संस्थाहर प्रकृत है। इसिटिए इसका ही स्ट्रम

र्घेका - काल कितने समय तक रहता है ?

f

समाधान - काल बनादि और अपूर्वपतित है। अपूर्व कालका व कादि है. र भन्त है।

रीका---बारुका पश्चिमन करनेवाला बारु बचा उससे प्रथम्म है, अथवा स्वस्त प्राथम्मतः) द्वामान ता कटा वहीं जा सक्ता है, कावण व्यवकाराका ज्वास का

समाधान — यह बोर्ड बोच नहीं। इसका बारण यह है कि पूछक दशमें बहा रूछ

पनस्वदोसी संमवदि, अण-भुवनमा । णाणणपवनस्वदोसी वि, इहवादी । व व वर्ण कालण पिदसो णस्य, सुज्जमंडलंतरिहृयकालेण तथी पुधभृद्सुज्जमंडलहियकालेणिक अपना, जमा पडस्स मानो, सिलायुचयस्स सरीरिमिञ्चादिस एकिहि वि भेदनवारी, व एस्प वि एकिहि काले भेदेण वनहारी जुज्जदे । किदिविधो कालो ? सामण्येष प्यक्षि तीदो अपनागदो बहमाणे चि तिविदो । अपना गुणाहिदिकालो मनिहित्कालो कालो हिता अण्यानेशे विविदो । अपना गुणाहिदिकालो अण्यानेशे विविदो । अपना गुणाहिदिकालो कालो हितो पुणानेशे विविद्यो । अहता अण्यानेशे विविद्यो प्रमुद्ध । अपनागदो अञ्चन्या अण्यानेशे अञ्चन्या । जहत्यमयनेशे अञ्चन्या कालस्व अण्यानेशे अञ्चन्या कालस्व अण्यानेशे अञ्चन्या ेशे अञ्चन्या अण्यानेशे अण्यानेश

र्द्धाः—बाल विनवे प्रकारका द्वाना है है

मुदाबान — सामान्यने बन्ध प्रकारका बाल होता है। सतीतः सनागतः श्रीर स्र्वं कावदी स्रोद्धान तीन प्रकारका होता है। स्रथमा, गुलस्थितिकाल, स्रवद्यितिकाल, स्रविधितं काल, सामान्याल, अगान्द्रकाल श्रीर माधिलानिकाल, इस प्रकार काले के छह नेद हैं। स्रवद्या साल स्रवेश कराव्या है, क्योंकि, गरिवामींस मूच्यमून बालका समान है, तथी स्रोद्धान स्रवास वाल हो।

कर्मायं अववेश्यक्षे अनुसम बहुने हैं, बार्टक अनुसमक्षे बारामुसम बहुने हैं। इस बारामुख्येय । निर्देश, बणन, जबातान, अविध्यतिक्षणना, ये शब बदार्गक साम है। वर्ष विदेश हो जबारवा है, आर्थिन्द्रम और अन्दानिद्धा । इस दोशे प्रवादे निर्देशिने बोर्चर्निक इस्प्रादिवनवा अनिवादन बर्गनेवाया है, बयोहि, इसमें समान भागे संदिति हैं। आरेम्पिन्हें ना व्यावर्गिक बनावा जीनवादन बर्गनेवाया है, बयोहि, इसमें अर्थिन्ही बर्लवणादो । किमहं दुविही विदेसी उसहसेवादिगणहरदेवेहि कीरदे ? न एस दोस्रो, उदय-णयमवर्लविय द्विदसवायुग्गहहं वर्षोवदेसादो ।

ओघेण मिन्छादिट्टी केविचरं कालादो होंति, णाणाजीवं पडुच सन्वद्वा' ११ २ ११

'जहा उद्मे तह। जिदेसे होदि' वि वाणावणहं आयिजेहमा करें। सेमगुणहानपटिसेहफले पिन्छाहिणिदेसे। कालादो कालण जिहासिङ्कमाणे केविनिद्दं होति नि
पुन्छा निजयण्यात्यमिर्दं मुखीमिदे पदृष्णायणकाण। बहुन बाणावीदामिदे एगावणका जिदेसी जादिणिवंचणो वि ण दोमपो। १ सम्बद्धा हिदे कालविगिहवद्ग्राजिनेते।। हुदे। १
सम्बा अद्या कालो असि जीवाणिसिद वन्सपाययसेण वन्सद्वप्यक्षीर । अपना, मम्बद्धा हिदे कालजिदेनो। कपे १ मिन्छाहिहीण कालचन्यगरिजामिणा परिणामिर्दं क्रांचित्र क्रियाहिहास्याहिही कपेदि अभैद्यासित मिन्छाहिहीण कालचाविहास।। सम्बद्धान जाणावीव पहुण सिन्छाहिहीणं बोन्छेदी गरिव वि सणिदं होदि।

अवलेबन किया गया है।

र्शका - पुषमधेनादि गणधरदेशीन दो महारका निहेंदा विसक्तिर किए. है !

समाधान-यह कोई दोण नहीं, वर्षीक, हाव्याधिक और वर्षावाधिक, इन दोने नयोंकी मयलक्षम करके श्थित माणियोंके अनुमहके लिए दें। मकारके विदेशका उपदेश किया है।

ओपसे मिध्यादिष्ट जीव किवने काल वक है।वे ई र नाना अंशों की अरेक्षा मई-काल होते हैं ॥ २ ॥

'किस महारति बहेदा होता है, जहीं प्रकारते निर्देश विचा जाना है' यह बान जल, कालेके किय रहाये 'बीराव' वहना लिहेंस लिया 'विकास किया के विकास किया है। यह किया लिहेंस, तेष गुज्य स्वाही के सित्य किया के 'बाल में 'बाल

६ दिन्दारदेशीयाची दानेकृता कर्त. वासः इ.स. हि. १, ब

एगजीनं पडुन अणादिओ अपज्जनसिदों, अणादिओं सपन वितिदो, मादिओं सपञ्जवसिदों । जो सो सादिओं सपञ्जवसिदों तल 1658 हमो जिहेसी। जहप्पेण अंतीमुहुत्तं ॥ ३ ॥

अमन्तिद्यवीनमिन्छनं पहुन्त अगार्निअपज्ञनसिद्मिदि मनिहं, अनगः निष्ठानस्य काहिमकानामात्राहो । मत्रीमिद्धियोगस्य तकाली अवाहिमी सपन्तानिही। वहा बद्दवहमारका मिन्छन् हाली। अलोगी मानिद्वियमिन्छन् काली सादिशे साम क नेहा । वहा कार्याहिमिन्छ न काला । जन्म वा मा माहिश्री सप्रवहिमी मिन्छनहारे तम्म ह्या निरमा । मी दुविही, बहुक्की उहुक्मी चेदि । नत्म बहुक्महानुस्थानाहरू इत्यहें जा मानि पूर्व । मुद्दु वस्त्री अनीवृहुर्व, एमी विन्द्रवस्त्रान्तिकारियो। व कर्- रामामेच्याद्वी मा अभंतरमस्मादिही या मेनदामंत्रदे वा व्यवनादेशी ए के व स्वयन्त्रमा विराहितं गही । महामहत्त्रमानीमुदुतं प्रस्टित पुत्रानि सम्मानिक है। मनंत्रनेण मह महत्वनं वा मंत्रमामंत्रमं वा अध्यमन बारेण गंत्रमं वा विद्रालग

यह भी हुआ प्रदेशा काल गीन बहार है, अनादि-प्रनन्त, प्रनादि-गान की हैं कि है। इनने की मादि और मान्य कार के, अनावर अनन्त, जनावर के में हरी महेत्र विर्याण्ये नीहां हा मादि मान्य हार नेपन्य में प्रत्यवेद से ॥ ३॥ सन्त मा इक्त आवार मिर्यापकी भवता । काल अवारि अस्त्रीक्ष का प्रम रेका, इव हो वहा यह ता मा भवाव भाट साहव बाध है, सेना हह प्रवद्शा के रे जे ह के जब है जा मार बहारहा अंगान यहां है है विश्वापहरण है, के अपने हैं जो अंगा किया है है जिन्ह है जो आहे हैं हिस्सा वहां है है है विश्वपत्त हैं। आहे जो है जा की इ.स. इनकार महत्त्वा रहा सम्प्रता हो मानी है। यह बननानह विस्ताहान मान र स्वाह

हेर कर पहेंद्र मोत्र का चार हैन्स है इस मानुश्रीत है। यह क्यारीन है कि अस्पारीन है। इस अस्प with the second of the second हर्ड करण करणाहर जे लहा असरम्बद्धारहरे अस्य स्थापन करणा स्वर्ध हरू है है को के जारकार में अपने कार्या मुख्या है है जो अपने मानवार कार्या कार् ति चार के मानवाद विश्ववाद्य व व दूर्वा खड़ साम्य वस्तुतुष्या । बच्चा सब्देशक स्टब्स्ट्रिक्ट वस्तुतुष्या । स्टब्स्ट्रिक्ट स्टब्स्ट्रिक्ट स्टब्स्ट्रिक्ट स्टब्स्ट्रिक्ट स्टब्स्ट्रिक्ट स्टब्स्ट्रक्ट स्टब्स्ट्रक्ट स्टब्स् े पार्ट करते. देश, जात्या, जार तर्क क्षण सम्बद्ध ज्ञान क्षण करते. इ.स. १९४४ च्या चार्च करते हैं है वे दिस बहारण क्षण है जात स्वर्ध कर्

The second second second second

सन्त्रज्ञहण्यो मिन्छचकाले। होति । सामणसम्मादिही मिन्छचं किष्ण पहिचजाविदा १ प; सामणसम्मचपन्छार्यदमिन्छादिहिस्स अहतिन्वसंक्रिलिहस्स मिन्छचतम्हा विणटिजस्म' सच्यज्ञहण्यकालेण गुणेतसंकमणाभाषा । उनकससकालपदुष्पायणहश्चतस्मतं मगदि-

उक्करसेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ ४ ॥

अद्योगंगत्यपरियहं जाम कि श्वरूपदे- अवाहसंक्षारे हिंदेतार्व दीवार्व दर्वचरियहूर्व रेत्तचरियहूर्व कालपरियह्वे भवपरियह्वे भावपरियह्वविदि वंच वरियहूनाति होति । जे ते द्व्यपरियह्वे ते दुविहे, वोकस्मयोगमत्वपरियह्वं करमयोग्गटपरियह्वं वेदि । तस्य वोकस्मयोगालपरियहं वचहस्साते। । वं जहा- जदि वि योग्गतार्वं गमपागमर्वं पहि

मिरपत्यका सर्वह्रपन्य बाल दोना है !

द्वेहा — साक्षार्वकरणन्दि औष निष्यात्वको वर्षो मही याव कराया गया ! अर्थान् साक्षार्वकरणन्दिको भी निष्यात्व गुणक्षावमें षहुंचाकर करावा क्रणस्वातः क्यों सही सतकाषा !

समापान — नहीं, ववाँकि, वासाइनसम्बन्धके बीठ मानेवाले, श्रीन्ताल संद्वान पाले भिष्यायस्था प्रत्यकारसे विद्वविद्या भिष्यादि जीवके सर्व जवायकान्यने गुणानस्य संव्यवस्था मसाव है, मर्वात् गुणस्थान-परिवर्तन नहीं हो सहसा है।

भव मिन्याखके उत्हरकालके बतलानेके लिए उत्तरसूच बहने हैं--

एक जीवकी अपेक्षा सादि-सान्त्र मिष्पात्वका उत्कृष्टकाल बुछ कम अपेषुहानदीर-पर्वन है ॥ ४ ॥

. ग्रंका - अर्थपुहरुपरिषर्गन किसे कहते हैं !

समापान—इस बनादि संसारमें कावण करते हुद जीवांके क्रायमार्थिन क्रेय-परिवर्तन, कालपरिवर्तन, अपवाधिवर्तन और आवगरिवर्तन, इस क्यार जोक परिवर्तन होन इसते हैं। इसमें जी क्रायपारिवर्तन हैं, यह हो अवगरका है— क्याम्पुटकरिक्तन और कर्मपुदलपरिवर्तन । जनमेंसे पहले मोक्रमेपुरक्रपरिवर्तन के करते हैं। यह इस क्यार है—

पुहत्यपश्यतम । जनमंशे पहले भोकभोषुद्रस्यपश्यतम् कहते व ! वह इस प्रकार है---यपपि पहलोके मधनामधनके पति कोई विरोध नहीं है, तो भी चुटिसे (हिसी)

र प्रतिश् ' विविद्यालत " वृति वाहः । 💎 व अध्वति वैद्युक्तविती देशेवः । व क्षि. १, ८,

विरोही पन्नि, मो वि पृदीव आहि काहुम बोहरमनोग्यान्त्रानिवृद्दे मन्त्रमाने अध्यक् पोग्गलपरियहर्वतरे मध्य रोग्गलगानिहिंह वक्ती दि परमाण् च भूगी नि मन्दरीग्गलानन 1 8, 4, 2, गहिदसण्या पोमालपरियहण्डमममण् काद्दशा। अहीदकाले हि मन्दर्शनीह मण्य-भागताणपणीनममागो मन्दत्रीवराभीक्षे अर्थनगुर्गा, मन्दत्रीकानिकारिमसमादी अर्थन गुणहीणा चामालपूत्री सुनुनिस्दा । कृता १ अवसनिदिएदि अर्थनपुर्वेण निदासमानिम-मागेण गुणिदादीदकालमेचमञ्च बीवसीमममाणमुमुब्सिद्योग्गक्विमागो स्लेम। ।

सहेव वि यं माना राजु क्षे भूगितहा ह जीता।

अमहे अमेनसुनी वीमाउपनिवृत्तमारे ॥ १८॥

एदीए मुचमादाए मह विशेषी किल्ल होदि नि मिनिदे व होदि, मदैगादैनिहरू गाहरथसम्बसहरवयुनीहो । वा च मन्सन्द्र वयद्वमामन्त्र महत्त्व वसद्भावत्रमी असिद्धा, ामो दहो, पदी दहो, इन्नादित गाम-पदाणमेगदेशपणहमद्दर्जनादो । नेण पीरमञ्ज

यसित पुम्लयस्माणुपुनको) माहि करके मेक्सपुत्रमणरियमनके कहनेगर यियसिन वाहरत कुरुवराता अवाहर होते हैं के भी परमाणु नहीं मोगा है, देसा समझकर ल्यारप्रवाम भावर सम्यम् सर्व पुरुलाको मण्डलाम् गुण्का भागा वर स्था साम्यस्य उपरिवर्तमके प्रयम् सम्यम् सर्व पुरुलाको मण्डलामञ्जा करमा चाहिए। मणीनकासम् र्ये और्थोंके द्वारा सर्ववृत्रस्तों हा अनन्तयां भाग, सर्वजीवरातिसे अन्ध्नगुणा, और सर्व-वि भावता शारा प्रवपुरुवाका जातावा काम जवनावाचा जवनावाचा प्रतिस्थित वर्गते अनतामुणहीन ममालयाता पुरुवपुत्त भावतर छोड्। मया है। पारण वह है कि अमप्यतिक जायाँस अमग्नगुणे और तिक्रोंक अनग्त भागते गुणित कालमाण सर्वेत्रीयराशिके समान मोग करके छोड़े गये पुत्रहोंका परिमाण पाया

र्घका-पदि जीवने मात्र तक भी समस्त पुत्रल मोगकर नहीं छोड़े हैं, तो-इस पुत्रलपरियर्तनकप संसारमें समस्त पुत्रल इस जीवने एक एक करके पुनः पुनः इस स्त्रगाथाके साथ विरोध पर्यो नहीं होगा ?

स्व प्रमाणा पान प्रमाणा के साथ विरोध प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, गायामें दारदकी प्रशृत्ति सर्वके एक मागमें की गई है। तथा, सर्वके अर्थमें प्रवर्तित होनेवाले स्वादिक वाक्योंमं उक्त दान्त्र माम और पदाँके एक देशमें प्रवृत्त दुव भी पावे विद्र ' एगो ' इति पाठः ।

ति. १, १०. गी. मी., मी. म. ५६०.

परिचट्टादिसमय अगहिद्सण्णिद् चेच पोग्गले विष्टमेक्टरसशीरणिप्यायणहमभरानिद्विरहि अर्णतमुणे सिद्धाणमणंतिमभागमेचे गेण्हाद् । ते च गेण्हंतो अप्पणे ओगाद्रखेचिद्दिरे चेय गेण्हादि, णो प्रप खेचिद्दिरे । कुचं च-

> एयस्थेतोगाडं सञ्ज्यादेसिट कम्मणो जोगां । बंधइ जहुत्तहेदू सादियमध णादियं चावि ॥ १९॥

विदेयतमय वि अपिदर्पोमालपरियहन्मंतरे अमहिदे चेत्र मेण्डि । एतमुक्तसेण अणैतकालमाहिदे चेत्र गेण्डि । अहब्येण दो-ममयम् चेत्र अमहिदे गेण्डि , पटम-समयमहिदयोगमलायं विदियसमय णिअपिय अकम्मानां महायं दुनी गरियसमय गिह-वेत्र जीने पोकम्मयन्ज्ञाएण परिदाणभुवनादो । वं क्यं णन्देर १ णोकम्मयन आवापार विणा उदपादिणितेमुक्तेमा । एतो पोमालपरियहकाला निर्देश होहि, अमहिदासम्बद्ध

सत्यय पुहत्वपरियर्तनकेः आदि समयमें औदारिक मादि तीन दारीरोंमेरे हिसी एक दारीरके निभावन करनेके दिए जीव माम्यसिदों हे समन्तुणे और दिदों के समन्दें साम-साम मादित संवायोठ पुरसांको ही महत्व करता है। उन पुरतांको प्रदान करना हुना वी सप्ते मामित देखमें स्थित पुरसांको हो महत्व करता है, विश्व पृथक् देखमें स्थित पुरसोंको हो महत्व करता है, विश्व पृथक् देखमें स्थित पुरसोंको

यह जीव एक क्षेत्रमें भवगादकरले विस्ता, और काँकर परिणमनके योग्य पुत्रक परमाणुमोंको ययोक्त (भागमोक्त मिण्यात्य भादि) देतुमाँते सर्व प्रदेशोंके ज्ञारा बीचना है। ये पुत्रस्परमाणु साहि भी होते हैं, भनादि भी होते हैं, और उपयवस्य भी दोते हैं ॥ १० ॥

हितीय समयमें भी वियक्ति पुन्तकारियतीनके भीनर कप्रशीत पुन्ती है। देश करता है। इस मकार जारूएकालकी अपेक्षा कामानात कर मण्डीत पुन्ती है। देश इस करता है। इस अपन्य प्रशास के क्षेत्रा हो समयों है। अपूर्वीत पुन्ती है। देश वर्षा है, क्योंकि, प्रथम समयों महल कियों पुन्ती है। क्षित्र समय समयों महल कियों पुन्ती है। क्षित्र समयमें निर्माण कर कर में मार्क प्रयोक्ति प्रथम समयों कर कर में मार्क प्रयोक्ति प्रथम समयों उसी है। आप प्रयोक्ति प्रशास कर में स्थित प्रशास कर कर में साथ प्रयोक्ति प्रशास कर कर में साथ प्रयोक्ति प्रशास कर कर में साथ में स्थास कर कर में साथ मार्म म

हीसा - प्रधम समयमें गृहीत पुरुत्युंत हिसीय समयमें निर्धार्थ हो, अवस्थान अवस्थाने धारण पर, पुनः सुनीय समयमें उसी ही आवमें नीवसंपर्यायने परिचन हो जाना है, यह कैसे जाना है

समाधान - वर्षीक, मावाधावाळके विना ही मोवर्षके व्यय मार्दिक विवेषीका वर्षका पाया जाता है।

यह पुरुषरिवर्तनवाल तीन प्रवारवा होता है-अगुरीतप्रदेखकाल, गुरीतप्रहचकाल

६ प्रतिष्ठ 'दर्फो' वृद्धि पारक्ष । १ व्या. व. १८५ वर तम प्रतृत्त्वोद्द वर्षत सम्ब 'स्वरोद्धी व दात पार-1

महिदगहणद्वा मिस्सयमहणद्वा चेदि । अणिद्योग्गलपियङ्ग्मतरे ज आहिदगाणक महणकाले अगहिदगहणद्वा णाम । अणिद्योग्गलपियङ्ग्मतरे गहिदगाणक चेप महणकाले आहिदगहणद्वा णाम । अणिद्योग्गलपियङ्ग्मतरे गहिदगाहिद्योग्गलणं चेप महणकाले गहिदगहणद्वा णाम । अणिद्योग्गलपियङ्ग्मते गहिदगाहिद्योगललणं भक्षमेण गहणकाले मिस्सयमहणद्वा णाम । एवं तीहि पयोरिह पोग्गलपियङ्गाले तीयस्स गन्छिद । एवा विष्ट्रमद्वाणं परियङ्गाणकाले जुवदे । वं बहा-पोग्गलपियङ्गाले सम्पर्यपुति अणेतकाले अगहिदगहणद्वा भवदि, तत्व सेसरोपयारामाता । पुणे अगहिदगहणद्वा भवदि, तत्व सेसरोपयारामाता । पुणे अगहिदगहणद्वा स्वादियाङ्गलद्वाण अणेतकाले जेत्वण सहं मिस्सययहणद्वा होदि । पुणो विविद्याहणद्वाण् अणेतकाले गामिय सहं मिस्सयद्वा होदि । एवं विद्यवारे वि आविदगहणद्वाण अणेतकाले गामिय सहं मिस्सयद्वाण परिणमदि । एदेण प्याणे मिस्सयद्वाओं वि अणेताओं जाताओं। पुणो गंवकाले अगहिदगहणद्वाण गामिय सहं गहिदगहणद्वाण परिणमदि । पदेण क्रमण अणेतो कालो गन्छिद जाव गहिदगहणद्वास्त्रसानाओं वि अर्णातं पत्ताओं सार्

श्रीर मिश्रमहणकाछ । विवासित पुरुष्ठपरिवर्तनके सीतर जो अगृहीत पुरुष्टीके प्रहण करते हो काल है उसे अगृहीतप्रहणकाछ कहते हैं । विवासित पुरुष्ठपरिवर्तनके सीतर ग्राहीत पुरुष्टीके ही प्रहण करने के साथको गृहीतप्रहणकाछ कहते हैं । तथा विवासित पुरुष्ठपरिवर्तने सीतर ग्राहीत प्रहण करने के सीतर ग्राहीत इन दोनों प्रकारके पुरुष्टी अक्रससे सर्वात परू काप प्रहण करने के साथ हाथ प्रहण करने के साथ प्रहण करने के साथ हाथ प्रहण करने के साथ प्रहण करने के साथ हाथ प्रहण करने के साथ हाथ करने के साथ हाथ हाथ करने के साथ हाथ करने के साथ हाथ करने के साथ हाथ हाथ करने हैं। इस तरह उक्त तीनों प्रकारों जीवन प्रहण प्रस्तित हाथ व्यवीत होता है।

विद्यापार्थ — क्षित पुरत्यसमाणुमीके समुदायक्य समयमयस्म केवल पहेले प्रहण किये हुए परमाणु ही हो, उस पुरत्यप्रको स्थीत कहते हैं। क्षिस समयमयस्म देसे परमाण् हो कि क्षितका जीवने पहिले कभी प्रहण नहीं किया हो उस पुरत्यप्रको समुद्रीत कहते हैं। जिस समयमयस्म दोनी प्रकारके परमाणु ही उस पुरत्युंतको निध्य कहते हैं।

 अर्णतं कालं मिस्सपगहणद्वाए गमेन्द्रणं सहं अगहिदगहणद्वा परिणमिद् । एनमेदाहि देशि अद्वादि अर्णतकालं गमिप सहं गहिदगहणद्वा भविद । एवमेदेण पपारेणं जीवस्स सालं गप्ता पप्ता प्राचे । एवमेदेण पपारेणं जीवस्स सालं गप्ता प्राचे । एवमेदेण पप्ता प्राचे देशि परिप्य प्राचे । प्राचे देशि परिप्य प्राचे । एवे देशि परिप्य प्राचे । परिष्य परिप्य । यसे विदेशि परिप्य । स्वरी व्यवस्थ परिप्य परिप्य परिप्य । परिप्य परिप्य परिप्य । परिप्य परिप्य । परिप्य परिप्य । परिप्य । स्वरी व्यवस्थ परिप्य । स्वरी व्यवस्थ परिप्य । स्वरी व्यवस्थ परिप्य । स्वरी व्यवस्थ परिप्य परिप्य । स्वरी व्यवस्थ परिप्य परिप्य परिप्य । स्वरी व्यवस्थ । स्वरी विद्य व्यवस्थ । स्वरी विद्य विद्य । स्वरी विद्य विद्य । स्वरी विद्य विद्य विद्य विद्य । स्वरी विद्य विद्य विद्य विद्य । स्वरी विद्य विद्य विद्य विद्य विद्य । स्वरी विद्य विद्य विद्य विद्य विद्य विद्य विद्य । स्वरी विद्य विद्य विद्य विद्य विद्य विद्य विद्य विद्य । स्वरी विद्य । स्वरी विद्य
अनम्तत्यको प्राप्त हो आती है (इस प्रकार प्रथम परिवर्तनवार व्यतीत हुआ)। पुनः इसके उत्पर क्षानन्तकाटः मिध्रप्रहणकालकी अवेदरा विताकर परुपार अग्रहीतग्रहणकाल परिणत होता है। इस प्रधार इन दोनों प्रकारके कालोंसे अनन्तकाल विताकर प्रकार गृशीतप्रहणकाल होता है। इस तरह उक्त प्रकारने जीवका काल तब तक व्यतीत होता हमा चला जाता है क्रम तक कि यहाँकी प्रहोत्तरहणकालसम्यन्धी दालाकार्य भी समस्तताको प्राप्त हो जाती हैं। इस प्रसार यो परिवर्तनवार व्यतीत हुए। युनः धनन्तकाल मिध्यवहणकालके द्वारा विताकर दक्ष्यार गृहीतप्रहणकालका परिणयन होता है। इस प्रकारसे गृहीतप्रहणकालकी शलाकापं भनन्तताको मात्र है। जाती हैं। सत्प्रधात वहवार अगुहीतमहत्त्वकालकपसे परिणमन होता है। पता इस प्रकारसे भी अनुन्तकाल तब तक व्यतीत होता है जय एक कि यहाँ पर भी अग्रहीत-ब्रहणकालसम्बन्धी बालाकांच अनगतताको बास होती हैं। यह सीसरा परिवर्तन है। अब धनर्थ परिवर्तनको कहते हैं। यह इस प्रकार है-अमन्तकाल गृहीतब्रद्भणकालसम्बन्धी विताकर दक्तवार मिधमहणकालका परिवर्तन होता है। इस प्रकार इन दोनों प्रकारके कालाँद्वारा क्षानन्तकाल विगाता है जब तक कि यहांकी विधायहणकालसम्बन्धी इत्याकार्य अनग्तताको प्राप्त होती है। इसके प्रधात् प्रकवार अगृहीतग्रहणकालक्ष्मसे परिणमित होता है। इसके प्रधात फिट भी इसके आगे इस दी कामले पुद्रलपरियर्टनके अन्तिम समय तक काल व्यतीत होता जाता है। (इस चनुर्ध परिवर्तनके समाप्त हो जानेपर) नोकर्मपुरस्परिवर्तनके

र प्रतिपु "गमेरण व सर्व " वति पातः ।

२ अमिदसिमार्ग महिदं विस्तवसाहिदं तहेन सहिदं च । विस्तं सहिदसमहिदं वहिदं विस्तं च वसहिदं च ॥ मो. जी. जी. म. ५६०.



एत्य अप्यायदुर्ग । सन्दर्भोता अगहिद्गहणद्वा। भिस्सपगहणद्वा अर्णतपुणाओ । अहाण्याया गाहिदगहणद्वा अर्णतपुणा । अहाण्याया गाहिदगहणद्वा अर्णतपुणा । अहाण्याया गाहिदगहणद्वा अर्णतपुणा । उक्तरसम्भे पोम्मप्तविष्यद्वे विवेसाहिओ । कि कारणम् गाहिदगहणद्वा थोवा आदा ? बुच्यदे— बे णोक्तमप्तवाहण्य विशेषादि अर्था । अत्यायम् गाहिदगहणद्वा थोवा आदा ? बुच्यदे— बे णोक्तमप्तवाहण्य विशेषाय अक्रमम्भावेण वे थोवकास्त्रसम्बन्धा से पहुचारमान्यांति, अदिश्वदिव्यविद्यायात्रो । वे युग आर्पयद्वीमानव्यविद्यक्रियात्रो । वे युग आर्पयद्वीमानव्यविद्यक्रियात्रो । वे युग आर्पयद्वीमानव्यविद्यक्रियात्रो । अशिदं य-मार्थ गेत्न सद्य विश्वकासव्यव्याणेण विषद्वचान्यव्यविद्याभीन्यवाद्वी । अशिदं य-म

सुद्दमहिदिसंतुतं आसण्यं यम्मिणम्मसमुस्यं । पाएण पदि महणं दल्यमिषिदिहसंक्षणं ॥ २०॥

भर उन्न अपूर्वात, भिश्व और पूर्वातसंवर्धी तीनों प्रकारके कालोका अद्दरवहुन्य कहते हैं—सबसे काम अपूर्वातप्रहणका काल है। अपूर्वातप्रहणक कालसे मिध्रप्रहणका काल अनस्त्वपुरता है। सिष्ठप्रदूषके कालसे जयान्य पूर्वतप्रहणका काल अनस्त्वपुरता है। जयान्य पूर्वातप्रहणके वालसे जयान्य पुजलपरियंतकत वाल विदोप अधिक है। जयान्य पुजलपरि-वर्षात कालसे अन्य पुजलपरियंतकत वाल विदोप अधिक है। जयान्य पुजलपरियंतक कालसे उन्हार पुजलपरियंतकत काल विदोप अधिक है।

श्रीता-धगृहीतप्रहणकालके सबसे कम होनेवा कारण क्या है !

समापान — जो पुद्रल नोकर्मपर्यायले परिणमित होकर पुनः सकर्ममायको मात हो, उन सकर्ममायले अवगडाल तक रहते हैं वे पुद्रल तो बहुतचार आते हैं। पर्योक्ति, उनकी हम्प, शंग, काल भीर मायकर चार अवारकी योगमा सह नहीं होती है। किन्तु जो पुद्रल विविक्षत पुद्रलपरिवर्तन भीतर नहीं सहण किये वोचे हैं, वे विरक्तालक चार काल हैं, विपय्तालक काल काल होतर हम, काल, मायकर संस्थान के मात होतर उस अवस्थान विवक्ताल तक रहनेते हम्प, होन, काल, मायकर संस्थानक विवाद विवाद जाता है। कहा भी है—

ती कर्मपुरत्य पर्रते बदावश्यामें पुश्य अर्थाव भरा स्थितिस संयुक्त पे, भत्तदव निजेश द्वारा कर्मक्य अवस्थाले मुक्त कर्यात् शहित द्वय, किन्दु आस्त्र स्थान् रायके प्रदेशोके साथ जिनका वक्शेयाक्याद है. तथा जिनका आकार स्थिति है यर्थात् करा नहीं जा सकता है, इस प्रवास्त्र पुरत्न प्रयूच बहुकताले प्रदानको प्रसार होता है वरण।

र अवाद्वित्यस्कावः स्वन्तोति सर्वः स्त्रोतः । इतः, विनयस्वयनेषकात्राविद्याद्वासं बहुवास्त्रश्चायस्याद् । स्रोन विषयितद्वरस्यादिर्वेनयस्ये बहुवास्यस्यं संबद्धात्वृतं स्वतः । तो. यो. यो. य. ५६०. १ स्वर्तारियतिसंतुतं जीवयसेषु विषयं निर्वता वियोगितस्यस्यस्यं प्रस्तरस्यं स्वतिस्यस्यस्यं विर

शिवरास्त्रीनवम्मतमनोत्तरस्वराहितं सीरेन प्रयुक्तवा स्वातिकत्वे । खुतः । बन्यादिक्वविष्यंत्रसंदासंदानासार् । भी. सी. सी. म. ५६०.

एदेण कारणेण अगहिदगहणद्वा थोवा जादा । एसी जोकम्मपोम्मलपरियद्वेर नाम। जधा णोकम्मपोग्गलपरियङ्कों बुत्तो, तथा चैव कम्मपोग्गलपरियङ्को' वत्तव्यो । अविर विसेसी पोकम्मपोग्गला आहारवरगणादी आगच्छीत । कम्मपोग्गला प्रण कम्मस्यत्रग्य-णादो । णोकम्मपोग्गलाणं विदियसमए चेत्र मिस्सयगहणद्वा होदि । कम्मपोग्गलाणं प्रण विसमयाहियावित्याए । कुदो १ वंधावित्यादीदाणं समयाहियावित्याए ओकड्डणवसेण पचोदयाणं दुसमयाहियाविष्याए अकम्मभावं गदाणं कम्मपीरगलाणं विसमयाहियाव-लियाए कम्मपडजाएण परिणमिय अण्णपोग्गलेहि सह जीवे ग्रंथं गदाणमुबलंगा । णगरि दोसु वि पोग्गलपरियहेसु सुद्रुमणिगोद्जीवअवज्जन्तपूर्ण पढमसमयतम्भवत्येण पढमः समयआहारएण जहण्णुनवादजोगेण गहिदकम्म-णोकम्मद्व्यं घेत्रुण आदी कापन्या । एत्य उवउज्जंती गाष्टा--

> गहणसमयश्वि जीत्री उप्पादेदि ह गणंसपश्चयदी । जीवेहि अणंतगुणं कम्म परेसेस सम्बेस ॥ २१ ॥

tस सत्रोक कारणसे अग्रहीतग्रहणका काल अस्प होता है। इस प्रकार इस सबका नाम नोकर्मपुरलपरिवर्तन है।

जिस प्रकारसे नोकर्भपुद्रलपरियर्शन कहा है, उसी प्रकारसे कर्मपुद्रलपरियर्शन भी कहना चाहिए। विशेष वात यह है कि नोकर्मपुद्रल आहारवर्गणांसे आते हैं। किन्तु कर्मपुद्रत्व कार्मणवर्गणासे माते हैं। तीकर्मपुद्रलोंके विसमहणका काल दतीय समयन ही होता है। किन्तु कर्मपुद्रलीके मिश्रमदणका काल तीन रामय अधिक सायली प्रमाण कासके व्यतीत होने पर होता है। क्योंकि, जो वन्यावसीले अनीत हैं। पक समय अधिक शावलीके द्वारा अपकर्षणके बदासे जो उदयको मात हुए हैं, और दी समय अधिक आयलीके रहतेपर जो अकर्ममायको आन्त हुए हैं, ऐसे कर्मपुहलीका तीन समय मधिक भागलीके हारा कर्मपर्यायसे परिणान दोकर अन्य पुत्रलीके साथ जीवमे र्षधकी प्राप्त दीना पाया जाता है। विशेष बात यह है कि दोनों ही पुद्गर गरिवर्सनोंने प्रथम समयम तद्भवस्य मर्यात् उत्पन्न हुव, तथा प्रथम समयम है। आहारक हुव स्थम निगोदिया सम्बप्पर्याप्त अविके द्वारा अधन्य उपपादयोगसे गृहीत कर्म और नीकर्मद्रव्यकी प्रदण करके बादि धर्यात् परिवर्तनका प्रारंस करना खादिय । यहां पर उपयुक्त गाथा इस प्रकार है-

कर्मप्रदूषके समयमें जीव अपने गुणांश प्रख्यांसे, अर्थात् स्वयोग्य वंधकारणांसे,

अधिस समन्तमणे कर्मोको अपने सर्व प्रदेशोंमें उत्पादन करता है ॥ २१ ॥

१ कर्मंत्रम्यप्रिवर्तमञ्ज्यते-दृहारिमन् समये पृक्षेत्र आवेनाष्टविषद्वमैतावेन पुरुता वे गृरीताः समयार्थिकाः मारिकशाया विकासियु समयेषु विभागा पूर्विमित कवेत त पुत्र देवित महीत तथ्य मीराम कर्मनावसम्पर्वे व मारामकर्वद्रम्परिकृतियु : तः तिः २, १० - १ मीराष्ट्रं "न्यायिद्वे "वृति माता ह

एवं द्व्योग्गतपरिपद्वणं गरं । खेष-काल-भा-मावपाग्मतःशिपद्वा भाविर्ज गेण्डिद्व्या । तेसि गाहाओ—

सरे रि पेत्याला साह एवं शुक्तिका है जीवेग ।
अवहं अनेनायुको पोमाञ्चारियहोंकारे ॥ २२ ॥
अवहं अनेनायुको पोमाञ्चारियहोंकारे ॥ २२ ॥
अग्राह्माओं महीते दिहेंने राज्यांकारे ॥ २२ ॥
ओक्षाह्माओं महीते दिहेंने राज्यांकारे ॥ २२ ॥
ओक्षािपिना-उस्तिपिनि-सम्मापिना नितंता सन्य ।
जाते हुदे। य बहुती दिहेंने बाज्यांकारे ॥ १ ॥ भा
विश्वास्त्रा जाव हु उपितन्त्रओं हु नेश्वारे ।
अभी विश्वास्त्रा नार्योदि दिहिदी बहुते ॥ २५ ॥

इस प्रकार इच्यपुत्रस्यविषयि समाप्त हुआ। क्षेत्र, बास, अब कीर भावपुत्रस्यी-योभीको कहराकार प्रहण करा देना खादिय। कन यरिवर्गमेंवर्श (संक्षेत्रसं वर्ष क्षित्रस्य) साधार्य इस मकार है ---

इस जीवने इस पुद्रस्परियर्ननहप संगारमें यश पत बरवे पुरा पुत्र अवश्यक्तर

सम्पूर्ण पहल भीग बारके छोड़े हैं ॥ २२ ॥

हार रामस्त लोककर शेवमें एक मनेश भी थेला नहीं है किने कि शंवरांदवनेववर संतारमें प्राथमा भागण करते पुर बहुनवार बाना अवगादकागोंसे इन श्रीवेट के ग्रुका हो॥ २३॥

बालपरिवर्तनस्य संसारमें अमण करता हुमा यह जीव स्थानिकी और अस्साईकी कतारने सर्वे समर्पोकी आवस्तियोंमें निरंतर वश्तवार स्थान हुआ और मत्तु है ३ ६५ ह

अववरिवर्तमध्य संमारमें श्रमण करना हुना यह जीव विषया वह बतारे उदस्य मारवायों स्ताराय (तिर्वेच, प्रमुख और) अवरिम प्रवेचक सवर्षी सवस्थिति है। बहुनवरू प्राप्त हो गुका है ॥ २५ ॥

र स्त्र ति ६, २०, वर तथ 'एवं' दृषि काल 'वयको दृष्टिक । सर्वे वि कुष्टम सुकृ होहरू स्वाप्तरहास स्रोतेस स्वतंत्रत्वतद्वा पुरस्याधयोगसम्बद्धाः स्वतंत्रा स्वतंत्रत्वत्वतः

य सं हि द १० वर तम "स्रोत्त्वम शान श्वास अध्यम शान बंद । स्वयु अराहेरे हेर्डे स्

RECICIONE (ACCESSA DE LA PROMETA DE LA PROMETA DE LA CONTRACTA DE LA PROMETA DEL PROMETA D

सन्वासि पगर्दाणं अगुभाग-पदेसुवंघटाणाणि । जीवा विच्हात्तवमा परिभविदी भावसंगारे ॥ २६॥ परियदिदामि बहसो पंच वि परियदगामि जीवेण । जिनवानसङ्गमाणेन दीदकाले अर्णनार्मि ॥ **२**७ ॥ जह मेण्डह परियह पुरिसी अच्छादणस्य विविहरस् । तह पोग्गरुपस्पिट्टे गण्डह जीवो सरीराणि ॥ २८ ॥

अदीदकाले एगस्स जीवस्स सञ्चत्योवा मावपरिपद्रवास । मनपरिपट्टवास अर्णन गुणा । कालपरियङ्कारा अर्णतगुणा । स्तेचपरियङ्कारा अर्गतगुणा । पोगगतपरियङ्कारा अर्गत्तुणा । सन्वरथोवो पोग्गलवरिषड्कालो । खेचवरिषड्कालो अर्गत्तुणो । कालपरि यङ्काली अर्णतगुणो । मनपरियङ्काली अर्णतगुणो । मानपरियङकाली अर्णतगुणी ।

यह जीव मिथ्यात्वके वशीमृत होकर भावपरिवर्जनकर संसारमें परिश्रमण करता ष्ट्रमा सम्पूर्ण प्रशतियाँके प्रशति, स्थिति, अनुमाग और प्रदेश वंधस्थानीको अनेकवार प्राप्त हमा है।। २६॥

जिन-यचनोंको नहीं या करके इस अधिने मतीतकालमें पांची ही परिवर्तन पुना पुना करके समानवार परिवर्तित किये हैं ॥ २७ ॥

जिस प्रकार कोई पुरुष नाना प्रकारके यहतें के परिवर्तनकी प्रहण करता है, नर्गार बतारता है और पद्दनता है, उसी प्रकारसे यह जीव भी पुद्रनपरिवर्तनकालमें नाना शरी मोंको छोडता और ग्रहण करता है ॥ २८॥

अतीतकालमें एक जीवके सबसे कम मायपरिवर्तनके बार हैं। भवपरिवर्तनके बार भाषपरिवर्तनके वारोंसे अनन्तगुण हैं । कालपरिवर्तनके वार अवपरिवर्तनके वारांसे अनन्त-गुणे हैं। क्षेत्रपरियर्तनके बार कारुपरियर्तनके वाराँसे अनम्तगुणे हैं। पुत्रसारियर्तनके वार भित्रपरियर्तनके वाराँसे मनन्तराणे हैं।

पुररपरिपर्तनका काल सबसे कम है। क्षेत्रपरिवर्तनका काल पुररवरिवर्तनके बारसे अनन्तगुणा है। कालपरियतंनका काल क्षेत्रपरियनंनके कालक्षे अनन्तगुणा है। भवपरियनंनका काछ काटपरिवर्गनके काटसे अनन्तगुवा है। भाषपरिवर्गनका काठ मववरिवर्गनके भारते अनन्तगुणा है। (इन परिवर्तनीकी विशेष जानकारीके लिये देखी सर्वार्पविदि २, १०: व गोम्मटलार जीवरोड गाथा ५६० टीका १ :

१ वध्या पर्वतिहिन्देत्रो बहुबारपदेवरेवटायावि । बिच्डववानिदेव व सविदा दुव सारवंतरे । ह. वि. ६, ६०. वर्षत्र विश्वज्ञानप्रदेशक्षेत्रवानि । स्वानान्वतुम्वानि अवता सुदि साववंति ॥ ती. सी म. १६०.

व वंदनिक संबार कर्मवद्यार्थनवृत्ति सुन्तः । बार्गमपुरस्य अली बालाइःसाङ्के प्रमति । ही, बी, 27. 3. 48 ...

ર લો, સાં, સી. ગ. પ્લન્.

एदेशु परिचट्टेशु पोग्गलपरिचट्टेण वयदं। कम्म-जोकम्मभेदेण दुरिही पोग्गलपरिचट्टो, तत्य केण पचदं ? दोहि वि पचदं, दोण्डं कालभेदामाना । सो नि क्टो अवगम्मदं ? पोग्गलपरिचट्टपानहुमे दो नि पोग्गलपरिचट्ट एक्टर्ट कार्ट्य कालप्पानहुमविषाणादो । पदस्स पोग्गलपरिचट्टकालस्म अर्ड देखणं सादि-साजिद्दालिक्ट वस्स काले होदि। तं कर्य ? यदो जणादियमिन्छादिद्दी अपरिचर्तसाति कार्या अपावनकरणं अणुन्करणं अणियिक्टरपणीच प्रयोग जणादियमिन्छादिद्दी अपरिचर्तसाति कार्या अपावनकरणं अणुन्करणं अणियिक्टरपणीच प्रयागि तिर्च कर्याणि कार्या सम्पर्वागिद्दिपदासम्मप् चेन सम्मन्ताणेण पुण्डिल्ली अपरिचर्ता क्रिक्त कर्याणे क्राव्य परिचा पोग्गलपरिचरस्स अद्वसेषो हेर्द्य वक्तसेण विद्विद्दी। अह्ल्जोण अतिष्ट्वस्वमेषी । एत्य पुण जहण्यकालेण गरिव कर्यं, उक्तस्मेण अधियारादा। सम्मर्चगिद्दिपदमसम्पर णहो मिन्डचपरम्माने। । क्राव्यापिनविगासाणमेक्सो समन्नो। १

इन ऊपर बारताये गये पांची परिवर्तनीमेंसे यहां पर पुत्रत्वपरिवर्तनों प्रयोजन है। रीका —कर्म थीर नोकर्मके घेदसे पुत्रत्वपरिवर्तन की वकारका है, उनमेंसे पहांगर किससे प्रयोजन है।

समाधान-धहां दोनों हा युहरुयरिवर्तनों ते प्रवीहन है, क्योंकि, दोनोंके काटमें भेर नहीं है।

र्शका - यह भी केले जाना जाता है ?

समापान--पुत्रस्परियर्तनकारुकै अरुपब्हुन्य बताते समय शेनों ही पुरस्परियर्न में को रकट्टा करके कारुका अरुपब्हुत्यविधान किया गया है। इससे जाना जाठा है कि दोनों पुरस्परियर्तनोंके कारुमें भेद नहीं है।

इस पुरुष्परिवर्तनकालका कुछ कम अधिमाग साकि-सान्य विध्वात्यका कास होता है। चैका—साकि-सान्त विध्यात्यका काल कुछ कम अधिपुरुष्परिवर्तन कैसे होता है।

समापान---वहः जनाहि विध्यादाधि वपरीतसंसारी (शिक्षका संसार बहुन रोग है पेसा) श्रीव, अधा अञ्चलकरण, जपूर्वकरण, और धानमृश्विकरण, इस अकार इम सीमों हैं। करणोंको करके सम्यक्ष्मय प्रदा्यके प्रयम समयमें हैं। सम्यक्ष्मयुवाके ह्यारा पूर्ववर्षी अपरीत्त संसारीवना हटाकर व परीतसंसारी हो करके वाधिकते आधिक पुरुत्यरिवन के आधि शाल प्रमाण ही संसारों ठहरता है। सथा, सादि-सात्त विध्यानका बात्त कम से बाम धन्त्रीतने-प्रमाण ही किस्तु पदी पर अध्ययकारले अवीजन नहीं है, व्यक्ति, करहर बत्तवह नीयकार है। सम्यक्तवे प्रदाण करनेके मध्य समयमें ही विध्यान्य पर्याय नहीं है। आशी है।

ग्रंका—सम्यक्ष्यकी क्यांति और विष्यात्यका विनास हम दोनी विभिन्न कार्योक्त एक समय वैसे हो सकता है?

ण, एफिन्हि समए पिंडागारेण विणहु-घडाकारेणुप्पणा-महियद्व्यस्पुत्रलेमा । सन्न जहण्णमंतीयुह्चसुवसमसम्मचद्धाए अच्छिर्ण सिन्छचं गर्दा । नदे । मिन्छचंण सारियो जारे।, विणहो सम्मचपञ्जाएण । तदे । मिन्छचंपज्जाएण उवहुपोग्गलपरियट्टं परिपहिर्ण अपिन्छमे भवग्गहणे मणुस्सेषु उववण्णो । पुणी अंतीयुह्नवाससे संसारे तिणि विकर्णाणि कार्यण पद्मसम्मचं पिंडवण्णो (२) । तदो वेरवासम्मादिद्धी जादो (३)। अंते। स्रुचेण अणंताणुर्वाच विद्याणो (२) । तदो दंसणमोहणीयं खेवर्ण (५) पुणी अप्पमची जादो (६)। पमचापमचपरावचसहस्सं कार्यण (७) ख्वामोदियाल्ह्यणणे अप्पमचास्त्रवाल्ह्यणणे अप्पमचास्त्रवाल्ह्यणणे अप्पमचास्त्रवाल्ह्यणणे अप्पमचास्त्रवाल्ह्यणो (१) अणिव्ह्याचो (१०) सुह्रवाल्ह्यणो (१०) अप्रवासिद्धाण्याची (१०) अणिव्ह्याचो (१०) सुह्रवाल्ह्यणो सुह्रवाल्ह्यणा सुह्रवाल्ह्यणो सुह्रवाल्ह्यणो सुह्रवाल्ह्यणा सुह्यणा सुह्

मिच्छनं णाम पज्जाओ । सो च उप्पाद-विणासलक्खणो, द्विदीए अमाबादो। अह जह तस्स हिदी वि इच्छिन्जदि, तो मिच्छचस्स दच्चनं पसज्जदे; 'उप्पाद-हिदि-मंगा हैरि

समाधान — नहीं, वयोंकि, जैसे एक ही समयमें एण्डक्प माहारसे विनय हुना। भीर घटकप माहारसे उपयो हुना। वृत्तिकालप द्रव्य पाया जाता है, उसी महार कोई जीव सबसे कम अन्तमृद्धतंप्रमाण उपशासस्यक्षयस्य के साठमें रहकर सिष्यात्यको प्राप्त हुना। इस विष्यात्यको सिष्यात्यको प्राप्त हुना। इस विष्यात्यको प्राप्त हुना। स्वाप्त सिष्यात्यको प्राप्त हुना। प्राप्त सिष्यात्यको प्राप्त हुना। त्राप्त सिष्यात्यको प्राप्त हुना। सिप्त माहान विष्यात्रको प्राप्त हुना। सिप्त माहान विषयात्यको प्राप्त हुना। त्राप्त हुना। त्राप्त हुना। त्राप्त हुना। त्राप्त हुना। त्राप्त हुना। त्राप्त हुना (३)। त्राप्त विषयात्रका विषय स्वयं विषयात्रका विषय स्वयं विषयात्रका विषय स्वयं विषयात्रका विषय स्वयं विषयात्रका वाला होता है। स्वयं विषयात्रका वाला होता है। स्वयं विषयात्रका वाला होता है।

होता — कियात्य नाम पर्यापका है। यह पर्याय उत्पाद और विनाश लग्नजवात है। क्योंकि, उसमें रिचनिका व्याय है। और वॉद उसकी रिचति सी मानते हैं, तो कियात्य के इच्यपना मात्र होना है, क्योंकि, 'उत्पाद, रिचति और मंग, क्योंन् क्यप, ही द्रव्यका सम्रा

१ देनुषवद्वयोगाठवरिवद्वमुख्योगाङारिवद्वभिदि मण्यदे । अवधः

काराणुगमे मिन्छादिष्टिकारगरूकां दवियसम्बर्ण ' इषारिसादी वि १ व एस दोसी, वमक्रमण विसम्सर्ण तं दन्तं, जं पानकारतम् क्याराजास्य कृषे पानम् अनुस्तान् । व्यवस्थान् स्वान् स् 45.75 क्षमण जन्मद्वारक मान्य जा क्ष्मान्य है । वैउन्ताकन पि पञ्जायचे प्रवज्जादि वि जुने, होंदू वेलि पञ्जायनं, इट्टणारा । वेगु दस्य ښون वन्तरात वि त्रोष हिस्सदीहि चे ण, वस्स हुण्यणिवयणणेगमणयिवयणणाहा। सुदे €÷ii परकार १४ चार १२१४ मार्च १ ११ वर्ष द्वाणिः असुद्धे दव्यद्विषणए अवसंबिदे स्टब्सिमासीय . 1 अवस्थित होति वि वंजवरन्त्रायस्य देन्त्रवन्त्रुवसमादो । सुद परत्रायणस् 1.5 ज्यानाम् वर्णातः सम्बद्धः वर्णादः विवासाः हो चेत्र सम्बद्धानानि । अग्रदं अस्मिदं कमेण जिल्ले ... जाभद् र ज्वासरक जनार र नामा क्षेत्र प्रस्तिकार्यमान् । ज्यास जासार र नामा र राज्य व्यवस्थान् । वि सम्स्रामान्, तस्प्राच्यायस्य वज्वसितार्यमाद्स्य वंज्ञणसान्त्रस्य अवहाणुक्रस्यः । 1 विष्ठचं वि वंजनवञ्जाओ, तन्हा यहस्य उप्पाद-हिदि-भंगा क्रमेण विन्ति वि अविरुद्धा ति येत्तरतं।

वणानि विशेषि य मान निवनेन पानस्वावस्या दम्बद्धिसस सन्त्रं सदा अञ्चलनाविकः ॥ २९ ॥ समाधान—पद कोई दोव महीं, पवाँकि, जो धकास्त (युग्लम्) ज्ञाचार, स्वव और अध्य इम तीने स्वस्त्राचारा होता है, वह द्रव्य है। और जो बकासे उचार, ज्ञिन और स्वर्यसम् होता है यह पवाँच है। इस महारत जिनेन्द्रस्य करोदा है। इस—पदि देशा है तो शृचिती, जल, तेन और वायुक्त वर्षावस्या सनमः होना है। समाधान—महे है उनके वर्षावस्त्रा साई शांत वर्षावस्त्र सनमः होना है। समाधान—महे , वह स्ववहार हाजामुक्त संसद-वरहार सहस्त्र दिशाई स्वाह ?

इदि एसा वि गाहा ण विरुद्धदे, सुद्धद्व-पन्नविद्यणए अवर्रविष द्विद्यारों ' मिया सिद्धी जेसि जीवाणं ते हवंति मवसिद्धां ' इदि वयणारो सर्विधि मध्यमिन्यं पोस्टेदेण होदव्यं, अण्णहा तत्त्वस्थणियरोहादो । ण च सत्वर्यं। ण णिद्वदि, अण्यस्य तृहाखुवर्द्धमादो वि १ ण एस दोसो, तस्साणितियादो । सो अर्णती चुच्चिदि, जो संख्यमार्से सिद्धे जसासिव्यए संते अर्णतेण वि कालेण ण णिद्वदि । चुचं च—

संते वए ण णिहादि कालेणाणंतएण वि ।

जो रासी सो अगंतो चि त्रिणिहिट्टी महैसिया ।। ३० ॥

जिंद एवं, तो अद्भोग्गलपरियहादिरासीर्ण सन्त्रयाणमर्णतर्च किंदि वि इवे किंद्रदु णाम, को दोसो १ तेसु अर्णतववहारो सुचाइरियवस्त्वाणपिसद्धो उवल्ब्मदे वे क तस्स उवयारणिबंधणचादो । तं जहा- पच्चक्खेण पमाणेण उवलद्धो जो धेमी सो अर्ग

यह उक्त गाथा भी विरोधको नहीं प्राप्त होती है, क्योंकि, इसमें किया गया व्याक्यान শুত্ৰ प्रथ्यार्थिकनय और शुद्ध पर्यायार्थिकनयको अवलम्बन करके स्थित है।

र्युका — 'जिन जीवांकी सिद्धि सविष्यकालमें होनेवाल है, वे जीव म्रव्यक्कि कहलाते हैं', इस यचनके अनुसार सर्व अव्य जीवांका स्वुच्छेद होना चाहिए, अन्वज अव्यक्तिके लक्षणमें विरोध आता है। तथा, जो राशि व्यवसहित होती है, यह कमी तर्व नहीं होती है, यसा माना नहीं जा सकता है, क्योंकि, अन्यत्र वैसा पाया नहीं जाता, अर्थार्य सुज्यय राशिका अवस्थान देखा नहीं जाता है !

समाधान—वह कोई दोष गक्षा, फ्योंकि, अध्यक्षिद्ध जीयोंका प्रमाण अनन्त है। और अनन्त पढ़ी कहलाता है जो संख्यात या असंख्यातमाण शादिके ध्यय होने पर मी सनन्तकालसे भी नहीं समाप्त होता है। कहा भी है।—

व्ययके होते रहने पर भी व्यनस्तकाळके हारा भी जो शादी समाप्त नहीं होती है, ^{इसे} महर्षिपीन ' अनस्त ' इस नामसे विनिर्दिष्ट किया है ॥ ३०॥

र्शका—यदि ऐसा है, तो व्ययसहित अर्धपुद्रस्परियतंत्र सादि राशियाँका स्वन्त्रव मण्डो जाता है ?

समाधान - उनका अनन्तपना नष्ट हो जाय, इसमें क्या दीय है !

र्शका — किन्तु उन अर्धपुद्रत्यपरियतेन आदिकाँमें धनन्तका ध्ययद्दार सूत्र तथा धायायीके स्थास्थानसे प्रसिद्ध हुआ पाया जाता है है

समाधान— नहीं, क्योंकि, उन पुट्रख्यरियर्तन बादिमें धनस्तःयदा व्यवहार उपवार निवन्धनक है। बन हसी उपवारनिवन्धनताको स्पष्ट करते हैं— जो पापाणारिका स्नम उपयोरेण परनवर्गा कि लोप बुरूपरे, तहा औहिणाणविषयपुर्ल्लिय द्विदरासीओ फेव-सस्त अर्णतरम दिसओ कि उत्परिण नाओ अर्णताओ कि चुरूपेति । तन्हा तेसु सुत्तार-रिपरम्हाणरिक्षद्वेण अर्णतवपहारेण भेदं चन्दाणं विरूत्वदे। अहमा वय संते वि अन्तवयो संत कि रासी अरिय, सन्त्रस्त सपडिवनस्तरेषुत्रतंत्रादो। एसी वि मन्त्रासी अर्णते, तन्हा संते वि मण् अर्णतेण वि कालेण ण जिह्नस्ति कि सिर्द्धं।

सासणसम्मादिद्वी केनचिरं काळादो होंति, णाणाजीनं पहुन्च

जहण्णेण एगसमओं ॥ ५ ॥

एदस्य सुमस्य अवयवत्यो जुन्दं पर्तविदे वि वेह जुन्पदे, जुणकतम्या । एत्य एगसम्यानस्या स्रोत्दे । वे जया-दो वा तिण्य वा स्पृत्तरप्रद्वीण जाव पितरोजमस्य असंविज्ञविभागमेषा वा उवसम्यानस्याहिको व्यसमयमम्बद्धाए एगो समन्ने जित्य वि सासगर्य परिवण्या एगसम्य (दहा । विदियसम्य सन्दे वि विच्छर्य गदा, तिसु वि कीएत सावणाणमगारी जारो चि स्टें। एगसमन्ना।

प्रत्यक्ष प्रमाणके ज्ञारा उपनन्य है, यह जिल प्रकार ज्यावारके 'अत्यक्ष है' पेला लेकिक कहा जाता है, वही प्रवारते वावधिवानके विषयण उद्योग करके जो दानियां दिधा है, व राष अनना प्रमाणवाल के प्रयक्षणने विषय हैं, इसलिज उपनारके 'अननत है' इस प्रकारके करी जाती हैं। अत्यय ब्रांच और आवार्योक व्यावधानके प्रतिच्या अननते स्पद्धारके यह व्यावधान विरोधकों प्रमाणके की कि स्वावधान अवश्वक होते रहने यह भी शहर काशव रहने-पाली को दाति है जो कि इस व शेनेयां की स्वावधान अनिव्यक्ति समान पार्व जाती है। इसी प्रकार यह अपन्याधि भी अननत है, इसलिज व्यवके होते रहनेया भी मनतन

कालद्वारा भी यह नहीं समात होती, यह बात सिद्ध हुई।

सासादनसम्यग्टिष्टि जीव किठने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा

जयन्यसे एक समय तक होते हैं।। ५ ॥

दस सुबका भयवयार्थ पहुँछ कहा का सुका है, इसलिय युनयक होगके भयसे यहाँ एक महाँ कहते हैं। अब यहाँ पर एक सामवर्धा प्रकाश की आती है। यह इस मकारेस है-हो सपता तीन, इस मकार यक मधिक मुख्ति धड़ते दुष पत्थेपपत्र के सक्तवार्थ प्रात्माम प्रवासत्त्रपत्रि जीय उदात्रामन्त्रपत्रके कालमें एक स्वास्थान काल भयदार्थ रह जाने एर यक साथ सासाइनगुकस्थानको मात हुए यक समयमें दिखाई दिये। इसरे समयमें सहदे सब नियायको मात हो गये। उस समय तीनों ही कोचोंने सासाइनसम्बन्धियाँ समाय हो गया। इस मकार यक समयम माता को गया। उस समाय देश माता अवीं में कोचा काल मात हुना।

१ तावादनसम्पर्कदेनीनार्जनारेख्या जयन्त्रेनेकः समयः । स. ति. १, ८,

उनकस्सोण पिटिदोवमस्स असंस्वेज्जदिभागो ॥ ६॥ दोण्णि वा विल्णि वा प्रवं एगुनस्वर्द्वण् जाव पिटिसेवमस्स असंग्रः गा उवसमसम्मादिद्विणो एगसमयमादि कार्ण जावुकस्मान छ आविष्य सम्मचद्वाए अस्य कि सासणनं पिडवण्णा। जाव वे मिन्छनं ण गन्छीतः अप्णे वि उवसमसम्मादिद्विणो सासणनं पिडवज्जिते। एवं गिन्हकारुकस्य स्मेण पिटिसेवमस्स असंखेजजिदमागमेनं कार्ल जीविद्व अमुर्ण होर्ण सरुक्तासे असंखेजजिदमान सम्मादिद्वणो सामणनं पाडवज्जितः असुर्ण होर्ण सरुक्तासे । क्विडिओ सो पुण कार्ले । सगरासीदी असंखेजज्जाणो । तं जहा - पिरंतरुवक्तमणकारो आवर्तियाण् असंखेजज्ञदिमागमेनं । सांतरुवक्तमस्य

पित्रोवमस्स असंखेज्जिद्मागमेचा । एवं होति चि कहु सामणुरुस्सकानु पुरुषदे । तं ज्ञा- एगस्स सासणगुणहाणुत्रवक्रमणवारस्स जिद् मन्त्रिमगडिः लिपाए असंखेज्जिदिमागमेची सामणगुणकालौ लन्मिद्रे, संखेज्जारिल्पमेची लिपाए संखेज्जिदिमागमेची वा, तो पित्रदेशिमस्स असंखेज्जिदिमागमेचज्ञवन

सासादनसम्यग्हिए जीवोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा उत्क्रप्टकाल असंख्यात्वे मागप्रमाण है ॥ ६ ॥

दो, अयया तीन, अयथा चार, इस प्रकार एक एक अधिक शृद्धिद्वारा असंख्यातय आगमात्र तक उपदामसम्बग्धि औष एक समयको आदि करके उन्धामसम्बग्धि आप एक समयको आदि करके उन्धामसम्बग्धि कार्य मान्यात्यको आप्त नहीं होते हैं, तथतक अन्य अन्य भी उपदामसम्बग्धि सासाइतगुणस्थानको प्राप्त नहीं होते हैं, तथतक अन्य अन्य भी उपदामसम्बग्धासाइतगुणस्थानको प्राप्त होते हहे हैं। इस प्रकार से प्रीप्तकालके बुसकी छाया उन्हर्जने प्रत्योगमें असंस्थातवें आगमात्र काळतक जीपोंसे अहान्य (परिपूर्ण) सासाइतगुणस्थान पाया जाता है।

शंका-सो यह काल कितना है !

समाधान — धावनी, अर्थान् सासादनगुणस्थानयती, राशिले असेर्यानगुणा इस अकार है— सासादनगुणस्थानके निरन्तर उपज्ञमणका काल आवलीके सर्व साममान है। किन्तु सान्तर उपज्ञमणके बार तो पर्योपमके ससर्यात्य साममा बार इस प्रकार होते हैं, ऐसा मानकर सासादनगुणस्थानके उन्ह्यसालकी उन्तिका कहते हैं। यह इस मुकार है—

षक अपिके साधादनगुणस्थानके उपक्रमण्यारका यदि मध्यम प्रतिवृत्तिसे म भर्तस्यातर्षे मागमात्र सासादमगुणस्थानका काल पाया जाता है, मथया, संम्यान मात्र, मथया मादशिके संस्थानये भागमात्र काल पाया जाता है, तो परयोगमके असंस्

१ बादर्वेच वस्तीपनायक्षेत्रमागः । स. वि. १, ८,

केचियं कालं लगामा वि इच्छागुणिइकलम्डि वमाणेणोन्नहिरे सगरासीदो असंसेचनागुण याराणुगमे सासणसम्मादिदिकारणस्वणं साराणकाता होदि वि धेषकं । वदि वि एत्य सुधं णत्यि, वी वि एदं वक्साणं सुधं 4 एगजीवं पडुन्न जहन्नेन एगसमओ'॥ ७॥ एदरसत्यो- एक्को उवसमसम्मादिष्टी उवसमसम्मवद्वाए एमसमभी अतिय वि सामणे गरी। जिदि जनसमसम्मचदा महेती होति, तो को होसी १ व, सामणगणहार पड्न वप्यसंगा । जैनियाए जवसमसम्बद्धाए सेसाए जीवी सासर्व वहिवज्जीदे, वैविजी चेव सामणापुणकाला होदि वि आद्दरियवरंपरागदुवदेसा । युनं च-उवसमसम्बद्धाः जित्रयेचा ह होह अमिता । पहिनाजेमा साणं तिवयमेचा य तस्तहा ॥ ३१ ॥ भागमात्र उपत्रमण पाराँका कितना बाल याम होग्य है इस महार इच्छाराशिसे ग्रुणित पाल हात होता है। देता प्रदेश करना खाड़िया। देशवि इस दिवसमें की स्वतास्माधानस्थानका काल होता है। देता प्रदेश करना खाड़िया। देशवि इस दिवसमें की स्वतास्माधानस्थानका मही है, तो भी यह ज्यास्यान स्वतंत्रे समान धवान करने योग्य है। एक जीवकी अवेक्षा सासादनसम्पर्काटिका जयन्यकाल एक समय है ॥ ७ ॥ भव इस त्यका अर्थ कहते हूँ - यक क्वाससम्पन्दि श्रीव क्वासत्तरक्ष्मवर्थ ताहर्मे दक्त समय भवशिष्ट रहनेपर सांताद्वनगुनस्थानको मात द्वमा पैका-यदि वयसमसम्बन्धयका बात अधिक हो, हो क्या होए हैं। समापान —महा, क्योंकि, उपरामसापकायका काल भविक माननेपर सासाक्र-तथानहालकं भी बहुत्वका प्रसंग मास होता है, अर्थात् सासाहनगुणस्थानका काल बहुत त्रवामा । इसहा बारक यह है कि जितने जयग्रसायकाकाव्याच्याच्या कार पहले जितने न पुरात होता है, बनना ही सासादनायुवस्थानका कार देवा है, देखा

वितने प्रमाण उपनामसम्पन-पद्म काल अवशिष्ट रहता है, उस समय सासादन-भारत अभाग व्यवस्थान क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र भारत विश्व क्षेत्र क्षेत्र भारत क्षेत्र क्षेत्र भारत क्षेत्र क्षेत्र भारत क्षेत्र ९ ९६ मात मित सप-पंतेक, समय ह ब. बि. १, ८.

8, 4, 6, 7

; ;

एगसमय सासाणगुणेण सह हिदो, विदियसमए मिळातं गदे।। एवं सांगणगुणस स्दे। एगसमओ ।

उक्करसेण छ आविलआओं ॥ ८ ॥

एदस्स अत्यो युच्चद्र- एकको उत्रममसम्माइद्वी उत्रममसम्माद्दाए छ अतः लियात्रो अत्या चि सासणं गदो । तत्य सासणगुगिन्द् छ आवित्यात्रो अन्तिर्ध् मिन्छनं गदो । कृदो ? साहियासु छसु आवित्यासु सेसासु सासणगुणपडिवन्बगामारा । प्रचं च--

उवसमसम्मतद्वा जद्द छावलिया ह्वेग्ज अवसिद्धा । को सासणं पवम्जद्द गो हेटुकटुकालेसुं॥ ३२ ॥

सम्मामिन्छाइडी केविचरं काँछादो होंति, णाणाजीवं पड्डव जहण्णेण अंतोसुहुत्तं ॥ ९ ॥

हस उत्तर बतलाय हुए प्रकारसे उक्त जीव बक्त समय भाग साम्राद्मगुणस्थानहे साथ, मर्थात् उस गुणस्थानमं, दिखाई दिया, और द्वितीय समयमें निष्यारवद्या प्रान रा गया। इस प्रकार साम्राद्मगुणस्थानका यक्त जीवकी अपेक्षा जवन्यकाल यक्त समयप्रमाप हपलन्य हुमा।

एक जीवकी अपेक्षा सामादनमम्पर्याटका उत्कृषकाल छह आवलीप्रमाण है।।८। भव इस स्पन्ना अपं कहते हैं— एक उपदासमम्पर्याट श्रीव उपदासमम्पर्याक स्वत्य स

यदि उपरामसम्प्रकृषका काल छह भावनी प्रमाण भवशिष्ट होये, तो जीव सासादन गुजरपानको प्राप्त होता है। यदि इससे अधिक काल भवशिष्ट रहे, तो सासादनगुणस्थानको मुद्दी जान होता है। ३२॥

(इस प्रकार एक जीवकी भवेशा छड् भायलीप्रमाण ही सासादनगुणस्थानका

रक्षरपान है।) सम्यगिमध्यादृष्टि जीव किनने काल तक होते हैं। नाना जीवोंकी अपेता अपन्ययं अन्तर्गृहुर्न तक होते हैं॥ ९॥

१ बच्चेंच बद्दानिकाः । स. वि. १. ८.

२ दरवयक्षण्याका कारवियेणो द्व समयवेणो पि । अपनिक्वे आवालो सम्प्रमन्दरद्दरो हिरी है

३ करविष्यदेश्वीतामीश्लेत्वता मचन्येताल्लीहुनै। १ स. शि. १, ८.

1. 2. 1

एदस्स अत्यो - अद्रावीससैतकस्मियमिच्छादिश्री बेदगसम्मचसहिदअसँबदःसंबदा-पमत्तर्संजदा सत्तद्द जणा वा, आवित्याए असंखेज्जदिमागमेचा वा, परिदोवमस्य रज्ञीदभागमेचा वा परिणामपञ्चएण सम्मामिच्छर्च गदा। तत्य सञ्चलनुमैनीयुदुच-द्रण मिच्छचं या असंत्रमेण सह सम्मचं वा पहिचण्या । यहं सम्माभिन्छचं । एवं भिच्छचसा अंतेष्ठहचकालो सिद्धो । अप्पमचसंबदो किमिहि सम्मापिच्छचं न १ ण, सस्त संकिलेस-विसादीदि सह यमचायुच्चमुणे मीचूण मुणंतरममणामाता । त वि असंजदसम्मादिद्विवदिरित्तपुणंतरमयवायातः। पञ्छा सम्मामिञ्छादिद्वी संजर्म ार्संजर्भ या किष्ण कीदो ? ण, रुस्स भिच्छच-सम्मचसहिदासंजदगुणे मोनूच गुर्नहर-ाभावा । कि कारणं ? सहावदो चेय । ण दि सहात्री परवज्जनिश्रीगारही, विरोहा।

इस प्रका अर्थ वहते हैं— प्रोहर्यांची क्ट्राईस प्रहानियाँकी सका रकतेक्छे इहि. अथया वेदकसम्बन्धमहित असेवतसम्बन्धि, संबनासंबन नथा प्रमनसंबन धानवाले सात भाट जन, भधवा बायलीके भरायवात्वें शागप्रात्र औव, श्रधवा वस्यो-मसंब्यातय भागमात्र श्रीय, परिणामांक निमित्तरे काव्यविष्यात्राचनकामको प्राप यहापर सबसे बम कार्तमृहर्गकालमाल रह करके मिध्यान्यकी, अध्या मार्ग्यके सायकायको भाग हुए। तब सायग्रिक्यात्व मृह हो गया। इस प्रकार गायग्रिक्यात्वका र्वहर्तप्रमाण बाल शिळ हमा।

द्वीता- यदां पर शप्रमत्तसंयत श्रीय, साविधाश्यात्त्वायश्यात्वी क्यों कहीं झान πŧ

समाधान - नहीं, क्योंकि, यदि अप्रमत्तकेशत शोधके सेहेदर की कृति हो। सो प्रमत्त गुणस्थामको, और यदि विशुद्धिको वृद्धि हो। तो अपूर्वकरण गुलस्थाकको छोवकर दसरे पानीमें रामनवा समाव है। यदि अवमन्तरंपत जीएका घरण भी हो, ली असंपनसम्ब गुजरधानको छोएकर एसरे गुजरधानोंने गतन नहीं होता है।

होता - सम्यागिमध्याराधि जीव अपना बाल पूरा वर दीछे संदयको अध्या संदया-को वर्षो महीं प्राप्त कराया गया है

समाधान-नदी, वर्षीक, वस सन्वित्रक्षाप्ति जीवका विकाशकारिन विका क्रियानको, अध्या साम्यक्षार्गहत असंग्रतगुष्पन्यानको छोत्कर कुसर गुक्तक्यार्गहे का अभाव है।

द्यंदा-भाष गुलस्थाओं वहीं जानेवा वया बारक है ?

समापान-देशा स्वभाव ही है। और स्वभाव हुलरेंके प्रश्ने देश्य वही हुना । है. बर्गीकि, उसमें विरोध भाता है।

उक्स्सेण पलिदोवमस्स असंखेजजदिभागो' ॥ १०॥

एदरस अत्था बुच्चदे- पुव्युत्तर्जीवा सम्मामिच्छत्तं गंतूण तत्थंतोमुहुत्तमन्द्रिय जत ते मिच्छचं वा सासंज्ञमसम्मर्च वा म पडिवज्जेति, ताव अल्ले वि अल्ले वि पुन्तुतजीग सम्मामिच्छचं पडिवज्ञावेद्व्या जाव सन्तुकस्सो बालाजीवावेवस्रो पलिदेशिमस्स अर्गः संअदिमायनेचकालो जारे। चि । सो पुण समरासीदे। असंखेजजगुणो । एदश्स वि कार्य पुण्यं च बचच्यं । तरो जियमेण अंतरं होदि ।

एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ११ ॥ म्दरमायो चुणदे-एको मिन्छारिद्वी विसुव्हामाणी सम्मामिन्छणं पिडाग्यो। मृत्यनदुमतानुद्वन कालमन्छिन्य विसुव्हामाणी चेत्र सार्वजम् सम्मणं पिडाग्यो। संहित्नं इतिय निरुष्ठमं किया गरी ? ण, विसोधिमद्धं संपूर्णमन्द्रियः संकिलेसं पूरिम निरुष्टमं गन्छनानगमामिन्छचकालस्य बहुचप्पसंगा । एनिकस्से विसोहीए कालादी संस्थितः

नाना अशिकी अवेशा सम्याग्मध्यादृष्टि जीवीका उरकृष्टकाल पन्योगमे वर्णगणाले कार्यकाल है।। १०॥

इन रायका मध्ये कहते हैं - पूर्णीना शुणस्थानवर्ती जीव सम्यागिश्या वकी मा देश्यर भीर वर्रापर मन्तर्गृहर्गनास तथा रहकर जावतक से सिरमान्यकी शयमा समेपमस्ति कारक परे: बड़ी बाटन हैं ने हैं, नवनक आय अन्य भी पूर्वीता गुजरवानवर्ती है। जीय गाँग विकास सम्बंद अन्त करते जाना साहित, अवनक कि सर्वेत्याय नाना अविकि भेषा रक्षरकार पानिष्य अर्थन्यान से भागमात्र काल गुरा हो। यह काल शपने सुनाश्यान, कर्न अंबरन्ति में मर्गवयानमुका है। हामका भी कारण गुपैस रामान है। बहुन भारित । इसके वधा मु निवसंव आगर की जाता है।

मह बी हो। अनेथा सम्यामिक्यादि अनिका जपन्यकाल अन्तर्भृदेने है ॥११॥ इस ल्करा अर्थ बहुने हैं -- वस विश्यार्शय श्रीय विज्ञत होता हुआ संस्थीतर्याल्डी कृष्ण हुक । कुक सार्वेटरपु अस्त्रमेंहर्नकाल रह कर विशुक्त होना हुना 🚮 सर्ववसमिति

कारक बरों: ब्रांटर बुध्य ह देश- में ह्याकी पूरित करके, सर्वात सहितापरिवाली बेरकर, सल्लीमध्यारी को व जिल्हानवर्षः करते कही आपन हाता है

समाजात - वर्ती, वर्तीक, विमृतिक वेवृति वाल मन्न अपने गुणश्यामने स्र वर्ग कर महद्यका कारण करके जिल्लासकी अजिलात श्रीलंक अवस्थितमालासीकी कार्य बर्चना प्रस्ता वा प्रायमा । इसका कारण यह है कि वक्त सी विश्वविक कामन सहग

PERMETSCHECKETTER SE F. C. · nede at and actually to set the con-

काणाणुगमे असंबद्धम्मादिहिकाण्यरूकां विसादीणं दोण्हं पि कालो दोण्हं विच्चाले हिद्पडिभगगकालसादिरो पिच्छरप संगो 11 10 1 वि अहित्वारण विच्छवं व बीही। अवना वेदगसम्मादिही मंकिजिस्समाणगो । र महिन्तुहरू मिच्छचं गरी, सप्तरहुमंबोमुहुवकालम्बिह्ण अतिबहुमंक्तिमा भिन्हचं गरी। एउ हे उन्हें कारणे पुन्नं व बचन्तं । एवं देशीहे बयारेहि सम्मामिन्छ वस्त उहम्पकालपस्त्रमा गरा مينيم ني e esti नं कर्ष है एको विसुन्तमाणा निच्छादिही सम्मापिक्टचं गरी, सन्द्रासम्बन्ध सद्वमिन्छर्ण संहितिहो होर्ण मिन्छचं गरी । युन्तिन्त्रवहण्यानारी स्था उनस्य कालो संदोज्ज्ञगुष्यो, सम्बुनकस्तिविकालसम्हषादो । अपना बहुगगममादिह्। संकितितम् माणां। सम्मामिच्छचं मदो । सम्युक्कस्ममंतीसुरुककानमसिन्ध्य अनंबद्गामाहिश् ** जादो । एत्य वि कारणं पुष्यं व वचन्त्रं। 4

असंजदसम्मादिटी केनचिरं कालादो होति, णाणातीपं पटुच्च सन्बद्धा'॥ १३॥

भीर विद्याचित इन बार्मोच्य हैं। बास, बीमोंचे बातरास्त्रें वियस प्रतिभाग बास्तरीरम भार राष्ट्राच्य के प्रतास कर भारत कारणा कारणाह कर वर्षात कारणाह कारणाह के कि स्वतं के स्वतं कारणाह कारणाह कारण निष्याहरि श्रीय निष्यायको नहीं प्राप्त कराया गया । श्रम्या, संहराका प्राप्त होन्द्रान विद्वसायगरिक जीव सम्योगमध्याच गुण्यसायको प्राप्त हुणा, और वटा का सर्वस्थ पहणान्त्राहर वाच प्रम्याणान्त्राम द्वावरवाण्या माण हुना बार बटा पर सावस्तु समामीर्गकाल रहे करके स्वित्रप्रसहिती हुमा है। सिच्यानको स्वान स्वान पर्या पर सावस्तु कारण दुवंह समाम ही कहूना चाहिए। इस तरह दी प्रशासिक सम्प्रीत्रहरूपाय के अध्य एक जीवनी जरेखा सम्पन्निध्यारिष्टि जीवना उत्तर बात बन्तर्रे हे हैं है । है देश

वह इस मजार है— वह बिग्नुदिको मात होनवाका विश्वाहर्वि औव सम्बंधिकाल वर हारा अवार ६ - प्राप्त सामग्रीहर्न काल रहकर और वंद्रे रायुन हो करने दिस्सान प्रभा हैं भा। पहारे बनारावे वाद हती गुणक्यांवर्ष अध्यक्ष बारमा वह तह वह स्था भाग हैं भा। पहारे बनारावे वाद हती गुणक्यांवर्ष अध्यक्ष बारमा वह तह बार है। आहं दुवार प्रदेश बनाराच अब देवा अवस्थात्म जन्म बादन बाद व देव क्याताचा है, बयोति, यह सबोल्ड बिकास्त समुद्राच्या है। अयवः, स्ताराच देव व द विद्यान्तिक व्यक्ति क्षेत्र व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्ति व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्यक्तिक व्य हरहें अववनसम्बद्धार हैं हो शवा स्वद्धांतर भी बास्त वृत्त स्वस्त हैं बदना कार्य क

आंगतनस्परहि बीब हितने बाल तब होते हुँ होन् होर्थ हा अदस्य हर र बहदगहन्द्रपट्टनाडीवरीकृत हेट वाक्षा है है ।

अदीदाणागद-बद्धमाणकालेसु असंजदसम्मादिद्विबोच्छेदो णरिथ। बुदो १ सहारदे।

. एसी सहाओ असंजदसम्मादिष्टिरासिस्सित्य चि कर्य गन्वदे ? सन्वदा वयगादी। हो पनसो चेत्र साहणचं पडिवज्जदे ? ण, उभयपवस्तविसद्विज्ञत्तस्स जिणवयणसा एकस्स वि पक्ससाहणचे विरोहामावा। दिवायरो सुत्रो उदेदि चि वयणस्तेत्र किरियाविसेसणचारो सन्बद्धमिदि पावेदि ? ण, तहा विवक्खामावा । पुणा कथमेत्थतणविवक्सा ? बुन्बरे-

सन्त्रा अद्वा बेसि ते सन्त्रद्वा, सन्त्रकालसंत्रंधिणो चि वुत्तं होदि।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं' ॥ १४ ॥ तं कर्ष १ अद्वावीससंतकम्मियमिच्छादिही वा सम्मामिच्छादिही वा संजदासंबदी या पमत्तसंजदो वा पुरुवं सासंजमसम्मत्ते बहुवारं परियष्टंती अच्छिदो असंजदो जारी।

इसका कारण यह है कि अतीत, अनागत और यतमान, इन तीनों है। कार्तीन मसंयतसम्यन्दिष जीवाँका ब्युच्छेद नहीं है।

ग्रैका—त्रिकालमें भी असंवतसम्यन्दिष्ट राशिका व्युष्केद क्यों नहीं होता ! समाधान-धेसा स्वभाव है। है।

र्शका - मसंयतसम्यन्दि राशिका येसा स्वमाय है, यह कैसे जाता !

समाधान-सूत्र पठित 'सर्यादा' भर्यात् सर्वकाल रहते हैं, इस यचनसे जाना। शंका-विवादस्य पक्ष ही हेतुपनेको कैसे प्राप्त हो जायगा !

समाधान—नदीं, पर्योकि, उमय पशके अधिशय युक्त अर्थात्, उमयपशानीन, पर भी जिनवयनके पस और साधनके होनेमें कोई विरोध नहीं बाता।

श्रेद्रा- 'दिवाकर स्वतः उदित होता है ' इस वचनके समान क्रियाविद्रारण होतेने 'सर्दर्स' देसा पाट होना चाहित ?

समायान - नरी, क्योंकि, उस प्रकारकी विवसाका समाय दे।

र्घेटा — तो यहां पर किस बकारकी विश्वशा है ? समाधान - यह विवशा इस अकारकी है- सब काठ जिल और्थोंके होता है, वे

सर्वाज्ञ क्टराने हैं, थर्यान् 'सर्वदारसम्बन्धी जीय' यह 'सर्पादा' पर्वा मुर्पु है। एक जीवकी अवेशा अमंयनसम्यादृष्टि जीवका जपन्य बाल अन्तर्गृहर्ने हैं ॥१४॥ र्देश - यह काल कैमे शंतव है ?

समायान-जिमने पर्छ ससंयमसदित सम्यक्त्यमें बहुतवार परिवर्तन क्या है, येमा कोई यक में दक्षीरी अहाईस ब्रह्मियाँकी सन्ता दलनेवाला निक्वादि ही. व्याचा सम्यान्यस्याराष्ट्रं, समाया संयनासंयन, समाया असत्तरीयन त्रीय असंयनसारपारीर हुना।

र एक्टर पत्र बरुवेद-नहीते । व वि. १. ८.

सच्यल्हमृतिशृहुचद्वमन्ष्टिय मिन्छर्य वा सम्मामिन्छर्य वा संज्ञमासंजर्म वा अप्पापन् भाषेण संज्ञमं वा पदिवण्यो । उत्तरिमगुणद्वाणेहितो संकिल्प्रेय वे असंजदसम्मन्त पाट-वण्णा, ते अविण्रष्टेण तेण संकिल्प्रेय सह मिन्छर्य सम्मामिन्छर्य वा गिर्द्या । वे हेहिम-पुणहाभिदेती विसंहीप सासंजर्भ सम्मन् पदिवण्णा, ते ताए चेर विसंहीए अविण्वहाए सह संज्ञमास्त्रमं अप्यमन्त्रमीण संजर्भ वा षेट्या, अष्णहा वाहण्णकालाषुत्रव्यादि।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १५ ॥

तं कर्ष ? एक्को पमनो अप्ययको वा चुक्कुमुबसामगानमेक्कदरो पा समज्ञनतेनीससामरोजसाउद्दिदिव्सु अणुक्तिनानकासियदेवेसु उवनन्गो । सार्सजमसम्मकस्स
आदी जारो । वहाँ जुदा पुर्चकोडाउव्स मणुक्तेसु उवनन्नो । तस्य अर्धनदसमादिद्वे देद्ग ताव दिदो जाव अंतोमुद्दुन्नेपाउक्ते सेसं ति । वहाँ अप्ययन्त्रमाविष् संज्ञमं दिद्देवन्नो (१) । वहाँ पनगापनकपरावनसदस्तं कादृन्न (३) खनगतिदियाओगानिभौदीव विसुद्धो अप्यम्नो जादो (३)। अपुन्यवनो (४) अनिवद्धिग्रवनो (५) सुद्दुनस्वयो (६) सीवकताओ (७) सर्जामी (८) अजीविद्धान्त्रमा दिद्दे जादो ।

असंववसम्बरहाष्ट्र जीवका उत्हार काल सावितेक वेदीन सामरोषम है ॥ १५ ॥ क्रिया — यह सावितेक वेतीन सामरोपमकाल केने स्टब्स है ॥

समाधान—पक प्रमणसंवत, भाषा अप्रस्तिवत, श्रावा चारों उरतासक्षीये स्वीतं पत वरतासक्षीये स्वीतं पत वरतासक्षीय पक सामय कार विलेख सालारेष्य भाष्ट्रपति रियानेवाले अञ्चलके सामाध्य स

385]

हरेहि एउड़ि अनेजुड्डेचेहि जनपुरुवकोडीए अदिरिवानि समजनवेचीनमान्त टक्संदराने दीनानं वर्णेन्द्रममादिक्तिम उक्कस्तकान्तर होदि। किपढं समजगतिकीमसागरीरमागरे.

देवेजनाहरी है व, जनाहा असंबद्धाए शहरामुक्तमा / कुरी है बहि तेगीनम

बनाव हरिन्स देवेनु उत्सादिस्त्वादि, में। वासपुत्रवास्त्रेमे आउए निक्टएन संबंध व इन्हर्ग के द्वा सम्ज्ञानेनीयनामगेतमाउद्विदिएम् देवेमुग्रान्त्रिए मनुमेन अस् के ब्रोहरू वह वह तह मनंत्रमेन मर अध्यय पुरी निष्ठपण राज्यों होते, ने मन्द्रमान्यान्यान्यान्यक्षित्व देवेतुप्तादिशे ।

संज्ञानंजरा केविवरं कालादों होंगि, णाणाजीवं पद्रन्य क्षिद्धां ॥ १६॥

बहरन मुजरम अच्यो सुगमी, असंबद्धसमीहिस्टि वस्वीदणादी।

१२ व⁸ सक्कर्णुरु^केन काम दुर्वेशोद्दे काण्यो स्वितिक नेत्रीस नासरेग्यस स्वस्यनसम्पद्धीया

हें हर — क्रार्थ सर्वापन्यकारहीर गुलक्षात्रका प्रस्त वाल बसराते हर इक्त क्री हैं करन वस ने में व सामरामा आयुकी क्रिमिताड़े वेबोर्स की किमानिय जनमा कर

करान्त्र वर्षः कान्त्राः, अमृत् करः समय क्षा नतीस सामरेशमधी दिग्निकः है है है बाद के पान म करणा जात था, जारतवराहराएति गुणकगामके वातके वीवेश वर्ग कर्त क करण है का' है, कह वृत्र नेतील आगरामा आगुर्वा विभावतान हेरील हणक हरमा व प्रमा ना, करावकमानाम्य मागृह बागाम वहन गर नियानस यह रोगमधा सम हैं अपना कि व के कह समय सम नेतीय स्थानश्यम समूची विश्वितान वर्गीने हथा हे कर में केवा, वह सम्बद्ध की मूर्व होते समामका व समामक समाम का स्व हर हुए अकारण कराव हैंगा। हमारण सर्वात अस्तिवस्त्रकृतकृत्य प्राच्ची सीम केल्यह ८४, वह मना कर नेत्र म मानवाम मानुका विग्रियान मनुष्यामानवासी 4 C. 2 C. 2 C. 2 C. 2 C. 2

में बहुत है वे वाहरत है ने नह होते हैं है नाता की ही अपना माहरत Ing Lite हर बंदर के मान है के हि अहरवसम्बद्धार देखिश्चानह करवड़ हेंचर 4 25. AZ 5 64 6

एगजीवं पडुच जहण्णेणंतोमुहुत्तं ॥ १७ ॥

तं कथं ? एक्को अहावीससंतकिम्मयिनिच्छादिह्वी अर्धव्यसम्मादिह्वी पमचसंवदी वा पुन्तं पि बहुतो संवमासंवमगुणङ्काणे परियद्विदो परिणामपञ्चएण संवमासंवमं पिढवण्यो । सन्वत्हमृतेसिहुचढमच्छिद्य पमचसंवद्वचरे विच्छपं वा सम्मामिन्छपं वा अरंत्वदसम्मचं वा पढिवण्यो । पच्छाकदमिन्छचा सास्त्वससम्मचा च अरंप्यसमावेच संतमं पढिवण्या । इते १ अण्यहा संवदासंवदद्वाए जहण्यवायुववधीए । किमर्ट्व सम्मानिम्छादिह्वी संवमासंवर्ष युणे ण, णोदो है ण, वस्त देसविरदिवज्वाएण परिणमणवधीए अर्समा । युचे च-

ण य मरह जेव संजमभुवेह सह देससंजमं वावि । सम्मानिष्टादिही ज स मरणेतं समृत्वाको ॥ १९ ॥

एक जीवकी अपेखा संग्वासंग्यका अपन्य काल अन्तर्भहर्ते हैं ॥ १७ ॥
यह काल इत प्रकार संग्रय है— जिसने पहले भी बहुनवार संग्रासंग्रम मुख्यामाँ
परिषर्तन किया है पेला कोई एक मोहर्सकी अद्वादेश महान्योंकी साचा रचनेवादा मिच्याहरि, सप्या असंपत्तवस्थारिक अपवा असमसंग्रत औय पुना विराणांकि तिस्तित संपत्तासंप्रम गुलस्थानको माह्या। यहांपर सबसे क्रम सम्मुद्धिन काल रह करके हर व्यक्ति
प्रमासंग्रतक्ष है, अपोत् प्रमास्थ्यत्वागुणस्थानके संग्रासंग्रत गुणस्थानको माह्या है, ते
मिच्यात्वको, अथवा सम्बिम्प्यात्वको, अथवा असंग्रतस्थानको माह्या हमा। अपवा, यहि
ये प्रभाह्यत मिच्यात्व पा प्रभाह्त असंग्रास्थानका है, अपोत् सम्मान्य होते हैं वे
मेन्यात्विया असंग्रतस्थानग्रहि स्वे हैं, तो अध्यक्ष्माको स्वाय संग्रसो माह्या हथा।
पदि पेला स माना आप तो संग्रासंग्रत गुणस्थानका अध्यक्ष स्थात वहंद बन सन्ता।

द्यंका-सम्पर्णिमप्यादिक जीव संवक्षासंवक गुणस्थानको विस्तित्व नहीं झाल्व कराया गयानी

समाधान — नहीं, वर्षोंके, सम्बन्धियाविष्ठ जीवके देशदिस्तिक्य पर्यायसे परि-वासन्तरी शक्तिका होना ससंसव है। कहा भी है---

संग्याभाष्यादि जीव म तो मरता है, व संव्यको प्रान्त होता है, व देशसंव्यको भी प्राप्त होता है । तथा उसके मारवाश्तिकसमुद्धात भी वहीं होता है ! मा !

[्] एकप्रीरं प्रति अवन्येना सर्देशि । स. सि. १, ८,

५ हो संपर्ध न शिश्दि वेसमये या व बंबई आंडे । कार्य या विश्वे ना पविश्वित साहि विद्यंत्र ह सम्बद्धिनकर्मानोस् महि आंडर्ग हुम वर्ष । हहि नव्यं सम्प्रेत्रमुख्यही हि च न विश्वीत हारी। मी. व १०५४

1407

ध्वखंडागमे जीवहार्ग

न्कस्तेण पुन्नकोडी देसुणा' ॥ १८ ॥

वं क्रवं १ एक्को तिरिक्सो मणुस्सो वा अहावीससंतक्षिमो सिन्छारही सा पंचित्रियनिरिक्ससंयुच्छिनपञ्जचण्सु मच्छ-रुच्छव-मंहकादिसु उववण्यो । सनसङ् अनोमुद्रचकारेन सन्त्राहि पज्जचीहि पज्जचयदी जादी (१)। विस्तृती (१) स्थि (१) होर्न संजमानंजमं पडिवण्णा । पुन्यकोडिकालं संजमानंजममणुपालिर्ण मह

मोधम्मादि-आरमञ्जूदनेमु देवेमु उववण्यो । णङ्को संजमासंजमो । एवमादिन्हीहै वीहि अंनेन्द्रचेहि ऊना पुन्यकोडी संजमासंजमकाली होटि।

पमत्त-अपमत्तसंजदा केविवरं कालादो होंति, णाणाजीवं पडुन्व सन्दर्भा ॥ १९ ॥

बैंच निम्न विकालेम पमवापमचसंबदेहि विरहिदी प्रमा विमामी परिथ, तेन एमजीवं पदुन्य जहण्णेण एमसमयं ॥ २० ॥

मंबरामंदन भीवका उपहुट काल कुछ कम पूर्वकोटि वर्ववमाण है ॥ १८॥ वह कान हम बहार शमन है - मानकार्यकी अहारेन महतिनाँकी नत्ता रतनेत्राना देश किरेब बचारा बनुषर विश्वाहरि श्रीत, श्रेबी प्रयोग्निय भीर प्रयोग्निक, येने संस्टित िरुष सर्घ, वर्णन, मेहरारिकोर्न शन्त्र हुना सर्वत्रम् अस्तर्ग्रहनेतान सारा नर्व इस्टें के इस्टेन्नरन हो जान्त हुमा (१)। तुना विभाग लगा हुमा (४), विगुत्र हो सरके (1), अवदासवादी जान दूना वर्षा पर पुत्रकारी काल तक शेरासश्यका पान करहे हरा के र के वर्ष कराबा आहि छेवर भारत अवगुनास्त कारोह देवाम प्रशास कृता।। करहा-चंद्रम ने दृही गया। इस बहार व्यक्ति मीन अन्त्रपृष्ट्रचीन क्षम प्रशास्त्रिया

इनक् श्रंड अवनक्षयन हिनने काल नह होने हैं है नाना अधिही प्रवेधा Hierory Care . M. मध्य र कारत राज ह

भाव कर है वालीस अग्रम और सम्मान्यवर्गान्ध (स्टब्स कर जी भाव नहां है हरू हो हो बाजून प्रमण क्षेत्र वयमण्ययनहा सप्नण कात जह सवस

सं जया- पमचस्स ताव एससम्ब्रो जुन्वरे। एकको अप्यमची अप्यमस्तात्व एतिलाए एससम्य अदिदम्हिय वि वमचो आहो। पमचमुणेण एससम्य दिक्को विदिय-समप मदो देवो जादो। ग्रष्टो भमादविसिद्धसंज्ञमे। एवं पमचस्स प्रमानममपहत्रणा गदा। अप्यमचस्स पुन्वदे- एकको पमचो पमचदाए सीणाए प्रमासयं अवियमिश्य वि अप्यमचा आदा। अप्यमच्याणेण एससम्य दिद्धो विदियत्सक् मदो देवे जादो। ग्रहमप्यमच-मुणाइणा अप्य ज्वसमसेदीदो ओद्दमाणो अपुन्वकाणो एससम्य अविदमित्य वि अप्यमचस्स प्रमानस्त आदेश, विदियसम्य स्ता देवे जादो। हिस्सम्य स्ता देवेसुववणो। एवं देवि प्रयोदि अप्यमचस्स एम-समयप्रस्थणा करा।

- उक्कस्सेण अंतोमुहूत्तं[।] ॥ २१ ॥

पमत्तस्त ताव घुटचर्- एक्को अप्यमची पमचपन्जाएण परिगमिप सम्युक्तस्तः मैतीष्ट्रप्रमण्डिप मिन्छदं नदो । एवं पमचस्त उदकस्तकाल्यस्वा गदा । अप्यमचस्त युचर्- एक्को भम्नो अप्यमचे होर्ण सन्युक्तस्तमंत्रीष्ठुत्वमन्छिप पमचो आदो । एसा अप्यमचस्त युक्कस्तकाल्यस्वणा ।

प्रमुच और अप्रमचसंयवका उत्कृष्ट काल अन्तर्गृहर्व है ॥ २१ ॥

पहेल प्रमासंध्वतका उत्तर काल कहते हैं— एक अप्रमत्तस्यत्, प्रमत्तसंयत्, प्रमत्तसंयत्वप्रिते परिवात होकर कीर संधारण अन्तर्गहेल कालप्रमाण रह करके सिय्यायको मात हुआ । इस प्रकार प्रमत्तसंयतके उत्तर काल करते हैं । अब अप्रमत्तसंयतके उत्तर काल करते हैं — यक प्रमत्तसंयतकों उत्तर काल करते हैं — यक प्रमत्तसंयतकीय, अप्रमत्तर्शवत है । इस प्रमत्तर्भवत होते काल तक रह करके प्रमत्तर्भवत है । यस अप्रमत्तर्भवत है । उत्तर काल करते प्रमत्तर्भवत है ।

पह इस प्रकार है— वहुले प्रमल्तंवतका एक स्वयं कहते हैं। वक अप्रमल्कसंवत जीव, सममत्त्रकारके कील हो जाने पर क्या एक समयवाल जीवित द्वीप रहनेपर प्रमल्कसंवत हो। गया। प्रमल्तालको साथ एक समय दिखा, बीट दूसरे समयवी प्रदक्त देव जगय हो गया। सब ममाद्विशिष्ट संवय नष्ट हो। गया। इस प्रकारित प्रमल्पनंवते वक समयवी प्रकारणा हुई। यद ध्रमम्तर्स्वतके एक समयवी प्रकारणा करते हैं— पक प्रमल्पनंवत जीव प्रमत्त्रको हीण हो जाने पर, नया एक समयवाल जीवनके दोप रह जाने पर समयक्त संवत हो। गया। तथ अप्रमल्यालके साथ पक समय हिस्स, बीट हुस्ते समयमें प्रकार देव हो गया। तथ अप्रमल्यालक्याल नष्ट हो। गया। अवयत, वप्यामरेश्वीत उत्तरत हुस्त अपूर्वकरणसंवत एक समयमाय जीवनके दोव रहतेपर समयक दुष्तो, भीट हिसीय समयमें प्रकार देवों में अप्यत्त्र हैग्या। इस सरद होनों प्रकारों अप्रमण्यत्वतके एक समयबी

१ स्वार्थेयान्तर्भृहत्ः । Ⅲ. थि. १, ८.

चउण्हं उवसमा केविचरं कालादो होति, णाणाजीवं पहुच्च जह .ण्णेण एगसमयं ॥ २२ ॥

र्षं कथं ? दो वा तिष्णि वा अणियद्विउत्तमामगा सेटीदो ओदरमात्रा एगमस्य जीविद्मरिय वि अपुन्तकरणउवसामगा जादा । एगसमयमपुरुपकरणेण सह दिद्वा विदिय-समए मदा देवा जादा । एवमपुञ्चकरणस्य एगश्वमयपरुवणा कदा । अप्यमनमपुञ्चकर्ण करिय विदियसमए कालं कराविय अपुटनकरणस्म एगसमययक्ष्यणा किणा करेति उपे ण, अपुच्नकरणपढमसमयादो जाव जिहा-पयलाणं बंघो ण बेश्चिरज्जिद ताव अपुच्नः करणाणं मरणामात्रा । एवं चेव तिष्द्रमुवसामगाणमेगसमयपरुवणा णाणाजीवे अस्मिर्व कायच्या । णवरि अणियड्रि-सुहुमडवसामगाणं चर्डत-ओदरततीव अस्तिह्ण दीहि पर्यारी एगसमयपहत्रणा काद्रश्या । उपसंतकसायस्य चढंतजीवे चेय अस्मिर्ण एगममय-परूपणा काद्या ।

उक्स्सेण अंतोमुहुतं ॥ २३ ॥

चारों उपञ्चामक जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेवा जघन्यसे एक समय होते हैं ॥ २२ ॥

षह इस प्रकार है— उपरामश्रेणीसे उत्तरनेवाले दो, अववा तीन अनिवृत्तिकरण उप शामक जीव एक समयमात्र जीवनके शेव रहनेपर अपूर्वकरण गुणस्यानवर्ती उपशामक हुए। तव एक समयमात्र अपूर्वकरणगुणस्थानके साथ दिखे । पुनः द्वितीय समयमें मेरे, और देव हो गये । इस प्रकार अपूर्वकरण उपशामकके वक समयकी प्रकरणा की ।

र्भका — अध्मत्तसंयतको अपूर्वकरणगुणस्थानमें ले जा करके और द्वितीय समवर्षे मरण कराके अपूर्वकरणगुणस्थानके एक समयकी प्रकर्पण क्यों नहीं की ?

समाधान-इसलिए नहीं की, कि अपूर्वकरणगुणस्थानके प्रथम समयसे लेकर कद तक निद्रा और प्रचला, दन दी प्रकृतियोंका वंघ व्युटिएथ नहीं हो जाता है, तब तक भपूर्वकरणगुणस्यानयती संवतीका भरण नहीं होता है।

इसी प्रकार दोप तीन उपसामकोंके एक समयकी प्रक्रपणा नाना जीवोंका आप्रय करके करना चाहिए।विद्रोष बात यह है कि अनिवृच्चिकरण और सुक्षमसाग्यराय गुणस्थानवर्ती वपशामक जीवोंके एक समयकी प्रकपणा उपशामधेणी चढ़ते हुए और उतरते हुए जीवोंकी साध्य करके दोनों प्रकारोंसे करना चाहिए। किन्तु उपशानकश्याय उपशासकरे वक समपनी प्रक्रपणा चड़ते हुए शीवोंको ही आश्रप करके करना चाहिए।

चारों उपग्रामकोंका उत्ह्रष्ट काल अन्तर्भुहुर्त है ॥ २३ ॥

१ चनुर्वाहुपत्रमञ्जानी नानाजीवारोहाना अध्ययेनीकः सम्बद्धः । सः सि. १० ८. ६ ट:इर्वेनान्तर्पहुर्तः । स. वि. १. ८.

काटागुगमे उदसामगयांळपरूवणं

, 2 St. 1

तं कपं १ सच्छ वा चउवण्या वा अप्यमचा अपुन्वकरणउवसामगा जारा जाव ते अणियिहिंहाणं ण पानिते तान अष्णे नि अण्णे नि अप्पमचा अपुरुवकरणगुणहाणं पहि-बन्डावेदन्ता । जायरमाणक्रणियाद्वेणो वि अपुन्तकार्णं पडिवन्जावेदन्ता । एवं पडंत-[१५१

जापरंतजीविदि असुन्यं होद्यं अपुन्यकरायगुणद्वायं अच्छिदि जाव वध्याओगाउक्कसंतीः सर्च ति । तदा जिन्छएण निरहो । एवं चेत्र विष्हृश्वसामगाणस्य करससकालपरूपण च्या । प्यरि उपसंतकसायस्य उक्कस्सकाठं मण्याणं एसो उवसंतकसात्री परिय जान पोत्रस्ति तान अच्छो सुरुमसोपस्या उनसंतरुसायगुणहाण चडानेदन्ता । एवं पुणी आव चावराद पार चाव विश्व विश्वविद्याले बहुविद्वों जाव विषात्रीमगुनकस्सर्अतीग्रहुकं पची वि।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं' ॥ २४ ॥ वं कपं ? एक्को अणिपट्टिजनसामगो एगसम्बं जीविदमरिय वि अपुन्नजनसामगो व क्षत्र । एक्का आवश्वरूषकाम्या रणकम्य ज्ञानस्मार्यः स्व अस्य अस्याम्या एमसमयं दिह्नो विदियसम्य सदो ल्यसक्यो देवो बादो । एवं तिन्द्युक्सामगाण् वसम्बद्धाः वचन्त्रः । वसिः अवियद्धिः सङ्क्षत्रवसामगार्वं वदगोपस्वविद्याणे सेहि

यह इस मकार है— साम बाउने लेकर चीपन तक अवस्वसंयत और दकसार हैं, तक तह साथ साथ भी काममसंस्था और सम्पर्धस्था प्रशासकार महा मात है, तक तह साथ साथ भी काममसंस्था और सम्पर्धस्थानको मात करता व, एक एक कार्य का कार्यमध्याचे कार्यक्ष प्रतिकृतिक कार्यक्ष व्यवकार्यक्ष व्यवकार्यक्ष व्यवकार्यक्ष व्यवकार्यका इ. इ.सी. प्रकारचे उपहासमध्योचे उत्तरनेवाळे अनिवृत्तिक कार्यवस्थानी उपहासक सी त्र वर्षाम्यामको मान्त करामा खादिर । स्य महार बहुते सार उतरते हुर मोगारे (बार्रिक्) हाथर सर्वेक्टरकाविक्ताच उसके नाम अवस्य सम्परिध्यास वेत नामान (पार्थ) बाकर कश्चवराम्युक्तराम बक्क बाल्य बारुट क्यायुक्तकाल पूर् हे हता है। इसके वधात निम्चले विरह (बातराल) ही जाता है। इसी महारसे प्रशासकोहे जुरुष कालकी महत्वमा करना चारिय। विशेष बात पर है कि हरवार उपसामको अहर कालना कहनेपर एक उपसाम्बक्ताय और यह करके महों उत्तता है, तह तक भग्य क्षाय वहमसायसाविक संवत उपसारकारतान बहाता बाहिए। इस बहारते पुनः संदेवातवार जीवाहो बहाहर उपरास्त्राता र भीवको अवेक्षा चारों उपनामकोका न्यपन्य काल एक समय है।। रेप्ट ॥

ि भारता है — एक अतिवृश्चिकता जयनामक आँव एक समयमाक आँवन इस मकार है — एक अतिवृश्चिकता जयनामक आँव एक समयमाक आँवन भारत वर्षा वर्षामा हुमा, यह समय दिखा, और दितीय समयम मरचको . भारूपकरण उपनामक हुमा, एक समय १२स्त, जार १६ताय समयम मध्यम धर्म जातिका श्रुक्तायेमान्यासी देश हो गया। इसी सकार क्षेत्र सीमी था उत्तम जातरा महचायमानधाना ५० का नवा ४ वटा महत्त वा नाम एक समरकी प्रक्रपणा करना बादिए। विरोध बान वह है कि सिन्धिकरण

पयारेहि, चढणमस्मिद्ण उवसंतकसायस्स एगपयारेण एगममयपुरुवणा कायव्या।

जनकस्सेण अंतोमुहृत्तं ॥ २५ ॥ तं जहा- एक्को अप्पम्नो अपुन्यउवसामगो जादो । तत्व सन्युक्कस्मर्मनीवृर्वः मान्छिय अणियद्विद्वाणं पडित्रण्णो । एवं तिण्हमुत्रसामगाणं वचन्तं ।

चदुण्हं खवगा अजोगिकेवली केवचिरं कालादो होंति, णाणा-

जीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २६ ॥ सं कथं १ सचह जणा अटुचरसदं वा अप्पमचा अप्पमचद्राए खीणाए अपुत्र-

करणखबगा जादा । अंतोग्रहत्तमञ्चिय अणियहिं हार्ग गदा । एवं चेत्र चदुण्हं खबगार्ग जाणिद्ण माणिद्वं ।

उक्कस्सेण अंतोमुहृतं ॥ २७ ॥

तं जघा- सत्तद्व जणा वा बहुगा वा अप्यमत्तरंजदा अपुत्रवखनगा जादा। ते तत्र

सीर स्पानसम्पराप गुणस्थानी उपशामकोंके खड़ने और उतरनेके विधानकी संवेक्षा दोनी प्रकारों तथा बारोहणका आश्रय करके उपशान्तकपाय उपशामककी एक प्रकारते एक समयकी प्ररूपणा करना चाहिए। एक जीवकी अपेक्षा चारों उपग्रामकोंका उत्क्रप्ट काल अन्तर्गृहुर्त है ॥ २५ ॥

यह इस प्रकार है— एक अप्रमत्तसंयत और अपूर्वकरण गुणस्थामी उपशामक हुमा। यहां पर सर्वोत्कृष्ट अन्तर्भुद्धतं रहकर अनियुचिकरण गुणस्थानको प्राप्त हुमा। इसी प्रकारसे तीनों उपशामकोंके एक समयकी शरूपणा कहना चाहिए।

अपूर्वकरण आदि चारों क्षपक और अयोगिकेवली कितने काल तक होते हैं!

ंनाना जीवोंकी अपेक्षा जयन्यसे अन्तर्भुहुर्व तक होते हैं ॥ २६ ॥ यह इस प्रकार है— सात बाठ जन, अथवा अधिक से अधिक एक सी बाड़ा अप्रमासस्यत अीय, अप्रमत्तकालके शीण ही जाने पर, अपूर्वकरण गुणस्यानयती श्रप्र द्वप । यहां पर वन्तर्युद्धतं काल रद्द करके अनिवृत्तिकरण गुणस्थानको प्राप्त दुप । इसी

प्रकारसे अनिवृत्तिकरण, स्कृमसाम्पराय, शीणकवायवीतरागछन्नस्य और अयोगिकेवली, हन चारों क्षपकोंके जधन्य कालकी प्रक्षपण ज्ञान करके कहलाना चाहिए।

चारों क्षपकोंका उत्क्रप्ट काल अन्तर्गृहर्त है ॥ २०॥ यह इस प्रकार है — साथ आठ जन अथथा बहुतसे अप्रमत्तसंपत जीय अपूर्वकरण

१ कत्कर्षेणान्तर्युष्ट्वर्षः । स. सि. १, ८, ९ चतुर्णं खरकानावदोगकेवादेवां च नानाजीवारेख्या पृष्ठजीवारेख्या च अवन्यप्रोत्हरमानुर्देशः ! g. G. ₹, <.

8, 4, 84. 7 षाटाणुगमे खनग-अजोगिनेताटेकाटगरूनणं अवोसहुचमन्त्रिय अणियद्दिणो बादा । वस्हि चेत्र समए अण्णे अप्यमचा अपुन्यस्वयमा -जादा । एवं युवो युवो संसेच्जनसरं जाना । धार्य ४० तमर जन्म जन्म पाउन्यतमा। वादा । एवं युवो युवो संसेच्जनसरं जाना । धार्य ४० तमर जन्म जन्म पाउन्यतमा। वादा । १४ ४४मा पुना पराव्यवसर् प्रव्यास्तरार भन्तर् सामान्त्र इतप्रकारसकातो होदि । एवं चेत्र चुदुष्ट् स्वयाणं वाणिद्रण सक्तन्त्रं । 1 144 एगजीवं पहुच्च नहष्णेण अंतोसुहुतं ॥ २८॥ तं जहा- एको अपमचो अपुन्तकायो जादो अवीमुहुचमन्छिर्ण अणिपङ्कित्वगो। जादो । एवं चेव चरुक्ट् सवमाणं जहणकालपहनमा काद्य ४णा उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २९ ॥ पदो अपमचा अपुज्यसम्मा बादो । तत्य सञ्ज्यसमनीयुद्द्वमण्डिद्ग अणि-पदिगुणहार्षं पदिवणो । एगवीत्रपरिसद्च अपुन्तकरणुक्तसकालो वादो । एवं भेव पद्भार सवनार्ण जालिहूण वस्तर्ज । एत्य जहण्णुकस्सकाता के वि सरिता, अपुरुवाहिः परिणामाणमणुकद्वीए' अमाबादो । गुणस्थानी स्वक द्वय । वे यहां पर अन्तर्युक्तं रह करके अनिवृत्तिकरण गुणस्थानी की गये। धीपरधाना स्पन्न दुद । व वहा वर भनाभुहत रह करक बागबुाककरण गुणस्थाना हो गर इसी ही समयम भारत भारतकार्यका और सपूर्वकरण समक दुद ! इस मकार दुन। दुन वरवागनाए भारोहणानियाक करने पर नामा जीवीका साधव करके सपूर्वकरण संपक्त वाहरा न्द्यानगर माराहणानपान करन पर नाना आधारन नाधव करक संद्वकरण से एड दौता है। इसी प्रधारते चारा संपन्नांचा बाठ जान करके कहना चाहिव। एक जीवकी अवेका चारों खवकोंका जपन्य काल अन्तर्यहर्त है।। २८॥ पह इस महार है — यह सम्मन्तसंयत और समुदंहरण गुजर्थानी स्वक हैमा भवत्य वार्षः व करके आविष्टविकरण शबद हुमा । इसी प्रकारने वांचरवाना सदक हुमा एक भीवडी अवेधा चार्रो धवकोंका उत्क्रप्ट काल अन्तर्महर्त है ॥ २९ ॥ पुरुष जायका जापना पारा धारणाका छन्छः भाठ जन्मात्रका ६ ॥ १ ॥ पहा सममत्त्रवात श्रीव सपूर्वकरण हेग्यक हुआ ! यहाँ पर सर्वाहरू सन्तर्गहर्ग काल पर कातिष्ट्रतिकराम गुणस्थानको साम हुआ। यह एक औरहो व्यायत काल करहे. करन, वानपुराकरण गुण्डरणान्ध आह इमा। यह एक जाएका व्याय करक रणका उन्हर बाल हुमा। हवीं प्रकारते वारों संबक्षीका बाल आयत करके बारों संबक्षीका बाल जान करके करना पहां वर जयम्ब झीर जाहरू, वे दीनों ही बाल सबसा है, क्योंकि, सपूर्वस्तर पर्यापाम न्युडाका नामा क्या के विदेखाँप — यहां पर अपूर्वकरच मादिके परिचामाँकी अनुक्राप्टिके समाय कहनेका अडोजुङ्गवर्ते पिडवरवबस्तानेनपतिवादा । कवडड्डा-स्टब्टे अनुस्टी वृत्ति लेक्क्नेन हैं गी. जी. ५३ पान हेडियमानी सरिवता क्षेत्र । स्था विदिव काल अनुनकात वि विदिह ॥ क्षेत्र ६६ वर व्यक्तितवयव्यक्तित्व व्यक्तितवयव्यक्तित्वस्थाः व्यक्ति स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स

सजोगिकेवटी केविनरं कालादो होति, णाणाजीवं पहुण सञ्चदां ॥ ३० ॥

ितु विकालेगु जेन एको विभागनी गर्ननिविधिको। शनि नेप मणहर्षा जन्महे ।

एगजीवं पद्दम जहण्णेण अंतीमुहत्तं ॥ ३१ ॥

र्षं कर्ष । एकं शीनकरात्रों सजीगी होत्त जी।बुद्रनमन्त्रिय सदस्याई कीन पच्छा जैतिनिरोहं किच्या जजीगी जाहे। । एवं सजीतिसम् जदस्यकानदस्या एगजीर सच्छीना गदा ।

🗧 उक्कस्तेण पुत्रकोडी देमुणा' ॥ ३२ ॥

सिमाय इस महार है— विवाहित समयमि विद्यामा अभिके संचारण समयमी श्रीविं परिचामी है साथ सहराता होनेको अनुरुषि कर्नन हैं। अधानमुक्त स्वाम समयमी अधिक स्वाम क्षेत्र कर्नन हैं। अधानमुक्त स्वाम समयमी अधिक परिचामी सहराता चाई जाती है, इसिल्य चन्नी वर अनुरुषि रचना बनतार गई है। किन्तु अधुवैकरण आदिने उपवित्तन समयमा अधानके सामयमा जाती जीविंक परिचामीके आपण सराता समयमा आपण परिचाम कर्ना वर्ष वार्य अपनि है, इसिल्य अधुवैकरण आदिने समयमा अधानमा अध

सपोगिकेनली जिन कितने काल तक होते हैं है नाना जीवोंकी अपेया सर्व-काल होते हैं ॥ ३०॥

्रमृति, तीनों ही कार्टोमें यक भी समय सचीपिकेवटी संगयान्मे दिराहिन नहीं है। इसटिए सर्प कारुपना बन जाता है।

पक जीवकी अपेक्षा सयोगिकेवलीका जघन्य काल अन्तर्मृहर्त है।। २१।।

यह इस मकार है --- एक शीणकपायधीतरामछत्त्वयः संयत आय सपीगकेवटी हो। सन्तर्भुद्धते काल रह, समुद्धात कर, पीछ योगनिरोध करके बयोगिकेवटी हुमा। इस प्रकार सपीगिकिनके अधन्य कालकी प्ररुपणा एक जीयका बाध्यय करके कही गर्र।

एक जीवकी अपेक्षा सयोगिकेवलीका उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्वकोटी है ॥३२॥

र स्वीगरेनटिनों नामाजीनापेक्षया सर्वः काळः । सः सि. १, ८. २ एकजीवं प्रति जमस्येनम्टर्सपूर्तः । सः सि. १, ८. ३ उत्कर्षेण पूर्वेकोटी देखीना । सः सि. १, ८.

से जपा- एको राहस्यसम्मादिही देवो था भिरम्भी वा पुन्यकोडाउग्गु मणुसेसु
उपयन्ना। सच मासे सम्मे अन्छिद्ण सम्मयनेसणज्ञमेण अह्वसिसओ जादो (८)।
अप्पमस्मादेण संज्ञमं पिड्यण्यो (१)। पुणो पमचापमस्यपारव्यस्त्रसं काद्व (२)
अप्पमस्मादेण अपापमस्यक्रमणे वाद्ण् (३) अपुन्यक्रमणे (४) अणियदिक्रमणे (५)
सहमरावर्गो (६) स्विणकसाओ (७) होद्य्य सजोगी जादो । अहर्ष वस्त्रीह सम्मिह
स्रवीयद्वर्षो हुम्सदेक्ष्रसं विहरिया स्रजोगी आदो (८)। एवं अहिद पस्तिहि
अन्नाह स्रवीयदुक्षिह स्य ज्यपुन्यकोठी सन्नीगिकशिकारो होहि।

(ओयपस्त्रमा समता) ।

आदेसेण गादियाणुवादेण णिरयमदीए णेरहएस मिन्छादिट्टी केवचिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुच्च सन्वद्यां ॥ ३३ ॥

हरो ! निरयगदिश्दि सन्वकालं मिच्छादिहिवोच्छेदाभाषा । एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतोगुहत्तं' ॥ ३४ ॥

यह इस मकार है — एक क्षांपिकसम्यादी है वेव सथवा सारकी जीव पूर्वकोटीकी सामुपांक समुपांमें उराज हुआ। वात साह गांगी वह करने गांगी मध्या करनेपांक जाम-विनसे साह प्रार्थ (८)। साठ वर्षका होने पर अग्रसकावसे संयम करनेपांक जाम-विनसे साठ प्राप्त हुआ (८)। साठ वर्षका होने पर अग्रसकावसे संयम करने (१) स्वाप्तक अग्रसकावस्य करने (१) स्वाप्तक स्वयं गुणस्थानमें अध्यावहुककरणकों करके (१) सामका स्वयं गुणस्थानमें अध्यावहुककरणकों करके (१) सामका प्राप्तकावस्य होकर (७), स्वयंशि करणे (५) एकसावार्यकावस्य होकर (७), स्वयंशि क्रिक्स प्राप्तकावस्य होकर (७), स्वयंशि क्रिक्स प्राप्तकावस्य होकर वर्षका । पुना पद्वा पर उक्त साठ वर्ष और साव अग्रस्तिहरी कर पूर्वकोटी वासमाण विदार करके अर्थार्थकर्या हुआ (८)। इस्त महार आठ वर्ष और साव अग्रसीहरीले कर पूर्वकोटी वर्षमाण स्वयंशिक्स साव होता है।

(इस प्रकार भोच प्रदर्शन समाप्त हुई)।

अदिवादी अवेद्या मातिमार्गणाके अञ्चलद्वेत नृत्कमातिमें नाराविपाँने निष्पादृष्टि श्रीव कितने बात तक होते हैं है नाना जीवीकी अवेद्वा सर्वकाल होते हैं ॥ वर्र ॥ क्योंकि, सहकातिमें सर्वकाल विश्वादृष्टियोंके स्वयोगक स्वामाव है।

एक जीवकी अपेक्षा नारकी मिध्यादृष्टिका जयन्य काल अन्तर्गृहुर्व है ॥ ३४ ॥

१ दिवेन रामप्रवारेन पारगारी बारनेषु क्यांतु पुचिनंतु विस्वारदेशीनार्वारोक्षवा वर्षः वातः ।
 स. ति. १, ८०

च पुरामीचे प्रति अवस्थिमान्तर्वहर्ताः । सः सिः १, ८०

तं जघा- एको सम्मामिच्छादिष्ठी असंजदसम्मादिष्ठी वा पुरुवं पि बहुवारपरि णमिदमिच्छचो संकिलेसं पूरेद्ग मिच्छादिही बादो । सन्यजहण्णमंतोमुहत्तकालमिक्छप विसुद्धो होर्ण सम्मर्च सम्मामिच्छर्च वा पढिवण्णो । एवं मिच्छादिहिस्स जहण्णकारः परुवणा गदा ।

उकस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ ३५ ॥

तं जहा- एको तिरिक्लो मणुसो वा सत्तमाए पुढवीए उपवण्णो। तत्थ मिच्छत्तेण सह तेचीसं सागरोयमाणि अच्छिय उवडिदो । लद्धाणि गेरह्यमिच्छादिहिस्स तेचीसं सागरोवमाणि ।

. सासणसम्मादिही सम्मामिन्छादिही ओवं ।। ३६ ॥ कदो ? णिरयगिदिग्हि एदेसि दोण्हं गुणहाणाणं णाणेगजीवजहण्णुकस्सपहनणाणं

पदेसि चेव ओपणाणेगजीवजहण्युकस्सपरूवणाहितो मेदामावा ! असंजदसम्मादिद्वी केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पड्डन

सन्बद्धां ॥ ३७ ॥

घह इस प्रकार है — एक सम्यग्मिध्यादिष्ट, अथया असंयतसम्यग्टिष्ट जीव, जा 🍱 पहले भी पहुत बार मिथ्यात्वको परिणत हो चुका है, संहेराको पूरित करके मिथ्यादि ही गया। यहां पर सर्व अध्यय अन्तर्भृहते काल रह कर, विशुद्ध होकर, सम्यक्षिको अध्या

सम्पतिमध्यात्वको प्राप्त हुआ । इस प्रकारसे मिथ्याहरिके जवन्य कालकी प्रकारणा हुई । एक जीवकी अपेक्षा नारकी मिध्यादृष्टिका उत्कृष्ट काल तेतीस सागरोपम है ॥३५॥

यह इस प्रकार है - पक तिर्येच अथवा मनुष्य सातवी पृथियोमें उत्पन्न हुमा। पही पर मिथ्यात्यके साथ तेतीस सागरीयम काल रह कर पाहर निकला। इस प्रकार नारकी विच्याद्रष्टिके तेतील सागरोपम उपलब्ध हुए।

सासादनसम्परदृष्टि और सम्परिमध्यादृष्टि नारकी जीवोंका एक और नाना

जीवोंकी अपेक्षा जयन्य और उत्क्रष्ट काल ओयके समान है ॥ ३६ ॥ क्योंकि, भरव गतिमें इन दोनों गुणस्थानोंके साता जीव और एक जीयसम्प्री जमम्य बाल बीट उत्हार कालकी अक्षपणाओंका इन्हों दोनों मुणस्थानोंकी शोधगत माना

क्षीय और पर जीवसम्बन्धी जयन्य और उत्कृष्ट कालकी प्रकृपणामीसे भेद नहीं है। अमंपतमस्यग्द्रिः नारकी किवने काल तक होते हैं है नाना जीवोंकी अवेशी

सर्वकार होते हैं ॥ ३७ ॥

र काजारनकन्यारकेश सन्यामध्यारकेश सामान्योत्तः काजा । स. सि. १. ८. ६ असंबद्धम्बद्धवाँनार्वातापेश्वता क्षत्रैः काक्षः । स. शि. १, ८०

पुरो ? जिरपगदिन्हि अर्धजदसम्मादिद्विवरहिदकालामाया । एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतोम्रहुन्तं' ॥ ३८ ॥

र्षं जहा- एगो मिन्छादिही वा सम्मामिन्छादिही वा सम्मले बहुवारं पुन्तं परि-याहिरूण अन्छिदो विसुद्धो होदण सम्मर्थ पहिन्त्वा । सन्य मन्यलहमैतीपूर्तमन्तिय सम्मामिन्छत्तं मिन्छत्तं वा गदी । एवं णिरवगदिश्रवंत्रदशम्मादिष्टिम् अरण्यकान-पर्स्वणा शहा ।

उरकस्सेण तेत्तीसं सागरीयमाणि देखणाणि ॥ ३९ ॥

र्षं जघा- एको तिरिस्तो मणुरुपे या जहारीययंत्रशम्मको मिन्छादिई। समझा पुरुषीण उपयच्यो । छहि पञ्जन्तिह पञ्जन्यदे (१) दिग्मेती (१) वित्रही (१) पेदगमम्मचं पहिबल्को । पुणी अंतीमृहचावमेमआउष्ट्रिश्न मिन्छचं गरी (४)। जाउने मंथिरूण (५) अतामुनुकं विश्वमिय (६) उपद्विता एवं छदि अंतामुनुकेरि उक्तानि 'सेचीसं सागरे।यमाणि असंजदतम्मादिदिरमः उग्रस्यकाली ।

क्योंकि, मरकारतिमें असंयतसभ्यन्ति श्रीवीते विस्तित बाहावा अवाब है। एक जीवकी अवेधा अमंबतसम्बन्धि नारबीका जपन्य बाज बन्दर्दर्द है।। ३८॥

यह इस प्रकार है- यक विश्वाहित, अथवा अव्यविध्यादिक श्रीव, हो वि लाच-क्यमें बहुते बहुनवार परिवर्गन कर चुना है, चुना विद्याद हो वरने वानवायको सन्त हुमा। बहुति पर सर्वस्रमु भारताहर्ति बहुस वहुन सावश्वित्रवायको, अथवा विश्यायको मात हुआ । इस मधारसे मरकातिमें असंबासरव्यव्हिते अवश्य कालकी सवक्ता हुरे ।

असंपत्तमस्यरदिष्टि नास्योका उत्कृष्ट काल क्षुष्ट कम नेनीम मासरोदम दे ॥ १९ ॥ यह इस प्रवार है - मोहबर्तवी अपार्टश शहतिवें वा सत्ता रकते बाल कह तियेथ शप्या ग्रान्थ शिव्याद्यि जीव सालगीं पृथ्वियोमें जन्त्रण हुआ । पुन- दाही पर्यानिये से पर्यात हो (१), विधाम हेता हुमा (६), विश्व हो ११ (६), वेदव सम्दर पत्र प्राप्त हुमा । पुत्रा भारतीपुर्त चाराप्रमाण आयुक्तमेशी शिधानिक संबोध्य बहुने घर मिश्याच्या सात्र पुत्रा (V)। चर्च मानामी मवनी भावनी बोधनर (4), अन्तर्भुति बाह विभाग हेनर (६) freier i eit unte tie mengentet un fifte eineten nur muremmer'ta: बार प्रवास दोता है।

ं छक्खंडागमे जीवहाणं

पढमाए जान सत्तमाए पुडनीए णेरहएसु कालादो हॉति, णाणजीवं पहुच्च सन्वदा ॥ ४०

. इरो ? मिच्छादिहिविरहिदसत्तर्ण्हं पुढवीणं सन्त्रद्वा अभा एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ४१

र्वे जहा- अपप्पणो पुरवीस हिर्जसंजदसम्मादिही सम्म विच्छत्तवारं परिणामपुरुवएण मिन्छतं गद्रा । सञ्जाह्णामंत्रीमहृत अप्पादरगुणं गरो । एवं सचण्हं पुडवीणं मिच्छादिहिषादेवसमेवीमृहच

सागरोवमाणि'॥ ४२॥

ज्कत्त्तेण सागरोवमं तिण्णि सत्त दस सत्तारः पडमाए पुडवीए एकं सागरोवमं, विदियाए पुडवीए विष्यि ह पुटबीर सच सागरोवमाणि, चउत्यीय पुटबीर दस सागरोवमाणि,

वचारस सागरावमाणि, छट्टीए युडबीए बावीस सागरावमाणि, सचमीर प्रथम प्रथिवीत लेकर साववीं प्रथिवी तक नारकियों में मिध्याह हाज तह होते हूं है नाना जीवोदी अवेदाा सर्वहाल होने हैं ॥ ४०॥

कर्य हिंह, मिच्याहडि जीवील रहिन सानी पृथिवियों हे नारकियों हा सर्वन एक जीवकी जवमा उक्त श्रापिवियोंके नारकी मिच्यादृष्टि जीवोंका बलाईहर्त है ॥ ४१॥

कृत हार प्रकार है — कानी कारनी श्वितियाँने रियम, तथा जिसने कृतकार विरम्भवादी मान हिया है येगा कहें ससंप्रतास्वारिष्ट सपया सरम हैं। इ. करवामां है जिसकाम सिच्यान्यकी मात हुता । यहाँ पर सर्व जयन्य स्थान हैं कर के पूर्वी के होती मुणक्यानीसिन किसी यह मुणक्यानकी मात हुमा । इस कार्या वृत्यत्वाह व्यवह विष्णाहि श्रीवृह सम्मगुरुने बावकी प्रक्राणा की गरे। टेन्ह मनो श्रुपिनियोद्द मिच्यार्गट नीनोहा उत्कृट हाल प्रमणः एक इन, इन, मन, इम, मनगढ, बाइन और नेनीय साराग्यमनमाम दे॥ ४२॥

बरम होजबीन एक मामरायम, जिनीव श्रीवरीम मीन सागरायम, युग्व श्री कान्त्र हे त्याच ४० व्याचन के देन क देव सामानाम और समानी कर्ना है

कालागुममे चेत्र्यकास्त्रणं वहा महादे १

सामरोजमाणि मिन्छादिद्विस्स सबस्सकाली । इदो १ एदेहिंनी अधिगरंघामाना । तं

एकं तिव⁴ सच इस तह सचारह दु-तिहदेखनभिय दस । उबदी तकस्सिहिरी सत्तव्दं होर प्राथीणं ॥ १४ ॥ इदि णिरयाउपंधमुचादो ।

- 1--

r

- ;

सासणसम्मादिद्दी सम्मामिन्छादिद्दी ओघं ॥ ४३ ॥

बदो है होन्हें गुणहाणार्च जाणातीचे पहुच्च अहळीण एमसमझे, अंतीसहचे । उन्हरसंग दोण्ड पि प्रतिदोवमस्स असंदेडजदिमागा । एगजीव पहुच्य अहल्पेन एगः जनसम्बद्धाः वात्रवास्त्रकः जनसम्बद्धाः व्यापाः व्यापाः व्यापाः व्यापाः व्यापाः व्यापाः व्यापाः व्यापाः व्यापाः समञ्जो, जीत्रपुर्वः । उक्तस्तिम् छ आवित्रयात्राः जीत्रपुरुष्मेवसादिणाः भेदाभावाः ।

असंजदसम्मादिद्दी केविंचरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुन्क

सन्बद्धा ॥ ४४ ॥ र्वं जहा- सचण्हं पुरुवीणं अतंत्रदसम्मादिद्विविद्दिराणं सन्बद्धाणुवर्छमादो ।

वरहार काल है, क्योंकि, इनसे मधिक बालुबंधका समाव है।

भाव का प्रभाव, द्वार भाव मानुस्था मानुस्था स्थाप के स्थाप का का स्थाप का मानुस्था स्थाप का स्थाप का मानुस्था स्थाप का स सभाव है ?

समाधान- वह, तीन, सात, वर्ग, तथा सत्तरह सागरीचम, तथा दोक्षे ग्रुणिव

प्तापात च्या वात, पाव, पाव, प्रथा वात प्राप्त प्राप्त पाव प्राप्त प्त प्राप्त दक्ष कराक दश र राष्ट्रकार / नवात महत्त वास्त्रवन्तु वन वास्त्र (इस्ट्रिक्ट्र) मर्योत् तेतीस सागरीयम्, इस महार सातो पृथिवियोती उत्कृष्ट रिपति

व पर । इस मारकापुरे, वंपमहाँक स्वते जाना जाता है कि स्वोक्त कालसे मापिक जातां श्रोपेविचाहे सामादनसम्पान्ति और सम्यमिष्ट्वाराष्टि जीवाँका नाना और क जीद सम्मन्धी जपन्य और उत्हष्ट काल ओयके समाम है ॥ ४३ ॥ व राज्य वा जन्म जार जन्म उन्हार आठ जावक राज्य र ॥ ०५ ॥ क्यों हि, उक्त होनें गुणस्यानोंका नामा जीवोंकी क्षेत्रस जयस्य काल कानसा एक प्रभारित वहा दोना उन्हर काल दोनों गुणक्यानोंका करवा व्यवस्य काल कानाम प्रक प्रभार सत्त्रवेहर्न है। तथा उन्हर काल दोनों गुणक्यानोंका करवीयको सर्वक्यानम् मार्ग पद आवर्षा मध्या होते गुणस्यामुद्ध दनमा अध्य बात एक समय और सन्तर्वास्त्र

पर जायका चपका पाना अभरपानाच्य अभवा अथन्य काल यक समय बाद बन्ता तथा तत्तृष्ट काल छह माललियां और मत्त्रमुद्धतं है। हत्यादि करते कोई भेद नहीं है । वर्ष्ट्रक काल एवं भाषालया नार नानवम्द्रत व व्हत्यात् कथल कार भन भार ह साता रामित्रामें असंपवसम्परदृष्टि जीन हितने काल तक होते हैं ? नाना ही अवेक्षा सर्व काल होते हैं॥ ४४॥ ही अपना चन फाट हाय है। इस ॥ यह चारत हैंत प्रकार संसव हैं — कि सानों शृथिवियां किसी सी कालमें सर्वयत-पि भीयोंसे रहित महीं पार्र जाती हैं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ४५ ॥

र्वं जहा—सत्तसु पुढवीसु हिदवहुसो सम्मत्तचरञ्जहावीससंतकम्मियमिच्छा

सम्मामिच्छादिद्वी वा सम्मर्च पडिवरिजय अंतोमुहुचमन्छिय मिच्छर्च सम्मामिन्छव पहिचळ्यो । एसो सचमु पुडवीमु असंजदसम्मादिष्टिजहण्यकालो परुविदो ।

ज्क्कस्तं सागरोपमं तिज्जि सत्त दस सत्तारस वावीस तेतं सागरोवमाणि देखणाणि ॥ ४६ ॥

वं जपा—एको तिरिक्लो मणुसो वा अहार्शससंतकम्मिओ मिच्छादिही परम

पुरवीए वा एवं जाव सत्तमीए वा उववण्यो । छहि पज्जनीहि पज्जनयहो (१) विसं (२) विसुद्दो (३) वेदगसम्मर्च पडिवण्णा (४) । सम्मर्चेण अप्पप्पणा उक्कस्साउद्विः मन्छिय जिल्किडिट्ण मणुसेसु उववण्यो । एवं तीहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणा अपप्य उक्कस्माउद्विरी असंजदसम्मादिहिउक्कस्सकाली होदि। णवरि सचमाप छहि अंगे सुदुचेहि ऊला उक्करसिट्टिदि वि बचव्यं, तत्व मिन्छचगुणेण विणा णिगमामारा

एक जीवकी अपेक्षा सातों पृथिवियोंके असंगतसम्पर्टीट नारकी जीवोंका जपन कान अन्तर्युद्दर्न है ॥ ४५ ॥

वह इन प्रकार है-- सानों ही पृथिवियोंसे रियन प्रश्ने अनेकवार सम्प्रकृपकी है हुमा माहकमेडी महाईस प्रकृतियाँकी संनाधामा मिश्याहरि बचया सम्याहरि जीव सारे क्चको मान हो कर और अन्तर्गृहने काल रह कर चुना विषयान्यको राधया सस्यागिकान्यके

काम हुमा। यह कामों दी वृधिवियोंमें बसंयमसम्बद्धाः ज्ञापन्य काल प्रकाण दिया गा। मात्रों पृथिविषोक्ते अर्थयनमध्याकृष्टि नारकी जीतोका उपहुछ काल क्रमण 📢 कन एक मारगीयम, बीन, मान, द्या, मलगढ, बाईन और नेतीन सागरीयम है ॥ ४६॥

बह इस प्रकार है → माहकमें की बहाईस महतियों की सभा करने वाला एक निर्देष स्तरा मञ्ज्य मिथ्यारिश मीत वहरी पृथियीमें, प्रथम दूसरी पृथियोमें, इस प्रशासी हन हर सन्तरी वृध्विती हायस हुआ। एहाँ वर्षा वर्षात पर्यात हो (१), विश्राम छना हुण (१) सिन्द रोहर (३), वर्डमण्यक्यदे बात हुमा (४), सम्पन्नये साथ मानी मानी क्रीक्षेत्री कल्क्ष्य सामुक्येकी स्थितियमाण रहे करके खद्दिन निकलकर मनुस्योगे उनाई हुआ । इस बहरासे हैं व अन्तर्मुहरोंसे कम वर्गनी मानी पृथिपीती उत्हर बाल्धिपीर हैं। इस इस कृष्टि । अमेदनस्थार्ग्यका इन्द्र बाल होता है। विदेश बान यह है कि मार्गी क्रिकेट हर काम्मेर्डिय बम इन्हर विश्वति होती है, येना बहुता चाहिया क्योंड, वर्षत

नियर बगुरुवर वर्षे दिना निर्मानका समान है. सर्यान विकासक समितिक सम्म गुन्ति

असंबरसम्मादिष्टिम्म आउत्रं वंधिय विस्तंतो होद्ग मिन्छचं गर्ग सचमपुर णिस्तिरिदे सम्मवकालो बहुगो लन्मिदि वि बुचे ण, सचमनुत्रावेणस्यानं मधुनेर बादाभावा । असंबद्सम्मादिद्वीणं वि जित्यतिरिक्साउवधामावा । जेण गुणेण आउ بنيع ج पंचरत संभवो अत्यि, तेणेव गुणेण विम्यामादी च । तिरिक्तगदीए तिरिक्तेसु मिन्छादिडी केनिर्न कालादो हॉति, णाणाजीवं पहुच्च सन्वद्वां ॥ ४७ ॥ हरो ? मिन्गारिहीहि विवा सम्बद्धा विश्विसमारीए अञ्चवलेमा । ع البند ا एगजीनं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुतं ॥ १८ ॥ ŗÈ तं जहा- एक्को सम्मामिच्छादिही असंबद्सम्मादिही संबदानंबदी वा बहुना मिच्छचवरो मिच्छचं पडिवणो । सम्बन्धन्त्रभवीमुद्रुवमन्छित् पुरवृत्वगुणेगु अन्तरस्मुसं मोंसे निकलना नहीं हो सकता है। रीका — मरायतसम्बद्धिः गुणस्यानम् भागामा सक्तः बायुको बांपकर विधान होता हुमा मिरवायको मात रोकर सातवाँ वृत्विवीते निकस्त पर सारवर का कार करूर मास दोवा है ! प्त । । । समाधान – महाँ, क्योंकि, सातवाँ वृतिवींक मारकांका मनुष्यांने क्याह मरी होना है। तथा, असंपत्तसम्बद्धियों भी मारक और तियस आयुक्त संपद्ध अमार है। इसरी वात पह भी है कि किस गुणरपानसे माजुबा वंध संभव है, उस ही गुणरपानसे बसार निर्ममन भी दोता है। विवेषमातिमें, विवेषोंने मिष्यादृष्टि जीव किनने बात वह होने हैं है सावा विवादी अवेद्या सर्वकाल होते हैं ॥ ४७॥ जापा पापकाण पाप का १०००। वर्षोक्षे, विष्याधीदे जीवीदे जिला किसी भी बालमें तिर्वेवणीत मही पार्ट मानी है। एक औरही अवेक्षा विश्व निध्यार्गीह जीवहा जग्न्य हात अन्तर्श 11 28 11 पर इस महार है— वहते बहुमवार जिल्लामा ध्याम विदा हुन एक सार. पारि, मध्या असवतसम्पर्धाः, मध्या सवनातरम् उत्त स्थानात्त्वः, स्व ह्रा प्रदास, मध्या मार्ग्यवान्त्राच्याः मध्या प्रथानात्रः वार्वान्त्राच्याः व्यवस्थान्त्रः व्यवस्थान्त्रः व्यवस्थान यर सदरा ज्ञास्य भागपृष्ट्रमे बाह्य रह बरचे पूर्वे मुण्डपामादेशः विश्वी दव गुरु E leave that fail thick als as che to a a a a a e fente zu neigenighte im Be f.

गदो । एवं बहुन्जकालपुरुवणा गदा ।

^{उनकरसेण} अर्णतकाल्मसंक्षेज्ञा पोग्गलपरियट्टं'॥ ४ एको मणुसो देवो गेरहजो ना जणादियछन्त्रीससंतकामेनेजो मिरछ

 संसु उनत्रण्यो । आवित्याए असंसेजदिमागमे नाणि पागगत्वरियङ्गि बज्जार्वि गदी । असंसेन्ज्यपोग्गलपरिषद्दाणि चि वयणादी अर्णवीवलदी कर्णतमाहणं किष्णावणिज्ञहे ? ण, अर्गतमाहणमंतरेण पोग्गलपरियहस्य अर्णत डबायामाबादो । पोग्गलपरियङ्गाणि आवलियाए असंखेलदिमागमेचाणि चेवा पम्बदे ! बाहरियपरंपरागदनक्खाणा तदनगदीए ।

सासणसम्मादिङ्की सम्मामिच्छादिङ्की ओर्च'॥ ५०॥ **इ**दो ! वाणेगञ्जीवज्ञहरूपुरुकस्मपुरुवणाहि विसेसामावा ।

हैं धानको मास हुमा । इस मकारसे निर्वेच सिक्यादृष्टिके अधन्य कालको मक्यमा हुई। एक बीवकी अवेद्या तिर्यंच निध्यादृष्टि चीवका उत्कृष्ट काल अनन्त कालम

मसंख्यात पुरुतपरिवर्तन है ॥ ४९ ॥ ्र संस्था छात्रीस महतियाँची मचायासा दक्ष मञ्जूषा, देव सरवा नारची मना

विच्याहरि जीव निर्वणीम जगन्न हुमा। वहांवर बावलीहे, बसंस्थानय मागमान पुरुवर्गी कर्वनांको परिवार्तन करके अन्य गानको बला गया। वृद्धा- । समंद्रवान पुत्रलगरियमैन । इस महारसे यवनसे सनमनाडी हरटिव होती है, हसाटव स्वमेस ' समम्म ' पत्रका महण क्यों मही निकास दिया जाए है

समाधान - वहाँ, क्योंकि, धनम्पन्तके श्रहण किए विना पुरस्परियतंत्रके सनम् दादी हरामध्यका बीर बोर्ड हराय नहीं है।

वैद्या — निर्वेष मिण्यारहिके बनावे गर्वे बक्त पुरस्वरिवर्गन, " मादसीके महंबा वर्षे मारामात्र ही होते हैं, ' यह कैसे जाता ? दीवाहै।

हिमाबान - नहीं, क्योंकि, आवार्य-परस्परामन व्याच्यानसे उत्त वत्तका हम मामादनमध्यारीष्ट्र और मध्यमिष्यारीष्ट्र निर्वेषोद्धा हान भोपके ससर विकास की ते वह जीवनाकारी जयार भीर केन्द्र वाहरी प्रदेशकारी सद दन दीने ही बालवहणमानीन बोई विशेषना नहीं है।

teasoning and modes a language of the state of E ENTERPLECEMENT OF ERROR OF ALL AND A काटाणुगमे तिरिक्यकाटररूकमं

असंजदसम्मादिड्डी केनचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पहुः r e! j सन्बद्धां ॥ ५१॥ प्तः इदो १ वीदाणागद-बहुमाणकालेखु अर्धबदयम्मादिहिबिगहिदनिरिक्छगर्।

एगजीवं पहुच जहष्णेण अंतोसुहुत्तं ॥ ५२ ॥ र्राणाच रहे । व जघा— एक्डो मिन्छादिही वा सम्मामिन्छादिही वा संजदानेहरी वा शी-णामपष्यण असंजदसम्मादिही जादो । सम्बरुहुमंत्रीसुरुषमन्त्रिय विगोहीर हुनक्ते कालप्रवणा गदा।

र्षत्रमानंत्रमं गरी, संक्तितेत्रण हुक्कत्रां मिच्छचं सम्मामिच्छचं वा गरी । एवं नरम्प उपासीण तिक्लि पलिदोवमाणि' ॥ ५३ ॥

र्थं जपा- एक्का मणुस्ता बद्धिस्तिगाउत्रो सन्मर्थं पेनृत्य देशवमार्शायं नाहिक देवचरहरतिरिस्तेम् उपयण्णा । तिथ्वि पतिरीयमाथि कथ सम्मवेष गह अस्ति व सो असंपत्तसम्पन्दि विथेष औव कितने काल वक होते हैं ? नाना बाहोंकी

अरेखा सर्वकाल होते हैं ॥ ५१ ॥ प्रकार वाज का २००० क्योंकि, मतीत, अनामत और क्रमान, इस मीबों ही वालोंने सलवमतास्वारिक जीवाँसे रहित तिर्वेषगति नहीं वाई जाती है। R11 48 11

एक जीवकी जिलेशा कर्सप्रतसम्पादाष्टि विधेशीका अवन्य काल कालही व पढ हरा महार है— यह विश्वाहृष्टि, अध्वा सामीवश्याहृष्टि, अध्वा संप्यानां सम तियंव जीव वरिणामोदेः निक्षित्वे अलंदनसम्बद्धि हुना । वहां सर्वतपु स्वास्ट्रेट वास

तावव आव परणाताचा जानवाच जानवाचाच्याचा हुणा । यदा स्ववस्यु जातादा पर्या वह करके बिग्नादिसे बहुता हुआ स्वसारांचमको यात हो गया । युवा कर स्टास्ट वहुता हुआ विष्णावको सथवा सस्यमिक्यावकः। सात हुन्य । इस प्रकार ज्ञास्य कार्यस् क्रवण्या हुर्। आरंपत्माचारहि विषेचका उत्तर काल ठीन वस्योपस है ॥ ५३ ह जावभवानभारताः विभावता व्यवस्थाता स्थापन वा अवद के विद्या स्थापन वा अवद के विद्या स्थापन वा अवद के

तिनेमीहर्शियका शय कर, देवकुट वा क्यारकुटक तिव्वादे क्षण्य हुवा करा कर है । निमादमाथमा सभ्य प्राप्त प्रमुख्या क्षावाद्व द्वाराच्याक व्यक्ष्य द्वार्या व्हास्तर स्थापन स् e deule a's anteniatique in fe s' . f a sen alie eiejenich im. ff f'. ..

ئۇنۇ ئىسىنى

पंचिदियतिरिक्स-पंचिदियतिरिक्सपज्जत्त-पंचिदियतिरिक्स-जोणिणीसु मिच्छादिट्टी केवचिरं कालादाे हॉति, णाणाजीवं पडुच्च सव्यक्ता ॥ ५७ ॥

कुरो ? विसु वि कालेसु पर्निदियवितिक्छवियमिच्छादिद्विवितिहर्पार्निदेयवितिक्छ-वियाणुक्लमा ।

एगजीवं पड्डं जहण्णेण अंतोमुहत्तं ॥ ५८ ॥

एक्को सम्माभिष्ठादिही असंबदसम्मादिही संबदासंबदी वा दिहमगो भिष्ठचं पठिचण्यो । सम्बल्हमंत्रीसृहचसच्छिप पुण्युचाणमण्यदरं सुर्थ गरी । तेण अतेत्रपुर्वामिदि सुर्वे वर्षे ।

उफर्सं तिष्णि परिदोनमाणि पुन्नकोडिपुधतेण अन्भ-हियाणि ॥ ५९ ॥

तं जघा- यक्को देवो णेरहमा मणुस्सा वा अस्पिर्वार्थिरपतिशिक्यपदिरिच-तिरिक्खो या अस्पिर्वायदियतिरिक्रोस् उपकण्णो । सन्णि-इस्पि-दुस्सि-णर्युसगरेरेस्

पंचित्रिय विषय, पंचित्रिय विषय पर्याप्त और पंचित्रिय विषय योतियत्रियों मिध्यादृष्टि जीय किनने काल तक होते हैं है नाना जीवेंकी अपेका सर्वकाल होते हैं ॥ ५७ ॥

क्योंकि, तीनों ही कालेंकि सीनी सकारके वेबेन्द्रिय विषेष सिर्याशियोंते रहित' उस तीनों सकारके पंचेन्द्रिय विषेण नहीं विषे जाते हैं।

यफ जीवकी अपेक्षा उक्त तीनों प्रकारके तिथैच विष्यारिष्ट जीवोंका जपन्य काठ अन्तर्महर्त है ॥ ५८ ॥

त्रिसने मिच्यायका मार्ग पहले को बार देखा है येसा वक सार्याभ्यशास्त्रि स्वयस्य स्वसंपत्रस्यग्रास्त्रि, अयवा संवतासंवत तिर्वेच विष्यावकी आत हुमा। वहां वर सर्वेट्यु अस्पत्रस्य तिर्वेच विष्यावकी आत हुमा। वहां वर सर्वेट्यु अस्पत्रस्त्रे काल दह कर पूर्वेच वुवस्यानोंसे किसी वक गुणस्थानको मार्ग हुमा। इस दिस स्वत्रों के अस्पत्रमुंतिकाल 'येसा कहा है।

उक्त पंचेन्द्रिय वियंचोंका उत्हर काल पूर्वकोटिष्टवक्तवमे अधिक होन दस्यी-पम है ॥ ५९ ॥

अँसे, एक देव, मारबी, अनुष्य, अववा विवर्शन पंबेन्द्रिय निर्वयने दिनिय अन्द तिर्वय औव, दिवशित पंचेन्द्रिय निर्वयोग तत्त्वय द्वारा वर्षो वर्षा, दुरर और कमेण अइंद्रपुच्यकोडीओ हिंडिद्ण असण्णि-इत्यि-पुरिस-णवुंसयेवेदेसु वि एवं वेर अहुद्वपुच्चकोडीओ परिममिय तदो पंचिदियतिरिक्खअपज्जनएसु उवक्णो । तप अंतोमुद्रुचमन्छिय पुणो पंचिदियतिरिक्सअसिष्णपञ्जचएसु उवनज्जिय तत्यतणहिय पुरिस-गर्नुसयनेद्रम् पुणे। ति अहुहपुज्वकोढीओ परिभमिय पच्छा सण्णिपीनिदियतिरिस्त पज्जचहित्य-णवुंसग्वदेसु अह्रह्रपुच्यकोडीओ पुरिसवेदेसु सच पुच्यकोडीओ हिडिद्ग तदो देव-उत्तरकुरुतिरिक्सेस पुन्तिक्लाउवसेण इत्यिवेदेस वा प्ररिसनेदेस वा उपनण्णो

वत्य निष्मि पलिहोत्रमाणि जीविद्ण मदो देवो जाहो । एदाओ पंचाणग्रदि पुन्यकोडीओ पुरुवकोडिवारसपुषचंसिष्णदात्रो चि एदासि पुरुवकोडिपुषचववदेसो सुचिणिहिही ग जुरुनदे । ण एस दोसो, तस्स वहउल्लयाह्चादो । बारसण्हं पुन्यकोडिपुधचाणं कथ मगर्ष १ ण, जारमुदेण सहस्ताण वि एगचविरोहामात्रा । णवरि पंचिदियविरिक्खपत्रप पमु सचैवालीसपुरुवकोडीओ हिंडाविय पच्छा विपलिदोवमिएसु विरिक्लेसु उप्पादेदको।

नरुंगक वे होंमें कमसे माठ बाठ पूर्व होटि कालप्रमाण धमण करके, बसेवी स्त्री, पुरुष मीर नरुंगक पेरीमें भी इसी प्रकारसे बाठ बाठ पूर्वकोटि कालप्रमाण परिश्लमण करके, इसके प्रधान् पंदेशिहच निर्यंत लक्ष्यपूर्णातकोंमें बत्यस हुना । वहां पर भन्तमुंहते रह कर, पुना पंवित्रिय निर्मय मसंबी पर्यानकीमें उत्पन्न होकर, उनमेंके स्त्री, पुरुष और मुप्तक वेरी जी रों में किर भी भाद बाद पूर्वकेटियों तक परिश्रमण करके, पाँछे संबी पंचेन्द्रिय तिर्पेष परांगड मी बौर अर्पुनक वेदियोंने बाद बाद पूर्वकोटियां, तथा पुरुषयेदियांने साम पूर ब्रोहियां अवस बरके उसके प्रधान् देवकृद समया उत्तरकृदके निर्वेशीम पूर्वेशी मायुके बाति क्रीनिहर्योमें भयता पुरवेशीत्योंमें उत्पन्न हुमा । यहां पर तीन परयोगम तक श्रीयित रह कर मरा और देव हो गया।

र्धंद्रा — ये क्रपर बदी गर्द वंबानवे पूर्वकोटियां पूर्वकोटियादरायुग्यनय संबाहर 🖟 रस्टिए, इनरी स्वतिदिष्ट पूर्वकीटिमृथक्ष देनी संक्षा नहीं बनती है है

ममायान - यह कोई दोन नहीं, क्योंकि, यह पृथक्त दान्द धेपुरववायी है, (इस टिर बेंदिगुयम्यने बचार्यमय विवसित मने ह कोटियाँ प्रश्य की आ शकती हैं।)

देश--बारह पूर्ववेर्तरपूर्वकारों ब्रह्मना कैसे वन सकता है ! समायात् —वर्षे, क्याँदि, जातिके सुलते, अर्थात् जातिकी अवेशा, सदशीहे मी

बर्भ हे नेवें दिनेवहा सवल है। विरोध करा वह है कि वंबेन्द्रिय निर्यक्तार्थांत्रकों में सेनालीस वृत्रेकोरियाँ गर भा^{त्रक} सरारे रें हे तीय सन्वास्त्रकाने निर्वेचीय त्रमात्र सरावा साहिए। प्रशीहि, अनुवीनकारे

६ मीलू 'हर्युरल' हुई ए हा ।

कुरो ? अपन्जननेण परेतिमधिलादाणं पन्छा सेराष्ट्रनकोडीओ परिन्ममणे संमग-भागा ! अपन्जनस्य कपिलियेद्स्स संभगे ! ण, अपन्जनित्येद्रालमणोज्यविरोहा-भागा ! पंचिद्रयतिरिक्तजोणिणीतु पण्णारस पुन्तकोडीओ समाविय पन्छा देवृत्तरकुरेसु उप्पादेदन्यो । कुरो ? वेदंतरसंकेतीए अभावादो ! णरिप अण्णो कोद् विसेतो !

सासणसम्मादिही सम्मामिन्छादिद्री ओघं ॥ ६० ॥

हरो ? तिस वि पंचिदियतिरिक्छेस द्विररोगुणहाणाणं णाणाजीवं पदस्य जहरणेण एमसमजो, अंतीयुहुणं । उक्करसेण पिट्रायमस्य असंखेळाद्रमागो । एमजीवं पद्य जहरणेण एमसमजो, अंतीयुहुणं । उक्करसेण छावित्यात्री अंतीयुहुणिदि एरेहि विसेतासावा ।

असंजदसम्मादिष्टी केविचरं कालादो होंति, णाणाजीवं पडुच्च सम्बद्धा ॥ ६१ ॥

शुद्रो ! तिसु वि वंधिदियतिरिवस्तेसु असंबदसम्मादिद्विविरहिदकालामावा ।

साथ मपरिणत हुए, धर्यात् छम्प्यपर्यान्तक हुप विना, उक श्रीयीके प्रधात् होर पूर्वकोहियाँ परिश्रमण करना संमय नहीं है।

र्शका- एक्यपर्यातकों में स्वीवेद केते संमय है ?

समाधान-नदी, फ्योंकि, हत्व्यवर्यात और स्रीयेद, इन दोनों अवस्थानीमें पर-स्पर कोई विरोध नहीं है।

पंचित्रिय तिर्वेश योतिमतियोंने वन्द्रह पूर्वकेटियों तकः क्षमण कराके प्रमाण देवहृद्ध भीर उच्चक्तुरुकें उत्त्वन कराना व्यद्भित, स्पोति, सोगस्मिमें येवत्यरिकत्वका स्रमाण है। इसके सिपाय सन्य कोई विरोधता नहीं है।

् उक्त वीनों प्रकारके तिर्वेच सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्निप्यादृष्टि औरीदा

काल ओधके समान है ॥ ६० ॥

वर्षेकि, तांनों ही वंधेन्द्रिय तिर्वेशोंने दिश्यत उक दोनों गुणस्यानाँका नामा जीवाँकी भेषेका जाध्य काट पर समय और कस्ताहित है। तथा उत्तरह काल पर्योपमध्य करिस्तावर्षी मार्च है। एक तथा प्रकार कार्य कार्य की कस्ताहित तथा उन्हर काल एक समय और कस्ताहित तथा उन्हर काल एक समय और कस्ताहित है। इस अधार हम दोनों गुणस्यानींसे उक तीनों पंधिन्द्रक जीवोंके कारोंने केंद्र विदायना नहीं है।

उत्त शीनों प्रकारके तियेच असंयतसम्यग्दृष्टि जीव क्लिने काल एक रोते 🕻 !

नाना जीवोंकी अपेदा सर्व काल होते हैं ॥ ६१ ॥

वर्षोकि, तीर्ज ही प्रकारके चंचिन्द्रच विवेवाँमें असेदतसायगरिक आंधीते एट्टिंग कालका मधाय है।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ६२ ॥ ्राच्यात १८-च जार-च्या जारायः छुत्र । द्रा । छुते १ मिच्छादिद्वी सम्मामिच्छादिद्वी संनदामंत्रदो ना निसोहिःसंक्टिमनंतर असंजदसम्मादिष्टी होद्य सञ्जहण्णमंतोसुद्रचमन्छिय अविणद्रमंतिकेस-विमोहीर्द पडियणागुणंतरसम् अतीमुहुत्तमेत्तकालुवलंमादो ।

ज्यकस्रोण तिष्णि पल्टिदोनमाणि, तिष्णि पल्टिदोनमाणि, तिणि पिटदोनमाणि देखणाणि ॥ ६३ ॥

पंचिदियतिस्विमः-पंचिदियतिस्विमःचनज्ञताणं संपुष्णाणि तिणि परिदौनमाणि। हुदो १ मणुस्तस्त पद्धतिरिक्खाउत्रस्त सम्मर्च घेनुण दंसणमोहणीय खिवप देवुवाङ्कः र्षाचिदिपतिरिक्ष्णुसुवविज्ञय अप्पणो आउड्डिदिमणुपालिय देवेसुप्पणस्स संपुर्णानिन प्रिदोवममेनसासंज्ञमसम्मचकालुबलंमादौ । वीचिद्रियनिरिक्समोणिणीतु देम्लाविणिपीत दीयमाणि । इत्ये ? तिरिचलस्य मणुस्तस्य वा अहावीयसंतक्रिम्मयमिष्ठारिद्विस देशुचारक्रणंजिदियतिरिक्खजोणिणीमु उप्यक्तिय वे माने शन्मे अन्छिर्ण णिक्खंतम स्टुचपुषचेण विसुद्धो होर्ण वेदगसम्मत्तं पडिवन्त्रिय सुहृचपुषचन्महिय-वे-माष्ट्रणतिस्य

एक जीवकी अपेक्षा उक्त वीनों प्रकारके पंचीन्द्रेय विभैच असंयवसम्यादी जीवोंका जपन्य काल अन्तर्गृहर्त है ॥ ६२ ॥

पर्योकि, कोई मिटवार्राष्ट्र, अथवा सन्यामस्वार्ष्ट्र, अथवा संवतासंवत निर्व ययाक्रमते विद्युद्धि, अथवा संक्षेत्रके वहाले अलवतसम्याद्धि हाकर सबसे का अल्वास ज्यानम्य त्यदाचा ज्याम प्रशास कार्याच्यानम्य हास्य स्थान क्षण व्यक्ति हार्य स्थान क्षण व्यक्ति हार्य स्थानम्य हुवा, पेसे जीयके अन्तर्भहने काल पाया जाना है।

उक्त वीनों पंचिन्त्रिय निर्वेच अमैयनसम्बार्ग्य जीवेंका एक जीवकी अपेबा उत्हर काल यदाक्रममें नीन वन्योवम, नीन वन्योवम और हुछ कम वीन पत्योवम E 11 53 11

पंचीन्त्रप निर्धय भार पंचीन्त्रय निर्धय प्यांनकीका सम्पूर्ण नीन पश्योगम उन्हर कार है, क्योंकि, वर्जनिर्वमायुक्त मनुष्यके, सम्यक्ष्यको अहण करके, वस्त्रमाहनीयस परिवाहन कर, देशोंने उत्पन्न होनयाह आयक ना सम्पूर्ण नीन पन्थापना अवस्थानविह सारवन्त्रका कार पाया जाता है। पंचित्रिय निर्वय योगिमनियाँमें कुछ कम तीन परपोर्ग बार है। क्योंकि, माइकमबी अहेरिस प्रहानवाँकी सक्षायात नियम प्रथम मनुष्य प्रियम होट जीवर देवहर भयवा उत्तरहरूर पंजीन्य नियंत्र वानिमनियाम उत्तरहरू और हो मास गर्मन रहेकर, जन्म छेनेवाल, और मुहुनेषुषक्यम विगुद्ध होकर वृद्धसम्बद्धाः

षाराणुगमे तिरिम्खनारपरत्रणं पतिदोनमाणि सम्मचमणुषालिय देवेसुनवष्णस्म देय्याविणिपपनिदेशियमेचस कालवलंगादो । t Fin संजदासंबदा ओधं ॥ ६४ ॥ इता है तिसु नि पंचिदियतिरिक्तेसु णाणानीनं पड्रन्य सम्बद्धा, एमानीनं पड्र जहरूपेय अवैधिष्टकं, उदस्येय पुटाकोडी देख्या, ह्रन्याहण मेरामात्रा । परित बालिय वे मासे अंतोसुद्रचेहि कणिया वि वचन्तं। पंचिदियतिरिक्सअपञ्चता केवचिरं कालादो होति, णाणाजीव مينيس. पडुन्च सन्बद्धा॥ ६५ ॥ 7 इरो । वंचिदिवतिरिक्तअपन्त्रचिरहिद्दालाणुक्लमा । *** एमजीवं पडुच जहण्णेण खुहाभवगगहणं ॥ ६६ ॥ हरो १ वहादिय-वहादिय-चडारिय-चडारियपग्रम अवग्रमच-चीवृदियांगिरिकारपञ्जम मञ्जातवज्ञचापरज्ञचारतः अन्यदरस्य राहामनाग्रहणायुद्धिर्वादिविनीरिकाअवस्यज्ञचार्यः मात करके मुहत्वष्ट्रभवावते अधिक हो माल कम तीन परवोपम तक शारवण्यको अनुपालक भाग करण महत्त्वपुष्पनत्वक बाध्यक वर भारत कम ताल प्रश्वापम तक राज्यप प्रशासन्त वर भारत कम ताल प्रश्वापम तक राज्यप प्रशासन्त वर्गायन वर्गायम वर्गायन वर्गायम उक्त धीनों मकारके पंचीन्द्रय संग्वासंयव विवंचीका काल अंग्येक मसान है ॥ ६४ ॥ वर्षेकि, तांनों ही महारक्त वंदिश्व निर्वेशोंने बाना अधिकी धरेशा सर्वेशान, वक भारति भारेशा ज्ञापन काल सम्ताहन, और अतिह बाल वर्ष करा पूर्वकारिमाण होता है, आदमा भवता मध्यत मध्य काल व्यालाहरू, बाद बाहर काल इ ए कल इवव गाहमधान हाना ह, देखादि हुएते भेदका समाय है। विशेष बात यह है कि बालग्रानियाँ से सात भीत इस देखान २५८ व्यवस्थ कामध्य व व व्यवस्थ काम कह हारू व्यवस्थान हा स्थाप कार प्रक्र भारतमुहनीति बाम, सर्थात् जामश्र हेन्द्रह होमानिसीम शेवसासंवसने सहस्थ स्थाप कार प्रक्र प्रतिहरूप तरप्यप्रवृत्तिक निर्वेष किनने कात वह होने हे ? नाना शाँगों ही पिधा सर्वकाल होते हैं ॥ ६५ ॥ परकाल क्या व गा २ १ । वर्षोह, चंद्रांद्रिय स्टाम्बवर्षामः तिष्य श्रीशोसे रहित वेर्म्स वास नहीं यो जाता । पढ़ जीवनी अवेधा वंपेन्ट्रिय तन्ध्यवयास्य निवेधोदा उद्यान काल हुन्स्य-ाममाण है।। ६६॥ भाष के भाष कर । व्योदि, देवेदिय, द्वीत्रिय वीत्रिय बहुत्तात्रिय एक्टेंग्स्ट केंग्र सार्थाण्ड क्याहर, वहान्द्रव, हान्त्रच चान्त्रच व्यवस्थित व्यवस्थित क्यान्त्रच एवन्त्रक केल साम्बद्धक व्यवस्थित विश्वन व्यवस्था र्व । तथ्य च्यानकः तथा अनुभव व्यानकः व

उपबन्जिय सञ्जङ्ग्यकालमन्त्रिय पुन्तुचाणमाणाद्रौ सद्दम सुदामागगर्भनेवस्य ज्जयकालुवर्लमा ।

उकसीण अंतोमुहत्तं ॥ ६७ ॥

षुदो १ षुट्युचावमण्णदरस्स पंभिद्यितिरिक्म्त्रपटकण्णु उत्रपटित्य मिलिः असरिण-अपन्नचरस् अहह्वारमुप्पन्तिय णिस्सरित्य पुरमुचायमणादरं गदस्म प्रंगैः मुहचनेमुकस्सकाञ्चरुमा ।

मशुसगदीए मशुस-मशुसपज्जत्त-मशुसिणीयु मिच्छादिट्टी केविर्वर कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च सन्वद्धां ॥ ६८ ॥

खुरो १ तिविधेसु वि मणुरसेसु भिन्छादिहि-विराहिदकालाणुवलंगा !

एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतोमुहत्तं ॥ ६९ ॥ इदो १ सम्मामिच्छादिहस्स असंजदसम्मादिहस्स संजदासंजदस्स वा संक्रिजेष

मौर पहां पर सर्व जायय काल रह कर, पूर्वोत्त यकेन्द्रियादिकाँमेंसे किसी पकको प्राप्त हुए जीवके सुद्रमयप्रहणमात्र अपर्याप्तकाल पाया जाना है।

एक जीवकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय सन्ध्यपर्याप्तक विर्यंचका उत्कृष्ट काल अन्तर्पृष्टी

मनुष्यगतिमें, मनुष्य, मनुष्यवर्षाप्त और मनुष्यनियोंमें मिध्यादृष्टि जीन किने

काल वक होते हैं ? नाना जीवोंको अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ ६८ ॥ क्योंकि, क्षीनों ही प्रकारके मनुष्योंमें मिय्यादिष्ट जीवोंसे रहित कोई काल नहीं

पया जाता है। एक जीवकी अपेक्षा उक्त तीनों प्रकारके मिध्यादिष्टे मुनुष्योंका जयन्य करि

अन्तर्मुहूर्त है ॥ ६९ ॥ वर्षोकि, सम्बन्धिपप्पाद्यकि, अथवा असंयतसम्बन्धकि, अथवा संवतासंवर्तके

१ मनुष्यानी मनुष्येष विष्यादृष्टेर्नामानीशपेश्चया सर्वः कालः । स. ति. १, ८० १ पुक्रमानं प्रति अवन्वेनान्तर्युद्वेः । स. ति. १, ८,

1, 4, 00.] षाटाणुगमे मणुरसमाङपरूचमं

वनेच मिन्छर्षं गत्य सञ्ज्ञहण्यमंतोष्ट्रचमन्छियः पुन्युवाणमण्यद्ररं गदस्स तिष्ठ मणुस्सेम् अतोषुद्वमेषभिच्छचकाछुवलंगा । न्कत्स्सेण ति^{ष्णि} परिदोनमाणि पुन्यकोडिपुधत्तेणन्महियाणि 11 00 11

बरो १ जन्दिन्जीवस्स अप्पिरमणुतेस्वविजयः ^{इतिय}णुतसम्बरीस अहड्युन्यकोटीओ परिममिय अपज्ञनप्रावनिजय तत्य अंतीमुहुचमन्छिय पुणी हिय-अहरुवारणावा विभाव विकास वितास विकास वितास विकास भवतप्रस्थ भटट्ठ-भगवत्सम् वस्तिम् वस्ति वित्तं । प्रवृति वृत्तुत्तिविद्धादिद्विस्स चेत्र सच्चेन्तिस्युव्यक्रोदिश्रो अहिया होति, प्र सेसाणं । पण्डनविष्टारिद्वीतं वेषीसपुराकाडीत्रां, मणुस्रवपुराकपस्य वेसिग्रपणीय अमावादी । मणुतिकांमिन्छाादेह्नामु सचपुन्यकोडीओ अहियाओ, वेदंशसंकतीप अमाबादी ।

संक्षेत्रके बरासे निष्यास्वको मान दोकर, तर्व अग्रस्य बातर्ग्यतं काल रह कर, पूर्णेन ग्राण रसामामं किसी यक गुणस्थानको माम हुए जीवके वीमी ही प्रकारके मनुष्येम अस्ताहरूरी मात्र मिध्यात्वका काल पावा जाता है। एक जीवकी अरेखा वीनों प्रकारके मिथ्यादृष्टि मनुष्योंका उल्कृष्ट काल पूर्वकीटि-

ष्ट्रथनत्ववर्षते अधिक वीन पल्योवमत्रमाण है ॥ ७० ॥ चर्योहे, बविवासित जीवके विवासित मनुष्याम अवाद होहर, स्त्री, पुरुष और मुस्तकवेदियों क्रमसा बाह बाह पूर्वकोदियों तक विरक्षमण करके, शास्त्ववासाम कार्य तिहर, वहां पर भावताहरू हास रह हरके, युनः स्त्री और मुद्रेसक वेदियाँस साठ माठ पूर्व िष्ण, वहा पर भारतभग कार वह करक, जुन त्या आर मधुवक वारवास बाड सात पूर विदेषां तथा पुरुषोदियों सात पुषकादियां अम्य करके, हेवहरू अथवा उत्तरहरूमें तीन निवार तथा बुहरवार्याम सात प्रकाटवा समय करक, व्यक्त वस्त्र वसार कार्यान प्रतिवार है से सात कार्या कार्या कार्या ति स्टोपियों तक रह करके, देवीमें उत्पद्ध होनेवाले जीवक प्रकारिकृषकर्या मधिक न परचापमा चन ५६ करण, पंचान वरण भागवाण नापक प्रपक्तारपुरवरावस साधक त परचीरम पार्ट जात है। विहोष बात यह है कि मनुष्य विध्याददिक ही तीन परचेपमास में प्रशासन पार जात है। त्यार पात वह दे कि मञ्जून क्षान्वाध्यक है। ताल प्रन्यापमास देव सेताहीस पूर्वकाटियाँ होती है। त्येष सञ्चलके नहीं। पर्योत्त निष्णाकृष्टि सञ्चलके थह स्वाहास प्रकारण होता है। वा अप अवाजा गढ़ा, प्रयान अध्यादा स्वाधाह पूर्वकादियां अधिक होता है। क्योंके, मनुष्यत्रहरवर्षात्वकार उनकी उराणि मही पुरकादिया भाषक बार्या का उपायका महाज्वाद्यक्षाच्याम् व्यक्ता अस्यस्य स्थास महा है। महाद्यानी निष्यादाष्ट्रियोंमें सात पूर्वकोटियों अधिक होती है। क्योंकि, उनके वेदगरि

रै उत्दर्भम नीमि वश्योवसानि पूर्वकोटी हुवक्वे स्वाधिकानि । स. मि. १, ८.

सासणसम्मादिही केनचिरं कालादो होति, णाणाजीवं परुःच जहन्योग एगसमयं ॥ ७१ ॥

कुरो है उनसमसन्मादिद्वीणं सत्तद्वनगाणं उनममसन्मतदार एमसमने अस्ति वि सासणार्थं गदाणं तरवेगसमयमन्द्रिय भिन्छतं पठिवनगायमेगसमभोतर्गमरो ।

उक्कस्रोण अंतोमुहुत्तं ॥ ७२ ॥

कुदे। १ सेलेज्जाणं उत्तसनसम्मादिहीणसुत्रसममस्मनद्वार् यससम्यमादि कार्ष जायुक्तस्रेमण छ आवलियाओ अन्यि ति सावर्णं पश्चित्रणाणं संग्वेज्जनसराणुसंनिदसामणः द्वाणमेतीसुहुषजुवलंभा ।

एगजीवं पडुच्च जहर्ष्णेण एगसमयं ॥ ७३ ॥

कुरो १ उपसमसम्मारहिस्स उवसमधन्मचद्वाए एगसमत्री अरिय नि सा^{मर्ग} पडिबज्जिय विदियसमए चेव भिन्छत्तं पडिवब्जसासणस्म एगसमयदंसणारो ।

उक्त तीनी प्रकारके मनुष्योंने सासादनसम्पग्टि जीव कितने काल तक होंने हैं। माना जीवोंकी अपेक्षा जपन्यते एक समय होते हैं।। ७१।।

क्योंकि, उपरामसम्बन्हीए सात आठ जर्नोके उपरामसम्बन्धके कालमें एक समय हाप रहते पर सासावनगुणस्थानको मात हुय, तथा वहां पर एक समय रह कर मिध्यावकी मात होनेपाल शीवोंके यक समयमाण काल पाया जाता है।

उक्त तीनों प्रकारके मनुष्योंमें सासादनसम्यग्टिए जीवोंका नाना जीवोंकी अरेश

उस्क्रप्ट काल अन्तर्महर्त है ॥ ७२ ॥

क्योंकि, संस्थात उपनासक्ष्यग्रहियोंके उपनासक्ष्यक्यके कालमें पक्ष सम्बक्षे भारि करके उक्तपंते छ भाषिलयां तेष रहते पर सासादनगुणस्थानको प्राप्त हुए और्योर्क स्वयात पारोंस अनुसंधित सासादनगुणस्थानका काल अन्तर्महुतं पाया जाता है !

उक्त दीनें। प्रकारके साधादनसम्यग्दष्टि मनुष्यांका एक जीवकी अपेक्षा जपन्य-

काल एक समय है।। ७३॥

क्योंकि उपशासस्याकीय जीवके उपशासस्यक्यके कालमें एक समय शेप रह^त पर सासादनगुणस्थानको प्राप्त होकर, दूसरे समयमें ही मिध्यात्यगुणस्थानको प्राप्त ^{दूष} सासादनसम्यक्षिय जीवके एक समयमाण काल देखा जाता है।

१ डाडायनसम्बन्धरेर्मोनाजीवापेसवा अधन्येनेकः समयः । स. सि. १, ८.

व मतिषु " सातवावं " इति वाउः ।

६ बार्क्वेमान्तर्बहुर्यः । स. ति. १, ८,

४ पुरुवीर्व प्रति अवस्येतीकः समयः । स. सि. १, ८,

उक्कस्तं छ आविलयाओं ॥ ७४ ॥

पुरो । उत्तममम्मादिष्टिस्स उत्तमसम्मचहाप् छ आवलियात्रो आरित वि सासणे परिवरिजय छ आवलियात्रो सत्य गमिय भिच्छचं परिवण्णस छ-आवलिओ-वलेमा ।

सम्मामिच्छादिडी केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमहत्तं ॥ ७५ ॥

पमचसंत्रद्रसंजदासंजद-अद्वाचीसमोहसंवकिम्मयमिच्छादिहि-असंजदसम्मादिहि-पच्छायदाणं संदेजवसम्मामिच्छादिहीणं सच्यजहण्यमंत्रीसृद्धचमच्छिय विसोहि-संक्रिलेस-यसेण सम्मच-मिच्छचाणि उवगदाणं सम्प्रजहण्यंत्रीसृद्धच्चसंत्राः।

उक्करसेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७६ ॥

सम्मामिन्छारिद्वीणं सन्युक्करससम्मामिन्छत्तदाणं मिन्छाहिकुः असंजदसम्माहिक

एक तीनों प्रकारके साधादनसम्पर्धाट मनुष्योंका एक जीवकी अपेक्षा उरह्नष्ट काल छह आवलीप्रमाण है ॥ ७४ ॥

क्योंकि, वयदानसम्परिष्टि जीयके वयदानसम्पर्काके कालमें छह भाषातियां देवे रहते पर सासाइनगुणस्थानको मात होकर छह आवशीप्रमाण काल वही पर विताकर मिन्यान्यगुणस्थानको मात होनेयाले अधिक छह आवशीप्रमाण काल पाया जाता है।

उक्त तीनों प्रकारके सम्पार्गिध्यादृष्टि महुप्य कितने काल तक दोते हैं। नाना

जीवोंकी अपेक्षा जपन्यसे अन्तर्महर्त तक होते हैं ॥ ७५ ॥

क्योंकि, प्रमासांवत, भाषवा संवतासंवत, अथवा भोहक्षेत्री अहारित महतियाँकी सत्ता रत्यनेवाले विरुप्तारिति अथवा असंवतसम्बद्धि गुणस्वानते पीछे नारे दुए संक्वात सम्वाधिनप्तारिक शीविक सर्व जायन अन्तर्भुहर्त काल रह करके विशासि और संक्रेयके पदाले यथान्त्रमेसे सम्बन्ध अथवा विष्यात्यको प्राप्त हुए शोविक सर्व जायन्य मन्तर्भुहर्ते काल पाया जाता है।

उक्त दीनों प्रकारके सम्यग्मिध्यादृष्टि मनुष्योंका उत्कृष्ट काल अन्तर्भृदृर्व है ॥ ७३ ॥

मिश्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत और प्रमुखसंयत अधिंति संस्थात बारमें

[»] शत्कर्तेण प्रभावक्रिया । सं. सि. १. ८.

९ सम्यामन्यास्ट्रेनीनाजीवार्यस्या पृथ्जीवारेश्वता च जवन्यभो प्रटबान्दर्श्तैः । छ, छ. १, ८,

1.

संजदासंजद-पमत्तसंजदेहि संखेजजवारमणुसंचिदद्वाणमंतोष्ट्रहुवरुमा ।

एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोमुहृतं ॥ ७७ ॥

सम्माभिच्छादिहिस्त दिहुमग्गस्स पुन्तुत्तचदुगुणहृष्णेसु एगजीवणाद्रागुणवचायः दस्स सञ्जाहण्यद्वमच्छिद्गं संकिलमः विसोहित्रमण मिच्छादिहि असंजदसम्मादिहियोग पडिवण्गस्स सन्वज्ञहण्णेतोषुहृत्तमेत्तकालुवलंमा ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७८ ॥

पुच्युत्तचदुषुणहणिस् अदिहमस्मेगजीयण्णदरगुणपच्छायदसस्मामिच्छादिहिस दीहद्रमञ्जिप देस-सयलसंजमविरहिददोगुणहाणे गदस्स सन्युक्ससंतीप्रहुनुवरुंगा।

असंजदसम्मादिद्दी केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुन्व सन्बद्धां ॥ ७९ ॥ ं

इदो १ असंजदसम्मादिङ्विपाहिदमणुरसाणं सन्यकालमणुवलंमा ।

संधित हुए सम्यग्मिष्यादृष्टि जीवोंके सर्वोत्त्रप्ट सम्यग्मिष्यात्यका काल झत्त्रसुरूत वारा जाना है 1

उक्त तीनों प्रकारके सम्याग्मिध्यादृष्टि मनुष्योंका एक जीवकी अपेक्षा जधन

काल अन्तर्भहर्व है ॥ ७७ ॥ क्योंकि, जिसने पूर्वम मार्ग देखा है, वेसे पूर्वोक्त चार गुणस्यानोंमेंसे किसी वक गुण रपानने पीछ मापे हुए सम्बन्धिमध्यादिके सर्व जयन्य काल रह कर संहेश मीर विश्वविक यहास विषयाहरि और असंगत्मानाका जान अन्य नाल रहे कर तहा । नार मन

उक्त नीनें। प्रकारके सम्यग्दृष्टि मनुष्योंका एक जीवकी अपेशा उत्कृष्ट हार गुँहने बाल पाया जाना दे

क्योंकि, पूर्वोत्तः खार गुणस्थानीवेंसे नहीं देला है मार्ग को जिसते, ऐसे जीयेर दिनी जन्तर्पहर्त है ॥ ७८ ॥ एक गुजरवामेस पीछ आप हुए शास्त्रीमध्याद्यक्ति दीय काल तक रह करके देशसंदर्भ और सक्टलंपमन शहत है। गुणक्यानीत, अर्थान मिरपारिए शहर शहरता शुक्तन्यानीय गये दृष जीवके सर्वोन्द्रण अन्तर्महर्त काल वाया जाता है ।

उक्त नीनी प्रकारके अमंपनमध्यादिष्ट मनुष्य किनने काल तक होते हैं। नाना

दीरों ही अरथा मर्वकाल होते हैं ॥ ७९ ॥

क्याँक, झक्षेत्रनसम्बन्धियाँमे रहिन सनुष्याँका केर्द्र भी काल नहीं पाया जाता।

१ सर्वरमुक्त्यारेगीतार्वे प्रशेष्ट्या वर्षेत्र वालः । सः सि. १, ८०

!!

एगजीवं पहुन्त् जहुष्णेण अंतोसुहृतं ॥ ८० ॥ रिष्टममामिच्छादिहि-सम्मामिच्छादिहि-संबद्धाः वर्गमममंबरगुगहापहिना क्षापः

दस्य सन्यत्वहणमंतामुद्रुषद्मन्छियः जहण्यकालाविग्रहेण गुणवां गरस्य जहण्यने।स्ट्रुष मेचकालुक्लंमा ।

उनकरसेण तिष्णि परिदोवमाणि, निष्मि परिदोवमाणि सादिरे-याणि, तिरिंग पर्लिदोवमाणि देखणाणि ॥ ८१ ॥ परम सादिरेमनहाँ देखि वि विवन्तिवेषमेगु संबंधितरजी, देण्डं परणामीवरमेन व्यवस्थायाणं विसेताणस्त्वेण प्रवह्नादो । वेस्हा मणुन-मणुनवरम् माहिरसानि

विभिन्न पितरोयमाणि, अन्तरस देशकालि । इसे १ जहां उस्मा नहा जिएमा हि णापादी । कर्ष सादिरेवनं है अहाबीसमंगक्तिम्पविष्टादिहिस्य वृष्यकीहिनिहार संग पदमञ्जनाउमस्त तदी अतेमुद्दु संसूच सम्मत्तं देन्य देनयमोद्द्यीय राविष् गम्मतेष

पुज जीवकी अवेधा भीनों प्रकारके असंपत्तप्रस्माटि मनुष्योका अपन्य काम अन्तर्बहर्त है ॥ ८०॥

तिवन्तिवत्, सचवा अमस्तिवत् गुणस्वातीते आहे हुए, तथा सन् अध्याव आन्ति निकास स्ट प्रभावतम् ज्ञान्या नाम्यासम् अभवनामः नाम् हुन्। तथा सन् व्यवस्थानः वान्यः । एकं ज्ञानम् काल्हे सर्विष्यति ज्ञानस्थानामतस्य। साम्य हुन् ज्ञान्ये ज्ञानस्य वान्यः। वान्य वत् वित्रों प्रकारक असंयवसन्यारक्षि मनुष्योंका यथात्रम्य उत्हर काट नीन दण्यो

, बीन परयोषम गातिरक, और देखीन तीन पर्योपम है ॥ ८१ ॥ त्व वरत्वात् भाषात्वम् जार वर्णात् वात् वर्णावम् ६ ॥ ०६ ॥ यही वर सातिरेह हाम् बीमी ही विवसीयमी वर संबद्ध बरमा बारिन, करीह सिनिहें बास यहावही प्राप्त हुए होनों वहींहैं, हितेबज्जकपूरे यह दाना जाहरू, रूपा है त्वराज वनाव कार्यका मान केर बाजा बहाज व्याप्तकवन कर कार्य करण केर मान त्रेषे मानुष्य और मानुष्यवद्यानकार्ते तो साधिक तीत प्रस्थित कन्न करण है। और १६ मधुन्त मार अध्यापनाचाना वा स्वाधक ताल परभावन व वह का है। स्वाधक स्वाधक वाह का है। स्वाधक स्वाधक विकास के स् संघीत सनुत्रामियोंसे, देशांत मीत परपोषस के बहु है। क्योंन, 'डिस के केस्से र्वेदा – तीत प्रयोगस्य सातिरेड सर्यात् सचिव बाल है स सम्ब है ? समाधान- भारव मेवी सहारेस महानदीवी सक्ता रसनवारे लक्ष पूर्ववादेश

प्तत रहेच तर बहुती है समेत्व बार्मेंडा जिसके द्वार एडवरेन्ट्रीट सम्बद्ध के व्यवस्थ करणा वास्त्र करणा वास्त्र व वास्त्र वास्त्र वास्त्र करणा वास्त्र व हर सारक तक्। प्रदेश करके ब्राह्मग्रीहर्ण तको शतक कर सारक का कार कर्या कर का ह करन प्रांत पन्यमहाहि कार्यकान क न्य ।

सह देखणपुल्वकोडितिमागं गामिय तिपलिदोवमाउड्डिदिदेउचरङ्ग्वेसप्पित्वय बण्को वाडिद्विपण्णालिय देवेसप्पण्यस्य तिणिप्रशिल्देवसागामुवि देवणपुल्वकोडितिमण् वालिप्रशिल्देवसागामुवि देवणपुल्वकोडितिमण् वालिप्रशिल्देवसागामुवि देवणपिल्य पालिदोवसागि, अप्णाद्रश्रद्धातीयसंतक्रीम्मपिम्बर्ग्वस्य वालिप्रश्रिक्ताचित्रस्य प्रणुक्षेसुवविज्ञिय णव मासे ग्रह्मे अन्त्रिद्ध्या पित्रसंतस्य उत्तर्ष्य अप्रतिकाह्यस्य स्वत्य स्वत्ये, वंगती सत्त दिवसे, अधिद्यामणेण सत्त दिरसे, विश्वमणेण सत्त दिरसे, विश्वमणेण सत्त दिरसे, क्षाणेण सत्त दिरसे, व्यवस्यापित विश्वस्य अपर्योग व्यादिद्धि अधिवृद्धा देवेसु उवस्यास्य प्रमूणवर्णादिवसेसिंह अहियणवसाव्यातिल्यापलिद्यावस्यकंसा ।

संजदासंजदपहुडि जाच अजोगिकेविल ति ओधं ॥ ८२॥ छुदा १ कोपादो भदामावा । णबरि संबदासंबदाणं सन्वतृतुं बोणिगिक्वणः सम्मणुन्मबद्दुष्टसंहि स्त्रणा पुष्यकेडी संबपासंबपकाली वचन्यो, विरिक्खाणं व मणुस्मानं अतासद्वकालेण अणुम्बयारणामावा ।

पूरेकोटीका विमाग विताकर तीन परयोपनममाण आयुक्तमेकी रियतियाँठ देवकुर और एक्ट्युटमॉर्म बत्यत्र होकर, अपनी आयुरियतिको अनुपालन करक देवाँमें उरवर पूर्व और तीन परयोगमाँके ऊरर देवीन पूर्वकोटीका विभाग मंपिक पाया जाता है।

सनुष्यित्रयाँसे देशोन शीन वस्त्रीयम उत्कार काल है। यह इस सकारसे है-मोहर्याणी सहार्त्या कहतियाँकी सक्ता रकत्रेवाका कोई यक मित्रयादि सनुष्य तीन वस्त्रीयमंत्री सायुवाँ स्रोगम् सीत्रयादि सनुष्य तीन वस्त्रीयमंत्री सायुवाँ स्रोगम् सायुवाँ स्रोगम् सायुवाँ स्रोगम् सुव्याने स्राप्त है कि सायुवाँ स्रोगम् सायुवाँ स्रोगम् सायुवाँ स्रोगम् स्रोगम् सायुवाँ स्राप्त दिन, स्रोद्या मानते सात्र दिन, रेते हुए सात्र दिन, स्रोद्या मानते सात्र दिन, रेते हुए सात्र दिन, तथा सम्य सी ्र दिन हात्र स्राप्त स्राप्त स्रोगम् स्रोगम् सीवित्र राष्ट्र द्वार्थे स्राप्त स्रोगम् सीवित्र राष्ट्र स्थाने स्थान सीत्र स्थान सीत्र स्थान सीत्र स्थान सात्र सीत्र स्थान सात्र सीत्र परयोगम् सीव्यान सीत्र सीत्र स्थान सीत्र सीत्र स्थान सीत्र सीत्र स्थान सीत्र सीत्र स्थान सीत्र सीत्र सीत्र स्थान सीत्र सीत्र स्थान सीत्र सीत्र स्थान सीत्र स्थान सीत्र स्थान सीत्र सीत्र स्थान सीत्र सीत्र स्थान सीत्र सीत्र सीत्र स्थान सीत्र सीत्र स्थान सीत्र सीत्र सीत्र स्थान सीत्र सीत्र सीत्र सीत्र सीत्र सीत्र स्थान सीत्र
संपतासंपत गुणस्यानमे लेकर अपोगिकेवली तक गीनो प्रकारके मनुःपाँग

उत्हृष्ट वा अपन्य काल ओपके समान है।। ८२॥

क्यों हि, मोमवर्तित चारुमे इनमें कोई भेद नहीं है। विशेष बात यह है कि संपत्ती सेदरों के सर्वरणु सेति निष्यमणकर आमने उत्तय दूष जीवके बाद वर्गीते कम पूर्वहोंने कमाय संप्रमानवसका बाल कहना चाहिय, क्योंकि, निर्वेषीके समान मनुष्यों के आम है ने के कक्षाणु क्यापुर्वत बारुसे ही क्युमरोंके सहस करनेका समाव है।

१ केंग्स कामानीया प्रशास का कि. १, ८,

lt 1, 4, cf. 1 काराणुगमे मणुसअगञ्जतकारणरूकणे मणुसअपञ्जता केवचिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुच जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ८३ ॥ प्रदियबाद्दर-मुद्दुम-वि-वि-चर्डारिय-साम्मि-असम्मिप्सियपज्ञवापज्ञवार्ण मणुस-प्रज्ञताणं ना मणुसञ्जवञ्जवएम् उत्रवन्त्रियः स्टब्स्यमहण्मेचाउद्दिः गिनिय पुण्यसः ŕ जीवेसुरवण्यामं सकास्वरतंमा । زلية उनकरसेण पलिदोनमस्स असंक्षेञ्जदिभागो ॥ ८४ ॥ पुरत्रपळामणुतअपग्जनचर्छ गहेसु तक्काले चैन अन्याको जीने मध्यसअपग्जने सुष्वादिय उत्पादिय अनुमंधिन्त्रमाने पलिदोनमस्म असंवेन्त्रदिमागमवस्रणुर्वमानः वारसलागुवलंगादो । एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ८५ ॥ पुण्यवभीवृद्धित् आगात्म मणुसमयन्त्रवण्य उदस्यास्य तुराभरगार्णमेवः जहण्णाउहिदिकालदंसणादो । **उ**षास्तेण अंतोमुहुत्तं ॥ ८६ ॥ लब्दपपरिचक मनुष्य किवने बाल तक होते हैं ! नाना बीगोंधी अरेपा व अन्तर्भावन कार्या का

जपन्यते क्षुत्रमनमङ्ग्यमाण काल तक होते हैं ॥ ८३ ॥ भीद संबं विक्तिय पर्याप्तक भीट अववास्त्रकों, अथवा सतुत्वपूर्वाप्तक बीबोद साहर नार पान प्रवास्त्र व्यवस्थान नार नाम्यानाकाका मध्या नामुण्याच्याक व्यवस्थान प्रकार महिल्ला वर्षक वाकः ध्रम्भणम्बन्ताः वाद्यस्थान वर्षकः द्रारः एक होनेवाते अधिके वक्त कालः स्थापन् शहसवग्रहणसम्बद्धाः वाद्याः स्थापन् द्रारः तिवरात कार्याच्या वर्षा कार्याच्या वर्षाच्याच्या वर्षाच्याच्या साम् व ।। इयोंकि, पुर्वोत्पच हरकावर्वाध्यक्ष अञ्चलीमें बार जाने पर जली बारस्ये हैं। बार प्रत्य हैं। सारववर्णन्त्रः मनुष्याम क्षेत्रक करा काल अनुस्थान कार्य पर कारणपार स्वरुपवयांच्यतः मनुष्पोका एक अविका अवशा वयस्य काल् धुर वदहृद्दराहमाय परीहरू पूर्वानः प्रकृतिक्षादि अविश्व भावत अध्यवनात्व स्वत्याव रूपम होते.

उक्त सर्भवपालक मनुष्योका उन्हर काल बन्तमहरू है।। ८६॥

पुन्युत्तजीवेहितो आर्गत्ण मणुसअपन्जत्तपसु उप्पण्यस्य अतोमुहुत्तादो उगीम कालवियप्पाणमुक्तसमाउद्विदिअपन्जत्तसम् वि अणुक्लमा ।

देवगदीए देवेसु मिच्छादिही केविचरं कालादो हीति, णाण जीवं पहुच्च सव्यद्धा ॥ ८७ ॥

देवभिच्छादिहिविरहिदकालामाना ।

एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोमुहुतं ॥ ८८ ॥

. असंजदसम्मादिष्टिस्स सम्मामिच्छादिष्टिस्स वा संकिलेतेण मिच्छवं गतुग सम् जहणकालमच्छिप् पुच्युचदोग्रुणहाणाणमणादरं गदरस अंतामुहुचमेचकःखवलमा ।

उनकरसेण एनकत्तीसं सागरीवमाणि' ॥ ८९ ॥

मणुसिम्च्छादिद्विस्तं द्व्यसंज्ञमञ्जेण एककतीससागरोवमाउद्विदिदेवेसुप्पिकः मिन्छनेण सह अप्पणा आउद्विदिमणुपालियं मणुसेसुववण्णस्स एककत्तीससागरोवममेष देवमिन्छादिद्विकालदंशणादो ।

पयोंकि, पूर्वोक जीयोंसे माकर संस्थरवेश्यक प्रमुखोंमें उत्पन्न हुए जीवके धन पुढ़िये काल पाया जाता है, तथा अन्तर्भृहतंसे उपरिम्न कालके विकल्प उरहुए मायुरिपरि पाले सम्बद्धपानक जीवके भी नहीं पाय काले।

देवगविमें, देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवेंक

अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ ८७॥

क्योंकि, देवोंमें किथ्यादृष्टियों ने रहित कोई काल नहीं पाया जाता है।

एक अनिकी अपेक्षा मिश्यादृष्टि देवोंका जयन्य काल अन्तर्मृहर्त है ॥ ८८ ॥ । कालंबतसम्बद्धिक, अध्या सम्यामस्थादृष्टि देवके, संक्षातार मिश्यायको मार्च्छोक्त, अध्यात सम्यामस्थादृष्टि देवके, संक्षातार मिश्यायको मार्च्छोक्त, अध्यात्र काल रह कर पूर्वोक्त दे गुणस्थानों में किसी पकको मार्च हैं। अध्यात्र सम्यामस्यात्र स्वाप्त कालंबिक अन्तर्भकृति काल पाया जाना है।

र देवदर्श देवेषु विष्वाद्वेनांबाजीवारोक्षया सर्वेश कावा । स. मि. १, ८.

र एक्टोर्व प्रति वयन्तेशान्तर्वहर्तः । छः निः १, ८,

१ डक्वेंबेंबविश्व वारशेवमानि । छः कि. १, ४,

tin 92.7 1 कालागुगमे देवकालपरत्वर्ग सासंणसम्भादिडी सम्मामिन्छादिडी ओर्घं ॥ ९० ॥ सञ्चषपारेय ओषादो भेदामावा । ज्यांजदसम्मादिडी केविचरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुस्च सव्बद्धां ॥ ९१॥ देवेसु असंजदसम्मादिष्टिविसहिदकालामाना । एगजीवं पहुच जहन्नेण अंतीमुहुतं'॥ ९२ ॥ भिच्छादिहिस्स सम्मामिन्छानिहिस्स या विस्ताहिवसेण सम्मर्थ पहिवीज्ञय सन्द जनस्याउद्विदिवसुपान्यसंत्रदस्य श्रुवमाणाउमस्य घादामावादे। अपनो उद्यस्य प्रकरवाजाडार्द्रभग्र कण्यवस्त्रम् डन्गाणाज्यस्य पादाशाचार् अप्पणा उद्धस्म हिर्दि जीविय मणुनेसु उप्रकारेबअतंबद्सम्मानिद्विस्य तेषीतं सागरीयम्मे वकानुकर्द्धाः ! सासादनसम्परदृष्टि और सम्परिमध्यादृष्टि देवीका काल ओपके समान है ॥९०॥ तीसिद्रित्रिक्ष्यां वार प्राप्ता क्षांका प्रमाण कार्या कार्या वार्या विकास विकास कार्या वार्या विकास बालते बोपमकराणांके लाय कोई सद नहीं है। भाषकरपार कार कर कर कर के अंदि । असंपरतमम्पर्धि देव दिवने काल तक होते हैं | नामा बीरोही अपेक्षा सर्पहाल ।) ।। इयोकि, देवाँमें धसंवतसम्बन्धि जीवोंसे रहित कासका भगाव है। वराका वरात कार्यवाताका कार्यक जाताक रेकार कार्यक कार्यक है है ॥९२॥ पुत्र जार्या जार्था जार्था जार्था जार्था जार्थ जार्थ जार्थ कार्या है। वेश कार्या कार् भवाकि। भववादाहर, कावक राज्यानक वाहाद वयक विद्याद के बता विकास सम्बद्ध है हिन्दू, यहाँ सुद्ध ज्ञासन सामा स्वाप का व्याप
भवणवासियणहुडि जावं सदार-सहस्सारकृपवासियदेवेस मिन्छाः दिही असंजदसम्मादिही केवचिरं कालादो होति. णाणाजीवं पहुन्व सन्बद्धा ॥ ९८ ॥

तिण्दं पि कालाणं देवमिन्छादिद्धि-अर्शनदसम्मादिद्विविरहिदाणमभावा ।

एगजीवं पडच्च जहणोण अंतोमहत्तं ॥ ९५ ॥ 👵

एदस्स अत्थो जघा देनोधन्दि एदेसि दोण्डं गुणद्राणाणं जहण्णकालपहन्त्रा इता, तहा मनणवासियप्पदुढि जाव सदार-सहस्सारकप्पे। चि मिच्छादिहि-असंजदसम्मादिही अहण्याकालप्रकृषणा कारच्या ।

उकस्सेण सागरोवमं पिटडोवमं सादिरेयं वे सत्त दस **चो**हस

सोलस अट्टारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ९६ ॥

एदस्सुदाहरणं- एकको विश्वित्वो मणुस्सो वा मिच्छादिह्री भवणवासिपदेगै उववष्णो । पलिदोवमस्स असंखेजजदिभागन्महियं सागरीवमं जीविद्ण मिन्छचेणेर उतः

मवनवासी देवोंसे लेकर शतार सहसार कल्पवासी देवों तक मिथ्याहिए और असंगतसम्पग्दाप्ट देव कितने काल तक होते हैं है नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते દેશા ૧૪ મ

क्योंकि, मिश्यादृष्टि और असंयतसभ्यग्दृष्टि देथोंसे विरक्षित तीनों हैं। कार्तीकी

स्वयास है।

एक जीवकी अपेक्षा उक्तः मिथ्यादृष्टि और असंगतनम्यग्दृष्टि देवाँका जपन्य बाल अन्तर्मष्टर्न है ॥ ९५ ॥

इस सूत्रका शर्थ, क्रेसा देवोंके शेष्पर्ने इन देवों गुणस्थानीकी अधन्य कालप्रकाता क्यों दे वसी प्रकारसे प्रवनपासीको साहि लेकर बातार सहस्रारकस्य तकके मिध्यार्थि

भीर मसंयनमञ्जूष्टि देवोंको भी अधन्य बालकी प्रवरणा करना चाहिए।

उक्त मिच्यादृष्टि और अमंयनमध्यम्दृष्टि देवीका उत्कृष्ट काल साधिक सागरीपन, माधिक पत्योपम, माधिक दो मागरोपम, साधिक सात्र सागरोपम, साधिक दर सामगेरम, माथिक चौदह मागरीरम, माथिक सीछह सामरीरम और साथिक अहता सायरेशम है ॥ ९६ ॥

इमका बदाहरण— यक निर्वेष धेवदा मनुष्य मिथ्यादिश जीय मयनदाती देशी हराच हुन्ना। यहाँ पर परवोशमके अर्थकरात्रवें मागरे अधिक एक सागरोपन यक जीवित हह बह

Ħ

مين ٠

हिरो । एसो मिन्छादिहिणो बहुआउत्रपादं पहुच्च कालो बुचो । अपना, अलामुहुन् व्यव । १९०१ । १९०९ । १९०९ । १९०९ वर्षा १८०० । १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | १९०१ | 1 जन्दवानारावण्य वातराव वात्रावण वात्रावण वात्रावण व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था जाउजवाद् ५६-४ छचा । ५०। जनववात्तवात् १७॥५१६ जनस्य स्वाटा । ५४४॥ १५६६ हिपसंबदो नेमाणियदेवेसु आउत्रं वैधिद्व तमानङ्गापादेण पादिय मनणनासियदेवेसु ... पडिन्था। अंतमुहुम्वसाम्मोनसद्देषं अद्भिषं साम्मोनमं नीहि अंतमुहुम्बह्म उत्पर त्रवरणाः व्याप्तवर्थानामान्त्रवर्णा व्याप्तव व्याप्तवर्णाः व्याप्तवर्णाः व्याप्तवर्णाः व्याप्तवर्णाः व्याप्तवर् सम्मचेषाः सह जीविद्षाः त्रवर्षोद्धिः सणुको जादी। एसाः अवसानिषत्रसंबद्धसम्बाद्धिःहस्स उक्क्रस्तकालो । बाण्येतर चोदितियाणं पि एवं चेव वचन्तं । णवरि अतीमुहूगणपन्तिः ني जनस्या अहिए पिट्टिवर्म निस्ट्रवुवकस्यकाला होदि । एसा चेव काला ग्रीहरूपण्यालदान बद्धाः जणजो असंबद्धाः नादिद्धिः उपकरमकालो है।दि¹। गोषाःमीसाणे विच्छाः वर्षेत्र अवस्तिकालो वे सामरोचमाणि पलिद्दोबमस्य असंग्रेडश्रिदमागेण अस्मिदियाण ।

पर्वता भारताचाला । जानकारणात कालकारणात जानकारणात जानकारणात जानकारणात जानकारणात जानकारणात् जानकारणात् जानकारणात पद्दन्त अवीमुद्रम्णत्रदसामरोवमेण जन्मदियाणि वे सामरोवमाणि मिन्द्रमुक्तसम्हाना निक्वायके साथ है। पर्वायसे क्युत हुमा। यह निक्याद्वि जीवका बद बायुक्त पातकी मेरोरा त्वभाषक ताप हा प्यायस च्युन हुना। यह विच्याराष्ट्र जायका बच्च आयुन्हाताका अवसा काम कहा। अथया अन्तर्गहेत कम आपे लागारेवसले अधिक वक्क लागरेवसलाका अवसा मान करें।। वादवा भागताहरूत कम भाग व्यावस्थात भावक एक वास्तरक्ष तक भावत है कर वर्षावर व्यावस्थात कम भावत वर्षावर त्व मानवासी मिरवारिष्ट देवांका अकृष्ट कार है। विराधना की दे संनक्षी क्रिसें मकार वह सपनपासा । सरपाराष्ट्र स्वाका जारुष्ट कांख हा । वराधना का व सपन का । स्वाच रेसा को सिंदत मञ्जूष्य प्रमानिक हेर्जोन माजुकी बांच कांक उसे उद्दर्शनाधानने पान करके भवा कार वापत महाप प्रधानक द्याम कायुका वाभ काम कम कम वहनवाचानम धार करक विकास है विदेश हुआ। और छुद्री वर्णानियाँते प्रयोग होगा हुआ (1) विभाग विनयसास हिमा अलग हुआ। आह छहा प्रवात्त्रकाल प्रयात होगा हुआ (१). विधानम् १९ तिहास होक्ट (३), सम्बन्धको आत्त हुआ। तुम अन्तर्गहन कम आपे सामर्थ १९ अधिक तथा सीन अन्तर्गहनीते कम एक सामरोवव काम सामर्थक साथ सामर्थक पेचे नापक तथा तान कार्यद्वाताल कम एक सावरायन काम सम्यक्तक साथ ज्ञाक व्यवस्थित जुत हो महारू हुँचा। यह मयनवाली व्यवसायम्परिका उन्हर कार ज्ञाक्त प्रितार भीर स्पातिष्क, हैंबाका भी हती प्रकारते कार कहन व्यक्ति। विशेषता पर ्तृह अमार्गहर्मे हम माथ पर्यापमत अधिह दक प्रयोगम व्यक्तर आ उद्योगम प दश्र भनाशहरत बार माथ परवावसल आध्यः एक प्रवादन व्यवस्त आहर स्वादन व्यवस्त आहर स्वादन व्यवस्त आहर स्वादन व्यवस्त (uncurate) बहुद काल होता है वह उक्का काल का गांव कालाइक्रियान का कर्म क लेपतासम्बद्धि स्वत्तार और उम्रोतिक हैं सेक्य उन्हरू काल हो जाता है। सीमार्थ और भारता मिहताराहि देवहा अपटर काल पहलायम असकरताह आसस स्थाप हो। मा है। यह मिस्यार हर बडायुर सामर्था अवश्य कार करा। सामर्थार माध्य का त्त के । यह तिव्यक्ति स्वर्था आसीती हैं दे देश आधी सामस्वयक्ति अधिक ही सामस्वयक्ति

वराहरत प्रद्र सबसे हिनाहुने कदमहेत्र क्षात्र वाद वरावस द्वार वर क्षा है का बहु का कर है।

होरि । ' व सच दम' चोहम सालसहारस य बीस वाबीसा' ग्रेटीए गाहाए सर् सस्म स्वित्त विरोही होरि ? ण होरि विरोही, भिग्गविसयवादी । व जहा- वृष्टं पूर्व प्रवेषणाडिवर्ट, कालसुचे पुग संतमयेनिसय हिंदिमिट्रे' । सणकरुमार-माहिट्रे सब कारोर वमाणि माहिर्रेयाणि । वहर-वर्ष्ट्रचकरणे दस सायगेतमाणि माहिर्रेयाणि । वहर-कार्य चारम सायगेतमाणि साहिर्याणि । सुक्क महासुक्केस्य सोलस सागगेतमाणि कारिर पाणि । महर-वर्ष्ट्रचले कार्य चारम सागगेतमाणि साहिर्याणि । सुक्क महासुक्केस्य सोलस सागगेतमाणि कारिर पाणि । महर-वर्ष्ट्रचले पहर्ति प्रवेशि मोचम्मीनाणे माहिर्याणे परित्र परित्य परित्र पर

प्रका- भीषमें देशानकराते लगाकर भारण सन्युत करा तक समा। 'ही. सण्य, दर, मेंतर, मेंतर, मंतरह, यीम भीर पार्टम लागरीयमंत्री दियति होती है 'हण रूपादे साथ, इस प्रकासकर विशेष वर्षों समी होता है

अंते इट्टून मद्भागरोत्तमेग साहिरेपाणि होति". ब्दरम हेट्टी सम्मादिद्विस्परग्रामारा।

गमारात -- विशेष मही होगा, क्योंकि, गुत्र और गाया, हम दोनेंका विषय कि कि है। वर रण प्रवारण के कि वक्त गायागरू ने। यंपकी श्रीशा है, किन्तु अनवी रिक्तण अनुकी सोमा स्थित है।

क्षार ह बार कार्यन्त्र कराने कृत्य अधिक साल कारारोगम, महामधीकर कार्य क्षारिक क्षा कार्यागम, काल्यक कार्यिक क्षारोग साधिक धीवृह सामरोगम, मुद्द नहार्यक कर्या कर्णागम केर लागरोगम, और मारार वादुकार कराने साधिक प्रमाद कार्योग है स्वकार रंगी से कर्या कार्य है। जिस सरह देशों महारोगे भीव मेर देशात कार्यों कर्या केर्या महारा कार्य कार्य है। इसी महार यहां गर सी बाद स कार्य है। बीधा कार्य कर्य के कर करावार कार्य मार्यवनसम्पादि विशेषा कर्य कार्य मार्य कार्य कार्य कार्य कर्य के कर करावार कार्य मार्यवनसम्पादि विशेष स्वाप्त कार्य
7 5°0" - 69 " 5 4 5"7 4 54 5

म. म. प्राप्त करावित काल आमहत्त्रीका आम्बद्धे अर्थक्वपृतिक वृद्याचे वृद्धे हुन सम्म क्रम कालक आदास अर्थका अर्थका आदास विकास वार्तिका । तथी वृद्धकार व्यवस्था विष्णा व्यवस्था व्यवस्या व्यवस्था व्यस्य स्था व्यवस्था व्

A AZ AND MOT CRADE AN ATHON TO FORT THE MEA ADDRESS BRIGHT BE MAR AND

e 4: 66. 3 ^{बाटागुणेष} देवग्रङप्रत्यं सासणसम्मादिही सम्मामिन्छादिही और्घ ॥ ९७ ॥ प्रसम सुवस्य अत्यो सुगमा, बहुसो प्रसिद्धवादी । ञाणद जाव णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु मिन्छादिट्टी असंजद सम्मादिही केनचिरं कालादो होति, णाणाजीनं पहुन्न सन्बद्धा ॥९८॥ दरा । एदेख मिच्छादिहि असंबदसम्मादिहिनिरहिदकालामाना । एगजीवं पहुच जहन्नीण अंतीसुहुत्तं ॥ ९९ ॥ विरोताय — यहां पर को बज मानुषातको अवेका सम्यादि और निस्पाक्षि देशोंस

---- 1

_

۳, दी प्रकारक कालकी प्रकरणा की है, उसका समियाय यह है कि किसी मनुष्यते अवसी स्वयम-वायरचाम द्वायुवन चम क्यार वाण व्याप व्य विराष्ट्रमा कर ही और इसीजिक स्वयर्तनायातके हता आयुक्त याज भी कर दिया। विद्यापती हिरायना कर देने पर भी यदि यह सम्प्राहि है, वो मर कर जिस करवमें वादम सदमका प्रदानमा कर १० ५८ जा अन्य २६ घटन-१८६ है। वा नर कर व्यक्त कारण व्यवस्थ दोगा, प्रदोकी साधारणतः निधित सामुसे अन्तामुद्दतं क्षम अर्थ सागरिएसमसाय अधिक होगा, पहांका स्थापारणताः भ्याच्यतं चायुक्त च्यायाप्रभागमाणं चायकः अस्य स्थापारप्रभागमाणं चायकः अस्युकः प्राप्तः होगाः हराजा होजिए— किसी महायते स्वेततं अस्ययामें अस्युक्तस्परें त्रिय बाहित सागरयमान आयुका कंप किया। याँग्रे संवयकी विरायना और वांग्री हुई वायुक्ती व्यव्यक्तित कर वार्त्वयतसम्बद्धि हो गया। शोध मरण कर यहि सहस्राकस्यमे भारतम् । भारतम् वर भारतम् साम् । भारतम् । भारतम वरतम् हुवा, तो वहाँ तो सामारत्य सामु जो अहारत् सामारत्ये हैं। उससे सामापुक्त सम्प्रकारि देवही बादु बलावुंहर्न कम बावा लागर अधिक होगी। यदि वही पुरुष संवमकी विरा-पताके साप ही सम्पन्तक में विराधना कर निष्णादि हो जाता है भीर पीछे मरण कर वसी सहसारकरवर्गे अत्यव होता है, तो उसकी आयु वहां की निधित अवारह सागरकी कार्यक प्रचारमञ्जू अवस्थातम् । अत्य कार्यक व्याप्त व्यवस्थानम् । व्यवस्थानम् । व्यवस्थानम् । व्यवस्थानम् । व्य अपुरते प्रचारमञ्जू असंद्यातम् आगत्ते अपिक होगी। देते औषको प्रातापुरक मिस्साकार् भवनवामीसे लेकर सहस्रारकत्व वकके सासादनसम्पन्हिए और सम्पनिमण्या-ष्टि देवोंका काल ओपके समान है ॥ ९७॥ आनतः प्राणतकः स्वयं लेकाः नव प्रवेषकः विमानवासी देवामें मिध्याराष्टि और

पवसम्पादि देव किनने काल वह होते हैं । नाना जीवोक्ती अपेक्षा सर्वकाल होते पर्योक्ष, इन कर्माम मिच्यादाष्ट्र और असंयतसम्बन्धि औरोंसे रिवेत कालका व है। १६। एक जीवकी अपेक्षा उक्त दोनों गुणस्थानवर्ती देवोंका जपन्य काल अन्तर्भृति



बुदो ? गुणंतरं संकंतीए अमावादो । एत्य सादिरेयपमाणमेगी समओ, हेट्टिल्यु-षकस्राहिदी समयाहिया उवरिल्लाणं ज्ञहण्यहिदी होदि चि आइरियपरंपरागद्ववेसादो । उक्स्सेण वत्तीस, तेतीस सागरीवमाणि ॥ १०४ ॥

णवसु हेट्टिमेसु अणुदिसविमाणेसु वर्तासँ सागरोवमाणि । चदुसु अणुत्तरविमाणेसु तैत्तीसं सागरोवमाणि संपूर्णाणि, सुत्ते हि ऊर्णाहेयवयणामावा ।

सन्बद्रसिद्धिविमाणचासियदेवेष्ठ असंजदसम्मादिही कालादो होति, णाणाजीवं पहुच्च सन्वद्धा ॥ १०५ ॥

विस वि कालेस तत्थ अक्षेत्रइसम्मादिहिविरहाभाषा ।

एगजीवं पडुच जहण्युक्करसेण तेत्तीसं सागरीवमाणि ॥१०६॥ पुध सुत्तारंभादी चेव णव्यदे सव्यद्वसिद्धिम्ह जहण्णुक्कस्तिहिदी सरिसा ति ।

प्रणो जहण्युदारसगहणे किमहे कीरदे १ ण सरस मंदपुद्धिजणार्श्वगहहत्तादो । एवं गढिमगगणा समता ।

क्योंकि, इन विमानोंमें बन्य गुणस्थानके संकमणका अभाय है। यहां पर सातिरेक (साधिक) का प्रमाण एक समय है, वर्षोंक, एक समय अधिक भीचेके विमानकी उत्कृष्ट रियति ही ऊपरके विमानकी जधन्य दियति होती है, वेसा माचार्य-परम्परागत उपदेशसे ज्ञाना ज्ञाता है।

उक्त दिमानोंमें उरकृष्ट काल यथाकनसे बचीस सागरीयम और तेतीस सागरोपम है ॥ १०४ ॥

अधरतन नी मनविदा विमानोंमें पूरे बसीस साधरोपमप्रमाण उरक्रप काल है। सारी भनुत्तरियानीम पूरे तेसील सागरीपमत्रमाण उत्हृष्ट काल है, क्योंकि, एवम दीन और

सर्वार्थसिद्धिनिमानवासी देवोंने असंयतसम्यग्द्रश्चि देव कितने काल तक होते

हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ १०५ ॥

क्योंकि, तीनों श्री कालोंने यहाँ, मर्थात् सर्यार्थितिहाने, असंवतसम्बादि देखेंके विरह्ना समाय है।

सर्वार्थिसिटिमें एक जीवकी अवेक्षा जवन्य तथा उत्कृष्ट काल वेशीस सामरोपम है ॥ १०६ ॥

द्येका - पृथक् खुत्रके बारमाले दी जाना जाता है कि सर्वार्थसिकिमें जयन्य भीर इत्तर दिश्वति सदश है। फिर भी सुत्रमें जधन्य और उत्कृत पदका भ्रदण किस लिए किया ! समाधान -- नहीं, वर्षोंकि, उस पहका महण मन्दर्बीद अनोंके मनुप्रहके किए किया गया है। इस प्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई ।

१ अ-कपन्तेः "संबन्धिः अहणाणु- " इति पाठः ।

इंदियासवादेण एइंदिया केविचरं कालादो होंति, णाणातीं पद्दच्य सन्वद्यां ॥ १०७ ॥

दिस वि कालेस एउँदियाचं विरहाशावादो ।

एगजीवं पद्रन्य जहण्णेण खहाभवरगहणं ॥ १०८ ॥ अकेरियस परंदिणमुण्यात्रिय सन्यत्रहण्यामेर्राष्ट्रियद्वमध्विय अमेर्राहिए उपनान कर वर्गान्यवेत्रांदिकात्वतंभा ।

उत्तरसोग अणंतकालमसंसेजपोग्गलपरिपर्द्र' ॥ १०९ ॥ को है (को पहेरिएसप्यन्तिय अधिबद्दले काले जीर अनाहि हो। आसी नाए मार्चित्र (मार्थेकारी चेत्र पीरगलपरिषशाणि अष्टादि । कृते ! स्द्रम्यारी जाति मारायाचीता चवापा ।

र्रोडपणार्थभाके अनुसार्थ एकेन्द्रिय श्रीत किसने काल सक बेले हैं जिसस को हो हो को हम सहस्रात को गाँव 11 १०७ II

कर हर, केवो ही काचौर्व बकेरियम भौगीके विरद्यका बतान है। बद अंत्रको अरेपा गुकेन्द्रिय जीगोहा जगन्य साल शुक्रमप्राप्तपान

करों के विकेत्रपाके शक्षित अन्य शीनियुवादिक अविकार बोक्टियांकी अलक्ष विकि कार्य प्राचनक के के रिक्त अन्तर्वाद कार्युक्त कार्यप्रमाण वश्च कर्यक, सूत्र अर्थात्स्यामित निर्ध प्राच क्षेत्रिक म अपूर्व हे इत्यन्त्र का का का जीव है भूद्र अवस्थानमामामा साहित्रिक क्रीतिका वाले

Winds as en Tr कर्य जीवनी बोन्स करेल्डव जीसीहा उपहुत्र क्रांत अनुनवासम्बद्ध

職者の不可 まじゅう facia を 1 きゅう 11

क्रम १८८ व राज्य अन्य बार्ड क्षेत्र अवशिष्टवीके शत्या क्रेक्स वर्षि समिति केर्म बहुता है। ता कारण व वान वाना है व वाना है। वाना है वाना है, वानों है, वानों है, वानों है, वानों है, वानों है, AME AN AUSTRAFELLE A THE HERE'S

A FRAT AT BRIDE & 1124, 24 克威斯尔文区 发在这种人一点如小孩 "要"便"完"点

चादरएइंदिया केनिवरं कालादो होति, णाणाजीनं पहुच्च सन्बद्धा ॥ ११० ॥

षादरेशंदेयविरहिदकालाभावादो । किमद्वं तेसि णस्य विरहो है सहावदो । एमजिविं पद्धच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १११ ॥

अणेईदियस्य सुरुमेईदियस्य वा बादोईदिएस सन्यवहण्याउवएसुप्पनिवय आण्ज-दियं गरस्य सुरुप्तभवनाहणमेचवारोईदियमबद्धिराए उवलंबा 1

नकस्सेण अंग्रुटस्स असंखेज्जदिशागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसिपणि उस्सपिणीओ ॥ ११२ ॥

अंगुलस्स असंबेडजिदमागो अगेपश्चिपपो वि कडू पदराविल्योदिरेड्डिमबिय-प्पाणं पदिसेदं काद्म उवित्मविष्णगद्माई असंबेज्जावंविज्जाणि वि विदेशो करो । पदर-पस्लादिउवित्मविष्णपिडसेदद्वं ओसपिणि-उस्सपिणिणिदेसो करो। अणेदिशो सुद्वमे-देरिओ वा बारोदेदियंसु उप्यज्जिय तत्व जिद सुडु महस्ले कालमच्छदि तो असंबेज्जा-

षादर एकेन्द्रिय जीन कितने काल तक होते हैं है नाना जीनोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ ११० ॥

क्योंकि, बादर दकेन्द्रिय जीवींसे रहित कालका समाय है।

श्चेका-जनका बिरह क्यों नहीं होता है !

समाधान-क्योंकि, देला स्वमाय है।

एक जीवकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय बीवोंका जयन्य काल क्षुद्रभवग्रहणप्रमाण है ॥ १११ ॥

क्योंकि, किसी अन्य द्वीनित्याहि जीवका, अथवा स्ट्स प्केन्ट्रिय जीवका सर्व ज्ञचन्य भाषुयाले बादर प्केन्ट्रियॉमें उत्तव्य होकर पुना अन्य क्रेन्ट्रियाहिमें उत्पत्त हुए जीवके सुद्रमयमहराममाण बादर प्केन्ट्रिय जीवॉकी अवस्थित पाई जाती है।

एक बीनकी अपेक्षा पादर एकेन्द्रिय बीनोंका उत्कृष्ट काल अंगुरुके असंस्व्यात्वें साग्रप्रमाण असंस्व्यातासंख्यात अवसर्षिणी और उत्सर्षिणी प्रमाण है ॥ ११२ ॥

अंतुलका असंस्थातयां आय अनेक विकल्परूप है, इसलिए प्रतापता आदि अपस्तत विकल्पेका प्रतिभव करके उद्यापि विकल्पेक प्रदान करनेके लिए सुप्त 'शक्त ब्यातासंख्यात 'पेसा निर्देश किया। प्रतर, एस्य आदि उपरित्त 'विकस्पेके प्रतिपेक करनेके लिए अवसर्थिंग और उसलेप्यिंग 'इस वृद्दक निर्देश किया है। अन्य द्वेन्द्रियादि अपवा सुक्त प्रकारिय कोई जीय बादर प्रकेट्यियोंने उत्पव होकर, प्रदोगर पर्दा प्रति स्विकत्त

र प्रतिष्ठ "पदराशिवयाओ " शति पाढः ।

संखेजजाओ ओसरिपणि-उस्सप्पिणीओ अच्छिदि । पुणो-णिच्छएण अष्णत्य गच्छिदि वि व द्वचं होदि । कम्मद्विदिमावलियाए असंखेजजदिमागेण गुणिदे बादरिद्विरी जादा वि पी-यम्मयपणेण सह एदं सुचे विरुद्धादि वि णेदस्स ओक्खर्च, सुनाणुसारि परियम्मर्यं ण होटि चि तस्सेव ओक्खचरपसंगा ।

चादरेहंदियपञ्जता केवनिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुन सञ्बद्ध ॥ ११३ ॥

हदो १ बादरेहंदियवज्जचाणं तिसु वि कालेसु विरहामाता । एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोसुहुत्तं ॥ ११४ ॥

सुदामवगादणं संखेजजावलियमेचं, एमं सुदुनं छाताद्वितदस्त-तितद-छचीहरः

मेचसंडाणि काद्ण एगसंडमेचचादो । एदं पि कर्घ णव्यदे ? तिथ्यि सया छचीसा छायद्वि सहस्स चेय मरणाउँ ।

तिष्णि सया छत्तीसा छावडि सहस्स चेव मरणाई। अंतोमुहत्तकाळे तावदिया होति खुदभवा ॥ ३५॥

तक रहता है, तो अर्लण्यातासंख्यात अयसर्पिणी और उरसर्पिणा तक रहता है। पुनः निभर्पः अन्यत्र चला जाता है, येसा अर्थ कहा गया समझना चाहिए ।

द्यंका—' कर्मस्थितिको मायलीके असंक्यातयें मागले गुणा करने पर शहर रियाँ क्षेती है ' इस प्रकारके परिकर्म-श्रथनके साथ यह स्त्र विरोधको ग्राह होता है ?

समापान — परिवर्मके साथ विरोध होनेसे इस सुत्रके अवश्रितता (विरवण) नहीं मात होती है। किन्दु परिवर्मका उक्त यथन सुत्रका अनुसरण करनेपाना नहीं

इसटिप इसके ही अवस्थिताका वर्सन आता है। भारर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीव कितने काल तक होते हैं? नाना जीवोंकी अपेडी

सर्वकाल होते हैं ॥ ११३ ॥

क्योंकि, बादर पकेन्द्रिय पर्यान्तकोंका तीनों है। कालोंने पिरह नहीं होता है। एक जीवकी अपेशा बादर एकेन्द्रिय पर्यान्तक जीयोंका जपन्य काल अन्वेडी

है ॥ ११४ ॥

सुद्रमयमहणका काल संक्यान वावलीत्रमाण होना है, क्योंकि, एक गुहुनेहे छ्याती इत्रार तान सी छत्तील कपत्रमाण लंड करने पर एक लंडममाण शुद्रमयका काल होना है।

र्यका-पर भी देते जाना !

समाधान — एक सम्मर्गहर्न कालमें छवासड हजार तीन सी छत्तीस मान है। है, और हनने ही सदस्य होते हैं ॥ ३५ ॥

६ कडीन तिनित सन्। सम्बद्धिन्दरन्यवात्वरतानि ३ मंत्रीहरूत्वरक्षे वनीति निर्मादशावित्व मान्मा है।

वि गाहामुत्तादो । मृहुचस्स एवदियभागो संयोज्जाविषयमेचो वि कर्य गध्यदे है

आवित्य अणागोर चिनिरिदिय-सोद-माण-निक्काए । मण-नयग-वायफासे अवाय-ईहासुदुस्सासे ॥ ३६ ॥ फेलट-देसग-णाणे यसायगुकेतर पुथ्ते य । परिवादुससामेतय खर्नेनए संप्रताए य ॥ ३७ ॥ माणदा फोथदा मायदा तह चेव छोमदा । सुरमयगाहणे पुण विजीवरणं च चोहुकों ॥ ३६ ॥

इस गाधासुमसे जाना जाता है कि शुद्रभवका काल मन्तर्मुहतेका छपासंट हजार तीन सी छचीसर्था मांग है।

तान ता उरात्या नाग इन ग्रेंका—मुद्धतेका छणासट इजार तीन सो छत्तीसर्वा साम संक्वात भावलीप्रमाण होता है, यह कैसे जाता है

ाता था पद पत्त जाना । समाधान---भनाकार दर्शनीययोगका अधन्य काल आगे कहे जानेवाले सभी पर्गीकी

क्पेशा सबसे कंग है। (तथापि वह संवयात आपठीयमाण है।) इससे बर्सारिन्द्रपतस्वन्धी सपगडदानका जयस्य काठा विद्रोप अधिक है। इससे, ओकेन्द्रियज्ञतित अवग्रह्वान, इससे गामेन्द्रियजेतित अपग्रह्वान, इससे जिद्दोन्द्रयजित अवग्रह्वान, इससे मगोयोग, इससे ययनयोग, इससे कायपीग, इससे स्वानिन्द्रियजित अवग्रह्वान, इससे अवायखान, इससे

र्रहाझान, इससे भुतझान और इससे उच्छुास, इन सवका अधम्य काल कमंद्राः उत्तरोत्तर विदेश विदोष मधिक है ॥ ३६॥

तक्रयस्य केपलीके केपलबान और केपलब्दान, तथा सक्याय जीवके शंह हैदेरते, इन तीनोका जयन्य काल (परस्वर सदया होते हुए भी) वन्युमक्के जयन्य कालसे विदोष स्विक है। इससे एकत्यवितक्रमयीवारामुक्तप्यान, इससे युषक्तयवितक्षेतीचारमुक्तप्यान, इससे उपरामभेजीति वितेवाले स्वकार्यायस्वत, इससे उपरामभेजीयर सद्देवति सुमसाम्परायसंयत, और इससे संपक्षभेजीयर सद्देवयाले सुक्तसाम्परायसंयत, इस सपका जवन काल मन्या। उत्तरीकर विरोण विरोण स्विक है। ३०॥

स्पन्नः सुद्भासारशायके जयम्य कालसे मानकवाय, इससे क्रोयकवाय, इससे माराकाय, इससे लोगकवाय कोर इससे लाज्यपर्यात जीवके सुद्भायवद्यका जयम्य काल क्षमाराः उत्तरीत्तर विदोग विशेष कथिक है। सुद्भायवद्यको जयम्य कालसे रूपिकरणका जयम्य काल दिवाप मंगिक है, पेसा जानना साहिए ॥ ३८॥

१ कसायपाडुटे बद्धापरियाणाधिकारे १-३.

इदि गाहासुतादो । अंतोसुहुत्तं पि संसेजाविष्यमेर्गं नेव, तदो एदेवि तेषं विसेसो णित्य नि अंतोसुहुत्त्वयणं सुन्दर्य संदेहसुप्पादेदि नि वुत्ते णित्य सिरो स्वराभवगगहणपाणिय अंतोसुहुत्तमिदि मणिद्विणाणादो ताणं विसेसो अत्य वि अंगाममदे । पादत्त्वामवग्गहणादो बादरेहंदियपञ्जत्तहणाउअं सिरो इत्राप्ति अतिर विभाव प्रत्या विद्यालया
उक्कस्सेण संखेज्जाणि वाससहस्साणि ॥ ११५॥

पुढविकाइवस वाशीस वाससहरसािण उकस्ताउन सुरविस्द्रैमिश । बारोरिक पुढविकाइवस वाशीस वाससहरसािण उकस्ताउन सुरविस्द्रैमिश । बारोरिक पुढविकाइवस

इन गायास्त्रोंसे जाना जाता है कि शुद्रमयका काळ सी संग्यात सावशीयमार होता है।

र्यंता — अन्तर्महर्त भी तो संवयत कायक्षेत्रमाण ही होता है, इसक्ति कार्यंत्री भीर शुद्रभदमहण काळ, इन दोनोंमें कोई भेद नहीं है। अतत्य यह अन्तर्मुहर्तका बदनहर रहार्थ सम्देहने। उत्पन्न करना है ?

समापान — इसमें कोई सन्देह नहीं है, क्योंकि, स्वसे 'शुद्रमयमहण'येना कर का करके 'मानागुँहने' देसा प्रथम कहनेवाली जिन्नवाहासे उन दोनोंमें भेद जाना अने हैं। तथा, ' यातशुद्रमयग्रहणकालसे बादर व्यकेट्रिय वर्यन्तक जीवकी जायन कर्या क्षित्रमयगृहणे हैं देस प्रकारके कहें येथे बेदनाकालविधानसभ्यत्वी सरवद्युवदारों के जाना जाना है।

ब दर पहेरिद्रय पर्यातको स्थितिक किमी जीवके सर्व ज्ञयान आयुवाले कार्र एकेट्रिय पर्यातकोम जनाज होकर, पुना कान्य पर्यापम खले जाने पर, बादर परेदि प्रातिका अपन्य काल पाया जाना है, वेसा भधे कहा गया समझना चाहिए।

एक जीवकी अवेद्या बादर एकेन्द्रिय वयोप्तक जीवोंका उत्कृष्ट काल संकृत्य

पृचित्रीकारिक जीवोंसे बाईल हजार थर्नकी उन्हन्छ आयु सुन्नीसद है।

रीका — बादर योबन्द्रिय पर्याज्यक जीयोंकी अपस्थिति असंस्थान वर्षप्रमान वर्षे नरीं केली है रे

समाधान -- नहीं होती है, क्योंकि, उनमें कर्मस्यानवार यक जीवकी वार्ण

र करेतु "इत्यद्धि वर्षः वर्षः । इ.स.स. १इट स्टूट- १३८ व्हारः ।

[े] विशेष रेज्यक्षात्रक्रते इति साउः है

2, 4, 226.7 बाटाणुममे एहंदियपाटास्त्रणं

. . मेगजीवस्य उप्पणीय असम्बा । उद्यस्तसंखेन्ज्ञमं वस्य संखेन्जमागमेषं या वार ++ बदि उपपन्निद तो वि असंसेन्जाणि बस्साणि होति वि वृते ण होति, संसेन्जाणि 1991 वातमहस्त्राणि वि मुचण्णहाणुववचीदो वप्ताज्ञाममसंवेज्जवारूपाविसिद्धीए । अणिपदी वाहर्राहियमञ्ज्ञमण्सु संसेञ्ज्ञाणि वाससहस्ताणि उत्तरसेण तत्य परिभागिय पुणी अणः िनदेसु विच्छएण उपप्रजिदि कि मणिई होदि।

बादरेहंदियअपञ्जता केविचरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुच्च सन्बद्धा ॥ ११६ ॥ हरो ! एदेसि सम्बद्धासु बिरहामाबादो ।

एगजीवं पहुन्न जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ११७ ॥ हरें। १ अवज्ञनपद्म जहन्मियाए जाउद्विरीए तथियमेनाए' उवलंगा । उषस्तेण अंतोमुहुत्तं ॥ ११८ ॥

इरो ! अगरिवदिक्षिण बारेरेंदेदियअपअत्तवपृद्ध उप्यज्जिय जीदे वि संखेन्ज-

मसंभव है।

÷

_

t

वृद्धी-यदि कोई जीव बादर वहेन्द्रियोमें उत्कृष्ट संक्वातप्रमाण यार, अथवा उसके स्वातवें मानप्रमाण बार जलक होता है, तो भी बसंस्थात वर्ष तो हो ही जाते हैं।

समाधान -- महाँ होते हैं, क्योंके, यदि वेसान माना आय, वो बाहर वकेन्त्रिय प्रभाषायाम् वर्षाः वः प्रभाष्मः भारत् च्या मालाः व्यापः व्यापः वर्षाः प्रभाषः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्ष योज्ञा त्राहरः कालः । संवरात इज्ञारः वर्षमालः है । यह स्वयं वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः व िद तामाचाम्य संस्थातयार ही बादर यहे मिन्यांकी उत्पत्ति क्षित्र होती है। ातावाचा प्रभावचार को चाहर प्रकारताच्या वाज्य काल वर स्रविवासित कोई श्रीय बाहर प्रकेम्सिय वर्णायक्षीसँ अवस क्षेत्र संक्यातसहस्र भाषपाहात पार जाय थाहर चकान्यच पथापाध्यक चर्चच हाकर राज्यवासहस्र माण मधिकते अधिक काल तक उनमें परिश्रमण करके पुत्रा मधिपक्षित जीरोमें

बादर एकेन्द्रिय लब्ब्यपर्याप्तक जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी । सर्वकाल होते हैं ॥ ११६ ॥ क्योंकि, सभी कालोंमें इम जीवाक विरहका समाव है।

एक जीवको अपेक्षा उक्त जीवोका जयन्य काल शुद्रमवग्रहणप्रमाण है॥ ११७॥ पर्याहि, हास्त्वप्रयोत्तक और्योते जनस्य आयुक्ती शिमति उननेमात्र स्वाप्तस्य स्व उक्त जीवांका उत्कृष्ट काल अन्वमृहर्त है ॥ ११८ ॥ म्यंकि, भविवस्ति रिद्रववासा कोई जीव बाहर वकेन्द्रिय स्वस्ववर्णनकारी

सहस्ताथारं तत्थेव तत्थेव उपप्रजादि, तो वि तेमु सब्वेमु अंतोप्रकृतेमु एगडु स्टेंब एगम्द्रचपंमाणाभावा । सुहुमएइंदिया केविचरं कालादो होति, णाणाजीवं परु

सब्बद्धाः ॥ ११९ ॥

इदो १ सन्बद्धा सहमेहंदियविरहामावा ।

एगजीवं पहुच्च जहण्णेण खुदाभवग्गहणं ॥ १२० ॥ अणिपिदिदियस्स सुदृमेइदियअपजनगरः सन्यजहण्णकालमन्छिय अणिपिति

गदस्स खरामचन्गहणुबलंगा ।

उक्कस्तेण असंबेज्जा लोगा ॥ १२१ ॥

वं जहा- अणिदिएहितो आगेतृण सुदुमेईदिएसुप्पन्तित्रय असंवेजन्तेगमेचं वेरि सुकस्तमवाहिदि तस्य गमिय अण्यिदियं गच्छदि । क्षदी है हेउसरूवजिणवयणीवरुंगारी। सुहुमेईदियपज्जत्ता केवचिरं कालादो होति. णाणाजीवं पड्डन

सब्बद्धा ॥ १२२ ॥

खरपन होकर यद्यपि संख्यात सहस्रवार उन उनमें ही उत्पन्न होता है, त्यापि इन सर्वे भारतमुद्धतीके एकत्रित करने पर भी यक मुद्दर्तभमाणका असाय है. अर्थात् किर भी पूरा सहते नहीं होता है।

सहम एकेन्द्रिय जीव कितने काल तक होते हैं ? नामा जीवोंकी अपेक्षा सर्वे

क्योंकि, सभी कालोंमें खुद्म एकेन्द्रिय जीवोंके विरहका समाप है। एक जीवकी अवेक्षा उक्त जीवांका जयन्य काल अद्भवप्रहणप्रमाण है।।१२०॥

क्योंकि, अविविक्षित इन्द्रियशेले जीवके सुक्त एकेन्द्रिय लक्ष्यपर्यान्तकार्त्र हो जपन्य काल रह करके अधिवशित इन्द्रियशाले जीयोंमें गये इस अधिक श्रद्रमयमध्यमम अधन्य काल पाया जाता 🖺 ।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल असंख्यात लोकके जितने प्रदेश हैं, तरप्रमान है ॥ १२१ ॥

जैसे, मविवशित सन्य इन्द्रियवाटे जीवोंसे बाकर. सहम एकेन्द्रियाँमें तत्वन्न होडर कोर जीय ससंवदात छोकप्रमाण उनकी उत्हार प्रयस्थितिको यहाँ पर शिताहर सर्व इन्द्रियवारे जीवोम चला जाता है, क्यांकि, इस महारके हेतुस्यकर बिन-यचन पाये जाते हैं।

यहम एकेन्द्रियपर्याप्तक जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अरेश सर्वदाल होते हैं ॥ १२२ ॥

```
t, 4, १२8. ]
                           कालाणुममे एइंदियकालगरूकां
          सम्बदासु विरहामाता । सो वि कर्ष पम्बदे । अण्णहाणुववाविहेउलनस्वोः
   सिस्यमिनग्यमणादो ।
         एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२३ ॥
       प्रमहतं ? तेति बहणाउद्वितिष्यं। यस सुहाभवगाहणं किणा सम्भद्दे ? गः
  अवज्ज्ञचे मोत्त्व अष्णत्य वस्स संमवामाता ।
       वक्स्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२४ ॥
      रगाउद्विरी संसेडवायतियमेचा वि कडु संतेजवर्गा या तत्वेष पुणी पुणी
उपवज्जमाणस्य दियस-प्रसतः-मास-उड्ड-अयण-संवच्चरादिकाला क्रिक्ण सन्मदे १ ण, वेलियः
चंका - यह भी केसे जाना !
```

वर्षोक, सभी कालाम सक्य वहेशिद्रच वर्षोक्क श्रीवॉक विरह्व वसाव है। हमाधान — मायधातुववात्तरम्बद्ध हेतुके सरावात बयससित जिन-पद्मनसे जाता आता है कि सहस पहे दिव पर्याप्तक औव सर्वश रहते हैं।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवीका जमन्य काल अन्तर्गृहर्त है ॥ १२३॥ र्यका — यह अन्तर्मुंहर्त काल कितना बण्डा लेना चाहिए ? समाधान - उनकी, वर्षात् स्ट्स वकेन्द्रिय पर्यानक आँगोंकी अवस्य बाकुके बाह्यमाण लेना बाहिए।

र्थहा — इत द्वममें 'भागमुंहतं 'के स्थानपर 'श्वद्मवग्रहण 'इस पहका प्रपादान क्यों नहीं किया गया है ा भाषा १९९१ . समाघान — नहीं, क्योंक, सम्प्रवर्णानक श्रीवीकी धोड़कर मध्यत्र उसका, सर्यात् दिमयका होना संमय नहीं है। स्ट्रम एकेन्द्रियवर्योचक जीवोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहुर्न है ॥ १२४॥

र्वहा-जर कि दक बायुक्तकी स्थिति संक्यात आवशीयमाच है, तक संक्यात समाधान - मही, क्याँकि, उतने वार उस वर्वावमें उत्वक्ति होना ससमय है, ने पारमें कि माल, पर्य आदि बमाच क्विनिकाल पाया जा सहे।

समाधान — मन्यया, द्वां [']भातपुंडतं' देशा वचन गर्दो हो सन्ता था, हस ानुषपत्तिसे जाना ।

सज्झ-साहणाणमेयर्च ? ण, पमाणेणाणेयंता । किंतु एगजीवजहणाआउदिवासने तस्ते उपन्तरसमगद्दिदिकालो संस्वेज्जगुणोः णाणाआउद्दिदसमृहणिप्पणगचादो ।

सहमेहंदियअपज्जता केविचरं कालादो होति, णाणाजीवं पर

सब्बद्धा ॥ १२५॥

सुगममेदं सुर्च, बहुसो परुविद्त्तादो । क्वमेग-बहुवयणाणमेगमहियां ! व स दोसो. सन्वत्य दोण्डमण्णाणाविणामाववलमा ।

एगजीवं पद्भ जहण्णेण खहाभनगगहणं ॥ १२६ ॥

असंजदसम्मादिद्वीणमबहारकाली आवलियाए असंखेजजदिभागमेत्री वि रेकि अतोग्रहु चमिदि सुने णिहिट्टो। एसा अपन्नताउद्दिश जहणिगया संसेन्त्राविस्वेता अंतोयुदुत्तमिदि सुचे किण्ण युत्ता ? ण एस दोसो, पज्जनाउआदो अवज्जनप्रकारण संखेजनगणहीणमिदि पद्रप्यायणहं खुदामवनगहणस्सुवदेसा ।

र्शंका - साध्य और साधन, इन दोनोंके एकत्य कैसे ही सकता है! समाधान-महीं, क्योंकि, उक्त कथनमें प्रमाणके अनेकान्त है, अर्थांद, प्रमा रवर्ष साध्य होते हप भी अन्यका साधक होता है।

किन्तु यथार्थ यात यह है कि एक जीवकी जगन्य आयुश्यितिके कातने उनी क्रिप्ट भवित्यतिका काल संक्यातगुणा होता है, क्योंकि. यह नाना भागित्यतियोंके स्वर् विष्यप्र होता है।

यूर्म एकेन्द्रिय सम्भाषाचिक जीव कितने काल तक होते हैं ! नाना जीवें गरेवा सर्वदाल होते हैं ॥ १२५॥

वह गूत्र सुगम है, क्योंकि, पहले बहुतवार प्रक्रमण किया गया है। श्रेका - यह वयन और बहुययन, इन दोशोंका यह अधिकरण केले हो सकता है। ममायान - यह कोई दीव नहीं, क्योंकि, सर्वत्र ही एक्टबन भीर बहुवबन, स

होतीहा मवितामायमध्यम्य पाया जामा है।

एक जीवकी अवेशा उक्त जीवाँका जमन्य काल शहमवग्रहणप्रमाग है॥ ११६ यंका-- मनंयत्मस्यव्हिष्ट अविहास सयहारकाल सायलीके सर्वस्थान्ये मान्यान होता हुमा भी ' अन्तर्मुहते हैं । येला गुरुमें निर्देश किया गया है । शिर यह हाश्तर्यात के चे ची कारण आयुक्तियान संख्यान भावकात्रमाल होते हुए भी 'भारगुर्दनवमाल है'

वसा सम्बद्ध क्या वर्षी कहा है समायान - यह कार्र दीय मही, वयीकि, युर्वतक आधीकी (प्रयाप) मार् रुष्यवर्षत्रह होशोडी क्रवन्त्र कामु शंगवातः, चवाकः, ववाकः आधाकः (क्रमणा) प्र सुरुमक्तरभद्या व्यवेश किवन्त्र कामु शंगवात्राणीः दीन होशी है, वह बनवामेके दिर गर्वे सुरुमक्तरभद्या व्यवेश दिवा गवा है।

उक्स्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १२७ **॥**

सुनमंद सुर्च, पहुचे पहरिद्यादा । चीइंदिया तीइंदिया चन्निरंदिया चीइंदिय तीइंदिय चर्निदिय-पञ्जता केवचिर कालादो होति, णाणाजीवं पहुच्च सव्यद्धां ॥ १२८ ॥

उपदेसेण विका आणिक्जदि कि सुगममेदं सुर्च ।

प्राजीव पहुरच जहल्लाण खुद्दाभवग्गहण्, अंतीमुहुत्तं ।११२९।।
' बहा उरेगः। तहा विरक्षाः' वि मायहः। वि-वि-वर्जारियाणं बहण्यकार्वः सहाभवग्गारणं, तत्य अपञ्जवाणं संभवः। पञ्जवाणं अंतोमुहुणं, तत्य सुहाभवग्गहणस्य संभवाभावः।

उक्कस्सेण संस्वेज्जाणि वाससहस्वाणि ॥ १३० ॥ शोदीयाणनेगुणवण्णदिवसा उक्कस्साउद्विदिषमणं, णवरिदियाणं छम्मासा, शोदीर-

उक्त ज़ीबोंका उरकृष्ट काल अन्तर्भृहुर्व है ॥ १२७॥

पहले बहुतबार प्रक्रपण किये जानेसे यह स्थ सुगम है।

होन्द्रिय, श्रीन्द्रिय और चतुसिन्द्रिय बीव तथा होन्द्रियपर्याप्तक, श्रीन्द्रियपर्याप्तक और चतुसिन्द्रियपर्याप्तक और चतुसिन्द्रियपर्याप्तक जीव किवने काल तक होते हैं ? नाना बीवोंकी अपेक्षा सर्व-' काल होते हैं ॥ १२८ ॥

वपदेशके पिना ही जाना जाता है कि यह सूत्र सुराम है।

एक बीवकी अपेक्षा उक्त बीवर्रेका जगन्य काल कमदाः क्षुद्रमवसहण और अन्तर्केहर्तप्रमाण है।। १२९॥

'शैला बहेरा होता है, बेला ही निर्मेश होता है ' इस स्वायसे लामान्य श्लीन्त्रप, श्लीन्त्रिय भीर बात्रीरिट्रय जीवाँका जाम्य काल श्लास्त्रववदस्यमाण है, क्योंकि, उनमें शल्यपर्याच्या जीवींकी संसायना है। किन्तु पर्योक्तक जीवोंका काल अन्तर्शृहत है, क्योंकि, इसस्ययस्य करी संसायना नहीं है।

एक भीवकी अपेक्षा उक्त बीबोंका उक्तर काल संख्यात इजार वर्ष है ॥१३०॥ बीक्ट्रिय जाबोंकी जनवास दिवस जन्म कामुस्थितिका प्रमाण है, सनुश्चित्रप

दिस्के-दियामां नानाबोदावेहदा सर्वेः दाकः । सः वि. १, ८.

२ एक्प्रोर्व प्रति अवन्येत श्वरम्बरम्बम् । छः छिः १, ८० ३ अक्ष्रेम संबद्देशारि वर्षतहस्मामि । छः, छिः, १, ८० याणं बारस वासा। जदो एवं. तदो संखेजाणि बामसहस्माणि कि म घडेदे १ ग एस देखे, एटाओ एगाउदिटीओ । एढाहि ण एत्य कजनमत्यि, भनदिटीए अहियारादी । का मर डिटी गाम ! आउडिदिसमहो । जदि एवं. तो असंखेजजाणि वाससहस्साणि मर्गाहरी किन्न होदि ? ण एस दोसी. असंदोडबवारं संदोडबवाससहस्यविराहिनंदोडबवारं वा वरप्रप्यचीए संभवामावा । अणिपदिदिष्टिंदो आगंतम अपिदिदिएस उपवित्रम संधेः न्जाणि चेत्र हिंडदि. असंसेज्जाणि ण परिममदि चि युनं होदि ।

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया अपज्जता केवचिरं कालादो होति, णाणाजीवं पडच सञ्चद्धा ॥ १३१ ॥

दबदेसेण विणा एदस्स सत्तरस अत्यो जन्त्रहे । पगजीवं पडच्च जहण्णेण खहाभवगगहणं ॥ १३२ ॥ गगममेर्द सर्च ।

बीबोंबी छह मास मोर ब्रीन्ट्रिय जीवोंकी बारह वर्ष करतव साथरियति होती है। घंडा-पदि वेसा है, तो स्वमें कही गई संक्यात हजार क्योंडी हिन्दि महीं परित केली है है

ममापान - यह कोई दोष महीं, क्योंकि, वे बतलाई गई हिचतियां दक माउ सारक्षी है, दबसे यहां पर बाहे बार्य नहीं है । जिल्ल यहां पर प्रवृक्षितिका प्रविकार है। मामा -- मन्दियति किम कहते हैं !

समायात-- मनेक मागुन्धितयोके समुदकी प्रपश्चिति कहते हैं।

में हा-वर्षि देवा है, मा अवंत्रतान हजार वर्गप्रमाण प्रवस्थित क्यों नहीं होती है। मुमापान-वह कोई दीन नहीं, क्योंकि, असंक्यानवार, अध्या संक्यान की

कर खेंद विशेषी संस्थानगर भी उनमें उत्पत्ति होनेकी संभावनाका समाप है। सविपति^त इन्द्रिक्क है होत्रोंने का करके विविधित इन्द्रियवाने जीवीमें उत्पक्त होक्टर, शंक्याननहस्र की ही अवस करता है, सर्वन्यायवर्ष अवल नहीं करता है, वेशा सर्व कहा हुना शतप्रवी Market !

इंजिय, बंजिय और बतुमिन्द्रिय सरस्वायाँक्तक और दिवन कान वर्ष हैते हैं ! बारा मेंतियाँ बरेशा सर्वशाल होते हैं ॥ १३१ ॥

रचेंग्राचे दिना है। इस स्वत्या अर्थ बात है।

बद्ध वे बदी बदेश उन्हा वे होंदा व्याप काल शुक्रमश्राहणव्याम है ॥१३२व बहु सूच स्थ्या है।

```
£, 4, ¿ {44. }
                        काटागुगमे पचिदियकाछपरवर्ग
     उनकस्तेण अंतोमुहुत्तं ॥ १३३ ॥
```

एदं वि सुगमं चेव । णवारं बीइंदिय-वीइंदिय-चर्जारियम्बरज्जवाणं जहारूमे अंतरिवरिह्मा असीदि-सिद्ध-चालीसअवन्त्रचमना । अदि वि एवियनारमेगी जीनी सर्व _i_-वणुबकत्तसिंहृदीए उपपञ्चिदि, तो वि तनमबहिदिकातसमानी अतीमुदुचमेचो चेव । क्रपमेदं ---पन्तरे १ अतोमुहुनुवरेसम्बद्धाणुववचीदो । पोचिदिय पोचिदियपञ्जनएसु मिच्छादिट्टी केनितरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च सन्वद्धां ॥ १३४ ॥

एगजीनं पहुन्न जहण्णेण अंतोसुहुत्तं'॥ १३५॥ एदसा ध्वसत अत्यो नया मृतापान्ह मिन्छवसा अहण्णकातपरुवणातुवसा प्रची तथा बचच्यो ।

उक्त जीवोंका उत्हर काल अन्तर्प्रहर्त है ॥ १३३ ॥ यह एक भी खुगम ही है। वित्तेष बात यह है कि बीम्प्रिय, चीम्प्रिय और बहु रिदिय सारवपादिक अधिके प्रधानमस् अत्तरहित होस्त अस्ती, साह भीर वासीर साम्बर्धान्तम् सर्व होते हैं। यहाँव हतने बार एक और उनकी उत्तक रिपतिसे अपक प्राचनका पर वाच द र प्रधान केवल पर प्रधान करका परण होता है। होता है, तो भी वनकी भवरिष्ठतिके कालका बाहु अत्तर्वहर्तमात्र की कोता है।

समाधान — भाग्यथा, खनमें भारतमूहतीका उपनेहा को नहीं सकता था। इस मार मानुष्णांचले जानते हैं कि उन भयोंका कोड़ सातर्गृहनेमान ही होता है।

पंचेन्द्रिय और वंचेन्द्रिय वर्षातकाम निष्यादृष्टि बीव कितने काल तक रोते िनाना जीवोंकी अपेशा सर्वकाल होते हैं ॥ १२४ ॥

पह जीवकी अवेद्धा उन्ह जीवोंका जयन्य काल अन्तर्यहर्तप्रमास है ॥ १३६ ॥ इस संदर्भ संग्रं केसा काल्यकरणाहे मृत्येणमें विष्णात्रके जसन्त काल्य काल्य स्टर्सा याले सूत्रका कहा है, येला ही यहाँ कहना खाहिए। रे मनिषु 'काओ' हाति वड ।

र प्रवाहरेत विश्वाहर्शनात ग्रोहका वर्ष काल हस हि. है, ट. र एकबीर पति जय-देशान्तर्पूर्त । स. वि. १, ४.

उनकरसेण सागरोनमसहस्साणि पुञ्चकोडिपुधत्तेणन्महिपाणि, सागरोनमसदपुधतं ॥ १३६॥

'जहा उद्देसी तहा जिद्देसी' वि जापादी पंचिदियाणं पुञ्चकीहिषुवनेणम्मियाणि सागरीवमसद्युष्टचं । एदस्युदाहर्णं-एको एरं-दियादे। विगालिदियादे। वा जागेतृण् पंचिदिय-पंचिदियपञ्जनएसु उत्रवित्रय सगिष्ठिर अभिग्रदेश हो। एकस्सेत्र सागरीवमसहस्सस्स सुनंतम्भूदबहुननवेस्विय सागरीवससहस्तरस्त सुनंतम्भूदबहुननवेस्विय सागरीवससहस्तरस्त

सासणसम्मादिहिपहुडि जान अजोगिकेनछि ति ओर्घ'।।१३७॥

कृदो १ ओघादो णाणेगजीवसासणादिकालाणं भेदामा**रा** ।

पंचिंदियअपन्जता बीइंदियअपन्जतभंगो ॥ १३८ ॥

उक्त जीवोंका उरकृष्ट काल पूर्वकोटीष्ट्रयक्तते अधिक सागरीपमसद्दस्त और सागरीपमश्चरपमस्यममाण है ॥ १३६ ॥ 'कैसा जरेश होता है, तथेय निर्देश होता है ' इस न्यायसे सामान्य पंकेन्द्रिय

श्रीवींचा जारुष्ठ काल पूर्वकीटीरूपकत्यसे अधिक सागरोपमसदस्त है, तथा पंचीरेत्रव पर्याः प्रकृतिका जन्म काल सागरोपमस्तानुवक्त्य है।

प्तक जायाका उन्हर काल सानपालमान प्रवस्त हैं— कोई वक जीव यकेन्द्रिय या किं सद इन दोनों कालों का उन्हरण कहते हैं— कोई वक जीव यकेन्द्रिय या किं लेन्द्रियसे साकर पंत्रीन्द्रक कीर पंत्रीन्द्रय पर्योग्यकों ने उत्तक होकर, आपनी दिगति तह पर कर, अग्रय दिन्द्रको बढ़ा गया। यहां पर बहु सागरीयसमझकरे, अपने अन्तर्गत बहुत्करो देकर 'सागरीयमसदस्त' देसा सुत्रमें बहुयसनका निर्देश किया गया है।

मामादनमम्बग्दारिस लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके जीवोंका काल ओपहे

समान है।। १३७ ॥

क्योंकि, भोषप्रकरणाने जाना भीर यक जीवसम्बन्धी सासादनादि शुगरवातीं कारोंसे भेरका समाय है।

पेपेट्रिय त्ररूपपर्याणक श्रीवींका काल झीट्रिय सक्ष्यपर्याणक श्रीवींके कालके समार्व ॥ १३८॥

६ सम्बर्गेत कामरोत्तवश्चयं पूर्वकोदीह्यक्ष्वीत्वाविक्य १४८ वि. १, ८. ६ प्रेमाणं कामरोत्तः च.ठा १ व. वि. १, ८.

णाणाजीनं पद्दच सन्बद्धा, एमजीनं पद्दच जहण्णेण खुद्दामनमाहणं, उपकरसेण अंतोमुद्रुचमिचाहणा भेदाभाना । णविरे पॅचिदियजपज्ञचण्युः णिरंतरुप्पज्ञणमननारा चउनीस होति।

एवनिदियमग्गणा समत्ता ।

कापाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया केविचरं काठादो होति, णाणाजीवं पहुच्च सन्वद्धां ॥ १३९ ॥

कुदो ? सन्बद्धास एदेसि संवाणस्य विच्छेदामावा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुदाभवगगहणं ॥ १४० ॥

एदस्युदाहरण-एगो अणिपदकाइओ जीवो अप्पदकाइएसु उप्पिजम सम्ब-जहर्ण कालमन्द्रिय अणिपदकाइयं गदो । लद्भो जहण्णे सुद्दासवस्ग्रहणकाले ।

- उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा['] ॥ १४१ ॥

नाना जीवींको क्षेपेक्षा लवंकाल, एक जीवकी क्षेप्रता जमन्य काल शुद्रभयमहण-प्रमाण है, उन्हार काल क्ष्मतमुंहर्त है, स्तादिक क्ष्मते कोई भेद नहीं है। विदोध बात यह है कि पंचेन्द्रिय लग्न्यपर्गितक जीवोंमें लगातार निरम्भर उत्तरक होके सम्यार वीवीस होते हैं। हम सम्बार (लिदमानीला समस्य कर्म)

कायमार्गणाके अनुवादसे प्रथितीकायिक, जलकायिक, तेजस्कायिक और वायु-कायिक जीव कितने काल तक होते हैं है नाना जीवोंकी अपेधा सर्व काल होते हैं॥ १३९॥

क्योंकि, सभी कालोंमें इन पृथिशीकाविकादियोंकी संतान-परम्परका विच्छेद नहीं होता है।

प्त जीवकी अवेक्षा उक्त जीवोंका जयन्य काल क्षुद्रमवग्रहणप्रमाण है।। १४०॥ इसका उदाहरण-अधिपक्षित कायवाल कोई एक जीव विवक्षित कायवाले जीवोंमें

एफ जीवकी अपेक्षा उक्त बीबोंका उत्कृष्ट काल असंख्याद टोक्प्रमान है। १४१॥

१ कामातुरादेन पृथित्वरोजे नायुकाविकानी नानाबीनापेक्षण सकेः कालः। सः वि. १, ८.

६ एक्ज'रं प्रति अव-येन शुरमश्रह्यन् १ स. सि. १, ८.

३ वलर्रेवातंस्वेदा काळा । स. सि. २, ८.

एदस्सुदाहरणं- एगा अणाप्तिद्काह्त्रो अप्पिद्काहृएगु उप्पत्ति अध्यिदकाइयहिदिमसंखेजजलागमेत्तं यरिभमिय अणाप्यदकार्यं गरी ।

वादरपुढविकाइया वादरआउकाइया वादरतेउकाइय काइया वादरवणफदिकाइयपत्तेयसरीरा केनिर्दं कालादो

जीवं पहुच्च सन्वद्धा ॥ १४२ ॥

इदो १ सन्वयालमणुच्छिणासंताणचादी । एगजीवं पहुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १८३ । एदसमुदाहरणं- एगी अणिपदकाइओ अध्विदकाइयअपजनतम् उव

जहण्णमाउद्विदि गमिय अणिपदकाइएसु उववण्णो। लद्धी जहण्णेण खुद्दामय उनकस्सेण कम्मट्रिदी ॥ १४४ ॥ कम्मद्विदि चि युचे कि सन्वेसि कम्माणं हिदीजो घेप्पंति, आहो एक

हिदी घेष्पदि चि १ सन्वकम्माणं हिदीओ ण घेष्पंति, किंतु एक्कस्तेय कम्महित इसका उदाहरण-अविवासित काववाळा कोई एक जीव विवासित पृथि आदि जीयोंमें उत्पन्न होकर यिवस्तित कायकी असंक्यात लोकप्रमाण सर्योत्कृष्ट । परिभ्रमण करके पुनः अधियक्षित कायको मास हो गया। बादरपृथिवीकायिक, बादरजलकायिक, बादरतेजस्कायिक, बादरवाह

और बादरयनस्पतिकायिकप्रत्येकग्रसीर जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ १४२ ॥ पर्योक्षि, इन स्वोक्त जीयोंकी सर्वकाल अविच्छिन्न संतान पाई जाती है। एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जधन्य काल शुद्रमवग्रहणप्रमाण है॥ १ इसका उदाहरण-अविविक्षत कायवाला कोई एक जीव विविक्षित कायके ह पर्याप्तक जीवोमें उत्पन्न होकर यहां की सर्व जयन्य आयुश्चितिको बिनाकर पुनः अविर्वा

कारिकों में उत्पन्न हो गया, तब सुद्रभवमहण्यमाण जघन्य काल उपलब्ध हुआ। उक्त जीवाँका उल्क्रप्ट काल कर्मस्थिवित्रमाण है ॥ १४४ ॥ रीका — 'कर्मिस्चिति ' इस प्रकार कहने पर पया सर्च कर्मीकी स्थितियां प्रक की जा रही हैं, अथया, एक ही कर्मकी स्थिति बहुण की जा रही है।

समाधान — सर्च कमोदी स्थितियां नहीं ब्रह्म की जा रही हैं, किन्तु पक मोह कर्मेशी दी स्थिति यहां पर 'कर्मास्थिति ' कार्क्ट के कार्क कर -----

कालाणुममे बाह्यसङ्ग्रस्यसङ्ग्रह्यमं

0.184"

جم ---

است عبب

÷

ţ

इरो १ गुरुवरेसादो । तत्य वि इसवामोहणीयस्य चेय उपकस्साहिरीए सचरिसागर यमकोडाकोडियेचाए ग्रहणं काद्व्वं, पाहण्णियादो । इसे पहाणचं १ संगहिदासेसकम्म हिंदीए । के वि आहरिया कम्महिंदीदी बादरहिंदी विश्वममें उप्पण्णा वि कच्चे कारणीव-77 'वारमवरुविय बादरहिदीए चेय कम्मिहिदिसप्यमिन्छेति, तस् घटते, 'गीण-ग्रप्ययोर्ग्रस्य समत्यम् । इति न्यायात् । ज च बादराणं सामण्येण वृत्तकाला बादरेगदेसाणं व्यवस्थायः प्र -Fr प्रमाण वि सो चेत्र होदि ति, त्रिरोहा । साम्मणवादरहिदिमणापपरिण पर्राविप संपरि 1521

पादरपुद्धिर्दि संप्यमाण उनपासवसंवने पत्रामणाभावा च । पदस्तुः वस्ति । वस्ति । वस्ति । वस्ति । वस्ति । वस्ति । व प्तिहराहरकाहुओ अप्पिर्वाहरकाहुवसु उप्पाज्जिय तत्थ संवरिसागरोज्यकोडिमेच-फालमस्छिय अणित्रसाह्यं गरी। चादरपुडिवकाइय-वादरआउकाइय-वादरतेउकाइय-वादर**वाउ**-काइय-बादरवणकृदिकाइयपत्तेयसरीरपञ्जता केन्निक् कालादो हॉति, णाणाजीवं पडुच्च सन्वदा ॥ १८५ ॥

प्रका उपनेश है। उसमें भी केवछ वर्शनमीहनीयकमंत्री ही सत्तर कोझहोड़ी सागरीयमः

र्चका - इर्चनमोदनीयकर्मकी स्थितिको प्रधानता केले हैं ? समाधान-क्योंके, उसमें सर्व कमोंकी स्थित संप्रदेत है।

एवा पाना विकास के क्षेत्रियतिले वाहरश्चिति चरिकाम उत्पन्न है। इसतिवे कार्यम हितन हा आधाव क्षार्थावस बाद्धरेण्याव व्यक्तमम् व्यक्त ह ह्यालय रायम कारणके उपचारका साम्रहान करने बाद्दरिणतेको हो ^१क्सेरिशति । यह संसाम्यक्त हैं,

कारणक जपधारका भागप्रकाल करण जार्रास्थालका का कलारथात यह सका सामत है। हिन्दु यह कथन छटिन नहीं होता है, क्योंकि, भीण और मुक्यमें विवाह रोने वह मुक्यमें ही किन्तु वह कथन थाटन नहां हाना है, प्रभाक, गांच कार ग्रंपन स्वधाद होन पर श्रंपनम हो संक्षत्रय होता है। ऐसा खाव है। इसरों बात यह है हि वाहरकाविक श्रेंगांक सामास्वते समत्यव होता व पत्ना न्याय हा हुलदा वात यह हा रूपा प्रश्तायक वाधाम सामान्यस बहा हुमा काल, बाहरकाविक श्रीवाक यह देशामुग बाहर पृथियोकाविकांका मो यही ही वहीं रहा दुधा काल, धानरकााथक जायक सक्वराजुन चार्च प्राथ्यास्तायकाचा था पहा हा नही हो सकता है, क्योंकि, इसमें विरोध भागा है। तथा, सामान्य बाररकाविक रिपानको को त्यन्ता है, स्थान, देशक कार्यक्ष जाता है। त्यान स्थान जावर्थक विद्यालक करने अब बाहरपूर्धिनीकाधिककी स्थितको करने पर उपयारके भालस्थनमें कोई प्रयोजन भी नहीं है। नेस कार प्रथानम भा नहा ह । भार उक्त, कर्मीहर्शनिवस,च कालका उदाहरूच कहने हैं — व्यविवाहित बाहरकाव्याला

भव वण कार्यामानामा कालका वर्धात्म क्या । — नाक्याचा वारकाववासा काह त्रीत विवासित वाहरकारिकाम कालका होकर यहां पर सक्तर बोहाकोई वासरीपास ममाण काल तक रह करक भावचारत वायुरकाधिकमें चला गया।

चादग्रुधवीशायिकववानः, बादग्वनकायिकववानः, वादन्तवस्कायिकववानः, षाद्रवायुक्ताविक्षप्यान्त और षाद्रवनम्पानिकायिकः प्रत्येक्षप्रतिस्पान्त और कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ १६५ ॥

f t. 4. 121.

मध्यक्राम एदेवि विरहामात्रा ।

एगजीवं पद्म जहण्णेण अंतोमुहत्तं ॥ १४६ ॥

एदस्मदाहरणं-एगा अण्डिपटकारओ अध्यिटकारणम उत्पत्तिय मध्यवस्थानी महत्त्रमस्टिय अगरिपदकार्यं गरे। 1

उकस्सेण संखेज्जाणि वासमहस्माणि II १८७ II

सद्भप्रदेशिजीवाणमाउद्विदिषमाणं वारह वस्तगहस्मा (१२०००), ऋरपुरविकारः याणं यात्रीस बस्ससहस्सा (२२०००), आउकाइयपज्ञत्ताणं सत्त वासमहस्सा (७०००), तेउकाइयपञ्जन्ताणं तिष्णि दिवसा (३). बाउकाइयपञ्जनाणं तिष्णि वाससहस्यानि (३०००), वणप्रद्वराइयपञ्जत्ताणं दस् वासुसहरुसाणि (१००००) उपकस्साउहिरिः पनाणं होदि' । एदासु आउड्रिटीमः संग्वेज्जमहरूमवारमध्यको संग्वेज्जाणि वामसहस्यापि होति । उदाहरणं- एगी अणिपदकादयी, अध्यिदकाद्ययवजनवस् उववण्यी । पुणी सिन्ह चेव संखेजाणि वाससहरसाणि अच्छिय अण्डियहकाइयं गडी ।

क्योंकि, सभी कालोंमें इन अविंके विरहका समाय है। एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जघन्य काल अन्तर्भवर्त है ॥ १४६ ॥ इसका उदाहरण-पक अधियक्षितकायिक कोई जीव वियक्षित कायबाने जीवाँन सरक्य होकर सर्व-ज्ञधन्य अन्तर्गृहर्तकाल रह करके अवियक्तिम कावकी प्राप्त हुना।

वक्त जीवोंका वत्कर काल संख्यात हजार वर्ष है ॥ १४७ ॥

द्युद्धियीकापिक पर्यातक जीवींकी आयुश्चितिका प्रमाण वारह हजार (१२०००) यर्प है । सरपृथियोकायिकपर्यातक जीवोंकी स्थितिका प्रमाण बाईस हजार (२२०००) वर्ग है। जलकायिकपर्याप्तक जीवोंकी स्थितिका प्रमाण सान हजार (७०००) वर्ष है। तेम स्कायिकपर्यातक जीवाँकी स्थितिका प्रमाण तीन (३) दिवस है। पायुकायिकपर्यातक जीवोंकी स्थितिका प्रमाण तीन इजार (३०००) वर्ष है। यनस्पतिकाविकपर्यातक जीवोंकी हियतिका प्रमाण दश हजार (१०००) यथं है। इन आयस्यितियाँमें संदयात हजार बार अखन्न होनेपर संख्यात सहस्र वर्ष हो जाते हैं।

इसका उदाहरण-पक अधिवक्षित कायवाला कोई आँव विवक्षित कायवाले पर्या शकींमें उत्पन्न हुमा । पुनः उसी ही कायमें संख्यात सहस्र वर्ष रह करके अविवक्षित कायकी

क्राप्त हो गया।

१ पृथिब बाविकाः द्विविकाः श्रुद्धपृथिवतिकाथिकाः सारपृथिकीकायिकाथिति । तत्र श्रुद्धपृथिवीकाविकारी बरहृष्टा रिविटिहाँदव वर्षतृहसाचि । सार्थियीशविकायां हार्थित त्रेवर्षयहसाचि । सनस्पतिकाविकायां वर्षत्रसाति । अव्यापिकार्ता करतवर्षत्रसाणि । बायुकायिकार्ता शीथि वर्षत्रस्थानि । हेन कापिकार्ता रिवि शर्विदिशानि । तः स्त. वा. ३. ३५.

```
1, 2 set 1
                                                                                             बाटानुगमे बादरास्यस्य स्टब्स्
                                                     वादरपुढविकाइय-वाद्रआउका१य-नाट्रते उका१य-बाद्रवाङ्
                                    काइय-बादरवणकृदिकाइयपतेयसरीरअपन्जना केयिन्सं कालादा होति
        2 F
                                   णाणाजीवं पडुच्च सन्वदा ॥ १४८ ॥
       स्रोतस्य
  35 #
                                               एगजीवं पडुच जहण्णेण खुहाभवग्गहणं ॥ १४९॥
  16 11.8
                                             उदाहरणं — एवा अवाण्विरकार्थे अत्विरकार्यभगवम् उदरन्ते । कृष
                             सुराभवागहणमान्छियुग अणित्वदं काह्यं गही ।
1. (257.)
, 64 pm
                                           उनकस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ १५० ॥
                                         जदाहरण-एवा अणाप्यद्वाहमा अध्यक्ताएमु उप्यक्तिय मध्यक्त्रम्
                         सदुचकालं तत्थ परिवासिय अव्यक्तारं गरी ।
                                      सहमपुदविकाह्या सहुमआउकाह्या सहुमनेउकाह्या सहुम-
                     बाउकाह्याँ सुहुमुचणकादिकाह्या सुहुमणिमोद्दर्जीया तस्मेय पञ्जाताः
                    पञ्जता सुहुमेंहेदियपञ्जत-अवञ्जताणं भंगी ॥ १५१ ॥
                                 बादरष्ट्रियशैकादिकसम्बद्धपाणुकः, बादरत्त्व्यापिक्तःवद्यवद्यद्वतः, बादरनेत्रः
أبير
                देशायिकात्वरूपयम्बद्धाः वादश्वायुकायिकात्वरूपयायकात्रकः व्यवस्थायः व्यवस्थायः व्यवस्थायः व्यवस्थायः
              भारतकारीस्तरप्रवर्शीतक जीव दिनने बाल तक होते हैं है नाना श्रीकार करेंचा करेंचा सर्वे
                          एक जीवकी अवेशा उक्त जीकींका जवन्य काल सुरूभवेदरक्त हैं। है एक ह
                         Asia metan mannin menan Menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan menan 
         व्यवस्य व्यापः ह्या । वटा वर धारधबादणवाग्यदाव वर वाव हुन व्यवस्थित
        कावको साम हो सवा
                      उत्ता श्रीबोका उपहुष्ट काल अन्तरहरून है ॥ १०० ।
                     उद्दाहरण-यह अवग्राम का एक जा व विवासिक काएक जो देखि क्षण्य दोकर
    सर्वाहर बलागुंहन व ल नव उनमें एन्धरण वरव पुन कार वारस सन दर्श
                 Graningianca Granalica Graneiance Craciente
  Ceneniciamice, venfinite n'e be vas e cun au norden see.
बीत यह म दुवेरिद्रयदय, एक बीर बदद छन्। ह बाग्य समान है। हेवा ह
```

कुदो ? णाणाजीवं पद्रच्य सम्बद्धा, एसजीवं पद्म जदस्येन सुराससम्बद्धाः अंतोसुदूर्व, उक्तरेमण असंबद्धाः होता । पद्धनामसपद्धनार्यं य अंतीसुदूर्वसम्बद्धिः सहसद्वेदियपद्धनापद्धनेदि विभेगासावा ।

चणकदिकाइयाणं एइंदियाणं भंगों ॥ १५२ ॥

हरो ? णाणाञ्जीवे पड्डच सच्चहा । एमजीवे पड्डच जहरूनेन सुरामवन्यस्यं, उपकरसण अर्णनकालमसंखन्त्रयोग्गलपरियद्दमिरचेरेण एईटिय्हिनी वर्णकिर्कार्याने मेटामावा ।

णिगोदजीवा केयचिरं कालादे। होति, णाणाजीवं पहुच

सब्बद्धा ॥ १५३ ॥

सुगममेर्द सुत्तं।

एगर्जीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ १५८ ॥

एदं पि सुनं सुगमं चिय ।

उक्करसेण अङ्गादजादो पोग्गलपरियद्रं ॥ १५५ ॥

क्योंकि, नाना ओवाँकी अपेक्षा सर्वकाल, एक जीवकी अपेक्षा जायन्य काल, स्ट्रह्मक प्रक्रमप्रमाण और अस्तुकेहर्त, तथा उत्हाद काल आकंट्रयात लोक है। प्यानिक और अपर्योजक आवाँका काल अन्तुकृद्धते हैं, क्लादि करले सुरम एकेन्द्रिय पर्यानिक और अपर्योजक आवाँके साथ स्कृत्युविधोकाविकादिकके कालमें विशेषताका समाय है।

वनस्पतिकाथिक जीवोंका काछ एकेन्द्रिय जीवोंके कालके समान है ॥ १५२ ॥

क्योंकि, नाना जीयोंकी बोरेक्षा सर्वकाल, एक जीवकी अंदेक्षा जाज्य काल स्राप्तमान प्रदेश और उत्तर काल अननतकालातक वसंकवान युद्रवपरियनन है, इस कपसे प्रकेरियोंने प्रमुखीतकारिक जीयोंके कालका कोई भेट नहीं हैं।

षनस्पतिकारिक जीयाके काळका कोई भेद नहीं है। निगोद कीय कितने काळ तक होते हैं। नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल हैं।

ई ॥ १५३ ॥

यद सृष्ठ सुगम है। एक जीवकी अपेक्षा निगोद जीनोंका जयन्य काल <u>श</u>ुद्रमनप्रहण्प्रमान

है॥ १५७ ॥

यह भी सूत्र सुगम ही है।

उक्त जीवोंका उरक्रप्ट काल अट्टाई पुद्रलपरिवर्तनप्रमाण है ॥ १५५ ॥

६ बनस्रतिकाविकानावेकेन्द्रियवत् । स. वि. १, ४.

۲، م، وبرد. _] काटाणुगमे तसमाहयकाट्यरूकणं तं ज्ञा- एगो अव्यक्तायादो आगंत्य विशेदिमुद्दवणो । तत्य अङ्गादन्जा पोग्गलपरियङ्गणि परियाङ्टिर्ण अण्यकायं गरो । वादराणिगोदजीवाणं वादरपुढविकाइयाणं भंगो ॥ १५६ ॥ हुदो १ वाणाजीतं पहुच्च सटलहा, पगजीतं पहुच्च जहुणीय सुरामकागहर्ण, उचकरमेण क्रमिहिंदी हर्न्याण बादरिवशीदाण बादरपुरविकाहराहिंती महामात्रा । तसकाइयन्तसकाइयपञ्जनएसु मिच्छादिट्टी केनिनरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च सन्नद्वां ॥ १५७ ॥ एगजीवं पहुच जहणोण अंतोमुहुत्तं'॥ १५८॥ वसकाहपाणं तेति पञ्जवाणं च जहण्यकाली अंतीमुद्दवं । तपकाहपाणनंत्रामुद्दवः मिदि अमिवय सुरामवामाहणं वि किल्ल युवं १ व, सुरामबमाहणं वेनिसार्ग जहन्त-जैले - कोई यह जीव काम बायले बा करके निर्मादिया जीवाँस उच्छ हुना। बर्र पर सहार पुत्रवरियतित काल ताक परिधासय करके साथ कावका माना कावान वादरिनिगोद जीबोका काल बादरएपिबीकाविक जीबोके मधान है ॥ १५६ ॥ चर्योहि, नामा अधिही अपस्त सर्वकार, एक अधिकी अपसा अध्यक्ष कार धुरुमकः बहुणसमाय और जरहर काल क्योरियनियमाय है, इस हणते बार्ननीयारिया और हे कालका बादरप्रथियीकाविक जीवीके कालस कार्य भेद मही है। वसकाविक और वसकाविकवर्गानकामें विध्याद्यक्ति जीव जिनने बात तक होने हैं। नाना जीबोदी अवेशा सर्ववाल होते हैं॥ १५७॥ एक जीवडी अवधा उक्त जीवोदा जयन्य काल अन्तर्धात है ॥ १५८॥ वतकारिक और उनके पर्यटनकोंका जायन्य कार अवस्तित है। विषया वारकाविक अधिका अत्योद्धन बाल है . येसा न कह कर 'सदस्य महजबमाज बाल है, वसा क्यों नहीं कहा ! समाधान नटा वर्णान शृद्धभवसद्यन्ते कालको देखकर अधाद इसकी अध्सा वधन्य मिथ्या पना बाल और भी छेटा है। रोप स्वार्थ समग्र हा A Ad a d a d day on all a little little and a little

जनकरसेण वे सागरोवमसहस्साणि पुट्यकोडिपभत्तेणव्य**हि**णा

वे सागरोवमसहस्साणि ॥ १५९ ॥

तं जधा- दो जीवा धावरकायादो आगंतग एगा तसकाइएस, अण्णेगो तसका पञ्चणमु उनवण्णा । तत्य जो सी तसकाइएम उनवण्णी सी प्रत्नकोडिपुषचन्त्रहिन वे-सागरीवमसद्दश्साणि तस्य परिममिय धावरकार्यं गडी । इदरी वि वे सागरीवनवर्षः परिमामिय धावरं गडो. एची उवरि तत्थच्छणसंभवाभावा ।

सासणसम्मादिट्टिपहुडि जाव अञोगिकेवाले ति ओघं ॥१६०॥

हुदो ? ओपसासणादिमयलग्गहाणार्णं णाणेगजीवजहण्यकसमस्तिहितो तम्स्य वसकार्यपञ्जवसासणादिसयलगुणहाणणाणेगजीवज्ञहण्यकस्त्रकालाणं भेदामावादो ।

तसकाइयअपञ्जताणं पंचिदियअपञ्जतभंगो ॥ १६१ ॥ इरो ै नामात्रीर्व पहुच सञ्चदा, एगत्रीर्व पहुच जहणीय खुदामनमार्ग,

त्रमकायिक जीवोंका उत्कृष्ट काल पूर्वकोटीप्रयक्त्वसे अधिक दो हजार सामरोत्न

मीर बमकापिक पर्याप्तक जीवींका उत्कृष्ट काल पूरे दो हजार सागरीपमनना रे ॥ १५९ ॥

क्रेन- दी क्रीय एक नाथ श्यायश्यायमे आकर एक तो सामान्य वमकाविक जीव में भीर तूनका असकायिक पर्याप्तकों में उत्पत्त हुमा। उनमें से जो सामान्य अनवादि की तीमें क्या के दूसा, यह अहि पूर्वकी दिश्यक्या विकास का सामा प्रमास का सामा करता. विश्यमन करके व्यावरकायकी प्राप्त हुमा । तथा दूमरा जीव भी दी हजार सागरीपमयमन हतमें परिश्रमण करते त्य वरकायमें चया गया, क्योंकि. इसके अपर बसकायमें स्वा संबद्ध बहाँ है।

मामादनमम्पादृतिमें लेकर् अयोगिकेत्रतीगुणस्थान तकका काल क्रोपके म^{द्दा} 2 11 2 Co 11

कर्याचि, सोस्रोडे मामादनादि सदल गुणश्यानीते साना और एक शेवडे व्यान कीर इन्द्रुष्ट बालींन प्रमुवायिक स्था प्रमुक्तायिकपूर्यास्त्रीक सामादशाहि सहस मुक्तरवारों है सामा भीत वह जीवहे जवाय भीत उत्तर दालीका कोई देव सही है।

बम्बारिक्टरप्यपर्यात्रहोंका काल वंशिन्द्रयत्रव्यप्यप्रांत्रहोंके गमान है वहाँहै। बर्चों है, नाना केंग्रें ही कोशा सर्वकाल, वस जीवही कोशा प्रचान हाल स्^{राह्म}

t Kuit Surragere gierrguefterfür ju fe, t, e.

संबरण्यः विकेशकर । सः श्री ४, ८,

1 806

उद्यस्त्रेण बीरंदिय-वीरंदिय-चर्नारंदिय-पॅचिंदियअपज्ञचएमु बहाक्रमेण अर्मादि-सहि-चालीस-चर्रुचीस-अणुचद्रभवेसु षडुसद्वारपरियङ्गणांभृदअंतोमुहुचकाले। इच्चेदेहि विसेसामाना ।

एवं बायमग्यमा समता |

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवित्रजोगीसु मिच्छादिद्वी असं-जदसम्मादिद्वी संजदासंजदा पमत्तसंजदा अपमत्तसंजदा सजोगिकेवर्छी केविचरं कारुादो होति, णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धां ॥ १६२ ॥

इरो १ मनजोम-विजानिहे परिणमणकाटादो तरुवनकमणकारंतरस्य धीतचादो। एगाजीवं पडुच्च जहरूलोण एगसपर्यं ॥ १६२ ॥

एदस्य सुचरस अरयणिष्ड्यसमुत्पायणहे मिण्डादिहिमादिगुणहाणांत अस्तिद्व एगसमयपरनणा फीरदे । यस्य वान जागनरावचि-गुणपरावचि-मरण-यापादेहि मिन्छन-गुणहाणस्स प्रसम्भा परुविज्वदे । ते ज्ञथा- यनको सामयो सरमापिन्छादिष्ट्री असं-वदसम्मादिष्टी सेनदानंत्रदो पमचर्तनदो या सग्योगण अन्छिदो । एग्तमभ्यो सप-महण, उन्हर काल, क्रीट्रिय, जीट्रिय, बाहीरिष्ट्रच क्षेत्रिय सम्प्रयक्तिकार्य सहसी, साह, बाहीस सीट खीवीस सुद्रम्योव कर्ष सी वाट परिवर्गनसे सन्त्य प्रसा मन्तरीहानंत्रस्य होता है, इस सम्बर्धने क्षेत्रस्य स्वा

इस महार कायमार्गेणा समात हुई।

योगमार्गणाके अञ्चपदमे वांची मनोपोगी और वांची वचनपीगी श्रीशंकें निभ्यारिट, असेपनसम्पराट, संयतासेयत, अमससेयत, अमससेयद और वयोगि-केवली कितने काल तक होते हैं? नाना जीवोंकी अपेशा सर्ववार होते हैं।। १६२ ।।

पर्योक्ति, मनीयान और यचन्योनके झारा देखियाँत परिवास कालते उनके उप-

प्रमणशासका सम्तर सरा पाया जाता है।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवींका जपन्य काल एक समय है ॥ १६३ ॥

द्वार स्वार्धिक कार्य विश्वयक्तं सामुन्याद्वार्यं विस्तादां कार्यः वर्षा रूप्या र्वे स्वार्धिक कार्यः वर्षायक्तं सामुन्याद्वार्यं विस्तादां कार्यः करके एक समयक्तं प्रकचना की जार्या है— उनसेले पहरे योगपरिवर्णन, शुक्तस्य कर्षायक्तं है स्वार्धिक हारा विस्तार्यगुक्तस्याव्या प्रक समय प्रकचन हिस्स कार्यः है एस प्रकार है नात्स्याद्वार्यक्रमार्थं, स्वार्ध्वार्यक्रमार्थं, स्वार्थं, स्वार्ध्वार्यक्रमार्थं, स्वार्ध्वार्यक्रमार्थं, स्वार्ध्वार्यक्रमार्थं, स्वार्ध्वार्यक्रमार्थं, स्वार्ध्वार्यक्रमार्थं, स्वार्ध्वार्यक्रमार्थं, स्वार्थं, स्वार्यं, स्वार्थं, स्वार्यं, स्वार्थं, स्वार्थं, स्वार्थं, स्वार्थं, स्वार्थं, स्वार्थं, स्वार्थं, स्वार्यं, स्वार्थं, स्वार्यं, स्वार्थं, स्वार्थं, स्वार्यं, स्वार्थं, स्वार्थं, स्वार्थं, स्वार्थं, स

र मोशानुकारेन काम्यानवसीतित्र विश्वसाहयसेयण्डण्यस्य देशस्यामस्ययस्य स्वयंत्रस्य काम्यान्त्रस्य स्वयंत्रस्य काम्यान्त्रस्य स्वयंत्रस्य काम्यान्त्रस्य स्वयंत्रस्य स्वयंत्यस्य स्वयंत्रस्य स्वयंत्यस्य स्वयंत्रस्य स्वयंत्यस्य स्वयंत्रस्य स्वयंत्रस्य स्वयंत्रस्य स्वयंत्रस्य स्वयंत्रस्य

६ दश्मीरारेहरा मध्येत्वः हयवः । छ- वि. १, ८,



सेसु वा उप्पणो, तो कम्मद्रयकायवामी जोतारुविधिसकायवामी वा। अघ देव-गैराद्वसु जद उववण्यो तो कम्मद्रयकायवामी वेडिन्यमिस्सकायवामी वा जादे। एवं मरिन्य स्ट्रियमिस्सकायवामी वा जादे। एवं मरिन्य स्ट्रियमिस्सकायवामी वा जादे। एवं मरिन्य स्ट्रियमिस्सकायवामी वा जादे । एवं मरिन्य स्ट्रियमिस्सक्य वापादे एक्को पिन्छादिद्वी विचित्रायवामा कायवामे वा अन्छिद्धी विकित्य विचायमा क्या तस्य मणकोगा आगदे। प्रसामयं मणकोगेण विच्छचं दिद्धी विदियसम्य वापादिदो कायवामी आपको। स्ट्रियमस्य वापादिदो कायवामी अन्य उवव्यवन्त्री गाहा-

शुग-जागरावता वाचादो मरणिविदे हु चत्तारि । जागेल होति ण वरं पश्चिल्यदुगुगगरा जाँगे ॥ ३९ ॥

गुणस्यानपरिवर्तन, योगपरिवर्गन, व्याचात और मरण, वे वारों बाते बातों अर्थान् सीमों पेगोंके दोने पर, होतो हैं। किन्तु सर्वायिकेयरोंके विद्यते ही, अर्थान् सरण और

ब्याचात, तथा गुजस्थानपरियर्तन मधी होते हैं ॥ ३९॥

इस विवासित गुणस्वानमें विधानान जीव इस अविवासित गुणस्वानको सान होते हैं, या नहीं, देवा जान करके गुणस्वानों जो प्राप्त जीव भी इस विवासित गुणस्वानको सान है, अध्या नहीं, देवा विजयन करके अध्यत्तकाववाही, संव्यासंवन और प्रमासेवनोंको बार प्रकारसे वक समवदी प्रकण्ण करता चाहिए। इसी मकारसे अन्यस्वयंवनींकी सी प्रकच्या होती है, हिन्तु विरोध काल यह है कि तनके प्याचानके विना तीन अध्यरसे यह समदची प्रकच्या करता व्यदिय।

१ जा-पर्ता "क्यवस्थती " ब-पर्ता "क्यवस्थती " इति यातः ।

णरिष ? अप्पमाद-नाघादार्णं सहज्ञणनद्वाणलक्ष्मणविरोहा । सन्नागिकविद्यम ज् पस्चणा कीरदे । तं ज्ञा-एक्को सीणकमाओ मणजोगेण अन्छिरी मणजोगहा समओ अत्य वि सज्जेमी जादो । एमसमयं मणजामेग दिहा सज्जीमिकेन्छी निदिन अपना आरम् । व अन्यास अस्ता । इत्यासम् अन्यासम् । स्टा सन्यासभावः । स्ट्र विज्ञोगी वा जादो । एवं चहुसु मणजोगेषु वंचसु विज्ञोगेषु पुरस्तामण्यासम् समयपस्त्रणा कादच्या ।

जक्कस्तेण अंतोमुहत्तं['] ॥ १६२ ॥

र्वे जधा- मिच्छादिही असंजदसम्मादिही संजदार्मजदो पमवसंजदो (अप्पनः संजदो) सजीविकेवली वा अणिपदजीमे हिंदो अद्वाक्तवण अधिपदजीमें गरी। तन तप्पाओग्गुक्कस्समतोष्ठद्वनमन्छिय अणिपदनामं गदी । सासणसम्मादिही ओर्च ।। १६५ ॥

र्थका — अपमत्तसंयतके व्याचात किस दिए नहीं है ?

समाधान-क्योंकि, अवमाद और व्याचात, इन दोनोंका सहानपस्या विरोध है।

अप संयोगिकेवलीके एक समयकी प्रक्रपणा की जाती है। यह इस प्रकार रेक सीणकवायधीतरामछन्नस्य औव मनोयोगके साथ विद्यमान था। जब मनोयोगके स ्क साम्यान्यवादापानम्य व्याद्य समान्याम् साथ विश्वमान् था । जव नगान्याम् स्टब्स् समय सम्बोतिक स्टब्स् समय समान्याकः क्षण वाष्य वाष्यां क्षण विष्य के क्षणाक्षण हा गया आर एक क्षमय कार्याण इंडिगोचर हुआ। यह सर्वोगिकेवली क्रितीय समयमें यव्जवेगी हो गया। इस प्रहा कारणान् ५ दुवा । वद स्वभागकवन्त्र । छताच स्वथम चन्नवामा ६१ वथा । ६० ००० **घाराँ मनोधानाम मार वाँचा यस्त्रयागाँम वृ**षीक गुणस्यानाको एक समयसम्बन्धी प्रकर करना चाहिए। उक्त पांचों मनोयोगी तथा पांचों वचनयोगी मिध्याहरि, असंपतसम्पर्गरी, तंपवासंयव, प्रमचसंयव, अप्रमचसंयव और सयोगिकेवलीका उन्कृष्ट काल अन्तुर्ग

तेत... प्रियक्षित योगमें विग्रमान मिश्यार्श्य, असंयनमध्यार्थ्य, संयनासंज्य वाच-नाववादान् वाम्यः ।वधसासः ।अद्यादाष्ट्रः, अद्ययनस्वर्धः । कादेवनः, (सन्नस्वतंत्रतः) और सर्वातिकेवली उसः योगसङ्ख्या हालकेवसः ही पातित संगर्भ मात्र हुए। यहां पर नन्मायोग्य उन्द्रष्ट अलगुहुनकाल नक रह करके हैं

पांचों मनोपोगी और पाचों वचनयोगी मामादनग्रस्यम्हियोंका कान शेरी

र दल्दमान्त्रदेशिः। स. त्र. १, ८,

t elegretett, man-

1, w, 180. j

ा महिल्ला

न हरी होते

++++++

रे मरा

इत् १ जाजानीनं पहरच वहण्मेण एगा समझा, वयस्तेण पनिदेशियस्य असं-रें विज्ञादिभागीः, एमजीवं पहुच्च नहण्येव एमसमजी, उक्तस्येव छ मार्गलियांनीः, स्पेत्री पंचमण-पिनजोगतामणाणं औषमासणेहितो भेरामाना । एत्य वि जोग-गुणपराविन-मरण-यापादेहि समयानिरोहेण एगसमयवस्त्रमा कायन्ता ।

जहण्णेण एगसमयं' ॥ १६६ ॥

सम्मामिन्छादिही केनिचरं कालादो होति, णाणाजीवं पडुन्च उदाहरमं- सम्बद्ध जणा बहुना वा मिन्छादिही असंबद्धसमादिही संबदामंबदा पमचसंजदा या अध्यद्भवा-वृत्तिज्ञांमेसु हिदा अध्यद्भागद्भाः वर्गासम्भा अध्य वि प्रमामिन्छ चं राहा । एरासमयमण्डिकोमण सह हिंहा, विहियसम् सहते अणिदिकोम त्वनाता च्या पर्याप विषा ज्ञाम-गुणपरावति बाचाहिहि एमममयवस्वणा जिनिय बनस्था।

^{उद्यस्तेण} पिटदोनमस्त असंखेन्जिदिभागोः ॥ १६७ ॥

हरो ? अधिवदनोरोण सहिद्सम्मामिकादिहीमं पराहरस अभिन्नकारवाम पनिहो-बमस्य अमेरतेन्त्रदिमागायामस्युक्तमा । क्वोहि, माना आँवोही अवेशा अधन्वति वह समय, उन्हर्नेत वस्तीयमध्य सर्ग

क्यात्वा भागः वाधाः व्यवस्य ज्ञानकः व्यवस्य व्यवस्य प्रवासम् व्यवस्य भागः व्यवस्य प्रवासम् वास् हणत पाया भगपाम बाद पाया वजनपामा बाल्यस्नस्वरण्यासम्बद्धाः बाल्यस् वादः वादः व्यादः वादः व्यादः वादः व्यादः वादः स्वत्रभा साक्षात्रमः काळच काद कर कर कर कर कर का भागस्तव्यक्त स्वत्यक्ष स्वत्यक्ष स्वत्यक्ष स्वत्यक्ष स्वत्यक्ष यतम्, सरणः भीर स्वायामके द्वारा स्वायामके स्वित्रोधके एक समयकी स्वत्यका स्वत्यका स्वत्यक्ष वांची मनीयोगी और वांची वचनयोगी सम्योगस्वादि और कितन कान तक होते हूँ है नाना जीवीकी अवेहा एक समय होने हूँ ॥ १६६ ॥

प ६ । चामा आचारत अपदा एफ समय हान ६ ॥ ६९६ ॥ उदाहरण- विविधित समोवीम भवना बचमरीमामै शिवा साम भाड जन, सर्वा वशवरणाः व्यवस्थाः नगाचार ज्ञाणा वजनवाणा स्वयः ज्ञान व्यवहार वह अवः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यव बहुतसे विद्यादिः, असंदेनस्ययदिः, संयत्रासंयतः अथया अनसस्यतः जीवः इसः विद्रास्त बहुत्तल (सम्याहार), जातकाराव्याम्, राचनाराच्याः ज्याचा ज्याचा ज्याच उत्त स्वरास्त्र प्राप्ते हाज्मे यह समय् अविशिष्ट हेंह जाते यह सम्यासिक्याणका साम ह्या और स्वरास्त्र

धारक वाजन का समय व्यवस्था रह मान का वाजना स्थानक स्थान दूर बार वस् समयमात्र विद्यक्षित द्यान साथ रहिमोलर हुए। हिमोद समयन सर्भाव साथ वस्ता वस्त्र रामध्याम विवासना भागमः भाग भागमा अभाग अभाग अभाग भागमा भा विषया थेत । या भवार जन्म । भवार वार भागवानाम । व्याचात, इत तीतीकी भवारा वह समयकी सहयवा चित्रत वहत करता बाहिर तम्यतिमध्याराष्ट्र जीवोका उन्बृष्ट कान वस्योपम् हे अवस्यानहे बाग है ॥१६७॥

प्रमास कराता कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्य क्यों कि विवास विवास स्टिन सम्मास्त्र सामग्री कार्योक कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य का यापमः असंस्वानये भाग लक्ष्य बाल तक पादा जन हैं। रे मार्थिकारामा अञ्चलका अस्वत्रका कर्या । सः । सः । द अवदत् पृत्तीपदावद्दादात् । स वि. १, ०

एगजीवं पडच जहण्णेण एगसमयं ॥ १६८ ॥

प्रय वि मरणेण विषा गुण-जागपरावत्ति-वाधादे अस्मिद्ग एगसमयरस्वर जाणिय वचनवाः।

उक्कस्सेण अंतोमुहृत्तं ॥ १६९ ॥

उदाहरण-एको सम्मामिच्छादिट्टी अणिपरजोगे हिरो अपिरजोगं पिडवर्यो तस्य तप्याओग्गकसमनतोष्ट्रचमच्छिय अणिपरजोगं गरी । सदमेतोष्ट्रचनं ।

त्य चप्पात्रान्यकस्तमताब्रहुचमाच्छय अवाप्यदज्ञानं गरा । सद्दमंताब्रहुचं । चद्रण्हसुवसमा चद्रण्हं स्वयगा केवचिरं कालादो होति, णाणाजीं

पहुच जहण्णेण एगसमयं ॥ १७० ॥

उवसामगाणं वाचादेण विणा जोम-गुणपरावति-मरणेहि णाणाजीवे अस्तिर्ग एगसमयपरूवणा कादच्या । खबमाणं मरण-नाचादेहि विजा जोग-गुणपरावतीओ हो चैत्र अस्तिरण एगसमयपरूवणा परुवेदच्या ।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त सम्यग्निथ्यादृष्टि जीवाँका जधन्य काल एक स्वर्ग है।। १६८।।

यहाँ पर भी मरणके विना गुणस्थानपरावर्तन, योगपरावर्तन और ध्यामात, ह^त तीनोंका आश्रय करके एक समयकी प्रकरणा जान करके कहना चाहिए।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त सम्यग्निक्याहि जीवींका उस्कृष्ट काल अन्तर्धुहर्व

है।। १६९।।

उदाहरण—अविविक्षत योगमें विद्यमान कोई एक सम्यागम्प्यादृष्टि जीव विविक्षित योगको प्राप्त हुमा । यहां पर अपने योगके प्राप्ताग्य उत्हृष्ट अन्तर्गृहुर्त काल तक रह करहे अविविक्षत योगको चला गया । इस प्रकारसे एक अन्तर्गृहुर्त काल प्राप्त हो गया ।

पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी चारों उपशामक और सपक किर्वे

काल तक होते हैं है नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय होते हैं ॥ १७० ॥ उपरामक जीवोंके व्याचातके विना योगपरिवर्तन, गुणस्थानपरिवर्तन बीर मरणे हारा माना जीवोंका व्याच्यातके विना योगपरिवर्तन का करता चाहिए। स्वक जीवोंकी हारा माना जीवोंका व्याच्या करके एक समयकी प्रकरणा करना चाहिए। स्वक जीवोंकी मारण करता चाहिए। स्वक जीवोंकी का योगपरिवर्तन और गुणस्थानपरिवर्तन, हन दोनोंका मार्थन है कर ही एक समयकी प्रकर्णण कहना चाहिए।

१ एक जीवं त्रति जवन्यंनेकः समयः । स, सि. १, ८.

६ बल्बरेनान्तप्रदेशीः । सः निः १, ८,

६ चतुर्गातुर बमकावी सरकार्या च नावाजीशरीलया पुरुजीवायेखवा च जवन्येनेकः समयः। स. हि. १००

उक्स्सेण अंतो<u>मुह</u>त्तं['] ॥ १७१ ॥

तं ज्ञा-चर्चारि उपसामगा चचारि खत्रमा च अणप्पिदज्ञोगे द्विदा अद्वानसः एण अप्पिदज्ञोगे गदा । तत्य अंतोष्ठहुचमन्छिप पुणो ति अणप्पिदज्ञोगं पढिवण्णा । रुद्रमंतिष्ठकर्ष ।

प्राजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ १७२ ॥

प्रथ एरासमयपुरूषणा खबगुवसामगाणं दोहि वीहि प्यारेहि जाणिय वत्तन्ता ।

उक्सोण अंतोमुहुत्तं ॥ १७३ ॥

पत्य अंतोगुहुचवरूवणा आणिय वचन्या । पत्य प्रमामपविषण्पप्रवण्हं माहा-

एकप्राप्त छ सत्त य एक्कारस दस य जब य अहे या । यज पंच पंच विधित य दु दु दु दु एगा य समयगणा ॥ ४१ ॥

११, ६, ७, ११, १०, ९, ८, ७, ५, ५, ६, ३, ३, ३, ३, ३, ३,

कायजोगीसु मिन्छादिही केविचरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुच्च सव्वद्वां ॥ १७२ ॥

उक्त जीगोंका उरकृष्ट काल अन्तर्बृहुर्त है ॥ १७**१** ॥

यह एल प्रकार है - भविवश्तित बीगों स्थित धारों उपशामक और श्रवह औल बस थैराके कालस्योत विवश्तित बीगको प्रात हुय। वही वर अस्तरीहुन कह रह करके पुनरिव अविवश्तित दोगको प्रात हो गया। इस प्रकारते अन्तरीहुन काल प्राप्त हो गया।

एक जीवकी अवेक्षा उक्त जीवोंका जुधन्य काल एक समय है ॥ १७२ ॥

यहां पर यक सहयकी प्रकारण श्रवकोंके योगपरायर्तन और गुज्यन्यातपावर्तनकी भेपिसा वो अकारते और उपशामकोंकी स्थायातके थिना रोप सीन प्रकारीते जान करते कहना वाहिए।

उत्तः जीवोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्भृहर्त है ॥ १७३ ॥

यहाँ भारतमुहर्तकी महत्त्वा जान करके बहुना बाहिए। यहाँ पर एक शमय-सारतमी विकारों के प्रकाल करने के लिए यह गाया है—

मिरवारटवादि गुजरवानीमें कामाः ग्वारह, छह, साल, श्वारह, शरा, शी, आह, पांच, पांच, पांच, सील, सी. ही, ही, ही और पक्त, सनने एक समवसम्बन्धी महचलाहे. विकास होते हैं। ही, है, ७, १९, ९०, ५, ८, ५०, ५, ३, २, २, ३, ३, १ ह ४० ही

कापयोगियों में मिथ्यारीट जीव कितने काल तक होते हैं। नाजा बीबोही जरेशा सर्वकाल होते हैं। १७४॥

१ सक्त्रेंगान्तईहुर्देः ! सः वि. १, ४.

६ काप्योगिषु विन्दाष्टरेगीनामीकानेकना वर्षः काळः इ ख- कि. ६, ८.

इदो १ सन्बद्धासु कायजोागिमिच्छादिद्वीणं विरहामात्रा i एगजीवं पहुच जहण्णेण एगसमयं ॥ १७५ ॥

रें वया- एगो सासणसम्मादिही सम्मामिन्छादिही असंबदसम्मादिही संबद्ध संबदो पमचसंबदो वा कायबोगदाए अच्छिदो । विस्त एगसम्यावसेष्ठे निष्छादिर्ग नादो । कायजोषेण एगसमयं मिण्छतं दिहं । विदियसमण् अष्णजोगं गदो । अपना सन विज्ञोगेसु अध्यिद्स मिच्छादिहिस्स वैसिमद्भावसम् कापजामा आगरो । एगमर्थ कापजोगेण सह मिन्छचं दिहुं । विदियमंग्रह सम्मामिन्छचं या असंजर्भन सह सम्मर्थ वा संत्रमासंत्रमं अप्यमचमारेण संत्रमं वा पडिवण्गा। सद्धा एगममत्रो। एत्य मरानापा देहि एगसमञ्जा' वास्य । इदो ? युदे नाचाहिदे नि कायजोगं मीन्व अव्याजोगामता।

ज्नक्तसोण अणंतकालमसंखेचा पाग्गलपरियर्ट्ट ॥ १७६॥ वें तथा—एमों मिन्छाहिङ्की मण-बचित्रोंगेस अन्छिहो अदाखएन कावत्रीमी

क्योंकि, सभी कालोंमें कायवागी मिष्यादृष्टि जीयोंके विग्हका ग्रमण है। एक जीवकी अवेद्या कावयोगी मिध्यादृष्टि जीवीका जवन्य काल एक सन् £ 11 204 11

हीं — यह सामादनसम्प्राहारे, वायवा सम्प्राध्मरपाहारे, भएवा वर्गवनसम्प्राहारे करान कर राजादनसम्बद्धाः, घयना सम्बद्धाःस, भयना मान्यवः सपना ग्रेयनाम्बन्न, सपना प्रमुखान्तः जीव कायवेगाः काटमे विच्यान या । उस सेन्स हारमें बहु समय मयरीष वहाँने पर यह मिध्याहित ही गया । तब कावरीणके साथ वह विषय मिण्याच रहिमाय हुमा पुनः हिभीय समयम यह माथ धीमका घटा पान माथ विषय मिण्याच रहिमायह हुमा पुनः हिभीय समयम यह माथ धीमका घटा पान माथण सर्वाचीम और व्यवचोगर्ने विद्यमान मिट्यार्टी श्रीयके उन योगीके बाउस्यम स्थान नवा। तह यह समय काववागंद्र साथ विष्याण्य हरियायर हुमा। दुनः दिनेव सनगरे वहराति त्याण्डी, अपया सन्यमेड साथ मध्याण्ड हांदगावर हुमा। युनः हिनाव पर्या विश्वात् कार्यक्षः अथवा कार्यक्षः साथ सहयव्यव्यः, धराया स्वयान्यक्षः, स्वत्यक्षः वृद्धः साथ संवत्यः। प्रति हुना । इस द्वश्य वृद्धः साथ स्वयान्यक्षः, जनव जनव है जान जनका आन हुआ। इस प्रश्लाह स्वस्त स्टब्स्ट ही गया। पर्वा सरक अरबा श्राधानको भोका वह समय नहीं है, क्योंहि, गरन होने पर भाषा शास्त्र रिंव पर भी बाववागका छात्रुक्त काल वागका जैसे व है।

यह बीनहीं अपना कायवामी मिश्याहीष्ट्र नीनोंका उत्हर काल अनलकारालक बर्गमयात् बृहत्यसम्बद्धतः है ॥ १०६ ॥

े हेट के कर का १८० ।। इ.स.च्या माध्यमा अवस्थामार्थे (वयसम्ब यक् सिश्याकृष्टि अस्य, इस देसके tog de production day of the

⁴ cete and c 4 detail 1-62 2500 4 fd. 5 c

जादे।, सब्युक्सममंत्रोमुहुचमध्छिद्ग प्रदेदिएसु उप्पष्णो । तत्य अर्णवकाटम्प्रसेदज्ञ-पोगगलपरियट्टं कापजोरोण स्व परियद्विद्ग आयल्यिपए असंरोजदिमागमचपोगगठ-परियद्वेद्वप्पष्णेसु तसेसु आरंत्य सब्बुक्ससमंत्रोमुहुचमस्थिय विचजोगी बादो । लद्वो कायजोगास्य उकस्मकाले ।

सासणसम्मादिष्टिपहुडि जान सजोगिकेविल ति मणजोगि-भंगो ॥ १७७ ॥

एदं सुर्व सुगमं, मणजोगे णिरुद्वे पर्वणेण पर्टविद्वादा । णवरि मरण-वापादा सम्मामिच्छादिहि-असंजदसम्मादिद्वीणं णिर्व । सावणसम्मादिहि-संजदार्धजद्-पमचर्धजदार्णं वापादेण यगसमजो गरिय, भरणेण पुण जिर्व ।

ओरालियकायजोगीसु मिच्छादिट्टी केनिनरं कालादो होंति, णाणाजीवं पडुच्च सन्बद्धा ॥ १७८ ॥

हुदो १ जोराजियकायजोगिमिच्छादिहिसंताणस्य सम्बद्धामु बोच्छेदामारा ।

कालहरच दो जानेसे काययोगी हो गया। यही यर सर्वोह्न्य आत्मेंहुर्तकाल नक रह बरके परेनित्रवीमें उत्तरप्त हुमा। यहाँ यर अन्तरकालकाल आवेष्यात पुरुक्तरिवर्गन कायरोगके साय परिवर्गन करके आयरोंके असंस्वातमें भ्रागमात्र युरूवरिवर्गनोंके रोक रहने बर सक्तरीयोंने माकर और पर्वोहरू आत्मेंहुर्त काल रह करके वस्त्रवीगी हो गया। हस मकारसे काययोगका बरहुर्द्व काल मात हुमा।

साम्रादनसम्पर्धाः श्रुणस्थानसे छेत्रर सयोगिकेवटी गुणस्थान तक बाद-योगियोंका काल मनोयोगियोंके कालके समान है ॥ १७७ ॥

यह प्य गुगम है, वर्षोक्षि, मनोयोगचे तिरुद्ध करनेवर वर्ष्ट्रे अपेचरे (विक्तारिक) प्रकृष क्रिया जा युवा है । विरोण बात वह है कि काययोगी सम्बाद्धियारिक केरिक क्षेत्रक स्तयप्रदिश्चिर मरण भीर व्यापात नहीं होते हैं। तथा बावयोगी सासाइनसम्पर्हाह, संवतासंवत भीर ममसर्वयोक्षेत्र व्यापातको क्षेत्रत यक समय नहीं होता है, विश्व सर्वादं क्षेत्रत यक समय होता है।

जीदारिकताययोगियोंमें मिथ्यादिष्ट बीब किठने बाल तक होते हैं। जाया बीबोकी अपेशा सर्वकाल होते हैं।। १७८ ।।

क्योंकि, भौदारिककापयाणी विष्याद्धि जीवीकी परम्पाके सभी काटीवें दिक्छे-दका भमाव दे।

एगजीवं पडुच जहण्णेण एगसमयं ॥ १७९ ॥

. एत्य मरण-गुण-जीवपरावत्तीहि एगसमयो परुवेदच्यो । वाचादेण एगसमत्री प रुच्यदि, तस्म कायजीगाविणामावितातः ।

उक्कस्सेण वावीसं वाससहस्साणि देस्णाणि ॥ १८० ॥ वं जवा-एगे। विरिक्सो मणुस्मो देवी वा वाबीसमहस्सवागाउद्विदेष्ट एर्गिण्ड

उत्तर प्राचित्रका भश्रसा द्वा वा वावाससहस्त्रवासाउद्वाद्यसु १६१५ उत्तरणो । सञ्तरहण्णेण अंतास्वरूचकालेण पत्रज्ञचि गदा । ओरालियअपव्यक्तकालेण वासीसवाससहस्साणि ओरालियकायज्ञोगेण अध्यय अण्यज्ञोगे गदो । एवं तेसूणवानिक वासिसहस्साणि जादाणि। अधवा देवो ण उप्यादेदली, तस्स जहण्युवप्रवक्तकालाश्वरंगी

सासणसम्मादिद्विष्पहुडि जाव सजोगिकेविल ति मणजोगि भेगो ॥ १८१ ॥

एदस्स सुचस्स अत्यो सुगमो, पुन्ने परुविद्वादी । णवरि वापादेणं एत्य एक समयपैरुवेणा परुवेदन्या ।

एक जीवकी अपेक्षा औदारिककायपोधी मिध्यादृष्टियोंका जधन्य कार ए समय है। १७९।।

यहां पर मरण, गुणस्थानपरावर्तन और योगपरावर्तनकी अपेक्षा पक समर्पम मरुपण करनी चाहिए। किन्तु यहां पर व्याधातकी अपेक्षा एक समय नहीं पापा जाता है, क्योंकि, यह काययोगका अधिनाआधी है।

उक्त वीर्वोक्ता उत्क्रष्ट काल कुछ कम बाईस हजार वर्ष है ॥ १८० ॥

कींसे— यक तिर्यंत्र, अनुष्य, अषया देव, बाहंस हजार यर्पकी आयुहिसितयाने वर्षे निर्देशोंसे उत्पन्न हुआ। सर्वज्ञयन्य अन्तर्मुहतेकाळसे पर्यासप्तेकी बात हुआ। दुनः एवं बीहारिकरारीरके अपर्यासकाळसे कम बाहंस हजार वर्षे औहारिककायगाने साम हिस्से हुआ अपर्यासकायोगिक साम हिस्से हुआ अपर्यास करात पर्व हो जाते हैं। सरके दुनः अन्य पोलको प्राप्त हुआ। इस प्रकारसे कुछ कम बाहंस हजार पर्व हो जाते हैं। सप्ता पर्दो पर देव नहीं उत्पन्न कराता चाहिय, क्यांकि, देवोंसे बाकर एकेटिन्यांने बना होनेयाळे जीयके ज्ञयन्य अपर्यासकाळ नहीं पाया जाता है।

सासादनसम्पर्ग्हिले लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक श्रीदारिककायपोगिर्पोग काल मनोपोगिर्पोके कालके समान है ॥ १८१ ॥

इस स्वका वर्ष सुनम है, क्योंकि, पूर्वमें कहा जा कुका है। विदेश बात वह है। वहां पर व्यापावटी अपेका एक समयकी प्रकाश बता वाहिए। ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिद्वी केनिवरं कालादो हॉति, णाणाजीवं पडुच्च सन्बद्धा ॥ १८२ ॥

इरो १ जोतालियमिस्सकायजोगीस भिन्छादिहिसंवाणयोन्छेदसस सम्बद्धास जमावा। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसम्बज्धं ॥१८२३॥ तं जहा- एगो प्रदेशो सहस्रवाजकारस्य ज्योजोगीते विवास सम्बद्धाः

तं जहा- एगो एरंदिओ सहमवाउकाइएस अघोलोगीत हिम्यु मुदामवगाइणाइ-हिदिएस तिष्यि विग्गहे काऊण उपवण्णो। तत्य तिसमकलपुरामवगाइणमपन्यचा होद्ण जीविय नदो, विग्गहे काद्ण कम्महयकायजोगी बादो। एवं तिसमकलपुरामव-गगहणमीरातियमिससाइण्यकालो जादो।

उक्तस्तेण अंतीसुहुत्तं ॥ १८४ ॥ र्षं जधा- अपज्ञक्षण्यः उपपित्रयः संग्रेन्जाणि भरम्गहमाणि तत्त्यः परिपद्वियः युगो पञ्जक्ष्यः उपपित्रयः औसाठियकापजोगी जादे। पदाओं संग्रेन्जभवस्माहमहाज्ञो मिलिदाओं पि स्वृत्त्वसर्तोः चेत्र होति।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंने मिष्यादृष्टि जीय कितने काल तक होते हैं ! नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ १८२ ॥ वर्षोंक, भौदारिकमिश्रकाययोगियोंने मिष्यादृष्टियोंकी वरस्वरावेः विष्टेष्ट्य सर्व-

काळोंमें मधाव है।

पक जीवशी अपेक्षा औदारिकमिश्रहाययोगी मिध्यादृष्टि श्रीबाँका अपन्य कात

तीन समय कम शुद्रमयप्रहणप्रमाण है ॥ १८२ ॥ जैले— पकेन्द्रिय जीव कांग्रेलोको कातमें स्थित और शुद्रमयप्रहण्यसम्ब बायु-श्चितियाले सुहमयायुकारिकामें तीन विमद करके जल्ला हुआ। बढ़ा वर तीन समय कम शुद्रमयप्रदक्षकात तह स्वत्यवर्षात हो, जीवित वह कर मदा। युनः विमद करके कार्नेय-काययोगी हो गया। इस प्रकारले तीन समय कम शुद्रमयप्रहण्यसाय और्माविम्मस्यय-योगका जम्म्य काल सिज हुआ।

उत्त जीवोंका उत्रष्ट काल अन्तर्महर्त है ॥ १८४॥

र्जिले— कोई यह जीव साम्यवर्धानाओं उत्पन्न होकर संकान सदसर्जनातः इतमें परिवर्तन करके दुनः पर्याजवामें राज्य रोकर थीजारिककरनोती हो यदा। इन सर संक्षात सर्वोद्दे प्रदान करनेका बाल मिल करके भी गुप्रविदे सम्बर्धन ही रहना दें, समिक वहीं होता है। सासणसम्मादिट्टी केविवरं कालादो हॉति, णाणाजीवं पर्न जहण्णेण एमसमयं ॥ १८५ ॥

तं जधा- सत्तद्व जणा बहुआ वा सामणा सगद्वाण एगममश्री अहिय ति अंग लियमिस्सकायजीपिणी जादा । एगसमयमञ्जिद्ण विदियममण् निच्छनं गदा। द्वी शोरालियमिस्सेण सामणाणमेगसमञ्जी।

उक्कस्सेण प्रतिदोवगस्स असंखेडजदिभागो ॥ १८६ ॥

तं तथार सचह जणा बहुआ वा सासणा ओराहियमिस्सकायजोगिणो बाहा ! सासणगुणेण अतेश्वहुचमच्छिय ते भिच्छतं गदा । तस्समण् चेय अणे सासणा बाहा डियमिस्सकायजोगिणो जादा । एवमेक-दो-तिल्ण आदि काद्ण जाय उक्समेण पश्चि चमस्स असंखेबजदिमागमेचवारं सासणा ओराहियमिस्सकायजोगं पडिवज्जविद्खा। ले णियमा अंतरं होदि । एवमेस कालो मेलाविदो पलिदोवमस्स असंखेबजदिमागो होदि।

एगजीवं पहुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ १८७ ॥

औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्पग्दिए जीव कितने काल तक होते हैं। . नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय होते हैं।। १८५॥

जैसे—सात बाड जन, बधवा यहतसे सासादनसम्यदिष्ठ जीव, अपने योगहे हार्य एक समय बयदोप रहते पर औदारिकमिश्रकायवोगी हो गये। उसमें एक समय रह हरी द्वितीय समयमें मिष्यायको प्राप्त हुए । इस प्रकारसे मौदारिकमिश्रकाययोगहे हार सासादनसम्यग्टियोका एक समय छन्य हुआ।

उक्त जीवींका उत्कृष्ट काल परयोपमके असंख्यातवे भागप्रमाण है ॥ १८६ ॥

शैले— सात आढ अन, अथवा बहुतसे सासादमस्वग्रहि और भौरारिकियार योगी हुए। सासादमगुणस्वानके साथ अन्तगृहते काल रह करके पीछे वे मिष्यात्वरे ही हुए। उसी समयमें ही अन्य दूसरे सासादनसम्बन्धि और भौरारिकिमम्बन्धि हुए। उसी समयमें ही अन्य दूसरे सासादनसम्बन्धि और भौरारिकिमम्बन्धि हुए। इस मकारसे एक, दो, तीनको आदि करके उत्कर्षसे पत्योपमेक असंस्थात्वर्षे मानती यार सासादनसम्बन्धि और भौरारिकिमम्बन्धि सरके उत्कर्षे पत्योपमेक असंस्थात्वर्षे मानती यार सासादनसम्बन्धि और भौरारिकिमम्बन्धि सरके प्रकारियास सम्बन्धि साम कराता है। इस प्रकारसे यह सब मिछाया गया काल पत्योपमेक अर्थ स्थात्वर्षे माममान होता है।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जयन्य कारु एक समय है ॥ १८७ ॥

र्त जपा- एको सासणो सनदाए एगसमञ्जो अतिय चि औराठिपमिस्सकापजोगी जादो । विदियसमए मिन्छर्त गदो । रुद्धो एगसमञ्जो ।

उक्करसेण छ आविलयाओ समऊणाओ ॥ १८८ ॥ .

तं ज्ञा- देशे वा ण्रास्त्रों वा उत्तमसम्मादिही उत्तमसम्मवदाए छ आशित-यात्रों जित्य वि सासणं गदे। । प्रासमयमण्डिय कार्ल करिय विशिक्ष-मणुस्तेमु उज्ज-गदीए ज्वविज्ञय ओरालिपमिससकायजोगी जादो। समजण-छ-आविष्यात्री अस्टिय किरुट्तं गरे।

असंजदसम्मादिद्री केवचिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पडुन्च जहणोण अंतोम्रहत्तं ॥ १८९ ॥

तं ज्ञचा- सच्छ जणा बहुगा या असंजदसम्मादिहिणो णरहया जोरालियभिस्स-कायजोगिणो जादा । सम्बल्हे पञ्जीच गदा, यहुसागरीवमाणि धुन्तं दुक्रोण सह दिहचारो ।

उक्कस्सैण अंतोग्रहत्तं ॥ १९० ॥

उक्त जीवोंका उरछए काल एक समय कम छह आवलीप्रमाण है।। १८८।।

अँते — कोई यक देव अथवा मारकी वच्छामसम्बन्धक श्रीव, उपरामसम्बन्धक कालमें छह भावती कालके होत रहते पर साध्यत्वमुणक्यानको प्राप्त हुमा। बहां पर यक समय दह करके मरण कर विवेध और मनुष्योंमें सञ्जयतिस करणम होकर औरारिकांम्रान कावयोगी हो गया। बढां पर यक समय कम छह भावती तक रह करके मिन्यानको मात हुमा।

श्रीदारिकमिश्रकाययोगी असंगतसम्यग्दि जीव किनने काल तक होते हैं। माना क्षीवीकी श्रेषम अपन्यसे अन्तर्भूहर्त काल तक होते हैं॥ १८९॥

क्षेते-- सात बाठ जन, अथवा बहुतसे असंवतसम्बन्धि नारकी क्षेत्र भीतारक-तिभकाययोगी हुद । भीर बहुतसे सागरायम बात तक पहले दुःखों के साथ परे हुए होनेसे सर्वलयु बालसे पर्याप्तियोंकी बात हुए ।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्गृहुर्त है ॥ १९० ॥

कैसे— यक सासाइनसम्बन्हिं जीव व्यन्ते कालमैं यक समय व्यक्तिय रहने पर भीदारिकमिश्रकाययोगी हो गया भीर द्वितीय समयमैं विश्यात्वको मात हुमा। इस प्रकार यह समय प्राप्त हो गया।

[4, 4, 1

रं जघा- देव-भारत्या मणुस्सा सचहु जणा बहुआ वा सम्मारिहिणो जेतीः मिस्सकायजोगिनो जादा । ते पञ्जीं गदा । तस्समए चेव अण्णे असंबदसम्मारेतं अतातिज्यमिस्सकायजोगिणो जादा । एवमेक-दो-तिष्णि जातुकस्सेण संखेजकाताः । एदाहि संसेजजस्तागाहि एगमपज्जचदं गुणिदे एगमुकुत्तस्य अता चेव जेण होति, अनेन्द्रहृचमिदि चुचं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुतं ॥ १९१ ॥

तं जपा-एको सम्मादिही वातीस सागरीयमाणि दुवसेकस्तो होत्व जीति
छट्टीरो उन्तद्विच मणुमेसु उपग्यो । विम्मद्दमदीए तस्त सम्मत्तमाहणेण उपशिक्षक
फेन्मन्तस्म ओसानियमामकम्मोदएण सुर्थय-सुरत-सुरत्य-सुर्यामयरमाणुगेग्यन्य।
कामन्द्रिनं, नस्म जोगवद्वचर्दस्यादो । एदस्स जहग्निया औसानियमिस्महायशेष
कामन्द्रिनं, नस्म जोगवद्वचर्दस्यादो । एदस्स जहग्निया औसानियमिस्महायशेष
कामन्द्रिनं

उनकसीण अंतोमुहुतं ॥ १९२ ॥

हैंग — देव, नारची, अथया अनुष्य सात आठ अत, अथया बहुतीः तानम हैं इ. में इरिविधाकाययोगी हुए। वे तब पर्योगयनेको आग हुए। वसी सावमें हैं। इ अर्थ दन्मकाययोगी होद भी इरिविधाकाययोगी हुए। इस प्रकार यह, दो, तीत हवा इ.स.चे इन्द्र अंक्शनयार तक अव्य अव्य कर्मयनसम्बद्धि औद निभकाययोगी देव वे इस बंदिशन क्षात्रवामीने दक कार्यात्मकालको गुणित करने यर वह तह बात कृषि व इस्तर अव्यत्त ही होता है, इस्तिय ब्यावायने अव्यत्निको कार्य कहा है।

गुष्ट बीहरी अविया उक्त जीवोंका जयन्य काल अन्तर्भृहते हैं ॥ १९१ ॥

क्क केरकी करेवा केरहारकी श्रीकामधारायी मी अर्थयनवृत्रवादियों हा प्राप्त करेवा करेवा केरहार के

ψi

đ

पदं कस्स होदि १ सम्बद्धसिद्धिवमाणवासियदेवस्स तेवसि सागरोवमाणि सुद्द-लालियस्स पसुद्धदुक्तस्स माणुसमन्ये गृह-सुवंत-पिच-स्रासिय-वस-सँम-लोदि-सुक्कामाद्धिदे अद्दुनगेथे दूरेले दुक्त्यणे दुष्पारे पमारक्केदोष्ट उपप्यस्स, तत्य मेदो आगो होदि वि आहरियप्यसारहुपदेसा। मेद्रजोगेण योव पोरम्के नेण्डलस्स ओरालियमिसस्द्वा दीहा होदि चि उसे होदि। अथवा जोगो यस्य यहल्लो चेव होद्द, लोगस्सेण बद्दमा पोयाला आराच्छेत, तो वि एदस्स दीहा अपन्त्रचढ्ढा होदि, वितिवाय द्वियस्स लर्डु पन्नाचि-समाणेणे असामरियालो।

सजोगिकेवली केविवरं काळादो होंति, णाणाजीवं पहुच्च जहः ष्णेण एगसमयं ॥ १९३ ॥

एसी एमसमजी परस होदि? सचहुजणार्ण दंढादो कवाढं गेत्न तस्य एमसमय-मच्छिप रुजर्ग गदार्ण, रुजगादो कवाढं गेत्न एमसमयमध्छिप दंढं गदकेवछीप सा ।

द्यंदा- यह उत्हर काल किस आंवके होता है है

समाधान—सेतील सागरीजमकाल तक सुखरी लालित पालित दूप तथा दुःखीन रहित सर्पार्धानियानियानाशासी देवके विद्या, मुन्त, कांतरी, वित्त, करिस (क्या) वर्षी, मार्गात्वासक होड़ दुक्क भीर सामरे क्यात, कांत्रहर्गिकत, कुल्सितरस्त, दुर्वव और दुङ्क रण्डाविके स्वार के क्षांद्र दुक्क भीर सामरे क्यात, कांत्रहर्गिकत, कुल्सितरस्त, दुर्वव और दुङ्क रण्डाविके स्वार के कुल्से तस्तर मुक्त के नामें के उत्तर हुक की कि के स्वार के कुल्से तस्तर मुक्त के नामें के उत्तर हुक्क के स्वार के स्वर
औदारिकामध्यकाययोगी सयोगिकेवली कितने काल वक दीते हैं है नाना शेशेसी अपेशा जपन्यसे एक समय दीते हैं 11 १९३ ॥

द्यका-चह पक समय किसके होता है ?

समापान — वंडसमुक्ताससे कपाटसमुक्तासको मात्र होषण और बहाँ पक समय रह कर प्रतरसमुद्रातरो मात्र हुए सात्र मात्र केयाहियोंके यह कक समय होला है। अपन्त, रुपकासमुद्रातसे क्याटसमुक्तासके मात्र होला हो। यक समय रह वरके वंडसमुद्रानके प्राप्त होनेवाले केयाहियोंके यह यक समय होता है।

१ का पड़ी " बस्बारि बयाची " इति वाहः ह

र्षं चघा- मिच्छादिहि-असंजदमम्मादिहिणो देवा शेरहण वा मण्यपिकेले द्विदा कापजोगिणो जादा । सञ्जुककस्समतीग्रहुचमच्छिप अष्णजोगिणो जादा । स्व मंतीग्रहुचं ।

सासणसम्मादिद्वी ओघं ॥ १९९ ॥

पाणाजीतं पद्वच्य जहप्योण एगसमञ्जो, उक्तस्सेण पितदोत्रमस्स अमंगे जिसे एगजीतं पद्वच्य जहप्योण प्रासमञ्जो, उक्तस्सेण छ आवित्यात्री, इत्तेदेहि जोपनानक्ये मेरामता ।

सम्मामिच्छादिद्वीणं मणजोगिभंगो ॥ २०० ॥

पानावीरं पद्म जहण्येण एयसमञ्जा, उक्करसेण पितदानस्य असेने बिक्क एमवीरं पद्म जहण्येण एयो। समञ्जा, उक्करसेण अतीसुनुत्तमिष्णण मणश्रीविक्क मिन्दारिद्वादिना वेअञ्चयकायज्ञीमितमामिन्द्वादिद्वीणं विसंसामाता ।

वेउन्त्रियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिङ्की असंजदसम्मादिङ्की 👯 विरं काटादो होति, णाणाजीवं पदुच्च जहण्णेण अंतीसुहत्तं ॥२०१॥

हैं ने — मने।योग या चयनयोगमें स्थित विषयादृष्टि शीर वार्गप्रताशयादृष्ट भी देव भवार जारकी श्रीय विजिधित वाययोगी तृष्य भीर उनमें समीतिहरू धारतीं। हैं इस सब्दे अन्य योगयादे हो गये। इस प्रवास्ति उत्तरुत कारकण धारतीं प्रता हो गया।

वैश्वितकारपोधी मामादनवरपाष्ट्रि जीवींहा वाल आपके मामान है। १९६९ स्वा की तीची भवशा अध्याने एक सामय, अव्यवेश पर्योगमान भविष्यात्रो सन् स्था कह श्रीवर्षी भविशा अध्याने एक सामय और अव्यविश छन् भाषणी, इन हाने स्वा कह श्रीवर्षी भविशा अध्याने एक सामय और अव्यविश छन् भाषणी, इन हाने स्वा व्यक्तिन सन्मादनमूक्तवार्वक सामने कोई सेह नहीं है।

देशियददायपीयी सम्याग्यादि श्रीवीहा काल सनीयीतियाँह मन

है । २०० ।। जाना जीवांकी मोशा क्रयन्य काल यक समय, मधा चल्हर काल वासायम्ब ^{जान}

करानक प्राप्त है। वह प्रेमिन करात पर निवास नगा उत्तर कार्य परा । करानक प्राप्त है। वह प्रेमिन करात प्राप्त कर समय और प्रकारित प्राप्त है। प्रकारक प्रकार के कराजिक कराति है। विवास माने कि प्राप्त कराजिक कराजिक कर्म के वे फिल्मिन करी है।

रिवरिक्यानकथानवेगी: बी.सेवी विश्वासीत और अर्थवन्तरवासीर और सिव कार्त इक देति हैं है नावा की रोबी अवेचा जानवेस अन्तवेत्रते काल तक की हैं सिवरी एरच तार मिन्डादिहिस्स बहण्यकालो गुषदे— सचह बागा बहुआ वा दम्बर्सिनियो उबिरिमगेवज्ञेस उववण्या सव्वलहुमेवीमुहुचेण पज्जींच गदा। संपिद्द सम्मादिहीणं जुपदे— संस्वेज्जा संजदा' सव्यहदेषेस दो विमादं काद्रण पज्जींच गदा। क्रिमहं दो विमादं करा-विदा १ बहुवीग्यालम्यहणहं । ते वि क्षिमहं १ बीवकालेण पज्जीसमाणहं । विन्छादिही दो विमादे क्रिण्य कराविदो १ ण, तत्य वि पहिसेहामाथा ।

उकस्सेण पलिदोवमस्स असंस्रेज्जदिभागो ॥ २०२ ॥

सन्द्र जणा उद्यक्तस्थण अक्षेतेज्ञतिदिवेता वा मिच्छादिद्विणा देव-भारस्प्य उप-विजय वेउन्यिमस्सकायओगिणो जादा, अंशोमुद्रचेण वज्जति गदा। तस्प्रमय चेव अण्णे मिच्छादिद्विणो वेउन्वियमस्सकायओगिणो जादा। एक्सेक्क-दी-शिन्ण उद्यक्तसेन पिलदेश्वमस्य असंस्वज्जदिमागमेचाओ सलागाओं स्टब्मीत । एदादि वेउन्वियमस्सक्र

यहां पर पहले भिष्पादिका जयन्य काल वहते हैं— सान माड जन, व्यया बहुतसे द्रायांक्षेगी और उपरित्त प्रीयेवशीमें उत्तव हुए और सर्वेल्यु स्थलभूतिकाससे पर्याप्तकरनेकी मात हुए। वह राज्याविका जयन्य काल कहते ई— संवयात संवत हो विमाह करते सर्वोपीतिञ्जविमानयाक्षी देवोमें पर्याप्तियांकी पूर्णकाकी मात हुए। ग्रीहा— दो विमाह किस किस करा कार्य के हैं है

समापान - बहुतकी पुत्रत्वर्गणाओं के श्रदण करानेके लिए हा विवाद कराये गये हैं!

र्धका —बहुतते पुत्रलोंका प्रहण भी किसलिय करावा गया ? समापान — मन्यकालके द्वारा वर्षानिवर्षके सरक्ष करनेके लिए बहुनसे पुत्रलोंका प्रदेश भावरकत है :

धुका-मिथ्याद्दष्टि जीवने दो थिलद वर्षी नहीं कराये करे !

समाधान-नहीं, क्योंकि, उनमें भी श्रीकेषका अभाव है, अर्थान् विस्तारीह जीव भी दो विग्रह कर सकते हैं।

वैक्रिपियनिश्वकाययोगी निध्यादृष्टि और असंयतनस्वरृदृष्टि जीक्षेत्र उत्कृत्य काल परयोपमके असंस्थातके माग है ॥ २०२ ॥

सान आह जन, संपंता उन्तरीके स्रक्षेत्रमधीलमान विस्तारीए और देव, सदश नारकियों उत्पन्न होतर वैकिपिकीमधारायकोगी हुए, और सन्तर्हेट्टने यहाँ कियोरी पूर्वताको मान्त हुए। उसी समयमें हो अन्य विस्तारीए जीव वैकिपिकार्यकोगी हुए। इस मकारते एक, हो, तीनवी आहि क्षेत्र पत्नोपमके सक्तनार्वे सारकार

र म मान्य प्रतिषु "करोरवासंकेष्या सवदा "१ स. २ वर्ग पु रशीहणः पाट० । २ म-प्रान्य प्रतिषु "समादावी " इति पाटी सारित हे स. २ वर्गी सु व्यक्ति ह

ग्रणिदे पतिदोनमस्य असंखेजदिमागमेचो वेउन्त्रियमिस्सकालो होदि । असंब दिहीणं पि एवं चेत्र वत्तव्वं । णवारि एदे एमसमएण पिनदीवमस्स असंसेज्याः भेषो उनकस्सेण उपाउनीते, राधीदो वैउन्तियमिस्सकाली असंसेन्त्रमुणी। तं क्षं प आइरियपरंपरागदुनदेसादी । देवलाए उपवजमाणसम्मादिहीहिती देव णस्वस्म उप माणमिन्छादिद्वी असंसेज्जसेढिगुणिदमेचा होति चि कालो वि तापदिगुणी क्रिण है चि युने, ण होदि, उहपस्य येउन्यियमिससङ्गासलागाणं पलिरोयमस्स असरोरसी भागमेनुबदेसा ।

एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोमुहुतं ॥ २०३॥ रं जया- एक्को देव्यक्तिनी उवारेमगैबेउनेस हो विगाद कारण उपवणो, सग्नाः भेनोमुद्दुनेम पञ्जीतं गद्दे। सम्मादिही एको संजदे। सम्मदिश्व हो निगाद कारण उपवणो, सग्नाः उपवण्यो, सन्दलहमेनोमहत्तेम प्रजातं गद्दे। जनन्मो, सब्बलहुमंतोमुहुनेण प्रजनि गरी ।

भीनिवकामिधकाययोगी अथिँकी हालाकार्य यह जाती हैं। इनसे धीक्रीयकविष्णार योगकः कालको गुणा करने पर पश्योपमन्ते असंबंधानयं मागममाण पेक्षिपकारिकाम पानका काल होता है। कानेयतसम्प्रकृतिका भी काल इसी प्रकारते कहना व विरोध बात यह दें कि ये महायुगसम्बद्धाः भी वाल इसा मकारस करणा । विरोध बात यह दें कि ये महायुगसम्बद्धाः भीव स्टब्स समयुगसम्बद्धाः भागाना १४२।४ कान पद ६ १८ च नाराचा सम्बद्धाः जाच ददः समयस प्रवापमकः भारतस्त्रः सात्र उत्तरहरू हात्रः होते हैं, क्योंकि, इस उत्तरस्र देनियाली रासिसे वैकापिकानिस योगका काल अनंक्यानगुणा है।

ममाधान — भाषाधीवर स्मरामन उपवेशने ज्ञाना आता है कि वह समयम स्म होतेवाली ससंयनमध्याद्धिगीशसः उत्तः कालः असंक्वासमुक्ताः है। यहा — देवलाहमें हम्पन्न दीनेपात वाहवादियों से वच या नाराव्यों ।

होतेबाहे विश्वाहीर तीर अनवर में धानराज शक्याहाष्ट्रमास यूप पा नासक्यान होतेबाहे विश्वाहीर तीर अनवर में धानराज शक्यांस मुन्तिनयमान होने हैं, हैनावर क्षेत्र

मुद्रापान वाम भागाचा वर इसर दन है । है नहीं हाना है, प्रवाह, सूनी । हात प्रमान सम्पन्त है बाद बादवनगढ़। हम् गढ़ी हाता है, क्याक, सम्पन्न वह है। सहि होता है, क्याक, सम्पन्न वह है। च्या प्रभावता व्याप्त प्रभावता अवस्थात । अस्य विश्व
वह ब्राह्म प्राची दक्त बाहर हा चारत होते व स्वाप्त है। इस्ते । वह इत्योजना धार्य हरात्म चर्यकार्ते का त्याच करण भागत है।। • • • • ।। हरेत हैं है है कि विश्व कि साम क्षेत्रकार के स्वतंत्रकार के स्वतं हरार के तो प्रयानावकी आपने हुन। एक महसूत्रमाष्ट्र भीता उत्ती स्वत स्व वाण । कर्माण वर्षा वे ते वेवह करहे हुन्य हुन। यार महसूत्रमण्ड भीता उत्ती स्वत स्व वाण । कर्माण मान

उक्कस्सेण अंतोमुहृत्तं ॥ २०४ ॥

तं ज्ञा- एके। तिरिक्तों मणुरमे। वा मिन्छादिही सममुद्रविणाहम्य उवरक्तो सन्वित्तेय अंतेषुद्वेषण पञ्जीच साम्यक्षित स्वतिक्षा अंतेषुद्वेषण पञ्जीच सम्मर्क प्रतिक्षित्र देसणमोहणीयं स्वित्त पद्मण्याद्विणाहण्य उवर्गज्ञिय सन्वितिक्ष वंत्रमाहणीयं स्वित्त पदमणुद्विणाहण्य उवर्गज्ञिय सन्वितिक्ष अंतिहृत्तेच पञ्जीच स्वतिक्ष अर्थादं स्वतिक्ष अर्थादं स्वतिक्ष सम्बन्धित स्वतिक्ष सम्बन्धित स्वतिक्ष सम्बन्धित स्वतिक्ष सम्बन्धित स्वतिक्ष सम्बन्धित सम्बन्धित स्वतिक्ष सम्बन्धित स्वतिक्ष सम्बन्धित स्वतिक्ष सम्बन्धित स्वतिक्ष सम्बन्धित समित्र सम्बन्धित सम्बन्धित समित्र समित्य समित्र समित्र समित्र समित्र समित्र समित्र समित्र समित्र समित्र

सासणसम्मादिडी केवियरं कालादो होति, णाणाजीवं पद्धय जहण्णेण एगसमयं ॥ २०५ ॥

र्च जधा- सचह जणा बहुआ वा मानणसम्मादिहिंगो माहाए एती समझे अस्यि चि देवेतु उदवरणा । विदियसम्य सन्दे मिन्डची शहा । सही एतायझी ।

डक्करसेण प्रतिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २०६ ॥

एक जीवकी अवेक्षा उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्भृहते है ॥ २०४ ॥

कैसे — फोर्ड यक सिर्वेच अववा अनुष्य विश्वारिक श्रीव सामर्था शृतिबंदि नारिक्यों के जल्य हुआ भीर सरक्षेत्र बड़े अम्प्रशृंहित हैकालने वर्षानियाँ में वृत्वस्था आरन हुआ। अब असंसदस्यक्षियों कारकर्षणा करते हैं— फोर्ड यक वर्षानस्यायुष्त और कारकव्यों कार होता होते में हिन्द स्वीत स्वीत में हिन्द स्वीत
र्शका-यह केसे जामा है

सुनापान—गुरके वर्षहोसे जाता कि श्रीकिविक्यिश्ववाययोगी विश्वार्षक श्रीक्षेत्र अस्वतरस्वराष्ट्रियर जीव की अपेक्षा करताय थर जयन्व कालोंने वर्णाचे क्षान काला असर्गुकृतंग्रमाय होते हुए भी संवयानगुणित हैं।

वैक्रिविकामिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्द्राष्ट्र अवि कितने कात तक होने दे ?

माना शिक्षेत्री अरेखा जयन्यसे एक समय होने हैं ॥ २०५ ॥

स्तीन-सात मात्र मन, अवशा बहुत से सामाहनसम्हार्य व अवशे गुल्करण्ये हैं कालमें पक्त समय अवदेश रहने वर देवींसे उपच हुए और दिनांव सहदर्श करहे अर विद्यापको मात्र हुए। इस अकार यक समय मात्र हो गया।

उत्त आंशोदा उरहुष्ट काल परवेषमको अमेरुयावर्वे माराप्रयास है ११ २०६ हा १ ४८५ १० वर्ष-७० १९६१ वास रं बरा- सन्द्र बमा बादुकस्पेम पनिदीवमस्य असंनेरबदिमायवेशा व कि वेरिन्य सम्द्र अदि कार्म बाद उन्हरूमेन समऊग-छ-आर्तिपामे सम्बद्धा के रिहेन्द्र उन्हरूमा । ने सभी कमेग मिन्छने गहा । तस्त्रमण्ड पेर पुग्रे व कार्म हिन्दुरस्या । एवं निर्देश पानावीत अस्मिद्ध सामगढ्ढा पनिदीवमस्य अस्मिकी कार्मिक सम्बद्धा सामगढ्ढा पनिदीवमस्य अस्मिकी

एगर्ज्ञतं परुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २०७ ॥

नं जर- दरहो नामने मगदाप एगममत्रो त्रत्य नि देशेगुराणी, विषेष्

उन्हम्सेग छ आवित्याओं समजणाओं ॥ २०८॥

र्ग जना- राक्षेः निर्मित्योः सामुक्ष्योः या उपसम्बद्धसम्बद्धार् हः आसीत्याचे कोच कि कामार्क्ष सेपूण युग्यसम्बद्धार उन्सदीत् देवेगुदानिजय समप्रत्र संवर्षः विकास कामार्क्ष विद्यासी सहित्य

क्रिक - काम कार इस्त, आगता ए कार्नीत वर्षात्माके अर्थवाराचे प्राप्ताः इस्ति कार्क कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्या कार्य का

अब है रही करेता इन्ह हैं होशा प्राप्त बदन मुख्यमा है।। २००।

केच - च ह बच कालावनावानीं होत क्यां कृत्यानाक कार्यों वह वर्ष क्यापार रहन र इस के स्वयं हुन और दिनीय समयत ही विस्तारकी व्याप ही वर्ष इस क्याप केच क्यांच्या के द हाराइ हो वया।

देव-पर रेकारता जाराज्ञ व उत्तवसम्बद्धः बादमम् व वर्षाः करण्य तद्द हर के चारवद्वराज्ञा ज्ञान व प्रतीर करवान वर्षे वर्षाः क्षेत्रताच १८५ कार्याच्या इक्साव वत्तव व्यवस्था कार्यस्य के स्व कर्षाः क्षेत्रताच १८५ कार्याः इत्या इक्साव व्यवस्था कर्षाः कर्षाः कर्षाः कर्षाः आहारकायजोगीसु पमतसंजदा केवचिरं कालादो होति, णाणा-जीवं पद्धच्च जहण्णेण एमसमयं ॥ २०९ ॥

त जहा- सचह जणा वषचसंजदा मणजोगेण बिचजोगेण वा अध्यदा सगदाए सीणाए आहारकायजोगिको जादा । बिदियसमय सुदा, मृखसीर वा विदृहा'। रुद्रा एग-समजो । एत्य वाधार-गुणपरावधीहि एगै। समजो म रुज्मिद ।

डफस्सेण अंतोमुहत्तं ॥ २१० ॥

वं जहा- आहारसरीर मुद्दाविद्यमय संजदा मण-विच्योगाद्दिरा आहारकाय योगियो जादा। जाथे वे जोगेवरं गदा, वांधे चेत्र अग्ये आहारकाय योगं पढिवण्या। प्रयमगादि एगुचरपद्वीय संविज्जसकामाओं टरुभीत। एदाहि एगं काय योगदें गुणिदे ब्राहारकाय-जोगदा उक्तरस्या अंतोब्रहृष्यपमाणा होदि।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ २११ ॥

आहारककापपोशियोंने प्रमुख्यत और किवने कार तक होते 🕻 है नान। जीवोंकी अपेक्षा जगन्यसे एक समय होते हैं ॥ २०९ ॥

जैते— सात बाड प्रमण्यतंपत मनीयोग वापवा वधनयोगके साथ वर्गनात के। वे वपने योगकालेक क्षेत्रण हो जाने यर काहारकवायोगी हुए। हिनाँव स्वयंत्रे मेर क्रयंत्रा मृत्य बीहारिकार्यारामें प्रविष्ट हुव । इस नकारके यक समयका बात उपलब्ध हो गया। यहां वर स्थायत क्षयंया गुणस्थानविष्ठकेनेके हारा यक समय नहीं प्राप्त होगा है।

उक्त जीवॉका उत्कृष्ट काल अन्तर्श्वहर्त है ॥ ५१० ॥

अति— भादारकार्यारको अवस्य करमेवाल, मलोवान अथवा वयनपानहें दिस्साव प्रमानस्वत और मादारकार्योगी हुए। अब वे दिसी दूसरे पानको साम दूर उर्वा शबदावें ही अन्य प्रमासंदय आहारकार्यायोगको मात दुर्व। दल अकार व्यवेश काहि लेकर प्रमोश्यर प्रतिसं संवयान राज्यवर्ष मात होती हैं। इन सालाकार्योग पर कार्य्येगके बालको गुणा करने पर उन्हार भादारकार्यमान काल अवस्तुर्वमान्य हो जाना है।

एक जीवकी अवेधा आहारककाययोगी जीवोंका उत्पन्त काल एक समय है। २११ ॥



इ. अतिष्ठ " पविद्वी " एति पासः ।

६ क्षतिष्ठ " कादे " वृश्चि प्रदेश है

तं जघा-एको पमनमंत्रदो मणजोग विचानों वा अस्टिटो आहएका**रको** गदो । विदियसमण मदो, सलसरीर वा पतिहो ।

उक्तस्तेण अंतोमुहत्तं ॥ २१२ ॥

तं जपा-मणजोगे विचिज्ञोगे वा द्विदयमनमंजदी आहारकायजोगं गदी, मन्द्र करुरममंत्रोग्रहनमाध्यय अळाजेलं गटी।

आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा केयिनरं कालादो हॉलि, णाणाजीनं पडुच्च जहण्णेण अंतोसुहत्तं ॥ २१३ ॥

र्वं जपा- सचह जणा पमचसंजदा दिहमन्ता आहारमिस्सजोगिको जापा-सञ्चलहम्तोमुहचेण पजाचि गदा। एवं जहल्याकालो पर्वविदे।।

उक्कस्सेण अंतोमुद्दं ॥ २१८ ॥

तं जवा-सचह जणा प्यचसंत्रदा दिहमगा आदिहमग्या वा आहारिमस्स्वयः जोरिणा जादा, अंतोम्रहुनेण पञ्जलि गदा । तस्सम्य चेत्र अपगे आहारिमस्स्वयः जोरिणो जादा ! एवमेक-दो-तिण्ण जाव संखेज्जसलामा जादा वि कादस्त्री पुणी

जेसे—मनोयोग या घयनवेशमें विश्वमान कोई एक प्रमुख्तवत जीव महार काययोगको प्रान्त हुआ और हितीय समयतें मरा, स्वया मृत शरिरमें प्रविष्ट होगया।

उक्त जीवींका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहर्त है ॥ २१२ ॥

केले—मनीयोग या सक्तरीगाँ विद्यान कोई एक प्रमुखस्यत जीव आहारकार योगको प्राप्त हुमा। यहां पर सर्वोरठप्ट अन्तर्भृहतकार रह करके अन्य योगको प्राप्त हुमा।

आहारकमिश्रकाययोगियोंमें प्रमुचसंयतजीव कितने काल वक होते हैं। नाना जीयोंकी अपेक्षा जधन्यसे अन्तर्भहर्तकाल होते हैं।। २१३।।

जैसे — देखा है मार्ग हो जिन्होंने येसे सात बाड प्रमत्तसंवत जीव बाहारकमिन कायपोगी हुए और सर्वेटपु अन्तर्युहर्तसे पर्योत्पालेको मात हुए। इस प्रकार ज्ञयन काल कहा।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्मृहर्त है ॥ २१४ ॥

असे— देखा है मार्गको क्रिन्होंने पेखे, सथवा अहरमार्गी सात आड ममचसंवर्ग जीव आहारकामिश्रकावयोगी हुए और अन्तर्गुहुतेंसे वर्षा/दित्योंको पूर्णताको मान्त हुए। उसी समयमें ही अन्य भी ममचसंवत जीव आहारकामिश्रकावयोगी हुए। इस महारते प्रके, रीग तीनको आदि छेकर जय तक संक्यात राजाकाएं पूरी हों, तथ तक संक्या बदाते जाना

१ ज-मा प्रख्नोः अत्र 'विदियसमयु सदो ' इत्यविकः पाठः; क वती स-प्रलोहनु तःपाठी नीपतम्पते ।

```
t, 4, 28c. 1
                                        काराणुगमे कायजीमिकारुपरूवर्ग
               एदाहि सलागाहि बाहारिमसकापजागर्व गुणिदे आहारिमसकापजोगस्स उक्रसकाठो
               अंतोसुद्रचमेची होदि।
                     एगजीनं पहुच्च जहण्णेण अंतीसुहुत्तं ॥ २१५ ॥
                    वं जपा- एको पमनसंबदा पुच्चमणेगवारम्बहाविदवाहारस्रीरो आहारमिस्सकाय-
            जागी जादो, सञ्चलहुमैतीग्रुदुचेण पञ्चिति गदी । सदी जदणकाली !
100
                   <del>उदकस्तेण अंतोयुहत्तं ॥ २१६ ॥</del>
                 वं जघा- एको पमचसंबद्धी अदिष्टमग्यो आहारमिस्सी जादो । सन्विचिरण अती
          हरूचेण जहव्यकालादो संखेरजगुणेण परजार्च गरी।
                कम्मइयकायजोगीसु मिच्छादिङ्टी केविवरं कालादो होंति, णाणा-
        जीवं पडुन्च सन्बद्धा ॥ २१७ ॥
               इदो १ विग्महमदीए बहुमाणजीवाणं सच्चद्वास विरहामावादी ।
r
              एगजीवं पडुन्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २१८ ॥
      चाहिए। पुनः हत रालाकामाँसे आहारकामिधकायवीगके कालकी गुणा करने पर भाहारक
     मिसकाययोगका बान्तर्भुहत्त्रमाण उत्हर काल दीता है।
            प्रकार कार्य आहारकमिश्रकाययोगी जीगेंका जयन्य काल अन्तर्भृहर्त
    है।। २१५॥
           भेते - पूर्वमें बिलने अनेक यार आहारकवारीरकी उत्पन्न किया है ऐसा कोई एक
   प्रमुचसंवत जीव भाहारकामधकाववामी हुमा भीर सबसे छपु अन्तर्गहर्ने पर्याचकपनेको
   भारत हुमा। इस प्रकारते जयन्य काल भारत हो गया।
         उक्त जीवोंका उत्हर काल अन्तर्गृहर्त है ॥ ११६ ॥
         प्रधानात्राका प्रधान प्रधान प्रधान कोई यह प्रमत्त्रसंयत जीय बाहारकः
 नार — नवा द जा व नागका स्वचन पद्मा कार पुरू नाम्यवस्य जाव भावारक
विश्वकायरोगी दुमा, भीर अधन्य कालसे संस्थातमुख सबसे बहुँ अस्तर्गहर्तमा वर्णालायारी
 पूर्णताको प्राप्त हुमा।
       कार्मणकापयोगियोमें मिष्पादृष्टि बीच कितने काल तक होते हैं ? नाना
जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ २१७ ॥
      चयाहि, सभी कालोमें विमहमातिमें विद्यामन औषोहे विरहता मामाव है।
      एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जयन्य काल एक समय है।। २१८ ॥
```

1

e

तं जहा- एगो भिच्छादिद्वी जिग्गहगदिशामकम्मवमेण गुगविगाहे कार्यी गदा । पुणो अंतीसृष्ट्वेण छिष्णाउत्रो। होत्य सदाउत्रमण उपपण्णवरमनम् कार्यका जोगी जाहे। विदियसम् अंतानियमिस्सं वेउन्यिमिस्सं वा गदा । सदी एस्ट्रमके।

उक्करसेण तिाण्णि समया ॥ २१९ ॥

तं जधा— एगो सहुमेईदिया अहा सहुमवाउकाइणसु निष्ण विमाहं मार्वाभे गदो । अतोसुद्रचेण छिण्णाउओ होर्ण उप्पण्णपदमसमयप्यहुडि तिसु विमाहंसु विश्व समयं कम्मद्रपञ्जोगी होर्ण चडत्यसमए ओगालियमिस्सं गदो । सहुमेईदिया सहुमें इंदिएस उप्पज्जमाणाणं तिष्णि विमाहं होति चि णियमो क्यं णव्यदे ? णिव एव णियमो, किंतु संभवं पड्ण्य सुम्मेईदियम् स्व वादरेहरिया सुमूबंदिया तक्ष्या या सुद्धमेईदिया उप्पज्जमाणा तिष्णि विमाहं करेंति चि एस णियमो वचन्नो, आहरिष्पंपरागद्यादो । तिष्णिविमाहाकरणदिया उप्पज्जे पम्हलोगोहेते वामदिसालीपर्यंतमं

जैंसे— एक मिध्यारिष्ट जीय, विषद्भाविनासकर्मके यहासे एक विषद्भावे अर णास्तिकसमुदातको प्राप्त हुआ। पुनः अन्तमुंहतेले छितायुष्क होकट बांधी हुई अपुके बार्षे उत्पन्न होनेके प्रयम समयमें कामेणकाययोगी हुमा। युनः हितीय समयमें औदारिकांग कापयोगको, अथया वैक्रियिकामिश्रकाययोगको प्राप्त हुआ। इस प्रकारसे एक समय उपस्था हुआ।

[्]रे एक जीवकी अपेखा कार्मणकाययोगी मिध्यादृष्टि जीवाँका उत्कृष्ट काल वीन समय है ॥ २१९॥

[े] जैसे—पक ख्हम प्केन्द्रिय जीव बघरतम स्ट्मवायुकाविकों तीन विम्हणे मारणोत्तिकसमुखारको मान हुना। युना अन्तर्महुतंते विचायुक्क होकर उत्पन्न होनेके प्रव समयसे लगाकर तीन विन्नहोंने तीन समय तक कार्मणकावयोगी होकर जीवे समर्थ क्षीवारिकमिश्रकावयोगको भाग हो सारा

र्शका — एक्म पकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेवाळे स्क्म पकेन्द्रिय जीवके तीन विमर्द होते हैं, यह नियम फैसे जाना ?

समाधान — यचिष इस विषयमें कोई नियम नहीं है, तो भी संमायनाकी बेपूरी यहां पर सुरम एकेन्द्रियोंका प्रहण किया है। अतप्य सुक्षम एकेन्द्रियोंक उत्तम होतेगार्वे यादर एकेन्द्रिय या सुक्षम एकेन्द्रिय अध्या असकायिक जीव ही तीन विष्ठह करते हैं, वर नियम प्रहण करना चाहिष, क्योंकि, यही उपदेश आचार्यपरस्परासे आया हुआ है।

वब तीन वित्रह करनेकी दिशाको कहते हैं— ब्रह्मछोक्वर्ती ब्रदेशपर वामरिशा

. ;

f

तिरिन्डेण दक्तियां तिन्यि रज्जुमेचं गंत्य तदो साद्दसरव्ज्या अधी कंडुज्जुनं गंत्य तदो संमुदं चदुरञ्जुभेषं आगेत्ण कोणदिसाठिदलोगपेरैतसुहुमनाउकाइएसु उप्पञ्जमाणस्स तिण्णि विस्महा हाँति ।

सासणसम्मादिही असंजदसम्मादिही केविचरं कालादो होंति. णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २२० ॥

तं ज्ञा- सासणसम्मादिही असंजदसम्मादिही यगविग्गहं कार्णुप्पणपदमसम् एगममञ्जो कम्मइयकायञ्जोगेण सम्भदि ।

उक्करसेण आविष्याए असंखेज्जदिभागो ॥ २२१ ॥

सं जघा- सासणसम्मादिष्टि-असंबदसम्मादिष्टिणो दोल्ण विग्गई कार्ण बद्धाउ-बसेणुष्विज्ञय दोण्गि समय अन्छिय ओसालियमिस्सं वेडव्श्वियमिस्सं वा गृहा । तस्समण चेव अणो कम्मइपकायझोरीको आदा । एवमेमं कंडमं कादृण एरिसाकि आविलिपाए असंसेज्जदिभागमेचं फंडयाणि होति। एदाणं सलागाहि दोण्णि समए गुणिदे आवलियाए असंखेजजभागमेचो कम्महयकायजोगस्त उक्कस्त्रकाली होदि।

सम्पन्धी लोकके पर्यन्त मामले तिरछे दक्षिणकी भार तीन राजुपमाण जाकर पुना साढे दश राज मीचेनी भीर थाणके समान सीधी गतिसे जाकर प्रधात सामनेकी और चार राजम्माण भारर कोणवर्ती दिशामें स्थित खोहके अन्तवर्ती सहम वायकाविकां में समावस होनेवाले जीवके तीन विमह होते हैं।

कार्मणकाययोगी सासादनसम्बग्हांष्टे और असंयतसम्बग्हांष्टे जीव कितने काल वक होते हैं ? नाना जीवोंकी अवेक्षा जपन्यसे एक समय होते हैं ॥ २२० ॥

असे- पोर्ट सासादनसम्बन्दिए और असंवतसम्बन्दिए जीव एक विदाह करके उरपन्न दोनेके प्रधम समयमें एक समय कार्मणकाययोगके साथ पाया जाता है।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल आवलीके असंख्यावर्वे भागत्रमाण है ॥ २२१ ॥

जैसे-- पूर्व पर्यापको छोड्नेके प्रधान् कितने ही सासादनसम्पन्टाए और असंयत-सारगारि जीव बांधी हुई भायुके यशसे उत्पच होकर विमहस्तिसें दो विमह करके. क्षे समय रह कर. पूना शौदारिकामिश्रकाययोगको अथवा वैकिथिकामिश्रकाययोगको प्राप्त हर । उसी समयमें ही दूसरे भी जीव कार्मणशाययोगी हुए। इस प्रकार इसे एक कांडक करके, इसी प्रचारके अन्य अन्य आयठीके असंख्यातये आगमात्र कोडक होते हैं। इन बांडकांकी दालाका मोंसे दोनों समयोंको गुणा करने पर भावटीका मसंख्यातवां भागमात्र कार्यणकाय-योगका उत्हार काल होता है।

/:

[॥] अ-६ प्रत्योः ' बतावाय समुप्यस्त्रमाषस्य "। वा प्रशी " -कारकपूर्व उप्परम्रमाषस्य " द्वति चादः । < प्रतिप ' पुरिहाले ' शति पावः ।

एगजीवं पदच जहण्णेण एगसमयं ॥ २२२ ॥ सगममेदं मर्न ।

चक्कस्सेण वे समयं ॥ २२३ ॥

इदो ! एदेसि सहमेइदिएसं उप्पत्तीए अवावा, वड्डि-हाणिकमेण हिरलेली उपचीए अभावादो च ।

सजोगिकेवली केवचिरं कालादी होति. णाणाजीवं पडुच्च जरः ण्णेण तिण्णि समयं ॥ २२४ ॥

तं जहा- सत्तह जणा वा सजोगिणो समगं कवाडं गदा, पद्र-लोगपूर्णं गंदन मुओ पदरं गत्य विश्णि समयं कम्महयकायजीशियो होद्य कवाडं गरा।

उक्तस्सेण संखेजजसमयं ॥ २२५ ॥

इदी ? तिष्णि समझ्यं कंडयं काऊण संखेजजकंडयाणमुबलंमा ।

एगजीवं पद्रच्च जहण्युक्कस्सेण तिण्णि समयं ॥ २२६ ॥

एफ जीवकी अपेक्षा उक्त जीवाँका जघन्य काल एक समय है ॥ २२२ ॥ यहं सत्र सर्गम है।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल दो समय है ॥ २२३ ॥ पर्योकि, इन सासावन या असंयतगणस्थानवर्ती अधिकी सहम एकेन्द्रियोंने हत्पत्तिका भंभाव है। तथा वृद्धि और द्वानिके अससे विद्यमान खोकके अन्तमें भी उनकी डत्पचिका समाय है।

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली कितने समय तक होते हैं ? नाना बीवों ही

अपेक्षा जपन्यसे वीन समय होते हैं ॥ २२४ ॥ जैसे-- सात अथवा थाड संयोगितिन एक साथ 🗗 क्याउसम्दातको मात 🕵

बीर प्रतर तथा छोकपूरणसमुदातको प्राप्त होकर थुनः प्रतरसमुदातको प्राप्त हो, तीन सप्तर तक कार्मणकाययोगी रह करके कपाटसमुद्रातको मास हुए।

कार्मणकाययोगी सयोगिजिनोंका नाना जीवोंकी अवेक्षा उत्कृष्ट काल संस्यान

समय है।। २२५।।

चर्योकि, तीन समयवाले कांडकको करके उनके संस्थात कांडक पाये जाते हैं। एक जीवकी अवेक्षा कार्मणकाययोगी सयोगिनिनोंका जयन्य और उरहर दान शीन समय है ॥ २२६ ॥

t. 4, 879. 1 षाताणुगमे इत्यिनेदिकालपरतार्ग

इदो १ पदरादी छोगपूरणादी वा कवाडस्स गंमणामाना (

वैदाणुनादेण इत्पिनेदेसु मिच्छादिट्टी केनचिरं फालादो होंति, एवं जोगमगणा समता ।

णाणानीवं पडुन्च सन्बद्धां ॥ २२७ ॥

इते। १ सम्बद्धाः इत्यिवेदमिच्छादिष्टीणं निरहामाता ।

एगजीव पहुन्च जहन्नेण अंतोमुहुत्तं'॥ २२८॥ र्षे जया- एको इत्थिवेदगी सम्मामिन्छादिङ्डी असंगदसम्मादिङ्ढी संजदासंजदी पमचसंजदो वा परिणामपञ्चएण विन्छचं गंतूण सन्दज्जकणकालमन्द्रिय जण्णाणं गरी।

^{उक्कास्तेण} पलिदोवमसदपुधतं'॥ २२९ ॥ र्षं जपा- एक्को जनात्पद्वेदो हरियोदेस उत्तवन्तो । पुना तत्प हरियवेदेन पित्रविमसद्युधकं वरियद्विय अवाध्विद्वेदं गरी।

चराँकि, कार्मणकावयोगी संपोगिजिनका अतर भीर खोकपूरणसमुदातसे सीटकर पाटसमुदातमें जानेका भमाव है।

बेदमार्गमाके अनुवादके सोबेदियोंने मिध्यादृष्टि जीव किनने काल वक होते हूं ? ॥ जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ २२७ ॥ क्योंकि, सभी कालोंमें सोविदयांके मिण्यादिव नीपोंके विरदका नामा है।

एक बीवकी अवेद्या उक्त बीवोका जपन्य काल अन्तर्यहर्ग है ॥ १२८ ॥ भैते— कोई वह खोदेशे सरवामित्याहाँहे, अथवा असंवासस्वरहे, अथवा जन्म कार प्राचीता व्यवस्थित अधि परिणामाँ निमेचसे विध्यात्यक्षे माम सेक्ट सबसे जयस्य समागुद्धतं वालप्रमाण रह करके सम्य गुणस्थानको यला गया। उक्त जीवींका उत्कृष्ट काल पच्योपमञ्जनपूर्यक्त है ॥ २२९ ॥

मैंसे- भविवासत वेदवाला कोर्र एक जांच कविविद्योंमें उत्पर हुमा पुनः वहां पर काविश्वह साम प्राथायमहातष्ट्रथक्तम काल तक परिवर्तन करके आविश्वहित वेह्नो क्वा वचा थ र कविदेश विश्वाहरेमांनाजावाचेलवा वर्ष काल, । स ति १, ८.

१ प्रजीव प्रति जवाचेनाग्तवंद्वीः । छ छि. १, ८.

हे वाक्रेंण पश्योपमहत्तुमन बस्। सः ति. १, ८.

सासणसम्मादिडी ओघं' ॥ २३० ॥

पाणाजीर्त्र पदुच्च जहण्येण एगसमञ्जा, उत्तरसेण रासीदी असंतिज्यगुणे, पित्र यमस्स असंतिज्जिदिमागो; एगजीर्त्र पदुच जहण्येण एगसमञ्जो, उत्तरसेण छ अपि यात्रो, र्चएण ओपादी विसेसामाता ओधिमिदि वर्त्त ।

सम्मामिच्छादिदी ओघं ॥ २३१ ॥

कुरो ? णाणात्रीयं पड्डच सहण्णेण अंतीमुद्रचं, उदकस्सेण सगरामीरो अनंतेक्ष्य परिदोत्रमस्स असंत्रेक्तार्रमागो; एगजीवं पड्डच्य सहल्णुकस्सेण अंतिसुद्रचं, स्रो

ओपादे। भेदामाता ।

असंजदसम्मादिद्री केविचरं कालादा हाँति, णाणाजीवं पड्डन सञ्चदां।। २३२ ।।

इरो ! इतिषवेदिह असंजदसम्मादिहिविरहिदकालाणुवलंमा । एगजीवं पदुच्च जहण्णेण अंतोसहत्तं ॥ २३३ ॥

र्गाविदी मामादनसम्पर्गष्टि जीवोंका काल ओपके समान है ॥ २३० ॥ माना कीवोंकी भवेशा जयम्यने एक समय, उन्करीत भवती शांतिते सर्वस्थाना

करने दमहा अने काल है, इस मकार भीपके कालसे कोई विदेशना नहीं है, अन्य केंद्र

र्मा तेरी मध्यम्मियादृष्टियोंका काल जीपके समान है ॥ २३१ ॥ कर्में के जाना अधिका भेषेमा क्रमण काल भग्यमुक्त, भीर अल्टर काल भगी

करिन सर्ववातन्त्रितः पानीपामके असेनवानयं साम है। तथा यक भीवती संपत्ता सम्प स्रीत रक्षण बाल अन्तर्मुदर्त है, इस प्रवार ओखंड बालसे बोर्ड मेर्ड नहीं है।

र्ज रित्योमे अर्थयनमन्यारिक जीर कितने काल तक होते हैं है जाता औरी अरेका सर्वकार होते हैं ॥ २३२ ॥

अवश्वा मुरकात कात दे ॥ २३२ ॥ क्योंक, कांकित्योंने असंवयसम्बद्धाव जीवींस विशक्ति कार्रकाल महीताण अल्लाहे ॥

-- मृद्य दीवदी अवेशा उक्त जीवीका जयन्य काल अन्तर्यकृति है ॥ १६६ म

्राच्या स्थापन व्यापना कार्यात् कार्यात्मा कार्यात्मा स्थापना स्थापन

के फिट्ट क्याप्तवस्य द्वार्यामा बाग्यस्य वर्षेत्र व बत्ते व स्ति के बत्

g gud a my awayerfif 14 fa. t. c.

बागाणुगमे हथिवेदिवाटमस्वणं वं जपा- एगो मिन्छादिही सम्माभिन्छादिही संजदासंजदी पमचसंजदी : हिथवेदगो परिणामवचाएण असँबदसम्मादिही होट्ण सन्दबहण्णमेतीपुरु पमिन्छय जहण्य कालाविरोहेण गुणंवरं गदी । सदी जहणाकाली ।

उनकस्सेण पणवण्णपल्टिदोवमाणि देसुणाणि'॥ २३८ ॥

हुदो 🕻 अजिज्दिबेद्दस पणाम्जविद्दीबमाजिद्दीदेवीस उपविजय छ पण्जवीजी रामाणिय अंतोग्रमुचं बिस्समिय पुणो अंतोग्रमुचं विसद्धा होरूण वेरगतम्मनं पहिवज्ञिय सामचेष आउद्दिरमणुपालिय कार्ल कार्श पुरिसवेई पडिवण्णस्स तीहिं अंतोबुक्केहि **जनपन्डणापतिहोनमुब्लंभा ।**

संजदासंजदणहुडि जाव अणियट्टि ति ओधं ॥ २३५ ॥ इदो १ ओपं पेक्सिट्ण उचमुणहाणाणं मेदामावा । यवरि संजदासमदाक्कस-

हालिह अतिय विसेसो । सं अपा— एको अहवीससंतकात्मको त्यीवेदेस अवकृत-अते- यह भिरवारिष, वा साविमध्यादि, या संवतास्थत अथवा ममस्तवत्

प्रीवेदी जीव परिचामाँके निमित्ततं असंचरतसम्पर्धाः था चयवान्यपा ज्ञथ्या नगणव्यव असंचर्तां जीव परिचामाँके निमित्ततं असंचरतसम्पर्धाः श्रीकर और सर्वत्रप्रम्य अस्तर्गंडर्त मार्था नाम परणालका जानाच्या जानाच्या व्यवस्था है स्वरं ज्ञायस्था के चला स्वरं। इस महार जानाच्या वन पल्योपम है ॥ २३४ ॥

एक जीवकी अवेद्या सीवेदी असंगतधम्पादिए जीवोंका उत्कृष्ट काल हुछ कम चर्योदः, हिसी भविषशित भन्य वेदचाले जीवनः वचवन वस्त्रोपमही भागुस्थितियाली

मि तरक हो, छहीं वर्शनिवांको सम्बा कर, अलगुहर्त विश्वास करके, पुना अलग ाम वर्षम हो, धवा म्यान्यमाका राज्यम कर, जनताहरू व्यवस्थ करका, प्राच्यान कर हम कर, तरणही करके पुरस्तेदको यात हुए जीवके तीम अन्तर्गुहरूतीले कम प्रचयन संयवासंपत गुणस्यानमे लेकर अनिष्टाचेकरण गुणस्यान तक सीवेरी जीवोका पके समान है ॥ २३५ ॥

व्यक्ति, भाषक कालको देखने दुष स्थान गुणक्यानांके कालाँम कोई भेर नहीं भवाका भावक पाठन राजा देव रहनाण धन्यमारक कारण भाव गर गर संयतासंयतके उन्हर्र कालमें विशेषता है। यह इस प्रकार है—भोहकमंकी महार्य

उ क्वन वचवनारः पन्योपमानि देशीनानि । सः सि १, ८.

Wwo l : हरक्षंद्रागमे जीवटार्ण 12.5.31

मण्डादिस् उत्रवन्त्रिय वे मासं गन्मे अप्छिट्ण णिष्किडिय सुद्वेतुर्वससुरि हम संदमाजदम प जुगरे धेत्प वेमासमुद्रसपुष्यम्णपुज्यकोढि संतमासदममनुकानिः देशे जारी वि । जोपस्टि पुन अंतीमृह्नुनापुन्यकी(डिसंजदासंबद्उक्स्मक्रानी सन गम्बन्धिमारव्यसमस्य-कर्णंव-महकादिसु लद्दो, प्रथ सो म लक्पदि, सम्बन्धिमेन री बेटाबादा ।

प्रिसनेदएस मिन्छादिट्टी केविचरं कालादो होति. णाणार्ज पद्दन्त सन्तद्वां ॥ २३६ ॥

तियु वि अदासु प्रतिसेदिमिन्छादिष्टीणं विरहासंस्था । एगजीनं पर्म जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ २३७ ॥ करें। १ अनेज श्मरमादिहिस्य सम्मामिच्छादिदिस्य संग्रदासंजदस्य प्रमधंबद्ध

का शिद्वमामस्य मिक्तारिष्ठी होइण सव्यवहण्यम्ब्लिय सर्वतरं परिशामस्य मी सरप्रकेश ।

क्य कि विशेष सम्माताच्या की ई सक जीय करियेषी का इक्का अर्केट शादिति स्थाप दीकर, भीर के कान्य मार्थित वह, निकाप करते मुहार्नपूर्वाचावके उत्पर साम्याच्या कीर संवतान्त्रको क्षाकान् प्रकृतः कर के वर मान्य और शुनुनीयुव्यक्षान्तरे कार वृत्तिकीरीयविद्यमाना संगमानेवसी विज्ञानिक वरके अन्य भीत नेत्र की गाया । किन्तु भी पत्रात्मध्यात्मार्थे जी। भागने हुने क्ष कुर्कन भी को संवत्रामेशनका प्राष्ट्रण काल कहा है यह शंबी सामार्थिता वर्षी। सन्छ, बन्ती बाहक पूर्व के के काला जाता है, कह वर्त वर असे वाला आता है। क्रीहि, साम्दिन mir'd ar vont mater & :

इसके दिनोंने विश्वाद्या और दिनने काल नह होने हैं है साम श्रीती भीती कोशक रेले हैं।। २३६।।

करों है। बीनों ही बालीने पुरार्वानी मिथ्यारीय श्रीनीका विरश्न समेवन है।

कर ही । दी अनेवा अपन्य बाल अन्तर्वेष्ट्र है।। २३०॥

करीत हवा है मार्तिका जिल्ला, में में मानगुर्वाकार कि अगृत समानिकार करण कर्मान्त्र, क्रमण प्रमण्येत्र, विश्वार्त्व ब्रोक क्रियाम क्रमण क्रमण

कार्य मूच कर जवा क्षांच र जवार बीरवेच वान्तितु है बाद वाना बाना है।

THE RESERVE WATER STREET, SEC. W. P. L.

大樓 网络大脚内的海岸 医内性气 网络亚维人的大家的现在分词使用 化油油槽 医神经性原本性样的

And meanings exists a valuation of the a det men e venera ... a frez fre endanta innabantatat

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधर्तं' ॥ २३८ ॥

१, ५, २४०.]

एदस्पुस्तरणं-एको त्थी-णुंत्रपवेदेसु बहुवारं परियद्विद्वीवो पुरिसेदेसु उर-वण्णो । पुरिसवेदो होर्ण सागरोवमसद्गुपणं परियमिय जणिपदवेदं गदा । तिसदमादि करिय जाव णवसदं ति एदिसेस संखाए सद्गुपचिमिद्द सच्चा ।

सासणसम्मादिष्टिप्पहुडि जाव अणियष्टि त्ति ओघं' ॥ २३९ ॥ इते १ एदेसि उचगुणहाणार्ग णांगमश्रीनं पद्गन्य जहण्युनकस्प्रकालेहि ओपादो भेदामाचा । णवरि संजदानंत्रदाणभित्यिवेदमंगी ।

णबुंसयनेदेसु मिच्छादिट्टी केनचिरं कालादो हॉति, णाणाजीवं पद्धन्य सम्बद्धां ॥ २४० ॥

हुदी र सन्यदासु एदेसि विरहामाना I

उक्त जीवोंका उत्हर काल सामरोपमञ्जूष्यक्त है ॥ २३८ ॥

हराका वदाहरण— को भीर मधुंसकवेदी जीवींमें बहुन वार परिश्रवण किया हुआ कोर्रे पर जीव पुरुविदियोंमें जपन हुआ। युरुवेदी होकर सागरेजवातात्रुवकरण कार तक बरिश्रमण करके सविद्यासित वेदको चारा गया। तीन सी को आदि करके भी ती तकवी संख्यारी 'सात्रुवक्षण' यह संखा है।

सासादनसम्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण शुणस्वान तक प्रत्येक शुणम्यानदर्शी

पुरुपरेदी जीवोंका काल ओपके समान है ॥ २३९ ॥

पर्योकि, इस स्प्रोक्त गुजरवामोंका जाना जीव और एक जीवर्श करेश्त जयन्य और उरहर कारके साथ भोग्रेस कोई भेद नहीं है। विरोध बान यह है कि पुरुवेदी संवतासंवतींका काल स्वीवेदी शेवतासंवतींक स्वान है।

मधुंसरावेदियोंमें मिथ्यार्गाष्ट बीव कितने काल तक होते हैं। नाना जीहोंदी अपेक्षा सर्व काल होते हैं।। २४०॥

क्योंकि, सभी बारोंमें इन जीवोंके विषद्वका समाव है।

इ बःक्चेंन लागरीपमण्डगूबन वस् ह छ- छि- ६, ८.

९ अ-आ-६ प्रतिषु " अप्पिदनेदं " इति पाउः। स मती द्व १वीहतपाउः ।

इ सामादनकावादशादिहादिवादरान्तावो माका वीतः वाळः । स. ति. १, ८.

४ महत्वपरेदेषु विष्याद्येनीयाज्ञीवारेक्षया कर्वः वातः । छ-छि- १, ८-

एगजीवं पहुच्च जहणोण अंतोमुहुत्तं' ॥ २४१ ॥

कुदो १ सम्मामिच्छादिहिस्स असंजदसम्मादिहिस्स संजदासंजदस्स संजदास मिच्छेचे गेत्ण सन्वजहष्णद्रमन्डिय गुणंतरं गदस्स अंतोप्रहुतुवरूमा ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियद्रं ॥ २४२ ॥

एदस्सुदाहरणं→ एकको परिमामिदत्थी-पुरिसनेद्दिदिगो णवुंसपनेदं पडिवन्ति तमच्डेंदेतो आवित्याए असंखेजजदिमागमेचपोग्गलपरियङ्गाणि परिममिय अणावेदं गरो।

सासणसम्मादिद्वी ओघं ।। २४३ ॥

सम्मामिच्छादिद्री ओघं ॥ २४४ ॥

एदाणि दो वि सुचाणि सुगमाणि।

असंजदसम्मादिही केवचिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पड़ी सब्बद्धां ॥ २४५ ॥

एक जीवकी अपेक्षा नपुंसकनेदी मिध्यादृष्टियोंका जयन्य काल अन्तर्दृश् है।। २४१ ॥

क्योंकि, सम्यामध्याद्या, या असंयतसम्बन्दिए या संवतासंवत, अधवा संव जीयके मिथ्यात्यको माप्त होकर भीर यहां घर सर्व अधन्य काल रह करके भन्य गुजस्याको प्राप्त होनेवाले जीवके भन्तर्गृष्टर्तकाल पाया जाता है।

उक्त श्रीवीका उरकृष्ट काल अनन्तकालात्मक असंख्यात प्रहलपश्चित्ववमान

है ॥ २४२ ॥ इसका बदाहरण— जिसने पुरुषवेद और स्थिवेदकी स्थितिव्रमाण परिश्रमण विश

है, देसा कोई यह जीव अर्पुसकवेदको मात होकर, उसे मही छोड़ना हुमा मायली हे मर्छ क्यात्वें भागमात्र पुरुष्टररियनेनीतक परिश्रमण करके अम्य धेरकी मास हुमा ।

सामादनमुम्यग्दृष्टि नर्पुगकवेदी जीवोंका काल ओघके समान है ॥ २४३ ॥ गम्यग्मिय्यादृष्टि नर्षुमकवेदी जीवोंका काल औपके समान है ॥ २४४ ॥

वे दोनों दी गुत्र गुगम हैं।

अमृष्यतमम्यग्राटि नपुंसकतेदी जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना शीरों है बरेबा मुर्वेदाल होते हैं।। २४५ ॥

र क्षत्रीत पति जायनेवाटर्ट्हर्वः ह छ। छि। १, ४,

६ इन्दर्भगाननः बाजीतंस्वेताः प्रकारिक्तै। । प्र. थि. ६, ८.

६ बाजामनन्दरायाचित्रविवादाप्रशासी बावप्रवृत्त ह ह, वि. १, ८.

४ किन्द्रदेशकायां श्रीमार्थीयां विदेशका वर्षः काला । स. वि. १, ८,

सुगममेदं सुनं ।

एगजीवं पडच जहण्णेण अंतोम्हत्तं ॥ २४६ ॥

दुरो १ मिन्छादिहिस्स संजदासंजदस्स वा दिहमग्गस्स असंजदसम्मर्ष पढिविजय सम्बज्जहम्बद्धमन्छिय शुनेवरं गदस्संतोष्ठ्रसुवरुँमा ।

चनकरसेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ २४७ ॥

दुरो ! अद्वावीससंतक्तिमानस्य सचनपुढनीय' उप्पिञ्जय छ पञ्जवीओ समाः भिष विस्तिमय विगुद्धो होद्य सम्मच पडिविज्जय अंतीसुद्रवायसेसे आउए विच्छचं शंद्य आउअं पंथिय अतासुद्रचं विस्तिमय निग्मदस्स छहि अंतीसुद्रचेहि उज्यवेचीस-सारारीयर्लमा ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव अणियदि ति ओयं ॥ २४८ ॥ इते ! णाणेगर्वावबहण्युक्कसमकोदेह ओयादो विसेसामावा।

यह सूत्र सुगम है।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवाँका जयन्य काल अन्तर्मुहर्त है ॥ २४६ ॥

मर्थेकि, रप्टमार्गी निष्यादिष्ट या संवतासंघत जीवके असंवतसम्पन्तको प्राप्त होकर सर्पेजधम्य काल रह करके अध्य ग्राणस्थानको प्राप्त होने पर अन्तर्गुहुर्त काल पाया जाता है।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल कुछ कम तैतील सामरोपम है। १४७।। प्यांकि, मोदकर्मकी भट्टावील महतियोंकी ख्वायाले किसी जीवके सातर्यों पृथिमीम सपम होकर, छह पर्योक्तियोंकी स्थ्यम करके, विश्राम कर भीर विद्युत्त होकर, सथा सम्यवस्थको प्रात होकर, भायुके श्वन्तमुँहर्त स्थरोय रहने पर, विष्यात्मको जाकर, भागामी मयसम्बन्धी भायुक्ते योगकर, अन्तमुँहर्त विभाग करके निकलवेयाले जीवके छह अन्तर्नुहुत्तिले कम तैतील सागरोपम काल पाय जाता है।

संयतासंयतसे लेकर अनिष्टचिकरण गुणस्थान वक नपुंसकवेदी जीवोंका काल

आरेपके समान है।। २४८॥ ं फ्यॉकि, नाना भीर एक जीवकी अवेशन जयन्य और उन्क्रष्ट कालके साथ ओपसे कोर विशेषता नहीं है।

१ पुरुवीर्य प्रति जन्मिनान्तर्युहुर्तः । सः सि. १, ८,

र उत्कर्वेण त्रवस्थितत्वागरीयवाणि देशोनानि । स. वि. १, ८,

■ प्रतिपु ' सचपुदर्शेषु ' इति पावः ।

अपगदवेदएसु अणियट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेविल ति और ॥ २०९ ॥

. खुदो १ षाणेगजीवजहण्युक्कस्सकालेहि ओवादो विसेसामावा । एवं बेटमगणा समता ।

कसायाणुवादेण कोहकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-छोभकसाई मिच्छादिट्टिपहुडि जाव अपमत्तसंजदा त्ति मणजोगिमंगों ॥ २५० ॥

हुदो ? द्व्यट्टियणपानलंबणेण । पज्यदियणए अवसंविज्जमाणे असि विभेषो । वै चच्दस्सामे । वै जचान कोषकसाई मिन्छादिष्टी एनाबीव पहुंच्य जहण्येण एनामपं । एत्य कसाय-गुणपराचित मरणेहि एनासम्भे । वच्यो । बाबार्क एनासम्भे । क्षायरेख करायुप्पचीदो । वं जचान्एको सामणे सम्मामिन्छादिष्टी अर्वजदसम्मादिही वंदर संजदो पमचसंजदो या कोषकसाई एनासम्भं कोषकसायदा अरिव वि मिन्छर्च गरी । एसा समापरापची ।

अपगत्येदी बीवॉमें अनिवृत्तिकाण गुणस्थानके अवेदमागसे तेकर अवेशि फेबरी गुणस्थान तकके बीवोंका काल ओवके समान है ॥ २४९ ॥

क्योंकि, नाना और एक जीवकी मंपेशा जयम्य और उत्हर कालके शाय मोपने कोई विदेशपता नहीं है।

वस्यवा नहा है।

इस प्रकार बेदमार्गणा समाप्त हुई।

कपायमार्गणाके अनुवादते कोचकपायी, मानकपायी, मायाकपायी और होर्ग कपायी जीवोमें मिध्यादृष्टि गुणस्थानस लेकर अत्रमचसंयत तकका काल मनोपोगियाँ

समान है ॥ २५० ॥

क्यों कि, सुत्रमें द्रामाधिक नवका अवल त्रवन किया गया है। किन्तु वर्षावाधिक नवें अवल त्रवन करने पर विद्यागता है। उसे कहते हैं। जैसे— क्षेत्रण क्या मिण्यारी अवस्थान विश्वास क्षेत्रण क्

१ भारतदेशमां बायान्यवर् । स. वि. १, ८.

६ क्याबाद्वादेव चतुन्ध्यावाची विष्यादृष्टवायवस्तान्त्रावी सबीवीमिवत् । छ. छि. १, ८,

t, 4, 240. 1

ं एको मिच्चादिह्वी अण्यकसाएणस्टिदो, तस्स अद्धानसएण कोपकसात्री आगदो, एगसा काञाणुगमे चहुवसाह्याञ्चरस्यणं भेडेण सह दिहो। विदियसमण् सम्मामिच्छचं असंजदसम्मर्च संजमासंजम् अप्पमः माचेण संजमं वा पडिवण्यो । एसा गुणपरावची । एसी मिच्छादिही अण्यक्रमाएणच्छिदो वसदानसम्बद्ध कोहकसाई वादो । एगसमयं कोहेण सह दिहो । विदियसम्पर मदो अन्य वसावस्य उववण्यो । यसो मर्गण्य पगसमञ्जा । कोहेण मदी जिस्मादीरण उत्पादकार वस जन्म त्युप्पणात्रींवाणं पदमं कोघोदयसावरुंमा । माणेण महो मणुसगरीरण उपादेदका, धुप्पन्नामं पदमसम् मानोदयनियमीवदेसा । मापाए मही विस्तितार्गम उपारे-ही, तत्थुप्तक्वाकं पढमसमय माओदयावयमोनदेसा । होमैक महो देवमहीयक उप्पाद-ी, तत्युष्पण्याणं पहमं चेत्र लोहोदओ होदि वि आहरियपरंपरागद्ववदेशा'। एवं]णहाणार्ण वि माद्य वचन्त्रं । एवं माण-माया लीमार्ण वचन्त्रं । मगरि फनाय-गुण-

समयकी महत्त्वमा है। यक मिध्याद्वरि जीय जो कि अन्य कवायमें वर्तमान था, करा कवायके कारस्वतः कामक्ष्यायका मान्य इत्या । यक समय घर का यक्ष्यायका स्था विद्यास्त्र है । हितीय समयमें सम्बोधिक्यायकी भयया भारयमसम्बन्धको, भारता संवासित्तम्, भारता हिताव रामका राज्यान्ववात्वका भववा नार्मितात्वका भववा राज्यात्वका भववा राज्यात्वका भववा अवस्ति । भवतत्त्वतावके साथ संवत्तको मास हुमा। यह गुवस्थात्वरिवर्धत है। यह तिस्वाहरि और कार्य करावमें विद्यान था। वस करावके हाल्यावसे वह कोरकस्वी ही गया। दक समस्

1000 नाय क्रम्पमा ।प्रभाग था र वस क्रमायक कालस्वस यह कायक प्रपा हा प्रपा र यक समय क्रमायक साथ दक्षिणीयर हुमा । युना विर्ताव स्तर्यय व्यवस्था हा प्रपा र यक समय हैसा । यह मरणहीं अवेक्षा यह समय हुआ। ऋध्यत्वावक साथ मरा हुआ जीव नरकातिमें क्षणा १९ मध्यम् मध्यम् व्यवस्था प्रकारमञ्जूषा । भाषक्षणायकः वाष्ट्र मध्य क्षणा भाव गरेणामान व्यवस्य करामा साहित्, क्योंकि, मरकामें वरम्य होनेवाहे अध्यक्ष सर्व भयम मोचक्रपायकः जराज करामा च्याहर, क्याफ, नरफाम शरक हानवाः वाचार राव मध्यम माध्यक्राधक बहुत वाचा जाता है। मानक्ष्मकृत सरा हुन्य और सहुत्वसिन्धे सक्स कराना चाहिए, سمايج ع वर्षाहि, मनुष्यामि बागम हुए बीबाँहे अध्य सम्बद्धी सावहवावने बहुवने नियमका वर्षास् प्रवास, महापान वाटक इर जावार, अवस प्रवास साम्राचिक व्हच्यः ग्राचनक व्हच्यः देखा जाता है। माराक्राचित महा हुना और तिर्वेशतिस अञ्चल कराता साहित, स्वाहे, विर्धेशोहे जत्यम होतंक मधम समयम मायाक्यायक जनवहा नियम देखा जाना है। साथ ावधवात अवाध कावक मध्या वाधावम माधावधावक व्यवका ताधाव वृद्धा भागा है। हास करायसे महा हुमा जीव देवातिम उत्पन्न करामा खाहिए, क्योंकि, उसमें उत्पन्न हेत्सान जाराज करा क्षेत्र वाच प्रमाणक करण कार्या जावक प्रमाण जाक कार्य व्यक्ति है। वेसा आबार्ववरत्यसम्बन्ध क्ष्येस है स्था जाराक तथ नथम हामकाराच्या वहच काटा है। च्या माजाव्यव्यवस्थान व्यवहार हता महारते होय गुणस्थामोंका भी काठ जान कर कहना व्यक्ति । इसी महार मानकार. अरुत्तर होत्र युवन्यामान्त आ काल काल कर कहता काहर । हता स्वतः वाकरार सायाकवाय और सामकवायों व सरोबी सहस्या करना वाहर । विरोध वाव दह है कि नाराक्षत्राच्याः व्यासक्षत्राचाक काव्याकः सक्त्याः काव्याः व्याद्यः । व्याक्षकः वाद्यः व्याद्यः । व्याक्षकः व करावपरिवर्तनः, गुणवरिवर्तनः, मस्य और स्वामानः, इत साराकः प्रासः व सम्बद्धः अवस्थाः

र बार्राष्ट्रितिस्वरहरूरहेड स्थापन्यदेवकास्ति । कार्ने स्व. साम सार्थका स्वरंत स्थापन स्वरंत स्वरंत । यों जी १०४

दोण्णि तिण्गि उनसमा केनचिरं कालादो होंति, णाणाजीनंषु जहण्णेण एगसमयं ॥ २५१ ॥

विस् वि कसाएस दोण्डि उबसामगा, अभिपटीदो उबसि तिण्डं कसापणमण्या लोमकसाए तिण्णि उबसामगा, उबसंवकसाए लोमोदयामाता । एदेसि कसापणणि गुणपराविचःवाघादेहि एगसमञ्जो णस्य । कुदो १ वहाविहुवएसामाता । किंतु अभिष् सहुमसापराइयाणे चढंत-ओपरंत-पढमसमए मदाणे एमसमञो लब्बह । अपुनस १ ओपरंतस्स पढमसमए चेव । कुदो १ चढमाणअपुन्वस्स पढमसमए मरणामाता ।

उकस्सेण अंतोमुहुत्तं:॥ २५२ ॥

खुरे। १ चंदत-ओयरतपञ्जयपरिणद्जीवेहि अतीग्रहत्तकालं एदेसि गुण्हाणाण खण्णज्यलंमा ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २५३ ॥

कोष, मान और माया, इन तीनों कपायोंकी अपेक्षा दो उपशामक अपीर क्रां और नर्षे गुणस्थानवर्धी उपशामक जीव, और लोभक्षायकी अपेक्षा तीन उपशाम अपीर आटर्षे, नर्षे और दश्वें गुणस्थानवर्धी उपशामभेष्यारोहक जीव, कितने कात क होते हैं है नाना जीवोंकी अपेक्षा जयन्यसे एक समय होते हैं ॥ २५१ ॥

कोधादि तीनों ही करायांस अपूर्यकरण और अतिवृश्विकरण, ये हो गुलस्थानर करवासक औय होते हैं। क्योंकि, अतिवृश्विकरणसे अपर तीनों करायांका समार है। होरे करायांस अपूर्वकरण, अपरे क्योंकि, अतिवृश्विकरण के लिखुलिकरण, ये हो गुलस्थानर करायां अपूर्वकरण, अपरे होते हैं। हरे करायांका अपूर्वकरण, अपरे होते हैं, क्योंकि, उपसानक पाय गुलस्थानमें लोधकरायके उरस्का समार है। उरमुक दो और तीन गुलस्थानमें उपसामकों करायांवार, इन तीनों ही अपरेशा यक समय हो। अपरेशा नहीं दे क्योंकि, उस करायांवार करायांवार, इन तीनों ही अपरेशा यक समय हो। अपरेशा महीं व्यवस्थान करायांवार करायांव

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्गृहर्त है ॥ २५२ ॥

क्यों है, इन्हामधेणी वर खड़ती और उतरती हुई वर्षावसे वात्वन त्रीवीं ही मीर्न अन्तर्मुहन बाल इन गुणक्यानों के अदाग्य अर्थान् वात्वण करसे वाया जाता है।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीरोंका जपन्य काल एक समय है ॥ १५१ ॥

द इबीकाइबद्दाः अअ देवछ्डोभरव च अअ वामान्तीयः वावः । ब. वि. र, र.

हुदो १ तिण्हपुरसामगाणं मरणेण ष्यासमञ्जेवतंमा । उपकरसीण अंतोमुहुतं ॥ २५४ ॥

मुदो १ फसायाणपुरयस्य अंतोपुरुचारो उत्ररि विच्छवण निवासी होदि वि गरुवेदसा ।

दोणि तिण्णि खना केनचिरं कालादो होति, णाणाजीनं पडुन्न जहण्णेण अंतोमहत्तं ॥ २५५ ॥

ष्पीकि, अपूर्वकरण, अनियुक्तिकरण और खुद्दमसाम्पराय, इस तीनी उपसाधिक जीवीके सरणके साथ एक समय पाया जाता है।

उक्त जीवॉका उत्कृष्ट बाल अन्तर्<u>ध</u>र्द्ध है ॥ २५४ ॥

क्योंकि, करायोंके उद्यक्त अन्तर्भुहते कालने ऊरर विश्वयन विवास होता है, इस प्रकार गुरुका उपरेस है।

जपूर्वकरण और अनिश्वविकाण, थे हो गुणव्यानवर्गी शपक वधा अपूर्वकरण अनिश्वविकरण और ग्रह्मसाम्पराप, ये शीन गुणस्थानवर्गी श्वयक सिन्दे बारू तक होई हैं ! नामा जीवॉडी अपेशा जयन्यसे अन्तर्यहुर्त्त वक होते हैं ॥ २५५ ॥

धाना आवाका अपसा अपन्यस अन्तमृतुत तक दात द ॥ २५५ ॥ - घोका —दन राष्ट्रीय क्षरक ब्रीवॉक एक समयममाण बाट वर्षो मदी राषा जाना है।

समाधान—जन भागंतायर उत्तर बारे हैं कि बन दोनों या सीनों गुका कारों में मा में नायपरिवर्गने पर समय पाया जाता है, व्यक्ति, स्वक या उपतासकों में कारी विद्यापत कार्यापत है उपता कार्या वाद्यापत कार्यापत कार्या है इपता कार्या कार्या कार्या कार्या है। वाद्यापत कार्या है कार्या है। वाद्यापत कार्यापत कार्या

१ ×× ६री: क्पवरी: वेरवकोश्रत च × बादान्येन: काव: 8 स. हि. १, ८,

उदाहरणं- एक्को मिच्छादिङ्की सत्तमाए पुढवीए उपपन्तिय ह समाणिय विसंगणाणी जादो । अप्पणी आउद्विदिमशुपालिय कार्ज काउण विस्ता विभंगणाणं, अवज्ञचद्धाए तस्य विरोहा । एवमंत्रीग्रह्मणानेचीममागरीवमः णाणस्य उक्कस्यकाली होति ।

सासणसम्मादिद्दी ओवं'॥ २६५ ॥

णाणाजीनं पट्टच्च लहण्येण एगसमञ्जा, उक्तस्त्रेण सगरासीही एगजीवं पद्वच्च जहणीण एगसमत्री, उक्कस्मेण छ आवलियात्री, इन्बरस मेदामाबादो ।

आभिणिनोहियणाणि-सुद्रणाणि-सोधिणाणीस पहुडि जाव सीणकसायवीदरागछदुमत्या ति ओर्घ' ॥ २६६॥

इदो ? णाणेगजीवजहण्युक्कसमकालेहि एदेखि श्रीघादी विवेसामारा। स् ओघिणाणिसंजदासंजदेगजीवुक्कस्सकालिह अतिय विसेसो' । तं जहा− एक्झे क्रां

उदाहरण- एक मिथ्यादिष्ट जीव सातवीं प्रियोमि उत्पन्न होक्त मौर हाँ हो रित्योंको सम्पन्न करके विभागन्नानी हुन्छ। अपनी आयुश्चितको परिपालन कर माँह करके निकला। तथ उसका विभागमान नष्ट हो गया, क्योंकि, अपर्योतहालमें विकास होनेका विरोध है। इस प्रकार अन्तर्भुहुने कम तेतीस सागरोपम विभागतस्य उन्हां ह

विभागनानी सासादनसम्पग्हिष्ट जीवोंका काल ओयके समान है ॥ १६५॥ क्योंकि, मामा और्थोकी अपेक्षा अधन्य काल अस्य समय राहर काल सर्वी की असंब्यातगुणा, तथा एक जीवकी अपेक्षा जयन्य काल एक समय, ४११७ कार्य

बाविवित्रमाण, इस प्रकार भोच कालसे कोई मेर नहीं है।

आमितियोधिकतानी, शुतमानी और अवधिज्ञानी जीवोंने असंपत्रमानी गुणस्यानमे छेहर क्षीणस्यायशीवरागछमस्य गुणस्थान वक अभिका कार्र समान है ॥ २६६ ॥

पर्योक्ति, माना श्रीर एक जीयसम्बन्धी जधन्य श्रीर उत्तरह बातही होते. राशेक जायोंके कालमें बोचले कोई विशेषता नहीं है। केवल, व्यवस्थानी संर गुणस्यानसम्बन्धी एक जीवके उन्हर कालमें विदेशका है। केवल, मर्यापनाना पान

६ तानादवनम्बन्देः वामान्योतः कातः । त. वि. १, ८.

२ वासितवीत्रेवहणुतावनियनःवर्षवद्वेवङ्कानिनां सामान्योत्तः बादः। स. ति. १,४०

६ महितु " बहित कि वितेवा " वित पाटः ।

काराणुगमे संबद्धारपरवर्ग करिमञ्जो साम्णिसम्युन्छिमपन्जचएस् उववष्मो । छहि पज्जचीहि पज्जचपदो विसंतो उदो संजमासंजमं पंडियन्जिय मिन्सदणाणी जादो । तदी अंतीमुकूर्च गेन्स अमिन [848

मणपञ्जवणाणीसु पमत्तसंजदपहुं जित्र सीणकसायनीदरागः मत्या ति ओपं ॥ २६७ ॥

्र ११ एमत्तापमचराजदाणमुबसामगाणं स्वनाणं च णाणगजीवजदाणुकस्पकातेदि ते भेदाभाषा ।

केवरुणाणीसु सजोगिकेवरी अजोगिकेवरी ओयं ॥ २६८ ॥ इदो १ केयलणाणविसहिद्समोगिः अजोगिकेयलीणममारा ।

एवं जाजमगाजा समता।

प्तंजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदपहुडि जाव अजोगिकेविट

नियाँकी सत्ता रखनेवाला कोई एक और संबंध सम्मार्टेडम, पर्यानकोंसे उन्हा ्रेर पर्वातिगोले पर्वात हो, विभाग करना दुवा, विग्रह होकर, संवमाधेवमको वि स्वतानी हो गया। युनः सन्त्रभुतिके वद्यान् स्वतिहानको उत्पत्त वना पर्यवानियोमें प्रमधनंपत्तवे लेकर श्रीमकतायवीवरागष्टवस्य ग्रणस्थान प्रमान और अप्रमानक्षिपमांका तथा उपसामक और श्रेपकाँका कामा जीव जवाय और जहार शाहांके साथ भाषावस्त्रणांस कार भेर महा है। नियोमें सयोगिरेवली और अवागिरेवली जीवाँका कान आपरे समान

हेरदहानसे रहिन सपोगिहेरजों और बस्ताविदेग्तियाँका नाम है। इस प्रकार कानमार्गका समान हुई।

गाते अनुवादन संगतीन प्रमचसंगतन लेहर अयोगिकेहनी तक

विवासीहात देवि " वृद्धि साहत ।

होताहिक केरोप्तवस्थवति विशासित्यस्य न्याववस्थवरण्डास्य स्थापनास्था साम कामान

सामण्णसंजमे अवर्लविदे विसेमाणुवलद्वीदो ।

सामाहय-च्छेदोवट्टावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदपहुडि जाव

यद्रि ।ते ओघं ॥ २७० ॥

छ्दो १ पमचापमचार्ण णाणाञीनं पहुच सब्बद्धा, एगञीनं पहुच जहणी समञ्जो, उकस्सेण अंतीमुहुन्तं । दोष्ट्रमुवसामगार्गं लहरणेण णाणेगतीयं पहुन त्ताचा, जनरावन जाणश्रद्धन । वार्वश्चनाताचान जवरूवन जाणाचान । उत्सम् समञ्जो, उक्तसीण अंतोमुहुचे, दोण्हं खबगार्य गामेगजीर्व पहुच्च जहण्युक्तसीण श्रद्वचिम्च्चेष्ण ओघादो भेदामाना । परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्त-अपमत्तसंजदा और्घ ॥ २७१ ॥

हृदो है नामाभीयं पहुच्च सन्यद्धा, एराजीवं पहुच्च जहण्युनकस्तेन एगसम्ब अतोमहत्त्वमिच्चेदेहि विसेसामाया ।

खवा ओवं ॥ २७२ ॥

<u>खहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा</u> *व्यस*म

इदो ? सहमसांपराइयसुद्धिसंजदाणमुमयत्य संजमभेरामाता ।

पाया जाता।

फ्योंकि, संवमसामान्यके अवर्षंकन करने पर ओवके कालसे कोई मेर नहीं सामायिक और धेदोपस्थापनाशुद्धिसंयगोमें त्रमचसंयत गुणस्थानते हेका

अनिष्ट्रचिकरण तकके जीवीका काल ओपके समान है ॥ २७० ॥ क्योंकि, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयतीका नाना जीयोंकी अपेशा सर्वकाल है। यह जीवकी बंदेसा जवाय काछ एक समय है और उरठाट काल बाता जीवका जनका तानका है।

वुषारपानवर्ती दोनों उपतामकाँका नाना और एक जीवकी अपसा जवाय काल एक समर है, तथा उत्हर काल अन्तमुहर्त है। बाटवें और नवें गुणस्थानवर्गी दोनों सरसोंता नावा अाव और एक जीयकी अधेशा जम्म और अरुष्ट काल अम्तर्मुक्त वे, इस प्रकार औरके कालसे कोई मेद नहीं है। परिहारिवेद्यादिसंपवोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयवोंका काल जोपके समार है।। ३७१।।

पर्याहि, नाना जीवाँकी अवेशा सर्वकाल, एक जीवकी अवेशा जावन्य और उन्हर बाह्य दक्त समय भीर आतम्हर्न है, इस प्रकार भोधके कालसे कोई विशेषता नहीं है। परममाम्पराधिकश्रद्धिसंयतोमें पश्ममाम्पराधिकश्रद्धिसंयत उपशामक और धपकोंका काल ओपके समान है ॥ २७२ ॥

पर्वोत्ति, गृहमसाम्बराविकनुद्धिसंवताँके दोनों भेणियाँमें संवमके भेदका नमाव है।

```
t. ٤, ٩٥٤. ]
                                    धाटाणुगमे चनसुरंसाणिकाटपरूवणं
                    जहानसाद्विहारसुद्धिसंजदेसु चहुट्टाणी ओघं ॥ २७३ ॥
                   हरो ? ओघारेसेस चहुण्हं गुणहाणाणं संजमभेदाणुक्तंमा ।
                                                                                 [ 844
                   संजदासंजदा ओषं'॥ २७४॥
                  सगमा एदस्स अत्यो ।
                 असंजदेसु मिच्छादिद्विषहुडि जान असंजदसम्मादिद्वि वि ओएं'
377
          11 204 11
                एदरस वि अत्थो अवधारिओचद्वार्ग सुगमी।
             दंसणाणुबादेण चक्खदंसणीडु मिच्छादिट्टी केनितरं कालादो होति,
      णाणाजीवं पहुच्च सन्वद्धां ॥ २७६ ॥
             इदो ? चक्खुदंसिनिमिन्छादिहिनिरहिदकालामावा।
           यथारुपावविद्वाश्यद्विनंपतामें अन्तिम चार गुणलानवाले जीवोक्त काल ओपके
    समान है।। २७३॥
          चयों है, भोध भीर आदेशमें चारों गुणस्थामों है संवमोंने कोई भेद नहीं पाया
         .
संपतासंपताँका काल ओचके समान है ॥ २८४ ॥
         इस मुख्या मध्य सुगम है।
        असंपत जीवोमें मिध्वादृष्टि गुणस्थानते लेकर अर्थपनसम्प्रादृष्टि गुणस्थान तक
 अमंपर्वोद्धा काल ओपके समान है ॥ २७५ ॥
       निरहोंने भ्रायसम्बद्धाः बालवं। मलीक्षीति भवसारक विवाहे, वेसे साम्बोहे लिए
इस स्वका भर्थ समा है।
     दर्शनमार्गणाके अञ्चयदमे चछदश्चनी जीवामे विध्यारिष्ट जीव कितने कात तक
                     इस प्रकार संयमगार्गणा समाप्त हुई।
ीते हैं ? नाना जीवोंकी जवना मर्ववाल होने हैं ॥ २७६॥
     चयाक, वशुक्रांना (मध्यार र जावीस रहित कालका समाप है।
   हे दहनानुवादन पहुदेशानु विस्ताहदेशाव बाव पहुन कर करत । व १० ०
```

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुतं ।। २७७ ॥

फुदो १ सम्माभिच्छादिहिस्स असंजदसम्मादिहिस्स संजदासंजदस्स संबद्धस वा दिद्दमग्गस्स भिच्छत्तं गेतुण सञ्जजहण्णद्वमच्छिय गुणेवरं गदस्स अंतीष्ठद्वतकालुवरुंमा।

उकस्सेण वे सागरोवमसहस्साणि ॥ २७८ ॥

उदाहरणं- एगो। अचक्तुदंसणी भिच्छादिद्वी चक्तुदंसणीस उपवण्णो। चक्तु-दंसणी होद्ण वे सागरोजमसहस्साणि परिभामय अचक्तुदंसणं गरा। लद्धिअपन्त्रचेस चक्तुदंसणं णिव्यत्तिअपज्जत्ताणं व किष्ण उच्चदं १ ण, तस्हि भवे तत्य चक्तुदंसण्य जोगाभावा। णिव्यत्तिअपज्जताणं तम्हि भवे णियमेण चक्तुदंसणुवनोगुवर्लमा।

सासणसम्मादिद्विषहुडि जाव खीणकसायवीदरागछटुमत्या ति

ओवं' ॥ २७९ ॥

कदो ? चक्खदंसणविरहिदसासणादीणमभाश ।

[ं] एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जयन्य काल अन्तर्भृहते है ॥ २७७ ॥

क्योंकि, इप्रमानीं सम्याग्मिण्याहिए, या असंयतसम्यग्हिए, या संयतासंयत, या संयतके मिण्यायको प्राप्त होकर यहाँ पर सर्थ जमन्य काळ रह करके अन्य गुणस्थानकी प्राप्त होनेवाळे जीवके अन्तर्मुहुर्त काळ पावा जाता है।

चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका उत्कृष्ट काल दो हजार सागरोपन है ॥ २०८॥ उदाहरण— कोई एक अवश्चदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव चश्चदर्शानेयाँमें उरापन हमा भीर चश्चदर्शनी होकर दो हजार सागरोपम काल तक परिश्रमण करके अवश्चदर्शनकी मान हो गया। (इस मकार स्त्रोक काल सिद्ध हुमा।)

ग्रंका — निर्मृत्यपर्याप्तकांके समान छन्यपर्यापकांम चश्चरक्षन नया नहीं कहा।

समाधान — नहीं, क्योंकि, लब्धवयांकिकाँके उसी अवसे चश्चरांनीवयोगका धमाय पाया जाता है। किन्तु निर्मृत्यवयांकिकोंके तो उसी अवसे नियमसे ही चश्चरांनीवयोग पाया जाता है।

सासादनसम्पर्वाटे गुणस्थानसे लेकर श्रीणक्रयायशीवसगरद्यस्य गुणस्थान हरू चसदर्जनी जीवोंका काल जोपके समान है ॥ २७९ ॥

क्योंकि, चशुरश्रांनसे रहित सासादनादि गुणस्थान मही पाये आते 🖁 ।

t पुत्रजीत जाति अवस्थेनान्तर्युहर्तः । श्व. वि. १, ८,

व दन्दरेन हे सामग्रेपमस्य । स. वि. १, ८.

६ काठादनक्रम्बन्द्रवार्थनां श्रीवद्यावान्तानां सामान्येन्द्रः बाढाः। स. शि. १, ८,

अवनखुदसणीसु मिन्छादिष्टिषहुडि जाव श्लीणकसायवीदराग-व्हायस्या ति ओएं ॥ २८०॥

छदुमत्या ति ओघं ॥ २८० ॥

सुद्रो १ अचनलुरंसणविरहिद्सावरणजीवाणुवर्तमा । ओधिदंसणी ओधिणाणिमंगो ॥ २८१ ॥

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ २८२ ॥ एदाणि दोवि सुचाणि अवहारिदणाणाणुवादाणं सुगमाणि । एवं देवलमगणा सम्बा ।

लेसाणुवादेण किण्हलेसिय-णीललेसिय-काउलेसिएस मिन्छा-दिही केवचिरं कालादी होति, पाणाजीवं पहुच सव्वद्धां ॥ २८३ ॥ छुरे। १ तन्यकले विकेसियमिन्छारिहोगं विद्यामया। एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतीमुहत्तं ॥ २८४ ॥

अयमुद्धिनियोंने विध्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर धीणक्यापबीतरागृष्ठभस गुण-स्थान रुकका काल श्रोपके समान है ॥ २८० ॥

पर्योक्ति, अवशुर्शनसे रहित सावरण त्रीय नहीं यांचे जाते हैं।
जयपिद्यूंनी जीशंका काल अवधिमानियोंके समान है।। २८१।।
केरलद्र्यूनी जीशंका काल फेरलज़ानियोंके समान है।। २८२।।
कानमान्याके कालावयादका अवधारण करनेयाले शिष्ट्रोंके लिए ये होनों है। हुए

इस प्रशाद दर्शनमार्गणा समास हुदे ।

हिरवामार्गणाके अञ्चलदेश कृष्णहेल्या, नीतहेल्या और कार्यावरेल्याने ओरॉने मिष्पारिट जीव किवने काल तक होते हैं है नाना औरोंकी अपेक्षा सर्वकात होते हैं॥ २८३॥

वर्षोति, सर्वकाल ही सीनी अञ्चय छेरचायाले विष्णादिष्ट श्रीवीके विरह्णा समाव है। एक जीववी अवेद्या तीनी अञ्चय लेल्यावाले जीवींका जपन्य काल अन्तर्दृष्ट्

है ॥ २८४ ॥

u बरपूर्व नेतृ दित्यात्रवादिशायववायान्तातां सामान्येनाः वाष्टः । स. वि. १, ८.

य सामिनेशास्त्रप्रिनेशास्त्रप्रेन्थायाः स्वाप्त्रप्रात्ताः तिः १० ८० इ.केरपानुवारेत युव्वनीतायारोप्तित्यान्त्र विष्यारोप्तीनार्यायोग्यायायाः वर्षे वाकः । स. वि. १० ८० ४ एवजीतं प्रति वायायेवानवर्षत्तिः । स. वि. १० ८०

किण्हलेस्पाए तात्र अंतीमुहुनपरन्यं कीरदे । तं ज्ञा- पीठलंस्पाए अल्ब्हिस्स तिस्से अद्वाखएण किण्हलेस्सा जादा । सन्बल्हुमंतीमुहुनमन्छिद्गं गीललेस्सिन्ने जादो । कारलेस्सिन्नो किण्य होदि १ ण, किण्हलेस्साए परिणदस्स जीवस्स अर्णवस्त्र कारलेस्सपिणमणामसीए असंग्रमा ।

णीललस्साए उच्चेद्- द्दीयमाण-बहुमाणकिण्डलेस्साए काउलेस्साए वा अन्छिदस्स णीललेस्सा आगदा । सब्बज्दण्णमंतीमान्छिय जदण्णकालाविग्रहेण काउलेस्स किण्डलेस्स वा गदो, अण्णलेस्साममणासभवा । के वि आदरिया द्दीयमाणलेस्साए वेव

जहण्णकाला है।दि चि मणीति।

, फाउलेस्साए वि उच्चरे- हायमाणणीरुलेस्साए वेउलेस्साए वा अन्छिद्स्म फाउलेस्सा आगदा । तस्य सन्बजहण्णमंत्रीमुहुत्तमन्छिय जिंद वेउलेस्सादा आगदो, वे णीललेस्सं णेद्रच्ये । अह णीललेस्सादो आगदो वो वेउलेस्साए णेद्रच्ये, अन्णहा संक्लिस-विसोहीओ आउर्तस्स जहण्णकालाणुवचचीदो। एस्य जोगस्सेव एगसमञ्जेजहण्ण-

पहले कुष्णलेहराके अन्तर्मुहुन कालकी महत्त्वणा की जाती है। यह इस महार है— मीललेहरामें वर्तमान किसी जीवके उस लेहराके काल झर हो जानेसे रूप्णलेहरा हो गाँ। और यह उसमें सर्पलसु अन्तर्मुहुन काल रह करके नीललेहरगायाला हो गया !

द्यांका-ए प्राचित्रयाके प्रधात कापीतलेह्यायाला वर्षी नहीं होता है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, कृष्णलेश्यासे परिणत जीवके तदनन्तर ही हायोत-लेश्यारुप परिणाम शालिका कीना अनेपन है!

यद नीलिक्टर्शके अन्तर्मुह्त वालकी प्रक्षपण करने हैं— हीयमान इच्लिट्समें अथया पर्धमान काषीतलेहरामें विचमान हिसी शीवके नीललेहरा मार्गर । तब यह बीव उसमें सर्व अधन्य अन्तर्महुत काल रह करके जायन कालके अधिरोपके यधासंस्य कार्योंने हेटसाको यथाया इच्लिट्सको प्राप्त हुमा, क्योंकि, हन दोनों लेहसाओं के तियाय उसके अन्य किसी लेहसाको अधान असंसय है। किनने ही आवार्य, होयमान लेहसामें ही जायन

फार होता है, पेमा कहते हैं।

भव कापोलहरशक जयन्य काएको कहते हैं— हायमान नीलहरपार्ट सपवा तैजीलेरपार्मे विद्यमान जीवके कापोतलेरपा भागई। यह जीव उस लेरपार्मे सर्पेश्वण भन्नोर्ट्टने काल रह करके, यदि तेजीलेरपासे भागा है तो नीललेरपार्मे ले जाना वादिए। भीर पदि नीललेरपासे भागा है तो तेजीलेरपार्टे जाना वादिए। सम्पया संहेंग्र भीर विद्यादिको सामुख्य करनेवाले जीवक जम्मय काल नहीं वन सकता है।

र्युका — यहां पर योगपरायनंत्रके समान एक समयरूप अधन्य काछ वयाँ नहीं

र मन्दरी " हावबान " इ.चरि पाटः ।

कालो किच्न स्म्यदे १ ण, जोग-कसायाणं व स्त्ताए विस्ता प्रावणीए गुणपरावणीए मरणेण वापारेण था एमसमयकालस्तारंभवा । ण ताव स्त्तापरावणीए एमसमओ स्मारेण का एमसमयकालस्तारंभवा । ण ताव स्त्तापरावणीए एमसमओ स्मारेण, अध्यद्वेससाए परिणमिदविदियसमए तिस्ते विणातामाया, गुणंतरं गदस्त विदियसमए स्ततारावणाभावारे च । ण गुणपरावणीए, अध्यद्वेससाए परिणदिविदियसए स्ताए गुणंतरामाया। ण च मरणेण, अध्यद्वेससाए परिणदिविदियसण्य एसणामाया।

उक्कस्सेण तेत्तीस सत्तारस सत्त सागरोवमाणि सादिरेयाणिं ॥ २८५ ॥

पदेसिम्बदाहरणाणि । तं जया- णीललेक्साए अच्छिदस्स किण्डलेस्सा आगदा । तत्य सन्युक्तस्यतेषुकृष्वपिष्ठत्य अघो सचभीए पुढ़वीए उनवण्णो । तत्य तेषीसं सानारे-यमाणि गमिय उचिह्नदे । पच्छा वि अंतोग्रहचकालं भावणवसेण सा चेव लेस्सा होदि । एवं दोहि अंतोम्बद्धचिहि सादिरेयाणि वेषीसं सानारोगमाणि किण्डलेस्साए उक्कस्स-कालो होदि ।

पाया आता है है

१, ५, २८५, १

सप्रापान — नहीं, क्योंकि, योग और करायों के समान हेहयामें हैरवाका परिवर्तन, स्वया प्राप्तवान पिर्यान स्वया अपरा अभिर प्यापाति एक समय कराव्या राष्ट्र मान स्वया अपरा अभिर प्यापाति एक समय कराव्या माना अस्त यह । इसका कारण कहि कि न हो हेव्याणीयनिक हात्र पर कारण वापा जाता है, क्योंकि, विवरित हेरवासे पतिणत हुए जीवके हितीय समयमें उस हेरवाके विवास कामाय है। तथा इसी हकारने अन्य कुणस्थानकी गये हुए जीवके हितीय समयम अमय हित्या कि स्वयान कामाय है। तथा इसी हकारने अन्य है। स्वाप्तवान समय क्षेत्र है। स्वयान स्वयान समय क्षेत्र है। स्वयान समय समय क्षेत्र है। स्वयान है अपरा है। एक समय स्वयान है, क्योंकि, वर्षमानहेरवाके स्थापता कामाय है। स्वयान क्षेत्र है। स्वयान समय है। स्वयान समय है। स्वयान समय क्षेत्र है, क्योंकि, विवरित है। स्वयान समय क्षेत्र है, क्योंकि, विवरित है। स्वयान क्षेत्र है। स्वयान समय क्षेत्र है, क्योंकि, विवरित है। स्वयान समय क्षेत्र है, क्योंकि, विवरित है। स्वयान समय समय है। स्वयान समय समय है।

उक्त तीनों अद्युम लेक्पाओंका उत्कृष्ट काल क्रमझः साधिक तेतीस सागरोदम, साधिक सत्तरह सागरोपम और साधिक सात सागरोपम प्रमाण है ॥ २८५ ॥

इनके उदादरण इस प्रकार हैं — नीटलेरपामें विधानन किसी जीवके कृष्णलेरपा सागई । उसमें यह सर्वोद्दर सन्तर्गृत्ते काल रह करके अरण वर नीचे सागर्थ पृथियों में उरण्य हुना। यदां यह तेतीस सामरीपम काल विजायन निकला। को पीछे भी मन्तर्गुर्ते काल तक मायनाक पदांत वहीं है लिएया होती हैं। इस मकार दो सन्तर्गुह्तोंसे अधिक तेतीस सागरीपम हुण्यक्षेरपाका जाएक काल होता है।

१ तत्र देव प्रयक्तितायद्वसायकागरेपमाने लातिरेवानि । स. कि. १, ८.

K.

ſŧ णीलकेस्साए उच्चदे- काउलेस्साए अच्छिदस्स णीलकेस्सा आगदा । मेतोमुद्भुचमन्छिद्ण पंचमीए पुडवीए उववण्णो। तत्य सत्तारस सागरोवमाणि त गमिप उवविद्वि । उवविद्विस्स वि अंतीसुहुर्च सा चैव लेस्सा होदि । एवं व मृदुचेहि सादिरेयाणि सचारस सागरीयमाणि णीललेस्साए उनकस्सकाला होदि

काउलेसाए उच्चदे- वेउलेसाए अन्छिद्स्स सगद्वाए सीणाए ह आगदा । तत्य दीहमंतोमुद्रुचमच्छिय तदियाए पुढवीए उनवण्यो । तीर तस सागरोत्रमाणि तत्य गमिय उत्रवहिंदो । उत्रवहिंदसम वि सा चेत्र लेखा व होदि । एवं दोहि अंतोमुहुचेहि सादिरेपाणि सत्त सागरावमाणि काउलेस्साप काली होडि ।

सासणसम्मादिद्री ओघं'॥ २८६॥

कुदो ? णाणाजीवं पडुच्च जहण्येण एगा समझो, उपकरसेण रासीदो अर गुणो पलिदोवमस्स असंखेजजदिमागा, एगजीव पहुच्च जहणोग एगा समग्री, उ छ आवित्रयात्री, एदेहि तिलेस्सागदसासणार्थं तदी भेदामाया ।

उक्त तीनो अग्रुभ सेदयात्राने सामादनसम्बग्हाष्टे जीत्रोंद्रा काल ओपहे सम E 11 305 11

क्योंकि, जाना जीवाँकी धवेदता जधम्यने एक समय, उक्त्यों भवती गाँउ समेच्यानमुखा बन्यानसङ्घ समेच्यानयां साम बाट दे। वक जीवकी सोराम जनवनी समय भीर टन्टर्वस सह सायजीवमाण बाल है। इस सहारशे नीजी समुद्र सेरापरी मान दूर मानादनमध्यग्रहि जीवींने चालका भोषने काँदे भेद नहीं है।

भव मीळछेदयाका काळ कहते हैं — कापातलेदयाम वर्तमान जीवके मीळछेर गई। उसमें उन्द्रत्य अन्तर्गुहर्त रह करके यह जीय वांचर्या पूरियशीम उत्पन्न हुमा। वा मत्तरद्व सागरीयम काल उस छेदयाके साथ विताकर निकला। निकलने पर मी मन तक यही है। छदया होती है ! इस प्रकार दे। अन्तर्गहरोंसे अधिक सत्तरह सागरीग्र सदयाचा उन्हाए काल होता है। भव कारोतिहेदयाका उन्हाट काल कहते हैं — तेजीलेहरामें विद्यमान किसी जीके

सद्दाके बालके शीन हो जाने पर काषीनलेदवा सागई। उसमें बल्लर सम्तर्गृहर्न बाव कर मरण करके नृतीय पृथियोमें उत्पन्न हुमा । यहाँ पर उसी सहयके साथ गात साथी बाह दिनाकर निकला। निकलने है प्रधान भी यही लेहना अन्तर्महुन तक रहती है। महार दी शत्ममुहर्गोन अधिक सात सागरीयम कापीतवेदपाका उग्हर काल होता है।

१ बावध्यवस्यान्त्रिकावध्यान्त्रात्रात्रात्रात्राः वावध्योतः वावध्ये व. वि. १, ४.

१, ५, २८९.]

सम्मामिच्छादिद्वी ओघं ॥ २८७ ॥

हरी ? णाणाजीवं पहच्च जहणोण अंतासुत्वं, उकस्मेण सगरासीदे। असंस्वत्व-पुणा पलिरोवमस्स असंस्वज्ञादेभागो, एगजीवं पहच्च जहण्युकस्सेण अंतासुत्विमचेदेहि हरो भेदामाया ।

असंजदसम्मादिङ्घी केविचरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुच सञ्चद्धां ॥ २८८ ॥

सुगममेई सुने ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहृतं ॥ २८९ ॥

वं जहा-एमी असंबदसम्मादिष्टी बहुमागर्णीतकेस्माए अच्छिदो किप्हेनस्म महा। तत्य सम्बद्धानमान्त्रिय पुणे। णीतकेस्मामागदी । णीकनेस्साए उपचेद- हाप-मागकिप्हकेसिन्त्रो णीतकेस्सी जादे। ताए सम्बद्धानमंत्रीसुद्धवमन्त्रिय काउनेस्सं गदे।। काउकेस्सए उपचेद- एमे। सम्मादिष्टी हाषमावणीतकेसिन्त्रो कातकेस्सं गदे। तत्य

उक्त वीनों अञ्चम लेक्यावाले सम्याग्यादिष्ट कीबोंका काल जोपके समान है ॥ २८० ॥

क्योंकि, नाना ओवींकी अधेशा जयन्य काल सन्तर्महर्ने, वरहण काल सपनी सांहोसे सर्वयातपुर्वा परयोपमका सर्वयातयां साव दें। एक जीवकी भेशेशा जयन्य भीर उन्हार काल सन्तर्मुहर्ने दें, इस प्रकार इसका भोषकालके कोई भेद नहीं है।

. उक्त वीनों अञ्चल लेडवायाले असंयवसम्बग्धि बीव क्रियने काल वक्त होते हैं। नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं।। २८८ ॥

वह सूत्र सुगम है।

एक जीनकी अपेक्षा उक्त जीगोंका जयन्य काल अन्तर्मुहर्त है ॥ २८९ ॥

क्रीसे— पर्धमान भीरतिस्थामें विश्वमान कोई पक असेवनसम्पर्शति जीव इन्स्ट-सेरगारी प्राप्त हुआ। पर्दो पर सर्वेष्ठपण अन्तर्भुति कार रह कारके पुनः मीतिस्टक्सें आत्वता। मद मीलिस्ट्राका कारु कहते ई— हायमान इन्यतेरवादार कोई एक आंव मीलिस्ट्रावाता होत्या। उस तेरपान सर्वेष्ठपण अन्तर्भुति कार सक् रहक इन्स्ट कारीन-तेरपान प्राप्त होत्या। अब कारीनिस्पान कार करने है— हासबान मीतिस्टासामार

द अर्थननमन्दरहरेशीयाजीवारिश्वा सर्वेः बालः । सः सि. १, ८० ६ युक्रमीदं प्रति अवस्टिनाप्तर्युर्तिः । सः वि. १, ८,

सञ्जाहण्णमंतोमुहुत्तमन्द्रिय तेउलेस्सियो जादो । पुरुवे हायमाण-बहुमाणनेउ-काउ हितो काउ-णीललेस्साणमागदाणं जहण्णकालो उत्ता, सो संपद्दि एत्य किया उत्त्वेत पाएण तस्सवएसामावा ।

उकस्सेण तेत्तीस सत्तारस सत्त सागरोवमाणि देसणाणि'॥**२**

किण्डलेस्साए देखणाणि तेचीसं सागरोत्रमाणि. भीललेस्साए देखणसत्तास स बमाणि, काउलेसियाए देखणसत्त सागरीवमाणि । ' जहा उद्देसी तहा णिदेसी णापादो उदाहरणाणि उद्देसपरिवाडीए णिहिसंते । तं जडा- एकी अद्रावीससंतर्का मिच्छादिही सत्तमाए प्रदबीए किण्डलेस्सार सह उपवण्णा । छहि पण्जतीहि पण्ज विस्तेतो वितुद्धो होद्य सम्मर्च पडिवण्णो । अतीमुहुचुणतेचितं सागरीवमाणि मर्स अवड्डिदाए किण्हलेस्साए गमिय अंताष्ट्रहुचावसेसे मिच्छचं गेतूग आउन्नं गेंपिय विस्न मदो, तिरिक्खो जादो । एवं छहि अंत्रीप्षुद्रचेहि ऊणाणि वेचीसं सागरोवमाणि लेस्सार उक्तस्सकाला होदि ।

पक मर्सपतसम्प्राष्ट्रीय कापोतलेस्याको मात हुमा । उसमें सर्वतप्राप्य भारतपुँद्रने । रद करके तेजोलेदयाको मास हुमा !

गुँका —पदछे दायमान तेजोलेदया और वर्धमान कायोतलेदवासे क्षमहाः का भीर नीललेहरवाम माये हुए जीवींका अधन्य काल कहा है, सो यह मय यहां पर क्यान

समाधान—नहीं, क्योंकि, प्रायः भावकल उत्प प्रकारके उपदेशका भमाय है। उक्त जीवोंका उल्ह्रेष्ट काल कुछ कम वेतीस सागरोपम, सचरह सागरी

भीर सात सागरीयम है ॥ २९० ॥

कृष्णलेदयामें कुछ कम तेत्रील सामशेषम, मीललेदयामें कुछ कम सत्तरह सामशेष मार बारोनरेहराम कुछ वम सान सागरोवम कार है। सो 'जैसा उरेश होता है, उर् मचारसे निर्देश होता है ' इस न्यायानुसार हनके उदाहरण भी उदेशकी परिवादीते निर्देश हिये जाते हैं। ये इस प्रकारने हैं- मोहकर्मकी महारूम महतियों ही सनावाया कोर इह मिच्याद्य अति सानवीं पृथिवीमें हुज्जालेदवाके साथ उत्पन्न हुआ । छहाँ पर्याप्तिवीस पूर्ण होचर, विधास हे नथा विशुद्ध होचर सम्यक्ष्यको प्राप्त हुमा । सम्यक्ष्यके साथ सन्तर्गुर्ग कम तेत्रीस सामरोपम भवनस्वरूपने सवस्थित हत्या । सम्प्रकृपक साम साम्यु चारके सर्वतिष्ट बहुने पर मिष्यान्यको जाकर प्रसम्बद्धी धायु बधिकर, विशास मेकर मा भीर निर्वेच हुआ। इस अद्यार छह बल्तमुँहरीमें कम नेतीम सागरोपम हारणेदरादा होती बाट होता है।

र इ.क्वेच व्यक्तिक बल्दकबल्बाररोच्यानि देवोगानि । स. वि. १, ८,

एगा अहावीससतकिमात्रा भीतलेस्साए पंचमपुद्रशेए हेट्टिमवरयहे उक्तसाउ-हिदिओ होद्ग उववच्या। तस्य जहिम्पा किण्टलेसा चे म, सन्वेसि भेरहपाणं तत्यत्याणं शिए चेव तेस्साए अभावा। एमक्टिट परचेड भिष्णलेस्साणं कर्ष संभवा है विरोहामात्रा। एसा अरुपा सन्दत्य जाग्वदन्त्री। छाँड पन्जनीहि पञ्जचयदा विरस्तो विसुद्दे। होद्ग सम्मन् पडिचच्या। आउद्दिरमण्यालय मुद्दो मण्डस्सा आदा। तस्य वि अर्तामुद्दन्त तीए चेव लेस्साए अन्छिद्ग लेस्सतरं गदा। पिष्टलमंत्रीमुद्दन्तं पिल्टिलेख्य अर्तामुद्दन्ते सीहिय सुद्दसेसेलं क्याणि सम्रास्त सायराव्यमाणि अर्त्तवद्वसमादिहस्सं भीतलेस्साए उक्तस्यकाले होदि। एगो निच्छादिही बरियाण पुडशेण उक्तस्याउद्विदिनो काउलेस्सान्नो होद्ग जव-चण्यो। छाई पञ्चलीह पञ्चवयदा विस्सत्ते विसुद्धे होद्ग सम्मन् पदिवरविजय आउ-द्विदेमणुपालिय मणुसे आदो। पच्छा वि अत्रिमुद्दुलं सा चेव लेस्सा होदि। परिसल्लं

मेहहरमेरी अट्टार्टस प्रहतियोंकी खत्तायाता कोई एक जीव सीललेहराके साथ पांचर्या पृथियोके अधस्तन मस्तारके अटट मायुक्तमेकी स्थितियाता हो करके अरच्छ हुमा।

श्रंदा-पांचर्या पृथिवाके मधस्तन प्रस्तारमें को जधन्य कृष्णकेद्या होती है है

समाधान — नहीं, पांचर्या पृथिणीके अधरतन प्रस्तारके समस्त आर्थक्योंके उसी ही लेखाका अमाव है।

रीका - एक ही बस्तारमें दे। भिन्न भिन्न लेखामाँका होना कैसे संभव है।

समाधान -- पक ही परतारमें भिया भिया आधों के शिशा भिया है दवामों के होने में कोई विरोध नहीं है। (भवीन कुछ नारकियों के उट्टर नीटलेंड्य ही होती है, और कुछके क्रवाय कुष्यत्रेदया होती है।) वहीं अर्थ सर्वय जानका चाहिए।

हस प्रकार पांचर्श पृथियोमें उत्पन्न हुमा यह औव छहाँ पर्यासियोंने पर्याण हो, विभाग छेहर तथा विशुद्ध होहर सम्वक्ष्यको प्रान्त हुमा। बहां मपनी माजुरियोका परिपालन करके मदा भीर मनुष्य हुमा। यहां पर भी माजुर्हेन तक उसी पूर्वेटरवर्ड माज रह कर अन्य छेदराको प्राप्त हुमा। इस प्रकार शिछते माजुर्हेनको पूर्वेट तेन माजुर्हेहस्मि का करते कह दूर सम्बद्धियों कम सचाह सायरोग्य ससंयतसम्बर्गाईड मीन्द्रेटराया उत्हर बात होता है।

यक भिष्यादाष्टि आँव तीकारी पूर्विवीम वहाँ की उन्हल मालुक्येंद्र स्थितहाला तथा कार्यतलेहरावाला होकरके उत्तवह हुआ, और छहाँ वर्वानियोंने कर्नेन्द्र हो, विश्वास हे, विशुद्ध होकर सम्वक्तवको प्राप्त करके और अपनी मानुकर्य स्थितिका औन करके मतुष्य हुआ। वीछे भी सन्तर्भुहूर्व तक वहाँ हैं। लेहरा होती है। उन्हर्नेन्द्रिय सन्तर्भार्यके

अंतोम्रहुचं पुन्धिन्लितमुं अंतोम्रहुचेसु सोहिय सुद्धसेसेण कणाणि संच सागरोत्रमाणि काउन्हेम्साण तकम्मकाले होहि ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु मिन्छादिद्वी असंजदसम्मादिद्वी केर चिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुच्च सव्वद्वां ॥ २९१ ॥

सगममेदं सत्तं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहत्तं ॥ २९२ ॥

ां जघा— हायमाणपम्मलेस्माए अन्छिद्स्स समद्वाखण्या तेउलेस्सा आगदा। तर्य सन्वनहण्यमंतोप्रहुत्तमन्छिय काउलेस्सं ग्रह्मा। एवमस्तिद्दसमादिहिस्स वि तेउलेस्साए जहण्यकालो यत्तवशे। पम्मलेस्साए उच्चरे— एकके। सुक्कलेस्साए हायमाणाए अन्छिरे। मिन्छादिह्यी तिस्से अद्धाखण्या पम्मलेस्सिओ जादो। सन्वजहण्यमंतोप्रपुत्तमन्छिद्य तेउलेस्सं गदो। एवं नहण्याणा अंतोष्ठुतुत्तं मिन्छादिह्यी पम्मलेस्साए। एवमस्तिद्दसमादिहिस्स वि जहण्यकालो वत्तवशे।

पहलेके सीम अन्तर्भुद्वसाँमें घटा कर दोप बचे हुए अन्तर्भुद्वताँसे कम सात सागरीपम कापातलेक्याका उल्लाह काल होता है।

कार्पातलेस्याका उत्हार काल होता है। तेजीलेस्या और पद्मलेस्यायालोंमें मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीव किनेन

फाल तक होते हैं १ नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ २९१ ॥

. यह सूत्र सुगम है।

एक औरकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जयन्य काल अन्तर्भृहर्त है ॥ २९२ ॥

जैसे— हायमान परालेश्यामें विद्यमान किसी मिष्याशिष्ठ जीयके नपनी लेश्याके काल श्रंय हो जानेसे तेजीलेश्या आगर्र। उसमें सर्वज्ञयम्थ अन्तर्नुहर्ने काल रह करके वर कार्योनलेश्याको आप्त हो गया। इन्य प्रकार अस्यतसम्बन्धि जीयके मी तेजीलेश्याम ज्ञापन काल कहना चाहिए।

मत्र पद्मदेश्याका ज्ञायन्य काल कहते हैं — कोई यक विष्यादिष्ट जीव दायमित द्वाहरूरपामें विषयान था। उस देश्यके कालके क्षय हो जानेले यह पद्मदेश्यावाला हैं। गया। यह विदेशपाद अलग्नीहर्न काल रह करके विज्ञोलेश्याको प्राप्त हुमा। इस मनाई व ज्ञायन्य कालगुर्द काल नक यह विश्वादिष्ट और प्रयोद्धान्य स्ट्रा। इसी प्रकारने मही-पनसम्यादि ज्ञायका भी ज्ञायन्य काल कहना चाहिए।

⁻र मन्ति " संनीप्रदर्भ वा चैव देखा पुरेवडतिम् " वृति पाटा ।

६ टेक वह देवव की विष्णाट वर्त वृत्रवन्य एट बीवीना बीवावेत्वया सबै: बाबा ३ छ. वि. १, ६,

३ एकार्च प्रति अवन्येगल्डर्वहर्तः । व. वि. १, ८.

जक्तस्सेण वे अट्टार्स सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ २९३ ॥ तं जधा- एको मिन्यादिही काउउँस्पाए अन्छिदो । तिस्से अद्वाखएण तेउउँसिअो जादो । तत्य अंतोष्ठ्वमान्छिद्य महे सोहम्मे उवक्यो । वे सागरोवमाणि पिठेरोवमस्स असंख्यादेगाग्यन्भिद्याणि जीविद्य जुरे णहेजैसिओ जादो । उदा सगिहरी पुष्टिबह्नेतोष्ठद्दचेण अन्भीयमा अंतोष्ठद्दचणअहारुज्यसागरावममेचा हिट्टी किण्य उन्मदेश एक स्वादे एक, निन्यादिही-सम्मादिहीह उन्मदेवेख बद्धाउअमोनङ्गायदेण पादिय निन्छादिही जहिं सुन्धे कर्यो कर्यो क्षेत्र कर्यो हिट्टी कर्या वहार्य प्रसाद कर्या क्षेत्र कर्यो कर्या । अहार जाता विद्या कर्या कर्या कर्या । अहार जाता विद्या कर्या कर्या कर्या । अहार जाता विद्या कर्या कर्या । अहार जाता विद्या कर्या कर्या । अहार जाता विद्या कर्या कर्या कर्या । अत्राव्य क्ष्या विद्या क्ष्य
तेत्रोलेश्याका उत्कृष्ट काल साविरेक दो सागरीपम और पद्मतेश्याका उत्कृष्ट काल साविरेक अठारह सागरीपम है ॥ २९३ ॥

जैले— पक निश्यादि जीव कापोनलेरवाम थियमान था। उस हरवाके कालस्थते यह तेजोलरायाला हो गया। उसमें भारतेष्ठित रहकर मरा और सीयमेहरवम उराज हुमा। वहां पर पर्योगमेल भारतेष्यातर्थे आगले भणिक दें। सागरेगम काल तक जीविन रह सर एजुत हुमा भीर उसकी तेजोलराम नय हो गर्ग। इस महार पूर्वके मन्तर्श्वतृत्वे संविक्त दो सागरोयम सीयमेकस्थानी मिण्यारशिसम्बन्ध अन्तर्थ विस्ति तेजोलरायकी सात हो गर्ग।

श्रंका-मिच्याद्यां जीवके तेजीलेक्याकी जरहात्र विश्वति अम्मुहुंहर्नसे कम धड़ाई

सागरीपमममाण वयाँ नहीं पाई जाती है ?

समापान — नहीं, वर्षोकि, जिल्लादिष्ट या स्वस्यादिष्ट औषोंके द्वारत उपित देवाँ के बोबी हुई मायुक्ते उत्तर्रतायातके जात करके निष्णादिष्ट और विदि प्रदर्श तरह पूर वहीं भी दिशति करें, तो परयोगमके असंद्यातके जागके अध्यक्षिक रो सावरोपस बरता है, क्योंकि, तीयमंत्रदर्भ उरवर होनेवाते निष्णादिष्ट और्थोके इस उन्हर दिश्तिने स्थिक मायुक्ती दिशांत द्यापन वर्षेनदी प्राव्यका मनाय है।

र्शका—यदि दम भड़ाई सागरीयम स्थितिषाठे देवीम उत्पच हुए सम्पर्णाहेको मिथ्यात्वमें के जावर तेजीकेदवाका उत्हरू काल वह तो ?

समापान — महाँ, वर्षोकि, अन्तर्मुहर्तं कम अदृष्टिं सामरोपमको क्यिनिकाले देवोसँ उत्पन्न हुय सीधर्मनियासी सम्यन्तिष्ट देवके सिम्यान्यमें अनिकी संभावनाका समाव है।

१ वाक्षेत्र 🎚 सावशेषये बहादश च शावशेषयाचि सातिरेवानि १ स. हि. १. ८.

तं पि कथं पच्येदे । पल्टिशेयमस्स असंस्वेज्यदिमागरमाहिययेसागरीयममेषा साहमाना मिन्छप्रहि-माउहिदी होदि चि आइस्यिपरंपरागदीयदेखा । अथरा अप्येणुवस्ये अष्टाहुज्यसागरीयमाणि देखणाणि मिन्छप्रिशिहस्स वि संभवति. भवणादिसहस्सारिदेशे

मिच्छादहिस्स दुनिहाअहिदिपरुवणणाहाणुववतीदो ।

असंजदसम्मादिहिस्स उचादे- एको असंजदो सोहम्मीसाणदेवेस वे तागरेतमारि अतंजदुत्त्वे सागरेतमस्स अहं च आउवं करिय अंतोजुद्द्वं तेउलेस्सी होद्वा कमेण हर्रे करिय सोहम्मे उचवण्णो । समाहिदिमच्छिय पुणो मणुतेसुववित्रय अंतोजुद्द्वं तीर वे तस्साप परिणमिय पम्मलेस्सं काउलेस्सं वा गदी । लद्धाणि अंतोजुद्द्व्णअहामुलाम् वमाणि मंपुल्लाणि । अहियाणि वा किण्ण होति वि उत्ते ण, पुट्यावरकालन्दि सहभी सुद्दुनादे। अद्यागगेरमन्दि पडिदंशोजुद्वास्स बहुनुवदेसा ।

पम्मेलस्माए उच्चदे- एको भिच्छादिही यहुमागतेउलेस्सिओ सगदाए सीवाप

र्भका - यह भी केसे जाना जाना है ?

ममापान—पराशेषमके असंक्षातार्थे आसंसे अधिक हो सामरोपप्रधमान सीधकै है इस मकारका आवार्षपरम्पान प्रशिष्ठे स्वामराविष्ठमान प्रशिष्ठे स्वामराविष्ठमान प्रशिष्ठे स्वामर प्रशिष्ठे स्वामर प्रशिष्ठ है इस अपने पात्रप्रधान कार्या है स्वामर स्वामर की प्रधान कार्या है सामराविष्ठ सामर प्रशासक स्वामर सीधि मिल्यार्थि स्वामर सीधिक सीध

भव अनंपनमाध्यप्रविके जन्तुत्व नेत्रीलिद्यकि जानको कहेंने हैं — एक अनंपन अक्ष्यप्रविक्त शिधमें देशान नेविमें देश नागरेगाय और आन्त्रोहने बस नागरेगाय और स्वत्यक्त आनुष्य बांच करवे एक शानगीहने तेत्रीलिद्यायाला हो करके और जानेन सर बर्ध श्रीविक्त के प्रताब कुणा। जुना आनंशी आनुश्चिति नक वहाँ नह कर और समुजानि वन्त्र है जह सम्मृत्ते नक वृत्यों के लिदयाने गरिनान हो। यसलेद्या या कारोग्लेदयाको सन

हुन । इस जवारने करनमुद्धते वस पूरा कहाई सामग्रेयकाल प्राप्त हो गया । पूरा - चन्द्र नेहरूरी वस स्वाई सामग्रेयकाल प्राप्त हो गया ।

.. कव बद्धारेण्यांचे १८५५ बालची *वर्ष हैं---* वर्धमान नेनोलेलाकता के हैं ^{हर्ष} पम्मलेसियो जादो । दीहमंतीसुन्वद्धमन्छिय सदार-सहस्थारकप्यासियदेवेसु जनवण्णो।
तत्य अद्वारद्ध सागरोयमाणि पलिदोवमस्स असंरोज्जदिमानेणन्महियाणि जीविद्ण चुदस्स
णद्वा पम्मलेस्सा । अयंजदममादिद्धिस्स उपये-पूछा संजदी पम्मलेस्साए अतीसुद्धन्य
मन्छिदी सदार-सहस्सादेवेसु अद्वारस सागरोजमाणि अतीसुद्धन्यमार्ग अज्ञार
सरिप कमेण कर्ति सहस्रासदेवेसु अज्ञारस सागरोजमाणि ।
तत्य वि अंदीसुद्धन्य पम्मलेस्साए अच्छिय सुर्वास्य
स्वारी । स्वारी । स्वारी । स्वारी । स्वारी
स्वारी । स्वारी प्रमलेस्साए अच्छिय सुर्वास्य
स्वारी । स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वारी
स्वरी
स्वारी
स्वार

. सासणसम्मादिड्डी ओघं' ॥ २९४ ॥

इते ? णाणात्रीयं पहुच्च जहण्येण एगसमध्ये, उकस्येण सगरायीदो असंयेज्य-गुणो पलिदोपमस्स असंयेज्जिद्भागो, एगजीवं पहुच्च जहण्येण एगसमध्ये, उक्कस्येण छ आवलियात्रो, हच्चेदेहि तेउ एक्सलेस्सियसासणाणं तथे। भेदामाया ।

सम्मामिच्छादिद्री ओधं ॥ २९५ ॥

मिष्यादिष्ट जीय भवने कालके कील होने पर पद्मेश्रद्वावाला हो तथा। भीर वहां कस रुदयामें उन्हार अन्तर्मुहर्त काल तक रह करके हातार-सहन्त्रारकन्यवासी देवीमें जन्म हुमा। पर्दो पर पत्योवमके असंस्थातये आगते अधिक अदारद्व सामरोपम काल तक जीवित

रह कर च्युत हुमा, तब उसके प्रातेश्या नष्ट हो गई।

भव भर्तपत्तसम्पर्काट अविके प्रस्तेष्ट्रस्याका बरहर काल कहने हैं— एक संवाद प्रक्रान्त प्रमुक्ति काल तक रहा और शानार-सहस्राद देवींसे अहारह सागरीपस और अन्तर्क्षित का भर्ष सागरीपस और अन्तर्क्षात होता काल कर सहस्राद स्वाप्त के स्वाप्त कर होता काल कर सहस्र कर कर स्वाप्त कर होता माने कि स्वित्त साम के स्वाप्त कर कर स्वाप्त कर कर स्वाप्त के स्वाप्त कर स्वप्त कर स्वाप्त कर स्वप्त कर स्वाप्त
वैजीलेस्या और पद्मलेस्यायाले सासादनमुख्याद्धि जीवाँका काल श्रोपके समान

है।। २९४।।

प्योंकि, माना जीवींकी श्रवेशा जाम्यते यह समय भीर जन्मकी भागती राशिते मतंत्र्यातमुख्य प्रवेशास्त्रा भावेत्यात्वी आग काल है। यह जीवकी भ्रवेशा जाम्यते यह समय भीर उन्हार्यत छह भावतिक्रमाज बाल है। इस व्यवेत मेरिया भीर वस्त्रेदशासी साराह्मत्वरूपरिवाहि काल्या श्रीवादक्यणां वाहें भेडू महीं है।

उक्त दोनों लेडवावाले सम्बविषध्याद्यश्चित्रीका काल ओपके समान है ॥२९५॥

१ साहादनहरू हि-सम्बन्धिन्द रहारोः साबान्दोत्तः वातः । इ. हि. १, ८.

कुरो ? णाणाजीवं पड्डच जहण्णेण अंतामुहुचं, उनकस्मेण पलिदोवमस्स वर्षसे ज्जिदिसागो, एगजीवं पहुच्च जहण्युत्रकस्मेण अंतीमुहुचंमिच्चेएहि तेउ-पम्मलेसिय-सम्मामिच्छादिङ्गीणं तत्तो भेटाभावा।

संजदासंजद-पमत्त-अपमत्तसंजदा केविचरं कालादो होंति, णाणा जीवं पडुच्च सव्वद्धां ॥ २९६॥

सुगममेदं सुत्तं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ २९७ ॥

तत्य ताव संजदासेजदाणमेगसमयपरूवणा कीरदे- एक्को मिन्छ।दिही असंजदः सम्मादिष्टी वा बहुमाणवेउलेसिको एगसमयो वेउलेस्वाए अस्थि वि संजपासंजर्म पिड-पण्णो । एगसमय संजपासंजर्म तेउलेस्साए सह दिहें ! विदियसमए संजदासंजदे। एम-लेस्स गदो । एसा लेस्सापराजची (१) । अथवा एक्को संजदासंजदे। हाममणपम-लेस्सियो प्रमलेस्सदाए खीणाए एगसमय संजपासंजमगुणो अस्य वि वेउलेसियो जादो । वेउलेस्साए सह संजपासंजमो एगसमय दिहो । विदियसमए तीए लेस्साए हर

पर्वेषिः, नाना जीवोंकी अपेशा ज्ञचन्य काल अन्तर्मुह्त और उत्कृष्ट काल पस्पोपमध्य सत्तेषपातपां मागप्रमाण है। एक जीवकी अपेशा ज्ञचन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहुर्ग है। एक मकारसे तेमोलेस्या और पण्नजेस्यायाले सम्बन्धियाराष्ट्रि जीवोंका आस्प्रकरणाते कोर्र भेर नहीं है।

उक्त दोनों लेक्याबाले संयतासंयत, प्रमुक्तसंयत और अप्रमृक्तसंयत और किर्ये काल वक होते हैं ? नाना जीवोंकी अवेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ २९६ ॥

यद सूत्र सुगम है।

एक जीवकी अवेक्षा उक्त जीवोंका जयन्य काल एक समय है।। २९७ ॥

इनमेंसे पहले संयतासंयतीके लेहपासम्बन्धी एक समयकी महत्त्वा की आती है—
वर्षमान तेमोलेहपायाला यक मिण्यादृष्टि अथया असंयतसम्यदृष्टि अथि तेमोलेहपाई बावने
यह समय मदीय रह जाने पर संयमासंयमको मान्य हुमा। एक समय संयमासंयम तेमें?
हरराके साथ हिंगीचर हुमा। दुसरे समय यह संयतासंयत प्रमलेहपाको मान्य हो गया।
वह लेहपायितनेनमञ्ज्यो पर समयकी प्रमणना है (१)। अवदा हायमान प्रमलेहपाजाता
यह संयतासंयन प्रपाटको कालके शींक हो जाने पर एक समय संयमासंयम प्रात्तामा प्रमान प्र

१ बरा नवत्रवन्त्रवन्त्रवा वानावांवातेष्ठमा सर्वः बात्रः । स. थि. १, ८,

४ एकार मीत क्याप्तितः स्वपः । स. वि. १, ८.

पाराणुगमे तेउ-पम्महेरिसयमाङपरत्नमं वसंनदसम्मादिही सम्मामिन्छादिही सासवसम्मादिही मिन्छादिही वा जादो । एसा गुणवरावची (२)। मरण-वाचादेहि एशसमञ्जा ण लब्बदि । संपदि पम्मलेस्साए उच्चदे । वं वधा- एगी मिन्छादिही असंजद-सम्मादिही या यहुमाणपम्मलेस्सिओ पम्मलेस्सदाए एमी समजी अत्य वि संज्ञमासंजमं पहिच्छा। विदिचसमय संज्ञमासंज्ञमण सह सुक्कलेस्सं गदी । एसा हेस्सावरादको (३)। अपना बहुमाणतेउनिसओ संबद्धासंबद्धां तेउनेस्सद्धार खरण वरणावरावणा १ ४ १ जवन वहणावरणावणा व्यवस्थान व्यवस्थान वर्षा परमतिसिक्ता जादो । श्रमसमयं परमतेस्थाय सह संजमार्थजमं दिहं, विदियसमय शाय-मची आहो। एसा गुणपरावची। अचना संजदासंजदी हायमाणसुनकलेस्सिओ सुनक हेस्सहाखरण पम्मलेस्सित्रां जाहो । विशिषसम् ए पम्मलेस्सित्रां चैव, क्रित असंजदः सम्मादिही सम्मामिच्छादिही सासणसम्मादिही मिच्छादिही वा जादे। । एसा गुणपराः षषी (४)। मिच्छादिङ्गिष्णसंबदसम्मानिङ्गिणहाणेषु वेउ-परमवेस्साणं हेस्सा-गुण्यसम्भोको च पा (४)। १७०७(१४) जनसङ्ग्रहणान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्य अस्तिद्वृष् एससमञ्जो क्रिष्ण उरचदे १ ण, तस्य एमसमयसम्बाधान्यः । यहुमाणतेत्रस्थान्यस्थ

हुमा। दितीय समदमें उसी लेखाके साथ असंवतसम्बन्धि, या सम्वाभिष्याहरि, या हुमा । विताध समयम जला ल्रायाक त्याच जलपवल्यन्याम, या स्वयास्यासम् सासादमसम्बद्धाः स्वया क्षिरवाहि हो गया। यह गुणस्यावर्णस्यक्षेत्र हारा यह समयको महत्त्वा हुई (२)। यहाँ पर मरण और व्याधातके ज्ञारा यह समय वहीं पारा

भद प्रातेस्याके एक समयको प्रकारणा कहते हैं। असे-- वर्षमान प्रातेस्यायाका कार ५क १४०थाटा४, वयवा भसपतसम्बन्धाः जाव, ययलस्याक कालम एक समय वयसाय रहने पर संवमासंवमको मात हुमा । द्वितीय समयमे संवमासंवमके साथ हो गुरुवेहवाको भात हुआ। ४६ श्रद्धापराभाग लाज्यन्य। ४७, चामपका अवस्था ३६ (४४। मध्या, प्रमान विजेतिहराबाक्षा कोर्ट् संय्वासंयत तेजीलेंट्याके कालके हाय हो जानेत व्यालेरायाला हो विकास मुहल्देशवाला का संवतासंवत जीव मुहल्देशके कालके पूरे ही जाने पर प्रमान श्रेक्षण्याच्या पर प्रचालपत भाव श्रेक्षण्याः चलक पूर हा आनं पर वहेदरावाला हा गया हिनीय समयमं वह वद्यत्रेदरायाला ही है, किन्तु अस्पनस्वस्वस्वाहि, विष्णा सम्योगस्याहिहे. अथवा सासाद्भसम्यहिहे, अग्रवा विष्णाहिहे हो गया। यह

र्वेका - मिन्याराष्ट्र गाँउ असंयमसम्बन्धि, कन की मुजस्थानीम तेज बीर पदा-चका — भरवादार कार कलवनसम्बद्धाः, क्व वः युज्यवानाम तत्र बार प्रधायक्षेत्र ज्ञायाँकी हरया भार गुजस्थानसम्बद्धाः परिवर्तनी है। आग्रव करके वक्त समयकी

समापान -- नहीं, वर्षोकि, इन गुणस्थानॉमें एक समयकी प्ररुपणाका क्षेत्रा संसव

पम्मलेस्धं गंत्रण विदियसमए उविसमगुण्डाणं गच्छंतार्ग मिर पम्मलेस्साए एगसमञ्जा लन्मदि । हायमाणवेडलेस्साए एगसम असंजदसम्मादिद्विमुणहाणे पडिवण्णाणं वेउलेस्साए एगसमञ्जा लेस्साणं वि एगममञ्जो लब्मदि चि उत्ते ण लब्मदि, जदी । विद्वीण दगसमयं लेखाए परिणमिय विदियसम् अण्णगुणं ह एदाणि मुण्डाणाणि वडिवज्जता वि लेस्माए एगा समझे। अरिय इते हैं समानदो। हेट्टिमगुणहाणाणि लेस्साए एगो। समभी अतिय नि

हाणं पहिचन्त्रीत, पमचसंबद्दी तहा संत्रमासंत्रमगुणहाणं किण्य प अधवा गरिय एत्य पढिसहो । पमचस्स उच्चर्दे- एको पमचो हायमाण पम्मलेस्सार अवि राएन पमचद्वाए एगो समझे अस्य चि तेउलेस्सिओ जारी एगसमः

षर्धमान तेजोछेदयाले वश्चलेदयाको जाकर दितीय समयमें उरा जाने बाहे मिडवार्राष्ट्र श्रीर अस्वतसम्बद्धि श्रीवीर वसनेस्वाहे साथ जान है। इसी प्रकार हायमान ते मोलेंद्रवामें एक समय अवरार रहने प कारा ६ । इना अकार दायमान राजालस्थान प्रशासन व्यवता रहा र कार्ययमसम्बद्धि गुणस्यामको आस होनेयाले जीयोहे सेजीलस्याके साथ ज्ञाना है।

र्गेका—नेज भीर वजलेश्यांक समान ही कापोन भीर नीललेश्या समय पापा जाना है. (शिल उसे वर्गी नहीं कहा)?

नमापान —कापीन और नीजनेदयांके साथ एक समय नहीं पाया ज्ञान निच्यारहि सच्या बर्धयनमध्यम्हि और वक समयमें वियक्तिन देश्यके हाता व हिनीव समयम अन्य गुणस्यानको, अथा अन्य त्रिशाको नहीं तान है। नया हन ह कात है नेवाले भी जीव विश्वतित्र धारण की गई लेहरगरे कालमें एक समय पर हर इन इन गुणस्थानीका नहीं या लोग हैं, प्रयाहि, वसी हरसाय है। दें।

होंको — भवनी अध्याम कहा समय रहन पर भेग नीचे हे गुणस्थानक र सदम मुचक्यान्त्व अन्न इत्त हैं. इसी बहाइस अम्रभावन भी स्थानामयम गुन

मसाराज - वक्षा ब्वजार हा है। वस्तुन, इस १४४२में वाहे प्रान्तप नहां है भव यमणस्यम्बः कः २ वहन है। यह यमणस्यम हायमान ग्राप्टाम । १४ चा। इस हर्याह का नायत क्या यालकायन गुणका नह हात्या गर समय क द्देव दर बंद अञ्चारद्वावारा ह स्वा वर अवल --

,

षाराणुगमे तेउ-पम्महेरिसयमारापस्वणं समए तेउलेस्सा चेन, किंतु संज्ञमासंज्ञमं असंज्ञभेण सह सम्मत्तं सम्मानिन्छचं सासण-सम्मर्भ मिन्छचं वा गदे। एसा गुणवरावची (१)। अथवा, अप्पमधी तेउलेस्साए अन्छिदी। 1 .5 विस्ते अप्यमचद्भाए स्वरूण पमची जादो । पमची तेउलेस्साए सह एगसमपं दिहो। . ** विदियसमण् मदो देशे जादो । एवं मरणेण (२) । पमचसंत्रदो तेउलेस्साए परिणिय विदियसमय जेण लेहसंबरं ण मच्चित्, यमसमुणं पहिन्जनभाणी वि वेउलेहसद्वाए 11. प्राप्तमओं अधि वि व पडिवज्जिद्दि, तेम लेस्सापरावची गरिप । अध्यमची हायमाण-. ... पम्मलेश्सिओ पम्मलेस्सद्धाए एगो समओ अत्थि वि पमची जादी । विदियसमय वि पमचो चेब, बित तेउलेस्सिन्नो जारी। एसा लेस्सावरावची (३)। अथवा पमची तेउलेस्साए अध्छिदो । तिस्ते अद्रानस्तवन परमलेस्सा आगदा । परमलेस्साए सह पमचो एगसमध् दिहो । विदियसमय पम्मलेसिओं चेव, हिंतु अप्यमची जादो । एसा गुणपरावधी । पम्मलेसादाए अचिदी पमची निस्ते अदालएण वेउलेस्साए परिणमिय विदिपसम्प अत्पमचा किण्य कीरदे ? वा, होपमाणलेस्साए अत्पमचगुणमाहणामाता । मिन्छचादिगुण

हरमें दक्षिणेयर हुमा। विकास क्रिजीय समयमें तेजीलेस्या ही रही, किन्तु पद संयमा-क्षत्र का का विश्व विश्व का व विश्व का व तुणस्यानको, सद्यशा भिद्यात्यमुणस्यानको मात होगया । वह एक समयकर गुणस्थान परिवर्तन है (१)। सथवा, काई यह अनम तसंवत तेनोलेहवामें वर्तमान चा। वसी लेहवामें भारत्यात् व (VI अवन्त्र) भाव के अन्यत्य स्थानक प्रशास्त्र व्यास्त्र प्रशास्त्र प्रशास्त्र प्रशास्त्र प्रशास्त्र व्यास्त्र विष्ट्र व्यास्त्र विष्ट्र व्यास्त्र विष्ट्र व्यास्त्र विष्ट्र व्यास्त्र विष्ट्र विष ्वा इन का जान व्यवस्थात व विज्ञातिहरणके साम्र एक समय रहिगोचर हुमा। दितीय समयम मरा भीट देव होगया। इस महार मरणही भरेसा यह समय उपलब्ध हुमा (२)। ममतसंबत तेमोलेस्वाहे साथ परिवामित ब्रांकर दितीय समयम सुनि, इसरी अध्य हेरणको नहीं मार बोता है, और ममय-पर्यामा बार्ग् विद्याप समयम प्रियम प्राप्त भाग जन्मका ग्रह्म आव काल वर मार अस्त वर्ग स्था अस्त प्राप्त है स्व स्वत गुणक्षामको प्राप्त द्वीता हुआ औं तेमोठेहराके कालम एक साथ होता वर मार अस्त केर वह केरवाम्बरको मही प्राप्त होता है। इस कारणते वहाँ वर केरवाका परिवास मही ्रहावमान पहलेहरावाहा कोई अन्नमक्तंवत. व्यवहरवाके बालमें एक समय मवसिए रहने प्रमासलेयत है। गया । द्वितीय समयकें भी यह प्रमासलेयत हैं। दहा, किन्तु नेकोलेस्या ंभवावश्या हा तथा। १८०१व साम्यम् भाः चदः वत्राच्यात् हा रहा, १७०७ व व्यास्ट्रहरू हा होतवा। यह लेहवाहायुग्धी वरिवर्तन हैं (३)। सथवा, कोई समस्यस्वत वेजोलेहवाई ा हाराचा । यह लहरावार्व्या भारत्यात व ६५४ - व्यवस्था भारत्या स्थापन्य । समस्य था । उसके उस से मोलेस्वाके कालस्वसं वसलेस्वा भागत्। वसलेस्वाके सम्बन्धाः त्वात प्रता वित्त
धंसा—पदालेह्याने, कालमें विद्यमान कोई अप्रसासंवत उस हेह्याके कालहावती इयासे परिणामित होकर ब्रिलीय समयमें मनमत्त्रसंयन क्यों नहीं हो जाता ह 1

हिन्म पडिवरजिर १ म, तेउलेस्साए पडिय अंतीमुहुचमणस्क्रिय हेट्टिमगुनमाइनामाः। जयना जपमनो पम्मलेस्माए अस्क्रिशे अपमृनद्धान्तरुण पमची जारो। विदिननर सरो देवने गरो।

अस्यमध्येत्रदस्य उत्तरे- मिन्छारिही असंतर्भममारिही संतर्भावरे। दमरसेवरी वा वहुमानवेत्रनेस्तिओ तेउतेस्सदाण एगो समझी अश्य वि अपमणी वारे!
तेउनेस्मार मह प्रमममं अप्तमणी रिही । विदियसमण् प्रमनेसिसगी आरो। दण तेरमारगवणी (१) । अपचा पमची हायमाणपम्मनेसिमगी एगमम्यमप्रमण्डा प्रभिष् प्रमनेस्मदाण गएम वेउनेस्सिगी जारे। विदियममण् पमचगुर्य पित्रवणी। एगा गुवण-वर्षा (२)। अच्या पमणी बहुमाणवेउतेस्थिओ अप्यमणी जारे। विदियममण् मरे देर्ग गरे। एवं सम्मेग (३)। पमची वहुमाणवस्ततेस्थिओ वस्ततेस्थाल प्रमण्डा प्रमायश्री प्रभि

सराप्तर- - वरी, प्रशिक्त, शीपमान लेश्याके साथ अपमत्तगुणश्यातके वर्ष करनेका सजाव है।

र्येडो — में उन्हें प्रकारका जीता विश्वपारक व्यक्ति सीयोह गुणस्थानको पारी वरी अगर की अन्य है है

समाहान - वर्ग, क्योंकि, तिमेनिक्यांने शिर करके सम्मनुहर्त रहे विश्व मेनिह सुभव्यानिक स्टब्स कर्मकर अनुस्कृति है।

कवार, बंदी कामकार्ययम प्रकारत्यामि विश्वमाम् था । वह भागामध्येपनगुणनार्यके काककार जन्मकार वह जाता । वह द्विनीय समयभि सन् चीर नेपायकी साथ हुना ।

वि अप्यमणे जारो । विदिवसमप् अप्यमणे चेन, किंतु सुक्किटेस्सं गरो । एसा ठेस्सा-परावणी (१)। अपना अप्यमणे हायमाणसुक्किटेस्वणे सुक्किटेस्सदाखण्ण पम्मठेस्सिगो जारो । विदियसमप् पम्मठेस्साए सह पमचगुणं पडिनणो । एसा गुणपराननी (२)। अपना पमचे पम्मठेस्साए अन्छिदी पमचदाए सीलाए एससम्पं जीविद्मरिप चि अप्यमणे जारो । विदियसम्पर महो देवचं गरो । एवं मरणेण (३)।

वक्कस्समंतोमुहत्तं ॥ २९८ ॥

र्षं कपा-संजद्दासंजद्दो पमचसंबदो अप्पमचसंबदो वा चेठ-पम्मछेस्सासु अप्पिद-हेस्साए परिणमिय सध्युक्तसभंताग्रहुचमच्छिय अणरिवदलेस्सं गर्दे। ।

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छादिद्दी केविचरं कालादो होंति, णाणाजीवं पहुच्च सन्वदां ॥ २९९ ॥

इदो र तिसु वि कालेसु सुबद्धलेस्सियमिन्छादिङ्गीणं विरहाभावा ।

काळमें एक सामय अवदीन रहने वर अध्यन्तसंघत हो गया। यह द्वितीय समयमें अध्यनसंघत ही रहा, विश्व मुक्तकेरवाकी आरक हो जया। इस प्रमार यह केरवावरियतंत हुमा (१)। अथया, हायमान मुक्तकेरवाथाया कोई अध्यनसंघयत जीय गुरूकेरवाके काळस्वसे पश्केरवाथाया हो गया। दिनीय समयमें प्राप्तेदेशके साथ अस्तामुख्यातके आत हुमा। यह गुजस्यात-परियतनसम्मयी एक समयकी अम्पवा हुई (२)।

मध्या, कोई प्रमत्तसंयत पराटेर्यार्में विषयान था। यह प्रमत्तकालके शीण हो इति पर, तथा एक समयप्रमाण जीवनके होर रहने पर ध्राप्यतसंयत हो वया, रूसरे समयमें मरा भीर देवलको मात हो गया। यह प्ररणके साथ एक समयकी प्रकरणा हुई (है)।

तैन्नोलेड्या और वन्नलेड्यावाले संयतासंयत, प्रमुखसंयत और अप्रमुक्तसंयतींका

उरकृष्ट काल अन्तर्भृहुर्त है।। २९८ ॥

असे— कोर्ट संपतास्यत, अथवा प्रमस्तव्यत, अथवा अप्रमस्तव्यत जीव तेमो-लेख्या और पद्मलेखामॉमॅसे विवासित किसी पक लेखामें परिणत होकर और सर्पोत्तर भगतमंद्रतेकाल रह करवे: याप्यासित लेखाको जाम हो गया।

राष्ट्रकेरपामें मिथ्यादाधे जीव किवने काल तक होते हैं ! नाना जीवोंकी अवेधा सर्व काल होते हैं ॥ २९९ ॥

क्योंकि, तीनों ही कालोंमें शुक्क लेरवावाले मिन्याहाँए जीवोंके विरहका समाय है।

र उत्वर्षेणान्तपुरुर्तेः । सः वि. १, ८.

२ इहडेश्यानां भिष्यारष्टेर्गानाजीवायेख्या सर्वः व्हातः । स. कि. १, ८.

Charles on the contract of the

छ इसंद्रागमे जीवहार्ण

्पगनीनं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं'॥ वं वधा- एको भिच्छादिही बहुमागपरमलेस्सिमी सग बाहो । सन्तबहरूममतीष्रहुत्तमन्छिय पम्मलस्तं गर्दे। अध्यतिस्

वनकस्तेण एक्कतीसं सागरोवमाणि सादिरे वं ज्ञा-एकको दन्यतिमी दन्यसंज्ञममाहर्षेण उपिमो पम्मतेस्यार अच्छिर्स्स तिस्से अहासवय सुक्कतस्या आगर्।। वानं करिय वनिसमीनेजनेसु उन्नानिय समित्रिंद गीमय सुरी तनर बाहो। एवं पडिमाईनामुद्रभेण साहिरेगावकस्पीस सागरीरममेन गुरहनम्मुस्हस्महानी होति।

सासणसम्मादिटी ओघं'॥ ३०२॥

पानकाराज्यात्वर जान । पुरुवेनमीति अञ्चरहरे । हुशे औपमे १ वाणानीनं पह हरू बीरही अवेशा उक्त बीरांका जपन्य काल अन्तर्ग्रहर्त है।

क्रिया वर्षात्र वर्षात्य वर्षात्र वर्य वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वात्र व्यवस्थातः विश्वप्रवासान्तः कार्यः भाषानावातः वात्रः भाषाः वात्रक्षेत्रं व्यवस्थातः व्यवस्थातः व्यवस्थातः व्यवस्थातः वात्रः भागः वरहे बहा हरता है। या प्रशासन का प्रशासन के कार्य का कार्य का कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कावा शंबच है। वहीं है। एक नेश्वाकाने निष्यादृष्टि भीवीका उत्कृष्ट काल गाणिक इकत

हैं स- बढ द्वामांत्रवी भागु द्वामांत्रमंह माद्वाम्ययं उत्तरिम विशेष बेंचबर क्यांटरवार्त्ते विश्वमान भा । बनाव बना टेरवांब कालशावने शुप्र रहेवा था स्टब्ल्ड में बाज वह बर, बाजही बरके, वर्गावस सेरवसीमें रूपम हारह, स्थानी हिज्यहर क्ष्मुन हुमा और हती अगमें ही नयुन्द्वायाना हागवा। हरा प्रशास हो ने ह आर्थ क्षणां ह इह मान्य सावश्यवसाय विश्वभवन्त । मुत्रभवन्त व

ter topmer every

राष्ट्र नेद्रपालाच मामादनमञ्जालां जी गाँडा काल जांप है गमान दे ॥ इ इ.स. इ.स. ११ वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग है। वर्ग है देश- व्यव च भावान इत सम्बद्धाः हर्राच्य बाना बाराचा भगवा अग्रथा चारत वस समय थी। इन्हर

समञ्जा, उत्तरमेण पिटरीवमस्त असंरोजनिरमागो, एगजीवं पदुच्य जहण्णेण एगसमञ्जा, उपकरसेण छ आवलियाचा, इषेटेहि तदा भेदामाना ।

सम्मामिच्छादिद्वी ओघं ॥ ३०३ ॥

इरो १ याणगजीवजहण्युकस्सकालेहि सह ओपसम्मामिच्छादिहीहितो भेदाभावा। असंजदसम्मादिही ओधं ॥ ३०४ ॥

हुरते ? बाजाडीर्व शहरूच सम्बद्धा, एराजीर्व पहुच्च अहण्णेय अतीसुहुचं, उकस्सेण वैषांसं साराविमाणि साहिरेपाणि, इच्चेदेहि विसेसामाना । णविर पञ्जवहिरणपः अवसं-विज्ञमाणे अरिष रितेसा एरथ। इद्धो ? चल्डिममणुक्तसहगद्दअंतीमुङ्गेण सादिरेगनुवर्तमा । जोपन्दि हेय्रगुप्रविज्ञादीर साहिरेगण्यदेसणादी ।

संजदासंजदा पमत्त-अप्पमत्तसंजदा केवचिरं कालादो होंति, णाणाजीवं पद्धच्च सञ्बद्धां ॥ ३०५ ॥

सुगममेदं सुर्च ।

पस्योपमका सर्वण्यातयां भाग 🖟 । एक जीवकी अपेक्षा अधन्य काल एक समय, भीर उत्कृष्ट काल एह भाविक्षमाण है । इस प्रकार भोधने इसके कालमें कोई भेद नहीं होनेसे ओघरना यन जाता है ।

शुक्कलेरपायाले सम्योगमध्याष्ट्रि जीवोंका काल ओपके समान है ॥ २०३ ॥ क्योंकि, नाना जीव भीर एक जीयसश्यक्षी जयम्य भीर उरहर काळोंके साथ कीय-सम्योगमध्यक्षित्र जीवोंसे कोई भेद नहीं है।

शुह्रतेरपावाले आरंपरतस्पारित जीवाँका काल जीवके समान है ॥ ३०४ ॥ प्राह्मित नाम जीवाँकी अरेका सर्वकाल है, एक जीवकी अरेका जपन काल काल-कुंद्रते है, जरूर काल सारित तैतीस सागरीय है, हर करतरे कोर विशेषना मर्बा है। किन्तु केपल पर्यापार्थकनयके अरवल्यक करने पर यहाँ विशेषना है। यह इस करार है— विशेषना है। यह इस करार है— विशेषना है। यह इस करार है— विशेषना है। विशेषना है। विशेषना है। यह इस करार है— विशेषना है। विशेषना जीवाँकी शुक्तिकेश क्षाय करा कालकी सामित कमा पर्याप्त करा कालकी सामित कमा पर्याप्त करा कालकी सामित कमा पर्याप्त करा कालकी सामित है। किन्तु भोवाँकी देशोन पूर्वकारीक साम करा कालकी सामित है।

ग्रुहरुद्देपाबाले संपतासंघत, प्रमुखसंघत और अप्रमुखसंपत जीव कियने काल तक होते हैं ? माना बीबोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ २०५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

t ×× संपतार्थयतस्य नानाजीशारेशम्। सर्वः काळः। स- मि. १, ८.

एगजीवं पद्रच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३०६ ॥

वं जधा- एको पमनसंजदो हायमाणसुकलेरिसगो एगो समञा सुकलेरसाए अति ति संजदासंजदो जादो । विदियसमए संजदासंजदो चेव, किंतु पम्मलेरसं गरे। एण लेससापरावची (१)। सेसगुणहाणेहिंतो संजमासंजमं पिडवञ्जाणं सुक्लेरसाए एगसमग्रे व स्टब्मिद । कुदो ? यहुमाणसुकलेरसाए संजमासंजमं पिडवञ्जाणं विदियसमए पम्मलेरसार गमणामावा । अथवा संजदासंजदो बहुमाणपम्मलेरिसगो विस्से अद्वाखएणं संजमा संजमद्वाए एगो समगो अत्थि वि सुकलेरिसगो जादो । विदियसमए सुकलेरिसगो वैन, किंतु अप्यमन्तमावेण संजमं पिडवञ्जो । एसा गुणपरावची (२)।

पमचस्त उचरे- एको अप्पमचे हायमाणसुक्कलेसियो सुक्कलेसहार एगी समझे अत्यि चि पमचो जादो । विदियसमए पमचो चेन, किंतु लैस्त परावचिरा। एसा लेस्सापरावची(१)। अथवा एको पमचो बहुमाणपम्मलेसियो पम्मलेसहाए खर्ग सुक्कलेसियो जादो। विदियसमए (सुक्कलेसियो) चेन, किंतु अप्पमचो जारो।

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जायोंका जयन्य काल एक समय है ॥ ३०९ ॥

कैसे — हायमान मुक्तकेरपायाला वक प्रमत्तसंयत जीव, मुक्तकेरयाके कानमें वह समय होत रहने पर संवतासंयत हुआ। दिसीय समयमें यह संवतासंयत है। है, किन्तु समयदेश मान हो गया। यह लेरपाड़ा यह समयदेश वह संवतासंय है। है। किन्तु समयदेश मान हो गया। यह लेरपाड़ा यह समयदेश व्यक्त समय नहीं वाचा जाता है। हमाने संवतासंय मके आत्म होनेवाल जीवेश हमाने हरावासंय के साथ माने वाचा जाता है। क्यां हमाने समयदेश मान होनेवाल जीवेश दिसीय समयदेश प्रदेश मान हमान है। सथया होई संवतासंयत वर्षकान वमलेरपायाला है। इस लेरपायाला है। इस समयदेश मान हमाने वह समयदेश मान हमान हमान हमान हमान यह माने वह समयदेश मान हमाने पर हमाने पर हमाने स्वतासंय हमाने हमाने समयदेश मान हमाने हमान हमाने स्वतासंय हमाने हमाने स्वतासंय हमाने हमाने स्वतासंय हमाने हमाने स्वतासंय हमाने
भव प्रमण्यंत्रके एक समयकी प्रकारणा करते हैं- हायमान गुज्रहेरयायास होते वर्ष सप्तमण्यंत्र गुज्रहेरयाके कालमें एक समय अशीन रहने पर प्रमण्यंत्र हो गया। विशेष समयम बहु प्रमण्यंत्र ही ग्हा, व्हिनु हेर्या परिवर्तिन हो गर्ग। यह हेर्यापरिवर्तनासकी एक समयकी प्रकारणा हुई (१)। स्थान, वर्षमान वस्रहेरयायाया कोई एक प्रमण्यंत्र हीत, पर्स्टर्याके बालस्वत गुज्रहेरयायाया हो गया। विशोध समयमें वर्ष (गुज्जेक्शायाता)।

^{1.} क्षत्रीय प्रति अप-देवेदः बादः । वः वि. १. ८.

एसा गुणपरावची (२) । अघना अप्पमचो हायमाणसुक्कठेरिसमो सुक्कठेरसद्वाए सह पमचो जादो । विदियसमण मदो देवचं गदो (३) ।

अप्यमचस्स उरूपेर- एको यमचो सुक्कतेस्साए अन्छिरी, सुक्कतेस्साए सह अप्यमचो जारो। विदियसमए मदो देवचं गदो (१)। अधवा अपुव्यकरणो ओररेतो सुक्क-केस्सिगो अप्यमचो होर्ण मदो देवो जारो (२)। एत्य एगसमयर्भगगरूनणगाहा-

दो दो य तिणिम तेऊ तिणिम निया दाँति पम्मटेम्साए । दो निम दमं च समया बोदध्या धुकरहेरसाए ॥ ४१ ॥

उक्तरेंग अंतोमुहुत्तं['] ॥ ३०७ ॥

कुरो १ सुक्कलेसाए परिणमिय उक्कस्त्रभंते।सुहुचमन्टिय पम्मलेस्त्रं ग्रहाण-स्वकस्तकानुबर्वमा ।

है, किन्तु भवमचानंवत हो गया। यह गुजरवानसम्बन्धी परिवर्गन है (२)। अथवा, हापमान गुरुकेरपापाला केर्रि अवसचार्सवत, गुरुकेरपाके ही कालके साथ व्रवचसंवन हो गया। चुना इसरे समयमें मरा भीर देवायको वास्त्र हुना (२)।

अब अप्रमत्तालंबनके वक समयकी प्रद्रवण करने हैं— शुद्र हेरवामें विद्यमान के हिं यक प्रमत्त्वालंक श्रीय शुद्ध होरवाके साथ ही अव्यासत्त्वालं हो गया। यह दिनीय समयमें अप् और देवायको प्राप्त हुआ हुआ (१)। अथवा, शुद्र हेरच्यावालः श्रेणीले उत्तरतः हुआ कोई अपूर्व-सरामालेक अप्रमत्त्वालंक होकर घरा और देव हो शया (२)। यहाँ पर एक समयके में गाँची प्रदर्शन करनेवाली प्राप्त इस प्रमार है—

ते प्रोतेरपाचे हो, दो और क्षीन समयक्ष्य होते हैं। यसहेरपाचे तीन विक वर्षान् तीन, तीन और तीन समयक्ष्य होते हैं। तथा, बाहरहेरपाचे हो, तीन और दो समयक्ष्य

होते हैं, देशा जानना चाहिय ॥ भ१ ॥

पियोपि — ऊगर को पक्तसमयसम्बन्धी अनेवा विकास बताय गये हैं, उनका स्वारं एक साथ मये हैं, उनका स्वारं हैं से मान स्वारं हैं — से मोटेरसासकार्थी देशवेगारे हो औन, प्रकासकार है दे कर स्वारं हैं एक देशवा के से होते हैं एक देशवा के से प्रकास के दे होते हैं एक देशवा के से प्रकास के से होते हैं एक देशवा पर कार्य के से प्रकास
ं उक्त सीनों गुणस्थानोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्भूदर्व 🕻 ॥ ३०७ ॥

वर्षीकि, ह्युहरेहवाले परिकार देश्वर अञ्चार अन्तर्गुहर्ने रह वर प्रस्टेरपाके सप्त इय श्रीबोंके उत्तर बाल पाया जाता है।

र राज्येदालहीत्रा ह . वि. १, ८,

एगजीवं पडुञ्च जहण्णेण एगसमयं'॥ ३०६।

र्वं जघा- एको पमचसंजदो हायमाण्युक्लेस्सिगो एगे। समञा चि संजदासंजदो जादो । विदियसमए संजदासंजदे। चेत्र, किंतु पम छेस्सापरावची (१)। सेसगुणहाणेहिंतो संजमासंजमं पडियज्जंताणं द्वपजेर सन्मिदि । बदो ? बहुमाणसुकलेस्साए संजमासंजमं पडिवण्णाणं विदियस गमजामाता । अथवा संजदासंजदो वहुमाणपरमलेसियो। तिस्से अद् धंजमद्वाए एगो समजो जित्य वि सुक्त्लेरिसजो जादो । विदियसमए सुक किंतु अप्पमत्तमानेण संजर्म पडिनण्णो । एसा गुणवरान्ती (२)।

पमचस्य उचाई- एको अप्पमची हायमाणसुक्कलेस्सिगी सुक्कलेस समझो अध्यि वि पमची जाही । विदियसमण् पमची चैन, किंत लैस्सार एमा लेस्सावरावची (१) । अथवा एकी वसकी बङ्गमाव्यवस्मलेस्मिमी वस्मलेस्स पुरुवनिमा। जादो । विदियममण् (सुवक्रलेसिमा) भेग, किंतु अल्पसकी

एक जीवकी अवेक्षा उक्त जायोंका जयन्य काल एक समय है ॥ ३०९। बैंगे - हायमान गुरुलेश्याचाला एक समलनंवत भीव, गुरुलेश्याहे काम

नायप रोष रहने पर संभागांचम हुआ। जितीय सामग्रे यह संपनासंपत है। इडाटेरपाडी माना हो माना : यह सहयाका यह नामवास्थान वह नामवास्थान वा का हैसानीत संवमासंवमकी मान्त हीनेवाल भी बोके जुनलेहबाका वह समय नहीं वाच जान हरोहि, बर्धमान गुरुलेश्यकः साथ शंववालं आयाः मूज्लश्यकः एक समय महा पापा गाः। स्वाहः बर्धमान गुरुलेश्यकः साथ संवधालंबनकः माट्य होनेयाले भीगोह निर्माण साथ इन्द्रेत्रस्य ममनका समाव है। संयम कोई संयमाध्यम वर्षमान वर्षमान प्रापक उत्पाद कार्य हैरियों बालस्थित और संवक्षापंचमंत्र बालमें वश्च तमय स्थाप रहते पर वह गृह है हरावाला है। गया। क्रिनीय नमयम यह गुज्जारपायाला है। है, विश्व भवमणा वह भाव स्वतान्। ब्रान्त हुमा । यह गुणक्यानपरिवर्तनसम्बद्धाः । वह समयश्ची वह गाम (१)।

अब मनगर्ववगृष्ट वह समयुरी जन्द्रपणा करते हैं- हायमान गुरू देवपागमा शां हर सम्बद्ध वह वस्त्रमध्यम् ही हहा, हिन्तु छहवा परिवर्तिम् हा गृह । यह छहवापारवर्तनास्त्रास्त्र हर समयो यह प्रमा हुई (१)। समया, वर्षमान वृक्षत्रेत्वाचा श हाई वह प्रमानावनका और रहटेश्वर बाट्सवर्स इ.ए. इत्यानामा हो भवा । जिनीय गमवर्से वन (गुरुभरवानामा) है

e dere and norde and the for the

१, ५, ६०७.]

एसा गणपरावची (२) । अथवा अप्यमची हायमाणसुक्कलेरिसभी सुक्कलेरसदाए सह पमची जादी । विदियसमय मदी देवचं गदी (३)।

अप्पमचस्स उच्चदे- एको पमची सुनकलेस्साए अब्छिदो, सुनकलेस्साए सह अप्पमत्ता जारो । विदियसमर मदो देवचं गदो (१) । अधवा अपुल्यकरणो ओदरंतो सुकक-हेस्सिगो अप्पमची होर्ण मदो देवी जादो (२)। एत्य एगसमयमंगपुरुवणमाहा-

हो हो य निष्णि तेऊ तिष्णि तिया होति पमालेखाए ।

दो निग दुगं च समया बोद्दन्या सुकारहेस्साए॥ ४१ ॥

उक्त्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३०७ ॥

इ.दो ? सुक्कलेस्साए परिणमिय उक्करसमंते। बुहुचमच्छिय पम्मलेस्सं ग्रदाण-म्बनस्तकालुबर्लभा **।**

है, किन्तु अप्रमत्तमंवत हो गया। यह गुणस्थानसम्बन्धी परिवर्तन है (२)। अथवा, हायमान हाहालेदपायाला कोई सप्रमत्तलंबत, हाहालेदपाके ही कालके लाग प्रमत्तलंबत हो गया। पुनः इसरे समयमें मरा भीर देवावको बाप्त हमा (३)।

अप अप्रमत्तसंयतके एक समयकी प्रकरणा करते हैं- शक़लेहवामें विद्यमान कोई एक प्रमत्तसंवत जीव शहरेदवाके लाथ ही अप्रमत्तलंवत हो गया। वह हितीय लमयमें मरा भीर देवत्यको प्राप्त हुआ (१)। अथवा, गुहुलेदयायाला श्रेणीसे उतरता हुआ कोई अपूर्व-करणसंयत अध्यमससंयत होकर मरा और देय हो गया (२)। यहां पर एक समयके अंगोंकी मरुपणा करनेवाली गाधा इस महार है-

ते हो ले इया के दी, दी और तीन समय मंग होते हैं। पद्म ले इया के तीन जिक मर्याद तीन, तीन और तीन समयभंग होते हैं। तथा, शब्द हैरपाके दी, तीन और दो समयभंग होते हैं, पेसा जानना चाहिए ॥ ४१ ॥

विद्येपार्ध - उत्तर जो एकसमयसम्बन्धी भनेक विकल्प बताये गये हैं, उनका स्पष्टकरण इस प्रकार है- तेओछेइयासम्बन्धी देशसंयतके दो भंग, प्रमुखंयतके दो भंग, भीर भप्रमाच संयतके तीन भंग, इस प्रकार कुछ (२+२+३=७) सात भंग होते हैं। पद्मलेह्या-सम्बन्धी देश संवतके तीन भंग, प्रमणसंवतके तीन भंग और अप्रमणसंवतके तीन भंग, इस मकार कुछ (३ + ३ + ३ = ९) मी सँग होते हैं। गुहुछेहवासम्बन्धी देशसंवतके दी भंग, प्रमच-संयतके सीन भंग और अग्रमचसंयतके दो भंग, इस प्रकार कुछ (२ + ३ + २ = ७) सात भंग कानमा चाहिए ।

उक्त दीनों गुणस्थानोंका उत्कृष्ट काल अन्दर्भृहुर्व है ॥ ३०७ ॥

क्योंकि, इाज़लेह्यासे परिणत होकर अलह सम्तर्महर्न रह कर पद्मलेह्याको माध्त इप जीवोंके उत्हर काल पाया आता है।

१ दत्कवंगान्तद्रहर्तः । स. सि.

चदुण्हमुवसमा चदुण्हं खबगा सजोगिकेवली ओवं ॥ ३०८ ॥

हदी है एदेसिमोधे वि सुक्कलेस्सं मोतूण अण्यलेस्सामाया । ण्यं हेस्साप्तमाणां सप्तता I

भवियाणुबादेण भवसिद्धिएस मिच्छादिही केविचरं कालादी हैंति, णाणाजीवं पडुच सव्वद्धां ॥ ३०९ ॥

सराममेडं सर्च ।

एगजीवं पड्डच अणादिओ सपन्जवसिदो सादिओ सपन्न

वसिदों ॥ ३१० ॥

तं जहा- मवियत्तं दुविहं, अणादिसपञ्जवसिदं सादिसपञ्जविमदिमिदि । पुरुवमः लदसम्मचस्स अणादिसपज्जयसिदं। सम्मचं लहिकण मिच्छचं गदरस सादिसपजनिदं। अणादिचादो अंकड्रिमस्स ण विणासो चे ण, अण्णाणस्य कम्मर्थयस्य य अणादिस्य वि

शुक्रकेश्यावाले चारों उपशामक, चारों श्ववक और सपोगिकेवलीका काल शेवके

समानं है ॥ ३०८ ॥ क्योंकि, इन गुणस्यानवाटोंके बोधमें भी शुक्क टेइवाका छोड़कर मन्य टेक्सा भागाय है ।

इस बहार छेरयामार्गणा समाप्त हुई। भव्यमार्गणाके अनुवादसे मध्यासिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव कितने कार

एक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ ३०९ ॥ यइ स्त्र सुगम है।

एक जीवकी अपेक्षा अनादि-सान्त और सादि-सान्त काल है ॥ ३१० ॥ जैसे-- मध्यत्य दो प्रकारका है, अनादि-सान्त और सादि-सान्त। पूर्णमें नहीं मार्

हुमा है सम्पक्त्य जिसकी, ऐसे जीवके बनादि-साम्त भव्यत्य होता है। सम्पक्त्यकी प्राप करके मिध्यात्यको गये हुए जीवके सादि-सान्त मध्यत्य होता है।

र्मुका-ओ वस्तु मनादि है, यह मछत्रिम होती है और उसका विनास नहीं होता। (इसल्टिप मिष्यान्यको अनादि होनेसे अकृतिमता सिद्ध है, फिर उसका विनाश नहीं होते

चाहिए !)

समाधान-नहीं, क्योंकि, अञ्चानका और कर्मवन्धका, उनके अनादि होते हुए मी,

इ मध्याद्रहादेव मध्येष्ट विष्याद्रहेर्बातार्व बारेश्वया वर्षः बाङः । स. वि. १, ८. ६ पुरुवीनारेश्वना ही अंगी, जनादिः सपर्वनतानः, सादिः सपर्वनशानम । स. ति. १, 4.

 η_{i}

विणामुबलमा । अकारणचादी ज तस्य विणामी चे ज, अवादिवंचनवद्वकम्मकारणचारी धाटाणुगमे अनिवसाङ्गरूवर्ग à विद्वाणं निरुष्ठवासंत्रम् सम्प्रकामहरूमामत्रविद्विमाणं ण संसरि परणमृद्धि, तरी म साहि भविष्यं। व पहिंच्यासम्बद्धम् वि साहि मविष्यं होहि, पुट्वं वि तस्य महिन तात भाववण । जा भाववण्यातम् अस्य व्यक्तिमा । स्वयं प्रतिहर्म उपदे। या च ते संसारं भिन्दिति, यहामनचादा। दिन् गहिद्रमण्यचीहरूम सहिएछ सादि उपदे । ण प ते पुरामत्ति, सादिसातस्यदस्य पुत्रेबाहम् अणादि अग्नेजन सह पान अवर । ज व व उच्चात्र्य मान च वा, मान पहुंच तस्म मानुकस्ता । व वर्षि पद्देश सम्मनग्रहणेण विका अनिवर्धसारस्य जीवस्य मार्ने महित्रम्, निराहाः। वार प्रकृत राज्य राज्य राज्य राज्य ज्ञान वार्य वार्य ज्ञान वार्य वार्य ज्ञान वार्य अवि अर्णना जीवा जैदि पा पना नगःण परिणामा । भावतानंबह्रपड्डा जिनोदवातं व संबन्धिः ॥ ४२ ॥

विनादा पापा जाता है।

र्चेशा — कारमरदित वरतुका विवास नहीं होता है. हरादित सकाव या क्रांबाकरा मी विनाश नहीं होना चादिय ?

तमाधान-नहीं, वर्षानि, भवान वा क्ष्मैबन्धहा कारक स्वरादिकधानक वर्षे हैं। है। धना — मक्ष्म प्रवास । जवान भा भागम जना वादण जनाद्वरसम्बद्ध व व दाद । धैका — विद्यास, अलेखा, काम और वोगके द्वारा व द्वारा हो। विद्यास स्व जीवांचा दुना संसादम् पान नहीं होता है, हमसिए अध्याद स्थितना नहीं है। और व वारवात अन्य स्वतंत्र म्यान नवा कतात् का वानाम् वानाम वात्यामा का वा वान्यास्य स्वतंत्र स्वतंत्र स्वतंत्र स्वतं जीवमें भाषाय पाया जाता है है

समाधान - अह उक्त मार्राहाका परिहार कटन ई - स्रतारमें दुक, स्टीटकर का.क. पाल स्वत्र कायाका व्यवसार अभ्यावका स्थाद वटा यह सक्या क्यांक क्यांक क्यांक्का व्यवस्थ हा जानन व समारम पुनः लानकार नहा जात उत्तर महण वर्षा ह लाउप क्षा । इसके हैं ऐसे जीवके आराज्यही साहि कहते हैं। सथा, वह वृदेने भी नहीं हैं, वहीते - इस का किसके सायायहे पूर्ववर्गी उस समाहि महाम अध्या हहे साथ वह वह विशेष हैं।

िपूपका। वह भागानुः भागा भागान्यः राज्य वद्याच्या । बराय द : पुत्रा — वहसंदे अध्यायके। भी बहि सामा साव जिला झाह, में! करा दाहि हूँ है प्रताच्याचे प्रवासित व्यासित होति को अदिशास असद साम्यवादा उपहरू हिस्स कार्य

संविधित क्षात्र प्रथम क्षात्र का क्षात्र क्षात्र क्षात्र व्यक्ति हिंदी स्थान क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र का हैं। देशनिक। अपनेश सारक्षणचाहरूक । वता सतरू असारा ज वह न्यूक संज्ञान कर्या जा जा विकास स्थान है असी विकास स्थान स् सता का रहकता, वधाय, भरत वालमान स्थान का ना के कार्या स्थान का वास्त्राप्त असाहित अस्त्रम् श्री होता वहेंगा अस्यया श्रीह सोहीह विद्यान अस्त्र क्रमा क्रम्म होता निकास स्तर मा हाता प्राणा जानका जान का जान गानका जा जान जा है है। जिस्सान क्षेत्र है कि स्तरहान क्षेत्र है कि स्तरहान

भीर जावा भागांक का का वा सामकाम जागांक भागां जा गांक जह का है जो हुमित आबोर्ड अति हासुरुवाहि स्वास्त्र कहीं औ तिराष्ट्र सामकाम्य कहीं हो हुमें हैं। इस ह

एयणिगोदससि जीवा दव्यप्यमाणदे। दिहा । सिद्धेहि अर्णतमुणा सन्वेण विनीदकाटेण ॥ ४३ ॥

इचारिसुत्तरंसणादो य । ण च मोक्खमगञ्जंताणं मवियतं णित्य ति चोतं जुर्च, मोक्खमगञ्जंताणं मवियतं णित्य ति चोतं जुर्च, मोक्खमगञ्जंताणं सदियतं णित्य स्वतं सि भवियत् च्यत्ये (३)। ण च सत्तिमंताणं स्वतं सि भवियत् स्वतं सि वि हमपासाणस्स हेमपज्ञाएण परिणमण्यतं । । ण च एवं, अणुवलंसा । णिव्यूदं मच्छमाणो वि ण बोविष्ठज्ञिद भव्यति वि क्योवेदं णच्यते ? तस्ताणंतियादो । सो रासी अणंतो उच्चह, जो संते वि वर्ष ण णिहादि, अण्णहा अणंवययत्सा अण्ययत्रो होज्ञ । तम्हा तिविहेण मवियत्रेण होदव्यसिदि । ष च सत्तेण सह विरोही, सर्ति पद्यत्य सन्ते अगादिस्तित्वयस्सा ।

जो सो सादिओ सपञ्जवसिदो तस्स इमो णिदेसो ॥ ३११ ॥

. एक निगोदशरीरमें इच्याप्रमाणसे जीव सिद्धांसे तथा समस्त व्यतीत काउके समयोंसे अनन्तगणे वेसे गये हैं ॥ ४३ ॥

. ह्यादि स्थांके हेले जानेले भी भ्रष्य जीयोंके विच्छेदका सभाव सिन्ध है। तथा, मोसको महीं जानेयाले जीयोंके भ्रष्यपना नहीं होता है, देसा भी बहना युक्त नहीं है, क्योंकि, मोस नामकी ह्याकि स्वयापकी स्थित होना है। तथा यह मी कोर्ट सियम नहीं है कि अप्यायकी हाकि स्कृतियाले सभी जीयोंके उसकी व्यक्ति होना है। वाहिए, सन्यथा, सभी स्थापित होना है। व्यक्ति होना है। व्यक्ति सम्यायकी होना है। व्यक्ति सम्यावकी होना है। व्यक्ति सम्यावकी होना है। व्यक्ति सम्यावकी स्वर्था प्राप्त होगा है कि मुस्सित सम्यावकी स्वर्था प्राप्त होगा है कि मुस्सित सम्यावकी स्वर्था प्राप्त होगा है कि स्वर्था सम्यावकी स्वर्था स्वर्था सामकी स्वर्था स्वर्था सामकी स्वर्था स्वर्था स्वर्था सामकी स्वर्था स्वर्थी स्वर्यी स्वर्थी स्वर्थी स्वर्थी स्वर्थी स्वर्थी स्वर्यी स्वर्थी स्वर्या स्वर्थी स्वर्थी स्वर्थी स्वर्थी स्वर्थी स्वर्थी स्वर्यी स्वर्यी स्वर्थी स्वर्थी स

स्व मकारस दला नहा जाता है। इंक्री-- निर्देशिक्ष) को जानेके कारण नित्यव्ययात्मक मध्यराशि विच्छेदकी

प्र.प्त नहीं होगी, यह कैसे जाना है

समाधान — प्योंकि, यह राशि अनस्त है। और यही शादी अनन्त क्षी जाती हैं। को स्वयंके होते रहने पर मी समाध्त नहीं होती है। अस्यया, फिर उस राशिकी अनन्त संहा कमर्थक हो जायगी। इसलिए सम्यत्य तीन प्रकारका हैं। होता चाहिए। तथा ध्यक्ते साथ मी फोर्ट पिरोध नहीं जाता है, क्योंकि, प्रक्तिकी अधेशा स्वयं सम्बद्ध अमारि-धानताका उपदेश दिया गया है।

उक्त वीन प्रकारोमेंसे जो भन्यस्य साहि और सान्त है उसका निर्देश स्प प्रकार है ॥ ३११ ॥

१ गी. बी. १९६. १ म प्रती ' मनिवत्तुवर्जनदेशा ' इति पाठः ।

के सम्बद्धनरह जोग्या के जीवा है इंडी सविज्ञा। व हु स्टिशिये निववा हार्न कमनेपडापित है यो. मी. ५५८. ४ देव लादिः सपर्वसानी जायनेनामधुर्वदेश । स- वि. १, ६.

तिण्डं मिरियाणं मन्त्रे जो सादिसपन्जवसिदो मिनियो तस्य इमो णिदेसी परूचणा पण्णावणा चि उत्तं होदि। अपना मिनियाणं अं मिन्छतं तं दुनिहं, अणादिसपन्जनसिदं सादिसपन्जनसिदिमिदि। तत्य जो सो सादिओ सपन्जनसिदो मिन्छादिद्वी तस्य इमो णिदेसी चि वष्टां। पुन्निन्छिन्द पुण अत्ये जो सादिओ सपन्जनसिदो मिनियो तस्य मिन्छवस्स इमो णिदेसी परूजेद्दां।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३१२ ॥

वं जपा- सम्मादिही दिहमग्यो भिच्छचं गंत्ण सन्वजहम्णमंतामुहुचमान्स्रप अण्णागं गरो ।

उनकस्सेण अद्यपोग्गलपरियट्टं देस्णं ॥ ३१३ ॥

वं जहा- एको जणादियमिन्छादिही तिन्यि करलाणि करिय मन्मचं पहिक्यो । तेण सम्मचेण उपपञ्जमाणेण जणेता संसारा छिण्यो संतो अङ्गोरमात्यशियहमेचो करो । उत्तसमसम्मचेण जहण्यमेतीसृहचमस्छिय जनसमसम्मचदाय छातश्यियसमा आसानं गैत्य मिच्छचं गेदस्यो । जहवा उनसमसम्मादिष्टी चेन सिप्छचं गेन्स अङ्गोरमानशियहं

तीन प्रशारके अप्योक्ते मध्यमें को सादि-सास्त अध्य है, बसाश यह निर्देश है, स्वर्यात् असकी यह प्रश्नपणा या प्रकारता की जाती है। स्वयत्त, अस्य अधिके से विश्वपक्त है, यह दो प्रकारका होता है—(१) मनादि-सास्त, और (१) सादि-रास्त । उदस्येन के सार्वाद और सामादि के उदस्यों के सामादि और सामादि के उदस्य कर यह निर्देश है, देश कहना वादिया तथा यह के सर्वेते की सादि-सास्त अध्य कहा है, उसके विश्वपत्यका यह निर्देश है, देश कहना वादिया सम्मादिया

सादि-सान्त मिध्यारहका अपन्य काल अन्तर्भुह्ते है ॥ ११२ ॥

श्रेले— इष्ट्यानी कोई शरपार्टाट आंव विश्वायको ज्ञान होकर सर्वज्ञयन अन्त-मुंदर्त काल रह करके अन्य गुनरपानको बला गया। साहि-सान्त विश्वादका उत्कृष्ट काल देखेल अर्थपुरूतपरिवर्तन है ॥ १११ ॥

त्यादमार्थी । क्षार्थिक क्षार्थिक क्षार्थिक में कुर्ति के स्वार्थिक करते सरक्षक के प्राप्त करते सरक्षक के प्राप्त कर सरक्षक के प्राप्त करते सरक्षक के प्राप्त कर सरक्षक के प्राप्त कर स्वार्थिक करते सरक्षक के प्राप्त कर कर कर अस्ताव के स्वार्थिक के स्वार्थिक कर कर करता सरक्षक के स्वार्थिक के स्वार्थिक कर कर करता सरक्षक के स्वार्थिक के स्वर्थिक के स्वार्थिक के स्वर्थिक के स्वर्य के स्वर्थिक के स्वर्थिक के स्वर्य के स्वर्थिक के स्वर्थिक के स्वर्थिक के स्वर्थिक के स्वर्थिक के स्वर्य के स्वर्थिक के स्वर्य के स्

१ बावरेवार्यदालकारियों देवांगा । व ति. १. ८.

देषूणं मिन्छचेष प्ररियद्विय अतीष्ठहुचावसेते संसारे सम्मचं चंनूणं अर्णताणुवेषी विष्ठेते। इंपं विस्तिमिप देशणमीहं खविय पमचापमचंपरावचसहस्सं करिय अधापमचकरणं काज्य अपुच्या अणियही सुहुमी सीणो सजीमी अतीमी होदूल विद्वा जारो। जारं देषणम्दः पोग्गलपरियङं ।

सासणसम्मादिद्विषहुडि जाव अजोगिकेविछ ति ओर्घ ॥३१८॥

फुरो ? सासणादीणं मित्रयचं मोत्तृण अण्णस्यासंमत्रा 1

अभवसिद्धिया केन्नचिरं कालादो होति, णाणाजीनं पडुच्च

सन्बद्धा ॥ ३१५ ॥

छुदो ? अन्वयत्तादो ।

एगजीवं पडुच्च अणादिओ अपज्जनसिदों ॥ ३१६ ॥

र्छुदो ? मिच्छर्चे मोनूण तस्स गुणंतरगमणामावा ।

एवं अवियमग्गणा समता।

कातर्सहुर्तभाव संसारके रोप रहते पर सम्पन्तयको प्रहण करके, पुतः अनन्तानुवन्धो कपावका विसंपोजन करके, पद्धान् विधान हे, द्वानमोहको स्वपण कर, प्रमत्त और अप्रमत्त ग्रुण-स्थानसम्बन्धी सहको परिवर्तनीको करके, अधान्यकृतकरण कर, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण स्थानसम्बन्धान, स्वीणकरण, स्थोगी और अयोगी हो करके सिद्ध होगया। इस प्रकासं वैद्यान मर्भयुक्तस्थितक काल सिद्ध हुना।

सासादनसम्पर्टाष्ट गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली तकका काल ओवके समान

है।। ३१४॥

क्योंकि, सासादनादि गुणस्थानवर्ती अधिके अञ्चलको छोडकर अन्यका होता, अर्थात् अभूरचपना, अर्थभव है।

अमय्पति इति कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल

होते हैं ॥ ३१५ ॥

क्योंकि, अमध्य श्रीयोंका व्यय है। नहीं होता ।

एक जीवकी अपेक्षा अभय्यों का अनादि और अनन्त काल है।। ३१६ ॥ क्योंकि, मिष्यात्वको छोड़कर समस्यके सन्य गुजस्थाको जानेका समाय है। इस प्रकार स्वयमार्थना समाप्त हो।

वाताद्वतन्त्रमञ्जायशोगकेवस्त्र-तानी सामान्दीतः काळः । स. थि. १, ८.

समन्दानायनाएवरैश्कानः । स. वि. १, ८०

बाटाणुगमे सम्मादिद्विवाटगरूवर्ग सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिङ्गि-खङ्यसम्मादिङ्गीस् असंजदसम्मादि T BETTER पहुंडि जान अजोगिकेनळि ति जोर्घ ॥ ३१७ ॥ جؤنو ثبع इदो ? सन्बमुणहाणाणमृष्यणा णाणगभीवजहण्युवनस्मकाले अस्मिर्ण मेदामान णवरि सहस्रतम्मादिष्टि संजदासंजदेस अधिय भेदी। तं मणिसमामा । ग चेमा महो सुके कि होते हैं। जनहरिद्दी, समेहिद्दिसंस्मामण्यमयसंबिष ओषामिदि शिद्देसारा । तं जहा- एमा देश वारको वा सम्मादिही मकुमेसुविजय अत्तेमुहुचन्महियग्नमहिश्रहेवस्य मानेप संज्ञमाः भारता था राज्यात्रहा पान राज्यात्र व्यवस्थात्र विष्णात्र स्थात्र स्थात्य स्थात्र स्थात्र स्थात्र स्थात्र स्थात्र स्यात्र स्थात्र स्यात्य स्थात्य स्यात्य स्थात्य स्यात्य स्यात्य स्यात्य स्यात्य स्यात्य स्यात्य स्यात्य स्थात्य त्रमादिष्टी जादो । चहुरि अतेमुहुचरि अन्मदिसअहुनस्महि जीवर्ष प्रमक्तिहस्यमः तन्त्रात्वाः जादाः । जुन्दः जपायश्चरादः जण्याद्वरमहरणादः जन्यर सन्तरः तंत्रममञ्जूपातिय मदो देवी जादो । यस्येत्र विसेमी, जात्य अञ्चन कस्य वि । वेदगसम्मादिद्दीसु असंजदसम्मादिद्विषहुडि जाव अवमत्तसंजदा ति ओषं ॥ ३१८ ॥

a. 2 sts. 1

इरो ? वाणेमजीवजहण्युवस्तकालेहि सस्वगुणहावार्ण औषगुणहाँवाहिनी भेरासासा तम्यस्त्वमार्गणाके अञ्चारते सम्यग्दिए और शाविकमम्यग्दियों क्रांयवनम्य-होटि गुणलानसे लेकर अयोगिकेवली गुणमान सकता कान आपके मसान है ॥११७॥ विष्याच्या एकर जयान्यावस्य होत्रहर अपने युक्तका काण जानक ज्ञान के गहरू जाने वर्षों है, बीचे युक्तकावृति होत्रहरू अपने युक्तका व्याप्त वर्षे वर्षे वाले वधार, जाय धारप्याच्य कार अवस्य, सभा ग्रुपण्यानाचा अवन अवन बाग् जीव माद एक जीवके जीमाय और उत्तर बारका शास्त्र करके सारास्टि की मेरे साथ वाद कार पत्र प्राप्त अवन्य कार अस्त वास्त्र अस्त अस्त अस्त अस्त अस्त वास्त्र विदेश होते हैं । विदेश बात यह है कि शाविकतावादि संवताक्ष्यों के बालमें सह है पत्त अह नहां हा त्यावाय वात यह हा का कार्यक्ताव्यव्यव्य प्रधानाव्यव्यव्य वात अह है । यह हहा जानेवाला भेद गुणके हात्त म बहा गया हो, देशी बाद मही हैं।

वर्षे प्रकार है। वह सामाग्र और विशेष क्रिसमें, पेरे मध्यापिकत्वम सप्ताहर करें त्रधाना प्रदेशत व त्यानाच नार प्रकार कारण कर सम्माध्य करने हैं . बहु भाव प्रसा पर रहमा नारश करना था है। सब जल कात्या वरणाव रस करन है जात है वा स्वता वरणाव रस करने हैं जात सहित सम् प्रकार्य, स्वयम तारका १८२० गाँव आधुः भाव अधुः पास उपच्य हाकर, स्वरमुद्दम स्वाधक स्थापि हेक्ट माठ यहँ विभावतर, संयक्षासंच्याको यात्र होकर और स्वरमपुर्दम स्वयास करते. भारत छहत, भार पर क्यांकर, स्वकारत अवकार भारत हाकर मार करणापुर न वका मार कर रहे सातपुरति दर्शन भारतीय हा स्वया हर . सा.यह स्वस्तरहि हो सदा हत बार करता हुन्नी कात्तपुरुत्ततं व्यानभारमाध्या कावण का, बात्तप्य पावणाव्यादार या जावा वेण कार कापाद्वातात्व स्वतिष्ठः साह वर्गातं क्या पूर्वकृष्टि वर्षयमाण सदसासदमक्षेत्र वर्णवस्त्र कावे प्राप्त कार्याद्वातात्व हुमा । यहाँ पर ही हननी विरायमा है और वर्रा बु छ थी विरायमा नहीं है

ष्ट्रा पर हरियोमे अमंपनसम्पारित नेवन अभनवर्धमा गुण्यान स्टहा काल ओपके समान है।। ३१८।। विधीच, माना आंव शांत एवं आविशावत्थां अध-१ शांत वत्व व वालावी अट्रान पित्रांत, सर्व गुणक्याने व ब अवा बाह्य गुणक्यानाव बास्त व व अर बहर ह t area with propagation and control and the co The street of the first of the

उवसमसम्मादिहीस असंजदसम्मादिही संजदासंजदा केवितरं कालादो हॉति, णाणाजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतोमुहुर्चं ॥ ३१९ ॥ वं जहा- सचह जणा बहुआ वा मिन्छादिहिणो उत्रममसम्मवं पढिवणा।

उवसमसम्मचद्वाए छावलियसेसाए सच्चे आसाणं गदा। अंतरं गदं।

उक्कस्सेण पिटदोनमस्स असंखेन्जदिभागो^{*} ॥ ३२० ॥

र्वं जहा- सचहु जणा बहुआ वा मिच्छादिहिलो उवसमसम्मर्च पडिवल्या । तस्व अतोष्ठद्रचमन्छिय वेदगसम्मचं सम्मामिच्छचं साम्रणसम्मचं मिच्छचं वा गदा । **ए**दस्त एगा सलागा णिविखविद्व्या । तस्समए चैव अण्णे मिच्छादिद्विणो उवसमसम्मर्च पिडेन विजय तस्य अतामुद्रुचमन्छिय चदुण्हं गुणहागाणमण्यदरं गद्रा । विदियसलागा ट्या होदि । एवं विभिग चचारि आदि गेत्म पलिदोवमस्य असंखेजजदिमागमेनात्रो सठागात्री लब्मीति। तं कर्षं मन्त्रदे श्वाहरियपरंपरागद्वदेसादो । एटाहि सलागाहि जनसमसम्मन्दं गुणिदे सगरासीदो असंखेजजगुणी अर्णतरकाली होटि।

उपश्चमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीव दितने कार्त तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे अन्तर्गृहर्त काल होते हैं ॥ ३१९ ॥

्राच चार्य नात जात जात था बहुतवा मध्यादार जाद वपरामसम्बन्धाः मान्य इन् भीर वपरामसम्बन्धाः का कार्य छह आवर्षामाण कारके सबद्यिए रहने पर समीते समी सासादनगुणस्थानको मान्त हो गये भीर पुनः सन्तरको मान्त हुए।

उपश्चमसम्यग्दृष्टि असंयत और संयतासंयतोंका नाना अत्रोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट

काल परयोपमके अर्थरुपातवें माग है ॥ ३२० ॥

कैसे—सांव बाड जन. अथवा बहतसे मिरवारप्रि औष उपरामसम्बन्धको मान्त हुए। दसमें सन्तर्महर्त रह करके ये सब वेदकसम्बन्धको, या सम्यग्निश्यात्यको, या सामाहतः सम्यक्तवको, अथया मिथ्यात्वको प्राप्त हुए । इसको एक दालाका स्थापित करना चाहिए। उसी समयमें ही सम्य भी मिथ्यादिए जीव उपदामसम्यक्त्यको शान्त होकर, उसमें सन्तर्मुहर्व रह कर, पूर्वोक्त चार गुणस्थानामेंसे किसी एक गुणस्थानको प्राप्त हुए। यह इसरी शहान मात हुई। इस मकारसे तीन चारको सादि छेक्ट प्रयोगमक ससंस्थातव मागमात्र द्वारापं मास होती 🗓

र्शका-पद केसे जाना जाता है कि उपश्यमस्यक्तकी हालाकार प्रयोगमंके असंस्थातमें भागमात्र होती हैं है

समाधान—माचार्यपरम्परागत उपदेशसे यह जाना जाता है।

इन छन्य राजाकामोंसे उपरामसम्यक्ष्यके कालको गुणा करने पर अपनी राशिष्ठे वसंस्थातगुणा भन्तररहित उपशमसम्यक्तवका काल होता है।

६ दरकरेंन परवीरवालंक्येवमागः । त. वि. १, ८,

एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३२१ ॥

तं जहा- एको मिच्छादिङ्की उवसमसम्मर्ख पिडवण्यो, अवरो देससंजमेग सह तै चेव पडिवण्गे। सन्वज्ञहण्यमद्भमिष्ठय उनसमसम्मचद्वाप छात्रलियावसेसाए आसार्ण गदा। एसो दोण्हं पि जहण्यकाले।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं' ॥ ३२२ ॥

र्षं जदा- दो मिच्छादिहिंगो। तत्य एगो उवसमसम्मर्चं, अवरो देमसंबर्भ पिटे-बण्णो । सन्युकस्समंतामुद्रभद्रमन्छिय दीव्यि वि तिण्हमण्णदरं गदा ।

पमत्तांजद्रपहुडि जाव वनसंतकसायनीद्रागछदुमत्या ति केन **चिरं** कालादो होति, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥३२३॥

तं जहा-पमच-अप्यमचाणं ताव उचदे। सचह जणा बहुआ वा उबसमसम्मादिहिनी उवसमतेदीदा ओदरिय पमचापमचा होद्व एगसमयमन्त्रिय कालं करिय देवा जादा । अपुरुवकरणस्य आदरमाणीदे, अणियद्वि-सुद्रमसांपराह्माणं चढणायरणकिरियावाब्देहि, उनसंतस्स चढेतेहि अस्पिद्गुणपडिनण्याविदियसमय मदेहि जीवेहि स्यासमञ्जा स्तान्ती !

एक जीवकी अपेक्षा उक्त जीवोंका जयन्य काल अन्वर्धहर्त है ॥ ३२१ ॥

जैले -- एक मिच्यादृष्टि जीव उपरामसम्बद्धाः मात दुधा। दूसा। देशसंबम्धे साय उसी उपदामसम्पन्यको मात हुमा । दोनाँ हाँ जीव सर्वज्ञपन्य बाळ अपने अपने गुल-र्यानोंमें रह करके उपरामसम्बक्त्यके कालमें छह भावतियां भवशेष रह जाने पर सासाहन-गुणस्थानको माप्त हुए। यह दोनों गुणस्थानीका ज्ञयस्य काल है।

यक जीवकी अवेधा उक्त जीवाँका उत्कृष्ट काल अन्तर्ग्रहर्त है ॥ ३२२ ॥

जैसे- दो मिच्यादिए जीव दें। उनमेंसे यक ज्यामसम्बन्धको और हुस्सा वैरासंयमको प्राप्त हुमा । यहाँ वे दोनों ही ओव सर्थोग्य सलमुद्वनेकाल रह करके मिरवारव, मिरवारव, मधवा वेदकसम्बद्धाय, इन तीनोंमेले किसी एकको मात हुए ।

प्रमत्तर्सयवसे लेकर उपधान्तकपायशीवरागढबस्य गुणस्तान वक उपधाममध्यरदाष्टि जीव कितने काल तक होते हैं। नाना जीवाँकी अवेद्या जयन्यसे एक समय होते हैं।।१११।। वह इस प्रकार है- उनमेंसे पहेले प्रवत्त और अवसत्तस्यतांकी एक समयकी मक्रपणा करते हैं - सात आठ जन, भववा बहुमसे उपरामसम्बद्धि जीव, उपरामधेचील बतर कर प्रमासस्यत और अप्रमासस्यत होकर, यहाँ पर एक समय रह करके. मराच कर, देव हुए। अपूर्यकरण गुणस्थानयालेके उतरते हुए, सानेवृत्तिकरण और सुद्वमसान्त्रराजिक शुणस्थानवासींक आरोहण भीर अवनत्या, इन दोना ही कियाओं हते हुए, तथा वपरानक-करायके खड़ते हुए दिवसित गुणस्थानको प्राप्त दोकर दिनीय समयम सर हुए डॉलिक हारा एक समय श्री प्रक्रपणा करना बाहिए। t प्रशीर क्षेत्र जवायकी प्रश्नान्त हेंहुई- । स. हि. १, ८,

६ प्रस्तारमध्योभद्रपद्विष्टम्बन्धाः च बात्रामधारेक्या चक्रमेनारेक्या च प्रकारेरेका क्रम । 8. fê, €, €. f zigå . Mittatigten, bij dit: 1

उक्कस्सेण अंतोमुहत्तं' ॥ ३२४ ॥

पमनापमनाणं तान उन्चरे- सन्द्र लणा बहुआ वा दंसणमोहणीयउनतामणा चारित्तमोहणीयउनतामगा वा पमनापमन्यगुणे पड़िवणा। तेसु अंतोम्रहनदम्गित्य अण्य-गुणं गरा। तम्हि चेन समए अण्ये उनसमतम्मादिष्टिणो पमनापमन्यणे पडिवणा। एवमेत्य संखेजनसलामा लन्मति। एदाहि पमनापमन्ददं गुणिदे वि अंतोम्रहने चेर होदि। इदे। अंतोम्रहन्तमिदि सुचे उदिहनादो। एवं चेन चहुण्हमुवतामगाणं वि वचन्रं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं ॥ ३२५ ॥

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३२६ ॥

एदाणि दो वि सुचाणि सुगमाणि, णाणाजीवज्ञहण्युक्कस्सकालपस्वणाए पह-

सासणसम्मादिङ्घी ओघं ॥ ३२७ ॥ सम्मामिच्छादिङ्घी ओघं ॥ ३२८ ॥ मिच्छादिङ्घी ओघं ॥ ३२९ ॥

एक बीवकी अवेशा उक्त बीवोंका बुधून्य काल एक समय है॥ ३२५॥

इक्त जीवोंका उन्ह्रष्ट काल अन्तर्गृहर्त है ॥ १२६ ॥

दक्त नाराका उत्तर साल जनायुर्व हो। वर्ष ।। ये दोनों दो गुत्र सुगम है, वर्गोह, इनका अर्थ नानः श्रीयोक्त अध्यय भीर इन्हर् इन्हर्स्ट प्रदर्शनमें प्रकारन दिया जा जाता है।

सामादनम्पराधि वीशोंका काल ओचके समान है।। ३२० ॥ सम्बन्धिस्पाधि वीशोंका काल ओचके समान है।। ३२० ॥ निरुपाधि वीशोंका काल ओचके समान है।। ३२९ ॥

र इत्यापन्तीत्रे । क. कि. २, ७. ९ क्षापादनकम्पत्तिनाम्बर्तिनार्वाति दिल्लान्दीली सावप्रमीलः काळः । क. कि. १, ४०

ओपस्हि उचमासवादीणं सम्मनाणुबादम्हि उचमासवादिविण्हं गुनहापानं च भेदाभावा ।

एवं सम्बन्धसम्बद्धाः सम्बद्धाः ।

सा्ण्याणुवादेण सण्णीसु मिन्छादिट्टी केवितरं कालादो होति, णाणाजीवं पहुच्च सब्बद्धां॥ ३३०॥

सुगमभेदं सुचं ।

एगर्जीवं पहुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ३३१ ॥ यरं पि गुर्च गुगर्म चेव, बहुती वरुविश्वाही ।

उनकस्तेण सागरोवमसदपुधत्तं ॥ ३३२ ॥

तं ज्ञा- एगे। जसक्यो सच्योतु उपवर्ष्या सामग्रदममदवुषचं मन्देश सदिय पूरी। अमिकाचं महो ।

सासणसम्मादिष्टिपहुडि जान श्लीणकसापर्वादरागछरुमत्या सि ओचं ॥ ३३३ ॥

श्रीयमें कहे गये कालाइनसक्यारणि आहि नीन गुणन्यातीकी बास्तक प्रान्तक है. ह साम्यक्त्यमाणाची अनुवादमें बहे गये सामाइनसक्यारणि आहि नीन गुण्क्यानीकी बास-प्रदेशनाहा प्रस्परमें कोई भेद नहीं हैं।

इस प्रकार सम्यव चमार्गणा समाप्त हुई ।

संसामार्गणके अनुबादने संती जीवोमें मिष्यादृष्टि कीव किटने काय तर होते हैं है नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वे काल होते हैं ॥ ३३० ॥

यद पर पुराव दे । तुरु जीवडी अरेक्स मंदी विभागागटि भीवोदा जयन्य कान कानहें है ते ११२१॥ यद पात्र भी सुनम दी दे, वर्षोक, वरते बहुन वार सम्पन्न किए जा मुका दे । यद जीवडी अरेक्स मंदी विभागपटि भीवोदा उनकुर बाल सम्पन्न

प्रथमन्य है ।। ३३२ ॥

क्षेत्र- कोई यह असंदी श्रीव संक्रियों व उपल हुना और सलगोदर राज्य प्रकृति

आत तर यह संविधामें ही अवदा करने पुरः असंविधा की बाब हुआ।

सामादनमृज्यप्रतिने तेवतः श्रीयवसायकीनसम्बद्धम्य गुरुव्यान सद में हिन्हे के बातप्रकृषमा जोपके समान है ॥ २२२ ॥

द बंदापुर पेट करिए प्रियम्बर पर है। तिवास करिए प्रतिहर है कि विकास

६ देवली क्षादा शता काता है है, द

सिणसासणादीर्णं ओधसासणादीर्णं च सिणार्चं पढि मेटामावा । असण्णी केवचिरं कालादो होंति. णाणाजीवं पड्डन्त्र सम्बद्धां

11-338 11

सगममेदं सत्तं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण खुद्दाभवगगहणं ॥ ३३५ ॥ तं जहा- एगा सण्णा असण्णास उप्पन्जिय सहामयग्गहणमेतकालमन्त्रिय

माण्याचं गढो । उनकस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ २३६॥

तं जघा- एगो सण्णी मिच्छादिई। असण्णी होरण आवलियाए असंसेजनिरः मागमेचवोग्गलपरियद्वी तत्थ परियहिद्य सिष्णितं गदी।

एवं सर्विगमगाणा समना ।

, आहाराणुवादेण आहारएस मिच्छादिदी केवचिरं कालादे। होंति,

णाणाजीवं पड्डच सन्बद्धां ॥ ३३७ ॥

क्योंकि, संधी सासादनादिकोंका और आग सासादनादिकोंका संक्रियके प्रति कोर् भेव नहीं है। असंत्री जीव कितने काल तक होते हैं ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते

K II 3§8 II 🏖 यह सत्र सराम है।

एक जीवकी अपेक्षा असंत्री जीवोंका जयन्य काल क्षद्रमवग्रहणप्रमाण है ॥३१५॥ असे — कोई एक संबी जीर्य असंबियों में उत्पन्न होकर अदमयग्रहणमात्र काल रह

करके संक्षिपको प्राप्त हो गया।

एक जीवकी अपेक्षा असंशियोंका उत्कृष्ट काल अनन्तकालात्मक असंख्यात प्रद्रलपरिवर्तनप्रमाण है ॥ ३३६ ॥

जैसे— कार एक संजी मिथ्यादृष्टि जीय असंजी होकर, आयुर्टीके असंक्यात्य मार्ग-भात्र पहरूपरिपर्तनातक उन्होंमें परिश्रमण करके संक्षित्यको प्राप्त हुना ।

इस मकार संबीमार्गणा समाप्त हुई। आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें मिध्यादृष्टि जीव कितने काल दक होते हैं ! नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥ ३३७ ॥

र अमंतिना विष्णारहेर्नोनानीवारीश्वया सर्वः कालः । स. सि. १, ८.

६ एकमार्च प्रति सवायेन स्थायवम्बनन् । स- ति. १, ८,

३ बन्दर्रेवारन्तः कालोध्वंक्येवाः प्रद्रव्यश्वितीः । स. वि. १, ८.

४ बाहारातुरादेव बाहारहेत्र विष्यारहेर्नामानीविद्यास सर्वेः बाहाः ह स. सि. १, ४.

2, 4, 382.]

सगममेदं सचं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुर्चं ॥ ३३८ ॥ एदं वि सुर्च सुपर्व चेव, बोपव्हि उचत्यारो ।

उनकरसेण अंग्रलसा असंसेव्जदिमागो असंसेवजानंसेवजाओ

ओसिषिनि-उस्सिषिणीं ॥ ३३९ ॥

सं जहा- एको मिन्छादिष्टी विग्यहं कात्व उदवच्यो । अंगुलस्य अर्धने ब्रह्मियां अमें खेजा में खेजा जी मिणि जरमिपि विवाल के तत्व परिमिष्य आहारमा आहे। इन्त अवसाणे विगाई करिय अणाहारिचं गरा । एवमाहारियिण्डारिट्रिय उद्दर्शकानी सिद्धो होहि ।

सासणसम्मादिद्विषहुडि जान सजोगिनेविट चि ओपं ॥३४०॥ हुदी। णाणेगश्री र जहण्यु कस्सकाले हि आहारिसासवार्दावं औषमामवार्दाहि महासारा।

अणाहारएस कम्मइयकायजोगिभंगों ॥ ३८१ ॥

यह सूत्र सुगम है।

एक जीवकी अपेक्षा आहारक विध्यादि श्रीकेंका अपन्य काल अन्तर्वान है।। ३३८ ॥

यह एक भी सुमम ही है, क्योंकि, भोषमें इसका मर्च कह दिया गया है।

उक्त जीवींका उत्हृष्ट काल अंगुलके असंख्यावर्षे मागपमाण असंख्यातः हं स्यात अवसर्विनी और उत्सर्विनी है ॥ ३३९ ॥

जैसे- यक मिथ्यादिश जीव विश्वष्ट वरके (बाहारक मिश्वार्शहरोंके) क्लक हुमा। बंगुलके मसंबदातवें भागतमान मसंबदातासंबदान सदसार्वेदी और बन्तारंत्री शह वनमें परिश्लमण करता हुआ माद्दारक रहा । युनः अन्त्रमें विश्वह करके अनाहत्त्वकरेको जान प्रमा । इस प्रकारसे भारारक विष्यार्थी श्रीबीटा उपाद काल लिए हो जाना है ।

शासादनसम्पारि गुणस्थानसे लेकर संयोगिकेवली गुणस्थाय तरके बाहतकोटा

काल ओपदे समान है ॥ ३४० ॥

वर्षीकि, माना और यक जीवसन्दर्भी जधन्य और शब्द बायबी करेशा बादमक सासादमसम्बद्धी आहि गुणस्थानांका श्रीध सासादनाहि शुणस्थानीते काले से साथ वे RE REI E :

अनाहारक जीवाँका कारु कार्यकापयोगियोंके समान है ॥ १४१ ॥

१ एक्ट्रॉ.१ प्रति अब देशाल्ड्रॉड ६ व. हि. १, ८.

t aufeigemetearer unederfeter anderen um 18. ft. . .

व केवाला सामान्योत्तर काम । स. ति. १. ८.

v स्वतार्तित दिग्दारीर्वावाधेनचेत्वा वर्ते काः । तुरुवीत वर्षे वस वर्तेक. वस्त । बच्चीत का

हुरो ? मिन्छारिही णागाजीवं पद्रन्य सम्बद्धं होति, एंगंबीवं पद्रन्य जानेर एगा समजा, उदस्तेच विश्वि समयाः साराणसम्मादित्री असंबंदसम्मादित्री वालावित पदुच्य जहुन्तेच एगसमुत्रो, उक्करसेण आवित्याए असंरोज्जदिभागी, एगजीरं पर्प हैइंन्येन एससेमबी, उन्हेस्सेन वे समयाः सयोगिकेवंतीणं वाणातीर्व परुना बरुलेव तिनिय ममया, उक्करसेय संशेखतमया, एकजीवं पड्ट्य जदण्युप्रकरतेय तिनित्र सम्मा इने परि अनाहारमिन्छादिहिआदीमं कम्महपकायजामिभिन्छादिहिआदीहिता विसेतामारा।

अजोगिकेवरी ओधं ॥ ३४२ ॥

\$44 1

हुरी ? बामाजीवे पद्म जहण्युक्तस्त्रेण अंतीमृहुर्च, एमजीवे पद्गम जहण्युक्त-स्तेत पंतरम्बरस्करनारमहाले। इस्पेरेडि भेरामाता ।

> (ए वे आसारमध्याचा समसा ।) ए रे कालाणिजीगरारे सम्बर्ग रे

क्योंकि, अनाहारक विश्वारवि महतर अधिकी अवेदा सर्वकात होते हैं, यह शीकी कीएए क्रवण्यक्त सब समय होते हैं, और उप्तर्यक्ते सीत समय होते हैं। अनाहारक शास प्र कारण्यारे और अभेपनमान्यादांव नाना जीवीकी क्षेत्रशा जायन्यमे एक समय, बन्धरेने कार रेडे अर्थन्याय वे साथ, शह श्रीयदी अपेशा श्रायमी वह समय और प्राविधी करन वक बेंदे हैं, सरोविकेयजीका काल सामा अधिकी अधेशा अध्यक्ष तीन समय और र व रेंने संरक्षत समय है, नवा यह जीवडी भोरत ज्ञापय और अप्रय काल तीन समय है रण प्रकारण अमानारण मिश्यारणि आदि जीगोंका कार्यणवाययेगारै विश्वापति आदि fefreme: mare \$ 1

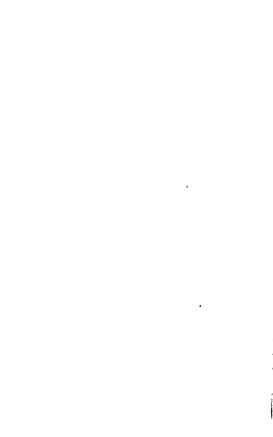
धराहण्ड अवीतिहारी हा काल और हे समान है ॥ ३४२ ॥

क्यों कि, बन्ता जीनीकी कोस्ता जगन्य और उन्हाए काल अन्तर्ग<u>र्गते हैं।</u> यह बीव^{डी} कोरण करन्य कीर प्राकृत काल गांच हत्त्व प्रशासीत प्रथमारण कालते. समान है, हर्न Bur के प्रमुख्यांक के हैं जिए कहीं है ।

> (इन अवार बाह-रमानेत्रा समाग हरें ।) इस ब्रह्म इप्टानगीगहार समाप्त हवा।

क्रमण १ क नृत्य स्थानस्थानकदान्तर्भवन्तर तथा औष उद्देशः अद्यवनीका स्थवः । अवदेशःश्विदानाः स्वर्तेन्द्रेत कार, 1 महाम में मान कर हरता है करता । यह नवह देश मान में प्रत्यक्त करता है करता है करता है करता है करता है करता man a main more part and a mark we assure that a fe to d





१ स्रेतपरूवणासुचाणि ।

Ą	र संख्या सूत्र	वृष्ठ	सूत्र संस्या	ব্য	মূষ
?	सेषाणुगमेण दुविहो णिहेसो, ओं आदेसेण य ।	पेण २		वेरिक्सअपन्त्रका गस्य असंद्येश्वदिम	
	: ओपेण मिच्छारही फैवडि रो सब्बसोगे । सासणसम्मार्द्धस्पद्वदिजाव अजी	₹0	मणुसियी	ष् मणुस-मणुसः तु मिच्छाइहिष्यदुर्व इसी केवडि रोचे, स्	दे जार
	केवित वि केविड रहेचे, लोग		असंखेरब		७३
	असंखेजबदिमाए ।	३९		ारी केवडि गेचे,	
Ð	सजोगिकेवली केवडि रोचे, लोग असंखेजजदिमागे, असंखेजजेमु			इता केवडि (पंराव्यक्षिमार्गः)	ग ेरें , ७६
•	मागेगु, सञ्चलोगे वा ।	89		देवेगु निच्छादिद्विष	
4	आदेसेण गदियाणुवादेण णिर गदीण णरहएसु मिच्छाहहिष्पदु	हि		ादसम्मादिहि वि रस अमेग्रेजदियां	
	जाव असंजदसम्मार्हि वि केवां खेचे, लोगस्स असंरोज्यदियाम		रै५ एवं भरव उदिस-उ	त्वासियप्पदृष्टि :बरियगेवज्ञविमाप	আৰ ন—
	एवं सत्तगु पुदवीमु वेरहवा ।	६५	वासियदेवा	_	93
	विरिक्सगदीय विरिक्सेम् मिच्छ दिही केवडि संचे, सम्बलीय !	ĘĘ	बिमाण वास्	्ञाब सम्दर्श स्परेबा अनंबरम	(84 <u>)</u> -
<	सासणसम्माइहिष्यतुदि बाद संब संबद्धा वि केवडि ऐ.च, लोगस	स	उजियान		< t
	असंशिरवदिभागे ।			त्व रहेरिया ६ चाञ्चपञ्चना दे	
٠٩	यंचिदियतिरिक्स-पंचिदियतिरिक्स पण्डच-पंचिदियतिरिक्सओविर्ण	i मु	खेच, नया	होंगे ।	< ?
	मिच्छाइड्डिप्पहुडि जाव संबद			दिय-घडनिदिया <i>र।</i> इंडचा य बेड डि हे	
i	संबद्ध केरिक रहेते, स्थानस्य अने खेजबदिमार्ग ।	50		संस्कृतिकारी।	Ci.

सत्र

१९ पंचिदिय-पंचिदियपञ्जत्तवस्य मिन्छा-इंद्रिप्पहाँडे जाव अजोगिकेवलि चि

भारो ।

केवडि खेचे, लोगस्स असंसेजडि-२० सजोगिकेवली ओर्थ ।

२१ पंचिदियअपन्जत्ता केनडि खेते. लोगस्स असंखेजजदिशामे ।

२२ कायाणुबादेण प्रदविकाहया आउ-

काइया तेउकाइया वाउकाइया. वादरपुरविकाहया बादरआउकाहया

: पादस्तेउकाहया बादस्वाउकाहया बादरवणष्कदिकाइयपत्तेयसरीरा तः

स्तेव अपज्ञचा, सहमपुद्धविकाहया सुदुमआउकाह्या सुहुमतेउकाह्या

सहमयाउकाइया तस्सेव पञ्जना अपज्जता य केवडि खेत्ते, सच्च-

लोगे ।

२३ बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया भादरवणप्कति-ं काइयपचेयसरीरा पञ्जचा केवडि

खेचे, होगस्स असंखेज्जदिभागे। २४ पादरवाउकार्यपञचा केयडि खेचे. ले(गस्स संदोरजदिभागे ।

२५ वणप्कदिकाहयणिगोदजीवा बादरा सुद्रमा पञ्जनापञ्जना केन्नहि खेचे, सव्वलोगे । २६ तसकाइय-तसकाइयपज्ञचाएसु मिन

च्छाइड्डिप्पहुडि जान अजीगि-केवित विकास सेचे, लोग्स्स ्असंखेरजदिमागे ।

٤E

613

19

800

808

प्रष्ठ सत्र संस्था २७ सजोगिकेवली और्ष ।

२८ तमकाइयअपज्जना पंचिदियआः जज्ञचार्ग भंगी।

सर

10

१०५

१०५

८६ २९ जोगाणवादेण पंचमणजोगिःपंचः विजोगीम मिन्छादिद्विपदुडि जाव सजोगिकेवली केवडि खेते. लोगस्य असंखेजनदिभागे ।

१० कायजोगीसु मिच्छाइही ओवं। ३१ सासणसम्मादिहिष्पहुढि जाव सीण-कसायबीदरागछदुमत्या खेचे, लोगस्स असंखेरजदिमारे। १०१

३२ सजोगिकवली ओवं। ३३ ओरालियकायजोगीस मिच्छाइही ओधं । 808 ३४ सासणसम्मादिद्विप्पतुडि

सजोगिकेवली लोगहस असंखेजिर-मारे । ३५ ओरालियमिस्सकायज्ञागीसु च्छादिही ओषं । ३६ सासणसम्मादिही असंबदसम्मा-

दिही सजोगिकेवली केवडि खेरे, लोगस्य असंखेजबदिभागे। ९९|३७ वेउव्वियकायज्ञोगीसु मिन्डाइट्टि-प्पद्दंडि जाव असंजदसम्मादिही केवडि खेचे, लोगस्त असंखेजिदि-मागे । 106

३८ बेउन्त्रियामस्सकायजोगीसु मिन्छा-दिही सासणसम्मादिही असंजद-सम्मादिही केवडि खेचे, लोगस्म असंखेरजदियागे । 209 * ३९ आहारकायज्ञांगीस आहारमिस्स-पृष्ठ सूत्र संवया (E) कापजामिति पमचसंबदा केवडि /५१ णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-संद-ध्य खरें, होगस्त असलेकादियांग । १०९/५२ सात्तवसम्मादिही और्ष । 28 ४० कम्मार्यकायज्ञेगीसु मिच्छार्ह्डी अण्याणीसु मिन्छारिही ओपं। U१ सासणसम्मादिही असंजदसम्मा-५३ विभेगण्णाणीस मिन्डादिही सासण्-÷ सम्मादिही केवडि खेचे, लोगस्त ४२ सबोगिकेवली केवडि खेले, लोगस्स असंसेज्बदिमागे। 110 असंसञ्जेषु मागेसु सम्बत्तोगे वा। १११ ५४ जाभिनिबोहिय सुर-जोहिणाणीसु ń ४३ बेदाणुबादेण इत्यिवद-पुरिसवेदेस रेरेट असंजद्सम्मादिहिष्पहुढि विच्छाइडिप्पद्रुडि जाव अभियही सीणकसायबीदरागछदुमत्था के केनडि संते, लोगस्त असंसे-वडि खेंचे, लोगस्स असंवेजबदि-बजदिमागे। ४४ वर्षुसयवेदेसु मिच्छादिहित्वहुडि ५५ मणवज्जवणाणीस 955 जान अशियद्वि ति औषं। 215 ध्वहुडि जाव खीणकसायवीदरागः पमचसंबद्-४५ अपगद्वेदएसु अभियद्विष्वहुढि छरुमत्या लोगस्त अतंशेजादे-1881 जाव अजीगिकवली केवडि राति, मागे। लोगस्स असंखेरजदिभागे। ५६ केवलणाणीसु सजीमिकेवली और्ष। १२० ४६ सजोगिकेवली ओषं। 288 ५७ अजोगिकेवली औषं। ४७ कसापाणुबादेण कोघकसाह माण-११३/५८ संजमाणुबारेग संजरेस पमच-कताइ-मायकमाइ-लोभक्तमाईसु संबद्धाहुडि बाब अबोगिकेवली मिच्छादिही ओपं। ओपं । ८ सासवासम्मादिश्विष्पदृष्टि ११३ ५९ सजोगिकेवली ओर्च । अणियहि सि केवडि खेले. लीगस्य 188 ६० सामास्य चेद्रावहात्रणमुद्धिमंत्रदेस असंखेडजदिभागे । ? **?** ? पमत्तमंज्ञ १९पदृद्धि जाव अणिपद्धि गवरि विससी, लीमकमाईसु ११४ चि ओपं। धहुमसांपराइयसुद्धिमं बदा उद-६१ परिहासिदियंजदेश पमत-अध्य-समा खबा केवडि खेते, लोगस्म मत्तमंत्रदा केनडि खेते, लोगस्त वसंसेज्जदिभागे । अवसेज्जदिभागे । किसाईस चरुहाणमोछं । ११६ ६२ मुहुममांपगद्यसुद्धिमंत्रदेसु सुहुम-माप्राइपम्।द्वमंत्रद्वत्रकः.

्रत बद्धियोगितानी

र प्रस्क

स्य

सह संस्था १६ परमाए प्रदर्शए बेखएमु मिन्छा-प्रम सत्र संस्था रहिष्मुहि वात्र असंबद्सम्मा-हिंहीह केनाडियं सेवं पोसिद्दं, संव फोमिङ् टोगस्य असंतेज्बदिः त्रोगस्य असंनेज्वदिमागो । 77 मागो । १७ निरिपारि वान छहीए प्रदर्शिए २७ असंबर्सम्मादिहि-संबर्धवेही 263 ₹45 देग्रम् विच्छारिद्धि-साम्यम्मान केनडियं खेलं पीतिई, लीगस दिहादि केनाडियं मेनं फोमिन् अनंसेज्जिरिमागी । नेतास अनंतरबहिमागी। २८ छ चोइनमागा वा देखमा। १८ एम ने तिलेश चनारि पंच मोइस-२९ वंनिदियतिरिक्य-वंबिदियतिरि -माना वा देख्या। क्मनज्ञत्तः जो।विनीतुः मिच्छा-१९ मध्यानिग्छारिहि-मनंत्रसम्बन्धः रिहीदि केवडियं रोचं कोमिरं, हिट्टी क्रिटियं मोनं वीमिई, लोगस्य अनंसेरजदिमागी। गंतरम् सम्पेरवहिमाना । ३० महरनामी वा । ६० सम्बद्ध इटरी र बेगहरम् मिन्छा-211 रें हे मेमार्च निरिच्मगरीर्च भंगी। दिइति कर देवं लेखं बोलिहे, 211 ३२ वंशिरियनिरिक्नत्रवज्ञकवृद्धिकाः रिज्ञात असरीर व्यक्ति। डियं में में फोमिर्द, सोगस्म मेरे ए चीरम बारा वा देवना। वर्षमेउनिद्यागा । ६३ कावमनस्यानिक मध्य विश्वान ३३ मञ्जोमी वा । हिद्व-सम्बद्धमानिक्वीर कर-213 १४ मणुनगरीलः मणुन-मणुनरङ्गनः हिर्दे भेषे हे ज़िरं, हेमान 224 मयुनियोतु विच्छादिशीह देव वस्ति। इ.स.स. । ध निवित्रमा करिक्वमा मिन्छा-दिय भेषं वेशियं, मोग्यम अवं. भे जिदियामी । हिट्टी इंडीटर सम्बद्धा अप महत्रहोगी या । FE. ₹!€ 41 4-4-12 18 1 61 177 Ad ६६ मामममुद्रमारिकीहि स्विधि भाग वातिर, नामस्य वसमानार हराम वयन्त्रत इ. १० वन वृश्यनामा वा देवना . ने कष सहस्वत्राहा हा दहश . . इ. इट संस्थातिकार्वाहरूतवृत्ति tamanga terang मस्तिमार्थि स्थाप वर्ष व किंद्र, तामस्य सम्बद्धाः स्थाः

क्षीरागपुरू बणागुनानि ध्य संस्था स्व ३९ सजीमिकेनसीहि केनाडियं रोनं प्रष्ठ स्व संत्या (0) फोबिदं, सोगस्त असरोज्जदि-स्त्र ५० सोधम्मीसाणकप्पनासियदेवेसु मि-भागो, असंरोजा वा भागा, सब्दः æ ष्छादिहिष्पहुढि जाव असंजद-लोगो वा। सम्मादिहि चि देवोषं। ४० मणुमञ्जवज्ञेषेहि केवडियं रोवं २२३/५१ समब्हुमारपहुढि जाव सदार-₹₹₽ पोसिदं, लोगस्स असंरोजनदिः सहस्मारकप्पनासियदेवेस मिच्छा-मागो। दिहिष्पहुडि जाव असंजदसम्मा-४१ सब्बलोगो वा । दिहीहि केवडियं खेलं पोसिदं, २२३ ४२ देवगहीय देवेमु मिच्छादिहि-२२४ लोगस्स असंशेजनदिमागे। । सामणसम्मादिहीहि हेवडियं खेवं ५२ अह चोहसमागा वा देखगा। पोसिदं, लोगस्य असंरोडबद्-५१ जाणद जान आरणन्युर्काण-भागो । वासियदेवेमु मिन्छाइड्डिप्पहुडि ४३ अह णव चोहसमामा वा देखगा। २२५ १२४ जाव असंज्ञदसम्मादिहीहि केत-४४ सम्मामिन्छ।दिहि-असंबद्धमाः डियं खेवं पोतिदं, लोगस्त दिहाहि केरडियं सेलं पोसिदं, असंसेजजीदमागी । सोगस्त असंखेरबदिमागो । ५४ छ चोहसमामा वा देखगा पोतिदा। २३८ ४५ अह चोरतमागा वा देवणा। २२७/५५ णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसु मि-४६ मदणवासिय-वाणवेतरः जोदिनिय-220 च्छादिद्धिप्पद्वित जाव असंजदः देवेस मिच्छादिहि-सासणसङ्मा-सम्मारिई।हि केरहियं खेचं दिहीहि केनडियं रोपं पोलिदं, पोतिदं, छोगस्त असंग्रेजन**ि** लोगस्स असंख्यादिमानी । मागे। । २२८ ^{५६} अणुदिस जान सन्बह्नसिद्धिनाण-४७ अद्द्वा वा, अह गर चेहसमागा वाभिषदेवेमु असंबदसम्मादिहीहि षा देखगा। केराडियं खेवं पोसिरं, लोगस्स ८ सम्मामिच्छ।दिहि-अमंबद्सम्मा-229 असंखेजजदिभागी। दिहींहि केविहर्य सेचं पेशिसदं, ५७ इंदियाणु शहेग एइंदिय-बाहर-लोगस्स अवंद्येजनदिभागे।। महूब-वज्जनावज्जनवृद्धि केव-₹३३ अद्वहा वा अहु चे। हमभागा डियं सेचं फोसिरं, सन्बत्तोगो। २४० देखणा । ५८ बीइंदिय--वीइंदियः -चउत्तिदेय-२३३ वस्सेव पुज्ञः

ŧ

(८)	परिशिष्ट		
स्य संख्या स्त्र	पृष्ठ सूत्र सं	ग्या स	
केविडियं खेर्च फोसिदं, छोगस् असंखेज्जदिमागो ।	ं खे	र्च योसिर्द, छोगस्य ागो ।	
५९ सम्बलीमी वर्ग . 👙	२४३ ६८ स		240
६० पंचिदिय-पंचिदियपज्जनएसु मि च्डादिहीहि केनिहयं खेतं पोसिद् स्रोगस्स असंखेज्जदियागो । ६१ अङ्क चेहिसमागा देखणा, सन्द- लोगो वा ।	६९ वा स्तेर १४४ आ	दरनाउपज्जत्तएहि वं पोतिदं, लोगस गै। । नलोगो वा ।	केनडियं न संसेजादि- ' ३५२ २५३
६२ सासगसम्मादिष्टिप्पहुद्धि जाव अजोगिकेवलि चि ओधं। ६३ सजोगिकेवली ओधं।	सह सह	प्कदिकाइयणिगोदः म-पज्जत्त-अपज्जतः । खेर्चं पोसिदं, सः	ाएहिकेन- वलोगो I २५३
६४ पंचिदियत्रपण्यसम्बद्धः केवहियं • खेत्रं पोसिदं, छोगस्स असंखे- ः जनदिमानो।	मिरह केवरि	काइय—तसकाइयः छादिङ्किप्पहुङ्जि जाव छे चि ओपं । जङ्यअपन्यचार्यं	। अजोगि- २५४
६५ सम्बलोगो वा ।	४६ अपज	जचार्ण भंगी ।	. २५४
६६ कापाणुबादेण पुत्रविकाहय- आउकाहय-चेडकाहय-वाउकाहय- पादरपुत्रविकाहय-मादरआउकाहय पादरपेउकाहय-वादरवाउकाहय- पादरवेपप्पतिकाहयपचेयसरीर- वरसेव अपजन सुदृमपुत्रविकाहय-	बचित्रं हियं असंसे ७५ अहु इ	खुनादेण पंचमणजे रोगीखु मिच्छादिद्वी खेर्च पोविदं, ज्जीदेमागीः । बोह्समागा देवणा,	हि केव- लोगस्स २५५ सन्य-
सुद्रमभाउकाइय-सुदुमतेउकाइय- ' सुदुमबाउकाइय-तस्मेव प्रज्ञत-	लागा व	वा । सम्मादिहिष्यदृहि	इ५५
अपज्जनएहि केविटियं खेलं	संजदारं	वंजदा ओषं ।	२५६
६७ बादरपुदविकाहय-बादरआउकाह्य-	केवर्राहि	जदप्पहुढि जाव स हे केरडिये रोचं य	ोसिदं,
बादरतेष काह्य-बादरवणकादिका -	छोगस	असंधेजजदिमागो	1 २५७

७८ कायजोगीसु मिच्छादिही ओपं । २५८

बादरतेत्रकाहय बादरवणकादिका -हयपचेषस्वतिरपञ्जनल्हि केवहियं

ष्रीरागपरूषगासुत्ताणि

77

म्ब संचया द्य **७९** सासणसम्मादिष्टिच्यहुद्धि प्रष श्वा संख्या र्गोणक् सायबीदराग्छदुमत्या ओर्थं। २५८ Q1 ९३ सम्मामिन्छादिङ्की असंजदसम्मा-८० सजोगिकेवली आपं। <१ जोरातियकायजोगीसु मिच्छार्ह्डी दिही ओधं। ९४ वेडिवयमिस्सकायजीमीमु मिन्छा-22 ८२ सासणसम्मादिहीहि केनिटियं रोचं दिहि-सासणसम्मादिहि-असंबद्-349 सम्मादिहीहि फेबहियं होसं पासिदं, लागस्स असंरोजनदि-पोसिर्द, लोगस्स असंखेळादि-भागो। ८३ सच चोरसमामा वा देवणा। मागो । ₹60 ९५ आहारकायजोगि-आहारमिस्स-८४ सम्मामिन्छादिहीहि बेजडियं सेचं कायजोगीसु यमत्तरंजदेहि केय-पोसिर्द, लोगस्स असंविज्जिदि-,, डियं खेर्च पोसिदं, लोगस्स मागो। ८५ असंजदसम्मादिहीहि असंखेजजदिमागी। ₹₹ ९६ कम्मह्यकायज्ञामीसु मिच्छादिही संजरेहि केपडियं रोसं पोसिर्द, लोगस्स असंदेरजदिमागी। ८६ छ चोदसमागा वा देखना। ९७ सामणसम्मादिहीहि केवडियं ८७ पमचसंबद्ध्यहुडि जान सजीवि-लेचं फोसिदं, लोगस्य असंखे-22 ₹६३ केवलीह केवडियं रोजं पीसिई, जनदियागी । ९८ एकसरह चोदसमागा देवणा। लोगस्स असंखेरजदिमागो । ८८ ओरालियमिस्त्रकायजीमीतः मिच्छा-९९ असंजदसम्मादिहीहि केनडियं खेवं फोसिदं, लोगसा असंखे॰ दिही ओषं। ८९ सासणसम्मार्हि-असंबदसम्मार्हि-जनदिभागो । 243 °° छ चोहसमागा देखणा । सजीमिकेवलीहि केवहियं खेले १०१ सजोगिकेनलीहि केनडियं सेतं फोसिदं, लोगस्स असंखेअदिमागे।। २६४ ९० वेडिव्वयकायजोगीम् फोसिर्द, लोगस्स असंधेन्जा भागा, सञ्जलोगो या । मिराहा-दिझीहि १०२ वेदाणुवादेण इत्यिवेद-पुरिस-के बहियं पोसिदं, लागस्य असंखेरजदिः खेतं वेदएसु मिच्छादिहीहि के बहियं भागो। ? अह तेरह चोहममागा वा देखणा। ,, संनं फोसिदं, लोगस्स असंसे-सामणसम्मादिही ओधं। जनियामा । १०३ अह चोहसमामा देखणा, सम्य-₹६७ लोगो। वा । १७

((()	परिशिष्ठ -	
स्य संख्या स्व	78 ਚੜ ਜੇਦਰਾ 	***
१०४ सासणसम्मादिशीह केविट ये केविट केविट ये केविट ये केविट ये केविट ये केविट ये केविट केविट ये केविट केविट ये केविट केविट ये केविट केवि	पहि ति ११८ अपगदः आव अः ११९ सजीगिरे पहि ति ११९ सजीगिरे पहि ति १११ णवि । १११ णवि । १११ णवि । १११ णवि । १११ जवाराः १११ वर्षां पाण्यां ११९ अहः चोहस ११८ आभिणिनोहि णाणीमु असं जान सीण मत्या ति औ ११९ मणपजवणाणे पहि जान साण्युस्त्या ११० केवलणाणिमु	वादेण कीधकसाइ-माण- यकसाइ-लीमकसाईसु हिप्पट्टेडि जाव अणि- ओपं । ओपं । ओपं । ओपं । ओपं । ओपं । अव्हडाणमोर्थ । देण मिस्कणाणि-सुद- निच्छादिट्टी ओपं । २८ गादिद्वी ओपं । स्वादिट्टीडी आपं । स्वादिट्टीडी आपं । स्वादिट्टीडीडीडि स्वाप्पीयं । स्वादिट्टीडीडीडि स्वाप्पीयं । स्वादिट्टीडीडि स्वाप्पीयं । स्वादिट्टीडीडि स्वाप्पीयं । स्वादिट्टीडि स्वाप्पीयं । स्वाद्विटिपट्टीडि स्वाप्पीयं । स्वाप्पीयं । स्वाप्पीयं । स्वाप्पीयं । स्वाप्पीयं । स्वाप्पीयं ।
१६ छ चोइसमागा देख्णा। "	ओधं ।	A)

सूत्र संख्या पूछ सूत्र संख्या ध्य গ্ৰন্থ १३१ अजागिकेवली ओपं। २८५।१४४ ओधिर्सणी ओधिणाणिमंगो । २८९ १३२ संज्ञमाणुबादेण संबदेसु पमत्त-१४५ केवलदंसणी केवलणाणिभंगी। २९० संबद्पदृढि बाव अजोगिकेवि १४६ लेस्साणुवादेण किण्डलेस्सिय-चि ओपं। 27 णीललेसिय-काउलेसियमिन्छा-१२२ सजोगिकेवली औषं। 99 दिही ओपं। **१३४ सामाइयच्छेदोवहावणमुद्धिसंब**-12 १४७ सासणसम्मादिई।हि केरडियं देगु पमसमंजदम्बहाँड जाव रोचं पोसिदं, लोगस्स असंखे-अणियाँह सि ओपं। २८६ ज्जादेमागो । १३५ परिहारगुद्धिमंत्रदेसु पमच-अप्प-१४८ पंच चचारि वे चोइसंभागा मत्तमं जरेहि के बहियं रहे ते पोसिदं, वादेखगा! . लोगस्य असंरोधजदिभागी । 11.5 22 १४९ सम्मामिच्छादिद्वि-असंजदसम्मा-१३६ सुद्ममांपराइयसुद्धिमंबदेसु सुद्ध-दिहीहि केवडियं खेचं फोसिदं, मसांपराहप-उवसमा रावा ओपं। २८७ लागस्स असंरोजनिद्भागी । २९३ १३७ वहाबग्राद्विहारसुद्धिसंबदेसु घ॰ १५० वेउलेस्प्रियस मिन्छादिष्टि- : :: दुहाणी ओधं। 99 ११८ संबदासंबदा और्ध । सासणसम्मादिङ्गीहि केवडियं 27 १३९ असंजदेशु भिच्छाइड्डिप्बहुडि जाब खेषं पोसिदं, होगस्स असंबे- . : . असंजदसम्मादिहि चि ओथं। २८८ ज्बदिभागी। १४० दंसणाश्चवादेण चक्सुदंसणीसु १५१ अह णव चोदसमागा वा देखंणा। २९५ मिच्छादिहीहि केवडियं खेतं १५२ सम्मामिच्छादिहि-असंजदसम्मा- 👈 पोसिदं, लोगस्य असंसेजंदि-दिहीहि केवडियं खेलं फोसिदं, भागी। लोगस्स असंखेजदिमागो। 99 १४१ अह चे इसमागा देखणा सन्त-१५२ जह चोदसभागी वा देसणा ह लोगे। वा । १५४ संबदासंबदेहि केवडियं खेलं 99 १४२ सासगसम्मादिहित्पहुडिहि जाव पोसिदं, लोगस्स असंरोज्जदि-र्रीाणकसापबीदरागछदुमस्था चि भागो । 494 ओपं। २८९ १५५ दिवह चोदसमागा वा देंग्रणा। १४३ अचनखर्नमणीसु मिन्छादिद्वि-१५६ पमत-अपमत्तसंबदा ओपं। प्पहुढि आव सीणकसाय-१५७ पम्मलेस्सिएस् मिच्छार्द्धिपद्वाडे बीदरागछदुमत्या चि ओपं। जार असंबद्सम्मादिहीहि केन-

(१९)

सूत्र ह	तेषया - स्तृत	वृष्ठ	स्य	संग्या	सूत		1
	डियं खेर्च पोसिदं, लोग	स्स	१७१	वेद्गसम्म	।दिहीमु अर्म	बद् सम्म	-
٠,	वसंखेजजदिमागो ।	२९७		दिद्धिपह	डि नात्र अप	गचसंत्रर	ī
140	अह चोइसमागा वा देखणा	1 ,,	1	चि बोर्ष	1		₹∘
	संनदासंजदेहि केवडियं		१७२	उवसमस	म्मादिद्वीमु	अमंबर	
	पोसिदं, लोगस्स असंखेज			सम्मादिई			,,
-1	मागो ।		१७३	संबदार्यज	द्प्यदृहि जाः	उत्रमंत-	
25·	पंच चोइसमागा वा देख्णा				सग्छद्रमत्वे		
	पमच-अपमत्तसंजदा ओधं।				र्च पोसिदं.		
	सुक्कलेस्सिएसु मिच्छादि।			असंखेजन			30
111	प्पद्वि जाव संजदासंजदेहि		१७४	सामगमम	मादिद्री ओपं	1	30
*;	बियं खेचं पोसिदं, छोर		1.		छादि डी ओपं		11
	असंखेजनदिभागो ।		١.	मिन्छ।दिह			22
*53	छ चोइसमागा वा देखणा।	11	1 .		बादेण सम्मी	विच्छी	
	प्रतिसंजदप्पतृहि जाव सबो		,,,,		नाइन सन्नार् इडिएं खेवं		
140	केवित चि औधं।	300			संखेरजदिभा		"
951.	मनियाणुवादेण मनसिद्धि				ामागा देखणा		
	नावपाश्चवादण नवासाङ् मिच्छादिहिप्पहुढि जाब अञ			जह नाव् लोगो वा I			,,
•	केवित चि औषं।		,		।(दिहिष्यहुद्धि	লাৰ	
988	अमवसिद्धिएहिं केवडियं				त्तिदरागछद्रम		
***	पोसिर्द, सञ्चलोगो ।		,	और्थ ।			ই ০ও
950	सम्मचाणुबादेण सम्मादिः	far t			केवडियं खेचं	ोमिट.	
	असंजदसम्मादिहिषह्डि व			सन्बलोगो		*******	n.
٠.	अज्ञीगिकेविल चि ओर्घ ।				दिण आहारप	न मि-	
186	खर्यसम्मादिद्वीसु असंव				गोयं ≀	•	१०८
• • •	सम्मादिही ओधं ।				दिद्विष्पदृष्टि	লাৰ	
149	संजदासंजदप्पहुढि जाव अजी			संजदासं जद	ा ओपं।		,,
- •	केवलीहि केवडियं खेचं पोनि	(\$,	१८३ व	ामचसं जद ्	यहुढि जाव स	जोगि-	,
		₹०₹	ŝ	ने जीकिहत	वडियं खेचं पं	सिर्दे,	
\$00	सुजोगिकेवटी ओषं ।	₹08	5	शेगस्स अर	रंखेडब्र िमा गी	1	n

स्य संस्या शृष्ट १८४ अवाहारतमु कम्मद्दयकायज्ञाणि- भेगो । १८५ षवरिविसेसा, अज्ञोगिकेवसीहि-	रस्त्रमाग्रुपाणि ष्ट च्यू संस्था च्यू स्व संस्था च्यू स्व संस्थानिक प्रोतिदं सोगर असंस्थानिक प्राप्तिक स्वाप्तिक स्व	(१३) प्रष्ठ स ३०९
बसिदी, अणादिओं सपज्जवसिदी, सादिओं सपज्जवसिदी। जो सो सादिओं सपज्जवसिदी। तस इमी लिरेमी। जहण्येण अतीमुहुत्तं। ३२४ ४ जहरुस्या अद्धपोग्गळवरिग्हुं देख्णं। १२४ १ सासणसम्माहिदी केशविदं कालादी हाँति, णाणाजीवं पहुच्च जहण्येण प्राप्तमओं। ३२९ ६ जहरुस्योग पलिदीवमस्स असंखे- ज्जदिमागी। ३५० १ एगाजीवं पहुच्च जहण्येण प्रा	होति, णाणाजीवं पहुच्च जहण्येण जतीयहुन्तं। १० उनकसंसण पिलदोवमस्स असंखे- ज्विदिमागो। ११ एपाजीवं पहुच्च जहण्येण जतीय- पुरुचं। १२ उनकसंसण जतीयहुन्तं। १३ असंजदसम्मारिद्वां केपियं कालादो होति, णाणाजीवं पहुच्च अहण्येण जती- सहुचं। १५ वनकसंग्रेण पहुच्च जहण्येण जती- सहुचं। १५ उनकसंग्रेण तेषीक्षं सागरोवमाणि सादिरेपाण। १६ संजदसंज्वदा केपियं कालादो होति, णाणाजीवं पहुच्च सन्ददा। १७ एपाजीवं पहुच्च अहण्येण जती- सहुचं। १० एपाजीवं पहुच्च अहण्येण जती- सहुचं। १८ उनकसंग्रेण पुच्चकोठी देव्यण। । ३०	국 당 국 국 당 당 기 : - 기 : - 1 : - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

٠,	/	***	1416					
स्	ासंख्या ध ्य	äa	म्	व संग्या		ग्य		ĩ
२०	एगजीवं पहुच्च बहणोण एर	T-	38	मामणमम	मादिङ्घी	सम्मारि	भेच्छा•	
^	समयं ।	રૂજ્૦	•	दिड़ी ओ	र्ष ।			34
२१	उक्कस्सेण अंतोमुदुर्न ।	₹५१	(३৩) अमंजद्सा	मादिद्री	3	विष	
२२	. चउण्हं उवसमा केत्रचिरं कालाई	ो						
	होति, णाणाजीनं पडुच्च जहण्लेष	η		सन्पद्धाः ।				11
	एगसमयं ।	३५२	36	एगजीवं प	दुस्य अ	हकोण	अंतो-	
२३	उक्कस्सेण अंते।मुहुत्तं ।	77		मुहुत्तं ।			_	149
२४	एगजीवं पहुच्च जहण्णेण एग		1 '	उक्कस्सेण		सागरेक	माणि	
•	समयं ।	363		देखणाणि ।				17
२५	उक्कस्सेण अंतामुदुर्च ।	३५४	80	पडमाए ज	ाव सत्त	माए पुर	वाद	
₹६	चदुण्हं खबगा अजोगिकेवली केव-			वेरहर्सु ्	मिच्छा।द '	ह्या कर	ाचर	
	चिरं फालादो होति, णाणाजीवं			कालादी है	।।त, पाप	राजाब प	ુરવ	Ę٥
	पहुच जहण्णेण अंतोग्रहुतं ।	,,	43 B	सन्बद्धाः ।		~		
	उक्करसेण अंतामुहुत्तं ।	77		एगजीई प्	કુ ગ્યા जह	farlet a		##
१८	एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतो-	.	บว	ग्रुहुत्तं । उक्कस्सेण	मामग्रीता	ச் செனே		**
	मुहुचे ।	344	0.7	उपकरतम दस सत्तारस	सागरान साजीम है	त्तीमं सा	ारो-	
	उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ।	- 22		युक्त क्षेत्रकारक बमाणि ।	******			,
₹०	सुजोगिकेवली केवचिरं कालादी			सासणस म्म ।	।दिद्वी स	सम्मामिच	छा-	
	होति, णाणाजीवं पहुच्च सन्बद्धा।	२५६	- 1	दिङ्की ओषं।	l		- 1	1
	एगजीवं पहुच्च जहण्लेण अंती-	- [9	88 3	असं जदसम्म	ादिही के	ाचिरं का ल	गदो	
	मुहुर्च ।	22	1	होंति, वावा	जीवं पहुर	च सब्बर	ញ #	,
	उपकस्सेण पुण्यकाडी देखणा।	"	४५ ।	रगजीवं पर्	हुच्च जह	णोण अ	ता- ३६	,
	आदेतेण गदियाणुबादेण णिरय- गदीए णरहएसु मिच्छादिही केव-			रहुचे ।		O.D. et	, ,	'
	गदाप गरहप्ता । मण्डाविहा कव- चिरं कालादो होति, णाणाजीवं	18	४६ उ	क्कस्सं सा	गरावम ———	ाताण्या स जेनी	प मं	
		३५७	9	स सत्तार गगरोत्रमाणि	સ વાવા ∗ક્રેમ્માર્થ	सि ५५। विका	,,,	
	एगजीवं पहुच्च जहण्णेण अंतो-		y Ben	तस्यसम्बद्धाः वेरिक्खमदीय	। ५५०मा र निरिका	ा । रेस मिच्छ		
	सहर्त्त ।	" l°	 1	वारक्खणदाप रेड्डी केवचि	र ।चार १ १ काल	दो होति	۲,	
	उक्कस्सेण वेचीसं सागरोवमाणि ।		ग्र	रू. स्ट्राय श्रिमाजीवं पह	ट्य सब	हा।	361	
•								

			•	401/1	3			,	٠.,
स्य	संख्या	स्व		F E	पुत्र	संख्या	स्व		রূত্ত
	एगजीवं प सहस्रे ।			₹₹₹		उक्स्मेण	रहम वहण्येण अ विश्यि परिदो	वमाणि,	३७०
86	उषकस्तेण योग्गलपरिय		मसराज्ञा	३६४	1		परिदेश्यमाणि, गाणि देखणाणि 1		
५०	सासणसम्मा दिष्टी ओर्ध		माभिच्छा-	27	1 -	•	दा ओपं । तिरिक्सअपज्जन		₹0₹
4१	असंजदसम्म होति, णाणा			1		चिरं कार	गदो होति, पा		
43	एगजीवं पर् सहर्च ।	टच जहल	गण अंतो-	n	Į.		यदा। पहुच जहप्पेण स्	रामव-	п
	उपकस्सेण (संजदासंजदा			17	1 .		व अंतोमुहुचं ।		१७१
	होति, जाणा एगजीवे पह	जीवं पद्यच्य	सम्बद्धाः।	३६६		मणुसिषी	पि मणुस-मणुम ह मिष्डादिड्डी	।यथि	
	सुद्रुषं । उदक्ससम्बद्ध			17		फालादी । सम्बद्धाः ।	रिंडि, वावाशीर	पटुच	tı
	पंचिदिवति। तिरिक्लपन	रेक्ख-पंि	विदेय —	93		एगशीरे प प्रदुष्टं ।	।दुरुष बहुण्णेष	र्थना-	"
	जोविषीमु ।	मिन्छ।दिष्टी	पेशिवरं		190	उ द क्षसंग	तिब्बि पनिदेश पुधरेषस्मीदेयावि		
	कालादो हो। सञ्जदा ।	ात, माणाजा		3\$0	90	शुन्तकतारः सामुणसङ्	पुष वजन्याद्वयार गादिष्टी के दिवां क	ा । उलाहाः	01
	एसबीवं वहु सहसं ।	दम् अदृष्ये	ण अंशो-	**		रिति, दाः श्गममयं	भाजीवें पर्च्य जा ।		es.
49	उक्कस्पं ति पुरुवकोदिपुर						अंतेपुहुचे । पहुरच उहस्टेब	,	,
ξo	सासणसम्मा दिद्री आर्थ।	दिही सम	ग्रिन्छा-			रमयं ।	आर्टिसद्री।		•
ξŧ	असंबदसम्म कालाश हों।	લાં ફેંદ્રો	વે.ચાંચાં		9 6	म्माये च्य	विद्वी देवीयो का की सुरच दर		, ,
	सध्यद्वा ।				3	किंदुहुचे ।		*	

321

..

**

अस्य संग्रह सत्र प्राप्त सन्न क्षेत्रक ७६ उपंकस्सेण अंतोग्रहत्तं । 3341 ९१ असंजदसम्मादिदी केवचित्रं ७७ एगजीयं पहुच्च जहण्णेण अंती-कालादी हाँति. णाणाजीवं पहर महत्तं । 305 सन्त्रद्धा । ७८ उदकस्सेण अंतोमहर्त्त । ९२ एमजीवं पहरुच जहणीण अंतीп ७९ असंजदसम्मादिङ्री केवचिरं कालादी यहर्त । होति. णाणाजीवं पदच्च सम्बद्धा । ९३ उकस्य तेत्तीसं सागरीयमाणि। •• ८० एगेजीवं पहरूच जहण्येण अंतो-९४ भवणवासियप्पहडि जाव सदार-महत्तं । 319.9 सहस्सारकप्यवासियदेवेस मिन्छाः ८१ उक्करसेण तिण्णि पलिदेशिमाणि. दिडी अर्धजदसम्मादिही केवियरं तिण्णि पलिदेश्यमाणि सादिरेयाणि. कालादी होति. णाणाजीव पहुन तिण्णि पलिदोवमाणि देखणाणि । .. सब्ददा । ८२ संजदांसंजदप्यहिंड जाव अजागि-९५ एगजीवं पहच्च जहणोण अंदोः केवलि ति ओवं। 306 महर्च । ८३ मण्रसअपज्जना केशचिरं कालाहो ९६ उक्कस्सेण सामरोग्रम पछिदोवम होंति. णाणाजीवं पहच्च जहण्णेण सादिरेयं वे सत्त चोहस सोलस खदाभवग्गहणं। ३७९ अदारस सागरीवमाणि सादिरे-८४ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखे-याणि । ज्जदिमागी। 22 ९७ सासणसम्मादिष्टी सम्मामिन्छा-८५ एगजीयं पहुच्च अहण्णेण खुडा-324 दिही ओधं। भवग्गहणं । 22 ९८ आणद जाव जबगेवउज्जविमाण-८६ उक्कस्सेण अंतीमहत्तं । वासियदेवेस मिच्छादिही असं-99 ८७ देवगदीए देवेस मिच्छादिही केन-जदसम्मादिही केवचिरं कालादी चिरं कालादी होति, वाणाजीवं होंति, णाणाजीवं पद्रच सम्बद्धा। पहुच्च सन्द्रद्वा । 360 ९९ एमजीवं पहुच्च जहणोण अंतो-८८ एगजीवं पहुच्च जहण्लेण अंती-ग्रहत्तं । सुर्चं । १०० उक्कस्सेण बीसं वापीसं तेत्रीसं 99 ८९ उद्रस्येण एक्सीसं सागरोत्रमाणि। ३८० घउवीसं पणवीसं छच्वीसं सचा-९० सामगसम्मादिष्टी सम्मामिच्छा-वीसं अद्भावीसं यगुणतीसं धीसं ः दिही ओपं। ,364 ₹८१ एककसीसं सामरोपमाणि ।

			ब ्राग्यम्	नगासुर	पणि			(१७) ,	
स्ट्य र	उच्या	स्र	ZB.	सूत्र	संग्या	ग	স	ZE	
१०१	साराणसम्मादि दिद्वी ओपं ।		छा- ३८६			ग अंगुलस्स असंसेज्ज			
१०२	अणुद्धि—अणु अपंत-जपंत-अ षामियदेशेमु केविषरं कालाव जीवं पहुच्च स	वराजिद्दिम प्रसंजदसम्मारि रो होति, णा	ग- देही		ओसप्रि बादरेई काठादे। सन्बद्धा	ाणि-उस्सप्पि देयपञ्जचा हाँति, णाण	णीओ । केवचित्र गाजीवं पहुच	₹ ८९ ₹ ९ ०	
१०३	एगजीवं पदुक्त चीसं, बचीसं सादिरेयाणि ।	। अहम्मेण व	Ţ=	११५	मृदुर्च । उक्तस्तेष स्साणि	ा संखेज्जारि ।	णे वाससह	"	
१०४	उक्कस्सेण व सागरीयमाणि ।		ीस ३८७		कालादा	पञ्जवज्जना हाँवि, णाण			
	सञ्बद्धसिद्धिवर असंजदसम्मादि कालादी होति, सन्दद्धा ।	ही केवा	चेरं	११८	मबग्गहः उक्कस्त्रे	पहुच जहर गं। ण अंतोग्रहुर्च	h '.	19 11 11	
१ ०६	एगजीवं पहुरूच वेचीसं सागरोद		हण ११		होति, प	दिया केवरि शाजीवं पहुंच पद्रधः जहण	सन्बद्धा।	३९४ "	
१ ०७	६दियाणु बादेण । कालादो होति पहुच्च सम्बद्धाः	, वाषार्थ		१२१	भवग्गहर् उनकस्ते		लोगा ।	n "	
१०८	एगजीर्व पहुच्च भवग्गहणं ।	जहण्णेण खा	(f- 1)			होति, णाणा		"	
१०९	डक्कस्प्रेग अर्ण पोग्गलपरिपट्टं ।		র-	१२३		पहुच जहणं		" !९५	
	षादरएइंदिया वे होति, जाजाजीन			१२४ : १२५ :	उक्कस्सेण सुद्रुवेइंदिः		केवचिरं	"	
१११	एगजीवं पहुच्च भवग्गहणं ।	जहण्येण खुर	(1- ,,		कालादी । सन्बद्धाः ।	होति, जायाः		184	
			1			,	_ /		,.

सूत्र ह	तस्या	स्व	ZB	ग्र	संख्या	ग	্ষ	ŢĪ
	एगेजीवं पहुंच सवस्यादणं ।	,	३९६			बादेण पुडवि तेउक्हादया		
१२७	उन्हरसेण अत	ाग्रदुनं ।	380			कालादी है		
१२८	बीइंदिया तीई	देयां चउरिदिया	,			च सन्यद्वा		8.4
		य-चंडिंदिय		\$80		पहुँच्ये ज	लोग खुइ	۴.
		कालादी होति।	,		मनगाहर			11
	णाणीजीवै पद्व		"			अस्येका		n
	एगडीयं पहुच्च		•	१४२		विकाद्या		
i.	मबगगहणं, अंत	ामुहुन् I	22		काइया	बादरवेउका	ऱ्या मादर	
१३०	उनकर्सेण संखे	ज्ञाणि वाससह-			षाउकाइय	।। बाइरवण	कारकार्य	
	स्साणि 🗀 🏸		22	1	पचपसरी	रा केविय	<u>कालाद</u>	1 2002
१३१	.मीइंदिय-चीइंदि			l		गाजीवं पडुं		
		कालादो होति,		₹8₹		पहुच्च जह	गण सुरा	
	णाणाजीवं पहुर		३९८		संबग्धहण			n
१३२	एगजीवं पहुच्च	बहण्णण सुद्दा-				कम्महिरी	1 -	***
	मयगगहण ।		**			देकाइय-गा		
	उक्कस्प्रेण अंदो		३९९		काइय-बाः	रतेउकाइय	412(412	
१३४	पंचिदिय-पंचिदि					दरवणफा पज्जना	द्याह्य केत्रचिर्र	•
	च्छादिही केय		[त्रज्ञपा वि, णाणीः		
	होति, प्राणाजीव		"		कालादा ६ सब्दद्वा ।	titig attatte	119 98-7	go3
११५	एगंजीवं पंडुच्च	लहण्णा अता-				हुँच्चं जहण	तेल अंती-	
935	मुहुचे ।	ciamerno	27		रुगजास १ प्रदुर्च ।	8-1 46.	-1-1 -1-1	808
349	उक्कस्त्रेण साम् पुरवकोडिपुचनेष					संखेजवापि	र वार्स-	
	सागरीयमसद्युष		200		धहस्साणि		. 41	**
236	साम्रणसम्मादिहि		1		-	काड्य-बाद्	प्याउं-	
	अज्ञीगिकेवलि वि		22			काइय=माद्र (तेउकाइय-म		
१३८	वैदिदिपञ्चपज्ञ		"			द्रवण फ दि		
••	अपन्तर्भगा ।		,,				केवियं	
			••					

फाडपरूवणासुचाणि पुत्र प्ष स्व संस्था (45) होति, षाणाजीवं पहुच्च सवाद्वा । ध्य १६० सासणसम्मादिहिष्पहुडि जाव १४९ एमजीनं पड्डन्च जहण्णेम सुद्दा---88 Pot शजोगिकेविछ चि औषं। १६१ तसकाइयअपज्जनाणं पंचिदिय-१५० उपकरसेण अंतोमुहुत्तं । 800 १५१ सहमप्रदिवसार्या सहमञाउ-22 अपन्त्रसभंगो । १६२ बोगाणुवादेण पंचमणजीगि-पंच-" कार्या सुद्दमतेउकार्या सहम-षचिजोगीस मिन्छादिही असंजदः बाउकाह्या सहमवणप्कदिकाह्या सम्मादिही संजदासंजदा पमच-ग्रहमिणगोर्जीना तस्मेव पजाचा-संजदा अप्यमचरांजदा सजोगि-परत्रथा सुदुनेशंदियपद्मच-अप-केवली केवचिरं कालादी होति, ज्जनाणं भंगी । णाणाजीवं पडुच्च सम्बद्धाः। १५२ वणप्यादिकाइयाणं १६३ एमबीनं पहुच्च जहण्णेम एम-मंगो । . १५३ विगोदबीवा केवचिरं कालादो १६४ उनकस्तेण अंतोग्रहचं। 808 होति, णागाजीनं पहुच सम्बद्धा। १६५ सासणसम्मादिई(अोर्थ । १५४ एगजीनं पहुच्य जहण्लेल खुद्दा-11 885 १६६ सम्माभिच्छादिही 22 मनग्रहणं । ५५ उक्फरतेण अहाइमादी पीरमल-कालादी होति, णाणात्रीवं पहुच जहण्णेण एगसम्यं। परिपर्ट । 22 १६७ उक्करसेय पतिशेवमस्स असंरोः १६ बादरणिगोदजीवार्ग बादरपुढवि-जनियामी। काइयाणं भंगी। १६८ एगजीनं पदुच्य जरूरमेय एगः ७ तसकाह्य - तमकाह्यपज्ञच्छ्यु 800 मिच्छादिडी केत्रचिरं कालादी १६९ उरकस्सेण अंतोमुहुत्तं । होति, णाणाजीवं पहुच सम्बद्धाः। 855 १७० चदुण्टसुनममा चदुण्हं सनगा एगजीवं पडुटच जहणोण अती-केनिनं कालादी हाति, णाणा-सद्धं । जीनं पहुच्च जहण्जेण एगसमय । उक्स्रोण वे सामरोवमयहरूमाणि १७१ उरमस्येण अतीमुद्दतं । व्यकोडिपुधचेणस्महियाणि, वे १७२ एमजीनं पहुच्च जहण्येण एम-गरोवमसहस्साणि। ४१५ ४०८ १७३ उबकस्येय जनामुहुनं ।

पुत्र संख्या

(40)	परिशिष्ट	
ेस्त्र संख्या स्व		
१७४ कायजोगीस मिच्छादिही केन	पृष्ठ स्व संक्या स्व	#
भारतादा होति, शास्त्रा - 0-3	. १ विशेषा प्रदेश स्थापन	एग्-
' भेऽप सञ्चटा ।		
१७५ एगजीनं पहुच्च जहण्णेण एग- समयं।	1 69/11/301 1	सम-
१७६ उपकस्सेण अर्णनाम्य	४१६ १८९ असंजदसम्मादिही	ुर्द विक्
41416013772-1	कालादी होति, वाकाचीन सन	पर ज्य
१७७ सासणसम्मादिहित्पहुद्धि जाव	'' । परण्गण असोग्रहम् ।	"
भगो।	१९० उनकस्तेण अंतोमुहुनं ।	#
१७८ ओरालियकायजेकील कि	१७ १९१ एमजीवं पदुच्च जहण्णेण अंती सदुचं।	855 -
े विश्व क्षित्राचित स्वाह्मको क्षेत्र	१९२ उक्करवेण अंत्रायुक्तं ।	- • •
णाणाजीर्व पद्धच सम्बद्धाः १७९ एगजीर्व पद्धच्च सहज्ज्ञण एग-	. ^{१९३} सजीगिकेवली केव चिर्व सामाने	"
	बात, पाणाजीवं पहच्च जह	
	१९४ उक्कस्सेण संसेजनमार्गः	४२३ ४२४
देखणाणि । ८१ सासणसम्मादि। द्वेष्पहुद्धि जान	१९५ प्राजीवं पहुरुच जहण्यकस्मेण	2.48
प्रमागिकवाल चि सणजोतिकके ।	। ९५समञ्जा	"
८२ ओरालियमिस्सकायज्ञांगीस मि-	१९६ वेउव्यिकायजोगीस मिचादिही	ا

,,

.

850

298

8 ٤, सजोगिकेवलि चि मणजोगिमंगी। १८२ औरालियमिस्सकायज्ञांगीस मि-च्छादिही केवचिरं कालादो होंति; णाणाजीवं पहुच्च सन्वद्धा । 2514 १८३ एमजीवं पहच्च जहण्णेण खहा-

मयगगहणं विसमऊणं। १८४ उक्कस्सेण अंवोमुद्र्यं । १८५ सासणसम्मादिष्टी ये विशे कालादो होंति, णाणाजीवं पहुच्च जहण्गेण एगसमयं।

८६ उक्रस्सेण पलिदोचमस्य असंसे-ज्जिदिमागी ।

कालादो होंति, गाणाजीवं पहुच सन्बद्धा । १९७ एमजीवं पहुच्च जहण्णेण एगः समओ।

केवविरं

४२५

"

असंजदसम्मादिही

१९८ उनकस्सेण अंतोपुद्रतं। १९९ सासणसम्मादिही ओधं । 854 २०० सम्मामिन्डादिद्दीणं मणजोगिः मंगो । 17

२०१ बेउब्बियमिस्सकायजोगीतु मि॰ च्छादिही

असंजदसम्मादिह्री

	व	बटपस्व	ભા તુ ત્ત	િ		(4)
स्य संख्या	स्त	AR.	स्य	संस्था	स्व	ģB
জীৰ্ণ দ ২০২ তৰ্কা ভৱবি	रं कालादे। होंति, णाणा- रहुष जहण्येण अंतोम्रहुर्च ! स्तेण पलिदोवमस्स असंखे- भागो ! !वं पहुच्च जहण्येण अंतो-	४२ ६ ४२७	२१७	दिही केवचि णाणाञीवं प	विष्मुद्धः । जीमीसु मिन्ह रिकालादी होति इन्च सन्द्रद्रा । ज्य जहण्लेण एर	ð, ,
मुहुचं		४२८		समयं।	A alfada d	
२०५ सासग काला	स्तेण अंते।मुदुचं } सम्मादिद्वी केवचिरं हो होति, णाणाजीवं पडुच्च ण एगसमयं		1	उन्ह्रस्सेण वि सासणसम्मार्ट दिही केनिय	ंण्णि समया । देही अर्बजदत्तम्म स्वासादी होति इन्स जहण्णेण एव	ī,
च्चदि ।	स्तेण पित्रदोषमस्त असंखे- प्रागी । श्रे पहुच्च बहुष्णेण एग-	27	२२१	समयं । उक्कस्त्रण अ	वितयाए असंदे	४३५
सम्यं २०८ उक्क	स्तेण छ आवितयाओ सम-	8ई°	२२२	व्यदिमागे। । एगजीवं पहुर समयं ।	च जहण्लेण <u>ए</u> ग	8 <u>\$</u> € -:u
केवरि	कापजोगीसु पमचसंत्रदा ।रं कालादो होति, णाणा-			उक्कस्तेण वे सजोगिकवर्त	समयं। किंवचिरं कालां वीर्वं पहुंच्च जह	ii T
-२१० उक्क	ादुष अहण्येण एगसमयं । स्तेण अंदोम्रहुचं । वि पहुच्य अहण्येण अंदो- ।	27	२३५	ध्येण तिश्मि उक्तस्तेण सं		11
२१२ उक्क २१३ आहा	स्सेण अंबोमुद्रुचं । (मिरसकायजोगीसु पमच- । केरचिर्द काटादी होति,		२२७	तिन्यि समयं वेदाशुरादेण इ		. , :
गु ष्	जीवं पहुरूच जहण्योण अंतोः ।	53	१२८	णाणाञ्चीनं पर् एमजीवं पर्	न्व सम्बद्धाः । व जहम्येष अंतो	550
	स्तेण अंतोग्रुहुचं । (दं पहुच्च जहण्लेण अंते-	85		गुहुर्स । जनस्रोत परि	तेदोव मसद्युधर्च ।	п
२१५ एगः सुदुर्ष				सासनसम्मादि सासनसम्मादि		846
	/.					1

. . .

```
(तर)
              सम संक्या
            . २२१ सम्मामिन्छादिही और्ष ।
                                                 प्रष्ठ स्व संग्या
             २३२ अमंजद्सम्मादिही
                                              83८/२४६ एमतीवं पुरुष नहर्यन वंती
                कालादो होति, णाणाजीनं पहुच
                                      केविविदं
           २३३ एगजीन पहुच्च बह्म्णेग अती-
                                                   २४७ उरुरुसंग वेचीमं सागरोदभावि
                                                        देखगाणि ।
        ्रवृश्च उपजस्तेण वणवण्णपलिद्रोबमाणि
                                                 २४८ संबदासंबद्ध्यहुडि बाव अणि-
                                                      यिंड नि ओवं।
        २३५ संजदासंजदपद्दाहे जाव अणि-
                                                २४९ अपगद्वेदएमु अणिपिहालहुडि
            -योड ति ओयं।
                                                     जाव अजै।गिकवित्र वि और्ष ।
     ्र १३६ प्ररिसवेदएस मिन्छादिही केन-
                                               २५० कमायाणुवादेण
           चिरं कालादो होति, णाणाजीवं
                                                                    कोघकसाइ-
                                                   माणक्ष्माइ-मायक्षमाइ-छोम-
           पडुच्च सव्बद्धा ।
                                                 क्साईसु मिच्छादिद्विष्णदृदि वाव
    ९३७ एगजीनं पडुच्च जहण्णेण अंती-
                                                  अप्पमचसंबदा वि मगन्नोगि-
                                      85"
                                                 मंगा ।
   २३८ उक्कस्तेण सागरीनमसद्पुचर्च। ४४१
                                           २५१ दोष्णि तिरिंग उन्धमा केनिर्द
  २३९ सामगसम्मादिङ्किप्पहुँहिः जान
                                              -कालादो
                                                         होति, पाणात्रीवं
      अणियहि वि औषं ।
                                               पद्भुच बहुष्णेण एगसम्पर्व ।
 २४० णबुंसयनेदेशु मिन्छादिही केनिन्
                                        २५२ उक्करमेण अंतीमृहुचं ।
                                        २५३ एगजीनं पहुच्च जहाणीय एगः
     कालादो होति, णाणानीनं पहुच
     सन्दा।
                                      २५४ उक्कस्तेण अतीमृहुतं ।
२४१ एगजीनं पड्डच बहुप्लेण अंती-
                                      २६५ दोण्य विश्यि सवा केविं
                                                                     . 884
४२ उन्दर्सण अर्णतकालमसंसेकः
                                          कालादी होति, पाणाजीने पहुच
                              885
                                         बहण्मेण अंतोपुहुचं ।
  पोरमस्परियञ्चं ।
                                   २५६ उन्हर्सण अंतामुहुचं।
३ सामगसम्मादिही और्घ ।
ह सम्मामिच्छादिही और्घ ।
                                   २५७ एगजीनं पहुच्च नहूम्योण बंती-
                              22
                                                                   886
असंजदसम्मादिङ्ढी
                              2)
                                 २५८ उक्ऋस्मेण अंतोमुहुनं।
म्बलादी होति, पाणानीन पहुच
                             22
                                २५९ अकसाईस चुदुङाणी ओपं।
                                २६०. णाणाणु त्रादेण महिञ्जण्गाणि-सुद-
                                    अण्याणीसु मिच्छादिङ्की ओपं।
```

ध्य २६? सासणसम्मादिही औषं। प्रश[े] सूत्र संवया (44.) २६२ विभंगणाणीसु मिन्छादिही केव-5777 ४४९/२७३ नहाबसाद्विहारसुद्रिसंबदेस चिरं कालादें। होति, णाणाजीवे 38,. चंद्रहाणी और्ष । ŦĖ. पहुच्च सन्बद्धा । २७४ संजद्दासंबद्दा ओष । २६३ एगजीन पहुंच्च जहणीण अंती-843 ६७१ असंबद्धं मिन्छादिहिणहरि 35* ŢĨ २६४ उदकस्तेण तेचीसं सागरीवमाणि . असंजदसम्मादिहि वि 32 देखगांग । २७६ दंसणाणुनीदेण चन्छदंसणीत २६५ सासणसम्मादिही ओएं। २६६ जामिनिगोहियनानि-सुर्गाणि-मिन्गिरिही कैनित कालारी ۶ę, होति, णाणात्रीर्न पहुच सम्बद्धा। ओधिणाणीतु असंजदसम्मादिहि-२७७ एगबीर पहुच्च जहणीण अती-पंदृद्धि जाव खीणकसायवीदरागः सर्वं । छडमत्या वि ओएं। २७८ उक्तिण वे सागरीवमसंहरसानि। २६७ मण्यज्ञत्र्याणीतुः प्रमचसंबद् ४५४ २७९ सासगसम्मादिहिष्णहुहि प्पष्टुंडि जावं खीणकतायबीदरागं-22 सीणकांमायबीदरागं हर्दु मत्या वि छदुमत्या वि औषं । ओपं । २६८ केवलंगांगीस १८० जपनसुरंतणीं मिण्छादिहिं-848 समीगिकेवली अजीरिकेवली औषं। ध्वद्वांडे जांब सीव्यक्तावनीहरू ६९ संजमाणुबादेण संजदेश पमच-रागछरुपत्या वि शोषं। 22 संबद्ध्यहुढि जान अजोगिकेवलि २८१ ओधिरंसणी जोधिगावियंगी। 844 वि ओषं। २८२ के कलदंसणी के कलवानियंगी। ° सामाइय खेदोवहावणसुद्धिमंत्र-२८३ हेस्माणुबादेण किन्द्रहोस्मय-देस पमतमंजदःपहुडि षीललेसिय-बाउतेस्हिएम् वि-अणियहि ति ओपं। व्हादिही केविये कालादी होति, परिहारपुद्धिमंजदेगु पमच-अप्प-४५३ यापात्रीवं परूच्य मनदा । मचसंबदा आधि। २८४ एगओं पहुच्य झरूपेय अंगे-सङ्ग्यांवगाइवसुद्धिमं बदेशु सङ्ग वर्तापराइयमुद्धिमंत्रदा उदम्या २८५ उ४ इस्नेय नेचीम मचारम मच विश ओपं। यामरोहणानि यादिरेटावि । २८६ मानुणसम्बादिश कोषं। 800

... १८५१ भागिताम

4.4.7

(२४) ;		परिसिष्ट
ध्य संख्या	- सूत्र	पृष्ठ सूत्र संक्या सन्त्र स
२८७ सम्माधिः २८८ व्यसंत्रद्वसः होंति, णा २८९ एगतीर्व ः ४९ व्यक्तदेशे सागरीवम २९१ वेजलिहित्रे केतिर्वा केतिर्वा क्रिक्तिः विदेशित ः विदेशित क्रिक्तिः विदेशित क्रिक्तिः विदेशित क्रिक्तिः विदेशितिः विदेशि	छादिद्वी अधि । मारिद्वी केनियं काल गानीनं पड्डच्य सम्यद्वा द्विच्च सहण्गेण अतो तेचीष सचारस सम्यद्वा द्विच्च सहण्गेण अतो तेचीस सचारस सम्यद्वि । पड्डच्य सहण्येण अतो हिन्द्व सहण्येण अतो वे अहारस सागरी- देरेपाणि । पदिद्वी ओर्ष । पदिद्वी ओर्ष । पदिद्वी ओर्ष । पदिद्वी ओर्ष । पदिद्वी और्ष । पदिद्वी आर्ष । पदिद्वी और्ष ।	४५९ ३०२ सासणसम्मारिही आंपं ४० व सम्मामिन्छारिही आंपं ४० व सम्मामिन्छारिही आंपं ४० व सम्मामिन्छारिही आंपं ४० व सम्मामिन्छारिही आंपं ५० व सम्मामिन्छारिही आंपं ५० व सम्मामिन्छारिही आंपं ५० व सम्मामिन्छारिही आंपं ५० व सम्मामिन्छारिही सम्मामिन्छारिही सम्मामिन्छारिही के व सम्मामिन्छारिही के व व सम्मामिन्छारिही के सम्मामिन्छार
नगान साह	Caust 1	n अपन्त्रवसिदो ।

सूत्र सेण्या सूत्र	वृष्ट	सूत्र	संच्या	स्प		A.
३१७ सम्मचाणुवादेण सम्मादिही राह्यसम्मादिहीमु असंबद्- सम्मादिहित्पतृढि बाब अबोगि- केवित चि औपं।			दिही के णाणाजीवं	बादेण सण्णीसु चिरं कालादे। पहुच्च सम्बद्ध हुच अहण्णेण	होति, र ।	४८५
३१८ चेदगसम्मादिष्टीतुः असंजदसम्मा- दिष्टिपद्वति आव अप्पमचसंजदा चि ओपं ।			सासणसम्	सागरोवमसद् गदिहिष्पहुडि	গাৰ	n
३१९ उवसमसन्मादिद्वीसु असंजद- सन्मादिद्वी संजदासंजदा केव- चिरं कालादो होति, णाणाजीव		\$ \$8	ओधं । असम्मी वे	ाबीदरागछदुमर विचरं कालादे। पहुच सञ्बद्धाः	होंति,	17 864
पद्चय जहण्येण अंते।सृहूचे । १२० उक्कासेण पिलदोवमस्स असंसे- ज्जदिभागो । १९१ दगजीवे पहच्च जहण्येण अंतो-	863 "		एगजीवं प मबग्गहर्ण उकस्सेण	दुब्ब जहण्गेण । अर्णतकालमसं	बुदा-	n
	" \$28				लादी	.!3
कसायबीदरागछुदुमत्या चिकेत- विरं कालादी होति, णाणाजीतं पहुच्च जहुष्णेण धगसमयं ।	,,	ર રે૮ ૧ ર ે.	एगजीवं प सुदुषं । उनकस्तेण	हुच जहरूगेण अंगुलस्त अ	अंदो- इंदो-	8<0
३२५ एगजीवं पहुच्च जहण्येण एग- समयं।	" }	á8 0	ओसप्पिणि- सासगसम्म	।संवेज्ञासंवेज्ज्ञ उस्सच्यिमी । दिद्विष्पहुढि के वि ओपं ।	য়সা আৰ	"
१२६ उक्टरसेण अंत्रीयुक्तं ! १२७ सासणसम्मादिष्टी ओपं ! १२८ सम्मामिच्छादिष्टी अपं !	,, {	३४१		कम्मह्यकायज्ञे		n ;; 66

२ अवतरण-गाथा-सुची

मत	संख्या	माया	व्य	अन्यत्र र	ह्यं	क्रम संस्था	गाया	ā2	अन्यत्र वर
83	अस्य सर्व अपग्यविद	ता जीवा	४७३ २	मो. औ. १	2,5	३ छापट्टि	च सद्दर्धं प	य-१५२	श्रमियाः ए चन्द्रश्र
8	गागास स	परेसं तु		ममिघा.			हर गरियहं पुर वेर्र या श्रिक्त		
38	भावडिय ।	मणागारे	398	कसायपा		३ प य पां	यर या । श्रन्थ रेजमइ सर्थ से रह जेव संज्ञा	ो ३१५ ग	
v	इट्टसलागा	युची चचा	रे २०१	পর	ाप.		रहणव सजा यणाद्यियं नि		r. त. १,६
	उच्छ्वासानां					२५ जिरमा	त्था जहण्या	233 €	ર લિ. !
হৎ	उप्पर्जंति हि	यंति य मा	या ३३५	स. त. १,	22.			\$	o, यो, जी
2	उपसमसम उपसमसम	चिदा गच्दा जह गढ़ें सम्प सच्च गच्दा हेट्टिमेस ग्व दस सह गिर्दा जीवा	428 487 489 889 436 468 866 1448	मोः क. १८ मोः जी. १९	Q. 0	४१ दें। दें। य १७ नम्दा म ११ निमेपाण १८ पणुवीसं १२ पण्वासं १२ पण्वासं	तया छत्तीसा । तिण्चि वेऊ इा जया दिख तं बहुसाचि अमुराणं तु चहस्सा दाणि बहुसो र सुरेपदरोय	वर्ण में ४३५ १३१९ ३१८ ७९ वि २३५ १३६ १० ति	का. ५१ त. औ. १२१ . सा. २४९ . सी. मी.म. (संस्कृत स्टाया) प. १,९३
R	काछी चिर् काछी परिष केथ्डइंसण	गममयो	2149	खा, गा, २ खा, गा, १० कसायपार्	ક. જે ર	१ वर्ग्ड करो	ाय छल्लीव- वस्दोचोर य विग्गो अध्येः	३१६ मूल २३५	
	वेसं बहु इ		v	भदा	q.	५ बाहरस्	(यन्ना अस्त-	(A.	सा. ३१६ इसमता)
	गद्दणसमया		333		.2	६ शीचे जीत	विभूदे अवि	(झ। ऑस्टर	રલમવા / કી. રે .•-
14	गुणजोगपरा गेय झाणुर्या	रेमया चव-	२३६		3	८ माणदा के	। यूर जा रा विद्या मायद्वा	३९१ कर	त्यपार्डे अञ्चार
१३	चंदा(य-गरे छयेव सहस्	ताई सवार-			-	९ मुद्द-तल्स	मास-मद		7. १,१६५ .११,१०८
4	छन्पं चणपवि	द्याण भरया	- ब्रुप्त र	ति. जी. ५६०	- ११	, ,,		48	**

		•	•
	या	Πd	41
	44	II U	91

म्यार (30) पुष्ठ अन्यत्र वहाँ वस्य संस्था गाधा अन्यत्र घटाँ प्रश

१७ मुद्द-भूमिषितसम्बद्ध		२३ सन्बग्हि टोग घे त्रे	
१ मुद्दसदिद्यूलयद्यं	₹8€	\	को. जी. ५६०
९० मूखं मञ्ज्ञेण गुणं	२१ जे.ए.११,११०.		टीका.
ξ 9 11	48 22	२६ सम्यासि वगदीणं अणु-	
१३ रोहणो यसनामा घ	३१८	१८ सध्ये वि धीम्पटा सन्दु	इन्द
१२ रोदः भ्येतधः मैत्रधः	2 {<	२२ ,	\$35
७ होगो। अवहिमो खाउ	११ त्रि. सा. ४.	१४ सावित्रा धुर्यसंद्रश्च	
८ छ।यस्स य विक्यंत्री	११ जेवू. व. ११,	१५ सिडार्थः सिडमेनध	
	₹03.	२० सुदुषट्टिश्मितुचे भास	\$\$2 m. M. 420.
४ स्टोबाबासपद्देशे पदेखे	३१५ वो. जी. ५८८		द्दीका.
१० व चीलं सोहस्य महा-		६ सीलइ मोलसाई मुले	199
८ विक्लंभवगाइसगुण-	२०९ जिसा. ९३.	१२ लंबी पुत्र बारह औप-	33
११ घेदण व साय-येउहियय-	२९ था. जी. ६६७.	३० संने चए व विदाहि	114
१६ व्यासं तापन्छत्या पद्न-	34	६ देहा माहेर उपरि धेला-	
९ व्यासं पोष्टदाग्रणितं	85	, 46	to L
\$8 II	२६१		
४ तस जय गुण्ज पंच थ	198	गाया-ग	₹
७ सम्भायसदाबाणं जीवा-		क्रवेष गुलमधेषु वर्गवं	\$00
८ समग्री शिमिली कड्डा		हचानमाहितगुल- १	
१६ समयो रात्रिहिनयोः	\$56	व्यासार्घ ङ्गतिर्घरः	166

३ न्यायोक्तियां

225

प्रश्रु सम्बद्धाः

त्रम संहया १ भवववेत प्रवृत्ताः शादाः

त्रम संख्या

गाया

सगुदावेष्यवि यतंत्रते इति

ण्यायान्। १ सीरदुरमस्त मधुदुरमा व्य। ३ तिमहत्राहरूक्त्रणाहीव

त्रदा द्वीन स्थापान् । 808 १४ ५ जरा बदेले: नहा विदेती। 10,15% \$12.

53

14.

'ध शं.ल गुक्वयो गुक्व सध्य

233, 800.

४ प्रन्योहेस

•	বুর
१ अप्पाबहुगसुच	
१. तसरासिमस्सिद्ण बुत्तर्वधप्याबहुगसुत्तादो णन्त्रदे ।	१३२
२ करणाणित्रोगसुत्त	
१. ण ध सचरञ्जुवाहस्टं करणाणिमोगसुचविरुदं, तस्त तत्य विधिन्पिक सेपामाणेवो ।	
. ३ कालसुर्	
१. 'थे क्ष इस चोइस लोडसट्टारस य बीस वार्यासा' परीए गाहाप सब पदस्स मुचस्स किण्ण विरोहो होदि ? ज होदि विरोहो, निण्णवित्तयचारो। ते जहा- बुचं सुचं संघप्पहिषदं। कालसुचं पुज संतमवेक्सिय द्विदमिदि।	રત્ય
. ४ स्दर्श्यस्य	
१. कर्जुम्मेहि पंधिदियतिरिक्क-पत्रमक्-जोणिजिक्रोदिसिय-पंतरदेयः प्रयः हारकालेहि खुद्दार्थधमुजसिक्केहि अकर्जुस्ममणपुरे मागे हिदे पदाओ रासीमा सध्यामा होत्तर ण च पर्य, जीवाणं छेदामावा।	{CB
् २ जुड्दार्बधिम उपयादपरिणयसासणाणमेक्कारहवीहसमागपोसणपरूपर	२०६
सुचादो च णव्यदे ।	404
५ खेचाणिओगहार १. पदेसि चेय केचाणिओगहारोधिक उत्तपरुपणाय तुहा।	হ্ধধ
६ गाहामुच (कसायपाहुड) १. ¹ मार्वांक्ष्य मणागारे '…(३६-३८) इदि गाहासुचादो (कसायपादुड)	રૂપા
ও জীবহ্বাদ	
र जीवद्राणादिस् दस्यकाळा व सुची चि तस्सामाची व वोर्चु सकिउनदे, यस्य राद्रस्यपदुष्पायणे सहियारामाया ।	\$25
८ जीवसमास	
 अधिसमासाय वि उर्त—' छप्पंचनविद्दार्ण 	114
९ णिरयाउर्वेधसुच १. ' पर्स विष सच दस '११३ लिएवाउर्वेधसुचारो ।	255

- 52

212

153

1-5

100

6+2

१०.तघरधमस (तस्त्रार्थयत्र)

ी. नह निर्दार्थिकार्यप्यासिन्त्रकृष्यनुचे वि' वर्चनारश्चिमानित्रा परन्त्रः परावे च कालस्य ' इति क्षयकाला वहानिको ।

१३ जिल्लामकामधी

१२ हट्याणिश्रोगहार

१. कि स दृष्यानियोगहारयक्तानिह युक्तहेहिय स्वरियानियास अस वर्ष्य दुक्ति, अयगतसुद्धिहरू।असादाः

२. हरवाणि मोगदारे वि साथ वाग्याणहाकरावस्य वाग्याणवस्यतारी द । १६६६६

१३ पश्यिम

२, रशमू सत्तानुविदा अगैरही, सा विभारा अववृद्दं, सेटीव वुर्वदश्यक्रम प्रमुखोतो होडि कि वृद्धिमानुनेव सम्बद्धियसम्बद्धा विशेष्टरवसंत देश

१, वे. थि शाहिया सम्बद्धिते साहरहिते विश्वके बन्दन्या के वाहे साहतीतवाहस्यव्यविक साहरहितीय सेव सम्बद्धितायां विकास कर्यात ।

४, प्रसिट्टियायित्यायं वासंबंदस्थायेन शुर्वादे बाहर्ट्यां स्व हर्दा के प्रतिकृतिकार्यायां सह यह पूर्व विद्यादि के स्वत्य के स

१४ दंद-दिर.हुइ

१. बुले ब वंदी पराष्ट्रंड —' काली स्ति द शहरको ' इन्ट रह १.४ साथा १. दुक्ते ब वंदी घराष्ट्रंड दहहारशास्त्रक्षत स्री शत — सञ्चादलदायाया

१, पुत्तं च पंची घणातृष्टं वदद्शाव श्रष्टमा श्रा यत्तः — सन्यावसदायाः ४-५ राष्ट्राः 214

314

48

१५ वमाणसत्त

 अंगुलस्स असंतेन्ज्ञदिमागमेत्त्रवाह्नहिनिययदरिक् सेद्रीय वर्मतेन्जरिं
मागमेत्त्रभोगाहणिययपेदि गुणिदे तत्य ज्ञत्त्रिओ रासी तत्त्रियमेत्राओ जिरयगर्गाः भोगगालुपृथ्वीय पयडीओ......... वि यगणमृत्तादो ।

२. महामच्छोगाइणस्हि पगर्यचणवस्छ इजीचणिकायाणमरियसं कर्यं णव्यदे !

यगगभिह्उत्तत्रप्राबहुगादे।।

१६ वेदणासे चविघाण

१, 'प्राजीवस्स जहण्णोगाहणा वि अंगुलस्त असंक्षेत्रज्ञीद्रमागेमचा 'चि वेदणाक्षेत्रविष्याणे पक्षविद्रचादे! ।

२. पचेत्रसरीरपञ्जचजहण्णोगाहणादो वीहेदियपग्रस्वसहण्णोगाहणा अस-खेळजगणा चि कुदो कथ्येद है येदणाक्षेचीयहाणस्टि खुत्तयोगाहणदंहयादो ।

१७ संताणिओगद्दार

१. जिद्द सासणा परंदिपस् उत्परक्षीतं, तो तस्य दें। गुणद्वाणाणि हाँति। ण च पर्वं, संताणिकोगहारे तस्य पक्षभिष्ठादिष्टिगुणप्युरुपायणादो।

५ पारिभापिक शब्दसूची

स्वना—यहाँ दान्द्रीके वेलट उन्हीं पृष्ठीका उन्हेंब किया गया है जहां उनके विषयों हुँही विदेश बद्धा गया पाया जाता है।

डाव्ह		92	शन्द	73
राज्य सकर्मभाय सङ्ग्युग्मश्रगप्रतर सङ्ग्यम सस्ययादा	ঙ্গ	ફર હ ફેલ્ય ફેરે, ક્રહફ ફેરે,	शहाब अणुप्रत अनिप्रसंग अनीनकालविद्योपिनक्षेत्र अतीनकालविद्योपिनक्षेत्र	१४८ इस १४५ १४६
भग्रीतम्हणादाः धविचन्नस्यसर्गन भष्युतकरा	१६५,	3२७, ३२९ १४३ १७०, २३६ ६६२, २०८	वर्तः न्द्रिय अर्थ	१५८ १०० १८३

	पारिभापिक शब्द	म्ची	(15)
शन्द	দুন্ত হাত		দু ষ
भदा	३१८ वरतर	स्त्रा सम्बद्धाः	908
ब र्धानृतीयक्षेत्र	३७, १६९ थपना		₹00
यर्घत्तीयद्वीपसमुद्र	२१४ मण्यो		38
भधोलोक	र, १५६ झपरा		101
अधोलोकदेशकाल	१६ अपरी		264
अधोशेष:प्रमा ण	३२, ४१, ५० अपवर्न		2<,42.42,43,107,
अध्यत्र क्षत्र क	BBW. 2016		₹₹ , ₹₹•
अधःमथुत्तविद्योधि	३३६ भाषय	iना पान	883
अधस्तन(वेशस्य	🥦 🚾 शार्वत		353, 356
भारतरकाल	र् ७० वायूर्यं	.रण	11% 1%
भन्तमुंहर्त	३२४, ३८० मपूर्धन	:रणश्रयमः	111
भनन्त	३३८ भवर्ष	रणगुणस्थान	393
मनग्तकाल	82 NAELS	नतंत्रमदारीर	86
भनग्तस्यपदेश	४७८ मधि।	ন্দ্ৰ	316
अमन्तानुबन्धी	११६ माभिय		\$15
ध नर्षित	१९१, १९८ मधेर		tvv
यतपर्या	३२० असूमें		\$94
भनपस्यामसंग	१६३ शयम		210, 244
भनाकारोपयोग	१९१ मयोगी		111
थनादि:	४१६ अर्थमन्		114
मना दिमिण्यादिष्ट	११५ धरच		228
मनाहारक	४८३ महोदा	बादा	5.33
अ निवृश्चिकरण	४८० भारतेषा ११५, १५० सरववर्	78	49
मनियुत्तिशरक	११६ अविहास	नप्रसंग	25.0
अ नुपृत्धि	१५५ वश्येत	गुग्धिनलीक	ta
शतुगम	९, १६६ अवलाष्ट	सर: दृरथ:	
अनुत्तरविधान	२१६, ३८६ अध्याह		57, \$4, ¥4
भनुदिराधिमान	८१, ६३६, ६४०, ३८६ अवसाह	मागुण शर	Wr, No
भनुसंविताहा	Fall Milliam Lot		74.5
भ ग्योग्याभ्यस्य	१५९, १९६, २०२ अस्ता <u>ा</u> ट		- 41
भपक्षपंच	Ege mufürer	THE COLUMN TWO	ጀር ወዲ
भएवासणीपवासण	ELA MARITA		***
धपत्र मयुट्ट नियम	६७५ अवदारव	ज त	8-1200

. .

(३२)		
------	--	--

`য়ন্দ্ৰ	वृष्ठ	शब्द	Ţġ.
अयसभासम	. २३	व्यायंतचतुरस्रक्षेत्र	t)
'अवंसर्पिणी		आयतचतुरस्रहोक	ਬੰਦਗਰ (੧૩
थविभागप्रतिच्छेद		आयाम	१३, १६५, १८१
अविसंवाद	-	आरण	१६५, १७०, २३६
अप्रमृष्टाधिवी	• •	आवलिका	RS
अप्रार्विशातिसरक्रंमिक- ३			३१७, ३४०, ३९१
	१८०, ३७५, ३७७, ४३९		94
	४४३, ४६१	आदारकसमुद्रात	. 46
असद्भावस्यापनाका ल	388	आहारचर्गणा	बृ हर
अ संयम	৪৩৩	आहारशरीर	8'1
म संयमगडुलता	२८		
यसं यतसम्यग्टीय	३५८		₹
म संख्येयराशि	३३८	इच्छाराशि	५७, ७१, १९९, ३४१
		इन्द	216
জা আহায়ে	८, ३१९	इन्द्रक	१७४, २३४
आकारा आकारामदेवा	१७६		ž
भागमङ्ख्यकाल भागमङ्ख्यकाल		ईशान	* 234
मागमद्रश्यक्षेत्र -	4	इसान ईचलाग्भारपृथियी	113
भागमञ्जूषस्पराँन भागमञ्जूषस्पराँन	1 82	ह यःश्राग्मारप्रायया	•
भागमभाषकाल	318		उ
मागममायसेत्र		उच्छे णी	۷۰
शासमायश्यांन		उत्तानशय्या	306
माज्ञाकतिष्ठना	34	उत्पत्तिसेत्र	દુહર
भादिस्य	ર્ ધ્વ	उत्पतिशेषसमानशे	बास्तर १७९
भादेश	₹o, १४३, ३२२	उत्पाद	188
आ देशनिर्देश	રૂપ્રધ, દેરર	उत्तरकुढ	•
माधार	6	उत्तराभिगुणकेयळी	લ્લ
या धेय		उग्सर्विंगी	16
बातुपू र्यानामश्रम	30	उत्मेघ	१३, २०, ५ ७, १८ १ ११
बातुपूर्वी श्रयोग्य रे ज		उत्संघष्टान	48
शानुपूर्व विपात्र वायोग्य			2 {•
मारापा	343		žv
श्यपन	११, १७२	उन्संघयोजन	•
श्ततुपूर्व विवासकार्याग्या सारापा	सेत्र १७७ ३२०	इग्सेघद्दतिगुणिन इग्सेघगुणश्चर इग्सेघगोजन	वर

परिशिष्ट

	पारिभारिक	शस्यम्ची		(۶۶٫),	
दान्द	.g 3	अस्		g _E	
रासेघो गुस	१४, १६०, १८१				
उत्सेघांगुलप्रमाण		श्राम् श्राम्		₹ <o< td=""><td></td></o<>	
उदयादिनियेक	-	-3		310 30%	
उद्य तंत्र	ইংড		V		
उद्वेच	30	। ५३.क्षत्रायगाट	•		
उपन्नमणकारू उपनामणकारू	₹७	पर-श्रीवनक सवी	ALL VIEW NAME	33.5	
उपक्रमणकासगुणकार	Ri \$50	प्र. इंड	41100000	इंदर ११६	
उपपाद	C4	थकमारकावासवि	TETH	,	
उपचार	न्द, र्द्ह, २०५	4		\$co.	
'खपगर्काल	२०४, ३३९		दे		
'उपपाद्धेश्र	234	देराचन	-	W1	
'जपपाद्शेत्रप्रमाध	64			• 1	
• उपपाद्शेत्रायाम	१ ६५		ओ		
जपपादभ्षतसम् <u>मुलय</u> ुत्तकेत		थोग		5. EVV, 222	
·वयपादयाम् वयपादयाम्		भोधनिर्देश		ERS 346	
'वपपादरादि।		भोघप्रकृपवा		Red.	
खपपाद् रपर्रा न	38		भी		
वेपमाहोदः -	68.6	भौदारिक स्तरी र	41	2.	
	रेट्य	भीवचारिकतोक्त्री		44	
वपरिमाधेकस्य वपरिमाधेकस्य	- 1	न्यान ब्यार बन्धा बन्धा	दृभ्यसम	ų.	
वपारम्यवस्य वपशमधेणी	tes		*		
. वयशम्यवा वयशमसम्बद्धाः वर्गाः	Bac, was	र्वतस्य	-	4.5	
	AA1.	र्भगुसगणना		10	
antinunadiditt RR 1	4 of 4021 FACT	_		•••	
क्षपदास्त बजल	148, 828		€C.		
द्वा गम्	BAD, NUB	त्थ <i>म</i> स्थादणसङ्ख्या		244, 212	
खवार्च दुष्टलपरिवर्तन	111.	चिट्यम् ६ वसी चारसम् दान		87,	
वभारत	19.1	. पाटसम <u>ु</u> दान		44.484	•
উ		रक्ताधा		4-1	
अपर्वं स्वाटण्डे दशका निष्यम	105			ŧr.	- 1
अपनेक्षीक	9. 59810			1.	
अन्यकार अस्त्रीहीय क्षेत्रपास		क वि न्द		42	
इ.च्याराच स्टब्स-१५ इ.च्याराच स्टब्स-१५	22, 22, 47'	านี้		1)	
प्रत्येत्व सर्वेत्व	\$35 a	र्वेद्रमध्येष		**	
Profit		เมื่องส		9.00	
-	18, 88, 00 1			\$1,575 \ \ \	
द्र <u>ज</u> ुगति				25.00	3
					7."
	1				
	٠,				
	ŧ				

शब्द	व िस	शब्द	98
कर्मभूमिप्रतिसाग	วรน	श्रोघादा	125
कर्मपुद्रल		कांडक	814
कर्मेशुद्रखपरियर्तन	322 324	कांडर्जुगति	७८, २१९
कमञ्ज्ञ	477, 477	कुंडलपर्वत	141
कर्मस्थिति	३९०, ४०२, ४०७		3(0
कर्मस्थितिकाल	4/2, 401, 404	क्षपक	ં વૃદ્ધકુ ક્ષક
करप		क्षपक्षेणी	ब्रह्म, स्प्रा
करपवासिदेव		क्षपकश्रेणीप्रायोग्यां	
कपाय	202	श्चपकश्चणात्रायाग्या 	वरागध . ४४५
कपायसमुदात	25 355	क्षायिकसम्यग्हाष्टि	
कापिष्ठ	277 (77 2EC	क्षिणकवाय	हर्द, ३५१ इट्
कार्मणवर्गणः	222	शुद्रभव	* * *
कामणदारीर	રક, શેર્ધ	शुद्रभवप्रहण	इ७१, ३७९, ३८८, ३९१ १०१, ४०१
काययोग	388	_	६, दर्भ
कायश्यितिकाल	efe e	क्षत्र क्षेत्रपरियर्तन	350
कायोत्सर्ग	40	क्षेत्रपरियर्तनकाळ	334
काल '	३१८ ३२१	समपारयतनकाळ	•
कालपरिवर्तन	324	क्षेत्रपरिवर्तनवार क्षेत्रफल	11 144
कालपरियतंनकाळ	338	क्षेत्रफल क्षेत्रफलशलाका	
कालपरियतंनचार	329	क्षेत्रफलर्शकाका क्षेत्रफलर्सकलना	200
कालसंसाद	333	क्षेत्रसंसार	111
कासस्पर्धन	141	क्षत्रससार	848
काराणु	314	होत्र स्पर्शम	,,,
काष्टातुगम	383, 322	क्षेत्रा <u>न</u> ुगम	· ·
• काले। इक्स मुद्	840, 898, 884		ख
द्वाद्वा		প্রাবক্ত	ે ૧૨, ૧૮૧, ૧૮૧
कु लरोल	193, 216	Carrie and	(4 (-1)
इत्यु गम	148		ग .
. কুনি		शराम	-1
कृष्टीकृष्ण		शरत	قطة هول
. रूप्पादिमिध्यायकाळ		गण्यराशि	ફબુઇ ફબુઇ
बेयरङान	128	गण्छतमीश्ररण	ان ورد ان ودد
केवल्दर्शन		गणिव	113
केविसमुद्रान		तम्पित्रज्ञस	200
દોરાદોરી	१५२		10
दोरी		गुणकार	123
क्रीपच्यापादा	634	गुणकारमञ्जूष	

	पारिभा	रेक शन्दस्ची	(-१५)
शन्द	58	হান্দ্ৰ	, . ,
गुणकारदालाकासंकल	-	•	মূছ
-गुणपरावृत्ति		र	8
गुणस्थितिकाल	804, 800, 80	^१ छिन्नायुष्ककाल	£\$3
	44	ર	ਤ
-गुणान्तरसंक्रमण	ইং	٧	-
-गुरुकाचरित		्र ^अ गमवर	१८ ५२, १५०, १५१,
-युद्दीतप्रहणास्य	2/4		१९५, १६९, १८०, १८४,
गृ दीतग्रहणाद्वादाक्षाक	त १२	محسا	१९९, २०९, १०२, १३३
गोमूत्रकगति	21	जगशेणी जयस्यावगाहना	to, tc, tes
-शोव्हिक्षेत्र	B:	अवस्थावनाहुना अवस्थावनाहुना	32, 32
-शैणभाव	9111	् जम्बुद्धीपक्षेत्र । जम्बुद्धीपक्षेत्र	840
मह	161	र जम्बुद्धापक्षत्र	£4.8
प्रेवेयक	27	अम्बूद्धीपच्छेर्मक	દે બુલ્વ
	स्वा	जम्बुडीपदालाका जयम्त	193
	g p	जयन्त जया	19
चनफळ		जाति	154
घनरण्डु :	211	जात जिहेन्द्रिय	\$43
चनलोक	रेट, रेट४, १५६		. 19.8
चनलेकममाण			38
धनांगुल	90	ज्योतिष्क जीवरादि	199
.चर्चा <u>तकः</u>	१०, ४३, ४४, ४५, १७८	ज्योतिष्यत्वस्थानक्षेत्र	450
'घनांगुलगुजकार घनांगुणप्रमाण		उयोतिण्यसासादमस र	पग्रहि-
चनां गुलभाग हार	29	एक्स	रामशेष १५०
यातशुद्रभयम ह ण	९८ ३ ९२		
भाजे न्द्रिय			釈
HIMITA	446	रहारीसंस्थान	११, ६१
	ष		_
चसुरिन्द्रिय	337		₹
वतुर्धेषृधिषी	```	० झ ब सामा न्य	
चतुर्थसमुद्रकेष -		तद्य्यनिरिक्त को भागम	इच्च ३१५
चतुर्वसमुद्रश्च चतुर्ददागुणस्थाननिबद्ध	£/c	तद्ध्यतिरिक्तनोत्र गमः	दब्यक्परशंब १४२
		तर बाह्य व	£3
चतुरस्र	१७८	सारा	१ -१
चन्द्र	240, 214	तासप्रमाच	¥+
धन्द्रविस्वदालावा	१५९	नार पृथ्य संद्धाव	રેદ વર
वित्रा			315
विशाउपरि मतस	***	तिर्यं क्रिय	11
			· 🖼
			,
			6 23

शब्द

• •		•
तिर्यक्लोक	३७, १६९, १८३ व्हरीय	85
तिर्यक्लोकप्रमाण	४१, १५० दंडगतकेवली	#
तिर्यगगतिमायोग्या <u>ज्ञ</u> वर्षी	१७६ दंइसमुद्रांत	àč
तिर्यग्पतर	२११ द्रव्य	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
तियम्बरधानस्यरधानक्षेत्र	१९४, २०४ द्रव्यकाल	787
'तियंच	२२० द्रव्यक्षेत्र	5.7
मृतीयपृधिवी	८९ इंड्यंख	** 316
नृतीयपृथिची बर्घस्तनतल	२२५ द्वयपरिवर्तन	· 350
तेजसंशिर	२४ द्वयस्थित	"Rose
. तेजसदारोरसमुद्रात	२७ इंच्यिलग	879, 820
तोरण	१६५ इंग्यस्पर्धन	,488
प्रयं श	१७८ हच्यार्थिक	4,,
त्रिकोणक्षेत्र	'१३ द्रव्याधिकनय	इ, १४५, १७०, देवर
त्रिसमयाधिकायछी	To many	33/3" 884
वैराशिककम	. हेट इच्यार्थिकम्बर्प	णा े ३५९
1 1	••	•
द		घ .१५९
दर्शनमोहनीय	३३५ घन	क्षतं देव १९७७
· दात्रक	. श्र्रध्यत्	418
दार्थान्त .	्वर घरणातळ चर्म	1/8
दिवस •	ेष्ठ्रण, यूर्प धातकी संह	. 240, ES
'दिया	_{२२६} धुर्य	846
डितीयई द स्यित	७२ भुयस्य	iyt.
द्वितीयपृ चिषी	28	
द्विर्मयाधिकायसी	- 111	् म
दुक्कम्मदुवादुक्षेत्र रा ळ	२१८ नस्त्र	१५१
् र प्रान्त	२२ नन्दर	115
ंदे व कुर	३६५ नरकगतियायोग	वानुपूर्वी १७५, १९१ १८५
देवसेत्र	३६ न्यप्रवेयकविमा	ન મુંદ્રો
वेषना	३१९ नामकाल	1
देवपथ	८ नामक्षत्र	'evt
देशामर्शक	५३ नामस्पर्धन	14,3
देशानलोक देश	यह नारक १३८ नारकसर्वांवास	{o•
्र 'इंड	१८ मारकसवायास १० मारकावास	į i s
	वक विवाद कर्त सहस्र	,

	पारिकार्र	रेक शन्दसूची		
	uncent,	तम सन्दर्भया	(表9)	
शस्द	97	। सन्द		
माही	-	-	ध्य	
निदेशप	. 31	८ पर्यायाचिकप्रकृत	गा १४९, १७२, १८९,	
निगोद्जीव	ર, ૧્ય	12	a. a . sad (cd)	
निगोदरा री ट		६ पर्व	300, 244	
-निचितकम		८ पस्य .	३१७ ९० १८५, ३८९	
निमिष		६ पच्योपम	8, 40, 864, 360,	
निर्देश	#50	9	_ 380, \$16,	
,निःस् र्धा क्षेत्र	૧, १४४, ક્રસ	पस्योपमशतपृथानः	4 VES	
निस्सरणाः मकते जस	र्	पस्यकासन		
· मैक्कन	दाराह २७	पद्मात्हतमिच्याय	\$86	
नोभागमद्रध्यकाल	186	पाणिमुकागति		
म्। मागमद्रव्यकाल् माभागमद्रव्यस्पर्शन	1 14	पारमाथिकनोकर्मक	प्यक्षेत्र 🕠	
नो मागमभाधकाल मागमभाधकाल	₹ ४ २	विष्ट	189	
नो मागमभावशेष मोभागमभावशेष		पुद्रलपरिवर्तन	3 EV, 3 CC, 40 E	
,मोमागमभाषश्व	v	पुत्रलपरिवर्तनकाल	250, 22W	
. मोजस्यम्बायस्पदानः - मोजस्यद्वय	\$88	पुरलपरिवर्तनवार	930	
मोकर्मपर्या य	*	पुरुरुपरिवर्तनसंसार	in	
मोकर्म <u>पुत्रल</u>	३२३	पुरकरङ्गीप	88%	
भागमपुद्रल		पुष्करहीपार्थ	દે યું છે	
मोकर्मपुद्रस्यरिवर्तन	884	पुरश्रसगुद्ध	(44	
	· ·	पुष्पदस्य पूर्व	885	
	4	99 nd-2-0	110	
पदर पद्मग	820, 894	Kadisi Kadisi	280, 240, 246, 248,	
परमत्वय	२ १२	र्पेकोडीवृथकःव (योभिमुखकेवली	\$54, \$32, 800, Voc	
परमाजु	મ્હેઇ શ્રુ	(कारी विकास	4e	
परमार्थकाल	55 4	.। प्रकरवितर्के वीचार-	31.	
परमायकाल परिचि	वेह० "	:IXedi		
परिधिविष्यका परिधिविष्यका	१२, ४३, ४५, २०९, ६६२ g	करहरू ए थिवी		
-परिमंडलाका र			ia	
पर्यन्त	4 44	धमप्राधावा	Č.	
पर्याप्त पर्याप्त	\$6 ds	बांदा	130	
पर्यादित	८६, १६२ वं	वन्द्रियतियंग्यति-	***	1
पर्याप्त पर्याय	252	मायोग्यानुपूर्वी	5.95	•
पर्याय पर्यायनय	३ ३७ या		848	
पर्यायनय पर्यायार्थिकजन		ीर्वेड:	\$34, 534	′
	\$, {k, \$00, \$55, 24	निविष स्व	१७६	i
17171141714		रगतकवरा रगतकेचरिशेष	25	
	eeslett.	4-104 A10. Sta	44	
	,			
	•			

_				
शब्द	पृष्ट	शन्द		gg.
प्रतरसमुद् रात	•			•
मतराकार -		ब्रह्मोत्तर		२३१
मतरावळी	२०४	1	म	
मतरां <u>गु</u> ळ	३८९		-1	375
મવલાલુલ	20, 83, 83, 242,	भद्रा		8,4
	१६०, १७२	भरत		-
मतरां <u>गु</u> ळमागद्वार	96	मयनयासि उपपादक्षेत्र	ī	ø
प्रविमाग	< ?			0%
मस्यक्ष	330	मयनवासिजगप्रणधि		
मयमपृथियी	c c	भयनयासिजगम्ह		£ £ 8
प्रचमपृथियीस्यस्थानक्षेत्र	१८२	मधनवासित्रायोग्या तुप	ची	230
'प्रस्यवस्थान	,,	मयनवासी	•	145
प्रत्यासचि	310.0	मयनविमान		11
प्रत्यासम्नविपाकानुपूर्वीफल	\$ 1974	मयपरिवर्त न		353
प्रधानमाय	184	मयपरिवर्तन काळ		144
प्रभापदल		मयपरिवर्तनयार		27
प्रमचाप्रमचपरावर्षसहस्र		मबस्यिति		ब्रुव, ब्र ू
प्रमाण		मयास्यात मयास्यतिकाल		355, 366
प्रमाणघनांगुळ	30	मध्यत्व मध्यत्व		840
प्रमाणलोक	461	VYTER TO THE OWNER OF THE OWNER		184
अमाणराद्या	485 385	मध्यद्रव्यस्पद्यम् मध्यनोबागमद्रव्यदाल		318
प्रमाणवाक्य	284	मध्यनावागमद्रव्यकाल मञ्चराशि		315
धमाणीगुळ	४८, १६०, १८५			પા
प्रमेयत्व	\$88 J	બાવ દા (215
प्रवेध	192	માનુ ²		386
प्रशस्त्रतेजसद्य रीर	5/13	प्रार्ग्य		213
प्रस्तार	419	प्रायकाल -		414 2
જ		रावधेत्र		i
फलपश्चि		रावशेत्राग म		224
ą		गायपरिवर्तन		
बल	32/2	रायपरियर्तूनकाल		118
बद्धायुष्कधात	3/3	गपप्रियर्थनया र		##
वदायुष्कमनुष्यसम्यग्दष्टि	इंद	॥वयः दवनबा र ग्रथमंगार		343
याद्रशिनगोदमाविष्टित	542 N	ायां स्यातका ख		188
यादगस्थिति	३९०, ४०३ म १२, १५, १७२ म	तयस्प्रदांन		18
चाइस्य	१२, १५, १७२ म	(अ		217
बाहापंचित	248 3	त		7
बं धायरी	१५१ म १५१ म ३३२ म २३४ म	्म		£83
r r	ર ફ'ક મ	₹		100

	पारिभाभिः	ह शन्दसूची		(१९)
शन्द	5 8	शन्द		23
भे्दमरूपणा	244	. मिधद्रव्यस्य	1	=-
भोगभूमि	300	मुक्तमारणा		(8.5
मोगभूमिप्रतिभाग	85.	<u>मुक्तमारणा</u>	- CI 40	१७५, २३०
भोगभूमित्रतिभागद्वीप	521	मुख	વનનારા	४४
मोगमूमिसंस्थानसंहिधत		मुखप्रवर्गगृह		१४६
भैग		मुघविस्तार	•	४८
भेगव <i>रूप</i> का		<u>भुटर्न</u>		
धमरक्षेत्र		मूल		३१७, ३९०
म	4.4			१४६
		मृत्यात्रसमास गृदंगशेत्र		2.3
मध्यमक्षेत्रकल	\$3			4 ફ
मध्यमगुणका र	85	गृदंगमुख्यंद्	स्माण	*1
रप्यममतिपश्चि	#Re	गृरंगसंस्थान		६२
पध्यम्बिस्तार	3.5	सुरंगाकार भेद		११, १२
गध्यत्रोक्त		मद		14.8
न्तुष्यगतिप्रायोग्या <u>नुपू</u> र्वी	१७६	मदनलु		208
ानुष्यकोक्तममाण -	855	44444		414
ानोपोग '	808, Rao, 808	भयमूल		204
ररण	808, 830, 838	HT		316
रद्दामरस्य <u>क्षेत्र</u>	84	मंदर म् ख		<1
दा मस्यशेषस्यान	9.9		य	
दाशुक	२३ ५	पम		215
ागधप्रस्थ	180	पाराव्यक्रम सं	य	ie
ागदा	398			210
।। गुपक्षेत्र	7150	पोग		Vas
ा <u>नु</u> पक्षेत्रस्यपदेशाम्यथा <u>न</u> ुप	पवि १७१	<u>वोग</u> िनरोध		848
ानुषोत्तरपर्यंत	153	धोगपरा वृत्ति		804
ातुपोत्तरदील	240, 224	योग्य		315
ाया दा	358			
रियान्तिककाल	8.8	্যর		43, 245, 213
रणान्तिकदोत्रायाम	188	रजुप्छे र नक	***	844
रणाम्बद्धरादि	c's	(अञ्चयतर		the, the
ारणान्तिकसमुद्धात <u>े</u>	28 28%	र्राल		873
iei	220, 294	तस्य		411
ादे न्द्र	484	रेका		275
ाध्यात्व	218, 24c, 833 1	.च र पर्य र		858
क्यारबादिकारण	48 F	. च		₹==
ध्यमद्वादा	१६९, ११८।	रपम्होप		₹ %•
	1			100

शब		2 3	शब्द	23
		-		•
रूपोनायितका		83	विशोम	316
रोहण .		386	विगूर्वणादिश्रहिद्याप्त	{30
रोह		27	विग्रवमानएकेन्द्रियराशि	a
र्येद		१९	विग्रह	द्ध, १७५
•	ल		विब्रह्मिति	२६, ३०, ४३, ८०
स िघसम्पद्ममुनिवर		2719	विश्रहगतिनाम कर्म	838
छयसत्तम		262	थिजय	३१८,३८६
लय		79 9 1 15	विवद्धा	228
स्यमसमुद		15a 100	विदह	84
उपणसमुद्रक्षेत्र फल		10to 10 /	ાચકદસયત€ાાગ	H
लान्तव		226	विनदा	111
संग िक्समेति		50	विन्यासक्रम	10
संद्रापराष्ट्र ति		830, 831	ियान	\$30
सीक		000,000	विमानतल	193
रोक् संक्रमाली	₹0, ८३,	104 150	विमान शि षर	223
CH Polical	(°, 64,	१७०, १९१	<i>धिरास</i> न	२०१
सोचपूरणसमुदात		49, 83 8	विरह	34.
संस्थानर			विदेशिय	१ ४'s
शोदमाण		१४६, १४७		68, 84, 883
सीवाशादा			विष्करमयतुर्माग	20%
सोबाहोइविमाग	•	93	विश्वस्मयम्गुणितरम्तु	Ć1
सीमाजा		30.8	विष्कामयगैर्दागुणकरणी	. 4.4
	य	111	विषक स्मान्यी <u>ग</u> ्रिका ने केली	۷۰
ซท์	4	0 - 0110	વિષ્યાદેવાર્થ વિષ્યાદેવાર્થ	{8
वर्ग वर्गम		40, (34	विसंयोजन	111
वर्गम् वर्गमृह		200	विस्मार	883
बरसूल		204	विद्यागीपयय	84
बस नदेख बर्डमानविधिप्रक्षेत्र		\$44	विद्यायीयदिनामकर्ष	13
चर्मानाय स्टब्स् चर्मनसुमारमिच्यान्त		58.4	विद्यारयञ्चलभाग	28, 22, 166
वर्षित्रराधि	6143	148		105
474-313 G		\$50		10, 26
वरंगुतस्य		444	येत्रासम	12, 21
कां सहस्र			वेशामनम्हित्य <i>न</i>	20
क्ष्यक्ष वर राजि				28, 48, 63, 161
दण्यस्य		4)	वहनासमुद्धास वहारसम्बद्धारित	264 231
•ापु		350	वप	***
बार्यम			परंघर	189
		,		

	पारि	भागिः	K शब्दसूची	(¥{)·
शब्द		Dec.		(AO)
-0-64		£8	शन्द	98 -
येकियिकसमुद्रात येजपन्त	२६,	135	सस्य -	
प्राचन प्रशेचन	384,	36	सदक्ष्मारकार	188 .
वेदयदेव वेदयदेव		३१८	सद्भावस्थापनाकास	१८७
ध्यन्तरदेव		99	[सप्तमकांक्रको	₹\$R
•यन्तरदेवतारी		१६१	सप्तमपृथियीनारकः	90
ध्यन्तरदेषसासादन		**	समबतुरस	{ { § 3
	सम्पदाय- १स्थानक्षेत्र		समपरिमंडलसंस्थित	· . 4
ध्यम्तरायास •		,,		१७२
व्याभिषार	१६१, :	1988	FIREMAN, D.	310,310
ध्यवहारकाल	449	4441	ar of i may man	\$\$\$
ध्याचयान				१७८
ध्याधात		3 ()	A ST TOWN	48
व यायकः	¥	0.	AREIX Brown	. 41
ध्यास		۷,	समुद्रा भ्यश्तरमध्यम्प्रीतः	W's
ध्यं जनपर्याय	₹	२१ ह	ग्यानान्यन्त्रस्यमपानः गमनायविद्याधाराना	
	7	16	स्यप्रदेश	१५८
:	च '	- E	स्य िमस्याख	340
द्यव ं	হা	14 4	विकास मार्गिक	п
दातस र् ड		R	योगिकास	***
शतार . शताका	RI	६ स	योगी	14.5 21.6
यास्य । दालाकासंगलना	४३'% ४८	प्र स	र्वलोक्समान	45
याकाकासकलमा वाद्यिपरिवाद	20	o 491	षांकारा	₹<
दालिमें(जि न ः	84	२∤सः	र्वार्थसिदि	280, \$43
मार्क्स अस्ति हास	१ ६	५ स	र्वाचेसिद्धिवान	< 8
धनः चौत्रक्षेत्र		६∫सप		111
યાલફામ દોળી		96		514
धेणीवळ -	UE, <			***
थेत	१७४, २१४	सह	ानवस्थानसम्बद्धिय	446 MIS
भोत्रेरिद्रय	160	स्रा		₹0. ₹८%
		este	ारोपम १०	tes 210, 210,
	4	l Iamo		₹co, ₹ca
र हेंदा	tuc	ECT !	रोपमदातपू षक व	Roo' ARS' ACA
द्भापक्रमनियम	२१८, ६२६	4110	तरोपन मण्यार	\$40
। प्र पृथियी	9.0	साध	रासामान्य	1
स		साध		3.4
।बित्तद्रम्पश्पर्शन	tva		न पुरार	
	•		-	483
	/.			1 J

۹٩,

,	
शब्द	पीरितिष्ट
साम्पराविक	पृष्ठ राष्ट्र
HITTO:	
साधेत्र	३९१/संस्थाननामकर्म
सामाञ्चा	
सासाइक्रा	
सासादनमारणान्तिकक्ष सासादनसम्यवस्थान	निविद्याल ५३६ स्तियक
सासादनसम्यक्त्यपृष्ठाः सिद्ध	18 194 FETTITION
सिद्धसेन	224/zorom
सिद्धार्थ	जन्म ने वे दे हैं। स्थापनाच्ये
सुगन्धर्य	३१९/स्थापनास्पर्यान
- Sarad	» हियति
स्मस्यक	a. 200-
च्यासेयकत	३३६ स्पर्शनानुगम
च्यंगुल	१६ स्पर्धानान्त्रमा १०, २०३ कर्मारानान्त्रय
च्यारोत्र	१०, २०३, २१२ स्वयंग्रमपर्यत
ध्यं	स्वयमपर्यत
सीयमं	
सीधमीविमानशिक्षरच्यात्रं ह सीधमीहि	
सोधमाहि	२३५ स्थयंत्रभपर्वतोपरिममाग
गंगलन	
पं इ.स्ना	
संबंधपराशि	रवव, १९० राज्यसम्बद्धाविकार
संवतराज्ञि	
Garage Comme	३३८ स्यस्थानक्षेत्रमेलापनियपान स्यस्थानक्ष्रमान
CI A CHARLES AND A STATE OF THE PARTY OF THE	३३८ स्यस्थानसंत्रभेलापनयिपान ४६ स्वस्थानस्वस्थान ४६ म्वस्थानस्वस्थान
	१६९ म्यस्थानस्यस्थानसारी
Bंपप्राचेताल	** [
सदात	३४३ हरू
GTRE	
संदर्भ	१४४ द्वान ११७, ३९५
	३१७, ३९५ हेत्यान
	१० देमपाराण



